

प्रेमचंद रचनावली

17

प्रेमचंद
रचनावली
17

अनुवाद

आजाद कथा

प्रेमचंद रचनावली

खण्ड : सत्रह

भूमिका एवं मार्गदर्शन

डॉ॰ रामविलास शर्मा





प्रकाशकीय

'प्रेमचंद रचनावली' का प्रकाशन जनवाणी के लिए गौरव की बात है। कॉपीराइट समाप्त होने के बाद प्रेमचंद साहित्य विपुल मात्रा में प्रकाशित-प्रचारित हुआ। पर उनका सम्पूर्ण साहित्य अब तक कहीं भी एक जगह उपलब्ध नहीं था। लगातार यह जरूरत महसूस की जा रही थी कि उनके सम्पूर्ण साहित्य का प्रामाणिक प्रकाशन हो।

श्रेष्ठ और कालजयी साहित्यकारों के समग्र कृतित्व का एकत्र प्रकाशन कई दृष्टियों से उपयोगी होता है। इसी आलोक में **'प्रेमचंद रचनावली'** की कुछ विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख बहुत आवश्यक है। इस रचनावली में पहली बार सम्पूर्ण प्रेमचंद साहित्य सर्वाधिक शुद्ध और प्रामाणिक मूल पाठ के साथ सामने आया है। सम्पूर्ण रचनाओं का विभाजन पहले विधावार तत्पश्चात् कालक्रमानुसार किया गया है। रचनाओं के प्रथम प्रकाशन एवं उनके कालक्रम संबंधी प्रामाणिक जानकारी प्रत्येक रचना के अन्त में दी गई है जिससे प्रेमचंद के कृतित्व के अध्ययन और मूल्यांकन में विशेष सुविधा होगी। इसकी अधिकांश सामग्री प्रथम संस्करणों या काफी पुराने संस्करणों से ली गई है। प्रेमचंद साहित्य के अध्ययन, अध्यापन तथा शोध के लिए इस रचनावली का अपना एक ऐतिहासिक महत्त्व है, क्योंकि इसमें प्रेमचंद की अब तक उपलब्ध सम्पूर्ण तथा अद्यतन सामग्री का समावेश कर लिया गया है। रचनावली के बीस खण्डों का क्रमबद्ध प्रारूप इस प्रकार है—

खण्ड 1-6 : मौलिक उपन्यास; **खण्ड 7-9** : लेख, भाषण, संस्मरण, संपादकीय, भूमिकाएं, समीक्षाएं; **खण्ड 10** : मौलिक नाटक; **खण्ड 11-15**: सम्पूर्ण कहानियां (302); **खण्ड 16-17** : अनुवाद (उपन्यास, नाटक, कहानी); **खण्ड 18** : जीवनी एवं बाल साहित्य; **खण्ड 19** : पत्र (चिट्ठी-पत्री); **खण्ड 20** : विविध।

रचनावली की विस्तृत भूमिका मूर्धन्य आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा ने लिखी है, जो इस रचनावली की सबसे बड़ी उपलब्धि है। डॉ० शर्मा ने अपनी साहित्य-साधना के व्यस्त क्षणों में भी हर कदम पर हमारा मार्गदर्शन किया। रचनावली का जो यह उत्कृष्ट रूप सामने आया है यह सब उन्हीं के आशीर्वाद का प्रतिफल है। इस कृपा और सहयोग के लिए मैं उनके प्रति नतमस्तक हूं।

बिहार विधान परिषद् के माननीय सभापति, हिन्दी और उर्दू के वरिष्ठ साहित्यकार प्रो० जाबिर हुसेन ने प्रेमचंद रचनावली के संपादक-मण्डल का अध्यक्ष होना स्वीकार किया और रचनावली के संपादन कार्य में हमारा उचित मार्गदर्शन किया, इसके लिए मैं उनका आभारी हूं। साथ ही संपादक-मण्डल के विद्वान सदस्यों के प्रति भी हार्दिक आभार प्रकट करता हूं।

श्री केशवदेव शर्मा ने अपनी तमाम व्यस्तताओं के बावजूद सम्पादन कार्य में जिस गहरी लगन, समझदारी और आत्मीयता से सहयोग किया है उसके लिए उनके प्रति अनेकशः धन्यवाद। उनका अहर्निश सानिध्य मुझे स्फूर्ति प्रदान करता रहा। डॉ० गीता शर्मा एवं डॉ० अशोक कुमार शर्मा, वेद प्रकाश सोनी तथा डॉ० विनय के प्रति भी उनके हार्दिक सहयोग के लिए आभारी हूं।

भाई राम आनंद साहित्य क्षेत्र में प्रवेश करते ही प्रेमचंद द्वारा स्थापित प्रकाशन संस्थान **'सरस्वती प्रेस'** से जुड़ गए थे। लगभग बीस वर्षों तक उन्होंने स्व॰ श्रीपत राय (प्रेमचंद के ज्येष्ठ पुत्र) के मार्गदर्शन में अप्राप्य प्रेमचंद साहित्य पर शोध कार्य किया। वे स्व॰ श्रीपत राय के संपादन में प्रकाशित होने वाली विख्यात कथा-पत्रिका **'कहानी'** के सहायक संपादक रहे। श्रीपत राय के देहांत के बाद उन्होंने **'कहानी'** का स्वतंत्र रूप से संपादन किया और उसे नया रूप तथा गरिमा प्रदान की। उन्होंने जिस गहरी सूझ-बूझ, लगन, धैर्य और निष्ठा से इस रचनावली के संपादन कार्य को इतने सुरुचिपूर्ण और वैज्ञानिक ढंग से संपन्न किया, इसके लिए वे हम सबों के साधुवाद के पात्र हैं।

श्री हरीशचन्द्र वार्ष्णेय, श्री प्रेमशंकर शर्मा, श्री उदयकान्त पाठक ने प्रूफ-संशोधन और सम्पूर्ण मुद्रण कार्य में विशेष जागरूकता और मनस्विता का परिचय दिया; इनके साथ विमलसिंह, आर॰ के॰ यादव, सुनील जैन, शिवानंदसिंह तथा संस्था के अन्य सभी सहकर्मियों के प्रति भी धन्यवाद ज्ञापित करता हूं क्योंकि इन सबके सहयोग और सद्भाव के बिना यह काम पूरा होना लगभग असंभव था।

मेरी भ्रातृजा रीमा और भ्रातृज संदीप, संजीव, मनीष, विक्रांत, चेतन की लगन और सूझबूझ ने भी मुझे सदैव प्रेरित और उत्साहित किया वे भी धन्यवाद के पात्र हैं।

रचनावली के मुद्रण का कार्य श्री कान्तीप्रसाद शर्मा की देखरेख में हुआ है। उनकी सूझबूझ और श्रमनिष्ठा के लिए वे हमारे हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं।

सर्वश्री विजयदान देथा, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', रामकुमार कृषक, स्वामी प्रेम जहीर, डॉ॰ कुसुम वियोगी, रामकुमार शर्मा आदि सभी मित्रों के सुझावों के लिए भी आभारी हूं।

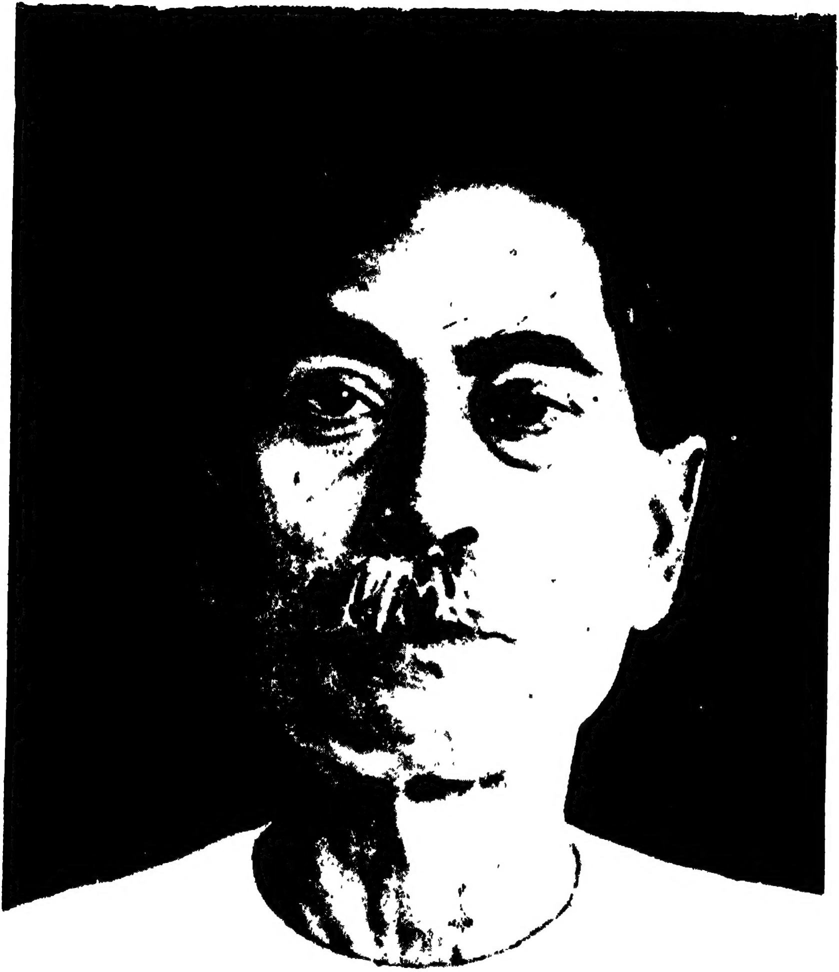
इस कार्य में पूज्य माताजी श्रीमती जसवन्ती देवी का आशीर्वाद और पिताश्री प्रेमनाथ शर्मा का दीर्घकालीन प्रकाशन-व्यवसाय का अनुभव और आशीर्वाद मेरे विशेष प्रेरणा स्रोत रहे। इनके साथ मातृतुल्या भाभी श्रीमती ललिता शर्मा, अग्रज राजकुमार शर्मा, चमनलाल शर्मा, धर्मपाल शर्मा एवं उनकी धर्मपत्नी इन्दु शर्मा के साथ भाई हरीशकुमार शर्मा एवं सुभाषचन्द्र शर्मा के साथ ही चाचा श्री दीनानाथ शर्मा का भी आभारी हूं जिन्होंने पग-पग पर मेरा मार्ग-दर्शन किया। और सबसे अंत में सहधर्मिणी श्रीमती गीता शर्मा ने जो सहयोग और संबल प्रदान किया उसके लिए आभार अथवा धन्यवाद जैसा शब्द बहुत कम होगा। सारा श्रेय उन्हीं का है।

नेशनल लाइब्रेरी, कलकत्ता के सहयोग से दुर्लभ पुस्तक 'महात्मा शेखसादी' लगभग सत्तर वर्ष बाद एक बार फिर इस रचनावली के मार्फत पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की जा रही है। मैं नेशनल लाइब्रेरी कलकत्ता के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूं। उन समस्त संस्थानों, पुस्तकालयों, विभागों, संस्थाओं, लेखकों, संपादकों, अधिकारियों और व्यक्तियों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने इस रचनावली के आयोजन में सहयोग किया।

अन्त में विद्वान पाठकों से हमारा निवेदन है कि वे इस रचनावली की त्रुटियों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करें ताकि आगामी संस्करणों में उन्हें दूर किया जा सके।

हम आशा करते हैं कि हिन्दी जगत् इस बहु-प्रतीक्षित रचनावली का हार्दिक स्वागत करेगा।

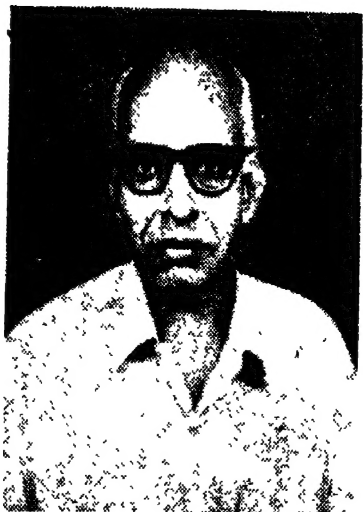
अरुण कुमार
(प्रबंध निदेशक)



प्रेमचंद : अनुवाद की समस्याएं



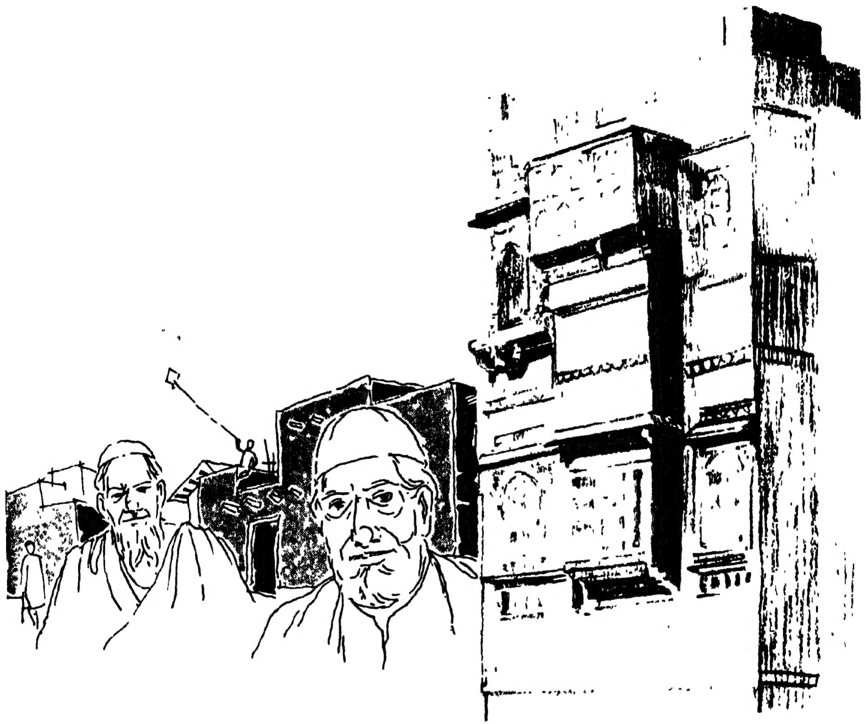
चन्द्रप्रकाश 'प्रभाकर'
बर्मी अनुवादक



रा० वीषिनाथन
तमिल अनुवादक



र० शौरिराजन
तमिल अनुवादक



आज़ाद कथा

प्रकाशनकाल : 1925

गंगा-पुस्तकमाला का [illegible]-पुष्प

आज़ाद-कथा

अर्थात्

संक्षिप्त हिंदी-फ़िसाना-आज़ाद

(प्रथम भाग)

[illegible]

प्रेमचंद

रंगभूमि, प्रेमाश्रम, सेवा-सदन, प्रेम-पचीसी, प्रेम-प्रसून, कर्मभूमि, प्रेम-द्वादशी, प्रेम-पूर्णिमा आदि के रचयिता

प्रकाशक

गंगा-पुस्तकमाला-कार्यालय

२९-३०, अमीनाबाद-पार्क

लखनऊ

प्रथमावृत्ति

सजिल्द [illegible]] सं० [illegible] वि० [सादी [illegible]

(मुख पृष्ठ : आजादकथा)

एक

मियां आज़ाद के बारे में हम इतना ही जानते हैं कि वह आज़ाद थे। उनके खानदान का पता नहीं, गांव-घर का पता नहीं; खयाल आज़ाद, रंग-ढंग आज़ाद, लिबास आज़ाद, दिल आज़ाद और मजहब भी आज़ाद। दिन भर जमीन के गज बने हुए इधर-उधर घूमना, जहां बैठना वहां से उठने का नाम न लेना और एक बार उठ खड़े हुए तो दिन भर मटरगश्ती करते रहना उनका काम था। न घर, न द्वार; कभी किसी दोस्त के यहां डट गये, कभी किसी हलवाई की दूकान पर अड्डा जमाया; और कोई ठिकाना न मिला, तो फाका कर गए । सब गुन पूरे थे। कुश्ती में, लकड़ी-बिनवट में, गदके-फरी में, पटे-बांक में उस्ताद। गरज, आलिमों में आलिम, शायरों में शायर, रंगीलों में रंगीले, हरफनमौला आदमी थे।

एक दिन मियां आज़ाद बाजार में सैर-सपाटा कर रहे थे कि एक बुड्ढे ने एक बांके से कहा कि मियां, बेधे आए हो, या जान भारी है, या छींकते घर से चले थे? यह अकड़ते क्यों चलते हो? यहां गरदन झुकाकर चला कीजिए, नहीं तो कोई पहलवान गरदन नापेगा, सारी शेखी किरकिरी हो जायगी, ऐंड़ना भूल जाइएगा। इससे क्या वास्ता? यह शहर कुश्ती, पटे-बांक और लकड़ी की टकसाल है। बहुत से लड़ैतिये आए, मगर पटकनी खा गए। हाथ मिलाते ही पहलवानों ने मारा चारों खाने चित्त। यह सुनते ही वह मियां बांके आग-भभूका हो गए। बोले—जी, तो कहीं इस भरोसे भी न रहिएगा, यहां पटकनी खाने वाले आदमी नहीं हैं, बीच खेत पछाड़ें तो सही; बने रहें हमारे उस्ताद, जिन्होंने हमें लकड़ी सिखाई। टालों की लकड़ी फेंकना तो सभी जानते हैं। मैदान में ठहरना मर्दों ही का काम है। हमारे उस्ताद तीस-तीस आदमियों से गोहार लड़ते थे। और कौन लोग? गंवार-घामड़ नहीं, पले हुए पट्ठे, जिन पर उनको गरूर था। फिर यह खयाल कीजिए कि तीस गदके बराबर पड़ते थे, मगर तीसों की खाली जाती थी। कभी आड़े हो गए, कभी गदके से चोट काट दी, कभी बन को समेट लिया, कभी पैंतरा बदल दिया। शागिर्दों को ललकारते जाते थे कि 'लगा दे बढ़ के हाथ, आ घुसके।' और वह झल्ला-झल्ला के चोटें लगाते थे, मगर मुंह की खाते थे। जब सबके दम टूट गए और लगे हांफने, तो गदके हाथ से छूट-छूट पड़े। मगर वाह रे उस्ताद ! उनके वही खमदम, वही ताव-भाव, पहरों लकड़ी फेंकें, मगर दम न फूले; और जो कहीं भिड़ पड़े तो बात की बात में परे साफ थे। किसी पर पालट का हाथ जमाया, किसी को चाकी का हाथ लगाया। फिर यही मालूम होता था कि फुलझड़ी छूट रही है, या आतशबाजी की छछूंदर नाच रही है, या चरखी

चक्कर में है। जनेवा का हाथ तो आज तक कोई रोक ही न सका; वह तुला हुआ हाथ पड़ता था कि इधर इशारा किया, उधर तड़ से पड़ गया। बस, मौत का तीर था, गदका हाथ में आया और मालूम हुआ कि बिजली लौंकने लगी। मुमकिन नहीं कि आदमी की आंख झपकने पाये। ललकार दिया कि रोक चाकी, फिर लाख जतन कीजिए, भला रोक तो लीजिए। निशाना तो कभी खाली जाने ही नहीं पाता था। फरी उम्र-भर न छूटी। एक अंग ही लड़ा किये। छरहरा बदन, सीधे-सादे आदमी, सूरत देखे तो यकीन न आए कि उस्ताद हैं, मगर एक जरा सी बांस की खपाच दे दीजिए, फिर दिल्लगी देखिए, कैसे जौहर दिखाते हैं। हम जैसे उस्तादों की आंखें देखे हुए हैं, किसी से दबने वाले नहीं।

मियां आज़ाद तो ऐसे आदमियों की टोह में रहते ही थे, बांके के साथ हो लिये और दोनों शहर में चक्कर लगाने लगे। चौक में पहुंचे, तो जिस पर नजर पड़ती है, बांका तिरछा, चुन्नटदार अंगरखे पहने, नुक्केदार टोपियां सिर पर जमाए, चुस्त घुटन्ने डाटे, ढाढे बांधे हुए तने चले जाते हैं। तमंचे की जोड़ी कमर से लगी हुई, दो-दो विलायतियां पड़ी हुई, बाढ़ें चढ़ी हुई, पेशकब्ज, कटारे, सिरोही, शेर-बच्चा, सबसे लैस। बांके को देख कर एक दूकानदार की शामत आई, हंस पड़ा। बांके ने आव देखा न ताव, दन से तमंचा दाग दिया। संयोग था, खाली गया। लोगों ने पूछा, क्यों भाई क्यों बिगड़ गए? तीखे होकर बोले—हमको देखकर बचाजी मुसकिराये थे, हमने गोली लगाई कि दांत पर पड़े और इनके दांत खट्टे हो जायं, मगर जिंदगी थी, बच निकले। मियां आज़ाद ने अपने दिल में सोचा, यह बांके तो आफत के परकाले हैं, इनको नीचा न किया तो कुछ बात नहीं। एक तंबोली से पूछा—क्यों भाई, यहां बांके बहुत हैं? उसने कहा—मियां, बांका होना तो दिल्लगी नहीं, हां बेफिक्रे बहुत हैं। और इन सबके गुरु-घंटाल वह हजरत हैं, जिन्हें लोग एकरंग कहते हैं। वह संदली रंगा हुआ जोड़ा पहनकर निकलते हैं, मगर मजाल क्या कि शहर भर में कोई संदली जोड़ा पहन तो ले। एकरंग संदली जोड़ा कोई पहन नहीं सकता, कोई पहने तो गोली भी सर कर दे, इसके साथ यह भी है।

मियां आज़ाद ने सोचा कि इस एकरंग का टेटुआ न लिया, तो खाना हराम। दूसरे दिन आप भी संदली बूट, संदली घुटन्ना, संदली अंगरखा और टोपी डाटकर निकले। अब जिस गली-कूचे से निकलते हैं, उंगलियां उठती हैं कि यह आज इस ढब से कौन निकले हैं भाई। होते-होते एकरंग के चेले-चापड़ों ने उनके कान में भी भनक डाल दी। सुनते ही मुंह लाल चुकंदर हो गया। कपड़े पहन, हथियार लगा, चल खड़े हुए। आज़ाद तंबोली की दूकान पर टिक गए। उनका वेष देखते ही होश उसके उड़ गए। लगा हाथ जोड़ने कि भगवान् के लिए मेरी ही टोपी दे लीजिए, या जूता बदल डालिए, नहीं तो वह आता ही होगा, मुफ्त की ठायं-ठायं से क्या वास्ता? इनको तो कच्चे घड़े की चढ़ी थी, कब मानते थे, गिलौरी ली और अकड़कर खड़े हुए। शहर में धूम हो गयी कि आज आज़ाद और एकरंग में तलवार चलेगी। तमाशा देखनेवाले जमा हो गए। इतने में मियां एकरंग भी दिखाई दिए। उनके आते ही भीड़ छट गई। कोई इधर कतरा गया, कोई गली में घुसा, कोई कोठे पर चढ़

गया। एकरंग ने जो इनको देखा, तो जल मरा। बोला–अबे ओ खब्ती, उतार टोपी, बदल जूता। हमारे होते तू संदली जोड़ा पहनकर निकले। उतार उतार, नहीं तो मैं बढ़कर काम तमाम कर दूंगा। मियां आज़ाद पैंतरा बदलकर तीर की तरह झपट पड़े और बड़ी फुर्ती से एकरंग की तोंद पर तमंचा रख दिया। बस हिले और धुआं उस पार। बोले और लाश फड़कने लगी। बेईमान, बड़ा बांका बना है, सैकड़ों भले आदमियों को बेइज्जत किया। इतने चाबुक मारूंगा कि याद करेगा। अभी उतार टोपी, उतार, उतार, नहीं तो धुआं उस पार ! संयोग से एक दर्जी उधर से निकला, उसने एकरंग की टोपी उतार जेब में रखी। एकरंग की एक न चली। आज़ाद ने ललकारा–हौसला हो तो आओ, दो-दो हाथ भी हो जाएं, खबरदार जो आज से संदली जोड़ा पहना !

शहर भर में धूम हो गई कि मियां आज़ाद ने एकरंग के छक्के छुड़ा दिये, चुपचाप दर्जी से टोपी बदली। सच है, 'दबे पर बिल्ली चूहे से कान कटाती है।' मियां आज़ाद की धाक बंध गई। एक दिन उन्होंने मुनादी कर दी कि आज मियां आज़ाद छह बजे से आठ बजे तक अपने करतब दिखाएंगे, जिन्हें शौक हो आएं। एक बड़े लम्बे-चौड़े मैदान में आज़ाद अपने जौहर दिखाने लगे। लाखों आदमी जमा थे। मियां आज़ाद ने नींबू पर निशान बनाया, और तलवार से उड़ाया, तो निशान के पास खट से दो टुकड़े। कसेरू उछाला और पांच-छह बार में छील डाला ! तलवार की बाढ़ से दस-बारह की आंखों में सुरमा लगाया। चिराग जलाया। और खांड़ा फेंकते-फेंकते गुल काट डाला, लौ अलग, बत्ती अलग। एक प्याले में दस कौड़ियां रखीं और दो पर निशान बना दिया। दोनों को तलवार से प्याले ही में काटा और बाकी कौड़ियां निलोह बच निकलीं। लकड़ी टेकी और बीस हाथ छत पर हो रहे। गदके का जरा इशारा किया और बीस हाथ उड़ गए। चालीस-चालीस आदमियों ने घेरा और साफ यह निकल भागे। पलंग के नीचे एक जंगली कबूतर छोड़ दिया गया। उन्होंने उसको निकलने न दिया। एक फिकैत ने ये करतब देखे तो बोला–अजी यह सब नट-विद्या है, मैदान में आएं तो मालूम हो।

आज़ाद–अच्छा ! अब तुम्हें भी मैदान में आने का दावा हुआ ! तुम्हारे एकरंग का तो रंग फीका हो गया, अब तुम मुंह चढ़ते हो, तुम्हें भी देखूंगा।

फिकैत–चोंच संभालो।

आज़ाद–तुम्हारी शामत ही आ गई है, तो मैं क्या करूं। आजकल में तुम्हारी भी कलई खुली जाती है। तुम लोग बांके नहीं, बदमाश हो, जिधर से निकल जाओ, उधर आदमी कांप उठें कि भेड़िया आया। कोई हंसा और तुमने बंदूक छतियाई, किसी ने बात की और तुमने चोट लगाई। भाई वाह, अच्छा बांकपन है ! तो बात क्या, जहां दस दिन डंड पेले और उबल पड़े, दो-चार दिन लकड़ी फेंकी और महल्ले वालों पर शेर हो गए। गुनी लोग सिर झुका ही के चलते हैं।

यही बातें हो रही थीं, कि सामने से एक पहलवान ऐंड़ते हुए निकले, लंगोट बांधे, मलमल की चादर ओढ़े दो-तीन पट्ठे साथ। एक कसेरूवाले के पास खड़े हो गए और उसके सिर पर एक धूप लगा दी। वह पीछे फिरकर देखता है, तो एक देव खड़े हैं। बोले, तो पथा जाए, कान दबाकर, धप खाकर, दिल ही दिल में कोसता

हुआ चला गया।

थोड़ी ही देर में मियां पहलवान ने एक खोंचे वाले का खोंचा उलट दिया।, तीन-चार रुपये की मिठाई धूल में मिल गई। जब उसने गुल-गपाड़ा मचाया, तो पट्ठों ने दो-तीन गुद्दे, घूंसे, मुक्के लगा दिये, दो-चार लप्पड़ जमा दिये। वह बेचारा रोता-चिल्लाता, दुहाई देता चला गया।

आज़ाद सोचने लगे, यह तो कोई बड़ा ही शैतान है, किसी के लप्पड़, किसी के थप्पड़, अच्छी पहलवानी है ! सारे शहर में तहलका मचा दिया। इसकी खबर न ली, तो कुछ न किया। यह सोचते ही मेरा शेर झपट पड़ा और पहलवान के पास जाकर घुटने से ऐसा धक्का दिया कि मियां पहलवान ने इतना बड़ा डील-डौल रखने पर भी बीस लुढ़कनियां खाईं। मगर पहलवान संभलते ही उनकी तरफ झपट पड़ा। तमाशाई तो समझे कि पहलवान आज़ाद को चुर्र-मुर्र कर डालेगा, लेकिन आज़ाद ने पहले ही से वह दांव-पेंच किए कि पहलवान के छक्के छूट गये। ऐसा दबाया कि छठी का दूध याद आ गया। उसने जैसे ही आज़ाद का बायां हाथ घसीटा, उन्होंने दाहिने हाथ से उसका हाथ बांधा और अपना छुड़ा, चुटकियों में कूले पर लाद, घुटना टेककर मारा–चारों खाने चित्त। पहलवान अब तक कोरा था, किसी दंगल में आसमान देखने की नौबत न आई थी। आज़ाद ने जो इतने आदमियों के सामने पटकनी बताई, तो बड़ी किरकिरी हुई और तमाम उम्र के लिए दाग लग गया।

अब तो मियां आज़ाद जगत्-गुरु हो गए, एकरंग का रंग फ़ीका पड़ गया, पहलवान ने पटकनी खाई, शहर भर में घूम हो गई। जिधर से निकल जाते, लोग अदब करते थे, जिससे आंखें चार हुईं उसने जमीन चूम कर सलाम किया। अच्छे-अच्छे बांकों की कोर दबने लगी। जहां किसी शहजोर ने कमजोर को दबाया और उसने गुल मचाया–दोहाई मियां आज़ाद की, और यह बांड़ी लेकर आ पहुंचे। किसी बदमाश ने कमजोर को दबाया और उसने डांट बताई–नहीं मानते, बुलाऊं मियां आज़ाद को? शोहदे-लुच्चे उनसे ऐसे थर्राते थे, जैसे चूहे बिल्ली से, या मरीज तिल्ली से। नाम सुना और बगलें झांकने लगे, सूरत देखी और गली-कूचों में दबक रहे। शहर भर में उनका डंका बज गया।

एक दिन आज़ाद सिरोही लिये ऐंड़ते जा रहे थे कि एक दर्जी की दूकान के पास से निकले। देखते क्या हैं, रंगीले छैले, बांके जवान छोटे पंजे का मखमली जूता पहने, जुल्फें लटकाए, छुरी कमर से लगाए दर्जी से तकरार कर रहे हैं। वाह मियां खलीफा ! तुमने तो हमें उलटे छूरे मूड़ा ! खुदा जाने, किस कतर-व्योंत में रहते हो। सीना-पिरोना तो नाम का है, हां, जबान अलबत्ता, कतरनी की तरह चला करती है। तुमसे कपड़े सिलवाना अपनी मिट्टी खराब करना है। दम धागा देना खूब जानते हो। टोपी ऐसी भोंड़ी बनाई कि फबतियां सुनते-सुनते नाकों दम आ गया।

दर्जी–ऐ तो हुजूर, मैं इसको क्या करूं? मेरा भला इसमें क्या कुसूर है? आपका सिर ही टेढ़ा है। मैं टोपी बनाता हूं, सिर बनाना नहीं जानता।

बांके–चोंच संभाल, बहुत बढ़-बढ़ कर बातें न बना। बांकों के मुंह लगता है? और सुनिए, हमारा सिर टेढ़ा है। अबे, तेरा सिर सांचे का ढला है? तेरे ऐसे दर्जी

मेरी जेब में पड़े रहते हैं, मुंह बंद कर, नहीं दूंगा उलटा हाथ, मुंह टेढ़ा हो जायगा। और तमाशा देखिए, हमारा सिर गोया कद्दू हो गया।

दर्जी–आप मालिक हैं, मुल मेरी खता नहीं। जैसा सिर वैसी टोपी। ऐसा सिर तो मैंने देखा ही नहीं, यह नई गढंत का सिर है, आप फरे लें, बस, मैं सी चुका। जब दाम देने का वक्त आया, तो यह झमेला किया।

यह सुनते ही बांके ने दर्जी को इतना पीटा कि वह बेचारा बेदम हो गया। आखिर कफन फाड़ कर चीखा, दोहाई मियां आज़ाद की, दोहाई मेरे उस्ताद की। आज़ाद तो दूर से खड़े देख ही रहे थे, झट तलवार सैंत दूकान पर पहुंच गए। बांके ने पीछे फिर कर देखा, तो मियां आज़ाद।

आज़ाद–वाह भाई बांके, तुम सचमुच रुस्तम हो। बेचारे दर्जी पर सारी चोटें, साफ कर दीं। कभी किसी कड़े खां से भी पाला पड़ा है? कहीं गोहार भी लड़ा है? या गरीबों ही पर शेर हो? बड़े दिलेर हो तो आओ, हमसे भी दो-दो हाथ हो जायं। तुम ढेर हो जाओ, या हम चरका खायं। आइए, फिर पैंतरा बदलिए, लगा बढ़कर हाथ, इधर या उधर।

बांके–हैं, हैं, उस्ताद; हमीं पर हाथ साफ करोगे, हम नौसिखिये तुम गुरुघंटाल। मगर आप इस कमीने दर्जी की तरफ से बोलते हैं और शरीफों पर तलवार तौलते हैं ! सुभान अल्लाह ! आइए, आपसे कुछ कहना है।

आज़ाद–अच्छा, तौबा करो कि अब किसी गरीब को न धमकायेंगे।

बांके–अजी हजरत, धमकाना कैसा, हम तो खुद ही बला में फंसे हैं, खुदा ही बचाये, तो बचें। यहां एक फिकैत है, उससे हमसे लाग-डांट हो गई है। कल नौचंदी के मेले में हमें घेरेगा, कोई दो सौ बांकों के जत्थे से हम हरब करना चाहता है। हम सोचते हैं कि दरगाह न जायं, तो बांकपन में बट्टा लगता है, और जायं, तो किस बिरते पर? यार, तुम साथ चलो तो जान बचे, नहीं तो बेमौत मरे।

आज़ाद–अच्छा, तुम भी क्या कहोगे ! लो, बीड़ा उठा लिया कि कल तुमको ले चलेंगे, और सबसे भिड़ पड़ेंगे, दो सौ हों, चाहे हजार, हम हैं और हमारी कटार, इतनी कटारें भोंकूं कि दम बंद हो जाए। मगर यह बता दो कि कुसूर तुम्हारा तो नहीं है?

बांके–नहीं उस्ताद, कसम ले लो, जो मेरी तरफ से पहल हुई हो। मुझसे उन्होंने एक दिन अकड़ कर कहा कि तू तलवार न बांधा कर। मैं भी, आप जानिए, इनसान हूं। पित्ता तो मछली के भी होता है। मुझे भी गुस्सा आ गया। मैंने कहा, धत् ! तू और हमसे हथियार रखवा ले? बस, बिगड़ ही तो गया और पंद्रह-बीस आदमी उसकी तरफ से बोलने लगे। मैंने भी जवाब दिया, दबा नहीं। मगर लड़ पड़ना मसलहत न थी। बांका हूं, तो क्या हुआ, बिना समझे-बूझे बात नहीं करता। खैर, उसने ललकार कर कहा–अच्छा बचा, दरगाह में समझ लेंगे, अब की नौचंदी में हमीं न होंगे, या तुम्हीं न होगे।

आज़ाद–अच्छा, तुम लैस रहना, मैं दो घड़ी दिन रहे आऊंगा, घबराओ नहीं, तुम्हारा बाल-बांका हो, तो मूंछ मुड़ा दूं। ये दो सौ आदमी देखने ही भर के होंगे।

सच्चे दिलेर उनमें दो-ही चार होंगे, जो आज़ाद की तलवार का सामना करें। मौत से लड़ना दिल्लगी नहीं है, कलेजा चाहिए।

दूसरे दिन आज़ाद हथियार बांधकर चले, तो रास्ते में बांके मिल गए और दोनों साथ-साथ टहलते हुए दरगाह पहुंचे।

नौचंदी जुमेरात, बनारस का बुढ़वामंगल मात, चारों तरफ चहल-पहल, कहीं 'तमाशाइयों' का हुजूम, हटो-बचो की धूम, आदमी टूटे पड़ते है, कोसों का तांता लगा हुआ है, मेवे वाले आवाज लगा रहे हैं, तंबोली बीड़े बना रहे हैं, गड़ेरियां हैं, केवड़े की, रेवड़ियां हैं गुलाब की। आज़ाद घूरते-घारते फाटक पर दाखिल हुए, तो देखा, सामने तीस-चालीस आदमियों का गोल है। बांके ने कान में कहा कि यही हजरत हैं, देख लीजिए, दंगे पर आमादा हैं या नहीं।

आज़ाद-भला, यहां तुम्हारी भी कोई जान-पहचान है? हो, तो दस-पांच को तुम भी बुला लो, भीड़-भड़क्का तो हो जाय। लड़ने वाले हम क्या कम हैं-मगर दो-चार जमाली खरबूजे भी चाहिए, डाली की रौनक हो जाय।

बांके-अभी लाया, आप ठहरें, मगर बाहर टहलिए तो अच्छा है, यहां जोखिम है।

आज़ाद फाटक के बाहर टहलने लगे। फिकैत ने जो देखा कि दोनों खिसके, तो आपस में हांड़ियां पकने लगीं--वह भगाया ! वह हटाया ! भागा है ! उनके साथियों में से एक ने कहा-अजी, वह भागा नहीं है, एक ही काइयां है, किसी टोह में गया है। एक बिगड़ेदिल बाहर गये, तो देखा, बांके पश्चिम क़ी तरफ गर्दन उठाये चले जाते हैं, और मियां आज़ाद फाटक़ से दस कदम पर टहल रहे हैं। उलटे पांव आकर खबर दी-उस्ताद, बस, यही मौका है, चलिए, मार लिया है, बायें फाटक से चढ़ दौड़े। ठहर बे, ठहर। बस, रुक जा आगे कदम बढ़ाया और, ढेर हुए ! हिले, और दिया तुला हुआ हाथ। याद हैं कि नहीं, आज नौचंदी है। लोगों ने चारों तरफ से घेर लिया। बांके का रंग फेंक गजब हो हो गया ! अब कुत्ते की मौत मरे। किस-किससे लड़ूंगा? एक की दवा दो, दो की सौ। मियां आज़ाद को कोई खबर कर देता, तो वह झपट ही पड़ते, मगर जब तक कोई जाय-जाय, हमारा काम तमाम हो जाएगा। एक यार ने बढ़कर बेचारे मुसीबत के मारे बांके के एक लठ लगा दिया, बाएं हाथ की हड्डी टूट गई। गुल-गपाड़े की आवाज आज़ाद ने भी सुनी। भीड़ काटकर पहुंचे, तो देखा बांके फंसे हुए हैं। तलवार को टेका और दन से उस पार हुए। खबरदार खिलाड़ी ! हाथ उठाया और मैंने टेटुआ लिया। बांके के दिल में ढाढ़स हुआ, जान बची, नई जिंदगी हुई। इतने में मियां आज़ाद ने तलवार म्यान से निकाली और पिल पड़े। तलवार का चमकना था कि फिकैत के सब साथी हुर्र हो गए, मैदान खाली, मियां आज़ाद और बांके एक तरफ, फिकैत और दो साथी दूसरी तरफ, बाकी रफूचक्कर। एक ने आज़ाद पर तमंचा चलाया, मगर खाली गया। आज़ाद ने झपटकर उसको ऐसा चरका दिया कि तिलमिला कर गिर पड़ा। दूसरे जवान दस कदम पीछे हट गए। बांके भी खिसक गये। अब आज़ाद और फिकैत आमने-सामने रह गए। वह कड़ककर झुका, उन्होंने चोट रोककर सिर पर हाथ लगाना चाहा, उसने रोका और चाकी का हाथ

दिया। आध घंटे तक शपाशप तलवार चला की। आखिर आज़ाद ने बढ़कर 'जनेऊ' का वह हाथ लगाया कि 'भडारा' तक खुल गया, मगर फिकैत भी गिरते-गिरते 'बाहरा' दे ही गया। इधर यह, उधर वह धम से गिरे। तब बांके दौड़े और आज़ाद को उठाकर घर ले गए।

दो

आज़ाद की धाक ऐसी बंधी कि नवाबों और रईसों में भी उनका जिक्र होने लगा। रईसों को मरज होता है कि पहलवान, फिकैत, बिनवटिये को साथ रखें, बग्घी पर लेकर हवा खाने निकलें। एक नवाब साहब ने इनको भी बुलवाया। यह छैला बने हुए, दोहरी तलवार कमर से लगाए जा पहुंचे। देखा, नवाब साहब, अपनी मां के लाड़ले, भोले-भाले, अंधेरे घर के उजाले, मसनद पर बैठे पेचवान गुड़गुड़ा रहे हैं। सारी उम्र महल् के अंदर ही गुजरी थी, कभी घर के बाहर जाने तक की भी नौबत न आई थी, गोया बाहर कदम रखने की कसम खाई थी। दिनभर कमरे में बैठना, यारों-दोस्तों से गप्पें उड़ाना, कभी चौसर रंग जमाया, कभी बाजी लड़ी, कभी पौ पर गोट पड़ी, फिर शतरंज बिछी, मुहरे खट-खट पिटने लगे। किश्त ! वह घोड़ा पीट लिया, वह प्यादा मार लिया। जब दिल घबराया, नब मदक का दम लगाया, चंडू के छींटे उड़ाये, अफीम की चुस्की ली। आज़ाद ने झुककर सलाम किया। नवाब साहब खुश होकर गले मिले, अपने करीब बिठाया और बोले—मैंने सुना है, आपने सारे शहर के बांकों के छक्के छुड़ा दिए।

आज़ाद—यह हुजूर का इकबाल है, वरना मैं क्या हूं।

नवाब—मेरे मुसाहिबों में आप ही जैसे आदमी की कमी थी, वह पूरी हो गई, अब खूब छनेगी।

इतने में मीर आगा बटेर को मूठ करते हुए आये और सलाम करके बैठ गये। जरा देर के बाद अच्छे मिर्जा गन्ना छीलते हुए आए और एक कोने में जा डटे। मियां झम्मन अंगरखा के बंद खोले, गद्दी पर टोपी रखे खट से मौजूद। फिर क्या था, तू आ, मैं आ। दस-पंद्रह आदमी जमा हो गए, मगर सब झंडे-तले के शोहदे, छटे हुए गुरगे थे। कोई चीनी के प्याले में अफीम घोल रहा है, कोई चंडू का किवाम बना रहा है, किसी ने गंडेरियां बनाईं, किसी ने अमीर-हमजा का किस्सा छेड़ा, सब अपने-अपने धंधे में लगे। नवाब साहब ने मीर आगा से पूछा—मीर साहब, आपने खुश्के का दरख्त भी देखा है?

मीर आगा—हजूर, कसम है जनाब अमीर की, सत्तर और दो बहत्तर बरस की उम्र होने को आई, गुलाम ने आज तक आंखों से नहीं देखा, लेकिन होगा बड़ा दरख्त। सारी दुनिया की उससे परवरिश होती है, जिसे देखो, खुश्के पर हत्थे लगाता है।

अच्छे मिर्जा—कुरबान जाऊं, दरख्त के बड़े होने में क्या शक है। कश्मीर से

लेकर, कुरबान जाऊं, बड़े गांव तक और लंदन से लेकर विलायत तक, सबका इसी पर दारमदार है।

नवाब–मेरा भी ख्याल यही है कि दरख्त होगा बहुत बड़ा, लेकिन देखने की बात यह है कि आखिर किस दरख्त से ज्यादा मिलता है। अगर यह बात मालूम हो जाए, तो फिर जानिए कि एक नई बात मालूम हुई। और भाई, सच पूछो, तो छान-बीन करने ही में जिंदगी का मजा है।

अच्छे मिर्जा–सुना बरगद का दरख्त बहुत बड़ा होता है। झूठ-सच का हाल खुदा जाने, नीम का पेड़ तो हमने भी देखा है. लेकिन किसी शायर ने नीम के दरख्त की बड़ाई की तरीफ नहीं की।

छुट्टन–हमने केले का पेड़, अमरूद का पेड़, खरबूजे का पेड़ सब इन्हीं आंखों देख डाले।

आज़ाद–भला, यहां किसी ने वाहवाह की फलियों का पेड़ भी देखा है?

छुट्टन–जी हां, एक दफे नैपाल की तराई में देखा था, मगर शेर जो डकारा, तो मैं झप से गेंदे के दरख्त पर चढ़ गया। कुछ याद नहीं कि पत्ती कैसी होती है।

नवाब–खुश्के के दरख्त का कुछ हाल दरियाफ्त करना चाहिए।

अच्छे मिर्जा–कुरबान जाऊं, इन लोगों का एतबार क्या? सब सुनी-सुनाई कहते हैं ! कुरबान जाऊं, गुलाम ने वह बात सोची है कि सुनते ही फड़क जाइये।

नवाब–कहिए, कहिए ! ज़रूर कहिए ! आपको कसम है। मुझे यकीन हो गया कि आप दूर की कौड़ी लाये होंगे।

अच्छे मिर्जा–(कतारे को खड़ा करके) कुरबान जाऊं, अगर खुश्के का दरख्त होगा, तो इस कतारे के बराबर ही होगा, न जौ भर बड़ा, न तिल भर छोटा।

नवाब–वाह मीर साहब, वाह, क्या बात निकाली !

मुसाहब–सुभान अल्लाह मीर साहब, क्या सूझ-बूझ है !

आज़ाद–आप तो अपने वक्त के लालबुझक्कड़ निकले ! मालूम होता है, सफर बहुत किया है।

अच्छे मिर्जा–कौन, मैंने सफर ! कसम लो, जो नखास से बाहर गया हूं। मगर, कुरबान जाऊं, लड़कपन ही से जहीन था। अब्बाजान तो बिलकुल बेवकूफ थे, मगर अम्मांजान तो बला की औरत थीं, बात में बात पैदा करती थीं।

इतने में गुल-गपाड़े की आवाज आई। अंदर से मुबारककदम लौंड़ी सिर पीटती हुई आई–हुजूर, मैं सदके, जल्दी चलिए, यह हंगामा कहां हो रहा है? बड़ी बेगम साहिबा खड़ी रो रही हैं कि मेरे बच्चे पर आंच न आ जाय।

नवाब साहब जूतियां छोड़कर अंदर भागे। दरवाजे सब बंद ! अब किसी को हुक्म नहीं कि जोर से बोले। इतने में एक मुसाहब ने ड्योढी पर से पुकारा–हुजूर, फिर आखिर मियां आज़ाद किस मरज की दवा हैं? गंड़ेरी छीलने के काम के नहीं, किवाम बनाना नहीं जानते, बटेर मुठियाना नहीं आता, इनको भेज कर दरियाफ्त न कराइये कि दंगा कहां हो रहा है।

मुबारककदम–हां, हां भेज दीजिए; कहिए, कुत्ते की चाल जायें और बिल्ली

की चाल आयें।

मियां आज़ाद ने कटार संभाली और बाहर निकले। राह में लोगों से पूछते जाते हैं कि भाई, यह फिसाद क्या है? एक ने कहा, अजी चिकमंडी में छुरी चली। पांच-चार कदम आगे बढ़े, तो दो आदमी बातें करते जाते थे कि पंसारी ने पुड़िया में कद्दू के बीजों की जगह जमाल-गोटा बांध द्रिया। गाहक ने बिगड़कर पंसारी की गर्दन नापी। और दस कदम चले तो एक आदमी ने कहा, वह तो कहिए खैरियत गुजरी कि जाग हो गई नहीं तो भेड़िया घर भर को उठा ले जाता। यह भेड़िया कैसा जी? हुजूर, एक मनिहार के घर से भेड़िया तीन बकरियां, दो मेंढे, एक खरहा और एक खाली पिंजड़ा उड़ा ले गया। उसकी औरत को भी पीठ पर लाद चुका था कि मनिहार जाग उठा। अब आज़ाद चकराये कि भाई अजब बात है, जो है नई सुनाता है। करीब पहुंचे तो देखा, पंद्रह-बीस आदमी मिलकर छप्पर उठाते हैं और गुल मचा रहे हैं। जितने मुंह उतनी बातें। और हंसी तो यह आती है कि नवाब साहब बदहवास होकर घर के अंदर हो रहे। वहां से लौटकर यह किस्सा बयान किया, तो लोगों की जान में जान आई, दरवाजे खुले, फिर नवाब साहब बाहर आए।

नवाब-मियां आज़ाद, तुम्हारी दिलेरी से आज जी खुश हो गया। आज मेरे यहां खाना खाना। आप ढाल नहीं बांधते।

आज़ाद-हुजूर, ढाल तो जनानों के लिए है, हम उम्रभर एक-अंग लड़ा किये, तलवार ही से चोट लगाई और उसी पर रोकी, या खाली दी या काट गये। एक दिन आपको तलवार का कुछ हुनर दिखाऊंगा, आपकी आंखों में तलवार की बाढ़ से सुरमा लगाऊंगा।

नवाब-ना साहब, यह खेल उजड्डपन के हैं, मेरी रूह कांपती है, तलवार की सूरत देखते ही जूड़ी चढ़ आती है। हां, मिर्जा साहब जीवट के आदमी हैं। इनकी आंखों में सुरमा लगाइये, यह उफ करने वाले नहीं।

अच्छे मिर्जा-कुरबान जाऊं हुजूर, अब तो बाल पक गये, दांत चूहों की नजर हुए, कमर टेढ़ी हुई, आंखों ने टका-सा जवाब दिया, होश-हवास चंपत हुए। क्या कहूं हुजूर, जब लोगों को गंड़ेरियां चूसते देखता हूं, तो मुंह देखकर रह जाता हूं।

इतने में मियां कमाली, मियां झम्मन और मियां दुन्नी भी आ पहुंचे।

कमाली-खुदावंद, आज तो अजीब खबर सुनी, हवास जाते रहे। शहर भर में खलबली मची है, अल्लाह बचाये, अबकी गरमी की फसल खैरियत से गुजरती नहीं नजर आती, आसार बुरे हैं।

नवाब-क्यों? क्यों? खैर तो है? क्या कयामत आने वाली है या आफताब सवा नेजे पर हो रहा? आखिर माजरा क्या है, कुछ बताओ तो सही।

अच्छे मिर्जा-ऐ हुजूर, यह जब आते हैं, एक नया शिगोफा छोड़ते हैं। खुदा जाने, कौन इनके कान में फूंक जाता है। ऐसी सुनाई कि नशा हिरन हो गया, जम्हाइयां आने लगीं।

कमाली-अजी, आप किस खेत की मूली हैं, हमसे तो बड़े-बड़ों के नशे हिरन हुए हैं। जब पहली तारीख आयेगी, तो आंखें खुल जायेंगी, आटे-दाल का भाव मालूम

हो जायगा। और दो–चार दिन मीठे टुकड़े उड़ा लो। वाह साहब, हम तो ढूंढ–ढांढ कर खबरें लायें, आप दिनभर पीनक में ऊंघा करें, और हमीं को उल्लू बनायें। पहली को कलई खुल जाएगी, बचा, सूरत बिगड़ जाय तो सही।

नवाब–क्या ! क्या ! पहली तारीख कैसी? अरे, मियां, तुम तो पहेलियां बुझवाते हो, आखिर पहली को क्या होने वाला है?

कमाली–ऐ हुजूर, यह न पूछिए, बस, कुछ कहा नहीं जाता। एक हलवाइन अभी जवान–जहान है। मारे हौके के औटा हुआ दूध जो पी गई तो पेट फूलकर कुप्पा हो गया। किसी ने कुछ बताया, किसी ने कुछ नुस्खा पिलाया, मगर वह अंटा–गाफिल हो गई। अब सुनिए कि जब चिता पर जाने लगी, कुलबुला कर उठ बैठी। अरे राम! अरे बाप–रे–बाप ! यू का भवा? हलवाइयों ने वह बम–चख मचाई कि कुछ न पूछिए। 'यू देखो, ल्हास हिलत है। अरे यू क्या अंधेर भवा?' आखिरकार दो–चार हलवाइयों ने जी कड़ा करके लाश को घसीट लिया और झटपट कफन फाड़कर उसे निकाला, तो टैयां सी उठ बैठी। हुजूर, कसम है खुदा की, उसने वह–वह बातें बयान कीं कि कही नहीं जाती। जब मरी तो जमराज के दूतों ने मुझे उठाकर भगवान् के पास पहुंचाया, सीताजी बैठी, पूरी बेलत रहैं, हमका देखकें भगवान् बोले कि इसका ले जाओ। मुझे उसकी बोली तो याद नहीं, मगर मतलब यह था कि पहली को बड़ा अंधेरा घुप छा जायेगा और तूफान आयेगा, जितने गुनहगार बंदे हैं सब जलाये जायेंगे, और अफीमची जिस घर में होंगे उसको फरिश्ते जला कर खाक–सियाह कर देंगे।

नवाब–मिर्जा साहब, ये बोरिया–बंधना उठाइए, आपका यहां ठिकाना नहीं। नाहक कहीं फरिश्ते मेरी कोठी फूंक दें तो कहीं का न रहूं। बस, बकचा संभालिए, कहीं और बिस्तर जमाइए।

अच्छे मिर्जा–कुरबान जाऊं हुजूर, यह बड़ा बेईमान आदमी है। हुजूर तो भोले-भाले रईस हैं, जिसने जो कहा मान लिया। भला कहीं फरिश्ते घर फूंका करते हैं? मुझ बुड्ढे को न निकालिए, कई पुश्तें इसी दरबार में गुजर गईं, अब किसका दामन पकड़ूं? अरे वाह रे झूठे, अच्छी बेपर की उड़ाई, हलवाइन मरी भी और जी भी उठी, बेसिर–पैर की बात।

नवाब–खैर, कुछ भी हो, आप अपना सुबीता करें। मेरे बाप–दादा की मिलकियत कहीं फरिश्ते फूंक दें तो बस ! आप हैं किस मरज की दवा? चारपाइयां तोड़ा करते हैं।

अच्छे मिर्जा–वाह री किस्मत? यहां जान लड़ा दी, बकरे की जान गई, खानेवाले को मजा न आया। इस शैतान से खुदा समझे, जिसने मेरे हक में कांटे बोये। खुदा करे, इसका आज के सातवें ही दिन जनाजा निकले। जैसे ही आकर बैठा, मेरी बाईं आंख फड़कने लगी, तो यह गुल खिला।

[illegible] साहब मुसाहबों को यह नादिरी हुक्म देकर जनानखाने में चले गये कि मिर्जा को [illegible]कलवा दो। उनके जाते ही मिर्जा की ले–दे शुरू हो गई।

कमाली–[illegible] साहब, अफीम का डब्बा बगल में दबाइए और चलते-फिरते नजर आ[illegible] सरकार का नादिरी हुक्म है और छोटी बेगम साहिबा महनामथ

मचा रही हैं इस बुड्ढे को खड़े-खड़े निकाल दो। सो अब खिसकिए, नहीं बुरी होगी।

झम्मन—वाजिबी बात है, सरकार चलते-चलते हुक्म दे गए थे। हम लोग मजबूर हैं, अब आप अपना सुबीता कीजिए, अभी सवेरा है, नहीं हम पर पिट्टस पड़ेगी और भाई, जब फरिश्तों के आने का डर है तो कोई तुमको क्योंकर अपने घर में रहने दे? कहीं एक जरा-सी चिनगारी रख दें, तो कहिए मकान जलकर खाक-सियाह हो गया कि नहीं, फिर कैसी होगी?

अच्छे मिर्जा—अबे, तो फरिश्ते कहीं गांव जलाया करते हैं। वह ऊंटपटांग बातें बकता है। लो साहब, हमारे रहने में जोखिम है, जो आठों पहर ड्योढ़ी पर बने रहते हैं। अच्छा अड़ंगा दिया।

झम्मन—अड़ंगा-बड़ंगा मैं नहीं जानता, अब आप खसकंत की ठहराइए, बहुत दिन मीठे टुकड़े उड़ाये, चुगलियां खा-खाकर रईस का मिजाज बिगाड़ दिया, किसी से जरा-सी खता हुई और आपने जड़ दी। 'भुस में चिनगी डाल जमालो अलग खड़ी।' पचासों भलेमानसों की रोटी ली। इनसान से गलती हो ही जाती है, यह चुगली खाना क्या माने। ओ गफूर मिर्जा ने तुम्हें भी तो उखाड़ना चाहा था?

गफूर—अरे, यह तो अपने बाप की जड़ खोदनेवाले आदमी हैं, भीतर से बाहर तक कोई तो इनसे खुश नहीं।

दुन्नी—मिर्जा, अगर कुछ हया है तो इस मुसाहबी पर लात मारो; जिस अल्लाह ने मुंह चीरा है वह रोजी भी देगा।

मुबारककदम—गफूर ! गफूर ! छोटी बेगम साहिबा का हुक्म है कि इस मुए अफीमची को शहर से निकाल दो। कहती हैं, जब तक यह न टलेगा दाहने हाथ का खाना हराम है।

अच्छे मिर्जा—शहर से निकाल दो ! तमाम शहर पर बेगम साहब का क्या इजारा है? वह अभी कल आईं, यहां इस घर में उम्र बीत गई।

कमाली—अबे ओ नमकहराम, छोटा मुंह बड़ी बात। बेगम साहिबा के कहने को दुलखता है। इतनी पड़ेंगी बेभाव की कि याद करोगे, चांद गंजी कर दी जायगी।

अच्छे मिर्जा—अब जो यहां पानी पिये उस पर लानत !

यह कहकर मिर्जा ने अफीम की डिबिया उठाई और चले। मुसाहबों ने उनके जलाने के लिए कहना शुरू किया—मिर्जा जी, कभी-कभी आ जाया कीजिएगा। एक बोला—लाइए डिबिया, मैं पहुंचा दूं। दूसरा बोला—कहिए तो घोड़ा कसवा दूं। मिर्जा ने किसी को कुछ जवाब न दिया, चुपके से चले ही गये।

इधर पहली तारीख आई तो मियां कमाली चकराये कि अब मैं झूठा बना, और साख गई। लोगों ने नवाब को चंग पर चढ़ाया कि हुजूर, जो हम कहें वह कीजिए, तो आज की बला टल जाय। नवाब ने मुसाहबों को सारा अख्तियार दे दिया। फिर क्या था, एक तरफ ब्राह्मण देवता बैठे मंत्रों का जप कर रहे हैं, हवन हो रहा है, और स्वाहा-स्वाहा की आवाज आ रही है। दूसरी तरफ हाफिज जी कुरान पढ़ रहे हैं, और दीवानखाने में महफिल जमी हुई है कि फरिश्तों को झंझोटी की धुन सुनाकर

खुश कर लिया जाय।

झम्मन–मिर्जा जी न सिधारते तो खुदा जाने इस वक्त क्या कुछ हो गया होता।

नवाब–होता क्या, कोठी की कोठी भक से उड़ जाती। अब किसी अफीमची को आने तक न दूंगा।

तीन

नवाब साहब के दरबार में दिनोंदिन आज़ाद का सम्मान बढ़ने लगा। यहां तक कि वह अक्सर खाना भी नवाब के साथ ही खाते। नौकरों को ताकीद कर दी गई कि आज़ाद का जो हुक्म हो, वह फौरन बजा लाएं, जरा भी मीनमेख न करें। ज्यों-ज्यों आज़ाद के गुण नवाब पर खुलते जाते थे, और मुसाहबों की किरकिरी होती जाती थी। अभी लोगों ने अच्छे मिर्जा को दरबार से निकलवाया था, अब आज़ाद के पीछे पड़े। यह सिर्फ पहलवानी ही जानते हैं, गदके और बिनवट के दो-चार हाथ कुछ सीख लिये हैं, बस, उसी पर अकड़ते फिरते हैं कि जो कुछ हूं, बस, मैं ही हूं। पढ़े-लिख वाजिबी ही वाजिबी हैं, शायरी इन्हें नहीं आती, मजहबी मुआमिलों में बिलकुल कोरे हैं।

एक दिन नवाब साहब के सामने एक साहब बोल उठे–हुजूर, इस शहर में एक आलिम आया है, जो मंतिक (न्याय) के जोर से झूठ को सच कर दिखाता है। मगर खुदा को नहीं मानता, पक्का मुनकिर (नास्तिक) है। मियां आज़ाद को तो मंतकी बनने का दावा है। कहिए, उस आलिम को नीचा दिखायें।

आज़ाद–हां, हां, जब कहिए तब, मुझे तो ऐसे मुनिकरों की तलाश रहती है। लाइए मंतकी साहब को, खुदा का वह पक्का सबूत दूं कि वह खुद फड़क जाय, जरा यहां तक लाइए तो सही, भागे राह न मिले। जो फिर इस शहर में मुंह दिखायें, तो आदमी न कहना।

नवाब–हां ! हां ! मीर साहब, जरा उनको फांस-फूंसकर लाइए, तो मियां आज़ाद के जौहर तो खुलें।

मीर साहब ने जोर से हुक्के के दो-चार दम लगाये और झप से उस आलिम को बुला लाए। हजारों आदमी बहस सुनने के लिए जमा हो गये, गोया बटेरों की पाली है। इतनी भीड़ थी कि थाली उछालिए तो सिर ही सिर जाए। आलिम ने आते ही पूछा कि कौन साहब बहस करेंगे? मियां आज़ाद बोले–हम हैं। अब सब लोग बेकरार हो रहे हैं कि देखें, क्या सवाल-जवाब होते हैं, चारों तरफ खिचड़ी पक रही है।

आलिम–जनाब, आप तो किसी अखाड़े के पट्ठे मालूम होते हैं, सूरत से तो ऐसा मालूम होता है कि आपको मंतिक छू भी नहीं गई।

आज़ाद–जी, सूरत पर न जाइएगा, कोई सवाल कीजिए, तो हम जवाब दें।

आलिम–अच्छा, पहले इन तीन सवालों का जवाब दीजिए–

(1) खुदा है, तो हमें नजर क्यों नहीं आता?

(2) शैतान दोजख में जलाया जायगा। भला नारी (आग से बने हुए) को आग का क्या डर? आग आग में नहीं जल सकती।

(3) जो करता है, खुदा करता है, फिर इंसान का कसूर क्या।

चारों तरफ सन्नाटा पड़ गया कि वाह, क्या आलिम है, कैसे कड़े सवाल किए हैं कि कुछ जवाब ही नहीं सूझता। बिगड़े दिल लोग दांत पीस रहे हैं कि बाहर निकले तो गरदन भी नापें। मियां आज़ाद कुछ देर तक तो चुपचाप खड़े रहे, फिर एक ढेला उठाकर उस आलिम की खोपड़ी पर मारा, बेचारा हाय करके बैठ गया। अच्छे जंगली से पाला पड़ा, मैं बहस करने आया था या लप्पा-डुग्गी। जब कुछ जवाब न सूझा तो पत्थर मारने लगे। जो मैं भी एक पत्थर खींच मारूं तो कैसी हो? नवाब साहब आप ही इंसाफ कीजिए।

नवाब–भाई आज़ाद, हमें यह तुम्हारी हरकत पसंद नहीं आई। इस ढेलेबाजी का क्या माने? माना कि मुनकिर गरदन मारने लायक होता है, मगर बहस करके कायल कीजिए, यह नहीं कि जूता खींच मारा या ढेला तानकर मारा।

कमाली–हुजूर, आलिम का जवाब देना कारेदारद है। ढेलेबाज़ी करना दूसरी बात है।

झम्मन–अजी, इसने बड़े-बड़े आलिमों को सर कर दिया, भला आज़ाद क्या इसके मुंह आएंगे।

नवाब–यह पत्थर क्यों फेंका जी, बोलते क्यों नहीं?

आज़ाद–हुजूर, मैंने तो इनके तीनों सवालों का वह जवाब दिया कि अगर कोई कदरदां होता तो गले से लगा लेता और करोड़ों रुपये इनाम भी देता, सुनिए–

(1) खुदा है, सो हमें नजर क्यों नहीं आता?

जवाब–अगर उस ढेले से उनको चोट लगी, तो चोट नजर क्यों नहीं आती?

सुभान अल्लाह का दौंगड़ा बरस गया। वाह उस्ताद ! क्या जवाब दिया है कि दांत खट्टे कर दिए।

(2) शैतान को जहन्नुम में जलाना बेकार है, वह तो खुद नारी (अग्निमय) है।

जवाब–इनसे पूछिए कि यह मिट्टी के ही पुतले हैं या नहीं? इनकी खोपड़ी मिट्टी की बनी है या रबड़ की? फिर मिट्टी का ढेला लगा, तो सिर क्यों भन्ना गया?

तमाशाइयों ने गुल मचाया–सुभान अल्लाह ! वाह मियां आज़ाद ! क्या मुंहतोड़ जवाब दिया है।

(3) जो करता है खुदा करता है।

जवाब–फिर ढेले मारने का इलजाम हम पर क्यों है?

चारों तरफ टोपियां उछलने लगीं–वाह मेरे शेर ! क्या कहना है । कहिए, अब तो आप खुदा के कायल हुए, या अब भी कुछ मीनमेख है? लाख बातों की एक बात यह है कि जब आपका सिर मिट्टी का है और मिट्टी का ढेला मारा, तब आपकी

खोपड़ी क्यों भिन्नाई? मियां मुनकिर बहुत झेंपे, समझ गए कि यहां शोहदों का जमघट है, चुपके से अपने घर की राह ली। आज़ाद की और भी धाक बंधी। अब तक तो पहलवान और फिकैत ही मशहूर थे, अब आलिम भी मशहूर हुए। नवाब ने पीठ ठोंकी-वाह, क्यों न हो ! पहले तो मैं झल्लाया कि ढेलेबाजी कैसी, मगर फिर तो फड़क गया।

मुसाहबों का यह वार भी खाली गया, तो फिर हंडिया पकने लगी कि आज़ाद को उखाड़ने की कोई दूसरी तदबीर करनी चाहिए। अगर यह यहां जम गया, तो हम सभी को निकलवा कर छोड़ेगा। यह राय हुई कि नवाब साहब से कहा जाए, हुजूर आज़ाद को हुक्म दें कि बटेरों को मुठियायें, बटेरों को लड़ाएं। फिर देखें, बचा क्या करते हैं। बगलें न झांकने लगें तो सही। यह हुनर ही दूसरा है।

आपस में यह सलाह कर एक दिन मियां कमाली बोले-हुजूर, अगर मियां आज़ाद बटेर लड़ायें, तो सारे शहर में हुजूर की धूम हो जाए।

नवाब-क्यों मियां आज़ाद, कभी बटेर भी लड़ाये हैं?

झम्मन-आज हमारी सरकार में जितने बटेर हैं, उतने तो मटियाबुर्ज के चिड़ियाखाने में भी न होंगे। एक-एक बटेर हजार-हजार की खरीद का, नोकदम के बनाने में तोड़े-के-तोड़े उड गए, सेरों मोती तो पीसकर मैंने अपने हाथों खिला दिये हैं, कुछ दिनों रोज खरल चलता था। मगर आप भी कहेंगे कि हम आदमी हैं। इस ड्योढ़ी पर इतने दिनों से हो, अब तक बटेरखाना भी न देखा? लो आओ, चलो तुमको सैर करायें।

यह कहकर आज़ाद को बटेरखाने ले गये। मियां आज़ाद क्या देखते हैं कि चारों तरफ काबुकें ही काबुकें नजर आती हैं, और काबुकें भी कैसी, हाथीदांत की तीलियां, उन पर गंगाजमुनी कलस, कारचोबी छतें, कामदार मखमली गिलाफें, रंग-बिरंगे सोने-चांदी की नन्हीं-नन्हीं कटोरियां, जिनमें बटेर अपनी प्यारी-प्यारी चोंचों से पानी पियें, पांच-पाच छह-छह सौ लागत की काबुकें थीं, खूंटियां भी रंग-बिरंगी। दुन्नी मियां एक-एक काबुक उतारकर बटेर की तारीफ करने लगे, तो पुल बांध दिये। एक बटेर को दिखाकर कहा-अल्लाह रखें, क्या मझोला जानवर है। सफशिकन (दलसंहार) जो आपने सुना हो, तो यही है। लंदन तक खबर के कागज में इनका नाम छप गया। मेरी जान की कसम, जरा इसकी आन-बान तो देखिएगा। हाय, क्या बांका बटेर है ! यह नवाब साहब के दादाजान के वक्त का है। ऐसे रईस पैदा कहां होते हैं। दम के दम में लाखों फूंक दिये, रुपये को ठीकरा समझ लिया। पतंगबाजी का शौक हुआ, तो शहर भर के पतंगबाजों को निहाल कर दिया, कनकौवे वाले बन गये। अजी, और तो और, लौंड़े, जो गली-कूचों में लंगर और लग्गे ले-लेकर डोर लूटा करते हैं रोज डोर बेच-बेचकर चखौमियां करते थे। अफीम का शौक हुआ, तो इतनी खरीदी कि टके सेर से सोलह रुपये सेर तक बिकने लगी। मालवा खाली, चीन खुक्खल, बंबई तक के गन्ने आते थे।

आज़ाद-ऐसे ही कितने रईस बिगड़ गये।

कमाली-रईसों के बनने-बिगड़ने की क्या फिक्र ! यहां तो जो शौक किया, ऐसा ही किया, फिर भला बटेरबाजी में उनके सामने कौन ठहरता। उनके वक्त का

अब यह एक सफशिकन बाकी रह गया है। बुजुर्गों की निशानी है। बस, यह समझिए कि मुहम्मद अली शाह के वक्त में खरीदा गया था। अब कोई सौ वर्ष का होगा, दो कम या दो ऊपर, मगर बुढ़ापे में भी वह दमखम है कि मुर्गे को लपककर लात दे तो वह भी चें बोल जाए। पारसाल की दिल्लगी सुनिए, नवाब साहब के मामूं तशरीफ लाये। उनमें भी रियासत की बू है। कनकौवा तो ऐसा लड़ाते हैं कि मियां विलायत उनके आगे पानी भरें। दो-दो तोले अफीम पी जायं और वही दमखम ! बटेरबाजी का भी परले सिरे का शौक है। उनका जफरपैकर तो बला का बटेर है, बटेर क्या है, शेर है। मेरे मुंह से निकल गया कि हुजूर को तो बटेरों का बहुत शौक है, करोड़ों ही बटेर देख डाले होंगे, मगर सफशिकन-सा बटेर तो हुजूर ने भी न देखा होगा। बोले, इसकी हकीकत क्या है, जफरपैकर को देखो तो आंखें खुल जायं, बढ़कर एक लात दे, तो सफशिकन क्या, आपको नोकदम पाली बाहर कर दे। हौसला हो, तो मंगवाऊं।

'दूसरे दिन पाली हुई। हजारों आदमी आ पहुंचे। शहर भर में धूम थी कि आज बड़े मार्के का जोड़ है। जफरपैकर इस ठाट से आया कि जमीन हिल गई, और मेरा तो कलेजा दहलने लगा। मगर सफशिकन ने उस दिन आबरू रख ली, जभी तो नवाब साहब इसको बच्चों से भी ज्यादा प्यार करते हैं। पहले इसको दाना खिलवा लेते हैं, फिर कहीं आप खाते हैं। एक दिन खुदा जाने; बिल्ली देखी या क्या हुआ कि अपने आप फड़कने लगा। नवाब समझे कि बूंदा हो गया, फिर तो ऐसे धारोधर रोये कि घर भर में कुहराम मच गया। मैंने नवाब साहब को कभी रोते नहीं देखा। मुहर्रम की मजलिसों में एक आंसू नहीं निकलता। जब बड़े नवाब साहब सिधारे तो आंसू की एक बूंद न गिरी। यह बटेर ही ऐसा अनमोल है। सच तो यह है कि उसने उस दिन नवाब की सात पीढ़ियों पर एहसान किया। वल्लाह, जो कहीं घट जाता, तो मैं तो जंगल की राह लेता। मियां, जग में आबरू ही आबरू तो है, और क्या। खैर साहब, जैसे ही दोनों चक्की खा चुके, जफरपैकर बिजली की तरह सफशिकन की तरफ चला। आते ही दबोच बैठा। चोटी को चोंच से पकड़कर ऐसा झपटा कि दूसरा होता तो एक रगड़े में फुर्र से भाग निकलता। नवाब का चेहरा फक हो गया, मुंह पर हवाइयां छूटने लगों कि इतने में सफशिकन लौट ही तो पड़ा। वाह मेरे शेर ! खूब फिरा !! पाली भर में आवाज गूंजने लगी कि वह मारा है ! एक लात ऐसी जमाई कि जफरपैकर ने मुंह फेर लिया। मुंह का फेरना था कि सफशिकन ने उचककर एक झंझौटी बतलाई। वाह पट्ठे, और लगा ! आखिर जफरपैकर नोकदम पाली बाहर भागा। चारों तरफ टोपियां उछल गईं। आज यह बटेर अपना सानी नहीं रखता ! मियां आज़ाद, अब आप बटेरखाना अपने हाथ में लीजिए।'

नवाब–वल्लाह, यही मैं भी कहनेवाला था।

झम्मन–काम जरा मुश्किल है।

दुन्नी–बटेरों का लड़ाना दिल्लगी नहीं, बड़े तजरबे की जरूरत है।

आज़ाद–हुजूर फरमाते हैं, तो बटेरखाने की निगरानी मैं ही करूंगा।

कहने को तो आज़ाद ने यह कह दिया; मगर न कभी बटेर लड़ाये थे, न जानते

थे कि इनको कैसे लड़ाया जाता है। घबराये, अगर कहीं नवाब के बटेर हारे तो सारी बला मेरे सिर पर पड़ेगी। कुछ ऐसी तदबीर करनी चाहिए कि यह बला टल जाए। जब शाम हुई तो वह सबकी नजरें बचाकर बटेरखाने में गये और काबुकों की खिड़कियां खोल दीं। बटेर सब फुर्र से भाग गये। पिंजरे खाली हो गये। कई पुस्तों की बसाई हुई बस्ती उजड़ गई। बटेरों को उड़ाकर आज़ाद ने घर की राह ली।

दूसरे दिन मियां आज़ाद सबेरे मुंह-अंधेरे बाजार में मटरगश्त करते हुए नवाब साहब की तरफ चले। बाजार भर में सन्नाटा ! हलवाई भट्ठी में सो रहा है, नानबाई बरतन धो रहा है, बजाजा बंद, कुंजड़ों की दूकान पर अरुई न शकरकंद, जौहरियों की दूकान में ताला पड़ा हुआ है। मगर तंबाकूवाला जगा हुआ है। मेहतर सड़क पर झाड़ू दे रहा है। मैदेवाला पिसनहारियों से आटा ले रहा है। इतने में देखते क्या हैं कि एक आदमी लुंगी बांधे, हाथ में चिलम लिये, बौखलाया हुआ घूम रहा है कि कहीं से एक चिनगारी मिल जाय तो दम लगे, धुआंधार हुक्का उड़े। जहां जाते हैं, 'फिर'-'भाग' की आवाज आती है। भाई, ऐसा शहर नहीं देखा जहां आग मांगे न मिले, जानों इसमें छप्पन टके खर्च होते हैं ! मुहल्ले वालों को गालियां देते हुए नानबाई की दूकान पर पहुंचे और बोले-बड़े भाई, एक जरी आग तो झप से दे देना, मेरा यार, ला तो झटपट।

नानबाई-अच्छा, अच्छा, तो दूकान से अलग रहो, छाती पर क्यों चढ़े बैठते हो। यहां सौ धंधे करने हैं, आपकी तरह कोई बेफिकर तो हूं नहीं कि तड़का हुआ, चिलम ली, और लगे कौड़ी दूकान मांगने ! मिल गई तो खैर, नहीं तो गालियां देनी शुरू कीं। सबेरे-सबेरे अल्लाह का नाम न राम-राम। चिलम लिये दूकान पर डट गए। वाह, अच्छी दिल्लगी है ! ऐसी ही तलब है तो एक कंडी क्यों नहीं गाड़ रखते कि रात भर आग ही आग रहे। ऐसे ही उचक्के तो चोरी करते हैं। आंख चूकी, और माल गायब ! क्या सहल लटका है कि चिलम लेकर आग मांगने आये हैं। किसी दिन मैं चिलम-विलम न तोड़ताड़ कर फेंक दूं ! तुम तड़के-तड़के दूकान पर न आया करो जी, नहीं तो किसी दिन ठायं-ठायं हो जायेगी।

हजरत की आंखों से खून टपकने लगा, दांत पीसकर रह गये। यहां से चले, तो हलवाई की दूकान पर पहुंचे और बोले-मियां एक जरा-सी आग देना, भाई हो न ! हलवाई का दूध बिल्ली पी गई थी, झल्लाया बैठा था, समझा के कोई फकीर भीख मांगने आया है। झिड़ककर बोला कि और दूकान देखो। सबेरे-सबेरे कौड़ी की पड़ गई। जाता है कि दूं धक्का ! रहे कहीं, मरे कहीं, कौड़ी मांगने यहां मौजूद। 'दुनिया भर के मुर्दे नानामऊ घाट !' अब खड़ा घूरता क्या है?

चिलमबाज-कुछ वाही हुआ है बे ! अबे, हम कोई फकीर हैं, कहीं मैं आकर एक घस्सा दूं न ! लो साहब। हम तो आग मांगने आए हैं, यह हमको भिखमंगा बनाता है। अंधा है क्या?

हलवाई-भिखमंगा नहीं, तू है कौन? लंगोटी बांध ली और चले आग मांगने ! तुम्हारे बाबा का कर्ज खाया है क्या?

बेचारे यहां से भी निराश हुए, चुपके से कान दबाये चल खड़े हुए। आज तड़के-

तड़के किसका मुंह देखा था कि जहां जाते हैं, झौड़ हो जाती है। इतने में देखा कि एक सुनार की दूकान पर आग दहक रही है। उधर लपके। सुनार दूकान पर न था। यह तो हुक्के की फिक्र में चौधियाये हुए थे ही, झप से दूकान पर चढ़ गये। सुनार भी उसी वक्त आ गया और इनको देखकर आगभभूका हो गया। तू कौन है बे? वाह, खाली दूकान पर क्या मजे से चढ़ आए ! (एक धप जमाकर) और जो कोई अदद जाता रहता? इतने में दस-पांच आदमी जमा हो गये। क्या है? क्या है मियां? क्यों भले आदमी की आबरू बिगाड़े देते हो?

सुनार–है क्या ! यह हमारे दूकान पर चोरी करने आये थे।

चिलमबाज–मैं चोर हूं, चोर की ऐसी ही सूरत होती है?

एक आदमी–कौन ! तुम ! तुम तो हमें पक्के चोर मालूम होते हो। अच्छा, तुम फिर उनकी दूकान पर गये क्यों? दूकानदार नहीं था, तो वहां तुम्हारा क्या काम? जो कोई गहना ले भागते, तो यह तुम्हें कहां ढूंढते फिरते?

सुनार–साहब, इनका फिर पता कहां मिलता, जाते जमुना उस पार। चलो थाने पर।

लोगों ने सुनार को समझाया, भाई, अब जाने दो। देखो जी, खबरदार, अब किसी की दूकान पर न चढ़ना, नहीं पथे जाओगे। सुनार ने छोड़ दिया। जब आप चलने लगे, तो उसे इन पर तरस आ गया। बोला, अच्छा आग लेते जाओ। हजरत ने आग पाई और घर की राह ली। तड़के-तड़के अच्छी बोहनी हुई, चोर बने, मार खाई, झिड़के गए, थाने जाते-जाते बचे, तब कहीं आग मिली।

मियां आज़ाद यह दिल्लगी देखकर आगे बढ़े और नवाब की ड्योढ़ी पर आये।

नवाब–आज इतना दिन चढ़ गया, कहां थे?

आज़ाद–हुजूर, आज बड़ी दिल्लगी देखने में आई, हंसते-हंसते लोट जाइएगा। तलब भी क्या बुरी चीज है।

यह कहकर आज़ाद ने सारी दास्तान सुनाई।

नवाब–खूब दिल्लगी हुई। आग के बदले चपतें पड़ीं। अरे मियां, जरा खोजी को बुलाना। हां, जरा खोजी के सामने सुनाना। किसी दिन यह भी न पिटें।

खोजी नवाब के दरबार के मसखरे थे। ठेंगना कद, काले कौए का-सा रंग, बदन पर मांस नहीं, पर आंखों में सुरमा लगाये हुए। लुढ़कते हुए आए और बोले–गुलाम को हुजूर ने याद क़िया है?

नवाब–हां, इस वक्त किस फिक्र में थे?

खोजी–खुदावंद, अफीम घोल रहा था, और कोई फिक्र तो हुजूर की बदौलत करीब नहीं फटकने पाती। मैं फिक्र क्या जानूं, 'जोरू न जांता, अल्लाह मियां से नाता।'

नवाब–अच्छा खोजी, इस हौज में नहाओ तो एक अशर्फी देता हूं।

खोजी–हुजूर, अशर्फियां तो आपकी जूतियों के सदके से बहुत-सी मिल जायंगी, मगर फिर जीना कठिन हो जायेगा। न मरे सही, लेकिन, 'नकटा जिया बुरे हवाल !' न साहब, मुझे तो कोई एक गोते पर एक अशर्फी दे, तो भी पानी में न पैठूं, पानी की सूरत देखते ही बदन कांप उठता है।

दुन्नी-कैसे मर्द हो कि नहाने से डरते हो !

खोजी-हम नहीं नहाते तो आप कोई काजी हैं?

आज़ाद-अजी, सरकार का हुक्म है?

खोजी-चलिए, आपकी बला से। कहने लगे सरकार का हुक्म है। फिर कोई अपनी जान दे।

आज़ाद-हुज़ूर, जो इस वक्त यह हौज में धम से न कूद पड़े, तो अफीम इन्हें न मिले।

खोजी-आप कौन बीच में बोलने वाले होते हैं? अरसठ बरस से तो मैं अफीम खाता आया हूं, अब आपके कहने से छोड़ दूं, तो कहिए, मरा या जिया?

नवाब-अच्छा भाई, जाने दो। दूध खाओगे?

खोजी-वाह खुदावंद, नेकी और पूछ-पूछ। लेकिन जरी मिठास खूब हो। शाहजहांपुर की सफेद शक्कर या कालपी की मिश्री घोलिएगा। अगर थोड़ा-सा केवड़ा भी गबड़ दीजिए तो पीते ही आंखें खुल जायें।

इतने में एक चोबदार घबराया हुआ आया और बोला-खुदावंद, गजब हो गया। जांबख्शी हो तो अर्ज करूं, सब बटेर उड़ गए।

नवाब-अरे ! सब उड़ गए?

चोबदार-क्या कहूं, हुज़ूर, एक का भी पता नहीं।

मुसाहबों ने हाय-हाय करनी शुरू की, कोई सिर पीटने लगा, कोई छाती कूटने लगा। नवाब ने रोते हुए कहा, भाई और जो गये सो गये, मेरे सफशिकन को जो कोई ढूंढ लाये, हजार रुपये नकद दूं। इस वक्त मैं जीते जी मर मिटा। अभी सांडनी-सवारों को हुक्म दो कि पचकोसी दौरा करें। जहां सफशिकन मिले, समझा-बुझा कर ले ही आएं।

झम्मन-उनको समझाना, हुज़ूर मुश्किल है। वह तो अरबी में बातें करते हैं। सारा कुरान उन्हें याद हैं। उनसे कौन बहस करेगा?

नवाब-मुझे तो उससे इश्क हो गया था जी, वह नोकीली चोंच, वह अकड़-अकड़ कर काकुन चुनना ! सैकड़ों पालियां लड़ीं, मगर कोरा आया। किस बांकपन से झपटकर लात देता था कि पाली भर थर्रा उठती थी। उसकी बिसात ही क्या थी, मझोला जानवर, लेकिन मैदान का शेर। यह तो मैं पहले ही से जानता था कि यह बटेर की सूरत में किसी फकीर की रूह है। अब सुना कि नमाज भी पढ़ता था।

झम्मन-हुज़ूर को याद होगा कि रमजान के महीने में उसने दिन के वक्त दाना तक न छुआ; हुज़ूर समझे थे कि बूंदा हो गया, मगर मैं ताड़ गया कि रोजे से है।

खोजी-खुदावंद, अब मैं हुज़ूर से कहता हूं कि दस-पांच दफा मैंने अफीम भी पिला दी; मगर वल्लाह, जो जरा भी नशा हुआ हो।

कमाली-हुज़ूर, यकीन जानिए, पिछले पहर से सुबह तक काबुक से हक-हक की आवाज आया करती थी। गफूर, तुमको भी तो हमने कई बार जगाकर सुनाया था कि सफशिकन खुदा को याद कर रहे हैं।

नवाब-अफसोस, हमने उसे पहचाना ही नहीं। दिल डूबा जाता है, कोई पंखा

झलना।

मुसाहब—जल्दी पंखा लाओ।

नवाब—

प्रीतम जो मैं जानती कि प्रीत किये दुःख होय,
नगर ढिंढोरा पीटती कि प्रीत करै जनि कोय।

खोजी—(पीनक से चौंककर) हां उस्ताद, छेड़े जा। इस वक्त तो मियां शोरी की रूह फड़क गई होगी।

नवाब—चुप, नामाकूल। कोई है। इसको यहां से टहलाओ। यह रईसों की सोहबत के काबिल नहीं। मुझको भी कोई गवैया समझा है। यहां तो जी जलता है, इनके नजदीक कौवाली हो रही है।

खोजी—खुदावंद, गुलाम तो इस दम अपने आपे में नहीं। हाय, सफशिकन की काबुक खाली हो और मैं अपने आपे में रहूं ! हुजूर ने इस वक्त मुझ पर बड़ा जुल्म किया।

नवाब—शाबाश खोजी, शाबाश ! मुआफ करना, मैं कुछ और ही समझा था। क्यों जी, सांडनी-सवार दौड़ाया गया कि नहीं?

सवार—हुजूर, जाता तो हूं, मगर वह मेरी क्या सुनेंगे, कोई मौलवी भी तो साथ भेजिए, मैं तो कुछ ऊंट ही चढ़ना जानता हूं, उनसे दलील कौन करेगा भला !

आज़ाद—किसी अच्छे मौलवी को बुलवाना चाहिए।

मुसाहिबों ने एक मौलाना साहब को तजवीजा। मगर यारों ने उनसे कुल दास्तान नहीं बयान की। चोबदार ने मकान पर जाकर सिर्फ इतना कहा कि नवाब साहब ने आपको याद किया है। मौलवी साहब उसके साथ हो लिये और दरबार में आकर नवाब साहब को सलाम किया।

नवाब—आपको इसलिए तकलीफ दी कि मेरी आंखों का नूर, मेरे कलेजे का टुकड़ा नाराज होकर चला गया है। बड़ा आलिम और दीनदार है। बहस करने में कोई उससे पेश नहीं पाता, आप जाइए और उसको माकूल करके ले आइये।

मौलाना—मां-बाप का कड़ा हक होता है। वह कैसे नादान आदमी हैं?

खोजी—मौलाना साहब, वह आदमी नहीं हैं, बटेर हैं। मगर इल्म और अक्ल में आदमियों के भी कान काटते हैं।

कमाली—सफशिकन का नाम तो मौलाना साहब, आपने सुना होगा। वह तो दूर-दूर तक मशहूर थे। जनाब, बात यह है कि सरकार का बटेर सफशिकन कल काबुक से उड़ गया। अब यह तजवीज हुई है, कि एक-एक सांड़नी-सवार जाय और उसे समझा-बुझा कर ले आए। मगर ऊंटवान तो फिर ऊंटवान, वह दलील करना क्या जाने, इसलिए आप बुलाये गए हैं कि सांडनी पर सवार हों, और उनको किसी तदबीर से ले आयें।

मौलाना—ठीक, आप सब के सब नशे में तो नहीं हैं? होश की बातें करो। खुद मसखरे बनते हो। बटेर भी आलिम होता है, वह भी कोई मौलवी है, लाहौल ! अच्छे-अच्छे गाउदी जमा हैं, बंदा जाता है।

नवाब—यह किस कोढ़मगज को लाये थे जी? खासा जांगलू है।

आज़ाद-अच्छा, हुजूर भी क्या याद करेंगे कि इतने बड़े दरबार में एक भी मंतकी न निकला। अब गुलाम ने बीड़ा उठा लिया कि जाऊंगा और सफशिकन को लाऊंगा। मुझे एक सांडनी दीजिए, मैं उसे खुद ही चला लूंगा। खर्च के लिए कुछ रुपये भी दिलवाइये, न जाने कितने दिन लग जाएं।

नवाब-अच्छा, आप घर जाइये और लैस होकर आइए। मियां आज़ाद घर गये तो और मुसाहिबों में खिचड़ी पकने लगी-यार, यह तो बाजी जीत ले गया। कहीं से एक-आध बटेर पकड़ कर लाएगा और कहेगा, यही सफशिकन है। फिर तो हम सब पर शेर हो जायेगा। हमको-आपको कोई न पूछेगा। खोजी जाकर नवाब साहब से बोले-हुजूर, अभी मियां आज़ाद दो दिन से इस दरबार में आये हैं, उनका एतबार क्या? जो सांड़नी ही लेकर रफूचक्कर हों, तो फिर कोई कहां उनका पता लगाता फिरेगा?

कमाली-हां खुदावंद, कहते तो सच हैं।

झम्मन-खोजी सूरत ही से अहमक मालूम होते हैं, मगर बात ठिकाने की कहते हैं। ऐसे आदमी का ठिकाना क्या?

दुन्नी-हम तो हुजूर को सलाह न देंगे कि मियां आज़ाद को सांडनी और सफर खर्च दीजिए। जोखिम की बात है।

नवाब-चलो, बस, बहुत न बको। तुम खुद जैसे हो, वैसा ही दूसरों को समझते हो। आज़ाद की सूरत कहे देती है कि कोई शरीफ आदमी है, और मान लिया कि सांडनी जाती ही रहे, तो मेरा क्या बिगड़ जाएगा? सफशिकन पर से लाखों सदके हैं। सांडनी की हकीकत ही क्या।

इतने में मियां आज़ाद घर से तैयार होकर आ गये। अशर्फियों की एक थैली खर्च के लिए मिली। नवाब ने गले लगाकर रुखसत किया। मुसाहब भी सलाम बजा लाए। आज़ाद सांड़नी पर बैठे और सांडनी हवा हो गई।

चार

आज़ाद यह तो जानते ही थे कि नवाब के मुसाहबों में से कोई चौक के बाहर जाने वाला नहीं इसलिए उन्होंने सांड़नी तो एक सराय में बांध दी और आप अपने घर आये। रुपये हाथ में थे ही, सवेरे घर से उठ खड़े होते, कभी सांडनी पर, कभी पैदल शहर और शहर के आस-पास के हिस्सों में चक्कर लगाते, शाम को फिर सांडनी सराय में बांध देते और घर चले आते। एक रोज सुबह के वक्त घर से निकले तो क्या देखते हैं कि एक साहब केचुललेट का धानी रंगा हुआ कुरता, उस पर रुपये गजवाली महीन शरबती का तीन कमरतोई का चुस्त अंगरखा, गुलबदन का चूड़ीदार घुटन्ना पहने, मांग निकाले, इत्र लगाये, माशे भर की नन्हीं-सी टोपी आलपीन से अटकाये, हाथों में मेंहदी, पोर-पोर छल्ले, आंखों में सुर्मा, छोटे पंजे का मखमली

जूंता पहने, एक अजब लोच से कमर लचकाते, फूंक-फूंककर कदम रखते चले आते थे। दोनों ने एक-दूसरे को खूब जोर से घूरा। छैले मियां ने मुसकिराते हुए आवाज दी—ऐ, जरी इधर तो देखो, हवा के घोड़े पर सवार हो ! मेरा कलेजा बल्लियों उछलता है। भरी बरसात के दिन, कहीं फिसल न पड़ो, तो कहकहा उड़े।

आज़ाद—आप अपना मतलब कहिए, मेरे फिसलने की फिक्र न कीजिए।

छैला—गिरिएगा, तो मुझसे जरूर पूछ लीजिएगा।

आज़ाद—बहुत खूब, जरूर पूछूंगा, बल्कि आपको साथ लेकर गिरूं तो सही।

छैला—खुदा की कसम, आपके काले कपड़ों से मैं समझा कि बनैला कुसुम के खेत से निकल पड़ा।

आज़ाद—और मैं आपको देखकर यह समझा कि कोई जनाना मटकता जाता है।

छैला—वल्लाह, आपकी धज ही निराली है। यह डबल कोट और लक्कड़तोड़ बूट ! जांगलू मालूम होते हो। इस वक्त ऐसे बदहवास कहां बगटूट भागे जाते हो? सच कहिएगा, आपको हमारी जान की कसम।

आज़ाद—आज प्रोफेसर लॉक संस्कृत पर एक लेक्चर देने वाले हैं, बड़े मशहूर आलिम हैं। यूरोप में इनकी बड़ी शोहरत है।

छैला—भाई, कसम खुदा की कितने भोंडे हो। प्रोफेसर के मशहूर होने की एक ही कही। हम इतने बड़े हुए, कसम ले लो जो आज तक नाम भी सुना हो। क्या दुन्नीखां से ज्यादा मशहूर हैं? भई, जो कहीं 'तुम्हारे घूघरवाले बाल' एक दफा भी उसकी जबान से सुन लो, तो उम्र-भर न भूलो। वल्लाह, क्या टीपदार आवाज है; मगर तुम ऐसे कोढ़मगजों को गलेबाजी से क्या वास्ता, तुम तो प्रोफेसर साहब के फेर में हो।

आज़ाद—तुम्हारी जिंदगी राग और लै ही में गुजरेगी। इस नाच और रंग ने आपकी यह गति बनाई कि मूंछ और दाढ़ी कतरवाई, मेंहदी लगवाई और मर्द से औरत बन गये। अरे, अब तो मर्द बनो, इन बातों से बाज आओ।

छैला—जी, तो आपके प्रोफेसर लॉक के पास चला जाऊं? अपने को आपकी तरह गड्डामी बनाऊं। किसी गली-कूचे में निकल जाऊं तो तालियां पड़ने लगें।

आज़ाद—अब यह फरमाइए कि इस वक्त आप कहां के इरादे से निकले हैं?

छैला—कल रात को तीन बजे तक एक रंगीले दोस्त के यहां नाच देखता रहा। वह प्यारी-प्यारी सूरतें देखने में आईं कि वाह जी वाह ! किस काफिर का उठने को जी चाहता हो। जलसा बरखास्त हुआ तो बस, कलेजे को दोनों हाथों से थाम कर निकले; लेकिन रात भर कानों में छमाछम की आवाज आया की। परियों की प्यारी-प्यारी सूरत आंखों में फिरा की। अब इस वक्त फिर जाते हैं, जरा सेक आयें, भैरवी उड़ रही होगी—

'रसीले नैनों ने फंदा मारा।'

आज़ाद—कल फुरसत हो तो हमसे मिलिएगा।

छैला—कल तक तो मेरी नींद का खुमार ही रहेगा।

आज़ाद—अच्छा, परसों सही।

छैला—परसों? परसों तो खुदा भी बुलाये तो बंदा न जाने का। परसों नवाब साहब के यहां बटेरों की पाली है, महीनों से बटेर तैयार हो रहे हैं।

आज़ाद—अच्छा साहब, परसों न सही, मंगल को सही।

छैला—मंगल को तड़के से बाने की कनकइयां लड़ेंगी, अभी बनारस से बाना मंगाया है, माही जाल की कनकइयां ऐसी सधी हैं कि हरदम काबू में, मोड़ो, गोता दो, खींचो, जो चाहे सो करो जैसे खेत का घोड़ा।

आज़ाद—अच्छा, बुध को फुरसत है !

छैला—वाह-वाह, बुध को तो बड़े ठाट से भठियारियों की लड़ाई होगी। देखिए तो, कैसी-कैसी भठियारियां किस बांकी अदा से हाथ चमकाकर, उंगलियां मटकाकर लड़ती हैं और कैसी-कैसी गालियां सुनाती हैं कि कान के कीड़े मर जायें।

आज़ाद—बिरस्पत को तो जरूर मिलिएगा?

छैला—जनाब, आप तो पीछे पड़ गये, मिलूं तो सब कुछ जब, फुरसत भी हो। यहां मरने तक की तो फुरसत नहीं, अब की नौचंदी जुमेरात है, बरसों से मन्नतें मानी हैं, आपको दीन-दुनिया की खबर तो है नहीं।

आज़ाद—तो मालूम हुआ, आपसे मुलाकात नहीं होगी। आज मुर्ग लड़ाइएगा, कल पतंग लड़ाइएगा, कहीं गाना होगा, कहीं नाच होगा, आप न हों तो रंग क्योंकर जमे। मेला-ठेला तो आपसे कोई काहे को छूटता होगा फिर भला मिलने की कहां फुरसत? रुखसत।

छैला—ऐ, तो अब रूठे क्यों जाते हैं?

आज़ाद—अब मुझे जाने दीजिए, आपका और हमारा मेल जैसे गन्ना और मदार का साथ। जाइए, देखिए, भैरवी का लुत्फ जाता है।

छैला—जनाब, अब नाच-गाने का लुत्फ कहां, वह चमक-दमक अब कहां, दिल ही बुझ गया। जो लुत्फ हमने देखे हैं, वह बादशाहों को ख्वाब में नसीब न हुए होंगे। यह कैसरबाग अदन को मात करता था। परियों के झुंड, हसीनों के जमघट, रात को दिन का समां रहता था। अब यहां क्या रह गया ! गली-कूचों में कुत्ते लोटते हैं। एक वह जमाना था कि साकिनों के मिजाज न मिलते थे। बांके-तिरछे रईसजादे एक-एक दम की दो-दो अशर्फियां फेंक देते थे। अब तो शहर भर में इस सिरे से उस सिरे तक चिराग लेकर ढूंढ़िए तो मैदान खाली है। कल नयी सड़क की तरफ जा निकला, तो नुक्कड़ पर एक हाथी बंधा देखा। पूछा, तो मालूम हुआ कि बी हैदरजान का हाथी है। कसम खुदा की, ऐसा खुश हुआ कि आंखों में आंसू आ गया।

खुदा आबाद रक्खे लखनऊ को फिर गनीमत है;
नजर कोई न कोई अच्छी सूरत आ ही जाती है।

आज़ाद—अच्छा, यह सब जलसे आपने देखे और अब भी आंखें सेका ही करते हैं; मगर सच कहिएगा, बने या बिगड़े, बसे या उजड़े, नेकनाम हुए या बदनाम? यहां तो नतीजा देखते हैं।

छैला—जनाब यह तो बड़ा कड़ा सवाल है। सच तो यों है कि उम्र भर इस

नाचरंग ही के फंदे में फंस रहे, दिन-रात तबला, सारंगी, बायां, ढोल, सितार की धुन में मस्त रहे। खुदा की याद ताक पर, इल्म छप्पर पर, छटे हुए शोहदे बन बैठे; लेकिन अब तो पानी में डूब गए, ऊपर एक अंगुल हो तो, और एक हाथ हो तो, बराबर है। आप लोग इस भरोसे में हों कि हमें आदमी बनायें तो यह खैर-सलाह है। बूढ़े तोते भी कहीं राम-राम पढ़ते हैं?

आज़ाद-खैर, शुक्र है कि आप अपने को बिगड़ा हुआ समझते तो हैं। कड़ुवे न हूजिए तो कहूं कि इस जनाने भेस पर लानत भेजिए, यह लोच, यह लचक, यह मेंहदी, यह मिस्सी, कुछ औरतों ही को अच्छी मालूम होती है। जरा तो इस दाढ़ी-मूंछ का खयाल करो।

छैला-यह भर्रे किसी ऐसे-वैसे को दीजिए, यहां बड़े-बड़ों की आंखें देखी हैं। आपके झांसे में कोई अनारी आए, हम पर चकमा न चलने का।

आज़ाद-आपको डोम-डारियों ही की सोहबत पसंद आई या किसी और की भी? लखनऊ में तो हर फन के आदमी मौजूद हैं।

छैला-हम तो हमेशा ऐसी ही टुकड़ी में रहे। घरफूंक तमाशा देखा। लंगोटी में फाग खेला। मियां शोरी के टप्पे, कदर मियां की ठुमरियां, घसीट खां की टीपदार आवाज, प्यारे खां का खयाल छोड़कर जायं कहां? सारंगी-मंजीरे की आवाज सुनी तो छप से घुस पड़े, मसजिद में अजान हुआ करे, सुनता कौन है। बहुत गुजर गई, थोड़ी बाकी है।

आज़ाद-लखनऊ में ऐसे-ऐसे आलिम पड़े हैं कि जिनका नाम आफताब की तरह सारी खुदाई में रोशन है; कर्बला और मदीने तक के समझदार लोग इन बुजुर्गों का कलाम शौक से पढ़ते हैं। मुफ्ती सादुल्लाह साहब, सैयद मुहम्मद साहब, वगैरह उल्मा का नाम बच्चे-बच्चे की जबान पर है। अब शायरों को देखिए, ख्वाजा हैदरअली आतश, शेख नासिख अपने फन के खुदा थे। मरसिंया कहना तो लखनऊ वालों का हिस्सा है। मीर अनीस साहब को खुदा बख्शे, जबान की सफाई तो यहां खत्म हो गई। मिर्जा दबीर तो गोया अपने फन के मवज्जिद थे। नसीम और सबा ने आतश को भड़का दिया। गोया तो गोया शायरी के चमन का बुलबुल था। मिर्जा रज्जबअली बेग सरूर ने वह नस्र लिखी कि कलम तोड़ दिए। यहां के कारीगरों के भी झंडे गड़े हैं। कुम्हार तो ऐसे दुनिया के पर्दे पर न होंगे। मिट्टी की मूरतें ऐसी बनाईं कि मुसव्विरों की किरकिरी हो गई। बस, यही मालूम होता है कि मूरत बोला ही चाहती है। जिस अजायबघर में जाइएगा, लखनऊ के कुम्हारों की कारीगरी जरूर पाइएगा। खुशनसीबों ने वह कमाल पैदा किया कि एक-एक हर्फ की पांच-पांच आशर्फियां लीं। बांके ऐसे कि शेर का पंजा तोड़ डालें, हाथी को डपटें तो चिग्घाड़कर मंजिलों भागें। रुस्तम और इस्फंदियार को चुटकियों में लड़ा दें। उस्ताद मुहम्मदअली खां फिकैत, छरहरा बदन, लेकिन गदका हाथ में आने की देर थी। परे के परे दम में साफ कर दिए। कड़ककर तमाचे का तुला हाथ लगाया, तो दुश्मन का मुंह फिर गया। अखाड़े में गदका लेकर खड़े हुए, तो मालूम हुआ, बिजली चमक गई। एक दफा ललकार दिया कि रोक, बैठ गई ! देख संभल। खबरदार, यह आई, वह आई, वह पड़ गई।

वाह-वाह की आवाज सातवें आसमान जा पहुंची। बला की सफाई, गजब की सफाई थी। जो मुंह चढ़ा, उसने मुंह की खाई। सामने गया और शामत आई। कामदानी वह ईजाद की कि उड़ीसा और कोचीन तक धूम हो गई। लेकिन आपको तो न इल्म से सरोकार, न फन से मतलब; आप तो ताल-सुर के फेर में पड़े हैं।

छैला-हजरत, इस वक्त भैरवी सुनने जाता था और 'जागे भाग प्यारा नजर आया' सुनने का शौक चर्राया था; लेकिन आपने पादरियों की तरह बकवास करके काया पलट दी। आप जो हमें राह पर लाते हों, तो इतना मान जाओ कि जरा कदम बढ़ाये हुए, हमारे साथ हाथ में हाथ दिए हुए, पाटेनाले तक चले चलो, देखूं तो परिस्तान से क्योंकर भाग आते हो? उन्हीं हसीनों का सिजदा ना करो, तो कुछ जुर्माना दूं। उस इन्द्र के अखाड़े से कोरे निकल आओ, तो टांग की राह निकल जाऊं।

आज़ाद-(घड़ी जेब से निकालकर) ऐं! आठ पर इक्कीस मिनट! इस खुशगप्पी ने आज बड़ा सितम ढाया, लेक्चर सुनने में न आया। मुफ्त की बकबक झकझक ! लेक्चर सुनने काबिल था।

छैला-अल्लाह जानता है, इस वक्त कलेजे पर सांप लोट रहे हैं ! न जाने तड़के-तड़के किस मनहूस का मुंह देखा है कि भैरवी के मजे हाथ से गये?

आज़ाद-आप भी निरे चोंच ही रहे। इतनी देर तक समझाया, सिरमगजन की, मगर वाह रे कुत्ते की दुम, बारह बरस बाद भी वह टेढ़ी ही निकली।

छैला-तो मेरे साथ आइए न, बगलें क्यों झांकते हो? जब जाने कि निलोह निकल आओ।

आज़ाद-अच्छा, चलिए। देखें, कौन-सा हसीन अपनी निगाहों के तीर से हमें घायल करता है ! बरसों के खयालों को कोई क्या मिटा देगा? हम, और किसी के थिरकने पर फिदा हो जायं ! तोबा ! कोई ऐसा माशूक तो दिखाइए, जिसे हम प्यार करें। हमारा माशूक वह है जिसमें कमाल हो। जुल्फ और चोटी पर कोई और सिर धुनते हैं।

खुलासा यह कि आज़ाद छैले मियां के साथ हाफिज जी के मकान में जा पहुंचे। महफिल सजी हुई थी। तीन-चार हसीनें मिलकर मुबारकबाद गाती थीं। यही मालूम होता था कि राग और रागिनी हाथ बांधे खड़ी हैं। जिसे देखो, गर्दन हिलाता है। पाजेब की छमाछम दिल को रौंदती है, कोई इधर से उधर चमक जाती है, कोई ऊंचे सुरों में तान लगाती है, कोई सीने पर हाथ रखकर 'गहरी नदिया' बताती है, कोई नशीली आंखों के इशारे से 'नैना रसीले' की छवि दिखाती है, धमा-चौकड़ी मची हुई है। छैले मियां ने एक हसीन से फरमाइश की कि हजरत मीर की यह गजल गाओ-

गैर के कहने से मारा उसने हम को बे-गुनाह;
यह न समझा वह कि वाकया में भी कुछ था या न था।
याद ऐयामे कि अपनी रोजोशब की जायबाश;
था दरे बाजे बयाबां, या दरे मयखाना था।

इस गजल ने वह लुत्फ दिखाया और ऐसा रंग जमाया कि मियां आज़ाद तक

'ओ हो !' कह उठते थे; इसके बाद एक परी ने यह गजल गायी–

हाल खुले तो किस तरह यार की वज्दे-नाज़ का;
जो है यहां वह मस्त है अपनी ही सोजोसाज़ में।

इस गजल पर जलसे में कुहराम मच गया। एक तो गजल हक्कानी, दूसरे हसीना की उठती जवानी, तीसरे उसकी नाजुकबयानी। लोग इतने मस्त हुए कि झूम-झूम कर यही शेर पढ़ते थे–

हाल खुले तो वह किस तरह यार ही वज्दे-नाज़ का,
जो है यहां वह मस्त है अपनी ही सोजोसाज़ में।

अब सबको शक की जगह यकीन हो गया कि अब किसी का रंग न जमेगा। हर तरफ से हक्कानी गजलों की फरमाइश है। न धुर्पद का खयाल, न टप्पे की फिक्र, न भैरवी की धुन, न पक्के गाने का जिक्र, बस हक्कानी गजलों की धूम है।

अब दिल्लगी देखिए कि बुड्ढे-जवान सब के सब बेधड़क उस मोहनी को घूर रहे हैं कोई उससे आंखें लड़ाता है, कोई सिर धुनता है, कोई ठंडी आहें खींचता है। दो-चार मनचले रईसों ने हसीनों को बुलाकर बड़े शौक से पास बैठाया। नोंक-झोंक, हंसी-मजाक, चुहल-दिल्लगी, धौल-धप्पा होने लगा। हाफिज जी भी बेसींग के बछड़े बने हुए मजे से चौमुखी लड़ रहे हैं।

बूढ़े मियां–आजकल के लड़कों को भी हवा लगी है।

एक जवान–जनाब, अब तो हवा ही ऐसी चली है कि जवान तो जवान, बुड्ढों तक को बुढ़भस लगा है। सौ बरस का सिन, चार के कंधों पर लदने के दिन, मगर जवानी ही के दम भरते हैं।

बूढ़े मियां–अजी, हम तो जमाने भर के न्यारिये हैं, हमें कोई क्या चंग पर चढ़ायेगी; मगर तुम अभी जुमा-जुमा आठ दिन की पैदायश, ऐसा न हो, उनके फेर में आ जाओ; फिर दीन-दुनिया दोनों को रो बैठो।

जवान–वाह जनाब, आपकी सोहबत में हम भी पक्के हो गये हैं; ऐसे कच्चे नहीं कि हम पर किसी के दांव-पेंच चलें।

बूढ़े मियां–कच्चे-पक्के के भरोसे न रहिएगा, इन हसीनों का बड़े-बड़े जाहिदों ने सिजदा किया है, तुम किस खेत की मूली हो।

जवान–इन बुतों को हम फकीरों से भला क्या काम है, ये तो तालिब ज़र के हैं और या खुदा का नाम है।

हसीना–इन बड़े मियां से कोई इतना तो पूछो कि बाल-बाल गल कर बर्फ-सा सफेद हो गया और अब तक सियाहकारी न छोड़ी, यह समझाते किस मुंह से हैं? इनकी सुनता कौन है ! जरा शेख जी, बहुत बढ़-बढ़कर बातें न बनाया कीजिए; शाहछड़े वाली गली में रोज बीस-बीस चक्कर होते हैं; ऐ, तुम थकते भी नहीं?

हाफिज जी–शेख जी जहां बैठते हैं, झगड़ा जरूर खरीदते हैं। आप हैं कौन? आये कहां से नासेह बन के ! अच्छा, बी साहब, अपना कलाम सुनाइए; मगर शर्त यह है कि जब हम तारीफ करें तो झुक के सलाम कीजिए।

हसीना–आप हैं तो इसी लायक कि दूर ही से झुककर सलाम कर लें।

इधर तो यह बातें हो रही थीं, उधर दूसरी टुकरी में गाली और फक्कड़ का छर्रा चलता था। तीसरे में धौल-धप्पा होता था। लड़के, जवान, बूढ़े बेधड़क एक-दूसरे पर फबतियां कसते थे। इतने में दोपहर की तोप दगी, जलसा बरखास्त, तबल्चियों ने बोरिया-बंधना उठाया। चलिए, सन्नाटा हो गया।

पांच

मियां आज़ाद की सांड़नी तो सराय में बंधी थी। दूसरे दिन आप उस पर सवार होकर घर से निकल पड़े। दोपहर ढले एक कस्बे में पहुंचे। पीपल के पेड़ के साये में बिस्तर जनाया। ठंडे-ठंडे हवा के झोंकों से जरा दिल को ढारस हुई, पांव फैलाकर लंबी तानी, तो दीन-दुनिया की खबर नहीं। जब खूब नींद भर कर सो चुके, तो एक आदमी ने जगा दिया। उठे, मगर प्यास के मारे हलक में कांटे पड़ गए। सामने इदारे पर एक हसीन औरत पानी भर रही थी। हजरत भी पहुंचे।

आज़ाद–क्यों नेकबख्त, हमें एक जरा-सा पानी नहीं पिलातीं। भरते न बनता हो तो लाओ हम भरें। तुम भी पियो, हम भी पियें, एहसान होगा।

औरत ने कोई जवाब न दिया, तीखी चितवन से देखकर पानी भरती रही।

आज़ाद–'सखी से सूम भला, जो देवे तुरत जवाब।' पानी न पिलाओ, जवाब तो दे दो। यह कस्बा तो अपने हक में कर्बला का मैदान हो गया। एक बूंद पानी को तरस गए।

औरत ने फिर जवाब न दिया। पानी भर कर चली।

आज़ाद–भई, अच्छा गांव है ! जो बात है, निराली ! एक लुटिया पानी न मिला, वाह रहीं किस्मत ! लोग तो इस भादों की जलती-बलती धूप में पौसरे बैठाते हैं, केवड़ा पड़ा हुआ पानी पिलाते हैं, यहां कोई बात तक नहीं सुनता।

मियां आज़ाद को हैरत थी कि इस कमसिन नाजनीन का यहां इस बीराने में क्या काम। साये की तरह साथ हो लिये। वह कनखियों से देखती जाती थी; मगर मुंह नहीं लगाती थी। बारे, सड़क से दायें हाथ पर एक फाटक के सामने वह बैठ गई और पेड़ के साये में सुस्ताने लगी। आज़ाद ने कहा–अगर यह बर्तन भारी हो तो लाओ मैं ले चलूं, इशारे की देर है। कसम लो, जो एक बूंद भी पीऊं, गो प्यास के मारे कलेजा मुंह को आता है और दम निकला जाता है; लेकिन तुम्हारा दिल दुखाना मंजूर नहीं।

हसीना ने इसका भी जवाब न दिया। फिर हिम्मत करके उस बर्तन को उठाया और फाटक के अंदर हो रही। मियां आज़ाद भी चुपके-चुपके दबे पांव उसके पीछे-पीछे गए। हसीना एक खुले हुए छोटे से बंगले में जा बैठी और आज़ाद दरख्तों की आड़ में दबक रहे कि देखें, यहां क्या गुल खिलता है। उस बंगले के चारों तरफ खाई खुदी हुई थी, इर्द-गिर्द सरपत बोई हुई थी, ऐसी घनी कि चिड़ियां तक का

गुजर न हो; और वह तेज कि तलवार मात। बड़ा ऊंचा मेहराबदार फाटक लगा हुआ था। वह जौहरदार शीशम की लकड़ी थी कि बायद व शायद। क्यारियां रोज सींची जाती थीं, रविशों पर सुर्खी कटी थी, हरे-भरे दरख्त आसमान से बातें कर रहे थे। कहीं अनार की कतार, कहीं लखवट की बहार, इधर आम के बाग, अमरूद और चकोतरों से टहनियां फटी पड़ती थीं, नारंगियां शाखों पर लदी हुई थीं, फूलों की बू-बास, कहीं गुलमंहदी, कहीं गुल-अब्बास, नेवाड़ी फूली हुई, ठंडी-ठंडी हवा, ऊदी-ऊदी घटा, कलियों की चिटक, जूही की भीनी महक, कनैल की दमक। बाग के बीचो-बीच में एक तीन फुट का ऊंचा पक्का चबूतरा बना था। यह तो सब कुछ था; मगर रहने वाले का पता नहीं। उस हसीना की चालढाल से भी बेगानापन बरसता था ! एकाएक उसने बर्तन जमीन पर रख दिया और एक नेवाड़ की पलंगरी पर सो रही। इनको दांव मिला, तो खूब छककर मेवे खाये और बर्तन को मुंह से लगाया, तो एक बूंद भी न छोड़ा। इतने में पांव की आहट सुनाई दी। आज़ाद झट अंगूर की टट्टी में छिप रहे; मगर ताक लगाये बैठे थे कि देखें, है कौन ! देखा कि फाटक की तरफ से कोई आहिस्ता-आहिस्ता आ रहा था। बड़ा लंबा-तड़ंगा, मोटा-ताजा आदमी था। लंगोट बांधे, अकड़ता उस बंगले की तरफ जा रहा था। समझे कि कोई पहलवान अपने अखाड़े से आया है। नजदीक आया, तो यह गुमान दूर हो गया। मालूम हुआ कि कोई शाह जी हैं। वह लंगोट, जिससे पहलवान का धोखा हुआ था, तहमद निकला। शाह साहब सीधे बंगले में दाखिल हुए। औरत को पलंग पर सोता पाया तो पलंग पर हाथ मारकर चिल्ला उठे-उठ। हसीना घबराकर उठ बैठी और शाह जी के कदम चूमे। शाह जी एक तिरपाई पर बैठ गए और उससे यों बातें करने लगे-बेटी, आज तुमको हमारे सबब से बहुत राह देखनी पड़ी। यहां से दस कोस पर एक गांव में एक राजा रहता है। अस्सी वर्ष का हो गया; मगर अल्लाह ने न लड़का दिया, न लड़की। एक दिन मुझे बुलवाया। मैं कहीं आता-जाता तो हूं नहीं, साफ कहला भेजा कि तुम्हें गरज हो तो आओ, खुदा के बंदे खुदा के सिवा और किसी के द्वार पर नहीं जाते। आखिर रानी को लेकर वह आप आया और मेरे कदमों पर गिर पड़ा। मैंने रानी के सिर पर एक बिना सूंघा गुलाब का फूल दे मारा। पांचवें महीने अल्लाह ने लड़का दिया और राजा मेरे पास दौड़ा आता था कि मैं राह में मिला। देखते ही मुझे रथ पर बिठा लिया, अब कहता है, रुपया लो, जागीर लो, गांव लो, हाथी-घोड़े लो। मगर मैं कब मांगता हूं। फकीरों को दुनिया से क्या काम। इस वक्त जाकर पीछा छूटा। तुम पानी तो लाई होगी?

हसीना-मैं आपकी लौंडी हूं, यह क्या कम है कि आप मेरा इतना खयाल रखते हैं। वह पानी रखा हुआ है। आप फूंक डाल दें, तो चली जाऊं।

यह कहकर वह उठी; मगर बर्तन देखा, तो पानी नदारत। ऐं ! यह पानी क्या हुआ ! जमीन पी गई, या आसमान ! अभी पानी भर कर रखा था, देखते-देखते उड़ गया। गजब खुदा का, एक बूंद तक नहीं; लबालब भरा हुआ था !

शाह जी-अच्छा, तो बता दूं; मुझे जोग-बल से मालूम हो गया कि तुम आती हो। जब तुम सो रहीं, तो मैंने आंख बंद की, और यहां पहुंच गया। पानी पिया, तो

फिर आंख बंद की और फिर राजा साहब के पास हो रहा। फूंक डालने की साइत उसी वक्त थी। टल जाती, तो फिर एक महीने बाद आती। अब तुम यह इलायची लो और कल आधी रात को मरघट में गाड़ दो। तुम्हारी मुराद पूरी हो जायेगी।

युवती ने इलायची ले ली। मियां आज़ाद चुपके-चुपके सब सुन रहे थे। अब उन्हें खूब ही मालूम हो गया कि शाह जी रंगे सियार हैं। लोटे का पानी तो मैंने पिया, और आपने यह गढ़ा कि आंख बंद करते ही यहां आये, और पानी पीकर फिर किसी तरकीब से चल दिए। खूब खिलखिलाकर हंस पड़े। वाह रे मक्कार ! जालिये ! इतना बड़ा झूठा न देखा, न सुना। ऐसे बड़े वली हो गये कि इनकी दुआ से एक रानी पांचवें ही महीने बच्चा जन पड़ी। झूठ भी तो कितना ! हद तो यों है कि झूठों के सरदार हैं। पट्टे बढ़ा लिये, तहमद बांध कर शाह जी बन गए। लगे पुजने। कोई बेटा मांगता है, कोई तावीज मांगता है, कोई कहता है मेरा मुकदमा जितवा दो तो नयाज चढ़ाऊ, कोई कहता है नौकरी दिलवा दीजिए तो मिठाई खिलाऊं। संयोग से कहीं उसकी मुराद पूरी हो गई, तो शाह साहब की चांदी है, वरना किसकी मजाल कि शिकायत का एक हर्फ मुंह से निकाले। डर है कि कहीं जबान न सड़ जाय। अल्लाह री धाक ! बहुत से अक्ल के दुश्मन इन बने हुए फकीरों के जाल में फंस जाते हैं। आज़ाद ऐसे बने हुए सिद्ध और रंगे सियार फकीरों की कब्र तक से वाकिफ थे। सोचा, इनकी मरम्मत कर देनी चाहिए।

शाह साहब ने चबूतरे पर लुंगी बिछाई और उस पर लेटकर दुआ पढ़ने लगे; मगर पढ़े-लिखे तो थे नहीं, शीन-काफ तक दुरुस्त नहीं, अनाप-शनाप बकने लगे। अब मियां आज़ाद से न रहा गया, बोल उठे—क्या कहना है शाहजी, वल्लाह, आपने तो कमाल कर दिया। अब तो शाह जी चकराए कि यह आवाज किसने कही, यह दुश्मन कौन पैदा हुआ। इधर-उधर आंखें फाड़-फाड़कर देखा; मगर न आदमी, न आदमज़ाद, न इनसान, न इनसान का साया। या खुदा, यह कौन बोला? यह किसने टोका? समझे कि यह आसमानी ढेला है। किसी जिन्न की आवाज है। डरपोक तो थे ही, बदन थरथराने लगा, हाथ-पांव फूल गए, करामातें सब भूल गए, हवास गायब, होश कलाबाजी खाने लगे। कुरान की आयतें गलत-सलत पढ़ने लगे। आखिर चिल्ला उठे—महजरूल अजायब। तो इधर यह बोल उठे—लुंगी मयशाह जी गायब ! अब शाह जी की घबराहट का हाल पूछिए, चेहरा फक, काटो तो लहू नहीं बदन में। मियां आज़ाद ने भांप लिया कि शाह साहब पर रोब छा गया, झट निकल कर पत्तों को खूब खड़खड़ाया। शाह जी कांप उठे कि प्रेतों का लश्कर का लश्कर आ खड़ा हुआ। अब जान से गए। तब आज़ाद ने एक फारसी गजल खूब लै के साथ पढ़ी, जैसे कोई ईरानी पढ़ रहा हो। शाह जी मस्त हो गए, समझे कि यह तो कोई फकीर है। अब तो जान में जान आई। मियां आज़ाद के कदम लिए। उन्होंने पीठ ठोंकी। शाह जी उस वक्त नशे की तरंग में थे, खयाल बंध गया कि कोई आसमान से उतरा है।

आज़ाद—कीस्ती वो अज कुजाई व वामनत चे कार अस्त।
(कौन है, कहां से आता है और मुझसे क्या काम है?)

शाह जी के रहे-सहे हवास और गायब हो गए। जबान समझ में न आई। समझे कि जरूर आसमान का फरिश्ता है। हमारी जान लेने को आया है। दबे दांतों बोले—समझता नहीं हूंगा कि आप क्या हुक्म देंगे। हमने बहुत गुनाह किए, अब माफ फरमाओ। कुछ दिन और जीने दो, तो यह ठगविद्या छोड़ दूं। मैं समझ गया कि आप मेरी जान लेने आए हैं।

आज़ाद—यह बुढ़ापा और इतनी बदकारी, यह सिन और साल और यह चाल-ढाल। याद रख कि जहन्नुम के गड्ढे में गिरेगा और दोजख की आग में जलाया जाएगा। सुन, मैं न आसमान का फरिश्ता हूं, न कोई जिन्न हूं। मैं हकीम बलीनास की पाक रूह हूं, हकीम हूं, खुदा से डरता हूं, मेरे कब्जे में बहुत से तिलस्म हैं, मेरा मजार इसी जगह पर था जहां तेरा चबूतरा है और जहां तू नापाक रहता है और शोरबा लुढ़काता है। खैर, तेरी जहालत के सबब से मैंने तुझे छोड़ दिया; लेकिन अब तूने यह नया फ़रफंद सीखा कि हसीनों को फांसता है और उनसे कुछ ऐंठता है। उस जमाने में यह औरत मेरी बीवी थी। ले, अब यह हथकंडे छोड़, मक्र और दगा से मुंह मोड़, नहीं तो तू है और हम। अभी ठीक बनाऊंगा और नाच नचाऊंगा। तेरी भलाई इसी में है कि अपना कुल हाल कह चल, नहीं, तू जानेगा। मेरा कुछ न जाएगा।

शाह जी ने शराब की तरंग में मारे डर के अपनी बीती कहानी शुरू की—चौदह बरस के सिन से मुझे चोरी करने की लत पड़ी और इतना पक्का हो गया कि आंख चूकी और गठरी उड़ाई, गाफिल हुआ और टोपी खिसकाई। पहले कुछ दिन तो लुटियाचोर रहे, मगर यह तो करती विद्या है, थोड़े ही दिनों में हम चोरों के गुरु-घंटाल हो गए। सेंद लगाना कोई हमसे सीखे, छत की कड़ियों में यों चिमट रहूं, जैसे कोई छिपकली, उचकफांद में बंदर मेरे मुकाबले में मात है, दबे पांव कोसों निकल जाऊं, क्या मजाल किसी को आहट हो, शहर भर के बदमाश, लुक्के, लुच्चे, शोहदे हमारी टुकड़ी में शामिल हुए जिसने हेकड़ी की उसको नीचा दिखाया; जो टेढ़ा हुआ उसको सीधा बनाया। खूब चोरियां करने लगे। आज इसका माल मारा, कल उसकी छत काटी, परसों किसी नवाब के घर में सेंद दी। यहां तक कि डाके मारने लगे, सड़कों पर लूटमार शुरू कर दी। गोल में दुनियाभर के बेफिक्रे जमा हैं, कोई चंडू उड़ाता है, कोई चरस के दम लगाता है। गांजे, भांग, ठर्रे, सबका शौक है। तानें उड़ रही हैं, बोतलें चुनी हुई हैं, गडेरियों के ढेर लगे हुए हैं, मक्खियां भिन-भिन करती हैं, सबको यह फिक्र है कि किसी का माल तारें। एक दिन शामत आई, एक नवाब साहब के यहां चोरी करने का शौक चर्राया। उनके खिदमतगार को मिलाया, नौकरानियों को भी कुछ चटाया, और एक बजे के वक्त घर से निकले। उसी मुहल्ले में एक महीने पहले ही एक मकान किराये पर ले रखा था। पहले उसी मकान में पैठे। नवाब का मकान कोई पचास ही कदम होगा। तीन आदमी दस कदम पर और पांच बीस कदम पर खड़े हुए। हम, खिदमतगार और एक चोर साथ चले कि घर में धंस पड़े। करीब गए तो ड्योढी पर चौकीदार ने पुकारा, कौन? सन से जान निकल गई ! उम्र भर में यही खता हुई कि चौकीदार को पहले से न मिला लिया। अब क्या करें। 'पिछली बुद्धि गंवार की !' फिर चौकीदार ने ललकारा, कौन आता है? हमने कहा—हम हैं

भाई। चौकीदार बोला—हम की एक ही कही, हम का कुछ नाम भी है? आखिर, हमने चौकीदार को उसी दम कुछ चटा कर सेंद दी। घर में घुसे, तो क्या देखते हैं कि एक पलंग पर नवाब साहब सोते हैं, और दूसरी पलंग पर उनकी बेगम साहिबा मीठी नींद में मस्त हैं, मगर शमा रोशन है। अपने साथी से इशारा किया कि शमा को गुल कर दे। वह ऐसा घबराया कि बड़े जोर से फूंक मारी। मैंने कहा, खुदा ही खैर करे, ऐसा न हो कि नवाब जाग उठें तो लेने के देने पड़े ! आगे बढ़कर मैंने बत्ती को तेल में खिसका दिया, चलिए, चिराग गुल, पगड़ी गायब। बेगम साहिबा के सिरहाने जेवर का संदूक रखा था, मगर आड़ में। हम तो महरी की जबानी कच्चा चिट्ठा सुन चुके थे, 'घर का भेदी लंका ढाय', फौरन संदूक उठाया और दूसरे साथी को दिया कि बाहर पहुंचाये। वह कुछ ऐसा घबराया कि मारे बौखलाहट के कांपने लगा और धम से गिर पड़ा। धमाके की आवाज सुनते ही नवाब चौंक पड़े, शेर बच्चा सिरहाने से उठा, पैंतरे बदल-बदल कर फिकैती के हाथ दिखाने लगे। मैंने एक चाकी का हाथ दिया, और झट कमरे से निकल, दीवाल पर चढ़, पिछवाड़े कूदा और 'चोर-चोर' चिल्लाता हुआ नाके बाहर। वे दोनों सिरबोझिये, नौसिखिये थे, पकड़ लिए गए। मगर वाह रे नवाब ! बड़ा ही दिलेर आदमी है। दोनों को घेर लिया। वे तो जेलखाने गए, मैं बेदाग बच गया। अब मैंने यह पेशा छोड़ा और खून पर कमर बांधी। एक महीने में कई खून किए। पहले एक सौदागर के घर में घुसकर उसे चारपाई पर ढेर कर दिया; जमा-जथा हमारे बाप की हो गई। फिर रेल पर एक मालदार जौहरी का गला घोट डाला और जवाहिरात साफ उड़ा लिए। तीसरी दफा दो बनजारे सराय में उतरे थे। हमें खबर मिली कि उनके पास सोने की ईंटें हैं। उनको सराय ही में अंटा-गाफील करना चाहा। भठियारे ने देख लिया, पकड़े गए और कैदखाने गए। वहां आठ दिन रहे थे, नवें दिन रात को मौका पाकर कालकोठरी का दरवाजा तोड़ा, एक बरकंदाज का सिर ईंट से फोड़ा, पहरे के चौकीदार को उसी की बंदूक से शहीद किया और साफ निकल भागे। अब सोचा, कोई नया पेशा अख्तियार करें, सोचते-सोचते सूझी कि शाह जी बन जाओ। चट फकीरों का भेस बदलकर एक पेड़ के नीचे बिस्तर जमा दिया। पुजने लगे। एक दिन इस गांव के ठाकुर का लड़का बीमार हुआ। यहां न हकीम, न डॉक्टर। किसी ने कह दिया कि एक फकीर पकरिया के नीचे बैठे खुदा को याद किया करते हैं, चेहरे से नूर बरसता है, किसी से न लेते हैं न देते हैं। ठाकुर ने सुनते ही अपने भाई को भेजा। हम साथ गए। खुशी से फूले न समाते थे कि आज पाला हमारे हाथ रहा तो उम्रभर चैन से गुजरेगी। हमारा पहुंचना था कि सब उठ खड़े हुए। हम किसी से बोले न चाले, जाकर लड़के के पास बैठ गए और कुछ बुदबुदा कर उठ खड़े हुए। देखा, लड़के का बुरा हाल है, बचना मुहाल है। ठाकुर कदमों पर गिर पड़ा। हमने पीठ ठोंकी और लंबे-लंबे डग बढ़ाते चल दिए। संयोग से एक यूरोपियन डॉक्टर दौरा करता हुआ उस गांव में आया और उसकी दवा से मरीज चंगा हो गया। अब मजा देखिए, डाक्टर का कोई नाम भी नहीं लेता, सब हमारी तारीफ करते हैं। ठाकुर ने हमें एक हाथी और हजार रुपये दिए। यह हमने कबूल न किया। सुभान अल्लाह ! फिर तो हवा बंध गई। अब चारों तरफ हम ही

हमं हैं, कोई बीमार हो, तो हम पूछे जायं, कोई मरे तो हमें बुलाया जायें। मियां-बीबी के झगड़ों में हम काजी बनते हैं, बाप-बेटे का झगड़ा हम फैसला करते हैं। सुबह से शाम तक डालियों पर डालियां आती रहती हैं।

आज़ाद ने यह किस्सा सुनकर शाह जी को खूब डांटा—तू काफिर है, मलऊन है, तू अपनी मक्कारी से खुदा के बंदों को ठगता है, अब हमारी बात सुन। हमारा चेला बन जा, तो तुझे छोड़ दें। कल तड़के गजरदम गांव भर में कह दे कि हमारे पीर आए हुए हैं। दो सौ ग्यारह बरस की उम्र बताना। जिसे जियारत करनी हो; आए। शाह जी की बांछें खिल गईं कि चलो, किसी तरह जान तो बची। नूर के तड़के गांव भर में पुकार आए कि हमारे पीर आए हैं, जिसे देखना हो, देख ले। शाह जी की तो वहां धाक बंधी ही थी, जब लोगों ने सुना कि इनके भी वली-खंगड़ आए हैं, तो शौक चर्राया कि जियारत को चलें। दो दिन और दो रात मियां आज़ाद अपने घर पर आराम करते रहे। तीसरे दिल फकीराना वेष बदले हुए हरे-हरे पेड़ों के साये में आ बैठे। देखते क्या हैं, पौ फटते ही औरत-मर्द, ठट के ठट जमा हो गए। हिन्दू और मुसलमान, जवान औरतें, गहनों से लदी हुई आकर बैठी हुई हैं। तब आज़ाद ने खड़े होकर कुरान की आयतें पढ़ना शुरू कीं और बोले—ऐ खुदा के बंदों, मैं कोई वली नहीं हूं, तुम्हारी ही तरह खुदा का एक नाचीज बंदा हूं। अगर तुम समझते हो कि कोई इंसान चाहे कितना ही बड़ा फकीर क्यों न हो, खुदा की मरजी में दखल दे सकता है, तो तुम्हारी गलती है। होता वही है, जो खुदा को मंजूर होता है। हमारा फर्ज यही है कि तुम्हें खुदा की याद दिलायें। अगर कोई फकीर, कोई करामात दिखाकर अपना सिक्का जमाना चाहता हो, तो समझ लो कि वह मक्कार है। जाओ, अपना-अपना धंधा देखो।

छः

मियां आज़ाद मुंह-अंधेरे तारों की छांह में बिस्तर से उठे, तो सोचे, सांड़नी के घास-चारे की फिक्र करके जरा अदालत और कचहरी की भी दो घड़ी सैर कर आयें। पहुंचे तो क्या देखते हैं, एक घना बाग है, और पेड़ों की छांह में मेला-सा लगा है। कोई हलवाई से मीठी-मीठी बातें करता है। कोई मदारिये को ताजा कर रहा है। कुंजड़े फलों की डालियां लगाये बैठे हैं। पानवाले की दूकान पर वह भीड़ है कि खड़े होने की जगह नहीं मिलती। चूरनवाला चूरन बेच रहा है। एक तरफ एक हकीम साहब दवाओं की पुड़िया फैलाये जिरियान की दवा बेच रहे हैं। बीसों मुंशी-मुतसद्दी चटाइयों पर बैठे अर्जियां लिख रहे हैं। मुस्तगीस हैं कि एक-एक के पास दस-दस बैठे कानून छांट रहे हैं—अरे मुंशीजी, यो का अंट-संट चिघटियां सी खंचाय दिहो? हम तो आपन मजमून बतावत हैं, तुम अपने अढ़ाई चाउर अलग चुरावत हो। ले मोर मुंशी जी, तनिक अस सोच-विचार के लिखो कि फरीक सानी क्यार मुकद्दमा ढिसमिसाय जाए। ले

तोहार गोड़ धरित है, दुइ कच्चा अउर लै लेव। आज़ाद ने जो गवाहघर की ओर रुख किया, तो सुभानअल्लाह ! काले-काले चोगों की बहार नजर आई। कोई इधर से उधर भागा जाता है, कोई मसनद लगाये बैठा गवारों से डींग मार रहा है। जरा और आगे बढ़े थे कि चपरासी ने कड़ककर आवाज लगाई-सत्तारखां हाजिर हैं? एक अफीमची के पांव लड़खड़ाये, सीढ़ियों से लुढ़कते हुए धम से नीचे ! एक ठठोल ने कहा-वाह जनाब, गिरे तो मुझसे पूछ क्यों न लिया? आज़ाद जरा और आगे बढ़े, तो एक आदमी ने डांट बताई-कौन हो? क्या काम है?

आज़ाद-इसी शहर में रहता हूं। जरा सैर करने चला आया।

आदमी-कचहरी में खड़े रहने का हुक्म नहीं है, यहां से जाइये, वरना चपरासी को आवाज देता हूं।

आज़ाद-बिगड़िये नहीं, बस इतना बता दीजिए कि आपका ओहदा क्या है?

आदमी-हम उम्मेदवारी करते हैं। तीन महीने से रोज यहां काम सीखते हैं। अब फर्राटें उड़ाता हूं। डाकेट तड़ से लिख लूं, नक्शा चुटकियों में बनाऊं। किसी काम में बंद नहीं। पंद्रह रुपये की नौकरी हमें मिला ही चाहती है। मगर पहले तो घास छीलना मुशकिल मालूम होता था, अब लुकमान बन गया।

आज़ाद-क्यों मियां, तुम्हारे वालिद कहां नौकर हैं?

उम्मेदवार-जनाब, वह नौकर नहीं हैं, दस गांव के जमींदार हैं।

आज़ाद-क्या तुमको घर से निकाल दिया, या कुछ खटपट है?

उम्मेदवार-तो जनाब हम पढ़े-लिखे हैं कि नहीं !

आज़ाद-हजरत, जिसे खाने को रोटियां न हों, वह सत्तू बांधकर नौकरी के पीछे पड़े, तो मुजायका नहीं। तुम खुदा के करम से जमींदार हो, रुपये वाले हो, तुमको यह क्या सूझी कि दस-पांच की नौकरी के लिए एड़ियां रगड़ते हो? इसी से तो हिंदुस्तान खराब है; जिसे देखो, नौकरी पर आशिक। मियां, कहा मानो, अपने घर जाओ, घर का काम देखो, इस फेर में न पड़ो। यह नहीं कि आमामा बांधा और कचहरी में जूतियां चटकाते फिरते हैं ! मुहर्रिर पर लोट, अमानत पर उधार खाए बैठे हैं।

दूसरे उम्मेदवार की निस्बत मालूम हुआ कि एक लखपती महाजन का लड़का है। बाप की कोठी चलती है। लाखों का वारा-न्यारा होता है। बेटा बारह रुपये की नौकरी के लिए सौ-सौ चक्कर लगाता है। चौथे दर्जे से मदर्सा छोड़ा और अपरेंटिस हुए। काम खाक नहीं जानते। बाहर जाते हैं, तो मुंसरिम साहब से पूछकर। इस वक्त जब दफ्तर वाले अपने-अपने घर जाने लगे, तो हजरत पूछते क्या हैं-क्यों जी, यह सब चले जाते हैं, अभी छुट्टी की घंटी तो बजी ही नहीं।

स्कूल की घंटी याद आ गई !

मियां आज़ाद दिल ही दिल में सोचने लगे कि ये कमसिन लड़के, पंद्रह-सोलह बरस का सिन, पढ़ने-लिखने के दिन, मदर्सा छोड़ा, कॉलेज से मुंह मोड़ा और उम्मेदवारों के गोल में शामिल हो गए। 'अलिफबे नगाड़ा, इल्म को चने के खेत में पछाड़ा !' मेहनत से जान निकलती है, किताब को देखकर बुखार चढ़ आता है। जिससे पूछो कि भाई मदर्सा क्यों छोड़ बैठे, तो यही जवाब पाया कि उकलेदिस की अक्ल से

नफरत है। तवारीख किसे याद रहे, यहां तो घर के बच्चों का नाम नहीं याद आता। हम भी सोचे, कहां का झंझट ! अलग भी करो, चलता धंधा करो, जिसे देखिए, नौकरी के पीछे पड़ा हुआ है। जमींदार के लड़के को यह ख्वाहिश होती है कि कचहरी में घुसूं, सौदागर के लड़के को जी से लगी है कि कॉलेज से चंपत हूं और कचहरी की कुर्सी पर जा डटूं। और मुहर्रिर, मुंशी, अमले तो नौकरी के हाथों बिक ही गए हैं। उनकी तो घूंटी ही में नौकरी है। बाबू बनने का शौक ऐसा चर्राता है कि अक्ल को ताक पर रखकर गुलामी करने को तैयार हो जाते हैं।

यह सोचते हुए मियां आज़ाद और आगे चले, तो चौक में आ निकले। देखते क्या हैं, पंद्रह-बीस कमसिन लड़के बस्ते लटकाये, स्लेटें दबाये, परे जमाये, लपके चले आते हैं। पंद्रह-पंद्रह बरस का सिन, उठती जवानी के दिन, मगर कमर बहत्तर जगह से झुकी हुई, गालों पर झुर्रियां, आंखें गड्ढे में धंसी हुईं। यह झुका हुआ सीना, नयी जवानी में यह हाल ! बुढ़ापे में तो शायद उठकर पानी भी न पिया जायेगा। एक लड़के से पूछा, क्यों मियां, तुम सबके सब इतने कमजोर क्यों दिखलायी देते हो? लड़के ने जवाब दिया, जनाब, ताकत किसके घर से लायें? दवा तो है नहीं कि अत्तार की दूकान पर जायं, दुआ नहीं कि किसी शाह जी से सवाल करें, हम तो बिनों मौत ही मरे। दस वर्ष के सिन में तो बीवी छम-छम करती हुई घर में आई। चलिए, उसी दिन से पढ़ना-लिखना छप्पर पर रखा। नई धुन सवार हुई। तेरहवें बरस एक बच्चे के अब्बाजान हो गए। रोटियों की फिक्र ने सताया। हम दुबले-पतले न हों, तो कौन हो? फिर अच्छी गिजा भी मयस्सर नहीं; आज तक कभी दूध की सूरत न देखी, घी का सिर्फ नाम सुनते हैं।

मियां आज़ाद दिल में सोचने लगे, इन गरीबों की जवानी कैसी बर्बाद हो रही है ! इसी धुन में टहलते हुए हजरतगंज की तरफ निकल गये, तो देखा, एक मैदान में दस-पंद्रह वर्ष के अंग्रेजों के लड़के और लड़कियां खेल रहे हैं। कोई पेड़ की टहनी पर झूलता है, कोई दीवार पर दौड़ता है। दो-चार गेंद खेलन पर लट्टू हैं। एक जगह देखा, दो लड़कों ने एक रस्सी पकड़कर तानी और एक प्यारी लड़की बदन तौल कर ज़मीन से उस पार उचक गयी। सब के सब खुश और तंदुरुस्त हैं। आज़ाद ने उन होनहार लड़कों और लड़कियों को दिल से दुआ दी और हिन्दुस्तान की हालत पर अफसोस करते हुए घर आये।

सात

मियां आज़ाद सांड़नी पर बैठे हुए एक दिन सैर करने निकले, तो एक सराय में जा पहुंचे। देखा, एक बरामदे में चार-पांच आदमी फर्श पर बैठे धुआंधार हुक्के उड़ा रहे हैं, गिलौरी चबा रहे हैं और गजलें पढ़ रहे हैं। एक कवि ने कहा, हम तीनों के तखल्लुस का काफिया एक है—अल्लामी, फहामी और हामी; मगर तुम दो ही हो—वकाद

और जवाद। एक शायर और आ जायं, तो दोनों तरफ से तीन-तीन हो जायं। इतने में मियां आज़ाद तड़ से पहुंच गए।

एक ने पूछा—आप कौन?

आज़ाद—मैं शायर हूं।

आप तखल्लुस क्या करते हैं?

आज़ाद ने कहा—आज़ाद ! तब तो इन सबकी बांछें खिल गईं। जवाद, वकाद और आज़ाद का तुक मिल गया !! अब लोग गजलें पढ़ने लगे। एक आदमी शेर पढ़ता है, बाकी तारीफ करते हैं—सुभान-अल्लाह, क्या तबीयत पाई है, वाह-वाह ! फिर फरमाइएगा; कलम तोड़ दिए, कितनी साफ जबान है ! इस बोल-चाल पर कुरबान। कोई झूमता है, कोई टोपियां उछालता है।

आज़ाद—मियां, सुनो हम शायरी के कायल नहीं। आप लोग तो जबान पर मरते हैं और हम खयालों पर जान देते हैं। हमें तो नेचर की शायरी पसंद है।

फहामी—अख्खाह, आप नेचरिए हैं ! अनीसिए और दबीरिए तो सुनते थे, अब नेचरिए पैदा हुए। गजब खुदा का ! आपको इन उस्तादों का कलाम पसंद नहीं आता, जो अपना सानी नहीं रखते थे?

आज़ाद—मैं तो साफ कहता हूं, यह शायरी नहीं, खब्त है, बेतुकापन है, इसका भी कुछ ठिकाना है, झूठ के छप्पर उड़ा दिए। अब कान खोलकर नेचरी शायरी सुनो।

यह कहकर आज़ाद ने अंग्रेजी की एक कविता सुनाई तो वह कहकहा पड़ा कि सराय भर गूंज उठी।

फहामी—वाह जनाब, वाह, अच्छी गिट-पिट है ! इसी को आप शायरी कहते हैं?

आज़ाद—'शेख क्या जाने साबुन का भाव !' 'भैंस के आगे बीन बजाये, भैंस खड़ी पगुराय।'

आज़ाद तो नेचरल शायरी की तारीफ करने लगे, उधर वे पांचों उर्दू की शायरी पर लोट-पोट थे। आतश और मीर की जबान, नासिख, अनीस, जौक, गालिब, मोमिन जैसे उस्तादों के कलाम पढ़-पढ़कर सुनाते थे। अब बताइए, फैसला कौन करे? भठियारिन झगड़ा चुकाने से रही, भठियारा घास ही छीलना जाने, आखिर यह राय तय पाई कि शहर चलिए ! जो पढ़ा-लिखा आदमी पहले मिले, उसी का फैसला सबको मंजूर। सबने हाथ पर हाथ मारा। चलने ही को थे कि भठियारिन ने इनको ललकारा और चमक कर मियां जवाद का दामन पकड़ा—मियां, यह बुत्ते किसी और को बताना, हम भी इसी शहर में बढ़कर इतने बड़े हुए हैं। हूं तो अभी आपकी लड़की के बराबर, मुल सैकड़ों ही कुओं का पानी पी डाला। पहले कौड़ी-कौड़ी बायें हाथ से रख जाइए, फिर असबाब उठाइए।

अल्लामी—नेकबख्त, हम शरीफ भलेमानस हैं। शरीफ लोग कहीं दो पैसे के लिए ईमान बेचा करते हैं? चलो, दामन छोड़ दो, अभी दम के दम में आए।

भठियारिन—इस दाम में बंदी न आयेगी। ऐसे बड़े साहूकार खरे असामी हो, तो एक गंडा चुपके से निकाल दो न?

वकाद–यह मुड़चिरी है या भठियारिन? साहब, इससे पीछा छुड़ाओ। ऐसी भठियारिन तो कहीं देखी न सुनी।

भठियारिन–मियां, कुछ बेधे तो नहीं हुए हो, या बिल्ली नांघकर घर से चले थे ! चुपके से पैसे रखकर तब कदम उठाइए।

मियां जवाद सीधे-सादे आदमी थे। जब उन्होंने देखा कि मुफ्त में घेरे गए, तो कहा–भाई, तुम पांचों जाओ, हम यहां बी भठियारिन की खातिर से बैठे हैं। तुम लोग निपट आओ। वे सब तो उधर चले और जवाद सराय ही में भठियारी की हिरासत में बैठे, मगर एक आने पैसे न दे सके। दो-चार मिनट के बाद पुकारा–भठियारी-भठियारी ! मैं लेटा हूं। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे पेट में चूहे दौड़े कि रफू-चक्कर हुए। फिर तीन मिनट के बाद गला फाड़-फाड़ चिल्लाने लगे–भठियारिन, हम भागने वाले असामी नहीं हैं, तुम मजे से अपनी दाल बघारो। जब इन्होंने बार-बार छेड़ना शुरू किया, तो वह आग-भभूका हो गई और बोली– मियां ऐसे दो पेसे से दरगुजरी, तुमने तो गुल मचा-मचा कर मेरा कलेजा पका दिया। आप जायें, बल्कि खटिया समेत दफन हों, तो मैं खुश, मेरा अल्लाह खुश। ऐ वाह, 'देखी तेरी कालपी और बावन पुरे उजाड़।' मियां, हूं तो अभी जुम-जुमा आठ दिन की, मुल नाक पर मक्खी बैठने नहीं देली.।

इधर मियां जवाद भठियारिन से चुहल कर रहे थे, उधर वे पांचों आदमी सराय से चले, तो रास्ते में एक बुजुर्ग से मुलाकात हुई।

हामी ने कहा–या मौलाना, एक मसला हल कीजिए, तो एहसान होगा।

बुजुर्ग–मियां, मैं एक जाहिल, बेवकूफ, बेसमझ गुमराह आदमी हूं, मौलाना नहीं; मौलाना होना दुश्वार बात है। मुझे मौलाना कहना इस लफ्ज को बदनाम करना है।

हामी–अच्छा साहब, आप मौलाना न सही, मुंशी सही, मियां सही, आप एक झगड़े का फैसला कर दीजिए और घर का रास्ता लीजिए। आपका हमारे बुजुर्गों पर एहसान होगा। झगड़ा यह है कि यह साहब (आज़ाद की तरफ इशारा करके) नेचरी शायरी के तरफदार हैं, और हम चारों उर्दू-शायरी पर जान देते हैं। अब बतलाइए, हममें से कौन ठीक कहता है और कौन गलत?

बुजुर्ग–यह तो बहुत गौर करने की बात नहीं। आप चारों मुफ्त में झगड़ा करते हैं। आप सीधे अस्पताल जाइए और फस्द खुलवाइए, शायरी पर जान देना समझदारों का काम नहीं। जान खुदा की दी हुई है, उसी की याद में लगानी चाहिए। बाकी रही दूसरे किस्म की शायरी, मैंने उसका नाम भी नहीं सुना, उसके बारे में क्या अर्ज करूं?

पांचों आदमी यहां से निराश होकर आगे बढ़े, तो एक मक्तबखाना नजर से गुजरा। टूटा-फूटा मकान, पुरानी-धुरानी दालान दीवारें, बाबा आदम के वक्त की। एक मौलवी साहब लम्बी दाढ़ी लटकाये, हाथ में छड़ी लिए, हिल-हिलकर पढ़ा रहे हैं और बीस-पचीस लड़के जदल-काफिया उड़ा रहे हैं। एक लड़के ने दूसरे की चांद पर तड़ से धप जमाई। मौलवी साहब पूछते हैं–अबे, यह क्या हुआ? लड़के कहते हैं–जी, कुछ नहीं तख्ती गिर पड़ी। अबे, यह तख्ती की आवाज थी? जी हां, और

नहीं तो क्या? इतने में दो-चार शरीर लड़कों ने मुंह चिढ़ाना शुरू किया। देखिए मौलवी साहब, यह मुंह चिढ़ाता है। नहीं मौलवी साहब, यह झक मारता है। मैं तो बाहर गया था। गुल-गपाड़े की आवाज ऐसी बुलंद है कि आसमान की खबर लाती है, कान-पड़ी आवाज नहीं सुनाई देती। जिधर देखो, चिल्ल-पों, जूती-पैजार! मगर सब के सब हिल-हिल कर बड़बड़ाते जाते हैं। किताब तो दो ही चार पढ़ रहे हैं; मगर वाही-तबाही, अनाप-शनाप बहुतों की जबान पर है।

एक-आज शाम को मैं बाने की कनकइया जरूर लड़ाऊंगा।

दूसरा-आगा तकी के बाग में कौवा हलाल है।

तीसरा-अरे माली, तुझे गुलबूटे की पहचान रहे।

चौथा-मौलवी साहब, गो पीर हुए, नादान रहे।

पांचवां-पढ़ोगे-लिखोगे, तो होगे खराब,
खेलोगे-कूदोगे, होगे नवाब।

मगर सबकी आवाजें ऐसी मिल-जुल गई हैं कि खासी समझ में नहीं आतीं, क्या खुराफात बकते हैं। लौंडे तो जदल-काफिया उड़ा रहे हैं, उधर मौलवी साहब मजे से ऊंघते हैं। जब नींद खुली, तो एक लड़के को बुलाया-आओ, किताब लाओ, सबक पढ़ लो। वह सिर खुजलाता हुआ मौलवी साहब के करीब जा बैठा, और सबक शुरू हुआ, मगर न तो लड़के ने कुछ समझा कि मैंने क्या पढ़ा और न मौलवी साहब को मालूम हुआ कि मैंने क्या पढ़ाया। दोपहर के वक्त लड़के तख्ती लेकर बैठे, कोई गेंदे की पत्ती तख्ती पर मलता है, कोई कौड़ी से तख्ती को चिकनाता है। आधे घंटे तक यही हुआ किया। फिर लड़के लिखने बैठे। मौलवी साहब कोठरी से मक्खियों को निकाल और दरवाजा बंद करके सो रहे। यहां खूब लप्पा-डुग्गी हुई। दो घंटे के बाद मौलवी साहब चौंके। कोठरी खोलते हैं, तो यहां दो लड़कों में चट-पट हो रही है, दोनों गुंथे पड़े हैं। निकलते ही एक के तमाचे लगाने शुरू किए। जो अमीर का लड़का था और मौलवी साहब को त्यवहारी और जुमेराती खूब दिया करता था, उससे तो न बोले, बेचारे गरीब पर खूब हाथ साफ किया। आज़ाद ने दिल में कहा-

गर हमीं मकतब अस्त वईं मुल्ला,
कारे तिफ्लां तमाम ख्वाहदशुद।
(अगर यही मकतब है और यही मौलवी, तो लड़के पढ़ चुके हैं।)

आठ

एक दिन मियां आज़ाद सराय में बैठे सोच रहे थे, किधर जाऊं कि एक बूढ़े मियां लठिया टेकते आ खड़े हुए और बोले-मियां, जरी यह खत तो पढ़ लीजिये, और इसका जवाब भी लिख दीजिए। आज़ाद ने खत लिया और पढ़कर सुनाने लगे-

मेरे खूसट शौहर, खुदा तुमसे समझे।

आज़ाद–वाह ! यह तो निराला खत है। न सलाम, न बंदगी। शुरू ही से कोसना शुरू किया।

बूढ़े–जनाब, आप खत पढ़ते हैं कि मेरे घर का कजिया चुकाते हैं। पराये झगड़े से आपका वास्ता? जब मियां-बीवी राजी हैं, तब आप कोई काजी हैं।

आज़ाद–अच्छा, तो यह कहिए, कि आपकी बीवी-जान का खत है। लीजिए, सुनाये देता हूं–'मेरे खूसट शौहर, खुदा तुमसे समझे। सिकंदर पाताल से प्यासा आया, मगर तुमने अमृत की दो-चार बूंदें जरूर पी ली हैं, जभी मरने का नाम नहीं लेते। कुछ ऊपर सौ बरस के तो हुए, अब आखिर क्या आकबत के बोरिये बटोरोगे? जरा दिल में शरमाओ, हजारों नौजवान उठते जाते हैं, और तुम टैयां से मौजूद हो। डंकूफीवर भी आया, मगर तुम मूंछों पर ताव ही देते रहे। हैजे ने लाखों आदमी चट किये, मगर आप तो हैजे को भी चट कर जायं और डकार तक न लें। बुखार में हजारों हयादार चल बसे; मगर तुम और भी मोटे हो गए। तुम्हें लकवा भी नहीं मारता है, लू के झोंके भी तुम्हें नहीं झुलसाते, दरिया में भी तुम नहीं फिसल जाते, और सौ बात की एक बात यह है कि अगर हयादार होते, तो एक चिल्लू काफी था; मगर तुम नह चिकने घड़े हो कि तुम पर चाहे हजारों ही घड़े पड़ें, लेकिन एक बूंद न थम सके। वाह पट्ठे, क्यों न हो ! किस बुरी साइत में तुम्हारे पाले पड़ी। किस बुरी घड़ी में तुम्हारे साथ ब्याह हुआ। मां-बाप को क्या कहूं, मगर मेरी गर्दन तो कुंद छुरी से रेत डाली। इससे तो किसी कुएं ही में ढकेल देते, कसाई ही के हवाले कर देते, तो यह रोज-रोज का कुढ़ना तो न होता। तुम खुद ही इंसाफ करो। तुम्हारे बुढ़भस से मुझ पर क्या गाज पड़ी। हाथ तो आपके कांपते हैं, पांव में सकत नहीं, मुंह में दांत न पेट में आंत, कमर कमान की तरह झुकी हुई, आंखों की यह कैफियत कि दिन को ऊंट नहीं सूझता। लाठी टेककर दस कदम चले भी तो सांस फूल गई, दम टूट गया। सुस्ताने बैठे, तो उठने का नाम नहीं लेते। सुबह को नन्हीं-नन्हीं दो चपातियां खा लीं, तो शाम तक खट्टी डकारें आ रही हैं, तोला भर सिकंजवीन का सत्यानाश किया, मगर हाजमा ठीक न हुआ। हाफिजे का यह हाल कि अपने बाप का भी नाम याद नहीं। फिर सोचो तो कि ब्याह करने का शौक क्यों चर्राया। एक पांव तो कब्र में लटकाया है और खयाल यह गुदगुदाया है कि दूल्हा बनें, दुलहिन लायें। खुदा-कसम, जिस वक्त तुम्हारा पोपला मुंह, सफेद भौंह, गालों की झुर्रियां, दोहरी कमर, गंजी चांद और मनहूस सूरत याद आती है, तो खाना हराम हो जाता है। वाह बड़े मियां, वाह ! खुदा झूठ न बुलाये, तो हमारे अब्बाजान से पचास-साठ बरस बड़े होंगे, और अम्माजान को तुमने गोद में खिलाया हो तो ताज्जुब नहीं। खुदा गवाह है, तुम मेरे दादा के बाप से भी बड़े हो, मगर वाह री किस्मत, कि आप मेरे शौहर हुए। जमीन फट जाये, तो मैं धंस जाऊं।

–तुम्हारी जवान बीवी'

आज़ाद–जनाब, इसका जवाब किसी बड़े मुंशी से दिलवाइये।

बूढ़ा–बुढ़ापे में अब कभी शादी न करेंगे।

आज़ाद–वाह, क्या अभी शादी करने की हवस बाकी है? अभी पेट नहीं भरा।

बूढ़ा–अब इसका ऐसा जवाब लिखिये कि दांत खट्टे हो जायं।

आज़ाद–आप औरत के मुंह नाहक लगते हैं।

बूढ़ा–जनाब, उसने तो मेरी नाक में दम कर दिया, और सच पूछो, तो जिस दिन उसको ब्याह लाये, नाक ही कट गई। ऐसी चंचल औरत देखी न सुनी। मजाल क्या कि नाक पर मक्खी बैठ जाय।

आखिर आज़ाद ने पत्र का जवाब लिखा–

'मेरी अलबेली, छैल-छबीली, नादान बीवी को उसके बूढ़े शौहर की उठती जवानी देखनी नसीब हो। वह जुग-जुग जिये और तुम पूतों फलो, दूधों नहाओ, अठारह लड़के हों और अठारह दूनी छत्तीस छोकरियां। जब मैं दालान में कदम रखूं, तो सब बच्चे, 'अब्बा आए, अब्बा आए, खिलौने लाए, पटाखे लाए' कहकर दौड़े। मगर डर यह है कि तुम भी अभी कमसिन हो, उनकी देखा-देखी कहीं मुझे अब्बा न कह उठना कि पास-पड़ोस की औरतें मुझे उंगलियों पर नचायें। मुझे तुमसे इतनी ही मुहब्बत है, जितनी किसी को अपनी बेटी से होती है, अपनी नानी को मैं ऐसा प्यारा न था, जितनी तुम मुझे प्यारी हो। और क्यों न हो, तुम्हारी परदादी को मैंने गोदियों में खिलाया है और मेरी बहन ने उसे दूध पिलाया है। मुझे तुम्हारी दादी का गुड़िया खेलना इस तरह याद है, जैसे किसी को सुबह का खाना याद हो। तुम्हारे खत ने मेरे दिल के साथ वह किया, जो बिजली, खलियान के साथ करती है, लेकिन मुझमें एक बड़ी सिफत यह है कि परले सिरे का बेहया हूं। और क्यों न हो, शर्म औरतों को चाहिए, मैं तो चिकना घड़ा हूं। माना कि आंखों में नूर नहीं, मगर निगाह बड़ी बारीक रखता हूं, बहरा सही, लेकिन मतलब की बात खूब सुनता हूं, बुड्ढा हूं, कमजोर हूं, मगर तुम्हारी मुहब्बत का दम भरता हूं। तुम्हारा प्यारा-प्यारा मुखड़ा, रसीली अंखियां, गोरी-गोरी बहियां जिस वक्त याद आती हैं, कलेजे पर सांप लोटने लगता है। तुम्हारा चांदनी रात में निखरकर निकलना, कभी मुसकिराना कभी खिलखिलाना–कितना शरमाना? कैसा लजाना? और तो और, तुम्हारी फुर्ती से दिल लोट-पोट है, कलेजे पर चोट है। तुम्हारा फिरकी की तरह चारों ओर घूमना, मोरों की तरह झूमना, कभी खेलते-खेलते मेरी चपतगाह पर टीप जमाई, कभी शोखी से वह डांट बताई कि कलेजा कांप उठा, कभी आप-ही-आप रोना, कभी दिन-दिनभर सोना, अल्हड़पन के दिन, बारह बरस का सिन, बीबीजान, तुम पर कुरबान, ले कहा मानो, हमें गनीमत जानो। मैं सुबह का चिराग हूं, हवा चले या न चले, अब गुल हुआ, अब गुल हुआ। डूबता हुआ आफताब हूं, अब डूबा, अब डूबा। मुझे सताना, मुए पर सौ दुर ! तुम खूब जानती हो कि मेरी बातें कितनी मीठी होती हैं। सत्तर बरस हो गए कि दांत चूहे ले गए, तब से हलुए पर बसर है, फिर जो रोज हलुआ खायेगा, उसकी बातें मीठी क्यों न होंगी। तुम लाख रूठो, फिर भी हमारी हो, बीबी हो, वह शुभ घड़ी याद करो, जब हम दूल्हा बने, पुराने सिर पर नई पगड़ी जमाये। सेहरा लटकाये, मेहंदी लगाये, मुर्गी के बराबर घोड़िया पर सवार, 'मीठी पोई' जाते थे, और तुम दुलहिन बनी, सोलह सिंगार किए पालकी में से झांक रही थीं। हमारे गालों की झुर्रियां, हमारा

पोपला मुंह, हमारी टेढ़ी कमर देखकर खुश तो न हुई होगी? और क्या लिखूं, एक नसीहत याद रखो, एक तो मेले-ठेले न जाना, दूसरे आसपास की छोकरियों को गुइयां न बनाना। खुदा करें ! जब तक जमीन और आसमान कायम हैं, तुम जवान रहो, और नादान रहो, हमारे सफेद बाल तुम्हें भायें, हासिद खार खायें।

–तुम्हारा बूढ़ा शौहर''

बूढ़ा–माशा-अल्लाह ! आपने खूब लिखा, मगर इस खत को ले कौन जाय? अगर डाक से भेजता हूं, तो गुम होने का डर, उस पर तीन दिन की देर। अगर आप इतना एहसान करें कि इसे वहां पहुंचा भी दें, तो क्या पूछना।

आज़ाद सैलानी तो थे ही, समझे, क्या हर्ज है, सांडनी मौजूद है, चलूं, इसी बहाने जरा दिल्लगी देख आऊं। कुछ बहुत दूर भी नहीं, सांड़नी पर मुश्किल से दो घंटे की राह है। बोले–आप बुजुर्ग आदमी हैं, आपका हुक्म बजा लाना मेरा फर्ज है, लीजिए जाता हूं।

यह कहकर सांड़नी पर बैठे और छुन-छुन करते जा पहुंचे। दरवाजे पर आवाज दी, तो एक कहारिन ने बाहर निकलकर पूछा–मियां कौन हो, कहां से आना हुआ, किसकी तलाश है?

आज़ाद–बी महरी साहबा, सलाम। हम मुसाफिर परदेशी हैं।

कहारिन–वाह ! अच्छे आये मियां, यह क्या कुछ सराय है?

आज़ाद–खुदा के लिए बेगम साहिबा से कह दो कि बड़े मियां ने एक खत भेजा है।

महरी ने एक चौकड़ी भरी, तो घर के अंदर थी। जाकर बोली–बीवी, मियां के पास से एक साहब आये हैं, खत लाये हैं।

वह चौंक उठी–चल झूठी, किसी और को जाकर उड़ाना, यहां कच्ची गोलियां नहीं खेली हैं। मियां किसी कब्रिस्तान में मीठी नींद सो रहे होंगे कि खत भेजेंगे?

महरी–जरी, झरोखे से झांकिये; तो वह क्या सामने खड़े हैं।

बेगम साहब झरोखे की तरफ चली, तो अपनी बूढ़ी अम्मां को आईना सामने रखे, बाल संवारते देखा। छेड़कर बोलीं–ऐ अम्मां, आज तो बतौर चोटी-कंघी की फिक्र है। कोई घूरे, तो इंसान निखार करे। कोई मरे, तो आदमी शिकार करे। तुम दो ऊपर अस्सी बरस की हुईं, मगर जवानी की हवस न गई। खुदा ही खैर करे।

अम्मां–मुझ नसीबों-जली की किस्मत में यही बदा था कि बेटी की जबान से ऐसी-ऐसी बातें सुनूं। कोई और कहती, तो उसकी जबान निकाल लेती, लेकिन तुम तो मेरी आंखों की पुतली हो। हाय ! ममता बुरी चीज है। बेटा, तुम ये बातें क्या जानो, अभी जवान हो, नादान हो, बनावट-सजावट तो मेरी घुट्टी में पड़ी थी, और मैं न बनती-ठनती, तो तुम्हारी आंखों को तिरछी चितवन कौन सिखाता? बाहर जाओ, तुम्हारे मियां का आदमी आया है।

बीवी ने झरोखे से जो देखा, एक आदमी सचमुच खड़ा है, और है भी अलबेला, छैला, जवान, तो तुरंत महरी को भेजा कि जाकर उन्हें बैठने के लिए कुर्सी निकाल दे। आज़ाद तो कुर्सी पर बैठे और चिक के उधर आप जा बैठीं। आज़ाद की उन

पर निगाह पड़ी, तो तीर-सा लग गया। कमर ऐसी पतली कि साये के बोझ से बल खाये, मुखड़ा बिन घने चांद को लजाये, उस पर स्याह रेशमी लिबास और हिना की बू-बास। जोबन फटा पड़ता था, निगाह फिसली जाती थी।

महरी ने आज़ाद से पूछा–बड़े मियां तो आराम से हैं?

आज़ाद–हां, मैं उनका खत लाया हूं। अपनी बेगम साहिबा से मेरा सलाम कहो और यह खत उनको दो।

महरी–बेगम साहिबा कहती हैं, आप खत लाये हैं, तो पढ़कर सुना भी दीजिए।

आज़ाद ने खत पढ़कर सुनाया, तो उस नाजनीन का चेहरा मारे गुस्से के सुर्ख हो गया। बिना कुछ कहे-सुने झमककर वहां से उठीं और अपनी मां के पास आकर खड़ी हो गईं। अम्मीजान इस वक्त चांदनी की बहार देखने में मसरूफ़ थीं। बोलीं–बेटी, देख तो क्या नूर की चांदनी छिटकी हुई है ! चांद इस वक्त दुलहिन बना हुआ है।

बेटी–अम्मीजान, तुम्हारी भी अनोखी बातें हैं। सर्दी की चांदनी, जैसे बूढ़े की नसीबों-जली बीवी की जवानी। आज तो आसमान यों ही झक-झक कर रहा है, आज निकला तो क्या, जब जानें कि अंधेरे-धूप में शक्ल दिखाये। बुढ़िया ताड़ गई बोली–बेटी, जरी सब्र करो, अपनी जवानी की कसम, बुड्ढा तो कब्र में पांव लटकाये बैठा है, आज मुआ, कल दूसरा दिन, फिर हम तुमको किसी अच्छे घर ब्याहेंगे। अबकी खुदाई भर की खाक छानकर वह ढूंढ़ निकालूं, जो लाखों में एक हो। सुबह-शाम खबर आना ही चाहती है कि बुड्ढा चल बसा।

यह सुनकर बेटी खिलखिलाकर हंस पड़ी। बोली–अम्मां, जब तुम अपनी जवानी की कसम खाती हो, तो मुझे बेअख्तियार हंसी आती है। तुम तो अपने को बिलकुल नन्हीं ही समझती हो। करोड़ों तो आपके गालों पर झुर्रियां, बगुले के पर का-सा सफेद जूड़ा, सिर घड़ी का खटका बना हुआ, कमर टेढ़ी, मगर मेंहदी का लगाना न छूटा, न छूटा। रंगीन दुपट्टा ही उम्र भर ओढ़ा, जब देखो, कंघी-चोटी से लैस। खुदा-कसम, ऐसी अनगढ़ बूढ़ी देखी न सुनी।

बुढ़िया ने टुइयां तोते की तरह पोपले मुंह से कहा–प्यारी, तुम्हारी बातों से मुझे हौल होता है, अल्लाह मेरी बच्ची पर रहम खाये, बूढ़े के मरने की खबर सुनाये।

महरी–बड़ी बेगम, आपके नमक की कसम, साहबजादी को दिलोजान से आपका प्यार है; मगर भोली नादान हैं, जो अनाप-शनाप मुंह में आया, कह सुनाया। अल्हड़पन के तो इनके दिन ही हैं, जुमा-जुमा आठ दिन की पैदाइश, नेक-बद, ऊंच-नीच क्या जानें। जब सयानी होंगी, तो शहूर आप-ही-आप सीख जायेंगी। बुढ़िया ने एक ठंडी सांस भर के कहा–जो मुझे इनकी बातों से रंज हुआ हो, तो खुदा मुझे जन्नत न दे। मगर करूं क्या, बुरा तो यह मालूम होता है कि मुझको यह आये-दिन ताने देती है कि तुम बुढ़िया हो, बुढ़ापे में निखरती क्यों हो? मैं किससे कहूं कि इसके गम ने मेरी कमर तोड़ डाली, इसको कुढ़ते देखकर घुली जाती हूं, नहीं, अभी मेरा सिन ही क्या है। अच्छा, तू ही ईमान से कह, कोई और भी मुझे बूढ़ी कहता है?

महरी दिल में तो हंसती थी कि इन्हें जवान बनने का शौक चर्राया है, हौवा के साथ खेली होंगी, मगर अभी नन्हीं ही बनी जाती हैं? लेकिन छटी हुई औरत

थी, बात बनाकर बोली–ऐ तौबा, बुढ़ापे की आप में तो छांह भी नहीं, मेरा अल्लाह जानता है, जब आप और बिटिया को कोई साथ देख लेता है, तो पहले आप नजर पड़ती है, पीछे इन पर। बल्कि, एक मुई दिलजली ने परसों चुटकी ली थी कि 'छोटी बी तो छोटी बी; बड़ी बी सुभान-अल्लाह।' लड़की तो खैर, इसकी मां ने तो खूब काठी पाई है आपका चेहरा कुंदन की तरह दमकता है, जो देखता है, तरसता है।

बुढ़िया तो खिल गई लेकिन बेटी जल उठी। कड़ककर बोली–चल, चुप खुशामदिन ! अल्लाह करे, तेरा मियां भी मेरे मियां का–सा बुड्ढा हो जाय। और तुम खुशामद न करो, तो खाओ क्या? अम्मां पर लोगों की नजर पड़ती है ! झूठे पर शैतान की फटकार ! बूढ़ी औरत, कुछ ऊपर सौ बरस का सिन, लठिया टेककर दस कदम चलती है, तो घंटों हांफा करती है। दिन को ऊंट और सारस नहीं सूझता, इनके बूढ़े नखरे देख कर हमको हंसी आती है। जी जलता है कि यह किस बिरते पर इतराती हैं, मुंह में दांत न पेट में आंत, भला कमर तो मेरे सबब से झुक गई, और दांत क्या हुए?

आखिर, महरी ने उसे समझा-बुझाकर बात टाल दी, और बोली–वह मियां बाहर बैठे हैं, उनके लिए आप क्या कहती हैं? उसने महरी की बात का कुछ जवाब न दिया। वहां से उठकर बगीचे में आई और इठला-इठलाकर टहलने लगी। बाल बिखरे हुए, यही मालूम होता था सांप लहरा रहा है। कमर लाखों बल खा रही है। मियां आज़ाद ने चिक की दराजों से जो उसे बेनकाब देखा, तो तन से जान निकल गई। कलेजे पर सांप लोटने लगा। संयोग से उस रमणी ने कहीं इनको देख लिया कि आंखें सेक रहे हैं और दूर ही से जोबन लूट रहे हैं; तो बदन को छिपाये, आंख चुराये, बिजली की तरह लौंककर नजर से गायब हो गई। आज़ाद हैरान कि अब क्या करूं। आखिर, दिल की बेकरारी ने ऐसा मजबूर किया कि आठ-आठ आंसू रोकर यह गजल गाने लगे–

क्या जानिए कि वस्ल में क्या बात हो गई;
आंखें नहीं मिलाते हैं शरमाये जाते हैं।,
दिल मेरा लेके क्या कहीं भूल आये हैं, हुजूर?
खोये हुए से आप जो कुछ पाये जाते हैं।
काले डसें जो जुल्फ तुम्हारी कभी छुयें !
लो, अब तुम्हारे सिर की कसम खाये जाते हैं।

तमकनत को न काम फरमाओ;
एक नजर मुड़के देखती जाओ।
आशिकों से न इस कदर शरम,
एक निगाह के लिए न आंख चुरा।
जाने-जां, कुछ तरस न खाओगी?
यों तड़पता ही छोड़ जाओगी?

वह इन-ऐसो की कब सुनने वाली थी, मुडकर देखना गाली थी। आज़ाद ने

जब देखा कि यहां दाल गलने की नहीं, कोई यों टहलते हुए देख ले, तो लेने के देने पड़ें, तो बेचारे रोते हुए घर से बाहर आये।

उधर उस नाजनीन ने जवानी की उमंग में यह ठुकरी भैरवी की धुन में लहरा-लहराकर गायी–

पिया के आवन की भयी बिरियां, दरवजवा ठाढ़ी रहूं,
मोरे पिया को बेगि ले आओ री, निकसत जियरा जाय,
पिया दरवजवा ठाढ़ी रहूं !

इसके जवाब में उनकी अम्मांजान टीपदार आवाज में क्या कहती हैं–

जोबनवां, हो, चार दिना दीन्हों साथ।
जोबन रितु जात सभी मुख मोरत, 'कदर' न पूछे बात रे।
जोबनवां, हो, चार दिना दीन्हों साथ।

मियां आज़ाद ने चलते-चलते बाहर से यह तान लगायी–

तेरे नैनों ने मुझे मारा, रसीली मतवारियों ने जादू डारा।

महरी ने देखा कि सबने अपने-अपने हाल के मुताबिक हांक लगायी। एक मैं ही फिसड्डी रह गई, तो वह भी कफन फाड़कर चीख उठी–

जाओ-जाओ, काहे ठाढ़े डारे गल-बाहीं रे?
घेरे रहते नित मेरे जैसे छाई रे।
जानत हूं जो हमसे चहत हो
नाहक इतनी विनती करत हो,
'कदर' करत हो अरे नाहीं-नाहीं रे।
जाओ चलो, काहे ठाढ़े डारे गल-बाहीं रे !

नौ

आज़ाद को नवाब साहब के दरबार से चले महीनों गुजर गए, यहां तक कि मुहर्रम आ गया। घर से निकले, तो देखते क्या हैं, घर-घर कुहराम मचा हुआ है, सारा शहर हुसैन का मातम मना रहा है। जिधर देखिए, तमाशाइयों की भीड़, मजलिसों की धूम, ताजिया-खानों में चहल-पहल और इमामबाड़ों में भीड़-भाड़ है। लखनऊ की मजलिसों का क्या कहना। यहां के मर्सिये पढ़ने वाले रूम और शाम तक मशहूर हैं। हुसेनाबाद का इमामबाड़ा चौदहवीं रात का चांद बना हुआ था। उनके साथ एक दोस्त भी हो लिए थे। उनकी बेकरारी का हाल न पूछिए। वह लखनऊ से वाकिफ न थे, लोटे जाते थे कि हमें लखनऊ का मुहर्रम दिखा दो, मगर कोई जगह छूटने न पाए। एक आदमी ने ठण्डी सांस खींचकर कहा–मियां; अब वह लखनऊ कहां? वे लोग कहां? वे दिन कहां? लखनऊ का मुहर्रम रंगीले पिया जानआलम के वक्त में अलबत्ता देखने काबिल था। जब देखो, बांकों की तलवार म्यान से दो अंगुल बाहर। किसी ने जरा

तीखी चितवन की, और उन्होंने खट से सिरोही का तुला हुआ हाथ छोड़ा, भंडारा खुल गया। एक-एक घण्टे में बीस-बीस वारदातों की खबर आती थी, दूकानदार जूतियां छोड़-छोड़कर सटक जाते थे। वह धक्कमधक्का, वह भीड़-भड़ाका होता था कि वाह जी वाह ! इंतिजाम करना खालाजी का घर न था। अब कोई चूं भी नहीं करता, तब छोटे-छोटे आदमी हजारों लुटाते थे, अब कोई पैसा भी खर्च नहीं करता। अब न अनीस हैं, न दबीर, न जमीर हैं न दिलगीर।*

अफसोस जहां से दोस्त क्या-क्या न गये;
इस बाग से क्या-क्या गुलेराना न गये।
था कौन-सा बाग, जिसने देखी न खिजां,
वो कौन-से गुल खिले जो मुरझा न गये।

दबीर का क्या कहना था, एक बंद पढ़ा और सुनने वाले लोट गए। अनीस को खुदा बख्शे, क्या कलाम था, गोया जवाहिरात के टुकड़े हैं। लेकिन हाथी लोटेगा भी, तो कहां तक। अब भी इस शहर की ऐसी ताजियादारी दुनिया भर में कहीं नहीं होती।

आज़ाद और उनके दोस्त चले जाते थे। राह में वह भीड़ थी कि कंधे से कंधा छिलता था। हवा भी मुश्किल से जगह पाती थी। गरीब-अमीर, बूढ़े-जवान उमड़े चले आते हैं। जिधर देखो, निराली ही सज-धज। कोई हुसेन के मातम में नंगे ही सिर चला जाता है, कोई हरा-हरा जोड़ा फड़काता है। हसीनों की मातमी पोशाक, बिखरे हुए बाल, कभी लजाना, कभी मुस्किराना। शोहदों का सौ-सौ चकफेरियां लगाना, तमाशाइयों की बातें, दिहातिनें बेंदी लगाए, फरिया फड़काए, गोंद से पटिया जमाए बातें कर रही हैं। लीजिए, आगा बाकर के इमामबाड़े में खट से दाखिल। वाह मियां बाकर, क्यों न हो, नाम कर गए। चकाचौंध का आलम है। लेकिन गली तंग, तमाशाइयों की अक्ल दंग। मगर लोग घुस-पैठ कर देख ही आते हैं। नाक टूटे या सिर फूटे, आगा बाकर का इमामबाड़ा जरूर देखेंगे।

दोनों आदमी वहां से आगे बढ़े, तो कच्चे पुल पहुंचे। देखते क्या हैं, एक बाबा-आदम के जमाने के बूढ़े अगले वक्तों के लोगों को रो रहे हैं। वाह-वाह ! लखनऊ के कुम्हार, क्या कमाल हैं। बुड्ढा ऐसा बनाया कि मालूम होता है, पोपले मुंह से अब बोला, और अब बोला। वही सन के से बाल, वही सफेद भौंहें, वही चितवन, वही माथे की शिकन, वही हाथों की झुर्रियां, वही टेढ़ी कमर, वही झुका हुआ सीना। वाह रे कारीगर, तू भी अपने फन में यकता है। वहां से जो चले, तो दारोगा वाजिदअली के इमामबाड़े में आए। यहां सूरज-मुखी पर वह जोबन था कि आफताब अगर एक नजर छिप कर देख पाता, तो शर्म के मारे मुंह छिपा लेता। बेधड़क जाकर कुर्सियों पर बैठ गए। इलायची, चिकनी डली पेश की गई। वहां से हुसेनाबाद पहुंचे। सुभान-अल्लाह ! यह इमामबाड़ा है या जन्नत का मकान ! क्या सजावट थी; बुर्जों पर कंदीलें रोशन थीं, मीनारों पर शमा जलती हुई चिरागों की कतार हवा के झोंकों से लहरा-

---

* लखनऊ के मशहूर मर्सिया कहने वाले।

लहरा कर अजब समां दिखाती थी। नजर जो देखी, तो आंखें ठंडी हो गईं।

अब इनके दोस्त को शौक चर्राया कि तवायफों के इमामबाड़ों की जियारत करे। पहले मियां आज़ाद झिझके और बोले—बंदा ऐसी जगह नहीं जाने का, अपनी शान के खिलाफ है। दोस्त ने कहा—भाई, तुम बड़े रूखे-फीके आदमी हो। हैदर, मुश्तरी, गौहर और आबादी के मर्सिये न सुने, तो किसी से क्या कहेंगे कि लखनऊ का मुहर्रम देखा। आजकल वहां जाना हलाल है ! इन दस दिनों में मजे से जहां चाहे जाइए, रंगीन कमरों में दो गाल हंस-बोल आइए, कोई कुछ नहीं कह सकता।

आज़ाद—यह कहिए तो खैर, बंदा भी लड्डू लगाकर शहीदों में दाखिल हो जाय। पहले गौहर के यहां पहुंचे। अच्छे-अच्छे रईस-ज़ादे बैठे हुए हैं। एक बड़े मालदार जौहरी साहब मटकते हुए आए। दस रुपये की कारचोबी टोपी सिर पर, प्याजी अतलस की भड़कीली अचकन पहने हुए। खिदमतगार के कंधे पर कीमती दुशाला। यह ठाट-बाट, मगर बैठते ही टोके गए। बैठे तो जरीह (ताजिया) की तरफ पीठ करके। गौहर ने एक अजीब अदा से झिड़क दिया—ऐ वाह, बड़े तमीजदार हो। जरीह की तरफ पीठ कर ली ! सीधे बैठो, आदमियत के साथ।

मियां आज़ाद ने चुपके से दोस्त के कान में कहा—मियां, इस टीम-टाम से तो आए, मगर घुड़की खाकर मिनके तक नहीं।

दोस्त—भाईजान, गौहर लखनऊ की जान है, लखनऊ की शान है। ऐसा खुश नसीब कोई हो तो ले कि इसकी घुड़कियां सहे।

लोग अदब से गरदन झुकाए बैठे कनखियों से आंखों को सेक रहे थे, लेकिन किसी के मुंह से बात न निकलती थी। यहां से उठे, तो फिरंगी-महल में हैदरजान के यहां पहुंचे। वहां मर्सिया हो रहा था—

निकले खेमे से जो हथियार लगाए अब्बास,
चढ़ के रहबार पर मैदान में आये अब्बास।

इस शेर को ऐसी प्यारी आवाज से अदा किया कि सुनने वाले लोटन कबूतर हुए जाते थे। राग और रागिनी तो उसकी लौंडियां थीं। सबके सब सिर धुनते थे, क्या प्यारा गला पाया है ! मियां आज़ाद की बांछें खिली जाती थीं और गरदन तो घड़ी का खटका हो गई थी।

यहां से उठे, तो मुश्तरी के कमरे में पहुंचे। देखने वालों का वह हुजूम था कि तिल रखने की जगह नहीं।

'खंजर जो बोसा गाहे पयंबर पै चल गया' इसको झंझौटी की धुन में, इस लुत्फ़ से पढ़ा कि लोग फड़क उठे।

दोस्त—क्यों यार, क्या बिल्कुल ही गंवार हो। मातम में जेवर का क्या जिक्र है? गोरे-गोरे कानों में काले-काले करनफूल, हाथों में सियाह चूड़ियां, बस यही काफी है। लेकिन यह सादगी भी अजीब लुत्फ दिखाती है।

यहां से उठकर दोनों आदमी मातम की मजलिसों में पहुंचे। जिधर जाते हैं, रोने-पीटने की आवाज आती है, जिसे देखिए, आंखों से आंसू बहा रहा है। सारी रात मजलिसों में घूमते रहे, सुबह अपने घर पहुंचे।

दस

वसंत के दिन आए। आज़ाद को कोई फिक्र तो थी ही नहीं, सोचे, आज वंसत की बहार देखनी चाहिए। घर से निकल खड़े हुए, तो देखा कि हर चीज जर्द है, पेड़-पत्ते जर्द, दरोदीवार जर्द, रंगीन कमरे ज़र्द, लिबास जर्द, कपड़े जर्द। शाहमीना की दरगाह में धूम है, तमाशाइयों का हुजूम है। हसीनों के झमकड़े, रंगीले जवानों की रेल-पेल, इंद्र के अखाड़े की परियों का दंगल है, जंगल में मंगल है। वसंत की बहार उमंग पर है, जाफरानी दुपट्टों और कसरिए पाजामों पर अजब जोबन है। वहां से चौक पहुंचे। जौहरियों की दूकान पर ऐसे सुंदर पुखराज हैं कि पुखराज-परी देखती, तो मारे शर्म के हीरा खाती और इंद्र का अखाड़ा भूल जाती। मेवा बेचने वाली जर्द आलू, नारंगी, अमरूद, चकोतरा, महताबी की बहार दिखलाती है, चंपई दुपट्टे पर इतराती है। मालिन गेंदा, हजारा, जर्द गुलाब की बू-बास से दिल खुश करती है। और पुकार-पुकार कर लुभाती है, गेंदे का हार है, गले की बहार है। हलवाई खोपड़े की जर्द बर्फी, पिस्ते की बर्फी, नानखताई, बेसन के लड्डू, चने के लड्डू दूकान पर सजाए बैठा है। खोंचे वाले पापड़, दालमोट, सेव वगैहर बेचते फिरते हैं। आज़ाद यही बहार देखते, दिल बहलाते चले जाते थे। देखते क्या हैं, लाला वसंतराय के मकान में कई रंगीले जवान बांकी टोपियां जमाए, वसंती पगियां बांधे, केसरिये कपड़े पहने बैठे हैं। उनके सामने चंद्रमुखी औरतें बैठी नौबहार की धुन में वसंत गा रही हैं। कालीन जर्द है, छतपोश जर्द, कंबल जर्द, झालर से मकान सजाया है, वसंत-पंचमी ने दरोदीवार तक को बसंती लिबास पहनाया है। कोई यह गीत गाती है—

ऋतु आई बसंत अजब बाहर;
खिले जर्द फूल बिरवों की डार।
चटक्यो कुसुम, फूलै लागी सरसों;
झूमत चलत गेहू की बार,
हर के द्वारे माली का छोहरा;
गरवा डारत गेंदों के हार;
टेसू फूले, अंबा, बौरे;
चंपा के रूख कलियन की बहार।
गरवा डारे उस्ताद के द्वारे;
चलो सब सखियां कर-कर सिंगार।

कोई मियां अमानत की यह गजल गाती है—

है जलवए तन से दरोदीवार बसंती,
पोशाक जो पहने है मेरा यार बसंती।
क्या फस्ले बहारी में शिगूफे हैं खिलाए;
माशूक हैं फिरते सरे-बाजार बसंती।
गेंदा है खिला बाग में, मैदान में सरसों,
सहरा वह बसंती है, यह गुलजार बसंती।

मुंह जर्द दुपट्टे के न आंचल से छिपाओ,
हो जाय न रंगे गुले-रुखसार बंसती।

आज़ाद चले जाते थे कि एक नई सज-धज के बुजुर्ग से मुठभेड़ हुई। बड़े तजुर्बेकार, खुर्राट आदमी थे। आज़ाद को देखते ही बोले-आइए-आइए खूब मिले। वल्लाह, शरीफ की सूरत पर आशिक हूं। चीन, माचीन, हिन्द और सिंध, रूम और शाम, अलगरज, सारी खुदाई की बंदे ने खाक छानी है, और तू यार जानी है। सफर का हाल सुन, घुंघरू बोले छुन-छुन। ऐसी बात सुनाऊं, परी को लुभाऊं, जिनको रिझाऊं, मिसर की दास्तान सुनाऊं।

यह तकरीर सुनकर आज़ाद के होश पैतरे हो गए, समझ में न आया, कोई पागल है, या पहुंचा हुआ फकीर। मगर आसार तो दीवानेपन के ही हैं।

खुर्राट ने फिर बड़बड़ाना शुरू किया-सुनो यार कहता है, खाकसार, हम सो रहें तुम जागो, फिर हम उठ बैठें, तुम सो रहो, सफर यार का है, सोते-जागते राह काटें, सफर का अंधा कुआं उन्हीं ईंटों से पाटें।

यह कहकर खुर्राट ने एक खोंचे वाले को बुलाया और पूछा-खुटियां कितने सेर? बर्फी का क्या भाव? लड्डू पैसे के कै? बोलो झटपट, नहीं हम जाते हैं। खोंचे वाले ने समझा, कोई दीवाना है। बोला-पैसे भी हैं या भाव ही से पेट भरोगे?

खुर्राट-पैसे नहीं हैं, तो क्या मुफ्त मांगते हैं? तौल दे सेर भर मिठाई।

मिठाई लेकर आज़ाद को जिद करके खिलाई, ठंडा पानी पिलवाया और बोले-शाम हुई, अब सो रहो, हम असबाब ताकते हैं। मियां आज़ाद एक दरख्त के नीचे लेटे, खुर्राट ने ऐसी मीठी-मीठी बातें कीं कि उन्हें उस पर यकीन आ गया। दिन भर के थके थे ही, लेटते ही नींद आ गई। सोये तो घोड़े बेचकर, सिर-पैर की खबर नहीं, गोया मुर्दों से शर्त लगाई है। वह एक काइयां, दुनिया-भर का न्यारिया, उनको गाफिल पाया, तो घड़ी, सोने की चेन, चांदी की मूठवाली छड़ी, चांदी का गिलौरीदान लेकर चलता हुआ। आध घंटे में आज़ाद की नींद खुली, तो देखा कि खुर्राट गायब है, घड़ी और चेन, डब्बा और छड़ी भी गायब। चिल्लाने लगे-लूट लिया, जालिम ने लूट लिया। झांसा दे गया। ऐसा चकमा कभी न खाया। दौड़कर थाने में इत्तला की। मगर खुर्राट कहां, वह तो यहां से दस कोस पर था। बेचारे रो-पीट कर बैठ रहे। थोड़ी ही दूर गए होंगे कि एक चौराहे पर एक जवान को मुश्की घोड़े पर सवार आते देखा। घोड़ा ऐसा सरपट जा रहा था कि हवा उसकी गर्द तक को न पहुंचती थी। अंधेरा हो ही गया था, एक कोने में दबक रहे कि ऐसा न हो, कहीं झपेट में आ जायं। इतने में सवार उनके सिर आ खड़ा हुआ। झट घोड़े की बाग रोकी और इनकी तरफ नजर भर का देखने लगा। यह चकराये, माजरा क्या है? यह तो बेतरह घूर रहा है, कहीं हंटर तो न देगा।

जवान-क्यों हजरत, आप किसी को पहचानते भी हैं? खुदा की शान, आप और हमको भूल जायं!

आज़ाद-मियां, तुमको धोखा हुआ होगा। मैंने तो कभी तुम्हारी सूरत भी नहीं देखी।

जवान—लेकिन मैंने तो आपकी सूरत देखी है, और आपको पहचानता हूं। क्या इतनी जल्दी भूल गए? यह कहकर वह जवान घोड़े से उतर पड़ा और आज़ाद से चिमट गया।

आज़ाद—आपको सचमुच धोखा हुआ।

जवान—भाई, बड़े भुलक्कड़ हो। याद करो, कॉलेज में हम-तुम, दोनों एक ही दर्जे में पढ़ते थे। वह किश्ती पर हवा खाने जाना और दरिया के मजे उड़ाना; वह मदारी खोंचेवाला, वह उकलैदिस के वक्त उड़ भागना; सब भूल गए? अब मियां आज़ाद को याद आई। दोस्त के गले से लिपट गए और मारे खुशी के रो दिए।

जवान—तुम्हें याद होगा, जब मैं इंटरमीडिएट का इम्तिहान देने को था, तो मेरे पास फीस का भी ठिकाना न था। रुपये के तलाश में इधर-उधर भटकता फिरता था कि राह में अस्पताल के पास तालाब पर तुमसे मुलाकात हुई और तुमने मेरे हाल पर रहम करके मुझे रुपये दिए। तुम्हारी मदद से मैंने बी॰ ए॰ तक पढ़ा। लेकिन इस वक्त तुम बड़े उदास नजर आते हो, इसका क्या सबब है?

आज़ाद—यार, कुछ न पूछो। एक खुर्राट के चकमे में आ गया। यहीं घास पर लेट रहा, और वह मेरी घड़ी-चेन वगैरह लेकर चलता हुआ।

जवान—भई वाह ! इतने घाघ बनते हो, और एक खुर्राट के भर्रे में आ गए ! आपके बटन तक उतार ले गया और आपको खबर नहीं। लो अब कान पकड़िए कि अब फिर किसी मुसाफिर की दोस्ती का एतबार न करेंगे। मिठाई तो आप खा ही चुके हैं, चलिए, कहीं बैठकर वसंती गाना सुनें।

ग्यारह

एक दिन आज़ाद शहर की सैर करते हुए एक मकतबखाने में आ पहुंचे। देखा, एक मौलवी साहब खटिया पर उकड़ूं बैठे हुए लड़कों को पढ़ा रहे हैं। आपकी रंगी हुई दाढ़ी पेट पर लहरा रही है। गोल-गोल आंखें, खोपड़ी घुटी-घुटाई, उस पर चौगोशिया टोपी जमी-जमाई। हाथ में तसबीह लिए खटखटा रहे हैं। लौंडे इर्द-गिर्द गुल मचा रहे हैं। हू-हक मची हुई है, गोया कोई मंडी लगी हुई है। तहजीब कोसों दूर, अदब काफूर, मगर मौलवी साहब से इस तरह से डरते हैं, जैसे चूहा बिल्ली से, या अफीमची नाव से। जरी चितवन तीखी हुई, और खलबली मच गई। सब किताबें खोले झूम-झूम कर मौलवी साहब को फुसला रहे हैं। एक शेर जो रटना शुरू किया, तो बला की तरह उसको चिमट गए। मतलब तो यह कि मौलवी साहब मुंह का खुलना और जबान का हिलना और उनका झूमना देखें, कोई पढ़े या न पढ़े, इससे मतलब नहीं। मौलवी साहब भी वाजबी ही वाजबी पढ़े-लिखे थे, कुछ शुद-बुद जानते थे। पढ़ाने के फन से कोरे। एक शागिर्द से चिलम भरवायी, दूसरे से हुक्का ताजा कराया; दम-झांसे में काम लिया, हुक्का गुड़-गुड़ाया और धुआं उड़ाया। शामत यह थी कि आप

अफीम के भी आदी थे। चीनी की प्याली आई, अफीम घोली और उड़ायी। एक महाजन के लड़के ने बर्फी मंगवायी, आपने खूब डट कर चखी, तो पीनक ने आ दबोचा। ऊंघे, हुक्का टेढ़ा हो गया, गरदन अब जमीन पर आयी, और अब जमीन पर आई। हुक्का गिरा और चकनाचूर हो गया। दो-एक लड़कों की किताबों पर चिनगारियां गिरीं। अब पीनक से चौंके, तो ऐसे झल्लाये कि किसी लड़के के चपत लगाई, किसी की खोपड़ी पर धप जमाई, एक के कान गरमाए। पीनक में आकर खुद तो हुक्का गिराया और शागिर्दों को बेकसूर पीटना शुरू किया। खैर, इतने में एक लड़का किताब ले कर पढ़ने आया। उसने पढ़ा-

दिलम कुसूद कुसादम चु नामा अत गोई,
कलीदे बागे गुलिस्तान दिल कुसाई बूद।

(जब मैंने तेरा खत खोला, तो मेरा दिल खुल गया, गोया वह पत्र खुशी के बाग के दरवाजे की कुंजी था।)

अब मौलवी साहब का तरजुमा सुनिए-

दिल तेरा खुला, खोला मैंने जो खत तेरा, कहे तू कुंजी दरवाजे बागदिल खोलने की थी।

माशा-अल्लाह, क्या तरजुमा था ! न मौलवी साहब ने खुद समझा, न लड़के ने। और दिल्लगी सुनिए कि मौलवी साहब भी शागिर्द के साथ पढ़ते जाते हैं और दोनों हिलते जाते हैं। जब यह पढ़ चुके, तो दूसरे साहब किताब बगल में दबाये आ बैठे।

मौलवी साहब-अरे, गावदी, नई किताबें शुरू कीं, और चिरागी नदारद, शुकराना छप्पर पर ! जा, दौड़ कर दो आने घर से ले आ।

लड़का-मौलवी साहब, कल लेता आऊंगा। आप तो हत्थे ही पर टोक देते हैं। आपको अपनी मिठाई ही से मतलब है कि मुफ्त के झगड़े से?

मौलवी-ये झांसें किसी और को देना। अच्छा, अपने बाप की कसम खा कि कल जरूर लाऊंगा।

लड़का-मौलवी साहब के बड़े सिर की कसम। चढ़ते चांद तक जरूर लाऊंगा।

इस पर सब लड़के हंस पड़े कि कितना ढीठ लड़का है। कसम भी खाई तो मौलवी साहब के सिर की, और सिर भी छोटा नहीं, बड़ा।

मौलवी-चुप गधे, मेरा सिर क्या कद्दू है? अच्छा, पढ़।

लड़का तो ऊटपटांग पढ़ने लगा, मगर मौलाना साहब चूं भी नहीं करते। उन्हें मिठाई की फिक्र सवार है। सोच रहे हैं, जो कल दो आने न लाया, तो खूब कोड़े फटकारूंगा, तस्मा तक तो बाकी रखूंगा नहीं।

दस-पांच लड़के, एक-दूसरे को गुदगुदा रहे हैं और मौलवी साहब को दिखाने के लिए जोर-जोर से चिल्लाकर कोई शेर पढ़ रहे हैं।

आज़ाद को मकतब की यह हालत और लौंडों की यह चिल्ल-पों देख-सुनकर ऐसा गुस्सा आया कि अगर पाते, तो मौलवी साहब को कच्चा ही खा जाते। दिल में सोचे, यह मकतबखाना है या पागलखाना? जिधर देखिए, गुल-गपाड़ा, धौल-धप्पा

हो रहा है। मालूम होता है, भरी बरसात में मेढक गांव-गांव या पिछले पहर कौवे कांव-कांव कर रहे हैं। घर पर आते ही मकतबों की हालत पर यह कैफियत लिख डाली–

(1) नूर के तड़के से छुटपुटे तक लड़कों को मकतबखाने में कैद रखना बेहूदगी है। लड़के दस बजे आयं, चार बजे छुट्टी पायं, यह नहीं कि दिन भर दांता-किल-किल, पढ़ना भी अजीरन हो जाय, और यही जी चाहे कि पढ़ने-लिखने की दुम में मोटा-सा रस्सा बांधें, मौलवी साहब को हवा बतायें और दिल खोलकर गुलछर्रे उड़ाएं।

(2) यह क्या हिमाकत है कि जितने लड़के हैं, सबका सबक अलग दो-दो, चार-चार, दस-दस का एक-एक दर्जन बना लीजिए, मेहनत की मेहनत बचेगी और काम ज्यादा होगा।

(3) जिधर देखता हूं, अदब (साहित्य) की तालीम हो रही है। तालीम में सिर्फ अदब ही शामिल नहीं, हिसाब है, तवारीख है, जुगराफिया है, उकलैदिस है; मगर पढ़ाये कौन? मौलवी साहब को तो सौ तक गिनती नहीं आती।

(4) सब लड़कों का गुल मचा-मचाकर आवाज लगाना महज फजूल है। कोई खोंचे वाले, गंडेरी वाला, चने-परमल वाला इस तरह चिल्लाये; तो मुजायका नहीं, मटर-सटर, गोल-गप्पे, मसालेदार बैगन, मूली, तुरई, लो तरकारी–यह तो फेरी देने वालों की सदा है, मकतब को मंडी बनाना हिमाकत है।

(5) तरजुमे पर खुदा की मार और शैतान की फटकार। 'जाता हूं बीच एक बाग के, वास्ते लाने अच्छी चीजों के, मैंने देखा मैंने, तू जाता है तू।' वाह, क्या तू-तू मैं-मैं है ! तरजुमा सही होना चाहिए, यह तो न कोई आवाज कसे कि लड़के बंगला बोल रहे हैं।

(6) पढ़ते वक्त लड़कों को हिलना ऐब है। मगर कहें किससे? मौलवी साहब तो खुद झूमते हैं।

(7) मतलब जरूर समझाना चाहिए, लड़का मतलब ही न समझेगा, तो उसको फायदा क्या खाक होगा?

(8) सबक को बरजबान रटना बुरी बात है। किताब बंद की और फर-फर दस सफे सुना दिए। हाफिजा कुछ मजबूत हुआ सही, मगर सितम यह है कि फिर तोते की तरह बात के सिवा कुछ याद नहीं रहता।

(9) छोटे-छोटे लड़कों को बड़ी-बड़ी किताबें पढ़ाना उनकी जिंदगी खराब करना है। जरा से टट्टू पर जब दो हाथियों का बोझ लादोगे, तो टट्टू बेचारा आंखें मांगने लगेगा, या नहीं? जरा-सा बच्चा और पढ़े 'मीना बाजार' !

(10) लड़के को शुरू ही से फारसी पढ़ाना उसका गला घोटना है। पहले उर्दू पढ़ाइए इसके बाद फारसी। शुरू ही से करीमा-मामकीमां पढ़ाना उसकी मिट्टी खराब करना है।

(11) मौलवी साहब लडकों से चिलम भरवाना, हुक्का ताजा करवाना छोड़ दें। इसकी जगह इनको बातचीत करने और मिलने-जुलने का आदाब सिखायें।

(12) अफीमची मौलवी छप्पर पर रखे जायं। मौलवी ने अफीम खाई और लड़कों की शामत आई। वह पीनक में झूमा करेंगे।

यह इश्तिहार मोटे कलम से लिख कर मियां आज़ाद रातोरात मकतब के दरवाजे पर चिपका आए। झट से निकल करके शहर में भी दो-चार जगह चिपका दिया। दूसरे दिन इश्तिहार के पास लोग ठाट के ठाट जमा हुए। किसी ने कहा, सम्मन चिपकाया गया है; कोई बोला, ठेठर का इश्तिहार है। बारे एक पढ़े-लिखे साहब ने कहा—यह कुछ नहीं है, मौलवी साहब के किसी दुश्मन का काम है। अब जिसे देखिए, कहकहा उड़ाता है। भाई वल्लाह, किसी बड़े ही फिरकेरबाज का काम है। मौलवी बेचारे को ले ही डाला, पटरा कर दिया। मकतबखाने में लड़कों के चेहरे गुलनार हो गए। धत् तेरे की ! बचा रोज कमचियां जमाते थे, चपतें लगाते थे, अफीम घोली और सिर पर शेख-सद्दो सवार। अब आटे-दाल का भाव मालूम होगा। मौलवी साहब तशरीफ का बकचा बचा लाए, तो लड़के उनका कहना ही नहीं मानते। मौलवी साहब कहते हैं, किताब खोलो। शागिर्द जवाब देते हैं, बस मुंह बंद करो। फर्माया कि अब बोला, तो हम बिगड़ जायेंगे। शागिर्दों ने कहा, हम खूब बनायेंगे। तब तो झल्लाये और डपट कर कहा, मैं बड़ा गर्म मिजाज हूं। एक गुस्ताख ने मुसकिरा कर कहा, फिर हम ठंडा बनायेंगे। दूसरा बोला, किसी ठंडे मुल्क में जाइए। तीसरा बोला, दिमाग में गर्मी चढ़ गई है। मौलवी साहब घबराये कि माजरा क्या है। बाहर की तरफ नजर डाली, तो देखा गोल के गोल तमाशाई खड़े कहकहे लगा रहे हैं। बाहर गए, तो इश्तिहार नजर आया। पढ़ा, तो कट गए। दिल ही दिल में लिखने वाले को गालियां देने लगे। पाऊं, तो कच्चा ही खा जाऊं। इतने डंडे लगाऊं कि छठी का दूध याद आ जाए। बदमाश ने कैसा खाका उड़ाया है ! जभी तो लड़के इतने ढीठ हो गए हैं। मैं कहता हूं, आम, वे कहते हैं इमली। अब इज्जत डूबी। मकतबखाने में जाता हूं तो खौफ है, कहीं लौंडे रोज की कसर न निकालें और अंजर-पंजर ढीले कर दें। भाग जाऊं तो रोटियों के लाले पड़ें। खाऊं क्या, अंगारे? आखिर ठान ली कि बोरिया-बंधना छोड़ो मुल्लागीरी से मुंह मोड़ो। भागे, तो घर पर दम लिया। लड़कों ने जो देखा कि मौलवी साहब पत्ता-तोड़ भागे जाते हैं, तो जूतियां बगल में दबा, तख्तियां और बस्ते संभाल, दुम के पीछे चले। तमाशाइयों में बातें होने लगीं—

एक—अरे मियां, यह भागा कौन जाता है बगटुट?

दूसरा—शैतान है, शैतान। आज लड़कों के दांव पर चढ़ गया है, कैसा दुम दबाये भागा जाता है !

अब सुनिए कि मुहल्ले भर में खलबली मच गई। अजी, ऐसे मकतब की ऐसी-तैसी। बरसों से लौंडे पढ़ते हैं, एक हरफ न आया। लड़कों की मिट्टी पलीद की। पढ़ाना-लिखाना खैरसल्लाह, चिलमें भरवाया किए। सबने मिलकर कमेटी की कि मौलवी साहब का आम जलसे में इम्तिहान लिया जाए, और मनादी हो कि जिन साहब ने यह इश्तिहार लिखा है, वह जरूर आए। ढिंढोरिया मुहल्ले भर में कहता फिरा कि खलक खुदा का, मुल्क सरकार का, हुक्म कमेटी का कि आज एक जलसा होगा और मौलवी साहब का इम्तिहान लिया जाएगा। जिसने इश्तिहार लिखा है, वह

भी हाजिर हो।

मियां आज़ाद बहुत खुश हुए, शाम को जलसे में जा पहुंचे। जब दो-तीन सौ आदमी, अहाली-मवाली, डोम-डफाली, ऐरे-गैरे, नत्थू-खैरे, सब जमा हुए, तो एक मेंबर ने कहा—हजरत, यह तो सब कुछ है; मगर मौलवी साहब इस वक्त नदारद हैं। एकतरफा डिगरी न दीजिए। उन्हें बुलवाइए, तब इम्तिहान लीजिए। यों तो वह आयेंगे नहीं। हम एक तदबीर बताए, जो दौड़े न आए, तो मूंछ मुड़ा डालें, हाथ कलम करा डालें। कहला भेजिए कि किसी के यहां शादी है, निकाह पढ़ने के लिए अभी बुलाते हैं। लोगों ने कहा, खूब सूझी, दूर की सूझी। आदमी मौलवी साहब के दरवाजे पर गया और आवाज दी—मौलवी साहब, अजी मौलवी साहब। क्या मर गए? इस घर में कोई है, या सबको सांप सूघ गया? दरवाजा धमधमाया, कुडी खटखटाई, मगर जवाब नदारद। तब तो आदमी ने झल्लाकर पत्थर फेंकने शुरू किए। दो-एक मौलवी साहब के घुटे हुए सिर पर भी पड़े। मौलवी साहब बोले—कौन है? आदमी ने कहा—बारे आप जिंदा तो हुए। मैंने तो समझा था, कफन की जरूरत पड़ी। चलिए, ईदूखां के यहां शाादी है, निकाह पढ़ दीजिए। निकाह का नाम सुनते ही मौलाना खमीरी रोटी की तरह फूल गए, अंगरखे का बंद तड़ से टूट गया। कफन फाड़कर चिल्ला उठे—आया, आया, ठहरे रहो, अभी आया। शिमला खोपड़ी पर जमा, अकीक का कंठा हाथ में ले, सुरमा लगा घर से चले। आदमी साथ है, दिल में कहते जाते हैं, आज पौ-बारह हैं, बढ़कर हाथ मारा है, छप्पन करोड़ की तिहाई, हाथी के हौदे में घुटे। लंबे-लंबे डग भरते आदमी से पूछते जाते हैं—क्यों मियां, अब कितनी दूर मकान है? पास ही है न देखें, निकाह पढ़ाई क्या मिलती है? सवा रुपये तो मामूली है, मगर खुदा ने चाहा तो बहुत कुछ ले मरूंगा। आदमी पीछे-पीछे हंसता जाता है कि मियां हैं किस खयाल में। बारे खुदा-खुदा करके वह मंजिल तय हुई, मकान में आए, तो होश उड़ गए। यह कैसा ब्याह है भाई, न ढोल, न शहनाई, हमारी शामत आई। कनखियों से इधर-उधर देख रहे हैं, अक्ल दंग है कि ये सब के सब हमीं को क्यों घूर रहे हैं। इतने में मीर-मजलिस ने कहा—जिन साहब ने इश्तिहार लिखा था, वह अगर आए हों तो कुछ फर्मायें।

आज़ाद ने खड़े होकर कहा—यह जो मौलवी साहब आप लोगों के सामने खड़े हैं, इनसे पूछिए कि मकतबखाने में अफीम क्यों पीते हैं? जब देखिए, पीनक में ऊंघ रहे हैं या मिठाई ठूंग रहे हैं। लड़कों का पढ़ाना खाला जी का घर नहीं कि सिर घुटाया और मुल्ला बन गए, चूड़ी निगली और पीर जी बन गए।

मौलवी साहब ताड़ गए कि यहां मेरी दुर्गति होने वाली है। भागने ही को थे कि एक आदमी ने टांग पकड़ कर आंटी बताई, तो फट से जमीन पर आ रहे। अच्छे फंसे। खूब निकाह पढ़ाया। मुफ्त में उल्लू बने। खैर, मियां आज़ाद ने फिर कहा—

'मौलवी साहब को किसी मजार का मुजाविर या कहीं का तकियेदार बना दीजिए, तो खूब मीठे टुकड़े उड़ायें और डंड पेलें। यह मकतबखाने में लल्लू का दसहरा उनको क्यों बना दिया? लड़कों की कैफियत सुनिए कि दिन भर गुल्ली-डंडा खेला करते हैं, चीखते हैं, चिल्लाते हैं, और दिन भर में अठारह मर्तबा पेशाब करने और पानी

पीने जाते हैं। कोई कहता है, मौलवी साहब देखिए, यह हमारी नाक पकड़ता है, कोई कहता है यह हमसे लड़ता है। मौलवी साहब को इससे कुछ मतलब नहीं कि लड़के पढ़ते हैं या नहीं, वहां तो हिलते जाओ और गुल मचाओ कि कान पड़े आवाज न सुनाई दे, उसमें चाहे जो कुछ ऊल-जलूल बको।'

मौलवी साहब फिर रस्सी तुड़ा कर भागने लगे। लोग लेना-लेना करके दौड़े। गए थे रोजे बख्शाने, नमाज गले पड़ी। चिल्लाकर बोले—तुम कौन होते हो जी हमारा ऐब निकालने वाले, हम पढ़ायें या न पढ़ायें, तुमसे मतलब?

आज़ाद—हजरत, आज ही तो पंजे में फंसे हो। रोज तोंद निकाले बैठे रहा करते थे। यह तोंद है या बेईमान की कब्र? या हवा का तकिया? अब पचक जाए, तो सही खुदा जाने, कहां का गंवार बिठा दिया है। कल सुबह को इनका इम्तिहान लिया जाए।

मौलवी साहब—आप बड़े शैतान हैं !

आज़ाद—आप लंगूर हैं; मगर हैरत है कि यह ठुड्डी से दुम की कोंपल क्यों कर फूटी !

इस तरह जलसा खतम हुआ। लोगों ने दिल में ठान ली कि कल चाहे ओले पड़ें, चाहे कड़कड़ाती धूप हो, चाहे भूचाल आए; मगर हम आयेंगे और जरूर आयेंगे। मौलवी साहब से ताकीद की गई कि हजरत, कल न आइएगा, तो यहां रहना मुश्किल हो जायेगा—मौलवी साहब का चेहरा उतर गया था, मगर कड़ककर बोले—हम और न आएं, आएं, और बीच खेत आएं। हम क्या कोई चोर हैं, या किसी का माल मारा है?

मौलवी साहब घर पहुंचे, तो आज़ाद को लगे पानी पी-पीकर कोसने। इसकी जबान सड़े, मुंह फूल जाए; सारी चौकड़ी भूल जाए; आसमान से अंगारे बरसें, ऐसी जगह मरे, जहां पानी न मिले; डंकू फीवर चट करे; इंजिन के नीचे दबकर मरे। मगर इन गालियों से क्या होता था। रात किसी तरह कटी, दूसरे रोज नूर के तड़के लोग फिर जलसे में आ पहुंचे। मगर मौलाना ऐसे गायब हुए, जैसे गधे के सिर से सींग। बारे यारों ने तत्तो-थभों करके सिर सहलाते, सब्ज बाग दिखलाते घसीट ही लिया। मियां आज़ाद ने पूछा—क्यों मौलवी साहब, किस मनसूबे में हो?

मौलवी साहब—सोचता हूं कि अब कौन चाल चलूं? सोच लिया है कि अब मुल्लागीरी छोड़ प्यादों में नौकरी करेंगे। बस, वतन से जायेंगे, तो फिर लौटकर घर न आयेंगे। अमीर-गरीब सब पर मुसीबत पड़ती है। फिर हमारी बिसात क्या? चारखाने का अंगरखा न सही, गाढ़े की मिरजई सही। मगर आप एक गरीब के पीछे नाहक क्यों पड़े हुए हैं? 'कहां राजा भोज, कहां गंगुआ तेली?'

आज़ाद—ये झांसे रहने दीजिए, ये चकमे किसी और को दीजिए।

मौलवी साहब—खुदा की पनाह ! मैं आपका गुलाम और आपको चकमे दूंगा? आपसे क्या अर्ज करूं कि कितना जी तोड़कर लड़कों को पढ़ाता हूं। इधर सूरज निकला और मैंने मकतब का रास्ता लिया। दिन भर लड़कों को पढ़ाया। क्या मजाल कि कोई लड़का गरदन तक उठा ले। कोई बोला, और मैंने टीप जमाई, खेला और शामत आई।

समझ-बूझकर चलता था, अगर कोई लड़का मकतब में खिलौना लाता, तो उसे तुरंत अंगीठी में डलवा देता। मगर आपने सारी मेहनत पर पानी फेर दिया। आपके सामने मेरी कौन सुनता है।

मीर मजलिस ने कहा—मियां आज़ाद इन्हें बकने दीजिए, आप इनका इम्तिहान लीजिए।

मियां आज़ाद तो सवाल पूछने के लिए खड़े हुए, उधर मौलवी साहब का बुरा हाल हुआ। रंग फक, कलेजा सक, आंखों में आंसू, मुंह पर हवाइयां छूट रही हैं, कलेजा धक-धक करता है, हाथ-पांव कांपने लगे। किसी तरह खड़े तो हुए, मगर कदम न जमा। पांव डगमगाये और लड़खड़ा कर गिरे। लोगों ने उन्हें उठाकर फिर खड़ा किया।

आज़ाद—यह शेर किस बहर में है—

मैंने कहा जो उससे ठुकराके चल न जालिम,
हैरत में आके बोला—क्या आप जी रहे हैं?

मौलवी साहब—बहर (दरिया) में आप ही गोते लगाइए, और खुदा करे, डूब जाइए। ज़िसे देखो, हमीं पर शेर है। नामाकूल इतना नहीं समझते कि हम मौलवी आदमी लौंडे पढ़ाना जानें या शायरी करना। हमें शेर से मतलब। आए वहां से बहर पूछने !

आज़ाद—बेशुनो अज नैचूं हिकायत मी कुनद;
वज जुदाईहा शिकायत मी कुनद।
इस शेर का मतलब बतलाइए !

मौलवी साहब—इसका बताना क्या मुश्किल है? नै कहते हैं चंडू की नै को। बस, उस जमाने में लोग चंडू पीते थे और शिकायत करते थे।

आज़ाद—बकरी की पिछली टांगों को फारसी में क्या कहते हैं?

मौलवी साहब—यह किसी अपने भाई-बंद, बूचड़-कस्साब से पूछिए। बंदा न छीछड़े खाय; न जाने । वाह, अच्छा सवाल है ! अब मुल्लाओं को बूचडों की शागिर्दी भी करनी चाहिए !

आज़ाद—हिंदुस्तान के उत्तर में कौन मुल्क है?

मौलवी—खुदा जाने, मैं क्या देखने गया था कि आपकी तरह मैं भी सैलानी हूं?

आज़ाद—सबसे बड़ा दरिया हिंदोस्तान में कौन है?

मौलवी—फिरात, नहीं वह देखिए, भूला जाता हूं, अजी वही, दजला, दजला, खूब याद आया।

हाजिरीन—वाह रे गावदी, अच्छी उलटी गंगा बहाई। फिरात और दजला हिंद में हैं? इतना भी नहीं जानता।

आज़ाद—चांद के घटने-बढ़ने का सबब बताओ?

मौलवी—वाह, क्या खूब; खुदाई कारखानों में दखल दूं? इतना तो किसी की समझ में आता नहीं कि फ्रीमिशन क्या है, फिर भला यह कौन जाने कि चांद कैसे

घटता-बढ़ता है। खुदा का हुक्म है, वह जो चाहता है, करता है।

आज़ाद-पानी क्योंकर बरसता है?

मौलवी-यह तो दादीजान तक को मालूम था। बादल तालाबों, नदियों, कुओं, गढ़ों, हौजों से घुस-पैठ कर दो-तीन रोज खूब पानी पीता है; जब पी चुका, तब आसमान पर उड़ गया, मुंह खोला तो पानी रिम-झिम बरसने लगा। सीधी-सी तो बात है।

हाजिरीन-वल्लाह, क्या बेपर की उड़ाई है ! आदमी हो या चोंच ! कहने लगे, बादल पानी पीता है।

आज़ाद-गिनती आपको कहां तक याद हैं और पहाड़े कहां तक?

मौलवी-जवानी में रुपये के टके गिन लेता था; अब भी आठ-आठ आने एक दफे में गिन सकता हूं। मगर पहाड़े किसी हलवाई के लड़के से पूछिए।

आज़ाद-एक आदमी ने तीन सौ पछत्तर मन गल्ला खरीदा, रात को चारों ने मौका ताक कर एक सौ पच्चीस मन उड़ा लिया, तो बताओ उस आदमी को कितना घाटा हुआ?

मौलवी-यह झगड़ा जौनपुर के काजी चुकायेंगे। मैं किसी के फटे में पांव नहीं डालता। मुझे किसी के टोटे-घाटे से मतलब? चोरी-चकारी का हाल थानेदारों से पूछिए। बंदा मौलवी है। मुल्ला की दौड़ मसजिद तक।

आज़ाद-शाहजहां के वक्त में हिंदोस्तान की क्या हालत थी और अकबर के वक्त में क्या?

मौलवी-अजी, आप तो गड़े मुर्दे उखाड़ते हैं ! अकबर और शाहजहां, दोनों की हड्डियां गलकर खाक हो गई होंगी। अब इस पचड़े से मतलब?

आज़ाद ने हाजिरीन से कहा-आप लोगों ने मौलवी साहब के जवाब सुन लिए, अब चाहे जो फैसला कीजिए।

हाजिरीन-फैसला यही है कि यह इसी दम अपना बोरिया-बंधना संभाले। यह चरकटा है। इसे यही नहीं मालूम कि बहर किस चिड़िया का नाम है, बादल किसे कहते हैं, दो तक का पहाड़ा नहीं याद, गिनती जानता ही नहीं, दजला और फिरात हिंदोस्तान में बतलाता है ! और चला है मौलवी बनने। लड़कों की मुफ्त में मिट्टी खराब करता है।

बारह

आज़ाद तो इधर सांड़नी को सराय में बांधे हुए मजे से सैर-सपाटे कर रहे थे, उधर नवाब साहब के यहां रोज उनका इंतजार रहता था कि आज आज़ाद आते होंगे और सफशिकन को अपने साथ लाते होंगे। रोज फाल देखी जाती थी, सगुन पूछे जाते थे। मुसाहब लोग नवाब को भड़काते थे कि अब आज़ाद नहीं लौटने के; लेकिन नवाब

साहब को उनके लौटने का पूरा यकीन था।

एक दिन बेगम साहिबा ने नवाब साहब से कहा—क्यों जी, तुम्हारा आज़ाद किस खोह में धंस गया? दो महीने से तो कम न हुए होंगे।

महरी—ऐ वह चंपत हुआ, मुआ चोर।

बेगम—जबान संभाल, तेरी इन्हीं बातों पर तो मैं झल्ला उठती हूं। फिर कहती है कि छोटी बेगम मुझसे तीखी रहती हैं।

नवाब—हां, आज़ाद का कुछ हाल तो नहीं मालूम हुआ ! मगर आता ही होगा !

बेगम—आ चुका।

नवाब—चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाए, मेरा आज़ाद सफशिकन को ला ही छोड़ेगा। दोनों में इल्मी बहस हो रही होगी। फिर तुम जानो, इल्म तो वह समंदर है, जिसका ओर न छोर।

बेगम—(कहकहा लगाकर) इल्मी बहस हो रही होगी? क्यों साहब, मियां सफशिकन इल्म भी जानते हैं? मैं कहती हूं, आखिर अल्लाह ने तुमको कुछ रत्ती, तोला, माशा अक्ल भी दी है? मुआ बटेर, जरी-सी जानवर, काकुन के तीन दानों में पेट भर जाए, उसे आप आलिम कहते हैं। मेरे मैके पड़ोस में एक सिड़ी सौदाई दिन-रात वाही-तवाही बका करता है। उसकी और तुम्हारी बातें एक-सी हैं।

महरी—क्या कहती हो बीबी, उस सौदाई निगोड़े को इन पर से सदके कर दूं !

नवाब—तुम समझी नहीं महरी, अभी तो अल्हड़पने ही के न दिन हैं इनके। खुदा की कसम, मुझे इनकी ये ही बातें तो भाती हैं। यह कमसिनी का सुभाव है और दो-तीन बरस, फिर यह शोखी और चुलबुलापन कहां? यह जब झिड़कती या घुड़कती हैं, तो जी खुश हो जाता है।

महरी—हां, हां जवानी तो फिर बावली होती ही है।

बेगम—अच्छा, महरी, तुझे अपने बुढ़ापे की कसम, जो झूठ बोले, भला बटेर भी पढ़े-लिखे हुआ करते हैं? मुंह-देखी न कहना, अल्लाह लगती कहना।

महरी—बुढ़ापा ! बुढ़ापा कैसा? बीबी, बस ये ही बाते तो अच्छी नहीं लगतीं, जब देखो, तब आप बूढ़ी कह देती हैं ! मैं बूढ़ी काहे से हो गई? बुरा न मानिए तो कहूं, आपसे भी टांठी हूं।

इतने में गफूर खिदमतगार ने पुकारा—हुजूर, पेचवान भरा रखा है। वहां भेज दूं या बगीचे में रख दूं?

नवाब—यह चांदी वाली छोटी गुड़गुड़ी बेगम साहिबा के वास्ते भर लाओ। कल बिसवां तंबाकू आया है, वही भरना। और पेचवान बाहर लगा दो, हम अभी आए।

यह कहकर नवाब ने बेगम साहिबा के हंसी-हंसी में एक चुटकी ली और बाहर आए। मुसाहबों ने खड़े हो-होकर सलाम किए। आदाब बजा लाता हूं हुजूर, तसलीमात अर्ज करता हूं, खुदावंद। नवाब साहब जाकर मसनद पर बैठे।

खोजी—उफ् ! मौत का सामना हुआ, ऐसा धक्का लगा कि कलेजा बैठा जाता है, हत् तेरे गीदी चोर की।

नवाब—क्यों, क्यों, खैर तो है

खोजी–हुजूर, इस वक्त बटेरखाने की ओर गया था।

नवाब–उफ्, भई, दिल बेकरार है। खोजी मियां, तुमको तो हमारी तसल्ली करनी चाहिए थी, न कि उल्टे खुद ही रोते हो, जिसमें हमारे हाथ-पांव और फूल जाएं। अब सफशिकन से हाथ धोना चाहिए। हम जानते हैं कि वह खुदा के यहां पहुंच गए।

मुसाहब–खुदा न करे, खुदा न करे।

खोजी–(पीनक से चौंककर) इसी बात पर फिर कुछ मिठाई नहीं खिलवाते।

नवाब–कोई है, इस मरदक की गरदन तो नापता। हम तो अपनी किस्मतों को रो रहे हैं। वह मिठाई मांगता है। बेतुका, नमकहराम !

खोजी–देखिए, देखिए, फिर मेरी गरदन कुंद छुरी से रेती जाती है। मैं मिठाई कुछ खाने के वास्ते थोड़े ही मंगवाता हूं। इसलिए मंगवाता हूं कि सफशिकन का फातिहा पढ़ूं।

नवाब–शाबाश, जी खुश हो गया। माफ करना, बेअख्तियार नमकहराम का लफ्ज मुंह से निकल गया, तुम बड़े...

मुसाहब–तुम बड़े हलालखोर हो।

इस पर वह कहकहा पड़ा कि नवाब साहब भी लोटने लगे, और बेगम ने घर से लौंडी को भेजा कि देखना तो, यह क्या हंसी हो रही है।

नवाब–भई, क्या आदमी हो, वल्लाह, रोते को हंसाना इसी का नाम है। खोजी बेचारे को हलालखोर बना दिया।

खोजी–हुजूर, अब मैं यहां न रहूंगा। क्या बेवक्त की शहनाई सब के सब बजाने लगे ! अफसोस, सफशिकन का किसी को खयाल तक नहीं।"

नवाब साहब मारे रंज के मुंह ढांप कर लेट रहे। मुसाहबों में से कोई चंडूखाने पहुंचा, कोई अफीम घोलने लगा।

तेरह

इधर शिवाले का घंटा बजा ठनाठन, उधर दो नाकों से सुबह की तोप दगी दनादन। मियां आज़ाद अपने एक दोस्त के साथ सैर करते हुए बस्ती के बाहर जा पहुंचे। क्या देखते हैं, एक बेल-बूटों से सजा हुआ बंगला है। अहाता साफ, कहीं गंदगी का नाम नहीं। फूलों-फलों से लदे हुए दरख्त खड़े झूम रहे हैं। दरवाजों पर चिकें पड़ी हुई हैं। बरामदे में एक साहब कुर्सी पर बैठे हुए हैं और उनके करीब दूसरी कुर्सी पर उनकी मेम साहिबा विराज रही हैं। चारों तरफ सन्नाटा छाया हुआ है। न कहीं शोर, न कहीं गुल। आज़ाद ने कहा–जिंदगी का मजा तो ये लोग उठाते हैं।

दोस्त–बेशक, देखकर रश्क आता है।

दोनों आदमी आगे बढ़े। कई छोटे-छोटे टट्टू तेजी से दौड़ते हुए नजर आए।

उन पर खूबसूरत काठियां कसी हुई थीं और कई लड़के बैठे हुए हंसते-बोलते चले जाते थे। कपड़े सफेद, जैसे बगुले के पर; चेहरे सुर्ख, जैसे गुलाब का फूल। मियां आज़ाद कई मिनट तक उन अंगरेज-लड़कों का उछलना-कूदना देखते रहे। फिर अपने दोस्त से बोले—देखा आपने, इस तरह बच्चों की परवरिश होती है। कुछ और आगे बढ़े तो सौदागरों की बड़ी-बड़ी कोठियां दिखाई दीं। इतनी ऊंची गोया आसमान से बातें कर रही हैं। दोनों आदमी अंदर गए, तो चीजों की सफाई और सजावट देखकर दंग रह गए। सुभान-अल्लाह ! यह कोठी है या शीश-महल ! दुनिया भर की चीजें मौजूद। आज़ाद ने कहा—यह तिजारत की बरकत है वाह री तिजारत ! तेरे कदम धो-धो कर पिए। इतने में सामने से कई बग्घियां आईं। सब पर अंगरेज बैठे हुए थे। किसी हिन्दुस्तानी का कोसों तक पता ही नहीं। गोया उनके लिए घर से निकलना ही मना है। और आगे बढ़े, तो एक कुतुबखाना नजर आया। लाखों किताबें चुनी हुईं, साफ-सुथरी, सुनहरी जिल्दें चढ़ी हुईं। आदमी अगर सालभर जम कर बैठे, तो आलिम हो जाए। सुबह से आठ बजे तक लोग आते हैं, अखबार और किताबें पढ़ते हैं, और दुनिया के हालात मालूम करते हैं। मगर हिन्दुस्तानियों को इन बातों से क्या सरोकार?

दस बजे का वक्त आ गया। अब घर की सूझी। बस्ती में दाखिल हुए। राह में एक अमीर आदमी के मकान के दरवाजे पर दो लड़कों को देखा। नख-सिख से तो दुरुस्त हैं; मगर कानों में बाले, भद्दे-भद्दे कड़े पड़े हैं, अंगरखा मैला-कुचैला, पाजामा गंदा, हाथों पर गर्द, मुंह पर खाक, दरवाजे पर नंगे पांव खड़े हैं। मौलवी साहब ड्योढ़ी में बैठे दो और लड़कों को पढ़ा रहे हैं। मगर ड्योढ़ी और पाखाना मिला हुआ है।

मियां आज़ाद—कहिए जनाब, वे टट्टुओं पर दौड़ने वाले अंगरेजों के बच्चे भी याद हैं? इनको देखिए, मैले-गंदे, दिन भर पाखाने का पड़ोस। भला ये कैसे मजबूत और तंदुरुस्त हो सकते हैं? हां, जेवर से अलबत्ते लसे हुए हैं ! सच तो यह है कि चाहे लड़का जितने जेवर पहने हो, उसको वह सच्ची खुशी नहीं हासिल हो सकती है, जो उन प्यारे बच्चों को हवा के झोंकों और टापों की खटपट से मिलती थी। लड़का तड़के गजरदम उठा, हम्माम में गया, साफ-सुथरे कपड़े पहने। यह अच्छा, या यह अच्छा कि लचके, पट्टे और बिन्नट्ट के कपड़ों में जकड़ दिया जाए, जेवर सिर से पांव तक लाद दिया जाय और गढ़ैया पर बिठा दिया जाय कि कूड़े के टोकरे गिना करे।

ये बातें हो ही रही थीं कि सात-आठ जवान सामने से गुजरे। अभी उन्नीस ही बरस का सिन है, मगर गालों पर झुर्रियां, किसी की कमर झुकी हुई, किसी का चेहरा जर्द। सुर्ख और सफेद रंग धुआं बनकर उड़ गया। और तुर्रा यह कि अलिफ के नाम बे नहीं जानते। एक नंबर अव्वल के चंडूबाज हैं, दूसरे बला के बातूनी। वह फर्राटे भरें कि भला-चंगा आदमी घनचक्कर हो जाय। एक साहब कालेज में तालीम पाते थे, मगर प्रोफेसर से तकरार हो गई, झट मदरसा छोड़ा। दूसरे साहब अपने दाहिने हाथ की दो उंगलियों से बाएं हाथ पर ताल बजा रहे हैं—धिन ता धिन ता। दो साहब बहादुर नामी बटेर के घट जाने का अफसोस कर रहे हैं। किसी को नाज है कि मैं बाने की कनक़इयां खूब लड़ाता हूं, तुक्कल खूब बढ़ाता हूं।

मियां आज़ाद ने कहा—इन लोगों को देखिए, अपनी जिंदगी किस तरह खराब कर रहे हैं। शरीफों के लड़के हैं, मगर बुरी सोहबत है। पढ़ना-लिखना छोड़ बैठे। अब मटर-गश्ती से काम है। किसी को कलम पकड़ने का शऊर नहीं।

इतने में दो साहब और मिले। तोंद निकाले हुए, मोटे थलथल। आज़ाद ने कहा—इन दोनों को पहचान रखिए। इन अक्ल के दुश्मनों ने रुपये को दफन कर रखा है। एक के पास दो लाख से ज्यादा हैं और दूसरे के पास इससे भी ज्यादा; मगर जमीन के नीचे। बीवी और लड़कों को कुछ जेवर तो बनवा दिए हैं, बाकी अल्लाह-अल्लाह, खैर-सल्लाह ! अगर तिजारत करें तो अपना भी फायदा हो, और दूसरों का भी। मगर यह सीखा ही नहीं। बंगाल-बंक और दिल्ली-बंक तो पहले सुना करते थे, यह जमीन का बंक आज नया सुना।

दोनों आदमी घर पहुंचे। खाना खाकर लेटे। शाम को फिर सैर करने की सूझी, एक बाग में जा पहुंचे। कई आदमी बैठे हुक्के उड़ाते थे और किसी बात पर बहस करते थे। बहस से तकरार शुरू हुई। मिर्जा सईद ने कहा—भई, कलजुग है, कलजुग। इसमें जो न हो, वह थोड़ा। अब पुराने रस्मों को लोग दकियानूसी बताते हैं, शादी-ब्याह के खर्च को फिजूल कहते हैं। बच्चों को जेवर पहनाना गाली है। अब कोई इन लोगों से इतना तो पूछे कि जो रस्म बाप-दादों के वक्त से चली आती है, उसको कोई क्योंकर मिटाए?

यकायक पूरब की तरफ से शोर-गुल की आवाज सुनाई दी। किसी ने कहा, चोर आया, लेना, जाने न पाए। कोई बोला, सांप है। कोई भेड़िया-भेड़िया चिल्ला उठा। किसी को शक हुआ कि आग लगी। सबके सब भड़भड़ा कर खड़े हुए, तो चोर न चकार, भेड़िया न सियार। एक मियां साहब लंगोट कसे लट्ठ हाथ में लिए अकड़े खड़े हैं, और उनसे दस कदम के फासले पर कोई लाला जी बांस की खपाच लिए डटे खड़े हैं। इर्द-गिर्द तमाशाइयों की भीड़ है। इधर मियां साहब पैंतरे बदल रहे हैं, उधर लाला उंगलियां मटका-मटका कर गुल मचा रहे हैं। मिर्जा सईद ने पूछा—मियां साहब, खैर तो है? मियां—क्या अर्ज करूं मिर्जा साहब, आपको दिल्लगी सूझती है और यहां जान पर बन गई है। यह लाला मेरे पड़ोसी हैं। इनका कायदा है कि ठर्रा पीकर हजारों गालियां मुझे दिया करते हैं। आज कोठे पर चढ़कर खुदा के वास्ते लाखों बातें सुनाईं। अब फरमाइए, आदमी कहां तक जब्त करे? लाख समझाया कि भाई, आदमी से ऊंट और इंसान से बेदुम के गधे न बन जाओ, मगर यह बादशाह की नहीं सुनते, मैं किस गिनती में हूं। ताल ठोक कर लड़ने को तैयार हो गए। खुदा न करे, किसी भलेमानस को अनपढ़ से साबिका पड़े।

लाला—और सुनियेगा, हम चार-पांच बरस लखनऊ में रहे, अनपढ़ ही रहे।

मियां—बारह बरस दिल्ली में रहकर तुमने क्या सीख लिया, जो अब चार बरस लखनऊ में रहने से फाजिल हो गए।

लाला—यह साठ बरस से हमारे पड़ोसी हैं, खूब जानते हैं कि बरस दिन का त्यौहार है, हम शराब जरूर पियेंगे; चुस्की लगायेंगे, नशे में गालियां जरूर सुनायेंगे। अब अगर कोई कहे, शराब कलिया छोड़ दो, तो हम अपनी पुरानी रस्म को क्योंकर छोड़ें?

मिर्जा सईद–अजी, लाला साहब, बहुत बहकी-बहकी बातें न कीजिए। हमने माना कि पुरानी रस्म है, मगर ऐसी रस्म पर तीन हरफ ! आप देखें तो कि इस वक्त आपकी क्या हालत है? कीचड़ में लतपत, सिर-पैर की खबर नहीं, भलेमानसों को गालियां देते हो और कहते हो कि यह तो हमारी रस्म है।

आज़ाद–मिर्जा सईद, जरा मुझसे तो आंखें मिलाइए। शर्माए तो न होंगे? अभी तो आप कहते थे कि पुरानी रस्म को कोई क्योंकर मिटाए। यह भी तो लाला जी की पुरानी रस्म है; जिस तरह होती आई है, उसी तरह अब भी होगी। यह धूप-छांह की रंगत आपने कहां पाई? गिरगिट की तरह रंग क्यों बदलने लगे? जनाब, बुरी रस्म का मानना हिमाकत की निशानी है।

मिर्जा सईद बगलें झांकने लगे। आज़ाद और उनके दोस्त और आगे बढ़े, तो देखते क्या हैं कि एक गंवार औरत रोती चली जाती है, और एक मर्द चुपके-चुपके समझा रहा है–चुपाई मार चुपाई मार। मियां आज़ाद समझे, कोई बदमाश है। ललकारा, कौन है बे तू, इस औरत को कहां भगाए लिए जाता है? उस गंवार ने कहा–साहब, भगाए नहीं लिए जात हौं; यो हमार मिहरिया आय, हमरे इहां रसम है कि जब मिहरयिा मइका से ससुरार जात है, तो दुइ-तीन कोस लौं रोवत है।

सईद–बल्लाह, मैं कुछ और ही समझा था। खुदा की पनाह, रस्म की मिट्टी खराब कर दी।

आज़ाद–बजा है, अभी आप उस बारे में क्या कर रहे थे? बात यह है कि पढ़े-लिखे आदमियों को बुरी रस्मों का मानना मुनासिब नहीं। यह क्या जरूरी है कि अक्ल की आंखों को पाकेट में बंद करके पुरानी रस्मों के ढर्रे पर चलना शुरू करें; और इतनी ठोकरें खायं कि कदम-कदम पर मुंह के बल गिरें ! खुदा ने अक्ल इसलिए नहीं दी कि पुरानी रस्मों में सुधार न करें, बल्कि इसलिए कि जमाने के मुताबिक अदल-बदल करते रहें। अगर पुरानी बातों की पूरी-पूरी पैरवी की जाती, तो यह जामदानी के कुरते और शरबती के अंगरखे नजर न आते। लोग नंगे फिरते होते। गुलाब और कबाब के बदले हम पाढ़े और हिरन का कच्चा गोश्त खाते होते। खुदा ने आंखें दी हैं, मगर अफसोस कि हमने बंद कर लीं।

मिर्जा सईद–तो आप नाच-रंग जलसों के भी दुश्मन होंगे? आप कहेंगे कि यह भी बुरी रस्म है?

आज़ाद–बेशक बुरी रस्म है। मैं उसका दुश्मन तो नहीं हूं, मगर खुदा ने चाहा तो बहुत जल्द हो जाऊंगा। यह कितनी बेहूदा बात है कि हम लोग औरतों को रुपये का लालच देकर इस तरह जलील करते हैं।

मिर्जा सईद–तो यह कहिए कि आप कोरे मुल्ला हैं। यह समझ लीजिए कि इन हसीनों का दम गनीमत है। दुनिया की चहल-पहल उनके दम से, महफिल की रौनक उनके कदम से। यहां तो जब तक तबले की गमक न हो, चांद-से मुखड़े की झलक न हो, कड़ों की झनकार न हो, छड़ों की छनकार न हो, छमाछम की आवाज न आए कमरा न सजे, ताल न बजे, धमा-चौकड़ी न मचे, मेंहदी न रचे, रंगरलियां न मनायें, शादियाने न बजायें, आवाजें न करें, इत्र में न बसें, ताने न सुनें, सिर न

धुनें, गलेबाजी न हो, आंखों में लाल डोरे न हों, शराब-कबाब न हो, परियां बुल-बुल की तरह चहकती न हों, सेवती के फूल और हिना की टट्टियां महकती न हों, कहकहे न हों, चहचहे न हों, तो किस गौखे का दम भर जीने को जी चाहे? वल्लाह महफिल बावले कुत्ते की तरह काट खाय–

महफिल में गुदगुदाती हो, शोखी निगाह की;
शीशों से आ रही हो, सदा वाह-वाह की।

इधर जामेमुल (शराब) हो, उधर सुराही की कुल-कुल हो, इधर गुल हो, उधर बुलबुल हो, महफिल का रंग खूब जमा हो, समां बंधा हो, फिर जो आपकी गरदन भी न हिल जाय, तो झुक कर सलाम कर लूं। अब गौर फरमाइए कि ऐसे तायफे को, जो डिबिया में बंद कर रखने काबिल है, आप एक कलम मिटा देने चाहते हैं?

आज़ाद–जनाब, आपको अपनी तवायफें मुबारक हों। यहां इस फेर में नहीं पड़ते।

ये बातें करते हुए लोग और आगे बढ़े, तो क्या देखते हैं कि मस्त हाथी पर एक महंत जी सवार, गेरुए कपड़े पहने, भभूत रमाये, पालथी मारे, बड़े ठाठ से बैठे हैं। चेले चापड़ साथ हैं। कोई घोड़े की पीठ पर सवार, कोई पैदल। कोई पीछे बैठा मुरछल हिलाता है, कोई नरसिंघा बजाता है। आज़ाद बोले–कोई इन महंत जी से पूछे कि आप खुदा की इबादत करते हैं, या दुनिया के मजे उड़ाते हैं? आपको इस टीम-टाम से क्या मतलब?

मिर्जा सईद–कुछ बाप की कमाई तो है नहीं, अहमकों ने जागीरें दे दीं, महंत बना दिया। अब ये मौजें करते हैं।

आज़ाद–जागीर देनें वालों को क्या मालूम था कि उनके बाद महंत लोग यहां गुलछर्रे उड़ायेंगे? यह तो हमारा काम है कि इन महंतों की गरदन पकड़ें, और कहें, उतर हाथी से, ले हाथ में कमंडल।

यकायक किसी ने छींक दिया। सईद बोले–हत्तेरे छींकने वाले की नाक काटूं। यार, जरा ठहर जाओ, छींकते चलना बदशगुनी है।

आज़ाद–तो जनाब, हमारा और आपका साथ हो चुका। यहां छींक की परवाह नहीं करते। आप पर कोई आफत आए, तो हमारा जिम्मा।

अभी दस कदम भी न गए थे कि बिल्ली रास्ता काट गई। सईद ने आज़ाद का हाथ पकड़ कर अपनी तरफ खींच लिया। भई अजब बेतुके आदमी हो, बिल्ली राह काट गई और तुम सीधे चले जाते हो? जरा ठहरो, पहले कोई जाए, तब हम भी चलें।

अब सुनिए कि आध घंटे तक मुंह खोले खड़े हैं। या खुदा, कोई इधर से आए। आज़ाद ने झल्लाकर कहा–भई, हमको आपका साथ अजीरन हो गया। यहां इन बातों के कायल नहीं। खैर वहां से खुदा-खुदा करके चले, तो थोड़ी देर के बाद सईद ने फिर आज़ाद को रोका–हांय-हांय, खुदा के वास्ते उधर से न जाना। मियां अंधे हो, देखते नहीं गधे खड़े हैं। आज़ाद ने कहा–गधे तो आप खुद हैं। डंडा उठाया, तो दोनों गधे भागे। फिर जो आगे बढ़े, तो सईद की बाईं आंख फड़की। गजब ही

हो गया। हाथ-पांव फूल गए, सारी चौकड़ी भूल गए। बोले-यार, कोई तदबीर बताओ, बाईं आंख बेतरह फड़क रही है। मर्द की बाईं और औरत की दाहिनी आंख का फड़कना बुरा शगुन है। आज़ाद खिलखिलाकर हंस पड़े कि अजीब आदमी हैं आप। छींक हुई और हवास गायब; बिल्ली ने रास्ता काटा, और होश पैंतरे; गधे देखे और औसान खता, और जो बाईं आंख फड़की, तो सितम ही हुआ ! मियां, कहना मानो, इन खुराफात बातों में न जाओ। यह वहम है, जिसकी दवा लुकमान के पास भी नहीं। मेरा और आपका साथ हो चुका। आप अपना रास्ता लीजिए, बंदा रुखसत होता है।

चौदह

मियां आज़ाद ठोकरें खाते, ड़ंडा हिलाते, मारे-मारे फिरते थे कि यकायक सड़क पर एक खूबसूरत जवान से मुलाकात हुई। उसने इन्हें नजर भर कर देखा, पर यह पहचान न सके। आगे बढ़ने ही को थे कि जवान ने कहा-

हम भी तसलीम की खू डालेंगे;
बेनियाजी तेरी आदत ही सही।

आज़ाद ने पीछे फिर कर देखा, जवान ने फिर कहा-

गो नहीं पूछते हरगिज वो मिजाज;
हम तो कहते हैं, दुआ करते हैं।

कहिए जनाब, पहचाना या नहीं? यह उड़नघाइयां, गोया कभी की जान-पहचान ही नहीं।' मियां आज़ाद चकराए कि यह कौन साहब हैं ! बोले-हजरत, मैं भी इस उठती ही जवानी में आंखें खो बैठा। वल्लाह, किस मरदूद ने आपको पहचना हो।

जवान-ऐं, कमाल किया । वल्लाह, अब तक न पहचाना ! मियां, हम तुम्हारे लंगोटिये यार हैं अनवर।

आज़ाद-अख्खाह, अनवर ! अरे, यार, तुम्हारी तो सूरत ही बदल गई।

यह कहकर दोनों गले मिले और ऐसे खुश हुए कि दोनों की आंखों से आंसू निकल आए। आज़ाद ने कहा-एक वह जमाना था कि हम-तुम बरसों एक जगह रहे, साथ-साथ मटर-गश्ती की; कभी बाग में सैर कर रहे हैं, कभी चांदनी रात में विहाग उड़ा रहे हैं, कभी जंगल में मंगल गा रहे हैं, कभी इल्मी बहस कर रहे हैं; कभी बांक का शौक, कभी लकड़ी की धुन। वे दिन अब कहां !

अनवर ने कहा-भाई, चलो, अब साथ-साथ रहें, जिए या मरें, मगर चार दिन की जिंदगी में साथ न छोड़ें। चलो, जरा बाजार की सैर कर आएं। मुझे कुछ सौदा लेना है। यह कहकर दोनों चौक चले। पहल बजाजे में धंसे। चारों तरफ से आवाजें आने लगीं-आइए, आइए, अजी मियां साहब, क्या खरीदारी मंजूर है? खां साहब, कपड़ा खरीदिएगा? आइए, वह-वह कपड़े दिखाऊं कि बाजार भर में किसी के पास न निकलें। दोनों एक दूकान में जाकर बैठ गए। दूकान में टाट बिछा है, उस पर

सफेद चांदनी, और लाला नैनसुख डोरिये का अंगरखा डाटे बड़ी शान से बैठे हैं। तोंद वह फरमायशी, जैसे रुपये के दो वाले तरबूज ! एक तरफ तनजेब, शरबती, अद्धी के थानों की कतार है, दूसरी तरफ मोमी छींट और फलालैन की बाहर है। अलगनी पर रूमाल करीने से लटके हुए लाल-भभूका या सफेद जैसे बगुले के पर, या हरे-हरे धानी, जैसे लहबर। दरवाजा लाल रंगा हुआ, पन्नी से मढ़ा हुआ। दीवार पर सैकड़ों चिड़ियां टंगी हुईं।

अनवर-भई, स्याह मखमल दिखाना।

बजाज-बदलू, बदलू जरी खां साहब को काली मखमल का थान दिखाओ, बढ़िया।

लाला बदलू, कई थान तड़ से उठा लाए-सूती, बूटीदार। अनवर ने कई थान देखे, और तब दाम पूछे।

लाला-गजों के हिसाब से बताऊं, या थान के दाम।

अनवर-भई, गजों के हिसाब से बताओ। मगर लाला, झूठ कम बोलना।

लाला ने कहकहा उड़ाया-हुजूर, हमारी दूकान में एक बात के सिवा दूसरी नहीं कहते। कौन मेल पसंद है? अनवर ने एक थान पंसद किया, उसकी कीमत पूछी।

लाला-सुनिए खुदावंद, जी चाहे लीजिए, जी चाहे न लीजिए, मुल दस रुपये गज से कम न होगी।

अनवर-ऐं, दस रुपये गज ! यार खुदा से तो डरो। इतना झूठ !

लाला-अच्छा, तो आप भी कुछ फर्माओ।

अनवर-हम चार रुपये गज से टका ज्यादा न देंगे।

आज़ाद ने अनवर से कहा-चार रुपये गज में न देगा।

अनवर-आप चुपके बैठ रहें, आपको इन बातों में जरा भी दखल नहीं है। 'शेख क्या जाने साबुन का भाव?'

लाला-चार रुपये गज तो बाजार भर में न मिलेगी। अच्छा, आप सात के दाम दे दीजिए बोलिए, कितनी खरीददारी मंजूर है? दस गज उतारूं?

अनवर-क्या खूब, दाम चुकाये ही नहीं और गजों की फिक्र पड़ गई। वाजबी बताओ, वाजबी। हमें चकमा न दो, हम एक घाघ हैं।

लाला-अच्छा साहब, पांच रुपये गज लीजिएगा? या अब भी चकमा है।

अनवर-अब भी महंगी है, तुम्हारी खातिर से सवा चार सही। बस पांच गज उतार दो।

लाला ने नाक-भौं चढ़ाकर पांच गज मखमल उतार दी, और कहा-आप बड़े कड़े खरीदार हैं। हमें घाटा हुआ ! इन दामों शहर भर में न पाइएगा।

आज़ाद-भई, कसम है खुदा की, मेरा ऐसा अनाड़ी तो फंस ही जाय और वह गच्चा खाए कि उम्र भर न भूले।

अनवर-जी हां, यहां का यही हाल है। एक के तीन मांगते हैं।

यहां से दोनों आदमी अनवर के घर चले। चलते-चलते अनवर ने कहा-लो

खूब याद आया। इस फाटक में एक बांके रहते हैं। जरी मैं उनसे मिल लूं। मियां आज़ाद और अनवर, दोनों फाटक में हो रहे, तो क्या देखते हैं, एक अधेड़ उम्र का कड़ियल आदमी कुर्सी पर बैठा हुआ है। घुटन्ना चूड़ीदार, चुस्त जरा शिकन नहीं है। चुन्नटदार अंगरखा एड़ी तक छाता गोल कटा हुआ, चड्डी ऊंची, नुक्केदार माशे भर की कटी हुई टोपी। सिरोही सामने रखी है और जगह-जगह करौली कटार, खाड़ा, तलवारें चुनी हुई हैं। सलाम-कलाम के बाद अनवर ने कहा—जनाब, वह बंदूक आपने पचास रुपये की खरीदी थी, दो दिन का वादा था; जिसके छः महीने हो गए, मगर आप सांस-डकार तक नहीं लेते। बंदूक हजम करने का इरादा हो, तो साफ-साफ कह दीजिए, रोज की ठांय-ठांय से क्या फायदा?

बांके—कैसी बंदूक, किसकी बंदूक? अपना काम करो, मेरे मुंह न चढ़ना मियां, हम बांके लोग हैं, सैकड़ों को गच्चे, हजारों को झांसे दिए, आप बेचारे किस खेत की मूली हैं? यहां सौ पुश्त से सिपहगरी होती आई है। हम, और दाम दें?

अनवर—वाह, अच्छा बांकपन है कि आंख चूकी, और कपड़ा गायब, कम्बल डाला और लूट लिया। क्या बांकपन इसी का नाम है? ऐसा तो लुक्के-लुच्चे किया करते हैं। आज के सातवें दिन बायें हाथ से रुपये गिन दीजिएगा, वरना अच्छा न होगा।

बांके ने मूछों पर ताव देकर कहा—मालूम होता है, तुम्हारी मौत हमारे हाथ बदी ! बहुत बढ़-बढ़कर बातें न बनाओ। बांकों से टकराना अच्छा नहीं।

इस तकरार और तू-तू मैं-मैं के बाद दोनों आदमी घर चले। इधर इन बांके का भांजा, जो अखाड़े से आया और घर में गया, तो क्या देखता है कि सब औरतें नाक-भौं चढ़ाए, मुंह गुस्से में भरी बैठी हैं। ऐ खैर तो हैं ! यह आज सब चुपचाप क्यों बैठे हैं? कोई मिनकता ही नहीं। इतने में उसकी मुमानी कड़क कर बोली—अब चूड़ियां पहनो, चूड़ियां। और बहू-बेटियों में दब कर बैठ रहो। वह मुआ करोड़ों बातें सुना गया। पक्के पहर भर तक ऊल-जलूल बका किया और तुम्हारे मामू बैठे सब सुना किए। 'फेरी मुंह पर लोई, तो क्या करेगा कोई !' जब शर्म निगोड़ी भून खाई, तो फिर क्या। यह न हुआ कि मुए कलजिभे की जबान तालू से खींच लें।

भांजे की जवानी का जोश था; शेर की तरह बिफरता हुआ बाहर आया और बोला—मामूजान, यह आज आपसे किससे तकरार हो गई? औरतें तक झल्ला उठीं। और आप चुपके बैठे सुना किए? वल्लाह, इज्जत डूब गई। लो, अब जल्दी उसका नाम बताइए, अभी आंतों का ढेर किए देता हूं।

मामू—अरे, वही अनवर तो है। उसका कर्जदार हूं। दो बातें सुनाए तो भी क्या? और वह है ही बेचारा क्या कि उससे भिड़ता ! वह पिद्दी, मैं बाज, वह दुबला-पतला आदमी, मैं पुराना उस्ताद। बोलने का मौका होता तो इस वक्त उसकी लाश न फड़कती होती? ले गुस्सा थूक दो, जाओ, खाना खाओ, आज मीठे टुकड़े पके हैं।

भांजा—कसम खुदा की, जब तक उस मरदूद का खून न पी लूं, तब तक खाना हराम है। मीठे टुकड़ों पर आप ही हत्थे लगाइए। यह कहकर घर से चल खड़े

हुए। मामू ने लाख समझाया, मगर एक न मानी।

इधर अनवर जब घर पहुंचे, तो देखते क्या हैं, उनका लड़का तड़प रहा है। घबराए, वह क्या, खैरियत तो है? लौंडी ने कहा—भैया यहां खेल रहे थे कि बिच्छू ने काट लिया। तभी से बच्चा तड़प कर लोट रहा है। अनवर ने आज़ाद को वहीं छोड़ा और खुद अस्पताल चले कि झटपट डॉक्टर को बुला लाएं। मगर अभी पचास कदम भी न गए होंगे कि सामने से उस बांके का भांजा आ निकला। आंखें चार हुईं। देखते ही शेर की तरह गरज कर बोला—ले संभल जा। अभी सिर खून में लोट रहा होगा। हिला और मैंने हाथ दिया। बांकों के मुंह चढ़ना खाला जी का घर नहीं। बेचारे अनवर बहुत परेशान हुए। उधर लड़के की वह हालत, इधर अपनी यह गत। जिस्म में ताकत नहीं, दिल में हिम्मत नहीं। भागें, तो कदम नहीं उठते; ठहरें तो पांव नहीं जमते। सैकड़ों आदमी इर्द-गिर्द जमा हो गए और बांके को समझाने लगे—जाने दीजिए, इनके मुकाबिले में खड़े होना आपके लिए शर्म की बात है। अनवर की आंखें डबडबा आईं। लोगों से बोले—भाई, इस वक्त मेरा बच्चा घर पर तड़प रहा है, डॉक्टर को बुलाने जाता था कि राह में इन्होंने घेरा। अब किसी सूरत से मुझे बचाओ। मगर उस बांके ने एक न मानी। पैंतरा बदल कर सामने आ खड़ा हुआ। इतने में किसी ने अनवर के घर खबर पहुंचाई कि मियां से एक बांके से तलवार चल गई। जितने मुंह उतनी बातें। किसी ने कह दिया कि चरका खाया और गर्दन खट से अलग हो गई। यह सुनते ही अनवर की बीवी सिर पीट पीट कर रोने लगी—लोगो, दौड़ो, हाय, मुझ पर बिजली गिरी। हाय, मैं जीते-जी मर मिटी फिर बच्चे से चिमट कर विलाप करने लगी—मेरे बच्चे, अब तू अनाथ हो गया, तेरा बाप दगा दे गया। हाय, मेरा सुहाग लुट गया।

मियां आज़ाद यह खबर पाते ही तीर की तरह घर से निकल कर उस मुकाम पर जा पहुंचे। देखा, तो वह जालिम तलवार हाथ में लिए मस्त हाथी की तरह चिंघाड़ रहा है। आज़ाद ने झट से झपट कर अनवर को हटाया और पैंतरा बदल कर बांके के सामने आ खड़े हुए। वह तो जवानी के नशे में मस्त था, पहले हथकटी का हाथ लगाना चाहा, मगर आज़ाद ने खाली दिया। वह फिर झपटा और चाहा कि चाकी का हाथ जमाए, मगर यह आड़े हो गए।

आज़ाद—बचा, यह उड़नघाइयां किसी गंवार को बताना। मेरे सामने छक्के छूट जायं, तो सही। आओ, चोट पर। वह बांका झल्लाकर झपटा और घुटना टेक कर पालट का हाथ लगाने ही को था कि आज़ाद ने पैंतरा बदला और तोड़ किया—मोढ़ा। मोढ़ा तो उसने बचाया, मगर आज़ाद ने साथ ही जनेवे का वह तुला हुआ हाथ जमाया कि उसका भंडारा तक खुल गया। धम से जमीन पर आ गिरा। मियां आज़ाद को सबने घेर लिया, कोई पीठ ठोंकने लगा, कोई दंड मलने लगा। अनवर लपके हुए घर गए। बीवी की बांछें खिल गईं, गोया मुर्दा जी उठा।

दूसरे दिन अनवर और आज़ाद कमरे में बैठे चाय पी रहे थे कि डाकिया हरी-हरी वर्दी फड़काये, लाल-लाल पगिया जमाए, खासा टैयां बना हुआ आया और एक अखबार देकर लंबा हुआ। अनवर ने झटपट अखबार खोला, ऐनक लगाई और अखबार

पढ़ने लगे। पढ़ते-पढ़ते आखिरी सफे पर नजर पड़ी, तो चेहरा खिल गया।

आज़ाद—यह क्यों खुश हो गए भई? क्या खबर है?

अनवर—देखता हूं कि यह इश्तिहार यहां कैसे आ पहुंचा? अखबारों में इन बातों का क्या जिक्र? देखिए—

'जरूरत है एक अरबी प्रोफेसर की नजीरपुर-कॉलेज के लिए। तनख्वाह दो सौ रुपये महीना।'

आज़ाद—अखबारों में सभी बातें रहती हैं, यह कोई तो नई बात नहीं। अखबार लड़कों का उस्ताद, जवानों को सीधी राह बताने वाला, बुड्ढों के तजुर्बे की कसौटी, सौदागरों का दोस्त, कारीगरों का हमदर्द, रिआया का वकील, सब कुछ है। किसी कालम में मुल्की छेड़-छाड़, कहीं नोटिस और इश्तिहार, अंग्रेजी अखबारों में तरह-तरह की बातें दर्ज होती हैं और देसी अखबार भी इनकी नकल करते हैं। शतरंज के नक्शे, कौमी तमस्सुकों का निर्ख, घुड़दौड़ की चर्चा, सभी कुछ होता है। जब कभी कोई ओहदा खाली हुआ और अच्छा आदमी न मिला, तो हुक्काम इसका इश्तिहार देते हैं। लोगों ने पढ़ा और दरख्वास्त दाग दी; लगा तो तीर, नहीं तुक्का।

अनवर—अब तो नये-नये इश्तिहार छपने लगेंगे। कोई नया गंज आबाद करे, तो उसको छपवाना पड़ेगा—एक नौजवान साकिन की जरूरत है, नये गंज में दूकान जमाने के लिए; क्योंकि जब तक धुआंधार चिलमें न उड़ें, चरस की लौ आसमान की खबर न लाए, तब तक गंज की रौनक नहीं। अफीमची इश्तिहार देंगे कि एक ऐसे आदमी की जरूरत है, जो अफीम घोलने की ताक में हो, दिन-रात पीनक में रहे; मगर अफीम घोलने के वक्त चौंक उठे। आराम-तलब लोग छपवायेंगे कि एक ऐसे किस्सा कहने वाले की जरूरत है, जिसकी जबान कतरनी की तरह चली जाए, जिसके अमीर-हमजा की दास्तान जबान पर हो, जमीन और आसमान के कुलावे मिलाए, झूठ के छप्पर उड़ाय, शाम से जो बकना शुरू करे, तो तड़का कर दे। खुशामद पसंद लोग छपवायेंगे कि एक ऐसे मुसाहब की जरूरत है, जो आठों गांठ कुम्मैत हो, हां में हां मिलाए, हमको सखावत में हातिम, दिलेरी में रुस्तम, अक्ल में अरस्तू बनाए—मुंह पर कहे कि हुजूर ऐसे और हुजूर के बाप ऐसे, मगर पीठ-पीछे गालियां दें कि इस गधे को मैंने खूब ही बनाया। बेफिक्रे छपवायेंगे कि एक बटेर की जरूरत है, जो बढ़-बढ़कर लात लगाता हो, एक मुर्ग की, जो सवाए-ड्योढ़े को मारे, एक मेढ़े की, जो पहाड़ में टक्कर लेने से बंद न हो।

इतने में मिर्जा सईद भी आ बैठे। बोले—भई, हमारी भी एक जरूरत छपवा दो। एक ऐसी जोरू चाहिए जो चालाक और चुस्त हो, नख-सिख से दुरुस्त हो, शोख और चंचल हो, कभी-कभी हंसी में टोपी छीनकर चपत भी जमाए, कभी रूठ जाए, कभी गुदगुदाए, खर्च करना न जानती हो, वरना हमसे मीजान न पटेगी; लाल मुंह हो, सफेद हाथ-पांव हो, लेकिन ऊंचे कद की न हो, क्योंकि मैं नाटा आदमी हूं, खाना पकाने में उस्ताद हो, लेकिन हाजमा खराब हो, हल्की-फुल्की दो चपातियां खाए, तो तीन दिन में हजम हो, सादा मिजाज ऐसी हो कि गहने-पाते से मतलब ही न रखे, हंसमुख हो, रोते को हंसाए, मगर यह नहीं कि फटी जूती की तरह बेमौका

दांत निकाल दे, दरख्वास्त खटाखट आए, हां, यह भी याद रहे कि साहब के मुंह पर दाढ़ी न हो।

आज़ाद–और तो खैर, मगर यह दाढ़ी की बड़ी कड़ी शर्त है। भला क्यों साहब औरतें भी मुछक्कड़ हुआ करती हैं?

सईद–कौन जाने भई, दुनिया में सभी तरह के आदमी होते हैं। जब बेमूंछ के मर्द होते हैं, तो मूंछ वाली औरतों का होना भी मुमकिन है। कहीं ऐसा न हो कि पीछे हमारी मूंछ उसके हाथ में और उसकी दाढ़ी हमारे हाथ में हो।

आज़ाद–अजी जाइए भी औरत के भी कहीं दाढ़ी होती है?

सईद–हो या न हो, मगर यह पख हम जरूर लगायेंगे।

आपस में यही मजाक हो रहा था कि पड़ोस से रोने-पीटने की आवाज आयी। मालूम हुआ कोई बूढ़ा आदमी मर गया। आज़ाद भी वहां जा पहुंचे। लोगों से पूछा, इन्हें क्या बीमारी थी? एक बूढ़े न कहा–यह न पूछिए, हुकुम की बीमारी थी।

आज़ाद–यह कौन बीमारी है? यह तो कोई नया मरज मालूम होता है। इसकी अलामतें तो बताइए।

बूढ़ा–क्या बताऊं, अक्ल की मार इसका खास सबब है। अस्सी बरस के थे, मगर अक्ल के पूरे, तमीज छू नहीं गई ! खुदा जाने, धूप में बाल सफेद किए थे या नजला हो गया था। हजरत की पीठ पर एक फोड़ा निकला। दस दिन तक इलाज नदारद। दसवें दिन किसी गंवार ने कह दिया कि गुलेअब्बास के पत्ते और सिरका बांधो। झट से राजी हो गए। सिरका बाजार से खरीदा, पत्ते बाग से तोड़ लाए, और सिरके में पत्तों को खूब तर करके पीठ पर बांधा, दूसरे रोज फोड़ा आध अंगुल बढ़ गया। किसी और गौखे ने कह दिया कि भटकटैया बांधो, यह टोटका है। इसका नतीजा ये हुआ कि दर्द और बढ़ गया, किसी ने बताया कि इमली की पत्ती, धतूरा और गोबर बांधो। वहां क्या था, फौरन मंजूर। अब तड़पने लगे। आग लग गई। मुहल्ले की एक औरत ने कहा–मैं बताऊं, मुझसे क्यों न पूछा। सरल तरकीब है, मूली के अचार के तीन कतले लेकर जमीन में गाड़ दो। तीन दिन के बाद निकालो और कुएं में डाल दो। फिर उसी कुएं का पानी अपने हाथ भर कर पी जाओ। उसी दम चंगे न हो जाओ, तो नाक कटा डालूं। सोचे, भई इसने शर्त बड़ी कड़ी की है। कुछ तो है कि नाक बदली। झट मूली के कतले गाड़े और कुएं में डाल पानी भरने लगे उस पर तुर्रा यह कि मारे दर्द के तड़प रहे थे। रस्सी हाथ से छूट गई धम से गिरे, फोड़े में ठेस लगी, तिलमिलाने लगे यहां तक कि जान निकल गई।

आज़ाद–अफसोस, बेचारे की जान मुफ्त में गई। इन अक्ल के दुश्मनों से कोई इतना तो पूछे कि हर ऐरे-गैरे की राय पर क्यों इलाज कर बैठते हो? नतीजा यह होता है, या तो मरज बढ़ जाता है, या जान निकल जाती है।

पंद्रह

मियां आज़ाद एक दिन चले जाते थे। क्या देखते हैं, एक पुरानी-धुरानी गड़हिया के किनारे एक दढ़ियल बैठे काई की कैफियत देख रहे हैं। कभी ढेला उठाकर फेंका, छप। बुड्ढे आदमी और लौंडे बने जाते हैं। दाढ़ी का भी खयाल नहीं। लुत्फ यह कि मुहल्ले भर के लौंडे इर्द-गिर्द खड़े तालियां बजा रहे हैं, लेकिन आप गड़हिया की लहरों ही पर लट्टू हैं। कमर झुकाए, चारों तरफ ढेले और ठीकरे ढूंढ़ते फिरते हैं। एक दफा कई ढेले उठाकर फेंके। आज़ाद ने सोचा, कोई पागल है क्या। साफ-सुथरे कपड़े पहने, यह उम्र यह वज़ा, और किस मजे से गड़हिया पर बैठे रंगरलियां मना रहे हैं। यह खबर नहीं कि गांव भर के लौंडे पीछे से तालियां बजा रहे हैं। एक लौंडे ने चपत जमाने के लिए हाथ उठाया, मगर हाथ खींच लिया। दूसरे ने पेड़ की आड़ से कंकड़ी लगाई। तीसरे ने दाढ़ी पर घास फेंकी। चौथे ने कहा—मियां, तुम्हारी दाढ़ी में तिनका; मगर मेरा शेर जरा न मिनका। गड़हिया से उठे, तो दूर की सूझी। झप से एक पेड़ पर चढ़ गए, फुनगी पर जा बैठे और बंदर की तरह लगे उचकने। उस टहनी पर उचके, तो दूसरी डाल पर जा बैठे। उस पर लड़कों को भी बुलाते जाते हैं कि आओ, ऊपर आओ। इमली का दरख्त था, इतना ऊंचा कि आसमान से बातें कर रहा था। हजरत मजे से बैठे इमली खाते और चिएं, लड़कों पर फेंकते जाते हैं। लौंडे गुल मचा रहे हैं कि मियां, मियां एक चियां हमको इधर फेंको, इधर; हाथ ही टूटे, जो उधर फेंके। क्या मजे से गपर-गपर करके खाते जाते हैं, इधर एक चियां भी नहीं फेंकते ओ कंजूस, ओ मक्खीचूस, ओ बंदर, अरे मुछंदर, एक इधर भी। थोड़ी देर में खटखट करते पेड़ से उतरे। इतने में कमसरियट के तीन-चार हाथी चारे और गन्ने से लदे झूमते हुए निकले। आपने लड़को को सिखाया कि गुल मचा कर कहो—हाथी, हाथी गन्ना दे। लौंड़ों ने जो इतनी शह पाई, तो आसमान सिर पर उठा लिया। सब चीखने लगे—हाथी, हाथी गन्ना दे। एकाएक एक रीछवाला आ निकला। आपने झट रीछ की गरदन पकड़ी और पीठ पर हो रहे। टिक-टिक-टिक, क्या टट्टू है ! रीछवाला चिल्ल-पों मचाया ही किया, आपने दो-तीन लड़कों को आगे-पीछे अगल-बगल बिठा ही लिया। मजे से तने बैठे हैं, गोया अपने वक्त के बादशाह हैं। थोड़ी देर के बाद लड़कों को जमीन पर पटका, खुद भी धम से जमीन पर कूद पड़े, और झट लंगोट कस, ताल ठोक, रीछ से कुश्ती लड़ने पर आमादा हो गए। तब तो रीछवाला चिल्लाया—मियां, क्यों जान के दुश्मन हुए हो ! चबा ही डालेगा ! यह तो हवा के घोड़े पर सवार थे, आव देखा न ताव, चिमट ही तो गए और एक अंटी बताई तो रीछ चारों खाने चित्त। लौंडों ने वह गुल मचाया कि रीछ पूरब भागा, और रीछवाला पश्चिम। मुहल्ले भर में कहकहा उड़ने लगा। थोड़ी ही देर के बाद एक भड्डुरी आ निकला। धोती बांधे, पोथी बगल में दबाए, रुद्राक्ष की माला पहने, आवाज लगाता जाता है—साइत विचारें, सगुन विचारें। दढ़ियल के करीब से गुजरा, तो शिकार इनके हाथ आया। बोले—भई, इधर आना। उसकी बांछें खिल गईं कि पौ बारह है। अच्छी बोहनी हुई। दढ़ियल ने हाथ दिखाया और पूछा—हमारी कितनी शादियां

होंगी? उसने कन्या, मकर, सिंह, वृश्चिक करके बहुत सोच के कहा-पांच। आपने उसकी पगड़ी उछाल दी। लड़कों को दिल्लगी सूझी, किसी ने सिर सुहलाया तो किसी ने चपत लगाया। अच्छी तरह बोहनी हुई। दढ़ियल ने कहा-सच कहना, आज साइत देखकर चले थे या यों ही? अपनी साइत देख लेते हो या औरों को राह बताते हो? अच्छा, खैर, बताओ, हमारे यहां लड़का कब तक होगा? भड्डुरी ने कहा-बस, बस, आप और किसी से पूछिएगा। भर पाया। यह कहकर चलने को ही था कि दढ़ियल ने लड़कों को इशारा किया। वे तो इनको अपना गुरु ही समझते थे। एक ने पोथी ली, दूसरे ने माला छिपाई, तीसरे ने पगिया, टहला दी। दस-पांच चिमट गए। बेचारा बड़ी मुश्किल से जान छुड़ा कर भागा और कसम खाई कि अब इस मुहल्ले में कदम न रखूंगा। इतने में खोंचेवाले ने आवाज दी-गुलाबी रेवड़ियां, करारी खुंटियां, दालमोठ सलोने, मटर तिकोने। लौंडे अपने-अपने दिल में खुश हो गए कि दढ़ियल के हुक्म से खोंचा लूट लेंगे और खूब मिठाइयां चखेंगे। मगर उन्होंने मना कर दिया-खबरदार, हाथ मत बढ़ाना। जब खोंचे वाला पास आया, तब उन्होंने मोल-तोल करके दो रुपये में सारा खोंचा मोल ले लिया और लड़कों को खूब छका कर खिलाया। एक दस मिनट के बाद आवाज आई-खीरे लो, खीरे। आपने उचक कर टोकरा उलट दिया। सारे खीरे जमीन पर गिर पड़े। जैसे ही लड़कों ने चाहा, खीरे बटोरें कि उन्होंने डांट बताई। खीरे वाले के दोनों हाथ पकड़ लिए और लड़कों से कहा-खीरे उठा-उठा कर इसी गड़हिया में फेंकते जाओ। पचास-साठ खीरे आनन-फानन गड़हिया में पहुंच गए। अभी तमाशा हो ही रहा था कि एक चिड़ीमार कंपा-जाल लिए हुए आ निकला। हाथ में तीन-चार जानवर, कुछ झोले के अंदर। सब फड़फड़ा रहे हैं। कहता जाता है-काला भुजंगा मंगल के रोज। दढ़ियल ने पुकारा-आओ मियां, इधर आओ। एक भुजंगा लेकर अपने ऊपर से उतार कर छोड़ा। चिड़ीमार ने कहा-टका हुआ। दूसरा जानवर एक लड़के पर से उतार कर छोड़ा इसी तरह दस-पंद्रह चिड़ियां छोड़कर चुपचाप खड़े हो गए। गोया कुछ मतलब ही नहीं। चिड़ीमार ने कहा-हुजूर, दाम। आपने फर्माया-तुम्हारा नाम? तब तो वह चकराया कि अच्छे मिले। बोला-हुजूर, धेली के जानवर थे। आप बोले-कैसी धेली और कैसा धेला ! कुछ घास तो नहीं खा गया? भंग पी गया है या शराब का नशा है? इधर लड़कों ने जाल-कंपा सब टहला दिया। थोड़ी देर रो-पीटकर उसने भी अपनी राह ली।

दढ़ियल ने लड़कों को छोड़ा और वहां से किसी तरफ जाना ही चाहते थे कि आज़ाद ने करीब आकर कहा-हजरत, मैं बड़ी देर से आपका तमाशा देख रहा हूं, कभी खीरे गड़हिया में फेंके, कभी इमली पर उचक रहे, कभी चिड़ीमार की खबर ली, कभी भड्डुरी को आड़े हाथों लिया। मुझे खौफ है कि आप कहीं पागल न हो जाएं, जल्दी फस्द खुलवाइए।

दढ़ियल-मुझे तो आप ही पागल मालूम होते हैं। इन बातों को समझने के लिए बड़ी अक्ल चाहिए। सुनिए, आपको समझाऊं। गड़हिया पर बिस्तर जमाकर ढेले फेंकने और पेड़ पर उचक कर इमली खाने और हाथी से गन्ने मांगने का सबब यह है कि लौंडे भी हमारी देखा-देखी उचक-फांद में बर्क हो जाएं, यह नहीं कि मरियल टट्टू

की तरह जहां बैठे, वहीं जम गए। लड़कों को कम से कम दो घंटे रोज खेलना-कूदना चाहिए वरना बीमारी सतायेगी। रीछ वाले के रीछपर उचक बैठने, रीछ को भगा देने और चिड़ीमार के जानवरों को मुफ्त बेकौड़ी-बेदाम छुड़ा देने का सबब यह है कि जब हम जानवरों को तकलीफ में देखते हैं, तो कलेजे पर सांप लोटने लगता है और इन चिड़ीमारों का तो मैं जानी दुश्मन हूं। बस चले, तो काले पानी भिजवा दूं। जहां देखा कि दो-चार भलेमानुष खड़े हैं, लगे जावनरों को जोर से दबाने, जिससे वे चीखें और लोग उनकी हालत पर कुछ दे निकलें। इनकी हडियां चढ़ जायं। खीरे इसलिए गढ़हिया में फिंकवा दिए कि आजकल हवा खराब है, खीरे खाने से भला-चंगा आदमी बीमार हो जाए। मगर इन कुंजड़ों-कबाड़ियों को इन बातों से क्या वास्ता? उन्हें तो अपने टकों से मतलब। मैंने समझा, एक कबाड़िए के नुकसान से पचासों आदमियों की जान बच जाए, तो क्या बुरा? देख लो, खोमचे वाले को हमने अपने पास से दो रुपये खनाखन गिन दिए। अब समझे, इस तमाशे का हाल?

यह कहकर उन्होंने अपनी राह ली और आज़ाद ने भी दिल में उनकी नेकनीयती की तारीफ करते हुए दूसरी तरफ का रास्ता लिया। अभी कुछ ही दूर गए थे कि सामने से एक साहब आते हुए दिखाई दिए। उन्होंने आज़ाद से पूछा-क्यों साहब, आप अफीम तो नहीं खाते?

आज़ाद-अफीम पर खुदा की मार ! कसम ले लीजिए, जो आज तक हाथ से भी छुई हो। इसके नाम से नफरत हैं।

यह कहकर आज़ाद नदी के किनारे जा बैठे। वहां से पलट कर जो आए, तो क्या देखते हैं कि वही हजरत जमीन पर पड़े आंखें मांग रहे हैं। चेहरे पर मुर्दनी छाई है, होंठ सूख रहे हैं, आंखों से आंसू बह रहे हैं। न सिर की फिक्र है, न पांव की। आज़ाद चकराए, क्या माजरा है। पूछा-क्यों भई, खैर तो है? अभी तो भले-चंगे थे, इतनी जल्द कायापलट कैसे हो गई?

अफीमची-भई, मैं तो मर मिटा। कहीं से अफीम ले आओ। पिऊं, तो आंखें खुलें; जान में जान आए। छुटपन ही से अफीम का आदी हूं। वक्त पर न मिले, तो जान निकल जाए।

आज़ाद-अरे यार, अफीम छोड़ो, नहीं, इसी तरह एक दिन दम निकल जाएगा।

अफीमची-तो क्या आप अमृत पीकर आए हैं? मरना तो एक दिन सभी को है।

आज़ाद-मियां, हो बड़े तीखे; 'रस्सी जल गई, मगर बल न गया' पड़े सिसक रहे हो, मगर जवाब, तुर्की ब तुर्की जरूर दोगे।

अफीमची-जनाब, अफीम लानी हो तो लाइए, वर्ना यहां बक-बक सुनने का दिमाग नहीं।

आज़ाद-अफीम लाने वाले कोई और ही होंगे, हम तो इस फिक्र में बैठे हैं कि आप मरें, तो मातम करें। हां, एक बात मानो तो अभी लपक जाऊं, जरा लकड़ी के सहारे से उस हरे-भरे पेड़ के तले चलो, वहां हरी-हरी घास पर लोट मारो, ठंडी-ठंडी हवा खाओ, तब तक मैं आता हूं।

अफीमची—अरे मियां, यहां जान भारी है। चलना-फिरना, उठना-बैठना कैसा !

आखिर आजाद ने उन्हें पीठ पर लादा और ले चले। उनकी यह हालत कि आंखें बंद, मुंह खुला हुआ, मालूम ही नहीं कि जाते कहां हैं। आज़ाद ने उनको नदी में ले जाकर गोता दिया। बस कयामत आ गई। अफीमची आदमी पानी की सूरत से नफरत, लगे चिल्लाने—बड़ा गच्चा दे गया, मारा, पटरा कर दिया ! उम्र भर में आज ही नदी में कदम रखा; खुदा तुझसे समझे; सन से जान निकल गयी ठिठुर गया; अरे जालिम, अब तो रहम कर। आज़ाद ने एक गोता और दिया। फिर ताबड़तोड़ कई गोते दिए। अब उनकी कैफियत कुछ न पूछिए। करोड़ों गालियां दीं। आज़ाद ने उनको रेती में छोड़ दिया और लंबे हुए चलते-चलते एक बरगद के पेड़ के नीचे पहुंचे, जिसकी टहनियां आसमान से बातें करती थीं और जटाएं पाताल की खबर लेती थीं। देखा एक हजरत नशे में चूर एक दुबली-पतली टट्टुई पर सवार टिक-टिक करते जा रहे हैं।

आज़ाद—इस टट्टुई पर कौन लदा है?

शराबी—अच्छा जी, कौन लदा है ! ऐसा न हो कि कहीं मैं उतर कर अंजर-पंजर ढीले कर दूं। यों नहीं पूछता कि इस हवाई घोड़े पर आसन जमाए, बाग उठाए कौन सवार जाता है। आंखों के आगे नाक, सूझे क्या खाक। टट्टू ऐसे ही हुआ करते हैं?

आज़ाद—जनाब, कसूर हुआ, माफ कीजिए। सचमुच यह तो तुर्की नस्ल का पूरा घोड़ा है। खुदा झूठ न बुलाए, जमना पार की बकरी इससे कुछ ही बड़ी होगी।

शराबी—हां, अब आप आए राह पर। इस घोड़े की कुछ न पूछिए। मां के पेट से फुदकता निकला था।

आज़ाद—जी हां, वह तो इसकी आंखें ही कहे देती हैं। घोड़ा क्या, उड़न-खटोला है।

शराबी—इसकी कीमत भी आपको मालूम है?

आज़ाद—ना साहब ! भला मैं क्या जानूं। आप तो खैर गधे पर सवार हुए हैं ! यहां तो टांगों की सवारी के सिवा और कोई सवारी मयस्सर ही न हुई। मगर उस्ताद कितनी ही तारीफ करो, मेरी निगाह में तो नहीं जंचता।

शराबी—अच्छा, तो इसी बात पर कड़कड़ाए देता हूं।

यह कहकर एड़ लगाई मगर टट्टू ने जुंबिश तक न की। वह और अचल हो गया। अब चाबुक पर चाबुक मारते हैं, एड़ लगाते हैं और वह टसकने का नाम तक नहीं लेता। आज़ाद ने कहा—बस, ज्यादा शेखी में न आइए, ठंडी-ठंडी हवा खाइए।

यह कहकर आज़ाद तो चले, मगर शराबी के पांव डगमगाने लगे। बाग अब छूटी और अब छूटी। दस कदम चले और बाग रोक ली। पूछा—मियां, मुसाफिर, मैं नशे में तो नहीं हूं?

आज़ाद—जी नहीं, नशा कैसा? आप होश की बातें कर रहें हैं?

शराबी इसी तरह बार-बार आज़ाद से पूछता था। आखिर जब आज़ाद ने देखा कि यह अब घुड़िया पर से लुढ़का ही चाहते हैं, तो झट घुड़िया को एक खेत में

हांक दिया, और गुल मचाया कि ओ किसान, देख, यह तो खेत चराए लेता है। किसान के कान में भनक पड़ी, तो लट्ठ कंधे पर रख लाखों गालियां देता हुआ झपटा। आज चचा बनाके छोडूंगा, रोज सुअरिया चरा ले जाते थे, आज बहुत दिन के बाद हत्थे चढ़े हो। नजदीक गया, तो देखता है कि टट्टुई है और एक आदमी उस पर लदा है। किसान चालाक था। बोला–आप हैं बाबू साहब ! चलिए, आपको घर ले चलूं। वहीं खाना खाइए और आराम से सोइए। यह कहकर घुड़िया की रास थामे हुए, कांजी-हौस पहुंचा और टट्टुई को कांजी-हौस में ढकेलकर चंपत हुआ। यह बेचारे रात भर कांजी-हौस में रहे, सुबह को किसी तरह घर पहुंचे।

सोलह

मियां आज़ाद के पांव में तो आंधी रोग था। इधर-उधर चक्कर लगाए, रास्ता नापा और पड़ कर सो रहे। एक दिन सांड़नी की खबर लेने के लिए सराय की तरफ गए, तो देखा, बड़ी चहल-पहल है। एक तरफ रोटियां पक रही हैं। दूसरी तरफ दाल बघारी जाती है। भठियारियां मुसाफिरों को घेर-घार कर ला रही हैं, साफ-सुथरी कोठरियां दिखला रही हैं। एक कोठरी के पास एक मोटा-ताजा आदमी जैसे ही चारपाई पर बैठा, पट्टी टूट गई। आप गड़ाप से झिलंगे में हो रहे। अब बार-बार उचकते हैं; मगर उठा नहीं जाता। चिल्ला रहे हैं, मुझे कोई उठाओ। आखिर भठियारों ने दाहिना हाथ पकड़ा, बाईं तरफ मियां आज़ाद ने हाथ दिया और आपको बड़ी मुश्किल से खींच-खांच के निकाला। झिलंगे से बाहर आए, तो सूरत बिगड़ी हुई थी। कपड़े कई जगह मसक गए थे। झल्ला कर भठियारी से बोले–वाह, अच्छी चारपाई दी ! जो मेरे हाथ-पांव टूट जाते या सिर फूट जाता, तो कैसी होती?

भठियारी–ऐ वाह मियां, 'उलटा चोर कोतवाल को डांटे !' एक तो छपरखट को चकनाचूर कर डाला, पट्टी के बहत्तर टुकड़े हो गए, देंगे टका और छह रुपये पर पानी फेर दिया ! दूसरे हमीं को ललकारते हैं !

आज़ाद–जनाब इन भठियारिनों के मुंह न लगिए, कहीं कुछ बैठें, तो मुफ्त की झेंप हो। देखभाल कर बैठा कीजिए। कहां से आ रहे हैं?

हकीम–यहीं तक आया हूं।

आज़ाद–आप आए कहां से हैं?

हकीम–जी गोपामऊ मकान है।

आज़ाद–यहां किस गरज आना हुआ?

हकीम–हकीम हूं।

आज़ाद–यह कहिए कि आप तबीब हैं।

हकीम–तबीब आप खुद होंगे, हम हकीम हैं।

आज़ाद–अच्छा, साहब, आप हकीम ही सही, क्या यहां हिकमत कीजिएगा?

हकीम-और नहीं तो क्या, भाड़ झोंकने आया हूं? या सनीचर पैरों पर सवार था? भला यह तो फर्माइए कि यह कैसी जगह है? लोग किस फैशन के हैं? आब-हवा कैसी है?

आज़ाद-यह न पूछिए जनाब। यहां के बाशिंदे पूरे घुटे हुए, आठों गांठ कुम्मैत हैं। और आव-हवा तो ऐसी है कि वर्षों रहिए, पर सिर में दर्द तक न हो। पावभर की खुराक हो, तो तीन पाव खाइए। डकार तक आए, तो मुझे सजा दीजिए।

यह सुनकर हकीम साहब ने मुंह बनाया और बोले-तब तो बुरे फंसे !

आज़ाद-क्यों, बुरे क्यों फंसे? शौक से हिकमत कीजिए। आव-हवा अच्छी है, बीमारी का नाम नहीं।

हकीम-हजरत, आप निरे बुद्धू हैं। एक तो आपने यह गोला मारा कि आव-हवा अच्छी है। इतना नहीं समझते कि आव-हवा अच्छी हो, तो हमसे क्या वास्ता, हमें कौन पूछेगा। बस, हाथ पर हाथ रखे मक्खियां मारा करेंगे। हम तो ऐसे शहर जाना चाहते हैं, जहां हैजे का घर हो, बुखार पीछा न छोड़ता हो, दस्त और पेचिस की सबको शिकायत हो, चेचक का वह जोर हो कि खुदा की पनाह। तब अलबत्ता हमारी हंड़ियां चढ़े। आपने तो वल्लाह, आते ही गोला मारा, आप फरमाते हैं कि यहां पाव भर के बदले तीन पाव गिजा हजम होती है। आमदनी टका नहीं और खाय चौगुना। तो कहिए, मरे या जिए? बंदा सबेरे ही बोरियां-बंधाना उठाकर चंपत होगा। ऐसी जगह मेरी बला रहे, जहां सब हट्टे-कट्टे ही नजर आते हैं। भला कोई खास मरज भी है यहां? यहां मरज का इस तरफ गुजर ही नहीं हुआ?

आज़ाद-हजरत, यहां के पानी में यह असर है कि वर्षों का मरीज आए, ओर एक कतरा पी ले, तो बस, खासा हट्टा-कट्टा हो जाय।

हक़ीम-पानी क्या अमृत है ! तो सही, जो पानी में जहर न मिला दिया...।

आज़ाद-जनाब, हजारों कुएं और पचासों बावलियां हैं, किस-किस में जहर मिलाते फिरिएगा?

हकीम-खैर भाई, समझा जाएगा, मगर बुरे फंसे ! इस वक्त होश ठिकाने नहीं हैं ! ओ भठियारी, जरी हमको पंसारी की दूकान से तोला भर सिकंजबीन तो ला देना।

भठियारी-ऐ मियां, पंसारी यहां कहां? किसी फकीर की दुआ ऐसी है कि यहां हकीम और पंसारी जमने ही नहीं पाता। कई हकीम आए, मगर कब्र में हैं। कई पंसारियों ने दूकान जमाई मगर चिता में फूंक दिए गए। यहां तो बीमारी ने आने की कसम खाई है।

हकीम-भई, बड़ा निकम्मा शहर है। खुदा के लिए हमें टट्टू किराए पर कर दो, तो रफू-चक्कर हो जाएं। ऐसे शहर की ऐसी-तैसी।

इन्हें धता बताकर आज़ाद सराय के दूसरे हिस्से में जा पहुंचे। क्या देखते हैं, एक बुजुर्ग आदमी बिस्तर जमाये बैठे हैं। आज़ाद बेतकल्लुफ तो थे ही, 'सलामअलेक' कहकर पास जा बैठे। वह भी बड़े तपाक से पेश आए। हाथ मिलाया, गले मिले, मिज़ाज पूछा।

आज़ाद–आप यहां किस गरज से तशरीफ लाए हैं?

उन्होंने जवाब दिया–जनाब, मैं वकील हूं। यहां वकालत करने का इरादा है। कहिए, यहां की अदालत का क्या हाल है?

आजद–यह न पूछिए। यहां के लोग भीगी बिल्ली हैं, लड़ना-भिड़ना जानते ही नहीं। साल भर में दो-चार मुकदमे शायद होते हों। चोरी-चकारी यहां कभी सुनने ही में नहीं आती। जमीन, आराजी, लगान, पट्टीदारी के मुकदमे कभी सुने ही नहीं। कर्ज कोई ले न दे।

वकील साहब का रंग उड़ गया। मगर हकीम जी की तरह झल्ले तो थे नहीं, आहिस्ता से बोले–सुभान अल्लाह, यहां के लोग बड़े भले आदमी हैं। खुदा उनको हमेशा नेक रास्ते पर ले जाय। मगर दिल में अफसोस हुआ कि इस टीम-टीम, धूमधाम से आए, और यहां भी वही ढाक के तीन पात। जब मुकदमे ही न होंगे, तो खाऊंगा क्या, दुश्मन का सिर। इन्हें भी झांसा देकर आज़ाद आगे बढ़े, तो देखा चारपाई बिछाए शहतूत के पेड़ के नीचे एक साहब बैठे हुक्का उड़ा रहे हैं। आज़ाद ने पूछा–आपका नाम?

वह बोले–गुम-नाम हूं।

आज़ाद–वतन कहां है?

वह–फकीर जहां पड़ रहे, वहीं उसका घर।

आज़ाद–आपका पेशा क्या है?

वह–खूने-जिगर खाना।

आज़ाद–तो आप शायर हैं, यह कहिए।

आज़ाद चारपाई के एक कोने पर बैठ गए और बेतकल्लुफ होकर बोले–जनाब, हुक्का तो मेरे हवाले कीजिए और आप अपना कलाम सुनाइए। शायर साहब ने बहुत कुछ चुना-चुनी के बाद दूसरे का कलाम अपना कहकर सुनाया–

क्या हाल हो गया है दिले-बेकरार का
आजार हो किसी को इलाही, न प्यार का।
मशहूर है जो रोजे-कयामत जहान में;
पहला पहर है मेरी शबे-इंतजार का।
इमतास देखना मेरी वहशत के बलबले;
आया है धूमधाम से मौसम बहार का।
राह उनकी तकते-तकते जो मुद्दत गुजर गयी;
आंखों को हौसला न रहा इंतिजार का।

आज़ाद–सुभान-अल्लाह, आपका कलाम बहुत ही पाकीजा है। कुछ और उस्तादों के कलाम सुनाइए।

शायर–बहुत खूब, सुनिए–

दाग दे जाते हैं जब आते हैं;
यह शिगूफा नया वह लाते हैं।

आज़ाद–सुभान-अल्लाह ! दाग के लिए शिगूफा, क्या खूब !

शायर—यार तक वार कहां पाते हैं;
रास्ता नाप के रह जाते हैं।

आज़ाद—वाह, क्या बोलचाल है !

शायर—फिर जुनूं दस्त न दिखलाइए हमें;
आज तलवे मेरे खुजलाते हैं;

आज़ाद—वाह वाह, क्या जबान है;

शायर—फूल का जाम पिलाओ साकी;
कांटे तालू में पड़े जाते, हैं।

आजाद—फूल के लिए कांटे क्या खूब।

शायर—कंघी के नाम से होते हैं खफा;
बात सुलझी हुई उलझाते हैं।

आज़ाद—बहुत खूब !

शायर—अच्छा जनाब, यह तो फर्माइए, यहां के रईसों में कोई शायरी का कदरदान भी है?

आज़ाद—किब्ला, यह न पूछिए। यहां मारवाड़ी अलबत्ता रहते हैं। शायर या मुंशी की सूरत से नफरत है। यहां के रईसों से कुछ भी भरोसा न रखिए।

शायर—तब तो यहां आना ही बेकार हुआ। आखिर, क्या एक भी रंगीन मिजाजे रईस नहीं है?

आज़ाद—अब आप तो मानते ही नहीं। यहां कदरदां खुदा का नाम है।

सत्रह

आज़ाद के दिल में एक दिन समाई कि आज किसी मसजिद में नमाज पढ़ें, जुमे का दिन है, जामे-मसजिद में खूब जमाव होगा। फौरन मसजिद में आ पहुंचे। क्या देखते हैं, बड़े-बड़े जाहिद और मौलवी, काजी और मुफ्ती बड़े-बड़े अमामे सिर पर बांधे नमाज पढ़ने चले आ रहे हैं; अभी नमाज शुरू होने में देर है, इसलिए इधर-उधर की नमाज पढ़ने चले आ रहे हैं। दो आदमी एक दरख्त के नीचे बैठे जिन्न और चुड़ैल की बातें करके वक्त काट रहे हैं। एक साहब नवजवान हैं, मोटे-ताजे; दूसरे साहब बुड्ढे हैं, दुबले-पतले।

बुड्ढे—तुम तो दिमाग के कीड़े चाट गए। बड़े बक्की हो। लाखों दफे समझाया कि यह सब ढकोसला है, मगर तुम्हें तो कच्चे घड़े की चढ़ी है, तुम कब सुनने वाले हो।

जवान—आप बुड्ढे हो गए, मगर बच्चों की सी-बातें करते हैं। अरे साहब बड़े-बड़े आलिम बड़े-बड़े माहिर भूतों के कायल हैं। बुढ़ापे में आपकी अक्ल भी सठिया गई?

बुड्ढे—अगर आप भूत-प्रेत दिखा दें, तो टांग के रास्ते निकल जाऊं। मेरी इतनी

उम्र हुई, कभी किसी भूत की सूरत न देखी। आप अभी कल के लौंडे हैं, आपने कहां देख ली?

जवान–रोज ही देखते हैं जनाब ! कौन-सा ऐसा मुहल्ला है, जहां भूत और चुड़ैल न हों? अभी परसों की बात है, मेरे एक दोस्त ने आधी रात के वक्त दीवार पर एक चुड़ैल देखी। बाल-बाल मोती पिरोए हुए, चोटी कमर तक लटकती हुई, ऐसी हसीन कि परियां झख मारें। वह सन्नाटा मारे पड़े रहे, मिनके तक नहीं। मगर आप कहते हैं, झूठ है।

बुड्ढे–जी हां झूठ है–सरासर झूठ ! हमारा खयाल वह बला है, जो सूरत बना दे, चला-फिरा दे, बातें करते सुना दे। आप क्या जानें, अभी जुमा-जुमा आठ दिन की तो पैदाइश है। और मियां, करोड़ बातों की एक बात तो यह है कि मैं बिना देखे न पतियाऊंगा। लोग बात का बतंगड़ और सुई का भाला बना देते हैं। एक सही, तो निन्यानबे झूठ। और आप ऐसे ढुलमुल यकीन आदमियों का तो ठिकाना ही नहीं। जो सुना, फौरन मान लिया। रात को दरख्त की फुनगी पर बंदर देखा और थरथराने लगे कि प्रेत झांक रहा है। बोले और गला दबोचा। हिले और शामत आई। अंधेरे-घुप में तो यों ही इंसान का जी घबराता है। जो भूत-प्रेत का खयाल जम गया, तो सारी चौकड़ी भूल गए। हाथ-पांव सब फूल गए। बिल्ली ने म्याऊं किया और जान निकल गई। चूहे की खड़बड़ सुनी और बिल ढूंढ़ने लगे। अब जो चीज सामने आएगी, प्रेत बन जाएगी। यहां सब पापड़ बेल चुके हैं। कई जिन्न हमने उतारे, कई चुड़ैलों से हमने मुहल्ले खाली कराए। जहां दस जूते खोपड़ी पर जमाए और प्रेत ने बकचा संभाला। यों गप उड़ाने को कहिए, तो हम भी गप बेपर की उड़ाने लगे। याद, रखो, ये ओझे-सयाने सब रंगे सियार हैं। सब रोटी कमा खाने के लटके हैं। बंदर न नचाए, मुर्ग न लड़ाए, पतंग न उड़ाए, भूत-प्रेत ही झाड़ने लगे।

जवान–खैर, इस तू-तू मैं-मैं से क्या वास्ता? चलिए हमारे साथ। कोई दो-तीन कोस के फासले पर एक गांव है, वहां एक साहब रहते हैं। अगर आपकी खोपड़ी पर उनके अमल से भूत न चढ़ बैठे, तो मूंछ मुंडवा डालूं। कहिएगा, शरीफ नहीं चमार है। बस, अब चलिए, आपने तो जहां जरा-सी चढ़ाई और कहने लगे कि पीर-पयंबर, देवी-देवता, भूत-प्रेत सब ढकोसला है। लेकिन आज ठीक बनाए जाइएगा।

यह कहकर दोनों उस गांव की तरफ चले। मियां आज़ाद तो दुनिया भर के बेफिक्रे थे ही, शौक चर्राया कि चलो, सैर देख आओ। यह भी पुराने खयालों के जानी दुश्मन थे। कहां तो नमाज पढ़ने मसजिद आए थे, कहां छू-छक्का देखने का शौक हुआ; मसजिद को दूर ही से सलाम किया और सीधे सराय चले। अरे, कोई इक्का, किराए का होगा? अरे मियां, कोई भठियारा इक्का भाड़े करेगा।

भठियारा–जी हां, कहां जाइएगा?

आज़ाद–सकजमलदीपुर।

भठियारा–क्या दीजिएगा?

आज़ाद–पहले घोड़ा-इक्का तो देखें–'घर घोड़ा नखास मोल।'

भठियारा–वह क्या कमानीदार इक्का खड़ा है और यह सुरंग घोड़ी है, हवा से बातें करती जाती है ! बैठे और दन से पहुंचे।

इक्का तैयार हुआ। आज़ाद चले, तो रास्ते में एक साहब से पूछा–क्यों साहब, इस गांव को सकजमलदीपुर क्यों कहते हैं? कुछ अजीब बेढंग-सा नाम है। उसने कहा–इसका बड़ा किस्सा है। एक साहब शेख जमालुद्दीन थे। उन्होंने गांव बसाया और इसका नाम रखा शेखजमालुद्दीनपुर। गंवार आदमी क्या जाने, उन्होंने शेख का सक, जमाल का जमल और उद्दीन का दी बना दिया ।

इक्के वाले से बातें होने लगीं। इक्के वाला बोला–हुजूर, अब रोजगार कहां! सुबह से शाम तक जो मिला, खा-पी बराबर। एक रुपया जानवर खा गया, दस-बारह आने घर के खर्च में आए, आने-दो आने सुलफे-तमाखू में उड़ गए। फिर मोची के मोची। महाजन के पचीस रुपये छह महीने से बेबाक न हुए। जो कहीं कच्ची में चार-पांच कोस ले गए, तो पुट्ठियां धंस गई पैंजनी, हाल, धुरा सब निकल गया। दो-चार रुपये के मत्थे गई। रोजगार तो तुम्हारी सलामती से तब हो, जब यह रेल उड़ जाय। देखिए, आप ही ने सात गंडे सकजमलदीपुर के दिए, मगर तीन चक्कर लगाकर।

कोई पौने दो घंटे में आज़ाद सकजमलदीपुर पहुंचे। पता-वता तो इनको मालूम था ही, सीधे शाह साहब के मकान पर जा पहुंचे। ठट के ठट आदमी जमा थे। औरत-मर्द टूटे पड़ते थे। एक आदमी से उन्होंने पूछा–क्या आज यहां कोई मेला है? उसने कहा–मेला-वेला नाहीं, एक मनई के मूड़ पर देवी आई हैं, तौन मेहरारू, मनसेधू सब देखै आवत हैं। इसी झुंड में आज़ाद को वह बूढ़े मियां भी मिल गए, जो भूत-चुड़ैल को ढकोसला कहा करते थे। अकेले एक तरफ ले जाकर कहा–जनाब, मैंने मसजिद में आपकी बातें सुनी थीं। कसम खाता हूं, जो कभी भूत-प्रेत का कायल हुआ हूं। अब ऐसी कुछ तदबीर करनी चाहिए कि इन शाह साहब की कलई खुल जाए।

इतने में शाह साहब नीले रंग का तहमद बांधे, लम्बे-लम्बे बालों में हिना का तेल डाले, मांग निकाले, खड़ाऊं पहने तशरीफ लाए। आंखों में तेज भरा हुआ था। जिसकी तरफ नजर भरकर देखा, वही कांप उठा। किसी ने कदम लिए, किसी ने झुक कर सलाम किया। शाह साहब ने गुल मचाना शुरू किया–धूनी मेरी जलती है, जलती है और बलती है। धूनी मेरी जलती है। खड़ी मूंछों वाला है, लम्बे गेसू वाला है, मेरा दरजा आला है। झूम-झूमकर जब उन्होंने यह आवाज लगाई तो सब लोग सन्नाटे में आ गए। एकाएक आपने अकड़कर कहा–किसी को दावा हो, तो आकर मुझसे कुश्ती लड़े। हाथी को टक्कर दूं, तो चिंग्घाड़ कर भागे ! कौन आता है?

अब सुनिए, पहले से एक आदमी को सिखा-पढ़ा रखा था। वह तो सधा हुआ था ही, झट सामने आकर खड़ा हो गया और बोला–हम लड़ेंगे। बड़ा कड़ियल जवान था; गैंडे की-सी गरदन, शेर का-सा सीना; मगर शाह साहब की तो हवा बंधी हुई थी। लोग उस पहलवान की हालत पर आफसोस करते थे कि बेधा है; शाह साहब चुटकियों में चुर्र-मुर्र कर डालेंगे।

खैर दोनों आमने-सामने आये और शाह साहब ने गरदन पकड़ते ही इतनी जोर से पटका कि वह बेहोश हो गया। आज़ाद ने बूढ़े मियां से कहा—जनाब, यह मिलीभगत है। इसी तरह गंवार लोग मूंड़े जाते हैं। मैं ऐसे मक्कारों की कब्र तक से वाकिफ हूं। ये बातें हो ही रही थीं कि शाह साहब ने फिर अकड़ते हुए आवाज लगाई—कोई और जोर लगाएगा? मियां आज़ाद ने आव देखा न ताव, झट लंगोट बांध, चट से कूद पड़े। आओ उस्ताद; एक पकड़ हमसे भी हो जाय। तब तो शाह साहब चकराये कि यह अच्छे बिगड़े दिल मिले। पूछा—आप अंग्रेजी पढ़े हैं? आज़ाद ने कड़क कर कहा—अंग्रेजी नहीं, अंग्रेजी का बाप पढ़ा हूं। बस, अब संभलिए, मैं आ गया। यह कहकर, घुटना टेक कलाजंग के पेंच पर मारा तो, शाह साहब चारों खाने चित्त जमीन पर धम से गिरे। इनका गिरना था कि मियां आज़ाद छाती पर चढ़ बैठे। अब बताओ बच्चा, काट लूं नाक, कतर लूं कान बांधू दुम में नमदा ! बदमाश कहीं का ! बूढ़े मियां ने झपटकर आज़ाद को गोद में उठा लिया। वाह उस्ताद, क्यों न हो। शाह साहब उसी दिन गांव छोड़कर भागे।

शाह साहब को पटकनी देकर और गांव के ढुलमुल-यकीन गंवारों को समझा-बुझा कर आज़ाद बूढ़े मियां के साथ-साथ शहर की तरफ चल खड़े हुए। रास्ते में उन्हीं शाह साहब की बातें होने लगीं—

आज़ाद—क्यों, सच कहिएगा, कैसा अड़ंगा दिया? बहुत बिलबिला रहे थे। यहां उस्तादों की आंखें देखी हैं। पोर-पोर में पेंचैती कूट-कूट कर भरी है। एक-एक पेंच के दो-दो सौ तोड़ याद हैं। मैं तो उसे देखते ही भांप गया कि यह बना हुआ है। लड़ैतिए का तो कैंडा ही उसका न था। गरदन मोटी नहीं, छाती चौड़ी नहीं, बदन कटा-पिटा नहीं, कान टूटे नहीं। ताड़ गया कि घामड़ है। गरदन पकड़ते ही दबा बैठा।

बूढ़े मियां—अब इस गांव में भूलकर भी न आएगा। एक मर्तबा का जिक्र सुनिए, एक बने हुए सिद्ध पालथी मारकर बैठे और लगे अकड़ने कि कोई छिपाकर हाथ में फूल ले, हम चुटकियों में बता देंगे। मेरे बदन में आग लग गई। मैंने कहा—अच्छा, मैंने फूल लिया, आप बतलाइए तो सही। पहले तो आंखें नीली-पीली करके मुझे डराने लगे। मैंने कहा—हजरत; मैं इन गीदड़-भभकियों में नहीं आने का। यह पुतलियों का तमाशा किसी नादान को दिखाओ। बस, बताओ, मेरे हाथ में क्या है? थोड़ी देर तक सोच-साच कर बोले—पीला फूल है। मैंने कहा—बिलकुल झूठ। तब तो घबराए और कहने लगे—मुझे धोखा हुआ। पीला नहीं, हरा फूल है। मैंने कहा—वाह भाई लालबुझक्कड़ क्यों न हो? हरा फूल आज तक देखा न सुना, यह नया गुल खिला। मेरा यह कहना था कि उनका गुलाब-सा चेहरा कुम्हला गया। कोई उस वक्त उनकी बेकली देखता। मैं जामे में फूला न समाता था। आखिर इतने शर्मिंदा हुए कि वहां से पत्ता तोड़ भागे। हम ये सब खेल खेले हुए हैं।

आज़ाद—ऐसे ही एक शाह साहब को मैंने भी ठीक किया था। एक दोस्त के घर गया, तो क्या देखता हूं कि एक फकीर साहब शान से बैठे हुए हैं और अच्छे-अच्छे पढ़े-लिखे आदमी उन्हें घेरे खड़े हैं। मैंने पूछा—आपकी तारीफ कीजिए, तो एक साहब ने, जो उस पर ईमान ला चुके थे, दबे दांतों कहा—शाह साहब गैबदां

(त्रिकालदर्शी) हैं। आपके कमालों के झंडे गड़े हुए हैं। दस-पांच ने तो उन्हें आसमान ही पर चढ़ा दिया। मैंने दिल में कहा—बचा, तुम्हारी खबर न ली, तो कुछ न किया। पूछा, क्यों शाह जी, यह तो बताइए, हमारे घर में लड़का कब तक होगा? शाह जी समझे, यह भी निरे चोंगा ही हैं। चलो, अनाप-सनाप बताकर उल्लू बनाओ और कुछ ले मरो। मेरे बाप, दादे और उनके बाप के परदादे का नाम पूछा। यहां याद का यह हाल है कि बाप का नाम तो याद रहता है। दादाजान का नाम किस गधे को याद हो। मगर खैर, जो जबान पर आया, ऊल-जलूल बता दिया। तब फर्माते क्या हैं, बच्चा दो महीने के अंदर ही अंदर बेटा ले। मैंने कहा—हैं शाह साहब, जरा संभले हुए। अब तो कहा, अब न कहिएगा। पंद्रह दिन तो बंदे की शादी को हुए और आप फर्माते हैं कि दो महीने के अंदर ही अंदर लड़का ले। वल्लाह, दूसरा कहता, खून पी लेता। इस फिकरे पर यार लोग खिलखिलाकर हंस पड़े और शाह जी के हवास गायब हो गए। दिल में करोड़ों ही गालियां दी होंगी, मगर मेरे सामने एक न चली। जनाब, उस दयार में लोग उन्हें खुदा समझते थे। शाह जी कभी रुपये बरसाते थे। कभी बेफस्ल के मेवे मंगवाते थे, कभी घड़े को चकनाचूर करके फिर जोड़ देते थे। सैकड़ों ही अलसेंटे याद थीं, मेरा जवाब सुना, तो हक्का-बक्का हो गए। ऐसे भागे कि पीछे फिरकर भी न देखा। जहां मैं हूं, भला किसी सिद्ध या शाह जी का रंग जम तो जाए।

यही बातें करते हुए लोग फिर अपने-अपने घर सिधारे।

अठारह

मियां आज़ाद एक दिन चले जाते थे, तो देखते क्या हैं, एक चौराहे के नुक्कड़ पर भंग वाले की दूकान है और उस पर उनके एक लंगोटिये यार बैठे डींग की ले रहे हैं—हमने जो खर्च कर डाला, वह किसी को पैदा करना भी नसीब न हुआ होगा, लाखों कमाए, करोड़ों लुटाए, किसी के देने में न लेने में। आज़ाद ने झुक कर कान में कहा—वाह भई उस्ताद, क्यों न हो, अच्छी लंतरानियां हैं। बाबा तो आपके उम्र भर बर्फ बेचा किए और दादा जूते की दूकान रखते-रखते बूढ़े हुए। आपने कमाया क्या, लुटाया क्या? याद है, एक दफे साढ़े छह रुपये की मुहर्रिरी पाई, मगर उससे भी निकाले गए। उसने कहा—आप भी निरे गावदी हैं। अरे मियां, अब गप उड़ाने से भी गए? भंग वाले की दूकान पर गप न मारूं, तो और कहां जाऊं? फिर इतना तो समझो कि यहां हमको जानता कौन है। मियां आज़ाद तो एक सैलानी आदमी थे ही, एक तिपाई पर टिक गए। देखते क्या हैं, एक दरख्त के तले सिरकी का छप्पर पड़ा है, एक तख्त बिछा है, भंग वाला सिल पर रगड़े लगा रहा है। लगे रगड़ा, मिटे झगड़ा। दो-चार बिगड़े-दिल बैठे गुल मचा रहे हैं—दाता तेरी दूकान पर हुन बरसे, ऐसी चकाचक पिला, जिसमें जूती खड़ी हो। थोड़ा-सा धतूरा भी रगड़ दो जिसमें खूब

रंग जमे। इतने में मियां आज़ाद के दोस्त बोल उठे—उस्ताद, आज तो दूधिया डलवाओ। पीते ही ले उड़े। चुल्लू में उल्लू हो जायें। दूकान वाले ने उन्हें मीठी केवड़े से बसी हुई भंग पिलवाई। आप पी चुके, तो अपने दोस्त हरभज को भंग का एक गोला खिलाया और फिर वहां से सैर करने चले। इन्हें मुटापे के सबब से लोग भदभद कहा करते थे। चलते-चलते हरभज ने पूछा—क्यों यार, यह कौन मुहल्ला है?

भदभद—चीनी बाजार।

हरभज—वाह, कहीं हो न, यह चिनिया बाजार है।

भदभद—चिनिया बाजार कैसा, चीनी बाजार क्यों नहीं कहते।

हरभज—हम गली-गली, कूचे-कूचे से वाकिफ हैं, आप हमें रास्ता बताते हैं? चिनिया बाजार तो दुनिया कहती है, आप कहने लगे चीनी बाजार है।

भदभद—अच्छा तो खबरदार, मेरे सामने अब चिनिया बाजार न कहिएगा।

हरभज—अच्छा किसी तीसरे आदमी से पूछो।

आज़ाद ने दोनों को समझाया—क्यों लड़े मरते हो? मगर सुनता कौन था। सामने से एक आदमी चला आता था। आज़ाद ने बढ़कर पूछा—भाई, यह कौन मुहल्ला है? उसने कहा—चिनिया बाजार। अब हरभज और भदभद ने उसे दिक करना शुरू किया। चीनी बाजार है कि चिनिया बाजार, यही पूछते हुए आध कोस तक उसके साथ गए। उस बेचारे को इन भंगड़ों से पीछा छुड़ाना मुश्किल हो गया। बार-बार कहता था कि भई, दोनों सही हैं। मगर ये एक न सुनते थे। जब सुनते-सुनते उसके कान पक गए, तो वह बेचारा चुपके से एक गली में चला गया।

तीनों आदमी फिर आगे चले। मगर वह मसला हल न हुआ। दोनों एक दूसरे को बुरा-भला कहते थे; पर दो में से एक को भी यह तसकीन न होती थी कि चिनिया बाजार और चीनी बाजार में कौन-सा बड़ा फर्क है।

हरभज—जानते भी हो, इसका नाम चिनिया बाजार क्यों पड़ा।

भदभद—जानता क्यों नहीं। पहले यहां दिसावर से चीनी आकर बिका करती थी।

हरभज—तुम्हारा सिर? यहां चीन के लोग आकर आबाद हो गए थे, जभी से यह नाम पड़ा।

भदभद—गावदी हो !

इस पर दोनों गुथ गए। इसने उसको पटका, उसने इसको पटका। भदभद मोटे थे, खूब पिटे।

आज़ाद ने उन दोनों को यहीं छोड़ा और खुद घूमते-घामते जौहरी बाजार की तरफ जा निकले। देखा, एक लड़का झुका हुआ कुछ लिख रहा है। आज़ाद ने लिफाफा दूर से देखते ही खत का मजमून भांप लिया। पूछा—क्यों भई इस गांव का क्या नाम है?

लड़का—दिन को रतौंधी तो नहीं होती? यह गांव है या शहर?

आज़ाद—हां, हां वही शहर। मैं मुसाफिर हूं, सराय का पता बता दीजिए।

लड़का—सराय किस लिए जाइएगा? क्या किसी भठियारी से रिश्तेदारी है?

आज़ाद–क्यों साहब, मुसाफिरों से भी दिल्लगी ! हम तरजुमा करते हैं ! खत हो, अर्जी हो, दरख्वास्त हो, उसका वह तरजुमा कर दें कि पढ़ने वाले दंग रह जायं।

लड़का–तब तो जनाब, आप बड़े काम के आदमी हैं। लो, हमारी इस अर्जी का तरजुमा कर दो। एक चवन्नी दूंगा।

आज़ाद–खैर, लाइये, बोहनी कर लूं। अर्जी पढ़िये।

लड़का–आप ही पढ़ लीजिये।

आज़ाद–(अर्जी पढ़कर) सुभान-अल्लाह, यह अर्जी है या घर का दुखड़ा। भला तुम्हारे कितने लड़के-लड़कियां होंगी?

लड़का–अजी, अभी यहां तो शादी ही नहीं हुई।

आज़ाद–तो फिर यह क्या लिख मारा कि सारे कुनबे का भार मेरे सिर है। और नौकरी भी क्या मांगते हो कि क्या जमाने भर कूड़ा साफ करना पड़े ! तड़का हुआ और बंपुलिस झांकने लगे; कभी भंगियों से तकरार हो रही है, कभी भंगिनों से चख-चख चल रही है। अभी तुम्हारी उम्र ही क्या है पढ़ो-लिखो, जम कर मेहनत करो, नौकरी की तुम्हें क्या फिक्र है?

लड़का–आप अर्जी लिखते हैं कि सलाह बताते हैं? मैं तो आपसे सलाह नहीं पूछता।

आज़ाद–मियां, पढ़ने-लिखने का यह मतलब नहीं कि नौकरी ही करे। और नहीं, तो बंपुलिस का दारोगा ही सही। खासे जौहरी बने हो, ऐसी कौन-सी मुसीबत आ पड़ी है कि इस नौकरी पर जान देते हो?

इतने में एक लाला साहब कलमदान लिए, ऐनक लगाए, आकर बैठ गए।

आज़ाद–कहिए, आपको भी कुछ तरजुमा करना है?

लाला–जी हां, इस अर्जी का तरजुमा कर दीजिए। मेरे बुढ़ापे पर तरस खाइए।

आज़ाद–अच्छा, अपनी अर्जी पढ़िए।

लाला–सुनिए–

'गरीबपरवर सलामत,

अपना क्या हाल कहूं, कोई दो दर्जन तो बाल-बच्चे हैं। आखिर, उन्हें सेर-सेर भर आटा चाहिए या नहीं। जोड़िए कितना हुआ। और जो यह कहिए कि सेर भर कोई लड़का नहीं खा सकता, तो जनाब, मेरे लड़के बच्चे नहीं हैं, कई-कई बच्चों के बाप हैं। इस हिसाब से 80 रु॰ का तो आटा ही हुआ। 10 रु॰ की दाल रखिए। बस, मैं और कुछ नहीं चाहता। मगर जो यह कहिए कि इससे कम में गुजर करूं, तो जनाब, यह मेरे किए न होगा। रोटियों में खुदा का भी साझा नहीं।

'मेरे लियाकत का आदमी इस दुनिया में तो आपको मिलेगा नहीं, हां शायद उस दुनिया में मिल जाय। बच्चे मैं खेला सकता हूं, बाजार से सौदे ला सकता हूं, बनिए के कान कतर लूं, तो सही। किस्से-कहानियों का तो मैं खजाना हूं। नित्य नई कहानियां कहूं। मौका आ पड़े तो जूते साफ कर सकता हूं; मेम साहब और बाबा लोगों को गाकर खुश कर सकता हूं। गरज, हरफन-मौला हूं। पढ़ा-लिखा भी हूं। बदनसीबी से मिडिल पास तो नहीं हूं; लेकिन अपने दस्तखत कर लेता हूं। जी चाहे इम्तहान

ले लीजिए।

'अब रही खानदान की बात। तो जनाब, कमतरीन के बुजुर्ग हमेशा बड़े-बड़े ओहदों पर रहे। मेरे बड़े भाई की बीवी जिसे फूफी कहते हैं और जिससे मजाक का भी रिश्ता है, उसके बाप के ससुर के चचेरे भाई नहर के महकमे में 20 रु॰ महीने पर दारोगा थे। मेरे बाबाजान म्युनिसिपैलिटी में सफाई के जमादार थे और रु॰ महीना मुशहरा पाते थे। चूंकि सरकार का हुक्म है कि अच्छे खानदान के लोगों की परवरिश की जाय, इसलिए दो-एक बुजुर्गों का जिक्र कर दिया। वरना यहां तो सभी ओहदेदार थे। कहां तक गिनाऊं।

'अब तो अर्जी में और कुछ लिखना नहीं बाकी रहा। अपनी गरीबी का जिक्र कर ही दिया। लियाकत की भी कुछ थोड़ी-सी चर्चा कर दी और अपने खानदान का भी कुछ जिक्र कर दिया।

'अब अर्ज है कि हुजूर, जो हमारे आका हैं, मेरी परवरिश करें। अगर मुझ पर हुजूर की निगाह न हुई, तो मजबूर होकर मुझे अपने बाल-बच्चों को मिर्च के टापू में भरती करना पड़ेगा।'

मियां आज़ाद ने जो यह अर्जी सुनी तो लोटने लगे। इतना हंसे कि पेट में बल पड़-पड़ गए। जब जरा हंसी कम हुई, तो पूछा—लाला साहब, इतना और बता दीजिए कि आप हैं कौन ठाकुर?

लाला—जी, बंदा तो अग्निहोत्री है।

आज़ाद—तो फिर आपके शरीफ-खानदान होने में क्या शक है। मियां आदमी बनो। जाकर बाप-दादों का पेशा करो। भाड़ झोंकने में जो आराम है, वह गुलामी करने में नहीं। मुझसे आपकी अर्जी का तरजुमा न होगा।

उन्नीस

एक दिन मियां आज़ाद सांड़नी पर सवार हो घूमने निकले, तो एक थिएटर में जा पहुंचे। सैलानी आदमी तो थे ही, थिएटर देखने लगे, तो वक्त का खयाल ही न रहा। थिएटर बंद हुआ, तो बारह बज गए थे। घर पहुंचना मुश्किल था। सोचा, आज रात को सराय ही में पड़े रहें। सोये, तो घोड़े बेचकर। भठियारी ने आकर जगाया—अजी, उठो, आज तो जैसे घोड़े बेचकर सोए हो ! ऐ लो, वह आठ का गजर बजा। अंगड़ाइयों पर अंगड़ाइयां ले रहे हैं, मगर उठने का नाम नहीं लेते।

एक चंडूबाज भी बैठे हुए थे। बोले—तो तुमको क्या पड़ी है? सोने नहीं देती। क्या जाने, किस मौज में पड़े हैं। लहरी आदमी तो हई हैं। मगर सच कहना, कैसा धावत सैलानी है। दूसरा इतना घूमे, तो हलकान हो जाए। और जो जगाना ही मंजूर है, तो लोटे की टोंटी से जरा-सा पानी कान में छोड़ दो। देखो, कैसे कुलबुला कर उठ बैठते हैं।

भठियारी ने चुल्लू से मुंह पर छींटे देने शुरू किए। दस ही पांच बूंदें गिरी थीं कि आज़ाद हांय-हांय करते उठ खड़े हुए और बोले—यह क्या दिल्लगी है ! कैसी मीठी नींद सो रहा था, लेके जगा दिया !

भठियारी—इतनी रात तक कहां घूमते रहे कि अभी नींद ही नहीं पूरी हुई।

आज़ाद—कहीं नहीं, जरा थिएटर देखने लगा था।

चंडूबाज—सुना, तमाशा बहुत अच्छा होता है। आज हमें भी दिखा देना भई, तुम्हारी बदौलत थिएटर तो देख लें। कै बजे शुरू होता है?

आज़ाद—यही, कोई नौ बजे।

चंडूबाज—तो फिर मैं चल चुका। नौ बजे शुरू हो, बारह बजे खत्म हो। कहीं एक बजे घर पहुंचें। मुहल्ले भर में आग ढूंढें, हुक्का भरें, तवा जमाएं, घंटा भर गुड़-गुड़ाए। पलंग पर पड़ जायं, तो नींद उचाट। करवटों पर करवटें लें, तब कहीं चार बजते-बजते आंख लगे। फिर जो भलेमानुस चार बजे सोए, वह दोपहर तक उठने का नाम न लेगा। लीजिए, दिन यों गया। रात यों गई। अब इंसान चंडू कब पिए, दास्तान कब सुने, पीनक के मजे कब उड़ाए? कौन जाय। क्या गुलाबो-शिताबो के तमाशे से अच्छा होता होगा? रीछवाले ही का तमाशा न देखे? मियां ऐंठा सिंह के मजे न उड़ाए, बकरी पर तने बैठे हैं, छींक पड़ी और खट से फुंदनीदार टोपी अलग। भई, कोई बेधा हो, जो वहां जायं। और फिर रुपये किसके घर से आएं? जब से अफीम सोलह रुपये सेर हो गई, तब से तो गरीबों का और भी दिवाला निकल गया। और चंडू के ठेकों ने तो सत्यानाश ही कर दिया। सैलानी तो शहर का चूहा-चूहा है, मगर टिकट का नाम न हो। और भई, साफ तो यों है कि हम लोग मुफ्त के तमाशा देखने वालों में से हैं। मेला-ठेला तो कोई छूटने ही नहीं पाता। सावन भर ऐशबाग के मेले न छोड़े; कभी इमलियों में झूल रहे हैं, कभी बंदरों की सैर देख रहे हैं। बहुत किया, तो एक गंडे के पौड़े लिए। दो पैसे बढ़ाए और साकिन की दूकान पर दम लगाया। चलिए, पांच-छः पैसे में मेला हो गया। सबसे बड़ी मुसीबत तो यह है कि वहां नादिरी हुक्म है कि कोई धुआं न उड़ाए, नहीं तो हम सोचे थे कि चंडू का सामान लेते चलेंगे और मजे से किसी कोने में लेटे हुए उड़ाते जायेंगे। इसमें किसी के बाप का क्या इजारा !

भठियारिन—भई, टिकट माफ हो जाए, तो मैं भी चलूं।

आज़ाद—उनको क्या पड़ी है भला, जो बंबई से अंगड़-खंगड़ लेकर इतनी दूर बेगार भुगतने आएं। वही बेठिकाने बात कहती हो, जिसके सिर न पैर।

चंडूबाज—अच्छा, तो तुम्हारी खातिर ही सही। तुम भी क्या याद करोगी। एक दिन हम भी चवन्नी गलाएंगे। तमाशा होता कहां है?

आज़ाद—यही छतरमंजिल में, दस कदम पर।

चंडूबाज—दस कदम की एक ही कही। तुम्हारी तरह यहां किसी के पांव में सनीचर तो है नहीं। सात बजे से चलना शुरू करें, तो दस बजे पहुंचें। बग्घी किराए पर करें, तो एक रुपया आने का और एक रुपया जाने का और ठुक जाए। 'मुफलिसी में आटा गीला।'

आज़ाद—अजी, मेरी सांड़नी पर बैठ लेना।

भठियारिन—मुझे भी उसी पर बिठा लेना। रात का वक्त है, कौन देखता है।

शाम हुई, तो मियां आज़ाद ने सांड़नी कसी और सराय से चले। भठियारिन भी पीछे बैठ गई। मगर चंडूबाज ने सांड़नी की सूरत देखी, तो बैठने की हिम्मत न पड़ी। जब सांड़नी ने तेज चलना शुरू किया, तो भठियारिन बोली—इस मुई सवारी पर खुदा की संवार। अल्लाह की कसम, मारे हचकोलों के नाक में दम आ गया। आज़ाद को शरारत सूझी, तो एक एड़ लगाई, वह और भी तेज हुई। तब तो भठियारिन आग-भभूका हो गई—यह दिल्लगी रहने दीजिए; मुझे भी कोई और समझे हो? मैं लाखों सुनाऊंगी। लो बस, सीधी तरह चलना हो तो चलो; नहीं मैं चीखती हूं, पेट का पानी तक हिल गया। ऐसी सवारी को आग लगे। मियां आज़ाद ने जरा लगाम को खींचा, तो सांड़नी बलबलाने लगी। बी भठियारी तो समझीं कि अब जान गई। देखो, यह छेड़छाड़ अच्छी नहीं। हमें उतार ही दो। लो, और सुनो, जरा से हचकोले में मुंह के बल आ रहूं, तो चकनाचूर ही हो जाऊं। तुम मुस्टंडों को इसका क्या डर ! रोको, रोको ! हाय, मेरे अल्लाह, मैं किस बला में फंस गई ! मियां, अपने खुदा से डरो, बस हमें उतार ही दो। इत्तफाफ से सांड़नी एक दरख्त की परछाईं देखकर ऐसी भड़की कि दस कदम पीछे हट आई। उसका बिचकना था कि बी भठियारिन धम से जमीन पर गिर पड़ी। खुदा की मार। वह तो कहो, पक्की सड़क न थी। नहीं तो हड्डी-पसली चूर-चूर हो जाती।

चंडूबाज—शाबाश है तेरी मां को; पटखनी भी खाई, मगर वही तेवर। दूसरी हयादार होती, तो लाख बरस तक सवार होने का नाम न लेती। सवारी क्या है, जनाजा है।

भठियारिन—चलिए, आपकी जूती की नोक से। हम बेहया ही सही। क्या झांसे देने आए हैं, जिसमें मैं उतर पडूं और आप मजे से जम जायं। मुंह धो रखिए, हमने कच्ची गोलियां नहीं खेली हैं।

मगर इस झमेले में इतनी देर हो गई कि जब थियेटर पहुंचे, तो तमाशा खत्म हो गया था। तमाशाई लोग बाहर निकल रहे थे।

आज़ाद—लीजिए, सारा मजा किरकिरा हो गया। इसी से मैं तुम लोगों को साथ न ले आता था।

चंडूबाज—औरतों को तो मेले-ठेले में ले ही न जाना चाहिए। हमेशा अलसेट होती है।

भठियारिन—जी हां, और क्या। मेले-ठेले तो आप जैसे खुर्राटों ही के लिए होते हैं। आज़ाद तमाशाइयों की बातें सुनने लगे—

एक—यार, इनके पास तो सामान खूब लैस है।

दूसरा—वाह, क्या कहना, पर्दे तो ऐसे कि देखे न सुने। बस, यही यकीन होता है कि बारहदरी का फाटक है या परीखाना। जंगल का सामान दिखाया, तो वही बेल-बूटे, वही दूब, वही पेड़, वही झाड़ियां, बस बिलकुल सुंदरवन मालूम होता है।

तीसरा—और सब्जपरी की तारीफ ही न करोगे?

चौथा–हजरत, वही कहीं लखनऊ में छह महीने भी तालीम पाए, तो फिर आफत ही ढाए। लाखों लूट ले जाय, लाखों।

दूसरी तरफ गए, तो दो आदमी और ही तरह की बातें कर रहे थे–

एक–अजी, धोखा है, और कुछ नहीं।

दूसरा–हां, टन-टन की आवाज तो आती है, बाकी, खैर-सल्लाह।

अब आज़ाद यहां बैठकर क्या करते। सोचा, आओ, सांड़नी पर बैठें, और चलकर सराय में मीठी नींद के मजे लें। मगर बाहर आकर देखते हैं, तो सांड़नी गायब। थिएटर के अहाते में एक दरख्त से बांध दिया था। मालूम नहीं, तड़पकर भागी, या कोई चुरा ले गया। बहुत देर तक इधर-उधर ढूंढा किए, मगर सांड़नी का पता न लगा। उधर और सवारियां भी तमाशाइयों को ले-लेकर चली गईं। तब आज़ाद ने भठियारिन से कहा–अब तो पांव-पांव चलने की ठहरेगी।

भठियारिन–न साहब, मुझसे पांव-पांव न चला जाएगा।

चंडूबाज–देखिए, कहीं कोई सवारी मिले, तो ले आइए। यह बेचारी पांव-पांव कहां तक चलेगी?

आज़ाद–तो तुम्हीं क्यों नहीं लपक जाते?

भठियारिन (अलारक्खी)–ऐ हां, और क्या? चढ़ने को तो सबसे पहले तुम्हीं दौड़ोगे। तुम्हें बातचीत करने की भी तमीज नहीं।

आज़ाद–सवारी न मिलेगी, ठंडे-ठंडे घर की राह लो, बातचीत करते-करते चले चलेंगे।

दूसरे दिन आज़ाद ने सांड़नी के खोने की थाने में रपट कर दी। मगर जिस आदमी को भेजा था, उसने आकर कहा–हुजूर, थानेदार ने रपट नहीं लिखी और आपको बुलाया है।

आज़ाद–कौन, थानेदार? हमसे थानेदार से क्या वास्ता? उनसे कहो कि आपको खुद मियां आज़ाद ने याद किया है, अभी हाजिर हों।

अलारक्खी–ले, बस बैठ रहो। बहुत उजड्डपना अच्छा नहीं होता। वाह, कहने लगे, हम न जायेंगे। बड़े वह बने हैं। आखिर सांड़नी की रपट लिखवाई है कि नहीं? फिर अब दौड़े-धूपोगे नहीं, तो बनेगी क्योंकर? और वहां तक जाते क्या चूड़िया टूटती हैं, या पांव की मेंहदी गिर जाएगी?

आज़ाद–भई, हमसे थानेदार से एक दिन चख चल गई थी। ऐसा न हो, वह कोतवाली के चबूतरे पर बैठकर जोम में आ जाएं तो फिर मैं ले ही पड़ूंगा। इतना समझ लेना, मैं आधी बात सुनने का रवादार नहीं। सांड़नी मिले या जहन्नुम में जाय, इसकी परवाह नहीं, मगर कोई एंड़ा-बेंड़ा फिकरा सुनाया और मैंने कुर्सी के नीचे पटका। क्यों सुनें, चोर नहीं कि कोतवाल से डरूं, जुवाड़ी नहीं कि प्यादे की सूरत देखते ही जान निकले, बदमाश नहीं कि मुंह छिपाऊं, मरियल नहीं कि दो बातें सह जाऊं। कोई बोला और मैंने तलवार निकाली, फिर वह नहीं या मैं नहीं।

अलारक्खी–अरे, वह बेचारा तो एक हंसमुख आदमी है। लड़ाई क्यों होने लगी।

आज़ाद–खैर, तुम्हारी खुशी है, तो चलता हूं। मगर चलो तुम भी साथ, रास्ते

में दो घड़ी दिल्लगी ही होगी।

आखिर मियां आज़ाद और अलारक्खी दोनों थाने चले। एक कांस्टेबल भी साथ था। राह में एक आदमी अकड़ता हुआ जा रहा था। आज़ाद उसका अकड़ना देखकर आग हो गए। करीब जाकर एक धक्का जो दिया, तो उसने पचास लुढ़कनियां खाईं। थोड़ी दूर और चले थे कि एक आदमी चादर बिछाए, उस पर जड़ी-बूटी फैलाए बैठा गप उड़ा रहा था। इस बूटी से अस्सी बरस का बूढ़ा जवान हो जाए, इस जड़ी को पानी में घिसकर एक तोला पिए, तो शेर का पंजा फेर दे। आज़ाद उसकी तरफ झुक पड़े—कहो भाई, खिलाड़ी, यह क्या स्वांग रचा है? आज कितने अक्ल के अंधे, गांठ के पूरे जाल में फंसे? यह कहकर एक ठोकर जो मारी, तो सारी बूटियां, पत्तियां, जड़ें एक में मिल गईं। और आगे, तो गुल-गपाड़े की आवाज आई। एक हलवाई ग्राहक से तकरार कर रहा था।

हलवाई—खाली भजिया नाहीं बिकत है हमरी दूकान पर, कस-कस देई भला।

ग्राहक—अबे, मैं कहता हूं, कहीं एक गुद्दा न दूं।

आज़ाद—गुद्दा तो पीछे दीजिएगा। मैं एक गुद्दा कहीं आपकी गुद्दी पर न जमाऊं।

ग्राहक—आप कौन हैं बोलने वाले?

आज़ाद—उस बेचारे हलवाई को तुम क्यों ललकारते हो?

अलारक्खी—ऐ है, मियां, तुम कोई खुदाई फौजदार हो? किसी के फटे में तुम कौन हो पांव डालने वाले?

कांस्टेबल—भइया, हो बड़े लड़ाका, बस काव कहो।

यहां से चले, तो थाने आ पहुंचे।

कांस्टेबिल—हुजूर, ले आया, वह खड़े हैं।

थानेदार—अख्खाह ! अलारक्खी भी हैं। मैं तो चाल ही से समझ गया था। कुछ बैठने को दो इन्हें, कोई है? सच कहना, तुम्हारी चाल से कैसे पहचान लिया?

आज़ाद—अपने-अपनों को सभी पहचान लेते हैं।

थानेदार—यह कौन बोला? कौन है भई?

अलारक्खी—ऐ, बस चलो, देख लिया। मुंह देखे की मुहब्बत है। घर की थानेदारी और अब तक मुई सांड़नी न मिली। तुमसे तो बड़ी-बड़ी उम्मीदें थीं।

थानेदार—(आज़ाद से) कहो जी, वह सांड़नी तुम्हारी है न?

आज़ाद—'तुम' का जवाब यहां नहीं देते; 'आप' कहिए, मैं कोई चरकटा हूं।

भठियारिन—हाय मेरे अल्लाह, मैं क्या करूं? यह तो जहां जाते हैं, दंगा मचाते हैं।

थानेदार—क्या कुछ इनसे सांठ-गांठ है? सच कहना, तुम्हें कसम है अपने शेख सद्दू की।

अलारक्खी—लो, तुम्हें मालूम ही नहीं। अच्छी थानेदारी करते हो। मैं तो इनके घर पड़ गई हूं न।

थानेदार—तो यह कहिए, लाओ भाई, सांड़नी कांजी-हाउस से निकलवाओ?

सांड़नी आ मौजूद हुई। मियां आज़ाद सवार हुए। भठियारिन भी पीछे बैठी।

आज़ाद—आज तुम कई आदमियों के सामने हमें अपना मियां बना चुकी हो।

मुकर न जाना।

अलारक्खी–जरा चोंच संभाले हुए; कहीं सांड़नी पर से ढकेल न दूं।

अलारक्खी को यकीन हो गया कि आज़ाद मुझ पर रीछ गये। अब निकाह हुआ ही चाहता है। यों ही बहुत नखरे किया करती थी, अब और भी नखरे बघारने लगी। नौ का अमल हो गया था। चारपाई पर धूप फैली हुई थी, मगर मक्कर किए पड़ी हुई थी। इतने में चंडूबाज आए। आते ही पुकारा–मियां आज़ाद, मियां आज़ाद ! अलारक्खी ! यह आज क्या है यहां, खुदा ही खैर करे। दस का अमल और अभी तक खटिया ही पर पड़े हैं। कल रात को तमाशा भी तो न था। (दरख्त की तरफ देखकर और सांड़नी बंधी हुई पाकर) जभी खुश-खुश सो रहे हैं। अरे मियां, क्या सांप सूंघ गया? यह माजरा क्या है? हां, अल्लाह कहकर उठ तो बैठ मेरे शेख।

आज़ाद–(अंगड़ाई लेकर) अरे, क्या सुबह हो गई?

चंडूबाज–सुबह गई खेलने, आंख तो खोलो, अब कोई दम में बारह की तोप दगा चाहती है दन से। देखना, आज दिन भर सुस्ती न रहे तो कहना। वह तो जहां आदमी जरा देर करके उठा और हाथ-पांव टूटने लगे। अब एक काम करो, सिर से नहा डालो।

आज़ाद–क्या बक-बक लगाई है, सोने नहीं देता।

अलारक्खी चुपके-चुपके सब सुन रही है, मगर उठती नहीं। चंडूबाज उसकी चारपाई की पट्टी पर जा बैठे और बोले–ऐ उठ, अल्लाह की बंदी, ऐसा सोना भी क्या? यह कहकर आपने उसके बिखरे हुए बाल, जो जमीन पर लटक रहे थे, समेटकर चारपाई पर रखे। उधर मियां आज़ाद की आंख खुल गई।

चंडूबाज–(गुदगुदाकर) उठो, मेरी जान की कसम, वह हंसी आई, वह मुसकराई।

आज़ाद–ओ गुस्ताख, अलग हटकर बैठ, हमारे सामने यह बेअदबी !

चंडूबाज–उंह-उंह, बड़े वारिस अली खां बने बैठे। भई, आखिर तुमको भी तो जगांया था, अब उनको जगाना शुरू किया, तिनगते क्यों हो भला? मैं तो सीधा-सादा, भोला-भाला आदमी हूं।

आज़ाद–जी हां, हमें तो कंधा पकड़कर जगाया। यह मालूम हुआ कि चारपाई को जूड़ी चढ़ी या भूचाल आ गया और उन्हें गुदगुदा कर जगाते हो। क्यों बचा?

अलारक्खी जागी तो थी ही, खिलखिलाकर हंस पड़ी–ऐ हट मरदुए, यह पंलग पर आकर बैठ जाना क्या; मुझे कोई वह समझ रखा है?

चंडूबाज ने तैश खाकर कहा–वाह-वाह, पलंग की अच्छी कही। 'रहें झोंपड़ों में और ख्वाब देखें महलों का।' कभी बाबाजान ने भी पलंग देखा था।

अलारक्खी–मियां, मुझसे यह जली-कटी बातें न कीजिएगा जरी। वाह, हम झोंपड़ों ही में रहती हैं सही; अब तो एक भलेमानस के घर पड़ने वाले हैं। क्यों मियां आज़ाद, है न, देखो, मुकर न जाना।

आज़ाद–वाह, मुरकने की एक ही कही, 'नेकी और पूछ-पूछ?'

अलारक्खी–तिस पर भी तुम्हें शर्म नहीं आती कि इस उच्चके ने मुझे हाथ लगाया और तुम मुलुर-मुलर देखा किए। दूसरा होता, तो महनामथ मचा देता।

चंडूबाज–क्यों लड़वाती हो भला मुफ्त में? हमें क्या मालूम था कि यहां निकाह की तैयारियां हो रही हैं।

मियां आज़ाद हाथ-मुंह धोने बाहर गए, तो चंडूबाज और अलारक्खी में यों बातें होने लगीं।

चंडूबाज–यार, फांसा तो बड़े मुड्ढ को? अब जाने न देना? ऐसा न हो, निकल जाय। भई, कसम खुदा की, औरत क्या, विष की गांठ है तू।

अलारक्खी–मगर तुम भी कितने बेशहूर हो, उसके सामने आपने गुदगुदाना शुरू किया। अब वह खटके कि न खटके? तुम्हारी जो बात है, दुनिया से अनोखी। ताड़-सा कद बढ़ाया, मगर तमीज छू नहीं गई।

चंडूबाज–अब तुमसे झगड़े कौन? मैं किसी के दिल की बात थोड़े ही पढ़ा हूं। मगर भई, पक्की कर लो।

अलारक्खी–हां, पक्की-पोढ़ी होनी चाहिए। किसी अच्छे वकील से सलाह लो। वह कौन वकील हैं, जो कुम्मैत घोड़े की जोड़ी पर निकलते हैं–अजी वही, जो गबरू से हैं अभी।

चंडूबाज–वकीलों की न पूछो, तेरह सौ साठ हैं। किसी के पास ले चलेंगे।

अलारक्खी–नहीं, वाह, किसी बूढ़े वकील के यहां तो मैं न जाऊंगी। ऐसी जगह चलो, जो जवान हो, अच्छी सलाह दे।

चंडूबाज–अच्छा, आज इतवार है। शाम को मियां आज़ाद से कहना कि हमें अपने बहन के यहां जाना है। बस, हम फाटक के उस तरफ दबके खड़े रहेंगे, तुम आना। हम-तुम चलकर सब मामला भुगता देंगे।

अलारक्खी–अच्छा-अच्छा, तुम्हें खूब सूझी।

इतने में आज़ाद मुंह-हाथ धोकर आये, तो अलारक्खी ने कहा–हमें तो आज बहन के यहां न्योता है, कोई कच्ची दो घड़ी में आ जाऊंगी।

आज़ाद–जरा साली की सूरत हमें भी तो दिखा दो। ऐसा भी क्या पर्दा है, कहो तो हम भी साथ-साथ चले चलें।

अलारक्खी–वाह मियां, तुम तो उंगली पकड़ते ही पहुंचा पकड़ने लगे। यह कहकर अलारक्खी कोठरी में गई और सोलह सिंगार करके निकली, तो आज़ाद फड़क गए ! पटियां जमी हुईं, गोरी-गोरी नाक में काली-काली लौंग, प्यारे-प्यारे मुखड़े पर हल्का-सा घूंघट, हाथों में कड़े, पांव में छड़े, छम-छम करती चली।

चंडूबाज–उनके सामने चमक-चमक के बातें करना, यह नहीं कि झेंपने लगो।

अलारक्खी–मुझे और आप सिखाएं ! चमकना भी कुछ सिखाने से आता है। मेरी तो बोटी-बोटी यों ही फड़का करती है। तुम चलो तो, जो मेरी बातों और आंखों पर लट्टू न हो जाएं, तो अलारक्खी नहीं। कुछ ऐसा करूं कि वह भी निकाह पर रजामंद हो जायं, तो उनसे और आज़ाद से जरा जूती चले।

वकील साहब अपने बाग में तख्त पर बैठे दोस्तों के साथ बातें कर रहे थे कि खिदमतगार ने आकर कहा–हुजूर, एक औरत आई है। कहती है, कुछ कहना है।

दोस्त–कैसी औरत है भई? जवान है या खप्पट?

खिदमतगार–हुजूर, यह तो देखने से मालूम होगा, मुल है अभी जवान।

वकील–कहो, सुबह आए।

दोस्त–वाह-वाह, सुबह की एक ही कही। अजी बुलाओ भी। हमारे सिर की कसम, बुलाओ। कहो, टोपी तुम्हारे कदमों पर रख दें।

अलारक्खी छड़ों को छम-छम करती, अजब मस्तानी चाल से इठलाती, बोटी-बोटी फड़काती हुई आई। जिसने देखा, फड़क गया। सब रंगीले, बिगड़े दिल, बेफिक्रे जमा थे। एक साहब नवाब थे, दूसरे साहब मुंशी। आपस में मजाक होने लगा–

नवाब–बंदगी अर्ज है। खुदा की कसम, आप एक ही न्यारिए हैं।

मुंशी--भई, सूरत से तो भलेमानस मालूम होते थे, लेकिन एक ही रसिया निकले।

वकील–भई, अब हम कुछ न कहेंगे। और कहें क्या, छा गई। बी साहिबा, आप किसके पास आई हैं? कहां से आना हुआ?

अलारक्खी–अब ऐसी अजीरन हो गई।

वकील–नहीं-नहीं वाह बैठो, इधर तख्त पर आओ।

अलारक्खी–हां, बनाइए, हम तो सीधे-सादे हैं साहब।

नवाब–आप भोली हैं, बजा है !

वकील–औरत हैं या परिस्तान की परी !

नवाब–रीझे-रीझे, लो बी, अब पौ-बारह हैं।

अलारक्खी–हुजूर, हम ये पौ-बारह और तीन-काने तो जानते नहीं, हमारा मतलब निकल जाय, तो आप सब साहबों का मुंह मीठा कर देंगे।

दोस्त–आपकी बातें ही क्या कम मीठी हैं !

इतने में चंडूबाज भी आ पहुंचे।

चंडूबाज–हुजूर तो इन्हें जानते न होंगे, ये अलारक्खी हैं। इनका नाम दूर-दूर तक रौशन है।

वकील–इनका क्या इनके सारे खानदान का नाम रोशन है।

चंडूबाज–सराय में एक आज़ाद नामी जवान आकर ठहरे हैं। वह इनके ऊपर जान देते हैं और यह उन पर मरती हैं। कई आदमियों के सामने वह कबूल चुके हैं कि इनके साथ निकाह करेंगे। मगर आदमी हैं रंगीले, ऐसा न हो कि इनकार कर जाएं। बस, इनकी यही अर्ज है कि हुजूर कोई ऐसी तदबीर बताएं कि वह निकल न सकें।

अलारक्खी–मुझ गरीबनी से कोई छप्पन टके तो आपको मिलने नहीं हैं। रहा, इतना सबाब कीजिए, जिसमें यह शिकंजे में जकड़ जाए।

मुंशी–अगर निकाह ही करने का शौक है तो हम क्या बुरे हैं?

वकील–एक तुम्हीं क्या, यहां सब झंडे-तले के शोहदे छंटे हुए लुच्चे जमा हैं। जिसको यह पसंद करें, उसी के साथ निकाह हो जाय।

अलारक्खी–हुजूर लोग तो मुझसे दिल्लगी करते हैं।

वकील–अच्छा, कल आओ तो हम तुम्हें वह तरकीब बताएं कि तुम भी याद करो।

अलारक्खी–मगर बंदी ने कभी सरकार-दरबार की सूरत देखी नहीं। आप वकालत कीजिएगा?

मुंशी–हां जी हां, इसमें मिन्नत ही क्या है। मगर जानती हो, यह वकील तो रुपये के आशना हैं।

अलारक्खी–वाह, रुपया यहां अल्लाह का नाम है। हम हैं, चाहे बेच लो।

वकील–अच्छा, कल आओ, पहले देखो तो वह क्या कहते हैं।

अलारक्खी अब यहां से उठना चाहती थी, मगर उठे कैसे। कनखियों से चंडूबाज की तरफ देखा कि अब यहां से चलना चाहिए। वह भी उसका मतलब समझ गए, बोले–ऐ हुज़ूर, जरा घड़ी को तकलीफ दीजिएगा, देखिए तो, के बजे होंगे।

अलारक्खी–मैं अटकल से कहती हूं, कोई बारह बजे होंगे।

चंडूबाज–मैं भी कहूं, यह जम्हाइयों पर जम्हाइयां क्यों आ रही हैं। नशे का वक्त टल गया। हलवाइयों की दुकानें भी बढ़ गई होंगी। मलाई से भी गए। हुज़ूर, अब तो रुखसत कीजिए। अब तो चंडू की लौ लगी है, आज सबेरे-सबेरे आज़ाद की मनहूस सूरत देखी थी, जभी यही हाल हुआ।

अलारक्खी–ले खबरदार, अबकी कहा तो कहा, अब आज़ाद का नाम लिया, तो मुझसे बुरा कोई नहीं, जबान खींच लूंगी। नाहक किसी पर छुद्दा रखना अच्छा नहीं।

नवाब–अरे भई, कोई है, देखो, दूकानें बढ़ न गई हों, तो इनको यहीं चंडू पिलवा दें। जरा दो घड़ी और बी अलारक्खी से सोहबत गरमावें।

खिदमतगार–जाने को कहिए मैं जाऊं, मुल दूकानें कब की बढ़ गई हैं, बाजार भर में सन्नाटा पड़ा है; चिड़ियां चुनगुन तक सो रही हैं; अब कोई दम में चक्कियां चलेंगी।

अलारक्खी–ऐ, क्या आधी रात ढल गई? ले, अब तो बंदी रुखसत होती है।

मुंशी–वाह, इस अंधेरी रात में ठोकरें खाती कहां जाओगी !

अलारक्खी–नहीं हुज़ूर, अब आंखें बंद हुई जाती हैं। बस, अब रुखसत। हुज़ूर भूलिएगा नहीं। इतनी देर मजे से बातें की हैं। याद रखिएगा लौंड़ी को।

मुंशी–वह हंसते आए, यहां से हमें रुलाके चले;
न बैठे आप मगर दर्द-दिल उठा के चले।

वकील–दिखाके चांद-सा मुखड़ा छिपाया ज़ुल्फों में;
दुरंगी हमको जमाने की वह दिखाके चले।

नवाब–न था जो कूचे में अपना कयाम मद्दे-नजर;
तो मेरे बाद मेरी खाक भी उड़ाके चले।

खुदा के लिए इतना तो इकरार करती जाओ कि कल जरूर मिलेंगे, हाथ पर हाथ मारो।

अलारक्खी–आप लोगों ने क्या जादू कर दिया; अब रुखसत कीजिए।

वकील–यह भी कोई हंसी है कि रुखसत का लेके नाम;
सौ बार बैठे-बैठे हमें तुम रुला चले।

नवाब—आंखों-आंखों में ले गए वह दिल;
कानों-कानों हमें खबर न हुई।

अलारक्खी यहां से चली, तो राह में डींग मारने लगी—क्यों, सब-के-सब हमारी छवि पर लोट गए न? यहां तो फकीर की दुआ है कि जिस महफिल में बैठ जाऊं, वहीं कटाव होने लगे।

दोनों सराय में पहुंचे, तो देखा, आज़ाद जाग रहे हैं।

अलारक्खी—आज क्या है कि पलक तक न झपकी? यह किसकी याद में नींद उचाट है?

आज़ाद—हां, हां, जलाओ, दो-दो बजे तक हवा खाओ और हमसे आकर बातें बनाओ।

अलारक्खी—ऐ वाह, यह शक, तब तो मीजान मट चुकी। अब इनके मारे कोई भाई-बहन छोड़ दे। अब यह बताओ कि निकाह को कौन दिन ठीक करते हो? हम आज सबसे कह आए कि मियां आज़ाद के घर पड़ेंगे।

आज़ाद—क्या सचमुच तुम सबसे कह आईं? कहीं ऐसा करना भी नहीं। मैं दिल्लगी करता था। खुदा की कसम फकत दिल्लगी ही थी। मैं परदेशी आदमी, शादी-ब्याह करता फिरूंगा, और भठियारिन से? माना कि तुम हो परी, मगर फिर भठियारिन ही तो! चार दिन के लिए सराय में आकर टिके, तो यहां से यह बला ले जाएं !

अलारक्खी—ऐ, चोंच संभाल मरदुए ! और सुनिएगा, हम बला हैं, जिस पर सारे शहर की निगाह पड़ती हैं? दूसरा कहता, तो खून-खराब कर डालती। मगर करूं क्या, कौल हार चुकी हूं। बिरादरी भर में कलंक का टीका लगेगा। बला की अच्छी कही; तुम्हारे मुंह से मेरी एड़ी गोरी है, चाहे मिला लो।

आज़ाद—तो बी साहिबा, सुनिए, किसकी शादी और किसका ब्याह !

अलारक्खी—इन बातों से न निकलने पाइयेगा। कल ही तो मैं नालिश दागती हूं। इकरार करके मुकर जाना क्या खाला जी का घर है? मियां, मैं तो अपनी वाली पर आयी, तो बड़ा घर ही दिखाऊंगी। किसी और भरोसे न भूलना। मुझसे बुरा कोई नहीं।

आज़ाद—खुदा की पनाह, मैं अब तक समझता था कि मैं ही बड़ा घाघ हूं, मगर इस औरत ने मेरे भी कान काटे। भुला दी सारी चौकड़ी। खुदा, तड़का जल्दी से हो, तो मैं दूसरी कोठरी लूं।

अलारक्खी (नाक पर उंगली रखकर)—रो दे, रो दे ! इससे छोकरी ही हुए होते, तो किसी भलेमानस का घर बसता। भला मजाल पड़ी है कि कोई भठियारी टिकाये?

आज़ाद—तो सारे शहर भर में आपका राज है कुछ?

अलारक्खी—हई है, हई है, क्या हंसी-ठट्ठा है? कल-परसों तक आटे-दाल का भाव मालूम हो जायगा?

आज़ाद—चलिये, आपकी बला से !

चंडूबाज—बला-वला के भरोसे न रहियेगा। दो-चार दिन ताथेइया मचेगी।

आज़ाद–जरी आप चुपके बैठे रहियेगा। यह तो कामिनी हैं, लेकिन तुम्हारी मुफ्त में शामत आ जायगी।

चंडूबाज–मेरे मुंह न लगिएगा, इतना कहे देता हूं।

आज़ाद ने उठकर दो-चार चांटे जड़ दिये। अलारक्खी ने बीच-बचाव कर दिया।।

अल्लाह करे, हाथ टूटें, लेके गरीब को पीट डाला।

चंडूबाज–मेरी भी तो दो-एक पड़ गयी जी !

अलारक्खी–ऐ चुप भी रह, बोलने को मरता है।

इस तरह लड़-झगड़कर तीनों सोये।

बीस

दूसरे दिन सबेरे आज़ाद की आंख खुली, तो देखा, एक शाह जी उनके सिरहाने खड़े उनकी तरफ देख रहे हैं। शाह जी के साथ एक लड़का भी है, जो अलारक्खी को दुआएं दे रहा है। आज़ाद ने समझा, कोई फकीर है, झट उठकर उनको सलाम किया। फकीर ने मुस्करा कर कहा–हुजूर, मेरा इनाम हुआ। सच कहिएगा, ऐसे बहुरूपिए कम देखे होंगे। आज़ाद ने देखा गच्चा खा गए, अब बिना इनाम दिए गला न छूटेगा। बस, अलारक्खी की भड़कीली दुलाई उठाकर दे दी। बहुरूपिए ने दुलाई ली, झुककर सलाम किया और लंबा हुआ। लौंडे ने देखा कि मैं ही रहा जाता हूं। बढ़कर आज़ाद का दामन पकड़ा। हुजूर, हमें कुछ भी नहीं? आज़ाद ने जेब से एक रुपया निकालकर फेंक दिया। तब अलारक्खी चमककर आगे बढ़ीं और बोलीं–हमें?

आज़ाद–तुम्हारे लिए जान हाजिर है।

चंडूबाज–यह सब जबानी दाखिल है। बीवी को यह खबर ही नहीं कि दुलाई इनाम में चली गई। उलटे चली हैं मांगने। यह तो न हुआ कि चांदी के छड़े बनवा देते, या किसी दिन हमीं को दो-चार रुपये दे डालते। जाओ मियां, बस, तुमको भी देख लिया। गौं के यार हो, 'चमड़ी जाय दमड़ी न जाय।'

अलारक्खी–कहीं तेरे सिर गरमी तो नहीं चढ़ गई। जरा चंदिया के पट्टे कतरवा डाल। यह चमड़ी और दमड़ी का कौन मौका था। यह बताइए, अब निकाह की कब तैयारियां हैं?

आज़ाद–अभी निकाह की उम्मेद आपको है? वल्लाह, कितनी भोली हो !

अलारक्खी–तो क्या आप निकल भी जाएंगे? ऐ, मैं तो चढूंगी अदालत। कह-कहकर मुकर जाना क्या हंसी-ठट्ठा है !

आज़ाद–तो क्या नालिश कीजिएगा?

अलारक्खी–क्यों, क्या कोई शक भी है ! हम क्या किसी के दबैल हैं?

चंडूबाज–और गवाह को देख रखिए। दुलाई क्या झप से उठा दी। पराई दुलाई के आप कौन देनेवाले थे? अजी, मैं तो वह-वह सवाल-जवाब करूंगा कि आपके

होश उड़ जाएंगे।

आज़ाद–अच्छी बात है, यह शौक से नालिश करें आप गवाही दें। इन्हें तो क्या कहूं, पर तुम्हें समझूंगा।

चंडूबाज–मुझसे ऐसी बातें न कीजिएगा, नहीं मैं फिर गुद्दा ही दूंगा।

अलारक्खी–चल, हट, बड़ा आया वहां से गुद्दा देनेवाला। अभी मैं चिमट जाऊं, तो चीखने लगे, उस पर गुद्दा देंगे।

आज़ाद–तो फिर जाइए वकील के यहां, देर हो रही है।

अलारक्खी–तो क्या सचमुच तुम्हें इनकार है? मियां, आंखें खुल जाएंगी। जब सरकार का प्यादा आएगा, तो भागने को जगह न मिलेगी।

चंडूबाज–यह हैं शोहदे, यों नहीं मानने के। चलो चलें, दिन चढ़ता आता है। अभी कंघी-चोटी में तुम्हें घंटों लगेंगे और वह सरकारी-दरबारी आदमी ठहरे। मुवक्किल सुबह-शाम घेरे रहते हैं। जब देखो, बग्घियां, टमटम, फिटन, जोड़ी, गाड़ी, हाथी, घोड़े, पालकी, इक्के, तांगे, याबू, फिनस, म्याने दरवाजे पर मौजूद।

आज़ाद–क्या और किसी सवारी का नाम याद नहीं था? आज सरूर खूब गठे हैं।

चंडूबाज–अजी, यहां अलारक्खी की बदौलत रोज ही सरूर गठे रहते हैं।

अलारक्खी ने क़ोठरी में जाकर सिंगार किया और निखरकर चली, तो आज़ाद की निगाह पड़ ही गई। आंखें चार हुईं, तो दोनों मुस्करा दिए। चंडूबाज ने यह शेर पढ़ा–

उनको देखा तो यह हंस देते हैं;
आंख छिपती ही नहीं यारी की।

अलारक्खी एक हरी-हरी छतरी लगाए छम-छम करती चली। बिगड़े-दिल आवाजें कसते थे, पर वह किसी तरफ आंख उठाकर न देखती थी। चंडूबाज 'हटो, बचो' करते चले जाते थे। जरी हट जाना सामने से। ऐं, क्या छकड़ा आता है, क्यों हट जाए? अख्खाह, यह कहिए, आपकी सवारी आ रही है। लो साहब, हट गए। एक रसिया ने पीछा किया। ये लोग आगे-आगे चले जा रहे हैं और मियां रसिया पीछे-पीछे गजलें पढ़ते चले आ रहे हैं। चंडूबाज ने देखा कि यह अच्छे बिगड़े दिल मिले। साथ जो हुआ, तो पीछा ही नहीं छोड़ते। आप हैं कौन? या आगे बढ़िए या पीछे चलिए। किसी भलेमानस को सताते क्यों हैं? इस पर अलारक्खी ने चंडूबाज के कान में चुपके से कहा–यह भी तो शकल-सूरत से भलेमानस मालूम होते हैं। हमें इनसे कुछ कहना है।

चंडूबाज–आप तो वकील के पास चलती थीं, कहां इस सिड़ी-सौदई से सांठ-गांठ करने की सूझी? सच है, हसीनों के मिजाज का ठिकाना ही क्या। बोले–अजी साहब, जरी इधर गली में आइएगा, आपसे कुछ कहना है।

रसिया–वाह, 'नेकी और पूछ-पूछ !'

तीनों गली में गए, तो अलारक्खी ने कहा–कहीं तुम्हारे मकान भी है? यहां इस गलियारे में क्या कहूं, कोई आवे, कोई जाए। खड़े-खड़े बातें हुआ करती हैं?

चंडूबाज ने सोचा कि दूसरा गुल खिला चाहता है। पूछा–मियां, तुम्हारा मकान यहां से कितनी दूर है। जो काले कोसों हो, तो मैं लपककर बग्घी किराया कर लूं। इनसे इतनी दूर न चला जाएगा। इनको तो मारे नजाकत के छतरी ही का संभालना भारी है।

रसिया–नहीं साहब, दूर नहीं है। बस, कोई दस कदम आइए। रसिया ने छतरी ले ली और खिदमतगार की तरह छतरी लगाकर साथ-साथ चलने लगे। चंडूबाज ने देखा, अच्छा गावदी मिला। खुद भी छतरी के साए में रईस बने हुए चलने लगे। थोड़ी देर में रसिया के मकान पर आ पहुंचे।

रसिया–वह आए घर में हमारे, खुदा की कुदरत है,
कभी हम उनको, कभी अपने घर को देखते हैं।

यहां तो सच्चे आशिक हैं। जिसको दिल दिया, उसको दिया। जान जाय; माल जाय, इज्जत जाय; सब मंजूर है।

चंडूबाज–अच्छा, अब इनका मतलब सुनिए। यह बेचारी अभी अठारह-उन्नीस बरस की होंगी? अभी कल तो पैदा हुई हैं। अब सुनिए कि इनके मियां इनसे लड़-झगड़कर हैदराबाद भाग गए। वहां किसी को घर में डाल लिया। अब यह टकेली हैं, इनका जी घबराता है, इतने में एक शौकीन रईस सराय में उतरे, बड़े खूबसूरत कल्ले-छल्ले के जवान हैं।

अलारक्खी–मियां, आंखें तो ऐसी रसीली कि देखी न सुनी !

चंडूबाज–ऐ, तो मुझी को अब कहने दो। तुम तो बात काटे देती हो। हां, तो मैं कहता था कि इनकी-उनकी आंखें चार हुईं, तो इधर यह, उधर वह, दोनों घायल हो गए। पहले तो आंखों ही आंखों में बातें हुआ की। फिर खुल के साफ कह दिया कि हम तुमको ब्याहेंगे। फिर न जाने क्या समझकर मुकर गए। अब इनका इरादा है कि उन पर नालिश ठोंक दें।

रसिया–अजी, उनको भाड़ में झोंको। जो ब्याह ही करना है, तो हमसे निकाह पढ़वाओ। उनको धता बताओ।

अलारक्खी–सच कहूं, तुम मर्दों का हमें एतबार दमड़ी भर भी नहीं रहा। अब जी नहीं चाहता कि किसी से दिल मिलाएं।

रसिया–तुमने अभी हमें पहचाना ही नहीं। पांचों उंगलियां बराबर नहीं होतीं। हम शरीफजादे हैं !

अलारक्खी–लोग यही समझते हैं कि अलारक्खी बड़ी खुशनसीब है। मगर मियां, मैं किससे कहूं, दिल का हाल कोई क्या जाने।

चंडूबाज–यही देखिए, अर्जीदावा है।

रसिया–अरे, यह किस पागल ने लिखा है जी? ऐसा भला कहीं हो सकता है कि सरकार आज़ाद से तुम्हारा निकाह करवा ही दे? हां, इतना हो सकता है कि हरजा दिलवा दे। पर उसका सबूत भी जरा मुश्किल है।

अलारक्खी–अजी, होगा भी, मसौदा फाड़ डालो। आज़ाद से अब मतलब ही क्या रहा?

रसिया–हम बताएं, नालिश तो दाग दो। हरजा मिला तो हर्ज ही क्या है। बाकी ब्याह किसी के अख्तियार में नहीं। उधर तुमने मुकदमा जीता, इधर हम बरात लेकर आए।

अलारक्खी–तो चलो, तुम वकील के यहां तक चले चलो न।

रसिया–हां, हां, चलो।

तीनों आदमी वकील के यहां पहुंचे। लेकिन बड़ी देर तक बाहर ही टापा किए। यह रईस आए, वह अमीर आए। कभी कोई महाजन आया। बड़ी देर के बाद इनकी तलबी हुई; मगर वकील साहब जो देखते हैं, तो अलारक्खी का मुंह उतरा हुआ है; न वह चमक-दमक है, वह मुसकिराना और लजाना। पूछा–आखिर, माजरा क्या है?आज इतनी उदास क्यों हो? कहां वह छवि थी, कहां यह उदासी छाई हुई है? अलारक्खी ने इसका तो जवाब कुछ न दिया, फूट-फूटकर रोने लगी। आंसू का तार बंध गया। वकील सन्नाटे में। आज यह क्या माजरा है, इनकी आंखों में आंसू।

चंडूबाज–हुजूर, यह बड़ी पाकदामन हैं। जितनी ही चंचल हैं, उतनी ही समझदार। मेरा खुदा गवाह है, बुरी राह चलते आज तक नहीं देखा। इनकी पाकदामनी की कसम खानी चाहिए। अब यह फरमाइए, मुकदमा कैसे दायर किया जाय।

रसिया–जी हां, कोई अच्छी तदबीर बताइए। जबरदस्ती शादी तो हो नहीं सकती। अगर कुछ हरजाना ही मिल जाय, तो क्या बुरा? भागते भूत की लंगोटी ही सही। कुछ तो ले ही मरेंगी।

चंडूबाज–मरें इनके दुश्मन, आप भी कितनें फूहड़ हैं, वाह !

वकील–अच्छा, यह तो बताइए कि वह रईस कहां से आयेंगे, जो कहें कि हमसे और इनसे ब्याह की ठहरी थी?

रसिया–अब बता ही दूं। बंदा ही कहेगा कि हमसे महीनों से बातचीत है, आज़ाद बीच में कूद पड़े। वल्लाह, वह-वह जवाब दूं कि आप भी खुश हो जाएं।

वकील–वाह तो फिर क्या पूछना। हम आपको दो-एक चुटकुले बता देंगे, कि आप फर्राटे भरने लगिएगा। मगर दो-एक गवाह तो ठहरा लीजिए।

चंडूबाज–एक गवाह तो मैं ही बैठा हूं, फर्राटेबाज।

खैर तीनों आदमी कचहरी पहुंचे। जिस पेड़ के नीचे जाकर बैठे, वहां मेला-सा लग गया। कचहरी भर के आदमी टूटे पड़ते हैं। धक्कमधक्का हो रहा है। चंडूबाज वारिसअली खां बने बैठे हुक्का गुड़गुडा रहे हैं। जाओ भई, अपना काम करो, आखिर यहां क्या मेला है, क्या भेड़िया-धसान है।

एक–आप लाए ही ऐसी हैं।

दूसरा–अच्छा, हम खड़े हैं, आपका कुछ इजारा है? वाह, अच्छे आए।

तीसरा–भई, जरी हंस-बोल लें, आखिर मरना तो है ही।

जब एक बजा, तो बी अलारक्खी इठलाती हुई सवाल देने चलीं। चंडूबाज एक हाथ में हुक्का लिए हैं, दूसरे में छतरी। खिदमतगार बने चले जाते हैं। लोग इधर-उधर झुंड के झुंड खड़े हैं; पर कोई बताता नहीं कि अर्जी कहां दी जाती है। एक कहता है, दाहिने हाथ जाओ। दूसरा कहता है, नहीं-नहीं बाएं-बाएं। बड़ी मुश्किल

से इजलास तक पहुंचीं।

उधर आज़ाद पड़े-पड़े सोच रहे थे कि इस बेफिक्री का कहीं ठिकाना है? जो कहीं नवाब के आदमी छूटें तो चोर के चोर बनें और उल्लू के उल्लू बनाए जाएं। किसी को मुंह दिखाने लायक न रहें। आबरू पर पानी फिर गया। अभी देखिए, क्या हाल होता है—कहां-कहां ठोकरें खाते हैं।

इतने में सराय में लेना-लेना का गुल मचा। यह भी भड़-भड़ाकर कोठरी से बाहर निकले, तो देखते हैं कि सांड़नी ने रस्सी तोड़-ताड़कर फेंक दी है और सराय भर में उचकती फिरती है। पहले एक मुसाफिर के टट्टू की तरफ झुकी और उसको मारे पुस्तों के बौखला दिया। मुसाफिर बेचारा एक लग्गा लिए खटाखट हाथ साफ कर रहा है। फिर जो वहां से उछली, तो दो-तीन बैलों का कचूमर ही निकाल डाला। गाड़ीवान हांय-हांय कर रहा है, लेकिन इस हांय-हांय से भला ऊंट समझा किए हैं। यहां से झपटी, तो तीन-चार इक्कों के अंजर-पंजर अलग कर दिए। आज़ाद तोबड़ा दिखा रहे हैं और आवाजें कर रहे हैं। लोग तालियां बजा देते हैं, तो वह और भी बौखला जाती है। बारे बड़ी मुश्किल से नकेल उनके हाथ में आई। उसे बांधकर कहीं जाने की तैयारी कर रहे थे कि अलारक्खी और चंडूबाज अदालत के एक मजकूरी के साथ आ पहुंचे। आज़ाद ने मुंह फ़ेर लिया और मीठे सुरों में गाने लगे—

ठानी थी दिल में, अब न मिलेंगे किसी से हम;
पर क्या करें कि हो गए लाचार जी से हम।

मजकूरी—हुजूर, सम्मन आया है।

आज़ाद—तुम मेरे पास होते हो गोया;
जब कोई दूसरा नहीं होता।

मजकूरी—सम्मन आया है, गाने को तो दिन भर पड़ा है, लीजिए, दस्तखत तो कर दीजिए !

आज़ाद—धो दिया अश्के-नदामत को गुनाहों ने मेरे,
तर हुआ दामन, तो बारे पाक-दामन हो गया।

मजकूरी—अजी साहब, मेरी भी सुनिएगा?

आज़ाद—क्या हमसे कहते हो?

मजकूरी—और नहीं तो किससे कहते हैं?

आज़ाद—कैसा सम्मन, लाओ, जरा पढ़ें तो। लो, सचमुच ही नालिश जड़ दी।

मजकूरी ने सम्मन पर दस्तखत कराए और अलारक्खी को घेरा। आज तो हाथ गरमाओ, एक चेहराशाही लाओ। अलारक्खी ने कहा—ऐ, तो अभी सूत न कपास, इनाम-विनाम कैसा? मुकदमा जीत जाएं, तो देते अच्छा लगे।

मजकूरी—तुम जीती दाखिल हो बीवी। अच्छा, कल आऊंगा।

मियां आज़ाद के पेट में चूहे कूदने लगे कि यह तो बेढब हुई। मैंने जरा दिल-बहलाव के लिए दिल्लगी क्या कर दी कि यह मुसीबत गले आ पड़ी। अब तो खैरियत इसी में है कि यहां से मुंह छिपाकर भाग खड़े हों। बी अलारक्खी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगीं—अब तो चांदी है। जीते तो घी के चिराग जलायेंगे। एक ने कहा—यह

न कहा, मुंह मीठा कराएंगे; गुलगुले खिलाएंगे। दूसरी ने कहा—न खिलाएगी, तो निकाह के दिन ढोलक कौन बजाएगा? आज़ाद मौके की ताक में थे ही, अलारक्खी की आंख चूकते ही झट से काठी कसी और भागे। नाके तक तो उनको किसी ने न टोका, मगर जब नाके से कोई गोली भर के टप्पे पर बाहर निकल गए तो मियां चंडूबाज से आंखें चार हुईं। अरे ! गजब हो गया, अब धर लिए गए।

चंडूबाज—ऐ बड़े भाई, किधर की तैयारियां हैं? यह भाग जाना हंसी-ठट्ठा है नहीं कि है काठी कसी और चल खड़े हुए। आंखों में खाक झोंककर चले आए होंगे। ले बस, उतर पड़ो, आओ, जरी हुक्का तो पी लो।

आज़ाद—इस दम में हम न आयेंगे। ये फिकरे किसी गंवार को दीजिए। आप अपना हुक्का रहने दें। बस, अब हम खूब पी चुके। नाकों दम कर दिया बदमाशों ने ! चले थे मुकदमा दायर करने ! किस मजे से कहते हैं कि हुक्का पिए जाओ। ऐसे ही तो आप बड़े दोस्त हैं !

चंडूबाज—नेकी का जमाना ही नहीं है। हमने तो कहा, इतने दिन मुलाकात रही है, आओ भाई, कुछ खातिर कर दें, अब खुदा जाने, कब मिलना हो।

आज़ाद—खुदा न करे। तुम जैसे मनहूसों की सूरत ख्वाब में भी नजर आए।

चंडूबाज ने गुल मचाना शुरू किया—दौड़ो, चोर है, लेना, चोर, चोर ! मियां आज़ाद ने चंडूबाज पर सड़ाक से कोड़ा फटकारा और सांड़नी को एक एड़ लगाई। वह हवा हो गई। शहर से बाहर हुए, तो राह में दो मुसाफिरों को यों बातें करते सुना—

पहला—अरे मियां, आजकल लखनऊ में एक नया गुल खिला है ! किसी न्यारिये ने करोड़ों रुपये के जाली स्टाम्प बनाए और लंदन तक में जाकर कूड़े किए। सुना, काबुल में दो जालिए पकड़े गए, मुश्कें कस ली गईं और रेल में बंद करके यहां भेज दिए गए। अल्लाह जानता है, ऐसा जाल किया कि जौ भर भी फर्क मालूम हो, तो मूंछें मुड़वा लो! सुना है, कोई डेढ़-सौ, दो सौ बरस से बेचते थे और कुछ चोरी-छिपे नहीं, खुल्लमखुल्ला।

दूसरा—वाह, दुनिया में भी कैसे-कैसे कांइयां पड़े हैं। ऐसों के तो हाथ कटवा डालें।

पहला—वाह, वाह, क्या कदरदानी की है ! उन्होंने तो वह काम किया कि हाथ चूम लें, जागीरें दें।

आज़ाद को पहले मुसाफिर की गपोड़बाज पर हंसी आ गई। क्या झप से जालियों को काबुल तक पहुंचा दिया और हिन्दुस्तान के स्टाम्प लंदन में बिकवाए। पूछा—क्यों साहब, कितने जाली स्टाम्प बेचे?

मुसाफिरों ने समझा, यह कोई पुलिस अफसर है, टोह लेने चले हैं, ऐसा न हो कि हमको भी गिरफ्तार कर लें। बगलें झांकने लगे।

आज़ाद—आप अभी कहते न थे कि जालिए गिरफ्तार किए गए हैं?

मुसाफिर—कौन? हम? नहीं तो।

आज़ाद—जी, आप बातें नहीं कर रहे थे कि स्टाम्प किसी ने बनाए और डेढ़-दो सौ बरस से बेचते चले आए?

मुसाफिर–हुजूर, हमें तो कुछ मालूम नहीं।

आज़ाद–अभी बताओ सुअर, नहीं हम तुमको बड़ा घर दिखाएगा और बेड़ी पहनाएगा।

मियां आज़ाद तो उनकी चितवनों से ताड़ गए थे कि दोनों के दोनों चोंगा हैं, मारे डर के स्टाम्प का लफ्ज जबान पर नहीं लाते। जैसे ही उन्होंने डांट बताई, एक तो बगटुट पश्चिम की तरफ भागा और दूसरा खड़भड़ करता हुआ पूरब की तरफ। मियां आज़ाद आगे बढ़े। राह में देखा, कई मुसाफिर एक पेड़ के साए में बैठे बातें कर रहे हैं–

एक–कोई ऐसी तदबीर बताइए कि लू न लगे। आजाकल के दिन बड़े बुरे हैं।

दूसरा–इसकी तरकीब यह है कि प्याज की गट्ठी पास रखे। या दो-चार कच्चे आम तोड़ लो, आमों को पहले भून लो, जब पिलपिले हों, तो गूदा निकाल कर छिलका फेंक दो और जरा सी शकर पानी में घोल कर पी जाओ।

पहला–कहीं ऐसा गजब भी न करना ! पानी में तो बरफ डालनी ही न चाहिए। पानी का गिलास बरफ में रख दो, जब खूब ठंडा हो जाए, तब पियो। बरफ का पानी नुक़सान करता है।

दूसरा–वाह, लाखों आदमी पीते हैं।

पहला–अजी, लाखों आदमी झक मारते हैं। लाखों चोरियां भी तो करते हैं, फिर इससे मतलब? हमने लाखों आदमियों को देखा है कि गढ़ों और तालाबों का पानी सफर में पीते हैं। आप पीजिएगा? हजारों आदमी धूप में चलकर खड़े-खड़े तीन-चार लोटे पानी पी जाते हैं। मगर यह कोई अच्छी बात थोड़े ही है।

और आगे बढ़े, तो एक भड्डुरी आ निकला। वह आज़ाद को पहचानता था। देखते ही बोला–तुम्हारी नवाब साहब के यहां बड़ी तलाश है जी। तुम गायब कहां हो गए थे ऊंट लेकर? अब मैं जाकर कहूंगा कि मैंने प्रश्न देखा, तो निकला, आज़ाद पांच कोस के अंदर ही अंदर हैं। जब तुम लुपदेनी पहुंच जाओगे, तो फिर हमारी चढ़ती कला होगी। तुमको भी आधोआध बांट देंगे। मगर भंडा न फोड़ना। चढ़ बाजी है।

आज़ाद–वल्लाह, क्या सूझी है। मंजूर है।

भड्डुरी ने पोथी संभाल अपनी राह ली और नवाब के यहां घर धमके।

खोजी–अजी, जाओ भी, तुम्हारी एक बात भी ठीक न निकली।

नवाब–बरसों हमारा नमक तुमने खाया है, बरसों। एक-दो दिन नहीं बरसों। अब इस वक्त कुछ परशान-वरशान भी देखोगे, या बातें ही बनाओगे? हमको तो मुसलमान भाई तुम्हारी वजह से काफिर कहने लगे और तुम कोई अच्छा-सा हुक्म नहीं लगाते।

भड्डुरी–वह हुक्म लगाऊं कि पट ही न पड़े।

खोजी–अज, डींगिए हो खासे। कहीं किसी रोज मैं करौली न भोंक दूं। सिवा बे-पर की उड़ाने के, बात सीखी ही नहीं। भले आदमी, साल भर में एक दफे तो सच बोला करो।

झम्मन–वाह, सच बोलते, तो कसाई के कुत्ते की तरह फूल न जाते।

नवाब–यह क्या वाहियात बात?

भड्डुरी–हुजूर, हमसे-इनसे हंसी होती है। यह हमें कहते हैं, हम इन्हें। अब आप कोई फूल मन में लें।

नवाब–ये ढकोसले हमको अच्छे नहीं मालूम होते। हमें साफ-साफ बता दो कि मियां आज़ाद कब तक आयेंगे?

भड्डुरी ने उंगलियों पर कुछ गिन-गिना कर कहा–पानी के पास हैं।

झम्मन–वाह उस्ताद ! पानी के पास एक ही कही। लड़की न लड़का, दोनों तरह अपनी ही जीत।

भड्डुरी–यहां से कोई तीन कोस के अंदर हैं।

दुन्नी–हुजूर, यह बड़ा फैलिया है। आप पूछते हैं; आज़ाद कब आयेंगे। यह कहता है, तीन कोस के अंदर ही अंदर हैं। सिवा झूठ, सिवा झूठ।

भड्डुरी–अच्छा, जाकर देख लो। जो नाके के पास आज़ाद आते न मिलें, तो नाक कटा डालूं, पोथी जला दूं। कोई दिल्लगी है?

नवाब–चाबुक-सवार को बुला कर हुक्म दो कि अभी सरपट जाय और देखे, मियां आज़ाद आते हैं या नहीं। आते हों, तो इस भड्डुरी का आज घर भर दूं। बस, आज से इसका कलमा पढ़ने लगूं।

चाबुक-सवार ने बांका मुड़ासा बांधा और सुरंग घोड़ी पर चढ़ चला। मगर पचास ही कदम गया होगा कि घोड़ी भड़की और तेजी में दूसरे नाके की राह ली। चाबुक सवार बहुत अकड़े बैठे हुए थे; मगर रोक न सके, धम से मुंह के बल नीचे आ रहे। खोजी ने नवाब साहब से कहा–हुजूर, घोड़ी ने नाजिरअली को दे पटका, और क्या जाने किस तरफ निकल गई।

नवाब–चलो, खैर समझा जाएगा। तुम टांघन कसवाओ और दौड़ जाओ।

खोजी–हुजूर, मैं तो बूढ़ा हो गया और रही-सही सकत अफीम ने ले ली। टांघन है बला का शरीर। कहीं फेंक-फाक दे, हाथ-पांव टूटें, तो दीन-दुनिया दोनों से जाऊं। आज़ाद खुद भी गए और हम सबको भी बला में डाल गए।

इधर चाबुक-सवार ने पटकनी खाई उधर लौंडों ने तालियां बजाई। मगर शह-सवार ने गर्द झाड़ी, एक दूसरा कुम्मैत घोड़ा कसा और कड़कड़ा दिया। हवा से बातें करते जा रहे हैं। बगिया में पहुंचे, तो देखा, सांड़नी की काकरेजी झूल झलक रही है और ऊंटनी गरदन झुकाए चौतरफा मटक रही है। जाकर आज़ाद के गले से लिपट गए।

आज़ाद–कहिए, नवाब के यहां तो खैरियत है?

सवार–जी हां, खैर-सल्लाह के ढेर हैं। मगर आपकी राह देखते-देखते आंखें पथरा गईं। ओ मियां, कुछ और भी सुना? उस बटेर की कब्र बनाई गई है। सामने जो बेल-बूटों से सजा हुआ मकबरा दिखाई देता है, वह उसी का है।

आज़ाद–यह कहिए, यार लोगों ने कब्र भी बनवा दी ! वल्लाह, क्या-क्या फिकरेबाज हैं।

सवार–बस, तुम्हारी ही कसर थी। कहो, हमने सुना, खूब गुलछर्रे उड़ाए। चलो,

पर अब नवाब ने याद किया है।

आज़ाद—ऐं, उन्हें हमारे आने की कहां से खबर हो गई?

सवार—अजी, अब यह सारी दास्तान राह में सुना देंगे।

आज़ाद—अच्छा, तो पहले आप हमारा खत नवाब के पास ले जाएं। फिर हम शान के साथ चलेंगे।

यह कहकर आज़ाद ने खत लिया—

'आज कलम की बांछें खिली जाती हैं, क्योंकि मियां सफशिकन की सवारी आती है हुजूर के नाम की कसम, इधर पाताल तक और उधर सातवें आसमान तक हो आया, तब जाके खोज पाया। शाह जी साहब रोज ढाढ़े मार-मार कर रोते हैं। कल मैंने बड़ी खुशामद की और आपकी याद दिलाई, तो ठंडी आह खींचकर रह गए। बड़ी-बड़ी दलीलें छांटते थे। पहले फरमाया—दरों बज़्म रह नेस्त बेगाना रा, मैंने छूटते ही जवाब दिया—कि परवानगी दाद परवाना रा।'

'खिल-खिलाकर हंस पड़े, पीठ ठोंकी और फरमाया—शाबाश बेटे, नवाब साहब की सोहबत में तुम बहुत बर्क हो गए। पूरे दो हफ्ते तक मुझसे रोज बहस रही। आखिर मैंने कहा—आप चलिए, नहीं मैं जहर खाकर मर जाऊंगा। मुझे समझाया कि जिंदगी बड़ी न्यामत है। खैर, तुम्हारी खातिर से चलता हूं। लेकिन एक शर्त यह है कि जब मैं वहां पहुंचूं, तो नवाब के सामने खोजी पर बीस जूते पड़ें। मैंने कौल दिया, तब कहीं आए।'

सवार यह खत लेकर हवा की तरह उड़ता हुआ नवाब साहब के यहां पहुंचा।

नवाब—कहो, बेटा कि बेटी? जल्दी बोलो। यहां पेट में चूहे कूद रहे हैं

सवार—हुजूर, गुलाम ने राह में दम लिया हो, तो जरमाना दूं।

खोजी—कितने बेतुके हो मियां! 'कहें खेत की, सुने खलिहान की।' भला अपनी कारगुजारी जताने का यह कौन मौका है? मारे मशीखत के दुबले हुए जाते हैं!

सवार ने आज़ाद का खत दिया। मुंशी जी पढ़ने के लिए बुलाए गए खोजी घबराए कि आज़ाद ने यह कब की कसर ली। बोले—हुजूर, यह मियां आज़ाद की शरारत है। शाह साहब ने यह शर्त कभी न की होगी। बंदे से तो कभी गुस्ताखी नहीं हुई।

नवाब—खैर, आने तो दो। क्यों भाई मीर साहब, रम्माल ने तो बयान किया था कि सफशिकन के दुश्मन जन्नत में दाखिल हुए। यह मियां आज़ाद को कहां से मिल गए?

मीर साहब—हुजूर, खुदा का भेद कौन जान सकता है?

भड्डुरी—मेरा प्रश्न कैसा ठीक निकला जो है सो, मानो निशाने पर तीर खट से बैठ गया।

इतने में अंदर छोटी बेगम को खबर हुई। बोलीं—इनके जैसा पोंगा आदमी खुदाई भर में न होगा। जरी-सा बटेर और पाजियों ने उसका मकबरा बनवा दिया। रोज कहां तक बकूं।

लौंडी—बीबी, बुरा मानो या भला, तुम्हें वह राहें ही नहीं मालूम कि मियां

काबू में आ जाएं।

बेगम-मेरी जूती की नौक को क्या गरज पड़ी है कि उनके बीच में बोले। मैं तो आप ही डरा करती हूं कि कोई मुझी पर तूफान न बांध दे !

उधर नवाब ने हुक्म दिया कि सफशिकन की सवारी धूम से निकले। इतना इशारा पाना था कि खोजी और मीर साहब लगे जुलूस का इंतजाम करने। छोटी बेगम कोठे पर खड़ी-खड़ी ये तैयारियां देख रही थीं और दिल में हंस रही थीं। उस वक्त कोई खोजी को देखता, दिमाग नहीं मिलते थे। इसको डांट, उसको डपट, किसी पर धौल जमाई, किसी के चांटा लगाया; इसको पकड़ लाओ, उसको मारो। कभी मसालची को गालियां दीं, कभी पंशाखेवाले पर बिगड़ पड़े। आगे-आगे निशान का हाथी था। हरी-हरी झूल पड़ी हुई। मस्तक में सेंदुर से गुल-बूटे बने हुए। इसके बाद हिन्दोस्तानी बाजा कक्कड़-झययम ! इसके पीछे फूलों के तख्त-चमेली खिला ही चाहती है, कलियां चिटकने ही को हैं। चंडूबाजों के तख्त ने तो कमाल कर दिया। दो-चार पीनक में हैं, दस-पांच ऊंघे पड़े हुए। कोई चंडूबाजाना ठाट से पौंड़ा छील रहा है। एक गंड़ेरी चूस रहा है। शिकार का वह समां बांधा कि वाह जी वाह ! एक शिकारी बंदूक छतियाए, घुटना टेके, आंख दबाए निशाना लगा रहा है। बस, दांय की आवाज आया ही चाहती है। हिरन चौकड़ियां भरते जाते हैं। इसके बाद अंग्रेजी बाजा। इसके बाद घोड़ों की कतार-कुम्मैत, कुछ सुरंग, नुकरा, सब्जा, अरबी, तुर्की, वैलर छम-छम करते जा रहे हैं। घोड़े दुलहिन बने हुए थे। इसके बाद फिर अरगन बाजा; फिर तामदान, पालकी, नालकी; सुखपाल। इसके बाद परियों के तख्त एक से एक बढ़कर। सबके पीछे रोशनचौकी वाले थे। रोशनी का इंतजाम भी चौकस था। पंशाखे और लालटनें झक-झक कर रही थीं। इस ठाट से जुलूस निकला। सारा शहर यह बरात देखने को फटा पड़ता था। लोग चक्कर में थे कि अच्छी बरात है, दूल्हे का पता ही नहीं। बरात क्या, गोरख-धंधा है।

जब जुलूस बगिया में पहुंचा तो आज़ाद हाथी पर सवार होकर सफशिकन को काबुक में बिठाए हुए चले।

खोजी-मसल मशहूर है-'सौ बरस के बाद घूरे के भी दिन बहुरते हैं।' हमारे दिन आज बहुरे कि आप आए और शाह जी को लाए। नवाब के यहां सन्नाटा पड़ा हुआ था। सफशिकन के गम में सब पर मुर्दनी छाई हुई थी। बस, लोग यही कहते थे कि आज़ाद सांड़नी लेकर लंबे हुए। एक मैं ही तुम्हारी हिमायत किया करता था।

मीर साहब-जी हां, हम भी आप ही की तरफ से लड़ते थे, हम और यह, दोनों।

आज़ाद-भई, कुछ न पूछो। खुदा जाने, किन-किन जंगलों की खाक छानी, तब कहीं यह मिले।

खोजी-यहां लोग गप उड़ा रहे थे। किसी ने कहा-भांड़ों के यहां नौकरी कर ली। कोई तूफान बांधता था कि किसी भठियारी के घर पड़ गए। मगर मैं यही कहे जाता था कि वह शरीफ आदमी हैं। इतनी बेहयाई कभी न करेंगे।

खोजी और मीर साहब, दोनों आज़ाद को मिलाना चाहते थे, मगर वह एक

ही उस्ताद ! समझ गए कि अब नवाब के यहां हमारी भी तूती बोलेगी, तभी ये सब हमारी खुशामद कर रहे हैं। बोले—अजी रात जाती है या आती है? अब देर क्यों कर रहे हो? पंशाखे चढ़ाओ। घोड़े चलाओ। जब जुलूस तैयार हुआ, तो आज़ाद एक हाथी पर जा डटे। बटेर की काबुक को आगे रख लिया। खोजी और मीर साहब को पीछे बिठाया और जुलूस चला। चौक में तो पहले ही से हुल्लड़ था कि नवाबवाला बटेर बड़ी शान से आ रहा है लाखों आदमी चौक में तमाशा देखने आ डटे हुए थे, छतें फटी पड़ती थीं। बाजे की आवाज जो कानों में पड़ी; तो तमाशाई लोग उमड़ पड़े। निशान का हाथी झंडे का फुरेरा उड़ाता सामने आया। लेकिन ज्यों ही चौक में पहुंचा, वैसे ही दीवानी के दो मजकूरियों ने डांट कर कहा—हाथी रोक ले। आज़ाद के नाम वारंट आया है।

लोगों के होश उड़ गए। फीलबान ने जो देखा कि सरकारी आदमी लाल-लाल पगिया बांधे, काली-काली वरदी डाटे, खाकी पतलून पहने, चपरास लटकाए हाथी रोके खड़े हैं, तो सिटपिटा गया और हाथी को जिधर उन्होंने कहा उधर ही फेर दिया। जुलूस में हुल्लड़ मच गया। कोई तख्त लिए भागा जाता है, कोई झंडे लिए दबका फिरता है। घोड़े थान पर पहुंचे। तामदान और पालकियों को छोड़कर कहार अड्डे पर हो रहे। बाजे वाले गलियों मे घुस गए।

आज़ाद और खोजी मजकूरियों के साथ चले, तो शहर के बाहर जा पहुंचे। एकाएक हाथी जो गरजा, तो खोजी और मीर साहब पीनक में चौंक पड़े।

खोजी—ऐं, पंशाखे चढ़ाओ, पंशाखे ! अबे, यह क्या अंधेर मचा रखा है ! जरी यों ही आंख झपक गई, तो सारी की-कराई मिहनत खाक में मिला दी। अब मैं उतर कर कोड़े फटकारूंगा। तब मानेंगे। लातों के आदमी कही बातों से मानते हैं।

मीर साहब—हैं, हैं ! ओ फीलवान ! यह हाथी क्या आतशबाजी से भड़कता है? बढ़ा ले चलो। मील-मील, धत्-धत्। अरे, भई खोजी, यह किस मैदान में आ निकले? आखिर यह माजरा क्या है भाई?

खोजी—पंशाखे चढ़ाओ, पंशाखे। और इन बाजे वालों को क्या सांप सूंघ गया। जरा जोर-जोर से छेड़े जाओ। अब तो बिहाग का वक्त है, बिहाग का।

मीर साहब—अजी, आंखें तो खोलिए, रोशनी का चिराग गुल हो गया। मुसीबत में आ फंसे। आप वही बेवक्त की शहनाई बजा रहे हैं। इस जंगल में आपको बिहाग की धुन समाई है।

खोजी—पंशाखे चढ़ाओ, पंशाखे। नहीं, मैं कच्चा पैसा तो दूंगा नहीं। झप से चढ़ाना तो पंशाखे। शाबाश है बेटा !

मीर साहब तो जले-भुने बैठे ही थे; खोजी ने जब कई बार पंशाखों की रट लगाई तो वह झल्ला उठे। खोजी को हाथी पर से नीचे ढकेल ही तो दिया। अरा-रा-रा धम। कौन गिरा? जरी टोह तो लेना, कौन गिरा?

आज़ाद—तुम गिरे, तुम। आप ही तो लुढ़के हैं, टोह क्या लें?

खोजी—अरे, मैं ! यह तो कहिए, हड्डी-पसली बच गई? यारो, जरी देखना तो, हमारा सिर बचा या नहीं?

मजकूरी–बचा है, बचा। नाहीं फूट। पहिरि लिहिन सुथना, और चले फारसी छांटे। ई बोझ उठाव।

खोजी–हांय-हांय कोई मजदूर समझा है। शरीफ और पाजी को नहीं पहचानता? ले, अब उतारता है बोझ, या नाले में फेंक दूं। ओ गीदी ! लाना तो मेरी करौली। क्या मैं गधा हूं?

मीर साहब–गधे नहीं, तो और हो कौन?

मजकूरी–तैं को हस रे? अरे तैं को हस? उतर हाथी पर से। उतरत है कि हम आवन फिर, तैं अस न मनि है।

मीर साहब–कहता किससे है? कुछ बेधा तो नहीं है? कुछ नाविर हैं, हम, लो आए।

मजकूरी–अच्छा, तो यह बोझ उठा। थरिया-लोटिया रख मूड़े पर और अगुवा।

मीर साहब ने नीचे उतरकर देखा तो सरकारी प्यादा वरदी डाटे खड़ा है। लगे थर-थर कांपने। चुपके से बोझ उठाया और मचल-मचल कर चलने लगे। दोनों मजकूरी हाथी पर जा बैठे। खोजी और मीर साहब, दोनों लदे-फंदे गिरते-पड़ते जाने लगे।

खोजी–वाह री किस्मत। क्यों जी मीर साहब, हम तो खुदा की याद में थे, तुमको क्या हुआ था?

मीर साहब–जहां आप थे, वहीं मैं भी था। यह सारी शरारत आज़ाद की है।

आज़ाद–जरी चोंच सम्हाले हुए, नहीं मैं उतरता हूं।

चलते-चलते तड़का हो गया। खोजी बोले–लो भाई, हमारा तो भोर ही हो गया। अब जो बोझ उठाकर ले चले, उसकी सत्तर पुश्त पर लानत। यह कहकर बोझ फेंक दिया। जब जरा दिन चढ़ा, तो गोमती के किनारे पहुंचे। एक मजकूरी ने कहा–ओ फीलबान, हाथी रोक दे, नहाए लेई।

फीलबान–अरे, तो नहा लेना, कैसे गंवरदल हो?

आज़ाद–कहो खोजी, नहाओगे?

खोजी–यों ही न गला घोंट डालो।

नदी के पार पहुंचे तो चंडूबाज की सूरत नजर पड़ी।

चंडूबाज–बड़े भाई, सलाम। कहो खैर सल्लाह? आंखें तुमको ढूंढ़ती थीं, देखने को तरस गए। अब कहो, क्या इरादे हैं? अलारक्खी ने यह खत दिया है, पढ़कर चुपके से जवाब लिख दो।

आजाद ने खत खोला और पढ़ा–

'क्यों जी, इसी मुंह से कहते थे कि तुमसे ब्याह करूंगा? तुम तो चकमा देकर सिधारे और यहां दिल कराहा करता है। नहा-धोकर कुरानशरीफ पर हाथ धरो कि ब्याह का वादा नहीं किया था? क्यों नाहक इंसाफ का गला कुंद छूरी से रेतते हो? इस खत का जवाब लिखना, नहीं मैं अपनी जान दे दूंगी।'

आज़ाद ने जवाब लिखा–

'सुनो बीबी, हम कोई उठाईगीरे नहीं हैं। हम ठहरे शरीफ, तुम हो भठियारी। भला, फिर हमसे क्योंकर बने। अब उस खयाल को दिन से निकाल दो। तुम्हारे कारण

मजकूरियों की कैद में हूं। तुम्हें मुंह न लगाता, तो इतना जलील क्यों होता?'

चंडूबाज तो खत लेकर रवाना हुए, उधर का किस्सा सुनिए। नवाब झूम-झूम कर बगीचे में टहल रहे थे, आंखें फाड़-फाड़कर देखते थे कि जुलूस अब आया, और अब आया। एकाएक चोबदार ने आकर कहा—खुदाबंद, लुट गए ! लुट गए ! वह देखो साहब तुम्हारे, लुट गए।

नवाब—अरे कुछ मुंह से कहेगा भी, क्या गजब हो गया?

चोबदार—खुदाबंद, बरात को उठाईगीरों ने लूट लिया।

नवाब—बरात? बरात किसकी? कहीं शाह जी की सवारी से तो मतलब नहीं है? उफ्, हाथों के तोते उड़ गए।

चोबदार—वह देखो साहब तुम्हारे, बरात चली आ रही थी । तमाशाई इतने जमा थे कि छतें फटी पड़ती थीं। देखो साहब तुम्हारे, जैसे बादशाह की सवारी हो। मुदा जैसे ही चौक में पहुंचे कि देखो साहब तुम्हारे, दो चपरासियों ने हाथी को फेर दिया। बस साहब तुम्हारे, सारी बरात तितर-बितर हो गई। कहां तो बाजे बज रहे थे, कहां साहब तुम्हारे, सन्नाटा छा गया।

नवाब—भला शाह जी कहां है?

चोबदार—हुजूर, शाह जी को लिए फिरते हैं। यहां देखो साहब तुम्हारे—

नवाब—कोई है, इधर आना, इसके कल्ले पर खड़े हो, जितनी बार इसके मुंह से 'वह देखो साहब तुम्हारे' निकले, उतने जूते इस पर पड़ें। गधा एक बात कहता है, तो तीन सौ साठ दफे, 'ओ देखो साहब तुम्हारे।'

चाबुक-सवार—हुजूर, इस वक्त गुस्से का मौका नहीं, कोई ऐसा फिक्र कीजिए कि शाह जी तो छूट आएं।

नवाब—ऐं, क्या वह भी गिरफ्तार हो गए?

सवार—जी, आज़ाद, खोजी, हाथी, सब-के-सब पकड़ लिए गए?

नवाब—तो यह कहिए, बेड़े का बेड़ा गया है। हमें यह क्या मालूम था भला, नहीं तो एक गारद साथ कर देते। आखिर, कुछ मालूम भी हुआ कि यह धर-पकड़ कैसी थी? सच तो यों है कि इस वक्त मेरे हाथ-पांव फूल गए। रुपये हमसे लो, और दौड़-धूप तुम लोग करो।

मुसाहबों की बन आई। अब क्या पूछना है। आपस में हंड़िया पकने लगी। वल्लाह, ऐसा मौका फिर तो हाथ आएगा नहीं। जो कुछ लेना हो, ले लो, और उम्र-भर चैन करो। इस वक्त यह बौखलाया हुआ है। जो कुछ कहोगे, बेधड़क दे निकलेगा। लेकिन, एक काम करो, दस-पांच आदमी मिल-जुलकर बातें बनाओ। एक आदमी के किए कुछ न होगा। कहीं भड़क गया, तो गजब ही हो जाएगा। खुदा करे रोज इसी तरह वारंट जारी रहे। मगर इतना याद रखिएगा कि कहीं अंदर खबर हुई, तो बेगम साहिबा छछूंदर की तरह नाचेंगी। फिर करते-धरते कुछ न बन पड़ेगा।

मुबारककदम दरवाजे के पास खड़ी सब सुन रही थी। लपककर गई और छोटी बेगम को बुला लाई। जरी जल्दी-जल्दी कदम उठाइए, ये सब जाने क्या वाही-तबाही बक रहे हैं। मुंह झुलस दे पकड़ के। बेगम साहिबा दबे पांव गईं, तो सुनकर मारे

गुस्से के लाल हो गई और नवाब को अंदर बुलाया।

मुबारकक़दम–ये हुजूर के मुसाहब, अल्लाह जानता है, एक ही अड़ीमार हैं, जिनके काटे का मंतर ही नहीं। जो है, वह झूठों का सरदार। मगर हुजूर उनको क्या जाने क्या समझते हैं। पछुआ हवा चलती, तो ठंडा पानी पीते, अब दिन भर शोरे का झला पानी मिलता है पीने को, और खुदा ने न्यामत खाने को दी। फिर उन्हें दूर की न सूझे, तो किसे सूझे।

बेगम–ऐसे ही झूठे खुशामदियों ने तो लखनऊ का सत्यानाश कर दिया।

नवाब–यह आज क्या है, क्या?

बेगम–है क्या? तुम्हारे मुसाहब मुंह पर तो तुम्हारी झूठी तारीफें करते हैं और पीठ पीछे तुम्हें गालियां सुनाते हैं। इन सबको दुत्कार क्यों नहीं देते?

इधर तो ये बातें हो रही थीं, उधर मजकूरियों ने आज़ाद को एक बाग में उतारा।

खोजी–मियां फीलबान, जरी जीना लगा देना।

फीलबान–अब आपके लिए जीना बनवाऊं, ऐसे तो खूबसूरत भी नहीं हैं आप?

मीर साहब–जीना क्या ढूंढ़ते हो, हाथी पर से कूदना कौन-सी बड़ी बात है।

यह कहकर मीर साहब बहुत ही अकड़कर दुम की तरफ से कूदे, तो सिर नीचे और पांव ऊपर। रोक-रोक, हत्त तेरे फीलबान की। सच है, गाड़ीबान, शुतुरबान, कोचबान जितने बान हैं, सब शरीर। लाख बचे, मगर औंधे हो गए। हमारा कल्ला ही जानता है। खट से बोला। वह तो कहिए, मैं ही ऐसा बेहया हूं कि बातें करता हूं, दूसरा तो पानी न मांगता।

खोजी खिलखिलाकर हंस पड़े। अब कहिए, हमने जो जीना मांगा, तो हमें बनाने लगे।

मीर साहब–मियां, उतरते हो कि दूं धक्का।

खोजी बेचारे जान पर खेल कर जैसे ही उतरने को थे कि हाथी उठ खड़ा हुआ। या अली, या अली, बचाइयो, खुदा, मैं बड़ा गनहगार हूं।

इतना कह चुके थे कि अररर-धम, जमीन पर आकर ढेर हो गए।

मीर साहब ने कहा–शाबाश मेरे पट्ठे, ले झपाके से उठ तो जा।

खोजी–यहां हड्डी-पसली का पता नहीं, आप फरमाते हैं, उठ तो जा ! कितने बेदर्द हो !

दो आदमी वहीं बैठे कुछ इधर-उधर की बातें कर रहे थे। खोजी और मीर साहब तो लकड़ियां खोजने लगे कि और नहीं तो सुलफा ही उड़े और आज़ाद इन दोनों अजनबियों की बातें सुनने लगे–

एक–भई, आखिर मुंह फुलाए क्यों बैठे हो? क्या मुहर्रम के दिनों में पैदा हुए थे?

दूसरा–हां यार, क्यों न कहोगे। यहां जान पर बनी है, आप मुहर्रम लिए फिरते हैं। हमने बी अलारक्खी से कई रुपये महीने भर के वादे पर लिए थे। उसको दो साल होने आए। अब वह कहती है, या हमारे रुपये दो, या हमारे मुकदमे में गवाह हो जाओ। नहीं तो हम दाग देंगे और बड़ा घर दिखायेंगे। वहां चक्की पीसनी होगी।

सोचते हैं, गवाही दें, तो किस बिरते पर। मियां आज़ाद की तो सूरत ही नहीं देखी और न दें, तो वह नालिश जड़े देती हैं। बस, यही ठान ली है कि आज शाम को झप से चल खड़े हों। रेल को खुदा सलामत रखे कि भागूं तो पता भी न मिले।

दूसरा–अरे मियां, वह तरकीब बताऊं, जिसमें 'सांप मरे न लाठी टूटे।' तुम मियां आज़ाद से मिल जाओ; उधर अलारक्खी से भी मिले रहो। गवाही में गोल-मोल बातें कहो और मूंछों पर ताव देते हुए अदालत से आओ। बचा, तुम हो किस भरोसे पर। चार-चार गंड़े में तुमको गवाह मिलते हैं, जो तड़ से झूठा कुरान या झूठी गंगा उठा लें। हमको कोई दो ही रुपये दे, कुरान उठवा ले। जो चाहे कहवा ले। फिर वाही हो, खासे दस मिलते हैं, दस ! तुम्हें झूठ-सच से मतलब? सच वही है, जिसमें कुछ हाथ लगे। भई, यह तो कलजुग है। इसमें सच बोलना हराम है। और जो कुत्ते ने काटा हो, तो सच ही बोलिए।

पहला–हजरत सुनिए, सच फिर सच है, और झूठ फिर झूठ। इतना याद रखिएगा।

दूसरा–अबे जा, लाया वहां से झूठ फिर झूठ है। अरे नादान, इस जमाने में झूठ ही सच है। एक जरा-सा झूठ बोलने में दस चेहरेशाही आए-गए होते हैं। जरा जबान हिला दी, और दस रुपये हजम। दस रुपये कुछ थोड़े नहीं होते। हमें किसी से तुम दो गंडे ही दिलवा दो। देखो, हलफ उठा लेते हैं या नहीं।

आज़ाद–क्यों भई, और जो अपनी बात से फिर जाय, तो फिर कैसी हो? औरत की बात का एतबार क्या? बेहतर है कि अलारक्खी से स्टाम्प के कागज पर लिखवा लो।

पहला–वल्लाह, क्या सूझी है।

दूसरा–कैसा स्टाम्प जी? हम क्या जानें क्या चीज है, बातें कर रहे हैं, आप आए वहां से स्टाम्प पर लिखवा लो। क्या हम कोई चोर हैं !

दोनों मजकूरियों ने उपले जलाए और खाना पकाने लगे। आज़ाद ने देखा, भागने का अच्छा मौका है। दोनों की आंख बचाकर चल दिए, चट से स्टेशन पर जाकर टिकट ले लिया और एक दर्जे में जा बैठे। दो-तीन स्टेशनों के बाद रेल एक बड़े स्टेशन पर ठहरी। मियां आज़ाद ने असबाब को बग्घी पर लादा और चल खड़े हुए। खट से सराय में दाखिल। एक कोठरी में जा डटे और बिछौना बिछा, खूब, लहरा-लहरा कर गाने लगे–

बहशत अयां है खाक से मुझ खाकसार की,
भड़के हिरन भी सूंघ के मिट्टी मजार की।

एकाएक एक शाह साहब फालसई तहमत बांधे, शरबती का केसरिया कुरता पहने, मांग निकाले, आंखों में सुरमा लगाए, एक जवान, चंचल हसीन औरत के साथ आकर आज़ाद की चारपाई पर डट गए और बोले–बाबा, हमारा नाम कुदमी शाह है। हसीनों पर जान देना हमारा खास काम है। इस वक्त आपने जो यह शेर पढ़ा, तो तबियत फड़क गई। मगर बिना शराब के गाने का लुत्फ कहां? शौक हो, तो निकाल प्याला और बोतल, खूब रंग जमे और सरूर गठे।

आज़ाद–मैं तो तौबा कर चुका हूं।

शाह जी—बच्चा, तौबा कैसी? याद रख, तौबा तोड़ने के लिए और कसम खाने के लिए है।

यह कहकर शाह जी ने झोली से सौंफ की विलायती मीठी शराब निकाली और बोले—

सब्ज बोतल में लाल-लाल शराब,
खैर ईमान का खुदा हाफिज।
शाह जी मैकदे में बैठे हैं,
इस मुसलमान का खुदा हाफिज।

यह कहकर उस जवान औरत की तरफ देखकर शराब को प्याले में ढालने का इशारा किया। नाजनीन एक अदा से आकर आज़ाद की चारपाई पर डट गई और शराब का प्याला भरने लगी। भठियारी ने जो यह हाल देखा, तो बिजली की तरह चमकती हुई आई और कड़ककर बोली—ऐ वाह मियां, अठारह-अठारह संडों को लेकर खटिया पर बैठते हो, और जो पाटी खट से टूट जाए, तो किसके माथे? ऐसे मुसाफिर भी नहीं देखे। एक तो खुद ही दुबले-पतले हैं, दूसरे दस-दस को लेकर बैठते हैं। ले चारपाई खाली कीजिए, हम ऐसे किराए से बाज आए! आज़ाद की तो भठियारियों के नाम से रूह कापंती थी, चुपके से चारपाई खाली कर दी और जमीन पर दरी बिछवाकर आ बैठे। नाजनीन ने प्याला आज़ाद की तरफ बढ़ाया। पहले तो बहुत नहीं-नहीं करते रहे, लेकिन जब उसने कसमें खिला दीं, तो मजबूर होकर प्याला लिया और चढ़ा गए। दौर चलने लगा। वह भर-भर के जाम पिलाती जाती थी और आज़ाद के जिस्म में नई जान आती जाती थी। अब तो वह मजे में आकर खुल खेले, खूब पी। 'मुफ्त की शराब काजी को भी हलाल है।' यहां तक कि आंखें झपकने लगीं, जबान लड़खड़ाने लगी। बहकी-बहकी बातें करने लगे और आखिर नशे में चूर होकर धड़ से गिरे। शाह जी तो इस घात में आए ही थे, झपाक से कपड़े बांधे, जमी-जथा ली और चलता धंधा किया। औरत भी उनके साथ-साथ लंबी हुई। मियां आज़ाद रात भर बेहोश पड़े रहे। तड़के आंख खुली, तो हाल पतला। न वह शाह साहब हैं, न वह औरत, न दरी। जमीन पर पड़े लोट रहे हैं। प्यास के मारे गले में कांटे पड़े जाते हैं। उठे, तो लड़खड़ाकर गिर पड़े, फिर उठे, फिर मुंह के बल गिरे। बारे बड़ी मुश्किल से खड़े हुए, पानी लाकर मुंह-हाथ धोए और खूब पेट भरकर पानी पिया, तो दिल को तसकीन हुई। एकाएक चारपाई पर निगाह पड़ी। देखा सिरहाने एक खत रखा हुआ है। खोलकर पढ़ा—

'क्यों बचा! और पियो। अब पियोगे, तो जियोगे भी नहीं। कितने बड़े पियक्कड़ हो, बोतल की बोतल मुंह से लगा ली। अब अपनी किस्मत को रोओ। धत् तेरे की ! क्या मजे से माशूक के पास बैठे हुए गट-गट उड़ा रहे थे। गठरी घूम गई न! भई, हमारी खातिर से एक जाम तो लो। कहो, तो उसी के हाथ भेजूं। ले, अब हम जताए देते हैं, खबरदार, मुसाफिर का एतबार न करना, और सफर में तो किसी पर भरोसा रखना ही नहीं। देखो, आखिर हम ले-दे कर चल दिए। उम्र भर सफर किया मगर आदमी न बने।'

यह खत पढ़कर मियां आज़ाद पर सैकड़ों घड़े पड़ गए। बहुत कुछ गुल-गपाड़ा मचाया, सराय भर को सिर पर उठाया, भठियारे को दो-चार चपतें लगाईं, मगर माल न मिला, न मिला। लोगों ने सलाह दी कि जाओ, थाने पर रपट लिखाओ। गिरते-पड़ते थाने में पहुंचे, तो क्या देखते हैं, थानेदार साहब बैठे हांक रहे हैं—मैंने फलां गांव में अठारह डाकुओं से मुकाबला किया और चौंतीस बरस की चोरी बरामद की। सिपाही हां-में-हां मिलाते और भर्रे देते जाते थे कि आप ऐसे और आप वैसे, और आप डबल पैसे। इतने में आज़ाद पहुंचे। सलाम-बंदगी हुई।

थानेदार—कहिए, मिजाज कैसे हैं?

आज़ाद—मिजाज फिर पूछ लेना, अब गठरी दिलवाओ उस्ताद जी !

थानेदार—उस्ताद जी किस भकुए का नाम है, और गठरी कैसी? आप भंग तो नहीं पी गए?

आज़ाद—जरा जबान संभाल कर बातें कीजिएगा। मैं टेढ़ा आदमी हूं।

थानेदार—अच्छे-अच्छे टेढ़ों को तो हमने सीधा बनाया, आप हैं किस खेत की मूली? कोई है? वह हुलिया तो मिलाओ, हम तो इन्हें देखते ही पहचान गए।

ज्ञानसिंह ने हुलिया जो मिलाया, तो बाल का भी फर्क नहीं। पकड़ लिए गए, हवालात में हो गए। मगर एक ही छटे हुए आदमी थे। कानिस्टिबल को वह भर्रे दिए, बातों-बातों में दोस्ती पैदा कर ली कि वह भी उनकी दम भरने लगा। अब उसे फिक्र हुई कि इनको हवालात से टहला दे। आखिर रात को पहरेदार की आंख बचाकर हवालात का दरवाजा खोल दिया। आज़ाद चुपके से खिसक गए। दाएं-बाएं देखते दबे-पांव जाने लगे। जरा आहट हुई, और इनके कान खड़े हुए। बारे खुदा-खुदा करके रास्ता कटा। सराय में पहुंचे और भठियारी को किराया देकर स्टेशन पर जा पहुंचे।

इक्कीस

मियां आज़ाद रेल पर बैठे नाविल पढ़ रहे थे कि एक साहब ने पूछा—जनाब, दो-एक दम लगाइए, तो पेचबान हाजिर है। वल्लाह, वह धुआंधार पिलाऊं कि दिल फड़क उठे। मगर याद रखिए, दो दम से ज्यादा की सनद नहीं। ऐसा न हो, आप भैंसिया-जोंक हो जायं।

आज़ाद ने पीछे फिरकर देखा, तो एक बिगड़े-दिल मजे से बैठे हुक्का पी रहे हैं। बोले, यह क्या अंधेर है भाई? आप रेल ही पर गुड़गुड़ाने लगे; और हुक्का भी नहीं पेचवान। जो कहीं आग लग जाय, तो?

बिगड़े दिल—और जो रेल ही टकरा जाय, तो? आसमान ही फट पड़े, तो? इस 'तो' का तो जवाब ही नहीं है। ले, पीजिएगा, या बातें बनाइएगा?

आज़ाद—जी, मुझे इसका शौक नहीं है।

यह कहकर फिर नाविल पढ़ने लगे। थोड़ी देर के बाद एक स्टेशन पर रेल ठहरी, तो खरबूजे और आम पटे हुए थे। खैंचियां-की-खैंचियां भरी रखी थीं। बोले-क्यों भई, स्टेशन है या आम की दूकान? या खरबूजे की खान? आमपुर है या खरबूजानगर?

एक मुसाफिर बोले-अजी हजरत, नजर न लगाइए ! अब की फसल तो खा लेने दीजिए। इसी पर तो जिंदगी का दार-मदार है। खेत में बेल बढ़ी और यहां कच्चे घड़े की चढ़ी। आज बाजार में आए और ईं जानिब बौराए। आम और खरबूजे पर उधार पर बैठे हैं। कपड़े बेच खायं, बरतन नखास में पटीत लाएं, बदन पर लत्ता न रहे, चूल्हे पर तबा न रहे, उधार लें, सुथना तक गिरवी रखें, बगड़ा करें, झगड़ा करें, मगर खरबूजे पर छुरी जरूर चले। तड़का हुआ, चाकू हाथ में लिया और खरबूजे की टोह में चला। बाजार है कि महक रहा है, खरीदार हैं कि टूटे पड़ते हैं। रसीली खटकिन जवानी की उमंग में अच्छे-अच्छों को डांट बताती है। मियां, अलग रहो, खैंची पर न गिरे पड़ो। बस, दूर ही से भाव-ताव करो। लेना एक न देना दो, मुफ्त का झंझट। ईं जानिब ने एक तराशा, दूसरा तराशा, तीसरा तराशा, खूब चखे। आंख चूकी, तो दो-चार फांकें मुंह में दबाईं और चलते-फिरते नजर आए। आदमी क्या, बंदर हो गए। उधर खरबूजे गए और आम की फसल आई, मुंहमांगी मुराद पाई। जिध ार देखिए, ढेर-के-ढेर चुने हैं। यहां तनक सवार हो गई। देखा और झप से उठाया; तराशा और खाया। माल-असबाब के कूड़े किए और बेगिनती लिए। खाने बैठे, तो दो दाढ़ी खा गए, चार दाढ़ी खा गए।

आज़ाद-यह दाढ़ी खाने के क्या माने?

मुसाफिर-अजी हजरत, आम इतने खाए कि गुठली और छिलके दाढ़ी तक पहुंचे।

मुसाफिर वह डींग हांक ही रहे थे कि रेल ठहरी और एक चपरासी ने आकर पूछा-फ़लां आदमी कहां है?

आज़ाद-इस कमरे में इस नाम का कोई आदमी नहीं है।

मुसाफिर ने चपरासी की सूरत देखी, तो चादर से मुंह लपेटकर खिड़की की दूसरी तरफ झांकने लगे। चपरासी दूसरे दर्जे में चला गया।

आज़ाद-उस्ताद, तुमने मुंह जो छिपाया, तो मुझे शक होता है कि कुछ दाल में काला जरूर है। भई, और किसी से न कहो, यारों से तो न छिपाओ।

मुसाफिर-मुंह क्यों छिपाऊं जनाब, क्या किसी का कर्ज खाया है, या माल मारा है, या कहीं खून करके आए हैं?

आज़ाद-आप बहुत तीख हूजिएगा, तो धरवा ही दूंगा। ले बस, कच्चा चिट्ठा कह सुनाओ, वरना मैं पुकारता हूं फिर।

मुसाफिर-अरे, नहीं-नहीं ऐसा गजब भी न करना। साफ-साफ बता दें? हमने अबकी फसल में खरबूजे और आम खूब छककर चखे, मगर टका क़सम को पास नहीं। पूछो, लाएं किसके घर से? यहां पहले तो कर्ज लिया, फिर एक दोस्त का मकान अपने नाम से पटील डाला। अब नालिश हुई है, सो हम भागे जाते हैं।

आज़ाद-ऐसे आम खाने पर लानत ! कैसे नादान हो?

मुसाफिर–देखिए, नादान-वादान न बनाइएगा। वरना बुरी ठहरेगी !

आज़ाद–अच्छा बुलाऊं चपरासी को?

मुसाफिर–जनाब, दस गालियां दे लीजिए, मगर जान तो छोड़ दीजिए।

इतने में एक मुसाफिर ने कई दर्जे फांदे, यह उचका, यह आया, यह झपटा और धम से मियां आज़ाद के पास हो रहा।

मुसाफिर–गरीबपरवर !

आज़ाद–किससे कहते हो? हम गरीबपरवर नहीं अमीरपरवर हैं; गरीबपरवर हमारे दुश्मन हों।

मुसाफिर–अच्छा साहब, आप अमीर के बाप-परवर, दादा-परवर सही। हमारा आपसे एक सवाल है।

आज़ाद–सवाल स्कूल के लड़कों से कीजिए, या वकालत के उम्मीदवारों से।

मुसाफिर–दाता, जरा सुनो तो।

आज़ाद–दाता भंडारी को कहते हैं। दाता कहीं और रहते होंगे।

मुसाफिर–एक रुपया दिलवाओ, तो हजार दुआएं दूं।

आज़ाद–दुआ के तो हम कायल ही नहीं।

मुसाफिर–तो फिर गालियां सुनाऊं?

आज़ाद–गालियां दो, तो बत्तीसी पेट में हो।

मुसाफिर–अरे गजब, लो स्टेशन करीब आ गया। अब बेइज्जत होंगे।

आज़ाद–यह क्यों?

मुसाफिर–क्यों क्या, टिकट पास नहीं, घर से दो रुपये लेकर चले थे, रास्ते में लंगड़े आम दिखाई दिए। राल टपक पड़ी। आव देखा न ताव, दो रुपये टेंट से निकाले और आम पर छुरी तेज की। अब गिरह में कौड़ी नहीं, 'पास न लत्ता, पान खाए अलबत्ता।'

आज़ाद–वाह रे पेटू ! भला यहां तक आए क्योंकर?

मुसाफिर–इसकी न पूछिए। यहां सैकड़ों ही अलसेटें याद हैं।

इतने में रेल स्टेशन पर आ पहुंची। टिकट-बाबू की काली-काली टोपी और सफेद चमकती हुई खोपड़ी नजर आई। टिकट ! टिकट निकालो। मियां आज़ाद तो टिकट देकर लंबे हुए, बाबू ने इनसे टिकट मांगा, तो लगे बगलें झांकने। वेल, तुम्हारा टिकट कहां?

मुसाफिर–बाबू जी, हम पर तो अब की साल टिकस-विकस नहीं बंधा।

बाबू–यू फूल ! तुम बेटिकट के चलता है उल्लू !

मुसाफिर–क्या आदमी भी उल्लू होते हैं? इधर तो देखने में नहीं आया, शायद आपके बंगाल में होता हो।

टिकट-बाबू ने कानिस्टिबिल को बुलाकर इनको हवालात भिजवाया। आम खाने का मजा मिला, मार और गालियां खाईं, सो घाटे में।

घटाटोप अंधेरा छाया है, काला मतवाला बादल झूम-झूम कर पूरब की तरफ से आया है। वह घनेरी घटा कि हाथ मारा न सूझे। अंधेरे ने कुछ ऐसी हवा बांधी

कि चांद का चिराग गुल हो गया। यह रात है कि सिपहकारों का दिल? हर एक आदमी जरीब टेकता चल रहा है, मगर कलेजा दहल रहा है कि कहीं ठोकर न खावं, कहीं मुंह के बल जमीन पर न लुढ़क जायं। मियां आज़ाद स्टेशन से चले, तो सराय का पता पूछने लगे। एकाएक किसी आदमी से सिर टकरा गया। वह बोला–अंधा हुआ है क्या? रास्ता बचा के चल, पतंग रखे हुए हैं, कहीं फट न जायं।

आज़ाद–ऐं, रास्ते में पतंग कैसे? अच्छी बेपर की उड़ाई।

पतंगबाज–भई वल्लाह, क्या-क्या बिगड़े-दिलों से पाला पड़ जाता है। हम तो नरमी से कहते हैं कि मियां जरी दबा कर जाओ, और आप तीखे हुए जाते हैं।

आज़ाद–अरे नादान, यहां हाथ-मारा सूझता ही नहीं, पतंग किस भकुए को सूझेंगे।

पतंगबाज–क्या रतौंधी आती है?

आज़ाद–क्या पतंग बेचने जा रहे हो?

पतंगबाज–अजी, पतंग बेचें हमारे दुश्मन। हम खुद घर के अमीर हैं। यहां से चार कोस पर एक कस्बा है, वहां के रईस हमारे लंगोटिए यार हैं ! उनसे हमने पतंगों का मैदान बदा था। हम अपने यारों के साथ बारहदरी के कोठे पर थे और वह अपने दीवानखाने की छत पर। कोई सात बजे से इधर भी कनकव्वे छपके, उधर भी बढ़े। खूब लमडोरे लड़े। पांच रुपये फी पेच बदा था। यार, एक पंतग खूब लड़ा। हमारा मांगदार बढ़ा था और उधर का गोल-दुपन्ना। दस-बारह मिनट दांव-घात के बाद पेच पड़ गए। पहले तो हमारे कन्ने नथ गए, हाथों के तोते उड़ गए; समझे, अब कटे और अब कटे; मगर वाह रे, उस्ताद, ऐसे कन्ने छुड़ाए कि वाह जी वाह। फिर पेच लड़ गए। पंसेरियों डोर पिला दी, कनकव्वा आसमान से जा लगा। जो कोई दम और ठहरता तो वहीं जल-भुनकर खाक हो जाता। उतने में हमने गोता देकर एक भवका जो दिया, तो वह काटा। अब कोई कहता है कि हत्थे पर से उखड़ गया, डोर उलझ गई थी। एक कनकव्वे से हमने कोई नौ-दस काटे। मगर उनकी तरफ कोई उस्ताद आ गया–उसने खींच के वह हाथ दिखाए कि खुदा की पनाह। हाथ ही टूटें मरदूद के ! छक्के छुड़ा दिए। कभी सड़-सड़ करता हुआ नीचे से खींच गया ! कभी ऊपर से पतंग पर छाप बैठा। आखिर मैंने हिसाब जो लगाया, तो पचास रुपये के पेटे में आ गया। मगर यहां टका पास नहीं। हमने भी एक माल तक लिया है, घर के सोने के कड़े किसी के हाथ पटीलेंगे, कोई दस तोले के होंगे, चुपके से उड़ा दूंगा, किसी को कानों-कान खबर भी न होगी।

आज़ाद–आपके वालिद क्या पेशा करते हैं?

पतंगबाज–जमींदार हैं। मगर मुझे जमींदारी से नफरत है। जमींदार की सूरत से नफरत है, इस पेशे के नाम से नफरत है। शरीफ आदमी और लट्ठ लिए हुए मेड़-मेड़ घूम रहे हैं। हमसे यह न होगा। हम कोई मजदूर तो हैं नहीं। यह गंवारों ही को मुबारक रहे।

आज़ाद–हुजूर ने तालीम कहां तक पाई है? आप तो लंदन के अजायबखाने में रखने लायक हैं।

पतंगबाज–यहीं के तहसीली स्कूल में कुछ दिन तक घास छीली है।

आज़ाद–क्या घसियारा बनने का शौक चर्राया था?

पतंगबाज–जनाब, कोई छह-सात बरस पढ़े, मगर गंडेदार पढ़ाई, एक दिन हाजिर तो दस दिन नागा। पहले दर्जे का इम्तिहान दिया, मगर लुढ़क गए। अब्बाजान ने कहा, अब हम तुम्हें नहीं पढ़ाएंगे। खैर, इस झंझट से छुट्टी पाई तो पेशकार साहब के लड़के से दोस्ती बढ़ाई। तब तक हम निरे जंगली ही थे। हद यह कि हुक्का पीना तक नहीं जानते थे। तो वजह क्या? अच्छी सोहबत में कभी बैठे ही न थे। छोटे मिर्जा बेचारे ने हमें हुक्का पीना सिखाया। फिर तो उनके साथ चंडू के छींटे उड़ने लगे। पहले आप मुझे देखते तो कहते, कब्र में एक पांव लटकाए बैठा है। बदन में गोश्त का नाम नहीं, हड्डी-हड्डी गिन लीजिए। जब से छोटे मिर्जा की सोहबत में ताड़ी पीने लगा, तब से जरा हरा हूं। पहले हम निरे गावदी ही थे। यह पतंग लड़ाना तो अब आया है। मगर अबकी पचास के पेटे में आ गए। छोटे मिर्जा से हमने तदबीर पूछी, तो वल्लाह, तड़ से बतलाया कि जब बहन या भावज या बीबी की आंख चूके, तो कोई सोने की अदद साफ उड़ा दो। भई, जिला-स्कूल में पढ़ता, तो ऐसी अच्छी सोहबत न मिलती।

आज़ाद–वल्लाह, आप तो खराद पर चढ़ गए, 'सब गुन पूरे, तुम्हें कौन कहे लंडूरे।'

पतंगबाज–आप यहां कहां ठहरेंगे? चलिए, इस वक्त गरीबखाने ही पर खाना खाइए, सराय में तो तकलीफ होगी, हां, जो कोई और बात हो, तो क्या मुजायका, (मुसकिराकर) सच कहना उस्ताद, कुछ लसरका है?

आज़ाद–मियां, यहां दिल ही नहीं है पास, मुहब्बत करेंगे क्या ! चलिए, आप ही के यहां मेहमान हों–यहां तो बेफिक्री के हाथ बिक गए हैं। मगर उस्ताद, इतना याद रहे कि बहुत तकलीफ न कीजिएगा।

पतंगबाज–वल्लाह, यह तो वही मसल हुई कि बस, एक दस सेर का पुलाव तो बनवाइएगा, मगर तकल्लुफ न कीजिएगा ! मानता हूं आपको।

आज़ाद और पतंगबाज इक्के पर बैठे। इक्का हवा से बातें करता चला, तो खट से मकान पर दाखिल। अंदर से बाहर तक खबर हो गई कि मंझले मियां आ गए। मियां आज़ाद और वह दोनों उतरे। इतने में एक लौंडी अंदर से आकर बोली–चलिए, बड़े साहब ने आपको याद किया है।

पतंगबाज–ऐ है, नाक में दम कर दिया, आते देर नहीं हुई और बुलाने लगे। चलो, आते हैं। आपके लिए हुक्का भर लाओ। हजरत, कहिए तो जरी वालिद से मिल आऊं? गाना-वाना सुनिए, तो बुलाऊं किसी को? इधर लौंडी अंदर पहुंची, तो बड़े मियां से बोली–उनके पास तो उनके कोई दोस्त मसनद-तकिया लगाए बैठे हैं।

मियां–उनके दोस्तों की न कहो। शहर भर के बदमाश, चोर-मक्कार, झूठों के सरदार उनके लंगोटिए यार हैं। भलेमानस से मिलते-जुलते तो उन्हें देखा ही नहीं।

लौंडी–नहीं मियां, शकल-सूरत से तो शरीफ-भलेमानुस मालूम होते हैं।

खैर, रात को आज़ाद और मंझले मियां ने मीठी नींद के मजे उठाए, सुबह को हवाली-मवाली जमा हुए।

एक—हुजूर, कल तो खूब-खूब पेंच लड़े, और हवा भी अच्छी थी।

पतंगबाज—पेंच क्या लड़े, पचास के माथे गई! खैर, इसका तो यहां गम नहीं, मगर किरकिरी बड़ी हुई।

दूसरा—वाह, हुजूर, किरकिरी की एक ही कही। कसम खुदा की, वह लमडोरा पेंच निकाला कि देखने वाले दंग रह गए। जमाना भर यही कहता था कि भई, पेंच क्या काटा, कमाल किया। कुछ इनाम दिलवाइए, खुदाबंद ! आपके कदमों की कसम, आज शहर भर में इस पेंच की धूम है। चालीस-पचास रुपये की भी कोई हकीकत है।

शाम के वक्त आज़ाद और मियां पतंगबाज बैठे गप-शप कर रहे थे कि एक मौलवी साहब लटपटी दस्तार खोपड़ी पर जमाए, कानी आंख को उसके नीचे-छिपाए; दूसरी में बरेली का सुरमा लगाए कमरे में आए। उन्होंने अलेकसलेम के बाद जेब से एक इश्तिहार निकालकर आज़ाद के हाथ में दिया। आज़ाद ने इश्तिहार पढ़ा, तो फड़क गए। एक मुशायरा होनेवाला था। दूर-दूर से शायर बुलाए गए थे। एक तरह का मिसरा था—

"हमसे उस शोख ने ऐयारी की।"

मौलवी साहब तो उलटे पांव लंबे हुए, यहां मुशायरे की तारीख जो देखते हैं, तो इकतीस फरवरी लिखी हुई है। हैरत हुई कि फरवरी का तो अट्ठाईस और कभी उनतीस ही दिन का महीना होता है, यह इकतीस फरवरी कौन-सी तारीख है। बारे मालूम हुआ कि इसी वक्त मुशायरा था। खैर, दोनों आदमी बड़े शौक से पता पूछते हुए गुलाबी बारहदरी में दाखिल हुए। वहां बड़ी रौनक थी। नई-नई वजा, नये-नये फैशन के लोग जमा हैं। किसी का दिमाग ही नहीं मिलता; जिसे देखो, तानाशाह बना बैठा है, दुनिया की बादशाहत को जूती की नोक पर मारता है। शायरी के शौकीन उमड़े चले आते हैं। कहीं तिल रखने की जगह नहीं। जब रात भीगी और चांदनी खूब निखरी, तो मुशायरा शुरू हुआ। शायरों ने चहकना शुरू किया। मजलिस के लोग एक-एक शेर पर इतना चीखे-चिल्लाए कि होंठ और गले सूखकर कांटा हो गए। ओहो हो-हो आहा, हा-हा वाह-वाह सुभान अल्लाह के दौंगरे बरस रहे थे। शायर ने पूरा शेर पढ़ा भी नहीं कि यार लोग ले उड़े ! वाह हजरत, क्यों न हो ! कसम खुदा की ! कलम तोड़ दिया ! वल्लाह, आज इस लखनऊ में आपका कोई सानी नहीं ! एक शायर ने यह गजल पढ़ी—

हमको देखा, तो वह हंस देते हैं;
आंख छिपती ही नहीं यारी की।

महफिल के लोगों ने पूरा शेर तो सुना नहीं, यारी को गाड़ी सुन लिया। गाड़ी की, वाह-वाह, क्या शेर फरमाया, गाड़ी की ! अब जिसे देखिए, गुल मचा रहा है—गाड़ी की, गाड़ी। मगर गुल-गपाड़े में सुनता कौन है। शायर बेचारा चीखता है कि हजरत, गाड़ी की नहीं, यारी की; पर यार लोग अपना ही राग अलापे जाते हैं। तब तो मियां आज़ाद ने झल्लाकर कहा—साहबो, अगाड़ी न पिछाड़ी, चौपहिया न पालकी-गाड़ी, खुदा के वास्ते पहले शेर तो सुन लो, फिर तारीफ के पुल बांधो। गाड़ी की नहीं, यारी

की। आंख छिपती ही नहीं यारी की।

दूसरे शायर ने यह शेर पढ़ा–

उम्मीद रोजे-वस्ल थीं किस बदनसीब को;
किस्मत उलट गई मेरे रोजे-सियाह की।

हाजिरीन–निगाह की, सुभान-अल्लाह। निगाह की, हजरत, यह आप ही का हिस्सा है।

शायर–निगाह नहीं, रोजे-सियाह। निगाह से तो यहां कुछ माने ही न निकलेंगे।

यह कहकर उन्होंने फिर उसी शेर को पढ़ा और सियाह के लफ्ज पर खूब जोर दिया कि कोई साहब फिर निगाह न कर उठें।

आधी रात तक हू-हक मचता रहा। कान-पड़ी आवाज न सुनाई देती थी। पड़ोसियों की नींद हराम हो गई। एक-एक शेर पढ़ने की चार-चार दफे फरमाइश हो रही और बीस मरतबा उठा-बैठी, सलाम पर सलाम और आदाब पर आदाब; अच्छी कवायद हुई। लाला खुशवक्तराय और मुंशी खुर्सेदराय तीन-तीन सौ शेरों की गजलें कह लाए थे, जिनका एक शेर भी दुरुस्त नहीं। एक बजे से पढ़ने बैठे, तो तीन बजा दिए। लोग कानों में उंगलियां दे रहे हैं, मगर वे किसी की नहीं सुनते।

वहां से मियां आज़ाद और उनके दोस्त घर आए। तड़का हो गया था। आज़ाद तो थोड़ी देर सोकर उठ गए, मगर मियां पतंगबाज ने दस बजे तक की खबर ली।

आज़ाद–आज तो आप बड़े सबेरे उठे। अभी तो दस ही बजे हैं। भई, बड़े सोनेवाले हो।

पतंगबाज–जनाब, तड़का तो मुशायरे ही में हो गया था। जब आदमी सुबह को सोएगा, तो दस बजे से पहले क्या उठेगा। और, सच तो यों है कि अभी और सोने को जी चाहता है। कुछ मुशायरे के झगड़े का भी हाल सुना? आप तो कोई चार बजे सो रहे थे। हमने सारी दास्तान सुनी। बड़ी चख-चल गई। मौलवी बदर और मुंशी फिशार में तो लकड़ी चलते-चलते रह गई। जो मियां रंगीन न हों, तो दोनों में जूती चल जाय।

आज़ाद–यह क्यों, किस बात पर?

पतंगबाज–कुछ नहीं, यों ही। मैं तो समझा, अब लकड़ी चली।

आज़ाद–तो मुशायरा क्या पाली थी? पूछिए, शायरी को लकड़ी और बांक से क्या वास्ता? कलम का जोर दिखाना चाहिए कि हाथ का। किसी तरह बदर और फिशार में मिलाप करा दीजिए।

पतंगबाज–ऐ तौबा। मिलाप, मिलाप हो चुका। बदर का यह हाल है कि बात की और गुस्सा आ गया। और मियां फिशार उनके भी चचा हैं। बात पीछे करते हैं, चांटा पहले ही जमाते हैं।

आज़ाद–आखिर बखेड़े का सबब क्या?

पतंगबाज–सिवा हसद के और क्या कहूं। हुआ यह कि फिशार ने पहले पढ़ा। इस पर मौलवी बदर बिगड़ खड़े हुए कि हमसे पहले इन्हें क्यों पढ़ने दिया गया। इनमें क्या बात है। हम भी तो उस्ताद के लड़के हैं। इस पर फिशार बोले–अभी

बच्चे हो, हिज्जे करना जानते नहीं। शायरी क्या जानो। कुछ दिन उस्ताद की जूतियां सीधी करो, तो आदमी बनो। इस पर लोगों ने दौड़कर बीच-बचाव कर दिया।

शाम के वक्त मियां आज़ाद ने कहा—भई, अब तो बैठे-बैठे जी घबराता है। चलिए, जरा चार-पांच कोस सैर तो कर आएं। पतंगबाज ने चार-पांच कोस का नाम सुना, तो घबराए। यह बेचारे महीन आदमी, आध-कोस भी चलना कठिन था, दस कदम चले और हांफने लगे। कहीं गए भी तो टांघन पर। भला दस मील कौन जाता? बोले—हजरत, मैं इस सैर से बाज आया। आपको तो डाक के हरकारों में नौकरी करनी चाहिए। मुझे क्या कुत्ते ने काटा है कि बेसबब पंचकोसी चक्कर लगाऊं और आदमी से ऊंट बन जाऊं? आप जाते हैं, तो जाइए, मगर जल्द आइएगा। सच कहते हैं, लंबा आदमी अक्ल का दुश्मन होता है। यहां गप उड़ाने का वक्त है, या जंगल में घूमने का?

एक मुसाहिब—आप बजा फरमाते हैं, भलेमानसों को कभी जंगलों की धुन समाई ही नहीं। और, हुजूर के यहां घोड़ा-बग्घी सब सवारियां मौजूद हैं। जूतियां चटखाते हुए आपके दुश्मन चलें।

आज़ाद—जनाब, यह नजाकत नहीं है, इसको तपेदिक कहते हैं। आप पांच कोस न चलिए, दो ही कोस चलिए, आध ही कोस चलिए।

पतंगबाज—नहीं जनाब, माफ फरमाइए।

आज़ाद लंबे-लंबे डग बढ़ाते पश्चिम की तरफ रवाना हुए।

बाईस

मियां आज़ाद के पांव में तो सनीचर था। दो दिन कहीं टिक जायं तो तलवे खुजलाने लगें। पतंगबाज के यहां चार-पांच दिन जो जम गये, तो तबीयत घबराने लगी। लखनऊ की याद आयी। सोचे, अब वहां सब मामला ठंडा हो गया होगा। बोरिया-बंधना उठाया और शिकरम-गाड़ी की तरफ चले। रेल पर बहुत चढ़ चुके थे, अब की शिकरम पर चढ़ने का शौक हुआ। पूछते-पूछते वहां पहुंचे। डेढ़ रुपये किराया तय हुआ, एक रुपया बयाना दिया। मालूम हुआ, सात बजे गाड़ी छूट जाएगी, आप साढ़े-छह बजे आ जाइए। आज़ाद ने असबाब तो वहां रखा, अभी तीन ही बजे थे, पतंगबाज के यहां आकर गप-शप करने लगे। बातों-बातों में पौने सात बज गए। शिकरम की याद आई, बचा-खुचा असबाब मजदूर के सिर पर लादकर लदे-फंदे घर से चल खड़े हुए। राह में लंबे-लंबे डग भरते, मजदूरों को ललकारते चले आते हैं कि तेज चलो, कदम जल्द उठाओ। जहां सन्नाटा देखा, वहां थाड़ी दूर दौड़ने भी लगे कि वक्त पर पहुंचे; ऐसा न हो कि गाड़ी छूट जाय। वहां ठीक सात बजे पहुंचे, तो सन्नाटा पड़ा हुआ। आदमी न आदमजाद। पुकारने लगे, अरे मियां चपरासी, मुंशी जी, अजी मुंशी जी ! क्या सांप सूंघ गया? बड़ी देर के बाद एक चपरासी निकला। कहिए, क्या

डाक कीजिएगा?

आज़ाद—और सुनिए। डाक कीजिएगा की एक ही कही। मियां, बयाने का रुपया भी दे चुके।

चपरासी—अच्छा, तो इस घास पर बिस्तर जमाइए, ठंडी-ठंडी हवा खाइए, या जरा बाजार की सैर कर आइए।

आज़ाद—ऐं, सैर कैसी? डाक छूटेगी आखिर किस वक्त?

चपरासी—क्या मालूम, देखिए, मुंशी जी से पूछूं।

आज़ाद ने मुंशी जी के पास जाकर कहा—अरे साहब, सात बजे बुलाया था, जिसके साढ़े सात हो गए ! अब और कब तक बैठा रहूं?

मुंशी जी—जनाब, आज तो आप ही आप हैं, और कोई मुसाफिर ही नहीं। एक आदमी के लिए चालान थोड़े छोड़ेंगे।

आज़ाद—कहीं इस भरोसे न रहिएगा ! बयाना दे चुका हूं।

मुंशी—अच्छा, तो ठहरिए।

आठ बज गए, नौ बज गए, दस बज गए, कोई ग्यारह बजे तीन मुसाफिर आए। तब जाकर शिकरम चली। कोई आध कोस तक तो दोनों घोड़े तेजी के साथ गए, फिर सुरंग बोल गया। यह गिरा, वह गिरा। कोचवान ने कोड़े जमाना शुरू किया, पर घोड़े ने भी ठान ली कि टलूंगा ही नहीं। कोचमैन, घसियारा, बारगीर, सब के सब ठोंक रहे थे, मगर वह खड़ा हांफता है। बारे बड़ी मुश्किल से फूंक-फूंक कर कदम रखता हुआ दूसरी चौकी पर आया।

दूसरी चौकी में एक टट्टू दुबला-पतला, दूसरा घोड़ा मरा हुआ-सा था; हड्डियां-हड्डियां गिन लीजिए। यह पहले ही से रंग लाये। कोचमैन ने खूब कोड़े जमाए, तब कहीं चले। मगर दस कदम चले थे कि फिर दम लिया। साईस ने आंखें बंद करके रस्सी फटकारनी शुरू की। फिर दस-बीस कदम आहिस्ता-आहिस्ता बढ़े, फिर ठहर गए। खुदा-खुदा करके तीसरी चौकी आई।

तीसरी चौकी में एक दुबला-पतला मुश्की रंग का घोड़ा और दूसरा नुकरा था। पहले जरा चीं-चप्पड़, फिर चले। एक-आध कोस गए थे कि कीचड़ मिली, फिर तो कयामत का सामना था। घोड़े थान की तरफ भागते थे, कोचमैन रास थामे टिकटिक करता जाता था, बारगीर पहियों पर जोर लगाते थे। मुसाफिरों को हुक्म हुआ कि उतर आइए; जरा हवा खाइए। बेचारे उतरे। आध कोस तक पैदल चले। घोड़े कदम-कदम पर मुंह मोड़ देते थे। वह चिल्ल-पों मची हुई थी कि खुदा की पनाह। आध कोस के बाद हुक्म हुआ कि अपना-अपना बोझ उठाओ, गाड़ी भारी है। चलिए साहब, सबने गठरियां संभालीं ! सिर पर असबाब लादे चले आते हैं। तीन घंटे में कहीं चौकी तय हुई, मुसाफिरों का दम टूट गया, कोचमैन और साईस के हाथ कोड़े मारते-मारते और पहियों पर जोर लगाते-लगाते बेदम हो गए।

चौथी चौकी की जोड़ी देखने में अच्छी थी। लोगों ने समझा था, तेज जायगी, मगर जमाली खरबूजों की तरह देखने ही भर की थी। कोचवान और बारगीरों ने लाख-लाख जोर लगाया, मगर उन्होंने जरा कान तक न हिलाए, कनौती तक न बदली।

बुत बने खड़े हैं, मैदान में अड़े हैं। कोई तो घास का मुट्ठा लाता है, कोई दूर से तोबड़ा दिखाता है, कोई पहिए पर जोर लगाता है, कोई ऊपर से कोड़े जमाता है। आखिर मुसाफिरों ने भी उतरकर जोर लगाया, मगर टांय-टांय फिस। आखिर घोड़ों के एवज बैल जोते गए।

पांचवीं चौकी में बाबा आदम के वक्त का एक घोड़ा आया। घोड़ा क्या, खच्चर था। आंखें मांग रहा था। मक्खियां भिन-भिन करती थीं। रात को भी मक्खियों ने इसका पीछा न छोड़ा।

आज़ाद-अरे भई, अब चलो न ! आखिर यहां क्या हो रहा है? रास्ता चलने ही से कटता है।

कोचमैन-ऐ लो साहब, घोड़े का तो बंदोबस्त कर लें। एक ही घोड़ा तो इस चौकी पर है।

आज़ाद-अजी, दूसरी तरफ भैंस जोत देना।

एक मुसाफिर-या हम एक सहल तदबीर बताए। मुसाफिरों से कहिए, उतर पड़ें, बोझ अपना-अपना सिर पर लादें और जोर लगाकर बग्घी को एक चौकी तक ढकेल ले जाएं।

इतने में एक भठियारा अपने टट्टू को टिक-टिक करता चला आता था। कोचवान ने पूछा-कहो भाई, भाड़ा करते हो? जो चाहे सो मांगो, देंगे। नकद दाम लो और बग्घी पर बैठ जाओ। एक चौकी तक तुम्हारे टट्टू को बग्घी में जोतेंगे।

भठियारा-वाह, अच्छे आए ! टटुआ कभी गाड़ी में जोता भी गया है? मुर्गी के बराबर टट्टू, और जोतने चले हैं शिकरम में। यों चाहे पीठ पर सवार हो लो, मुदा डाकगाड़ी में कैसे चल सकता है?

कोचमैन-अरे भई, तुमको भाड़े से मतलब है, या तकरीर करोगे? हम तो अपनी तरकीब से जोत लेंगे।

आज़ाद ने भठियारे से कहा-रुपया टेंट में रखो और कहो, अच्छा जोतो। कुछ थक-थकाकर आप ही हार जायेंगे। रुपया तुम्हारे बाप का हो जायगा ! वह भी राजी हो गया। अब कोचमैन ने टट्टू को जोतना चाहा, मगर उसने सैकड़ों ही बार पुश्त उछाली, दुलत्तियां झाड़ीं और गाड़ी के पास न फटका। इस पर कोचवान ने टट्टू को एक कोड़ा मारा। तब तो भठियारा आग हो गया। ऐ वाह, मियां, 'अच्छे मिले, हमने पहले ही कह दिया था कि हमारा जानवर बग्घी में न चलेगा। आपने जबरदस्ती की। अब गधे की तरह गद्-गद पीटने लगे'।

वह तो टट्टू को बगल में दाब लंबा हुआ, यहां शिकरम मैदान में पड़ी हुई है। मुसाफिर जम्हाइयां ले रहे हैं। साईस चिलम पर चिलम उड़ाते हैं। सब मुसाफिरों ने मिलकर कसम खाई कि अब शिकरम पर न बैठेंगे। खुदा जाने, क्या गुनाह किया था कि यह मुसीबत सही। पैदल आना इससे कहीं अच्छा।

पांचवीं चौकी के आगे पहुंचे, तो एक मुसाफिर ने, जिसका नाम पलटू था, ठर्रे की बोतल निकाली और लगा कुज्जी-पर-कुज्जी उड़ाने। मियां आज़ाद का दिमाग मारे बदबू के परेशान हो गया। मजहब से तो उन्हें कोई वास्ता न था, क्योंकि खुदा

के सिवा और किसी को मानते ही न थे, लेकिन बदबू ने उन्हें बेचैन कर दिया। एक दूसरे मुसाफिर रिसालदार थे। उनकी जान भी आजाब में थी। वह शराब के नाम पर लाहौल पढ़ते और उसकी बू से कोसों भागते थे। जब बहुत दिक हो गए, तो मियां आज़ाद से बोले—हजरत, यह तो बेढब हुई। अब तो इनसे साफ-साफ कह देना चाहिए कि खुदा के वास्ते इस वक्त न पीजिए। थोड़ी देर में हमको और आपको गालियां न देने लगें, तो कुछ हारता हूं। जरा आंख दिखा दीजिए जिसमें बहुत बढ़ने न पाए।

आज़ाद—खुदा की कसम, दिमाग फटा जाता है। आप डपटकर ललकार दीजिए। न माने तो मैं कान गरमा दूंगा।

रिसालदार—कहीं ऐसा गजब न कीजिएगा ! पंजे झाड़कर लड़ने को तैयार हो जायगा। शराबी के मुंह लगना कोई अच्छी बात थोड़े है।

दोनों में यही बातें हो रही थीं कि लाला पलटू ने हांक लगाई—हरे-हरे बाग में गोला बोला पग आगे, पग पीछे। यह बेतुकी कहकर हाथ जो छिड़का, तो रिसालदार की दोनों टांगों पर शराब के छींटे पड़ गए। हांय-हांय, बदमाश अलग हट ! उठ जा यहां से। नहीं तो दूंगा एक लप्पड़।

पलटू—बरसो राम झड़ाके से; रिसालदार की बुढ़िया मर गई फाके से। हमारा बाप गधा था !

रिसालदार—चुप, खोंस दूं बांस मुंह में?

पलटू—अजी, तो हंसी-हंसी में रोए क्यों देते हो? वाह, हम तो अपने बाप को बुरा कहते हैं।

आज़ाद—क्या तुम्हारे बाप गधे थे?

पलटू—और कौन थे? आप ही बताइए। उमर भर डोली उठाई, मगर मरते दम तक न उठानी आई।

रिसालदार—क्या कहार था?

पलटू—और नहीं तो क्या चमार था, या बेलदार था? या आपकी तरह रिसालदार था?

आज़ाद—है. नशे में तो क्या, बात पक्की कहता है।

पलटू—अजी, इसमें चोरी क्या है? हम कहार, हमारा बाप कहार।

आज़ाद—कहिए, आपकी महरी तो खैरियत से है।

पलटू—चल शिकरम, चल घोड़े, बिगुल बजे भोंपू-भोंपू। सामने कांटा, दुकान में आटा, कबड़िए के यहां भांटा, रिसालदार के लगाऊं चांटा।

रिसालदार—ऐसा न हो कि मैं नशा-वशा सब हिरन कर दूं। जबान को लगाम दे।

पलटू—अच्छा साईस है।

आज़ाद—अबे, साईसी इल्म दरियाव है।

पलटू—तेरा सिर नाव है, तू बनबिलाव है।

रिसालदार—कोचमैन, बग्घी ठहराओ।

पलटू–कोचमैन, बग्घी चलाओ।

मियां आज़ाद ने देखा, रिसालदार का चेहरा मारे गुस्से के लाल हो गया, तो उन्होंने बात टाल दी और पूछा–क्यों पलटू महाराज, सच कहना तुमने तो कभी डोली नहीं उठाई? पलटू बोले–नहीं, कभी नहीं। हां, बरतन मांजे हैं। मगर होश संभालते ही मदरसे में पढ़ने लगे और अब तार-घर में नौकर हैं। रिसालदार जी, लो पीते हो? रिसालदार के मुंह के पास कुज्जी ले जाकर कहा–पियो, पियो। इतना कहना था कि रिसालदार जल-भुन के खाक हो गए, तड़ से एक चांटा रसीद किया, दूसरा और दिया, फिर तीन-चार और लगाए। पलटू मजे से बैठे चपतें खाया किए। फिर कहकहा लगाकर बोले–अबे जा, बड़ा रिसालदार बना है। नाम बड़ा दरसन थोड़े। एक जूं भी न मरी रिसालदारी क्या खाक करते हो? चलो, अब तो एक कुज्जी पियो। दूं। फिर?

रिसालदार–भई, इसने तो नाक में दम कर दिया। पीटते-पीटते हाथ थक गए।

कोचमैन–रिसालदार साहब, यह क्या गुल मच रहा है?

आज़ाद–बड़ी बात कि तुम जीते तो बचे। हम समझते थे कि सांप सूंघ गया। यहां मार-धाड़ भी हो गई, तुम्हें खबर ही नहीं।

कोचमैन–मार-धाड़ ! यहां मार-धाड़ कैसी?

रिसालदार–देखो यह सुअर शराब पी रहा है और सबको गालियां देता है ! मैंने खूब पीटा, फिर भी नहीं मानता।

पलटू–झूठे हो ! किसने पीटा? कब पीटा? यहां तो एक जूं भी न मरी।

कोचमैन–लाला, थोड़ी-सी हमको भी पिलाओ।

पलटू और कोचमैन, दोनों कोच-बक्स पर जा बैठे और कुज्जियों का दौर चलने लगा। जब दोनों बदमस्त हुए, तो आपस में धौल-धप्पा होने लगा। इसने उसके लप्पड़ लगाया, उसने इसके एक टीप जड़ी। कोचमैन ने पलटू को ढकेल दिया। पलटू ने गिरते ही पांव पकड़कर घसीटा, तो कोचमैन भी धम से गिरे। दोनों चिमट गए। एक ने कूल्हे पर लादा, दूसरा बगली डूबा। मुक्का चलने लगा। कोचमैन ने झपट के पलटू की टंगड़ी ली, पलटू ने उसके पट्टे पकड़े। रिसालदार को गुस्सा आया, तो पलटू के बेभाव की चपतें लगाईं। एक, दो, तीन करके कोई पचास तक गिन गए। आज़ाद ने देखा कि मैं खाली हूं। उन्होंने कोचमैन को चपतियाना शुरू किया।

आज़ाद–क्यों बचा, पियोगे शराब? सुअर, गाड़ी चलाता है कि शराब पीता है?

रिसालदार–तोड़ दूं सिर, पटक दूं बोतल सिर पर !

पलटू–तो आप क्या अकड़ रहे हैं? आपकी रिसालदारी को तो हमने देख लिया। देखो, कोचमैन के सिर पर आधे बाल रह गए, यहां बाल भी न बांका हुआ।

रिसालदार–बस भई अब हम हार गए।

इस झंझट में तड़का हो गया। मुसाफिर रात भर के जगे हुए थे, झपकियां लेने लगे। मालूम नहीं, कितनी चौकियां आईं और गईं। जब लखनऊ पहुंचे तो दोपहर ढल चुकी थी।

तेईस

मियां आज़ाद शिकरम पर से उतरे, तो शहर को देखकर बाग-बाग हो गए। लखनऊ में घूमे तो बहुत थे, पर इस हिस्से की तरफ आने का कभी इत्तिफाक न हुआ था। सड़कें साफ, कूड़े-करकट से काम नहीं, गंदगी का नाम नहीं, वहां एक रंगीन कोठी नजर आई, तो आंखों ने वह तरावट पाई कि वाह जी, वाह ! उसकी बनावट और सजावट ऐसी भाई कि सुभान-अल्लाह। बस, दिल में खुब ही तो गई। रविशें दुनिया से निराली, पौदों पर वह जोबन कि आदमी बरसों घूरा करे।

मियां आज़ाद ने हरे-भरे दरख्त के साए में आसन जमाया। टहनियां हवा के झोंकों से झूमती थीं, मेवे के बोझ से जमीन को बार-बार चूमती थीं। आज़ाद ठंडे-ठंडे हवा के झोकों का मजा ले रहे थे कि एक मुसाफिर उधर से गुजरा। आज़ाद ने पूछा–क्यों साहब, इस कोठी में कौन रईस रहता है?

मुसाफिर–रईस नहीं, एक रईसा रहती हैं ! बड़ी मालदार हैं। रात को रोज बजरे पर दरिया की सैर को निकलती हैं। उनकी दोनों लड़कियां भी साथ होती हैं।

आज़ाद–क्यों साहब, लड़कियों की उम्र क्या होगी?

मुसाफिर–अब उमर का हाल मुझे क्या मालूम। मगर सयानी हैं, बड़ी तमीजदार हैं और बुढ़िया तो आफत की पुड़िया।

आज़ाद–शादी अभी नहीं हुई?

मुसाफिर–अभी शादी नहीं हुई; न कहीं बातचीत है। दोनों बहनों को पढ़ने-लिखने और सैर करने के सिवा कोई काम नहीं। सफाई का दोनों को ख्याल है। खुदा करे, उनकी शादी अच्छे घरों में हो।

आज़ाद–आपने तो वह खबर सुनाई कि मुझे उन लड़कियों को सैर करते हुए देखने का शौक हो गया।

मुसाफिर–तो फिर इसी जगह बिस्तर जमा रखिए।

आज़ाद–आप भी आ जाएं, तो मजा आए।

मुसाफिर–आ जाऊंगा।

आज़ाद–ऐसा न हो कि आप न आए और मुझे भेड़िया उठा ले जाय।

मुसाफिर–आप बड़े दिल्लगीबाज मालूम होते हैं। यहां अपने वादे के सच्चे हैं। बस, शाम हुई और बंदा यहां पहुंचा।

यह कहकर वह हजरत तो चलते हुए और आज़ाद दरख्तों से मेवे तोड़-तोड़कर खाने लगे। फिर चिड़ियों का गाना सुना। फिर दरिया की लहरें देखीं। कुछ देर तक गाते रहे। यहां तक कि शाम हो गई और वह मुसाफिर न आया। आज़ाद दिल में सोचने लगे, शायद हजरत झांसा दे गया। अब शाम में क्या बाकी है। आना होता, तो आ न जाते। शायद आज बेगम साहबा बजरे पर सैर भी न करेंगी। सैर करने का यही तो वक्त है। इतने में मियां मुसाफिर ने आकर पुकारा।

आज़ाद–खैर, आप आए तो ! मैं तो आपके नाम को रो चुका था।

मुसाफिर–खैर, अब हंसिए। देखिए, वह हाथी आ रहा है। दोनों पालकियां भी

साथ हैं।

आज़ाद–कहां–कहां? किधर?

मुसाफिर–ईंट की ऐनक लगाओ ! इतनी बड़ी पालकी नहीं देख सकते। हाथी भी नहीं दिखाई देता। क्या रतौंधी आती है?

आज़ाद–आहा हा ! वह देखिए ! ऐं, वह तो दरख्त के साए में रुक रहा।

मुसाफिर–घबराइए नहीं, यहीं आ रही हैं। अब कोई और जिक्र छेड़िए, जिसमें मालूम हो कि दो मुसाफिर थककर खड़े बातें कर रहे हैं !

आज़ाद–यह आपको खूब सूझी ! हां साहब, अबकी आम की फसल खूब हुई। जिधर देखो, पटे पड़े हैं; मंडी जाइए, खाँचियों की खाँचियां। तरबूज को देख आइए, कोई टके को नहीं पूछता। और आम के सामने तरबूज को कौन हाथ लगाए।

ये बातें हो ही रही थीं कि बजरा तैयार हुआ। दोनों बहनें और बेगम साहबा उसमें बैठीं। एकाएक पूरब की तरफ से काली मतवाली घटा झूमती हुई उठी और बिजली ने चमकना शुरू किया। मल्लाह ने बजरे को खूंटे से बांध दिया। दोनों लड़कियां हाथी पर बैठीं और घर की तरफ चलीं। आज़ाद ने कहा–यह बुरा हुआ ! तूफान ने हत्थे ही पर टोक दिया, नहीं तो इस वक्त बजरे की सैर देखकर दिल की कली खिल जाती। आखिर दोनों आदमी घूमते-घामते एक बाग में पहुंचे, तो मियां मुसाफिर बोले–हजरत, अब की आम इतनी कसरत से पैदा हुआ कि टके सेर नहीं, टके हजार लग गए ! लेकिन बगीचे वाले का यह हाल है कि जहां किसी भलेमानस ने राह चलते कोई आम उठा लिया और बस, चिमट पड़ा। अभी परसों ही की तो बात है। यहां से कोई चार कोस पर एक मुसाफिर मैदान में चला जाता था। एक काना खुतरा आम टप से जमीन पर टपक पड़ा। मुसाफिर को क्या मालूम कि कौन इधर-उधर ताक रहा है, चुपके से आम उठा लिया। उठाना था कि दो गंवारदल लट्ठ कंधे पर रखे, मार सारे का, मार सारे का करते निकल आए। मुसाफिर ने आम झट जमीन पर पटक दिया। लेकिन एक गंवार ने आते ही गालियां देनी शुरू कीं और दूसरे ने घूंसा ताना। मुसाफिर भी क्षत्रिय आदमी थी, आग हो गया। मारे गुस्से के उसका बदन थर-थर कांपने लगा। बढ़के जो एक चांटा देता है, तो एक गंवार लड़खड़ा के धम से जमीन पर। दूसरे ने जो यह हाल देखा, तो लट्ठ ताना। राजपूत बगली डूबकर जा पहुंचा, एक आंटी जो देता है, तो चारों खाने चित्त। हम भी कल एक बाग में फंस गए थे। शामत जो आई, तो एक दरख्त के साये में दोपहरिया मनाने बैठ गए। बैठना था कि एक ने तड़ से गाली दी। अब सुनिए कि गाली तो दी हमको, लेकिन एक पहलवान भी करीब ही बैठा था। सुनते ही चिमट गया और चिमटते ही कूल्हे पर लादा। गिरे मुंह के बल। पहलवान छाप बैठा, हफ्ते गांठ लिए, हलसींगड़ा बांधकर आसमान दिखा दिया और अपने शागिर्दों से कहा–चढ़ जाओ पेड़ पर, और आम, पत्ते, बौर, टहनी जो पाओ, तोड़-तोड़कर फेंक दो, पेड़ नोंच डालो। लेकिन लोगों ने समझाया कि उस्ताद, जाने दो, गाली देना तो इनका काम है। यह तो इनके सामने कोई बात नहीं, ये इसी लायक हैं कि खूब धुने जाएं।

आज़ाद–क्यों साहब, धुने क्यों जाएं? ऐसा न करें, तो सारा बाग मुसाफिरों ही

के लिए हो जाए। लोग पेड़ का पेड़, जड़ और फुनगी तक चट कर जाएं। आप तो समझे कि यह एक आम के लिए कट मरा, मगर इतना नहीं सोचते कि एक ही एक करके हजार होते हैं। इस ताकीद पर तो हाल है कि लोग बाग के बाग लूट खाते हैं; और जो कहीं इतनी तू-तू मैं-मैं न हो तो न जाने क्या हो जाय।

मियां मुसाफिर कल आने का वादा करके चले गए। आज़ाद आगे बढ़े तो क्या देखते हैं कि एक आदमी अपने लड़के को गोदी में लिए थपकी दे-देकर सुला रहा है-'आ जा री निदिया, तू आ क्यों न जा; मेरे बाले को गोद सुला क्यों न जा।' आज़ाद एक दिल्लगीबाज आदमी, जाकर उससे पूछते क्या हैं-किसका पिल्ला है? वह भी एक ही कांइयां था, बोला-दूर रह, क्यों पिला पड़ता है-आज़ाद यह जवाब सुनकर खुश हो गए। बोले-उस्ताद, हम तो आज तुम्हारे मेहमान होंगे। तुम्हारी हाजिरजवाबी से जी खुश हो गया। अब रात हो गई है, कहां जाएं? उस हंसोड़ आदमी ने इनकी बड़ी खातिर की, खाना खिलाया और दोनों ने दरवाजे पर ही लंबी तानी। तड़के मियां आज़ाद की नींद खुली। हंसोड़ को जगाने लगे। क्यों हजरत, पड़े सोया ही कीजिएगा या उठिएगा भी; वाह रे, माचा-तोड़ ! मारे बहुत हिलाने-डुलाने पर मियां हंसोड़ उठे और फिर लेट गए; मगर पैताने की तरफ सिर करके । इतने में दो-चार दोस्त और आ गए। वाह भई, वाह, हम दो कोस से आए और यहां अभी खाट ही नहीं छोड़ी? भई, बड़ा सोने वाला है। हमने मुंह-हाथ धोया, हुक्का पिया, बालों में तेल डाला, चपातियां खाईं, कपड़े पहने और टहलते हुए यहां तक आए; मगर यह अभी तक पड़े ही हुए हैं। आखिर एक आदमी ने उनके कान में पानी डाल दिया। तब तो आप कुलबुलाए। देखो, हैं-हैं नहीं मानते ! वाह, अच्छी दिल्लगी निकाली है।

एक दोस्त-जरा आंखें तो खोलिए।

हंसोड़-नहीं खोलते। आपका कुछ इजारा है?

दोस्त-देखिए, यह मियां आज़ाद तशरीफ लाए हैं, इधर मौलवी साहब खड़े हैं। इनसे तो मिलिए, सो-सो कर नहूसत फैला रखी है।

मौलवी-अजी हजरत !

हसोड़-भई, दिक न करो, हमें सोने दो। यहां मारे नींद के बुरा हाल है, आपको दिल्लगी सूझती है।

आज़ाद-भाई साहब !

हंसोड़-और सुनिए। आप भी आए वहां से जान खाने। सबेरे-सबेरे आपको बुलाया किस गधे ने था? भलेमानस के मकान पर जाने का यह वक्त है भला? कुछ आपका कर्ज तो नहीं चाहता? चलिए, बोरिया-बंधना उठाइए। (आंखें खोलकर) अख्खा आप हैं? माफ कीजिएगा। मैंने आपकी आवाज नहीं पहचानी।

मौलवी-कहिए, खाकसार की आवाज तो पहचानी? या कुछ मीन-मेख है?

हंसोड़-अख्खा, आप हैं। माफ कीजिएगा, मैं अपने आपे में न था।

मौलवी-हजरत, इतना भी नींद के हाथ बिक जाना भला कुछ बात है। आठ बजा चाहते हैं और आप पड़े सो रहे हैं। क्या कल रतजगा था? खैर, मैं तो रुखसत

होता हूं; आप हकीम साहब के नाम खत लिख भेजिएगा। ऐसा न हो कि देर हो जाए। कहीं फिर न लुढ़क रहिएगा। आपकी नींद से हम हारे।

हंसोड़–अच्छा मियां आज़ाद और बातें तो पीछे होंगी, पहले यह बतलाइए कि खाना क्या खाइएगा? आज मामा बीमार हो गई है और घर में भी तबीयत अच्छी नहीं है। मैंने रोजे की नीयत की है। आप भी रोजा रख लें। फायदे का फायदा और सवाब का सवाब।

आज़ाद–रोजा आपको मुबारक रहे। अल्लाह मियां हमें यों ही बख्श देंगे। यह दिल्लगी किसी और से कीजिएगा।

हंसोड़–दिल्लगी के भरोसे न रहिएगा। मैं खरा आदमी हूं। हां, खूब याद आया। मौलवी साहब खत लिखने को कह गए हैं। दो पैसे का खून और हुआ। कल भी रोजा रखना पड़ा।

आज़ाद–दो पैसे क्यों खर्च कीजिएगा? अब तो एक पैसे के पोस्टकार्ड चले हैं।

हंसोड़–सच? एक डबल में !भई अंगरेज बड़े हिकमती हैं। क्यों साहब, वह पोस्टकार्ड कहां बिकते हैं?

आज़ाद–इतना भी नहीं जानते? डाकखाने में आदमी भेजिए।

हंसोड़–रोशनअली, डाकखाने से जाकर एक आने के पोस्टकार्ड ले आओ।

रोशन–मियां, मैं देहाती आदमी हूं। अंगरेजी नहीं पढ़ा।

हंसोड़–अरे भई, तुम कहना कि वह लिफाफे दीजिए, जो पैसे-पैसे में बिकते हैं। जा झट से, कुत्ते की चाल जाना और बिल्ली की चाल आना।

रोशन–अजी, मुझसे कहिए, तो मैं गधे की चाल जाऊं और बिसखोपड़े की चाल आऊं। मुल डाकवाले मुझे पागल बनायेंगे। भला आज तक कहीं पैसे में लिफाफा बिका है?

हंसोड़–अबे, तुझे इस हुज्जत से क्या वास्ता? डाकखाने तक जाएगा भी, या यहीं बैठे-बैठे दलीलें करेगा?

रोशन डाकखाने गया और पोस्टकार्ड ले आया। मियां हंसोड़ झपटकर कलम-दावात ले आए और खत लिखने बैठे। मगर पुराने जमाने के आदमी थे, तारीफ के इतने लंबे-लंबे जुमले लिखने शुरू किए कि पोस्टकार्ड भर गया और मतलब खाक न निकला। बोले–अब कहां लिखें?

आज़ाद–दो टप्पी बातें लिखिए।–आप तो लगे लियाकत बघारने ! दूसरा लीजिए।

हंसोड़ ने दूसरा पोस्टकार्ड लिखना शुरू किया–'जनाब, अब हम थोड़े में बहुत-सा हाल लिखेंगे। देखिए, बुरा न मानिएगा। अब वह जमाना नहीं रहा कि वह बीघे-भर के आदाब लिखे जाएं। वह लंबी-चौड़ी दुआएं दी जाएं। वह घर का कच्चा-चिट्ठा कह सुनाना अब रिवाज के खिलाफ हैं। अब तो हमने कसम खाई है कि जब कलम उठायेंगे, दस-सतरों से ज्यादा न लिखेंगे, इसमें चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाए। अब आप भी इस फैशन को छोड़ दीजिए।' अरे, यह खत भी गया। अब तो तिल रखने की भी जगह नहीं। लीजिए, बात करते-करते दो पैसे का खून हो

गया। इससे तो पैसे का टिकट लाते तो खर्रे का खर्रा लिख डालते।

आज़ाद–देखूं तो; आपने क्या लिखा है। वाह-वाह इस पंवाड़े का कुछ ठिकाना है। अरे साहब, मतलब-से-मतलब रखिए। बहुत बेहूदा न बकिए। खैर, अब तीसरा कार्ड लीजिए। मगर कलम को रोके हुए। ऐसा न हो कि आप फिर वाही-तबाही लिखने लगें।

हंसोड़–अच्छा साहब, यों ही सही। बस, खास-खास बातें ही लिखूंगा।

यह कहकर उन्होंने यह खत लिखा–जनाब फजीलतमआब मौलाना साहब, आप यह पैसलूचा लिफाफा देखकर घबरायेंगे कि यह क्या हाल है। डाकखाने वालों ने यह नई फुलझड़ी छोड़ी है। आप देखते हैं, इसमें कितनी जगह है। अगर मुख्तसर न लिखूं तो क्या करूं। लिखनी तो बहुत-सी बातें हैं, पर इस लिफाफे को देखकर सब आरजूएं दिल में रही जाती हैं। देखिए, अभी लिखा कुछ भी नहीं, मगर कागज को देखता हूं, तो एक तरफ सब-का-सब लिख गया। दूसरी तरफ लिखूं, तो पकड़ा जाऊं।' लो साहब, यह पोस्टकार्ड भी खत्म हुआ ! मियां आज़ाद, ये तीनों पैसे आपके नाम लिख गए। आप चाहे दें टका नहीं, लेकिन सलाह आप ही ने दी थी।

आज़ाद–मैंने यह कब कहा था कि आप खत में अपनी जिंदगी की दास्तान लिख भेजें? यह खत है या रांड़ का चर्खा? इतने बड़े हुए हैं, खत लिखने की लियाकत नहीं। समझा दिया, सिखला दिया कि बस, मतलब-से-मतलब रखो। मगर तुम कब मानने लगे। खुदा की कसम, तुम्हारी सूरत से नफरत हो गई। बस, बेतुकेपन की हद हो गई।

हंसोड़–वाह री किस्मत ! तीन पैसे गिरह से गए और उल्लू के उल्लू बने। भला आप ही लिखिए, तो जानें। देखें तो सही, आप इस जरा से कागज पर कुल मतलब क्योंकर लिखते हैं। इसके लिए तो बड़ा भरी उस्ताद चाहिए, जो पिस्ते पर हाथी की तसवीर बना दे।

आज़ाद–आप अपना मतलब मुझसे कहिए, तो अभी लिख दूं।

हंसोड़–अच्छा सुनिए–मौलवी जामिनअली आपकी खिदमत में पहुंचे होंगे। उनको वह तीस रुपये वाली जगह दिला दीजिएगा। आपका उम्र भर एहसान होगा। बस, इसी को खूब बढ़ा दीजिए।

आज़ाद–फिर वही झक ! बढ़ा क्यों दूं? यह न कहा कि बस, यही मेरा मतलब है, इसको बढ़ा दीजिए। लाओ, पोस्टकार्ड, देखो यों लिखते हैं–

'हजरत सलामत, मौलवी जामिनअली पहुंचे होंगे। वह तीस रुपये वाला ओहदा उनको दिलवा दीजिए, तो एहसान होगा। उम्मेद है कि आप खैरियत से होंगे।'

लो, देखो, इतनी-सी बात को इतना बढ़ाया कि तीन-तीन खत लिखे और फाड़े।

हंसोड़–खूब, यह तो अच्छा दुम-कटा खत है। अच्छा, अब पता भी तो लिखिए।

आज़ाद ने सीधा-सादा पता लिखकर हंसोड़ को दिखलाया, तो आप पूछने लगे–क्यों साहब, यह तो शायद वहां तक पहुंचे ही नहीं। कहीं इतना जरा-सा पता लिखा जाता है? इसमें मेरा नाम कहां है, तारीख कहां है?

आज़ाद–आपका नाम बेवकूफों की फिहरिस्त में है और तारीख डाकखाने में।

हंसौड़–अच्छा, लाइए, दो-चार सतरें मैं भी बढ़ा दूं।

हजरत ने जो लिखना शुरू किया, तो पते की तरफ भी लिख डाला।– लिखने को बहुत समझिएगा। आपका पुराना गुलाम हूं। अब कुछ करते-धरते नहीं बन पड़ती।

आज़ाद–हैं-हैं ! गारत किया न इसको भी?

हंसोड़–क्यों, जगह बाकी है, पूरा तो वसूल करने दो।

आज़ाद–जी, पैसा नहीं, एक आना वसूल हो गया? एक ही तरफ मतलब लिखा जाता है, दूसरी तरफ सिर्फ पता। आपसे तो हमने पहले ही कह दिया था।

यह बातें हो ही रही थीं कि कई लड़के स्कूल से निकले। उनमें एक बड़ा शरीर था। किसी पर धप जमाई, किसी के चपत लगाई, किसी के कान गरमा दिए। अपने से ड्योढ़े-दूने तक को चपतियाता था। आज़ाद ने कहा–देखा, यह लौंड़ा कितना बदमाश है ! अपने दूने तक की खबर लेता है।

हंसोड़–भई, खुदा के लिए इसके मुंह न लगना। इसके काटे का मंतर ही नहीं। यह स्कूल भर में मशहूर है। हजरत दो दफे चोरी की इल्ल्त में धरे गए। इनके मारे महल्ले भर का नाकों दम है। एक किस्सा सुनिए। एक दफे हजरत को शरारत का शौक चर्राया, फिर सोचने की जरूरत न थी। फौरन सूझती है। शरारत तो इसकी खमीर में दाखिल है। एक पांव का जूता निकालकर हजरत ने एक आलमारी पर रख दिया। जूते के नीचे एक किताब रख दी। थोड़ी देर बाद एक लड़के से बोले–यार, जरा वह किताब उतारो, तो कुछ देख-दाख लूं; नहीं तो मास्टर साहब बेतरह ठोकेंगे। सीधा-सादा लड़का चुपके से वह किताब उठाने गया। जैसे ही किताब उठाई, वैसे ही जूती मुंह पर आई। सब लड़के खिलखिलाकर हंस पड़े। मास्टर साहब अंग्रेज थे। बहुत ही झल्लाकर पूछा–यह किसके पांव की जूती है? अब आप बैठे चुपचाप पढ़ रहे हैं। गोया इनसे कुछ वास्ता ही न था। मगर इनका तो दर्जा भर दुश्मन था। किसी लड़के ने इशारे से जड़ दी। मास्टर ने आपको बुलाया और पूछा–वेल, दूसरा पांव कहां तुम्हारा? दूसरा गांव किडर?

लड़का–पांव दोनों ये हैं।

मास्टर–वेल, जूती, जूती?

लड़का–जूती को खावे तूती।

मास्टर–बेंच पर खड़ा हो।

लड़का–यह सजा मंजूर नहीं; कोई और सजा दीजिए।

मास्टर–अच्छा, कल के सबक को सौ बार लिख लाना।

लड़का–वाह-वाह, और सबक याद कब करूंगा?

मास्टर–अच्छा, आठ आना जुर्माना।

दूसरे दिन आप आठ आने लाए, तो मोटे पैसे खट-खट करके मेज पर डाल दिए। मास्टर ने पूछा–अठन्नी क्यों नहीं लाया? बोले–यह शर्त नहीं थी।

इसी तरह एक बार एक भलेमानस के यहां कह आए कि तुम्हारे लड़के को स्कूल में हैजा हुआ है। उनके घर में रोना-पीटना मच गया। लड़के का बाप, चचा, भाई, मामू, सब दौड़ते हुए स्कूल पहुंचे। औरतों ने आठ-आठ आंसू रोना शुरू किया।

वे लोग जो स्कूल गए, तो क्या देखते हैं, लड़का मजे से गेंद खेलता है। अजी, और क्या कहें, इसने अपने बाप को एक बार नमक के धोखे में फिटकरी खिला दी, और उस पर तुर्रा यह कि कहा, क्यों अब्बाजान, कैसा गहरा चकमा दिया?

शाम के वक्त बूढ़े मियां आज़ाद के पास आकर बोले—चलिए, उधर बजरा तैयार है ! आज़ाद तो उनकी ताक में बैठे ही थे, हंसोड़ को लेकर उनके साथ चल खड़े हुए। नदी के किनारे पहुंचे, तो देखा बजरे लहरों पर फर्राटे से दौड़े रहे हैं। एक दरख्त के साए में छिपकर यह बहार देखने लगे। उधर उन दोनों ने मुंह फेर लिए लेकिन कनखियों से ताक रही थीं। यहां तक कि बजरा निगाहों से ओझल हो गया।

थोड़ी देर के बाद आज़ाद उन्हीं बूढ़े मियां के साथ उस कोठी की तरफ चले, जिसमें दोनों लड़कियां रहती थीं। कदम-कदम पर शेर पढ़ते थे, ठंडी सांसें भरते थे और सिर धुनते थे। हालत ऐसी खराब थी कि कदम-कदम पर उनके गिर पड़ने का खौफ था। हंसोड़ ने जो यह कैफियत देखी, तो झपटकर मियां आज़ाद का हाथ पकड़ लिया और समझाने लगे, इस रोने-धोने से क्या फायदा? आखिर यह तो सोचो कि कहां जा रहे हो? वहां तुम्हें कोई पहचानता भी है? मुफ्त में शरमिंदा होने की क्या जरूरत?

आज़ाद—भई, अब तो यह सिर है और वह दर। बस, आज़ाद है और उन बुतों का कूचा।

हंसोड़—यह महज नादानी है, यही हिमाकत की निशानी है। मेरी बात मानो, बूढ़े मियां को फंसाओ, कुछ चटाओ, फिर उनकी सलाह के मुताबिक काम करो, बेसमझे-बूझे जाना और अपना-सा मुंह लेकर वापस आना हिमाकत है।

ये बातें करते हुए दोनों आदमी कोठी के करीब पहुंचे। देखा, बूढ़े मियां इनके इंतजार में खड़े हैं। आज़ाद ने कहा—हजरत, अब तो आप ही रास्ता दिखाएं, तो मंजिल पर पहुंच सकते हैं; वर्ना अपना तो हाल खराब है।

बूढ़े मियां—भई, हम तुम्हारे सच्चे मददगार और पक्के तरफदार हैं। अपनी तरफ से तुम्हारे लिए कोई बात उठा न रखेंगे। लेकिन यहां का बाबा, आलम ही निराला है। यहां परिंदों के पर जलते हैं। हवा का भी गुजर होना मुश्किल है। मगर दोनों मेरी गोद की खिलाई हुई हैं, मौका पाकर आपका जिक्र जरूर करूंगा। मुश्किल यही है कि एक ऊंचे घर से पैगाम आया है, उनकी मां को शौक चर्राया है कि वहीं ब्याह हो।

आज़ाद—यह तो आपने बुरी खबर सुनाई। कसम खुदा की, मेरी जान पर बन जायगी।

बूढ़े मियां—सब्र कीजिए, सब्र। दिल को ढारस दीजिए। अब इस वक्त जाइए, सुबह आइएगा।

आज़ाद रुखसत होने ही वाले थे, तो देखते हैं, दोनों बहनें झरोखों से झांक रही हैं। आज़ाद ने यह शेर पढ़ा—

हम यही पूछते फिरते हैं जमाने भर से;
जिनकी तकदीर बिगड़ जाती है, क्या करते हैं?

झरोखे में से आवाज आई–

जीना भी आ गया मुझे, मरना भी आ गया;
पहचानने लगा हूं तुम्हारी नजर को मैं।

इतना सुनना था कि मियां आज़ाद की आंखें मारे खुशी के डबडबा आईं। झरोखे की तरफ फिर जो ताका, तो वहां कोई न था। चकराए कि किसने यह शेर पढ़ा। छलावा था, टोना था, जादू था, आखिर था क्या? इतने में बूढ़े मियां ने इशारे से कहा कि बस, अब जाओ और तड़के आओ।

दोनों दोस्त घर की तरफ चले, तो मियां हंसोड़ ने कहा–हजरत, खुदा के वास्ते मेरे घर पर कूद-फांद न कीजिएगा, बहुत शेर न पढ़िएगा, कहीं मेरी बीबी को खबर हो गई, तो जीना मुश्किल हो जायगा।

आज़ाद–क्या बीबी से आप इतना डरते हैं। आखिर खौफ काहे का?

हंसोड़–आपको इस झगड़े से क्या मतलब? वहां जरा भले आदमी की तरह बैठिएगा, यह नहीं कि गुल मचाने लगे। जो सुनेगा, वह समझेगा कि कहां के शोहदे जमा हो गए हैं।

आज़ाद–समझ गया, आप बीबी के गुलाम हैं। मगर हमें इससे क्या वास्ता। आम खाने से मतलब कि पेड़ गिनने से?

दोनों आदमी घर पहुंचे, तो लौंडी ने अंदर से आकर कहा–बेगम साहबा आपको कोई बीस बेर पूछ चुकी हैं। चलिए, बुलाती हैं। मियां हंसोड़ ने ड्योढ़ी पर कदम रखा ही था कि उनकी बीबी ने आड़े हाथों ही लिया। यह दिन-दिन भर आप कहां गायब रहने लगे? अब तो आप बड़े सैलानी हो गए। सुबह के निकले-निकले शाम को खबर ली। चलो, मेरे सामने से जाओ। आज खाना-वाना-खैर-सल्लाह है। हलवाई की दूकान पर दादाजी का फातिहा पढ़ो, तंदूरी रोटियां उड़ाओ। यहां किसी को कुत्ते ने नहीं काटा कि वक्त-बे-वक्त चूल्हे का मुंह काला किया जाए। भले आदमी दो-एक घड़ी के लिए कहीं गए तो गए; यह नहीं कि दिन-दिन भर पता ही नहीं। अच्छे हथकंडे सीखे हैं।

हंसोड़ ने चुपके से कहा–जरा आहिस्ता-आहिस्ता बातें करो। बाहर एक भलामानस टिका हुआ है। इतनी भी क्या बेहयाई?

इस पर वह चमककर बोली–बस, बस, जबान न खुलवाओ बहुत। तुम्हें जो दोस्त मिलता है, वही गंवार-सवार, जिसके घर न द्वार, जाने कहां के उल्फत इनको मिल जाते हैं, कभी किसी शरीफ आदमी की दोस्ती करते नहीं देखा। चलिए, अब दूर हूजिए, नहीं हम बुरी तरह पेश आयेंगे। मुझसे बुरा कोई नहीं।

मियां हंसोड़ बेचारे की जान अजाब में कि घर में बीबी कोसने सुना रही है, बाहर मियां आज़ाद आड़े हाथों लेंगे कि आपकी बीबी ने आपको तो खैर जो कुछ कहा, वह कहा ही, मुझे क्यों ले डाला? मैंने उनका क्या बिगाड़ा था? अपना-सा मुंह लेकर बाहर चले आए और आज़ाद से कहा–यार, आज रोजे की नीयत कर लो। बीबी-जान फौजदारी पर आमादा हैं। बात हुई और तिनक गईं। महीनों ही रूठी रहती हैं। मगर क्या करूं, अमीर की लड़की हैं, नहीं तो मैं एक झल्ला हूं। मुझे यह

मिजाज कहां पसंद। इसलिए भई, आज फाका है।

आज़ाद–फाका करें आपके दुश्मन। चलिए, किसी नानबाई, हलवाई की दूकान पर। मजे से खाएं।

हंसोड़–अरे यार, इतने ही होते तो बीबी की क्यों सुनते ! टका पास नहीं, हलवाई क्या हमारा मामू है?

आज़ाद–इसकी फिक्र न कीजिए। आप हमारे साथ चलिए, मजे से मिठाई चखिए। वह तदबीर सूझी है कि कभी पट ही न पड़े।

दोनों आदमी बाजार पहुंचे। आज़ाद ने रास्ते में हंसोड़ को समझा-बुझा दिया। हंसोड़ तो हलवाई की दूकान पर गए और आज़ाद जरा पीछे रह गए। हंसोड़ ने जाते-ही-जाते हलवाई से कहा–मियां आठ आने के पैसे दो और आठ आने की पंचमेल मिठाई। हलवाई ने ताजी-ताजी मिठाई तौल दी और आठ आने पैसे भी गिन दिए। हंसोड़ ने पैसे तो गांठ में बांधे और मिठाई उसी की दूकान पर चखने लगे। इतने में मियां आज़ाद भी पहुंचे और बोले–भई लाला, जरा हमें बेसन के लड्डू तो एक रुपये के तौल देना। उसने एक रुपये के बेसन के लड्डू चगेर उनके हाथ में दी। इतने में मियां हंसोड़ ने लकड़ी उठाई और अपनी राह चले। हलवाई ने ललकारा–मियां, चले कहां? पहले रुपया तो देते जाओ।

हंसोड़–रुपया ! अच्छा मजाक है ! अबे, क्या तूने रुपया नहीं पाया। यहां पहले रुपया देते हैं, पीछे सौदा लेते हैं। अच्छे मिले ! क्या दो-दो दफे रुपया लोगे? कहीं मैं थाने में रपट न लिखवा दूं ! मुझे भी कोई गंवार समझे हो ! अभी चेहरेशाही दे चुका हूं। अब क्या किसी का घर लेगा?

अब हलवाई और हंसोड़ में तकरार होने लगी। बहुत से आदमी जमा हो गए। कोई कहता है, लाला घास तो नहीं खा गए हो, कोई कहता है, मियां एक रुपये के लिए नीयत डांवाडोल न करो; ईमान सलामत रहेगा, तो बहुत रुपये मिलेंगे।

आज़ाद–लाला, कहीं इसी तरह मेरा भी रुपया न भूल जाना।

हलवाई–क्या, आपका रुपया? आपने रुपया किसको दिया?

अब जो सुनता है, वही हलवाई को उल्लू बनाता है। लोगों ने बहुत कुछ लानत-मलानत की कि शरीफ आदमी को बेइज्जत करते हो। इतने में उस हलवाई का बुड्ढा बाप आया, तो देखता क्या है कि दूकान पर भीड़ लगी हुई है। पूछा, क्या माजरा है? क्या दूकान लुट गई? एक बिगड़े-दिल ने कहा–अजी, लुट तो नहीं गई मगर अब तुम्हारी दुकान की साख जाती रही। अभी एक भलेमानस ने खन से रुपया फेंका। अब कहता है कि हमने रुपया पाया ही नहीं। उसका छोड़ा, तो दूसरे शरीफ का दामन पकड़ लिया कि तुमने रुपया नहीं दिया; हालांकि वह बेचारे सैकड़ों कसमें खाते हैं कि मैं दे चुका हूं। हलवाई बड़ा तीखा बुड्ढा था, सुनते ही आग हो गया। झल्लाकर अपने लड़के की खोपड़ी पर तान के एक चपत लगाई और बोला–कहता हूं, कि भंग न खाया कर, मानता ही नहीं। जाकर बैठ दूकान पर।

मियां आज़ाद और हंसोड़ ने मजे से डेढ़ रुपये की मिठाई बांध ली, और आठ आने के पैसे घाते में। जब घर पहुंचे, तो खूब मिठाई चखी। बची-बचाई

अंदर भेज दी। हंसोड़ ने कहा—यार, इसी तरह कहीं से रुपया दिलवाओ, तो जानें। आज़ाद ने कहा—यह कितनी बड़ी बात है? अभी चलो। मगर किसी से मांग-मूंग कर कुछ अशर्फियां बांध लो। मियां हंसोड़ ने अपने एक दोस्त से शाम को लौटा देने के वादे पर कुछ अशर्फियां लीं ! दोनों ने रोशनअली को साथ लिया और बाजार चले। पहले एक महाजन को अशर्फियां दिखाईं और परखवाईं। बेचते हैं, खरी-खोटी देख लीजिए। महाजन ने उनको खूब कसौटी पर कसा और कहा—उन्नीस के हिसाब से लेंगे। तब हंसोड़ दूसरी दूकान पर पहुंचे। वहां भी अशर्फियां गिनवाईं और परखवाईं। इसके बाद आज़ाद ने तो अशर्फियां लेकर घर की राह ली और मियां हंसोड़ एक कोठी में पहुंचे। वहां कहा कि हमें दो सौ अशर्फियां खरीदनी हैं। महाजन ने देखा, आदमी शरीफ हैं, फौरन दो सौ अशर्फियां उनके सामने ढेर कर दीं। बीस रुपये की दर बताई। हंसोड़ ने महाजन के मुनीम से एक पर्चे पर हिसाब लिखवाया और अशर्फियां बांधकर कोठी के बाहर पहुंचे। गुल मचा—हांय-हांय, लेना-लेना, कहां-कहां ! मियां हंसोड़ पैंतरा बदल सामने खड़े हो गए। बस, दूर ही से बातचीत हो। सामने आए और मैंने तुला हाथ दिया।

महाजन—ऐ साहब, रुपये तो दीजिए?

हंसोड़—कैसे रुपये? हम नहीं बेचते।

महाजन—क्या कहा, नहीं बेचते? क्या अशर्फियां आपकी हैं?

हंसोड़—जी, और नहीं तो क्या आपके बाप की हैं? हम नहीं बेचते, आपका इजारा है कुछ? आप हैं कौन जबर्दस्ती करनेवाले?

इतने में आज़ाद भी वहां आ पहुंचे। देखा, तो महाजन और उनके मुनीम जी गुल मचा रहे हैं—तुम अशर्फियां लाए कब थे? और हंसोड़ कह रहे हैं, हम नहीं बेचते। सैकड़ों आदमी जमा थे। पुलीस का एक जमादार भी आ मौजूद हुआ।

जमादार—यह क्या झगड़ा है लाला चुन्नामल? वह नहीं बेचते, तो जबर्दस्ती क्यों करते हो? अपने माल पर सबको अख्तियार है।

महाजन—अच्छी पंचायत करते हो जमादार। यहां चार हजार रुपये पर पानी फिरा जाता है, आप कहते हैं, जाने भी दो। ये अशर्फियां तो हमारी हैं। यह मियां ख़रीदने आए थे, हमने गिन दीं। बस, बांध-बूंध कर चल खड़े हुए।

एक आदमी—वाह, भला कोई बात भी है ! यह टकेले, आप दस। जो ऐसा होता, तो यह कोठी के बाहर भी आने पाते? आप सब मिलकर इनका अचार न निकाल लेते? इतने बड़े महाजन, और दो सौ अशर्फियों के लिए ईमान छोड़े देते हो।

जमादार—बुरी बात !

हंसोड़—देखिए, आप बाजार भर में दरियाफ्त कर लें कि हमने कितनी दुकानों में अशर्फियां दिखलाईं और परखवाईं हैं? बाजार भी गवाह है, कुछ एक-दो आदमी वहां थोड़े थे? इसको भी जाने दीजिए। यह पर्चा पढ़िए। अगर यह बेचते होते, तो बीस की दर से हिसाब लगाते, या साढ़े उन्नीस से? मुफ्त में एक शरीफ के पीछे पड़े हैं, लेना एक न देना दो।

आखिर यह तय हुआ कि बाजार में चलकर तहकीकात की जाए। मियां हंसोड़

साहूकार, उनके मुनीम, जमादार और तमाशाई, सब मिलकर बाजार चले। वहां तहकीकात की, तो दलालों और दुकानदारों ने गवाही दी कि बेशक इनके पास अशर्फियां थीं और इन्होंने परखवाई भी थीं। अभी-अभी यहां से गए थे।

जमादार—लाला साहब, अब खैर इसी में है कि चुपके रहिए; नहीं तो बेढब ठहरेगी। आपकी साख जायगी और मुनीम की शामत आ जायगी।

महाजन—क्या अंधेर है ! चार हजार रुपयों पर पानी पड़ गया, इतने रुपये कभी उम्र भर में नहीं जमा किए थे, और जो है, हमीं को उल्लू बनाता है। खैर साहब, लीजिए, हाथ धोए !

दोनों आदमी घर पहुंचे, तो बांछें खिली जाती थीं। जाते ही दो सौ अशर्फियां खन-खन करके डाल दीं।

आज़ाद—देखो, यों लाते हैं। अब ये अशर्फियां हमारी भाभीजन के पास रखो।

हंसोड़—भाई, तुम एक ही उस्ताद हो। आज से मैं तुम्हारा शागिर्द हो गया।

आज़ाद—ले, भाभी से तो खुश-खबरी कह दो। बहुत मुंह फुलाए बैठी थीं।

मियां हंसोड़ ने घर में जाकर कहा—कहां हो ! क्या सो रहीं?

बीबी—क्या कमाई करके लाए हो, डपट रहे हो?

हंसोड़—(अशर्फियां खनकाकर) लो, इधर आओ, बहुत मिजाज न करो। ये लो, दस हजार रुपये की अशर्फियां।

बीबी—ये बुत्ते किसी और को दीजिएगा ! ये तो वही हैं, जो अभी मिर्जा के यहां से मंगवाई थीं।

हंसोड़—वह यह हैं, इधर।

बीबी—देखूं, (खिलखिलाकर) किसी के यहां फांदे थे क्या? आखिर लाए किसके घर से? बस, चुपके से हमारे संदूकचे में रख दो।

हंसोड़—क्यों न हो, मार खाये गाजी मियां, माल खाये मुजाबिर।

बीबी—सच बताओ, कहां मिल गईं? तुम्हें हमारी कसम !

हंसोड़—यह उन्हीं करामात है, जिन्हें तुम शोहदा और लुच्चा बनाती थीं।

बीबी—मियां हमारा कुसूर माफ करो। आदमी की तबीयत हमेशा एक-सी थोड़े ही रहती है। मैं तो तुम्हारी लौंड़ी हूं।

आज़ाद—(बाहर से) हम भी सुन रहे हैं भाभी साहब ! अभी तो आपने हमारे भाई बेचारे को डपट लिया था, घर से बाहर कर दिया था, हमको जो गालियां दीं, सो घाते में। अब जो अशर्फियां देखीं, तो प्यारी बीबी बन गईं। अब इनके कान न गरमाइएगा, यह बेचारे बेबाप के हैं।

बीबी ने अंदर से कहा—आप हमारे मेहमान हैं। आपको क्या कहूं, आपकी हंसी सिर-आंखों पर।

चौबीस

बड़ी बेगम साहबा पुराने जमाने की रईसजादी थीं, टोने-टोटके में उन्हें पूरा विश्वास था। बिल्ली अगर घर में किसी दिन आ जाए, तो आफत हो जाए। उल्लू बोला और उनकी जान निकली। जूते पर जूता देखा और आग हो गईं। किसी ने सीटी बजाई और उन्होंने कोसना शुरू किया। कोई पांव पर पांव रखकर सोया और आपने ललकारा। कुत्ता गली में रोया और उनका दम निकल गया। रास्ते में काना मिला और उन्होंने पालकी फेर दी। तेली की सूरत देखी और खून सूख गया। किसी ने जमीन पर लकीर बनाई और उसकी शामत आई। रास्ते में कोई टोक दे, तो उसके सिर हो जाती थीं। सावन के महीने में चारपाई बनवाने की कसम खाई थी। जब देखा कि लड़कियां सयानी हो गईं तो शादी की फिक्र हुई। ऊंचे-ऊंचे घरों से पैगाम आने लगे। बड़ी लड़की हुस्नआरा की शादी एक रईस के लड़के से तय हो गई। हुस्नआरा पढ़ी-लिखी औरत थी। उसे यह कब मंजूर हो सकता था कि बिना देखे-भाले शादी हो जाए। जिसकी सूरत ख्वाब में भी नहीं देखी, जिसकी लियाकत और आदत की जरा भी खबर नहीं, उसके साथ हमेशा के लिए बांध दी जाऊंगी। सहेलियां तो उसे मुबारकबाद देती थीं और उसकी जान पर बनी हुई थी। या खुदा, किससे अपने दिल का दर्द कहूं? बोलूं; तो अड़ोस-पड़ोस की औरतें ताने दें कि यह लड़की तो सवार को खड़े-खड़े घोड़े से उतार ले। दिल ही दिल में बेचारी कुढ़ने लगी। अपनी छोटी बहन सिपहआरा से अपना दुःख कहती थी और दोनों बहनें गले मिलकर रोती थीं।

एक दिन दोनों बहनें बैठी हुई अखबार पढ़ रही थीं। उसमें एक शरीर लड़के की दास्तान छपी हुई थी। पढ़ने लगीं—"यह हजरत दो-बार कैद भी रह चुके हैं, और अफसोस तो यह है कि एक रईस के साहबजादे हैं। परसों रात को आपने यह शरारत की कि एक रईस के यहां कूदे और कोठरी का ताला तोड़कर अंदर घुसने लगे। महाजन की लड़की ने जो आहट पाई तो कुलबुलाकर उठ खड़ी हुई और अपनी मां को जगाया। जरी जागो तो, बिल्ली ने तेल का घड़ा गिरा दिया; बिल-बिल ! उसकी मां गड़बड़ा कर जो उठी, तो आप कोठरी के बाहर एक चारपाई के नीचे दबक रहे। उसने अपने लड़के को जगाया। वह जवान ताल ठोंककर चारपाई पर से कूदा। चोर का कलेजा कितना? आप चारपाई के नीचे से घबरा कर निकले। महाजन का लड़का भी उनकी तरफ झपट पड़ा और उन्हें उठाकर दे मारा। तब उस बदमाश ने कमर से छुरी निकाली और उस महाजन के पेट के भोंक दीं। आनन-फानन जान निकल गई। पड़ोसी और चौकीदार दौड़ पड़े और उस शरीफजादे को गिरफ्तार कर लिया। अब वह हवालात में है अफसोस की बात तो यह है कि उसकी शादी नवाब फरेदूंजंग की लड़की से करार पाई थी जिसका नाम हुस्नआरा है।"

यह लेख पढ़कर हुस्नआरा आठ-आठ आंसू रोने लगी। उसकी छोटी बहन उसके गले से चिमट गई और उसको बहुत कुछ समझा-बुझा कर अपनी बूढ़ी मां के पास गई। अखबार दिखाकर बोली—देखिए, क्या गजब हो गया था, आपने बेदेखे-भाले शादी मंजूर कर ली थी। बूढ़ी बेगम ने यह हाल सुना, तो सिर पीटकर बोली—बेटी,

आज तड़के जब मैं पलंग से उठी, तो पट से किसी ने छींका और मेरी बाईं आंख भी फड़कने लगी। उसी दम पांव-तले मिट्टी निकल गई। मैं तो समझती ही थी कि आज कुछ असगुन होगा। चलो, अल्लाह ने बड़ी खैर की। हुस्नआरा को मेरी तरफ से छाती से लगाओ और कह दो कि जिसे तुम पसंद करोगी, उसी के साथ निकाह कर दूंगी।

सिपहआरा अपनी बहन के पास आई, तो बांछें खिली हुई थीं। आते ही बोली–बहन, अब तो मुंह-मांगी मुराद पाई? अब उदास क्यों बैठी हो? खुदा-कसम, वह खुश-खबरी सुनाऊं कि जी खुश हो जाय।

हुस्नआरा–ऐ है, तो कुछ कहोगी भी। यहां क्या जाने, इस वक्त किस गम में बैठे हैं, यह खुशी का कौन मौका है?

सिपहआरा–ऐ वाह, हम यों बता चुके। बिना मिठाई लिए न बतावेंगे। अम्माजान ने कह दिया कि आप जिसके साथ जी चाहे, शादी कर लें। वह अब दखल न देंगी। हां, शरीफजादा और कल्ले-ठल्ले का जवान हो।

हुस्नआरा–खूबसूरती औरतों में देखी जाती है, मरदों को इससे क्या काम? हां, काला-कलूटा न हो, बस।

सिपहआरा–यह आप क्या कहती हैं। 'आदमी-आदमी अंतर, कोई हीरा कोई कंकर।' क्या चांद में गरहन लगाओगी?

हुस्नआरा–ऐ, तो सूत न कपास, कोरी से लठम-लठा !

इतने में बुड्ढे मियां पीरबख्श ने आवाज दी–बेटी, कहां हो, मैं भी आऊं?

सिपहआरा–आओ, आओ, तुम्हारी ही तो कसर थी। आज सबेरे-सबेरे कहां थे? कल तो बजरा ऐसा डांवाडोल होता था, जैसे तिनका बहा चला जाता है। कलेजा धक-धक करता था।

पीरबख्श–तुमसे कुछ कहना है बेटी ! देखो, तुम हमारी पोतियों से भी छोटी हो। तुम दोनों को मैंने गोदियों खिलाया है, और तुम्हारी मां हमारे सामने ब्याह आई हैं। तुम दोनों को मैं अपने बेटे से ज्यादा चाहता हूं। मैं जो कहूं, उसे कान लगाकर सुनना। तुम अब सयानी हुईं। अब मुझे तुम्हारी शादी की फिक्र है। पहले तुमसे सलाह ले लूं, तो बेगम साहब से अर्ज करूं। यों तो कोई लड़की आज तक बिन ब्याही नहीं रही; लेकिन वर उन्हीं लड़कियों को अच्छा मिलता है, जो खुशनसीब हैं। तुम्हारी मां हैं तो पुरानी लकीर की फकीर, मगर यह मेरा जिम्मा कि जिसे तुम पसंद करो, उसे वह भी मंजूर कर लेंगी। आजकल यहां एक शरीफ नौजवान आकर ठहरे हैं। सूरत शाहजादों की सी, आदत फरिश्तों की सी, चलन भलेमानसों का-सा, बदन छरहरा, दाढ़ी-मूंछ का नाम नहीं। अभी उठती जवानी है। शेर कहने में, बोलचाल में, इल्म व कमाल में अपना सानी नहीं रखते। तसवीर ऐसी खींचें कि बोल उठे। बाक-पटे में अच्छे-अच्छे बांकों के दांत खट्टे कर दिए। उनकी नस-नस में खूबियां कूट-कूटकर भरी हैं। अगर हुस्नआरा के साथ उनका निकाह हो जाए, तो खूब हो। पहले तुम देख लो। अगर पसंद आए, तो तुम्हारी मां से जिक्र करूं। हां, यह वही जवान हैं, जो बजरे के साथ तुमको देखते हुए बाग में जा रहे थे। याद आया?

हुस्नआरा—वहां तो बहुत से आदमी थे, क्या जाने, किसका कहते हो। बेदेखे-भाले कोई क्या कहे।

सिपहआरा--मतलब यह कि दिखा दो। भला देखें तो, हैं कैसे !

पीरबख्श—ऐसे जवान तो हमने आज तक कभी देखे न थे। वह नूर है कि निगाह नहीं ठहरती। कसम खुदा की, जो बात करे, रीझ जाए।

हुस्नआरा—हम बतावें, जब हम बजरे पर हवा खाने चलें तो उन्हें भी वहां लाओ? हम उनको देख लें, तब तुम अम्मां से कहा।

यहां ये बातें हो रही थीं, उधर मियां आज़ाद अपने हंसोड़ दोस्त के साथ इसी कोठी की तरफ टहलते चले आ रहे थे। रास्ते में आठ-दस गधे मिले। गधेवाला उन सबों पर कोड़े फटकार रहा था। आज़ाद ने कहा—क्यों भई, आखिर इन गधों ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है। जो पीटते जाते हो? कुछ खुदा का भी खौफ है, या नहीं? गधेवाले ने इसका तो कुछ जवाब न दिया, गद से एक और जमाई। तब तो मियां आज़ाद आग हो गए। बढ़कर गधे वाले के कई चांटे लगाए, अबे आखिर इनमें जान है या नहीं? अगर न चलते, तो हम कहते—खैर यों ही सही; खासे जा रहे हैं खटाखट, और आप पीट रहे हैं।

हंसोड़—आप कौन होते हैं बोलने वाले? उसके गधे हैं, जो चाहता है, करता है।

आज़ाद—भई, हमसे तो यह नहीं देखा जाता कि किसी बेजबान पर कोई आदमी जुल्म करे और हम बैठे देखा करें।

कोई दस ही कदम आगे बढ़े होंगे कि देखा, एक चिड़ीमार कंपे से लासा लगाए, टट्टी पर पत्ते जमाए चिड़ियों को पकड़ता फिरता है। मियां आज़ाद आग-भभूका हो गए। इतने में एक तोता जाल में आ फंसा। तब तो मियां आज़ाद बौखला गए। गुल मचाकर कहा—ओं चिड़ीमार, छोड़ दे इस तोते को, अभी-अभी छोड़। छोड़ता है या आऊं? चिड़ीमार हक्का-बक्का हो गया। बोला—साहब, यह तो हमारा पेशा है। आखिर इसको छोड़ दें, तो करें फिर क्या? आज़ाद बोले—भीख मांग, मजदूरी कर, मगर यह पेशा छोड़ दे। यह कहकर आपने झोला, कंपा, जाल, सब छीन-छान लिया। झोले को जो खोला तो सब जानवर फुर्र से उड़ गए। इतना ही नहीं, कंपे को काट-कूट कर फेंका, जाल को नोंच-नाच कर बराबर किया। तब जेब से निकाल कर दस रुपये चिड़ीमार को दिए और बड़ी देर तक समझाया।

हंसोड़—यार, तुम बड़े बेढब आदमी हो। मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि तुम सनक गए हो।

आज़ाद—भई, तुम समझते ही नहीं कि मेरा असल मतलब क्या है।

हंसोड़—आप अपना मतलब रहने दीजिए। मेरा-आपका साथ न होगा। कहीं आप किसी बिगड़े-दिल से भिड़ पड़े, तो आपके साथ मेरी भी शामत आ जाएगी।

आज़ाद—अच्छा, गुस्से को थूक दीजिए। चलिए हमारे साथ।

हंसोड़—अब तो रास्ते में न लड़ पड़िएगा?

आज़ाद—कह तो दिया कि नहीं।

दोनों आदमी आगे चले, तो क्या देखते हैं, राह में एक गाड़ीवान बैल की दुम ऐंठ रहा है। आज़ाद ने ललकारा—अबे तो गाड़ीवान, खबरदार, जो आज से बैल की दुम ऐंठी।

हंसोड़—फिर वही बात ! इतनी जल्दी भूल गए?

आज़ाद चुप हो गए। दोनों आदमी चुपचाप चलने लगे। थोड़ी देर में कोठी के करीब जा पहुंचे। एकाएक बूढ़े मियां पीरबख्श आते दिखाई दिए। अलेकसलेम के बाद बातें होने लगीं।

आज़ाद—कहिए, उधर भी गए थे?

पीरबख्श—हां साहब, गया क्यों न था। सबेरे-सबेरे जा पहुंचा और आपकी इतनी तारीफ की कि पुल बांध दिए। और फिर आप जानिए, गोकि बंदा आलिम नहीं, फाजिल नहीं, मुंशी नहीं, लेकिन बड़े-बड़े आलिमों की आंखें तो देखी हैं, ऐसी लच्छेदार बातें कीं कि आपका रंग जम गया। अब आपको देखने को बेकरार हैं। हां, एक बुरी पख यह है कि आपका इम्तिहान लेंगी। ऐसा न हो कि वह कुछ पूछ बैठें और आप बगलें झांकने लगें।

हंसोड़—भई, इम्तिहान का तो नाम बुरा। शायद रह गए, तो फिर?

आज़ाद—फिर आपका सिर ! रह जाने की एक ही कही। इम्तिहान के नाम से आप जैसे गौखों की जान निकलती है या मेरी?

पीरबख्श—तो मैं जाकर कह दूं कि वह आए हैं !

यह कहकर पीरबख्श घर में गये और कहा—वह आए हैं, कहो, तो बुला लाऊं।

सिपहआरा ने कहा—अजनबी का खट से घर में चला आना बुरी। पहले उनसे कहिए, चलकर बाग की सैर करें।

पीरबख्श बाहर गए और मियां आज़ाद को लेकर बाग में टहलने लगे। दोनों बहनें झरोखों से देखने लगीं। सिपहआरा बोली—बहन, सचमुच यह तो तुम्हारे लायक हैं। अल्लाह ने यह जोड़ी अपने हाथों से बनाई है।

हुस्नआरा—ऐ वाह, कैसी नादान हो ! भला शादी-ब्याह भी यों हुआ करते हैं?

सिपहआरा—मैं एक न मानूंगी।

हुस्नआरा—मुझसे क्यों झगड़ती हो, अम्मांजान से कहो।

सिपहआरा—अच्छा, तो मैं अम्मांजान के यहां जाती हूं, मगर देखिए, मुकर न जाइएगा।

यह कहकर सिपहआरा बड़ी बेगम के पास पहुंची और आज़ाद का जिक्र छेड़कर बोली—अम्मांजान, मैंने तो आज तक ऐसा खूबसूरत आदमी देखा ही नहीं। शरीफ, हंसमुख और पढ़े-लिखे। आप भी एक दफे देख लें।

बड़ी बेगम ने सिपहआरा को छाती से लगाया और हंसकर कहा—तू मुझसे उड़ती है? यह क्यों नहीं कहती कि सिखाई-पढ़ाई आई हूं।

सिपहआरा—नहीं अम्मांजान, आप उन्हें जरूर बुलाएं।

बेगम—हुस्नआरा से भी पूछा? वह क्या कहती हैं?

सिपहआरा—वह तो कहती हैं, अम्मांजान जिसे चाहें, उससे करें। मगर दिल

उनका आया हुआ है।

बेगम–अच्छा, बुलवा लो।

सिपहआरा वहां से लौटी, तो मारे खुशी के उछली पड़ती थी। फौरन पीरबख्श को बुलाकर कहा–आप मियां आज़ाद को अंदर लाइए। अम्मांजान उन्हें देखना चाहती हैं।

जरा देर में पीरबख्श मियां आज़ाद को लिए हुए बेगम के पास पहुंचे।

आज़ाद–आदाब बजा लाता हूं।

बेगम–जीते रहो बेटा ! आओ, इधर आकर बैठो। मिजाज तो अच्छे हैं? सिपहआरा तुम्हारी बड़ी तारीफ करती थी, और बेशक तुम हो इस लायक। तुमको देखकर तबीयत बहुत खुश हुई।

आज़ाद–आपकी जियारत का बहुत दिनों से शौक था। सच है, बड़े-बूढ़ों की क्या बात है !

बेगम–क्यों बेटा, हाथी को ख्वाब में देखें, तो कैसा?

आज़ाद–बहुत बुरा। मगर हां हाथी किसी पर अपनी सूंड़ फेर रहा हो, तो समझना चाहिए कि आई हुई बला टल गई।

बेगम–शाबाश, तुम बड़े लायक हो।

बेगम साहबा ने मियां आज़ाद को बड़ी देर तक बिठाया और साथ ही खाना खिलाया। आज़ाद हां में हां मिलाते जाते थे और दिल ही दिल में खिलखिलाते थे। जब शाम हुई, तो आज़ाद रुखसत हुए।

आसमान पर बादल छाए हुए थे, तेज हवा चल रही थी, मगर दोनों बहनों को बजरे पर सैर करने की धुन समाई। दरिया के किनारे आ पहुंचीं। पीरबख्श ने बजरा खोला और दोनों बहनों को बिठाकर सैर कराने लगे। बजरा बहाव पर फर्राटे से बहा जाता था। ठंडी-ठंडी हवाएं, काली-काली घटाएं, सिपहआरा की प्यारी-प्यारी बातें, बूदों का गिरना, लहरों का थिरकना अजब बहार दिखाता था। इतने में हवा ने वह जोर बांधा कि मेढा उछलने लगा। अब बजरे कि यह हालत है कि डांवाडोल हो रहा है। यह डूबा वह डूबा। पीरबख्श था तो खुर्राट, लेकिन उसके भी हाथ-पांव फूल गए, सैर-दरिया की कहानियां सब भूल गए। दोनों बहनें कांपने लगीं। एक-दूसरे को हसरत की निगाह से देखने लगीं। दोनों की दोनों रो रही थीं। मियां आज़ाद अभी तक दरिया के किनारे टहल रहे थे। बजरे को पानी में चक्कर खाते देखा, तो होश उड़ गए। इतने में एक दफे बिजली चमकी। सिपहआरा डरकर दौड़ी, मगर मारे घबराहट के नदी में गिर पड़ी। डूबते ही पहले गोता खाया और लगी हाथ-पांव फटफटाने। जरा देर के बाद फिर उभरी और फिर गोता खाया। आज़ाद ने यह कैफियत देखी, तो झटपट कपड़े उतारकर धम से कूद ही तो पड़े। पहली डुबकी मारी, तो सिपहआरा के बाल हाथ में आए। उन्होंने झप से जुल्फ को पकड़कर खींचा, तो वह उभरी। यह वही सिपहआरा है, जो किसी अनजान आदमी को देख कर मुंह छिपा लेती और फुर्ती से भाग जाती थी। मियां आज़ाद उसे साथ लिए, मल्लाही चीरते और खड़ी लगाते बजरे की तरफ चले। लेकिन बजरा हवा से बातें करता चला जाता था। पानी बल्लियों उछलता था। आज़ाद ने जोर से पुकारा–ओ मियां पीरबख्श, बजरा

रोको, खुदा के वास्ते रोको, पीरबख्श के होश-हवास उड़े हुए थे। बजरा खुदा की राह पर जिधर चाहता था, जाता था। मियां आज़ाद बहुत अच्छे तैराक थे; लेकिन बरसों से आदत छूटी हुई थी। दम फूल गया। इत्तिफाक से एक भंवर में पड़ गए। बहुत जोर मारा, मगर एक न चल सकी। उस पर एक मुसीबत यह और हुई कि सिपहआरा छूट गई। आज़ाद की आंखों से आंसू निकल पड़े। फिर बड़ी फुर्ती से झपटे, लाश को उभारा और लादकर चले। मगर अब देखते हैं, तो बजरे का कहीं पता ही नहीं। दिल में सोचा, बजरा डूब गया और हुस्नआरा लहरों का लुकमा बन गई। अब मैं सिपहआरा को लादे-लादे कहां तक जाऊं। लेकिन दिल में ठान ली कि चाहे बचूं, चाहे डूबूं, सिपहआरा को न छोड़ूंगा। फिर चिल्लाए–यारो, कोई मदद को आओ। एक बुड्ढा आदमी किनारे पर खड़ा यह नजारा देख रहा था। आज़ाद को इस हालत में देखकर आवाज दी–शाबाश बेटा, शाबाश ! मैं अभी आता हूं। यह कहकर उसने कपड़े उतारे और लंगोट बांधकर धम से कूद ही तो पड़ा। उसकी आवाज का सुनना था कि मियां आज़ाद को ढारस हुआ, वह तेजी के साथ चलने लगे। बुड्ढे आदमी ने दो ही हाथ खड़ी के लगाए थे कि सांस फूल गई और पानी ने इस जोर से थपेड़ा दिया कि पचास गज के फासले पर हो रहा। अब न आज़ाद को वह सूझता है और न उसको आज़ाद नजर आते हैं। मल्लाह ने बजरे पर से बुड्ढे को देख लिया। समझा कि मियां आज़ाद हैं। पुकारा–अरे। भाई आज़ाद, जोर करके इधर आओ। बुड्ढे ने बहुत हाथ-पैर मारे, न जा सका। तब पीरबक्श ने डांड़ संभाले और बुड्ढे की तरफ चले। मगर अफसोस, दो-चार ही हाथ रह गया था कि एक मगर ने भाड़-सा मुंह खोलकर बुड्ढे को निगल लिया। मल्लाह ने सिर पीटकर रोना शुरू किया–हाय आज़ाद, तुम भी जुदा हुए, बेचारी सिपहआरा का साथ दिया, यह आवाज मियां आज़ाद के कानों में भी पड़ी। समझे, वही बुड्ढा, जो टीले पर से कूदा था, चिल्ला रहा है। इतने में बजरा नजर आया तो बाग-बाग हो गए। अब यह बिलकुल बेदम हो चुके थे; लेकिन बजरे को देखते ही हिम्मत बंध गई। जोर से खड़ी लगानी शुरू की। बजरे के करीब आए, तो पीरबख्श ने पहचाना। मारे खुशी के तालियां बजाने लगे। आज़ाद ने सिपहआरा को बजरे में लिटा दिया और दोनों ने मिलकर उसके पेट से पानी निकाला। फिर लिटाकर अपने बैग में से कोई दवा निकाली और उसे पिला दी। अब हुस्नआरा की फिक्र हुई। वह बेचारी बेहोश पड़ी हुई थी। आज़ाद ने उसके मुंह पर पानी के छींटे दिए, तो जरा होश आया। मगर आंखें बंद। होश आते ही पूछा–प्यारी सिपहआरा कहां है? आज़ाद जीते बचे? पीरबख्श ने पुकार कर कहा–आज़ाद तुम्हारे सिरहाने बैठे हैं और सिपहआरा तुम्हारे पास लेटी हैं। इतना सुनना था कि हुस्नआरा ने आंख खोलीं और आज़ाद को देखकर बोली–आज़ाद, मेरी जान अगर तुम पर से फिदा हो जाए, तो इस वक्त मुझे उससे ज्यादा खुशी हो, जितनी सिपहआरा के बच जाने से हुई। मैं सच्चे दिल से कहती हूं, मुझे तुमसे सच्ची मुहब्बत है।

इतने में दवा का असर जो पहुंचा, तो सिपहआरा भी आहिस्ता से उठ बैठी। दोनों बहनें गले मिलकर रोने लगीं। हुस्नआरा बार-बार आज़ाद की बलाएं लेती थी। मैं तुम पर वारी हो जाऊं, तुमने आज वह किया, जो दूसरा कभी न करता।

हवा बंध गई थी, बजरा आहिस्ता-आहिस्ता किनारे पर आ लगा। आज़ाद ने घास पर लेटकर कहा। उफ, मर मिटे !

हुस्नआरा-बेशक सिपहआरा की जान बचाई, मेरी जान बचाई, इस बेचारे बुड्ढे की जान बचाई। इससे बढ़कर अब और क्या होगा।

पीरबख्श-मियां आज़ाद, खुदा तुमको ऐसा बुड्ढा करे कि तुम्हारे परपोते मुझसे बड़े हो-होकर तुम्हारे सामने खेलें। मैंने कुछ और ही समझा था। एक आदमी तैरता हुआ जाता था। मैंने समझा, तुम हो।

आज़ाद-हां, हां, मैं तो उसे भूल ही गया था। फिर वह कहां गया?

पीरबख्श-क्या कहूं, उसको तो एक मगर निगल गया।

आज़ाद-अफसोस। कितना दिलेर आदमी था। मुझे मुसीबत में देखकर धम से कूद पड़ा।

सिपहआरा-मुझ नसीबों-जली के कारण उस बेचारे की जान मुफ्त में गई। मेरी आंखों में अंधेरा-सा छाया हुआ है। इस दरिया का सत्यानाश हो जाय ! जिस वक्त मैं अपना गिरना और गोते लगाना याद करती हूं, तो रोएं खड़े हो जाते हैं। पहले तो मैंने खूब हाथ-पांव मारे, मगर जब नीचे बैठ गई तो मुंह में पानी जाने लगा। मैंने दोनों हाथों से मुंह बंद कर लिया। फिर मुझे कुछ याद नहीं।

हुस्नआरा-बड़े गाढ़े वक्त काम आए।

पीरबख्श-अब आप जरा सो रहिएगा, तो थकावट कम हो जाएगी।

तीनों आदमी थककर चूर हो गए थे। वहीं हरी-हरी घास पर लेटे, तो तीनों की आंख लग गई। चार घंटे तक सोते रहे। जब नींद खुली, तो घर चलने की ठहरी। पीरबख्श ने कहा-इस वक्त तो बजरे पर सवार होना हिमाकत है। सड़क-सड़क चलें।

आज़ाद-अजी, तो क्या हरदम तूफान आया करता है !

दोनों बहनों ने कहा-हम तो इस वक्त बजरे पर न चढ़ेंगे, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय।

आज़ाद ने कहा-जो इस वक्त झिझक गईं, तो उम्र भर खौफ लगता रहेगा।

हुस्नआरा-चलिए, रहने दीजिए, अब तो मारे थकावट के आपके बदन में इतनी ताकत भी नहीं रही होगी कि किसी की लाश को दो कदम भी ले चलिए। ना साहब, बंदी नहीं जाने की। बजरे की सूरत देखने से बदन कांपता है। हम तुम्हें भी न जाने देंगे।

सिपहआरा-आप बजरे पर बैठे, और हम इधर दरिया में फांद पड़े।

आखिर यह तय हुआ कि पीरबख्श बजरा लाएं और तीनों आदमी ऊपर-ऊपर घर की तरफ चलें।

आज़ाद ने मौका पाया, तो बोले-अब तो हमसे कभी परदा न होगा? हम आपको अपना दिल दे चुके। हुस्नआरा ने कुछ जवाब न दिया, शरमाकर सिर झुका लिया।

रात बहुत ज्यादा बीत गई थी। आज़ाद पीरबख्श के साथ सोए। सुबह को उठे, तो क्या देखते हैं, हुस्नआरा के साथ उनकी दो फुफेरी बहनें छमाछम करती चली आती हैं। एक का नाम जहानआरा था, दूसरी का गेतीआरा। दोनों बहनों ने आज़ाद

को झरोखे से देखा। तब जहानआरा हुस्नआरा से बोली–बहन, तुम्हारी पंसद की मैं कायल हो गई। ऐसा बांका जवान हमारी नजर से नहीं गुजरा।

सिपहआरा–हम कहते न थे कि मियां आज़ाद-सा तरहदार जवान कम होगा। फिर, मेरी तो उन्होंने जान ही बचाई है। जब तक जिऊंगी, तब तक उनका दम भरूंगी।

इतने में पीरबख्श भी आ पहुंचे। जहानआरा ने उनसे कहा–क्यों जी, इन सन से सफेद बालों में खिजाब क्यों नहीं लगाते? अब तो कोई दो सौ से ऊपर होंगे। क्या मरना बिलकुल भूल बैठे? तुम्हें तो मौत ने भी सांड़ की तरह छोड़ दिया !

पीरबख्श–बेटी, बहुत कट गई, थोड़ी बाकी है ! यह भी कट जाएगी। खिजाब लगाकर रूसियाह कौन हो !

सिपहआरा–आज़ाद से तो अब कोई परदा है नहीं। उन्हें भी न बुला लें?

गेतीआरा–कभी की जान-पहचान होती, तो मुजायका न था।

आज़ाद ने सामने से आकर कहा–फकीरों से भी जान-पहचान की जरूरत? फकीरों से कैसा परदा?

गेतीआरा–यह फकीर आप कब से हुए?

आज़ाद–जब से हसीनों की सोहबत हुई।

गेतीआरा–आप शायर भी तो हैं ! अगर तबीयत हाजिर हो, तो इस मिसरे पर एक गजल कहिए–

मरजें-इश्क लादवा देखा।

आज़ाद–तबीयत की तो न पूछिए, हर वक्त हाजिर रहती है; रहा दिमाग, वह अपने में नहीं। फिर भी आपका हुक्म कैसे टालूं। सुनिए–

शेख, काबे में तूने क्या देखा;
हम बुतों से मिले, खुदा देखा।
सोज-नाला ने कुछ असर न किया;
हमने यह साज भी बजा देखा।
आह ने मेरी कुछ न काम किया;
हमने यह तीर भी लगा देखा।
हर मरज की दवा मुकर्रर है;
मरजे-इश्क लादवा देखा।
शक्ले नाखुन है गरचे अबरुए-यार;
पर न इसको गिरहकुशा देखा।
हमने देखा न आशिके आज़ाद;
और जो देखा तो मुब्तिला देखा।

गेतीआरा–माशा-अल्लाह, कैसी हाजिर तबीयत !

आज़ाद–इंसाफ के तो यह माने हैं कि मैंने आपको खुश किया, अब आप मुझको खुश करें।

गेतीआरा–आप कुछ फर्माएं, मैं कोशिश करूंगी।

आज़ाद–यह तो मेरी सूरत ही से जाहिर है कि अपना दिल हुस्नआरा को दे

चुका हूं।

गेतीआरा–क्यों हुस्नआरा, मान क्यों नहीं जातीं? यह बेचारे तुम्हें अपना दिल दे चुके।

हुस्नआरा–वाह, क्या सिफारिश है ! क्यों मान लें, शादी भी कोई दिल्लगी है? मैं बेसमझे-बूझे हां न करूंगी। सुनिए साहब, मैं आपकी अदा, आपकी वफा, आपकी चाल-ढाल, आपकी लियाकत और शराफत पर दिल और जान से आशिक हूं; मगर यह याद रखिए, मैं ऐसा काम नहीं करना चाहती, जिससे पढ़ी-लिखी औरत बदनाम हों। हमें ऐसा चाल-चलन रखना चाहिए, जो औरों के लिए नमूना हो। इस शहर की सब औरतें मुझे देखती रहती हैं कि यह किस तरफ को जाती है। आपको कोई यहां जानता नहीं। आप पहले यहां शरीफों में इज्जत पैदा कीजिए, आपके यहां पंद्रहवें दिन मुशायरा हो और लोग आपको जानें। कोई कोठी किराए पर लीजिए और उसे खूब सजाइए, ताकि लोग समझें कि सलीके का आदमी है और रोटियों को मुहताज नहीं। शरीफजादों के सिवा ऐरों-गैरों से सोहबत न रखिए और हर रोज जुमा की नमाज पढ़ने के लिए मसजिद जाया कीजिए ! लेकिन दिखावा भी जरूरी है। एक सवारी भी रखिए और सुबह-शाम हवा खाने जाइए, अगर इन बातों को आप मानें, तो मुझे शादी करने में उज्र नहीं। यों तो मैं आपके एहसान से दबी हुई हूं, लेकिन आप समझदार आदमी हैं, इसलिए मैंने साफ-साफ समझा दिया।

आज़ाद–ऐसे समझदार होने से बाज आए ! हम गंवार ही सही। आपने जो कुछ कहा, सब हमें मंजूर है; लेकिन आप भी मुझे कभी-कभी यहां तक आने की इजाजत दीजिए और आपकी ये बहनें मुझसे मिला करें।

गेतीआरा–जरी फिंर तो कहिएगा ! आपको अपनी हुस्नआरा से काम है, या उनकी बहनों से? हुस्नआरा ने आपसे जो कुछ कहा, उसको गौर कीजिए। अभी जल्दी न कीजिए। आप शराब तो नहीं पीते?

आज़ाद–शराब की सूरत और नाम से नफरत है।

हुस्नआरा–फिर आपके पास बजरे पर कहां से आई, जो आपने सिपहआरा को पिलाई।

आज़ाद–वाह, वह तो दवा थी।

जहानआरा–ऐ बाजी, भैया कब से सो रहा है। जरा जगा दो। दो घड़ी खेलने को जी चाहता है।

गेतीआरा–ना, कहीं ऐसा गजब भी न करना। बच्चे जब सोते हों, तो उनको जगाना न चाहिए। उनको जगाना उनकी बाढ़ को रोकना है।

हुस्नआरा–इस वक्त हवा बड़े जोर-से चल रही है और तुमने भैया को बारीक शरबती पहना दी है। ऐ दिलबहार, फलालेन का कुर्ता नीचे पहना दो। यह रुपया कौन भैया के हाथ में दे गया? और जो खेलते-खेलते मुंह में ले जाय तो?

दिलबहार–ऐ हुजूर, छीन तो लूं, जब वह दे भी। वह तो रोने लगता।

हुस्नआरा–देखो, हम किस तरकीब से ले लेते हैं, भला रोवे तो, (चुमकार कर) भैया, (तालियां बजाकर) भैया, लो, तुझे चीज मंगा दूं।

यह कहकर हुस्नआरा ने लड़के को गुदगुदाया। लड़का हंस पड़ा और रुपया हाथ से अलग।

दिलबहार–मौसी को कैसे चुपचुपाते रुपया दे दिया और हमने हाथ ही लगाया था कि गुल मचाने लगा।

गेतीआरा–उम्र भर तुमने लड़के पाले, मगर पालना न आया। बच्चों का पालना कुछ हंसी-खेल थोड़े ही है।

दिलबहार–अभी मेरा सिन ही क्या है कि ये बातें जानूं।

गेतीआरा–देखो रात को दरख्त के तले बच्चे को न सुलाया करो। बच्चा बीमार हो जाता है।

दिलबहार–हां, सुना है, लड़के भूत-प्रेत के झपेट में आ जाते हैं।

हुस्नआरा–झपेट और भूत-प्रेत सब ढकोसला है। रात को दरख्त के नीचे सोना इसलिए बुरा है कि रात को दरख्त से जहरीली हवा निकलती है।

इधर तो ये बातें हो रही थीं, औरतों की तालीम का जिक्र छिड़ा हुआ था, हुस्नआरा औरतों की तालीम पर जोर दे रही थी, उधर मियां पीरबख्श को बाल बनवाने का शौक जो चर्राया, तो हज्जाम को बुलवाया। हज्जाम बाल बनाते-बनाते कहने लगा–हुजूर, एक दिन मैं सराय में गया था, तो वहां यह भी टिके हुए थे–यही जो जवान से हैं, गोरे-गोरे, बजरे पर सैर करने गए थे–हां, याद आ गया, मियां आज़ाद, वह भी वहां मिले। वह साहब तुम्हारे, उस सराय की भठियारी से शादी करने को थे, मुल फिर निकल गए। उसने इन पर नालिश जड़ दी, तो वहां से भागे। उस भठियारी को ऊंट पर सवार करके रात को लिए फिरते थे। पीरबख्श ने यह किस्सा सुना, तो सन्नाटे में आ गए। बोले–खबरदार, और किसी से न कहना।

पच्चीस

मियां आज़ाद हुस्नआरा के यहां से चले, तो घूमते-घामते हंसोड़ के मकान पर पहुंचे, और पुकारा। लौंडी बोली–वह तो कहीं गए हैं, आप बैठिए।

आज़ाद–भाभी साहबा से हमारी बंदगी कह दो और कहो, मिजाज पूछते हैं।

लौंडी–बेगम साहबा सलाम कहती हैं और फर्माती हैं कि कहां रहे?

आज़ाद–इधर-उधर मारा-मारा फिरता था।

लौंडी–वह कहती हैं, हमसे बहुत न उड़िए। यहां कच्ची गोलियां नहीं खेलीं। कहिए, आपकी हुस्नआरा तो अच्छी है। यह बजरे पर हवा खाना और यहां आकर बुत्ते बताना।

आज़ाद–आपसे यह कौन कच्चा चिट्ठा कह गया?

लौंडी–कहती हैं कि मुझसे भी परदा है? इतना तो बता दीजिए कि बारात किस दिन चढ़ेगी? हमने सुना है, हुस्नआरा आप पर बेतरह रीझ गईं। और, क्यों न

रीझे, आप भी तो माशाअल्लाह गबरू जवान हैं।

आज़ाद–फिर भाई किसके हैं, जैसे वह खूबसूरत, वैसे हम।

लौंडी–फर्माती हैं कि धांधली रहने दीजिए।

आज़ाद–भाभी साहब, यह घूंघट कैसा? हमसे कैसा परदा?

इतने में किसी ने पीछे से मियां आज़ाद की आंखें बंद कर लीं।

आज़ाद चिल्ला उठे–भाई साहब !

हंसोड़–वहां तो आपने खूब रंग जमाया।

आज़ाद–अजी, आपकी दुआ है, मैं भला क्या रंग जमाता। मगर दोनों बहनें एक से एक बढ़ कर हैं। हुस्नआरा की दो बहनें और आई थीं। वल्लाह, खूब मजे रहे।

हंसोड़–खुशनसीब हो भाई, जहां जाते हो, वहीं पौ-बारह होते हैं। वल्लाह, मान गया।

आज़ाद–मगर भाई, एक गलती हो गई। उन्होंने किसी तरह भांप लिया कि मैं शराब भी पीता हूं।

हंसोड़–बड़े अहमक हो भई, कोई ऐसी हरकत करता है। तुम्हारी सूरत से नफरत हो गई।

आज़ाद–अजी, मुझे तो अपनी सूरत से आप नफरत हो गई। मगर अब कुछ तदबीर तो बताओ?

हंसोड़–उसी बुड्ढे को सांटो, तो काम चले।

इस वक्त दोनों आदमी खाना खाकर लेटे। जब शाम हुई, तो दोनों हुस्नआरा की तरफ चले। भरी बरसात के दिन, कोई गोली के टप्पे पर गए होंगे कि पश्चिम की तरफ से मतवाली काली घटा झूमती हुई आई और दम के दम में चारों तरफ अंधेरा छा गया। दुकानदार दुकानें झटपट बंद करने लगे। खोंचेवालों ने खोंचा संभाला और लंबे हुए। कोई टट्टू को सोटे लगाता है, किसी का बैल दुम दबाए भागा जाता है। कहार पालकी उठाए, कदम जमाए उड़े जाते हैं, दहने, जंगी, बाएं चरखा–हूं-हूं-हूं। पैदल चलनेवाले तेज कदम उठाते हैं, पांयचे चढ़ाते हैं, किसी ने जूतियां बगल में दबाईं और सरपट भागा। किसी ने कमर कसी और घोड़े को एड़ दी। अंधेरा इस गजब का है कि राह सूझती ही नहीं, एक पर एक भद-भद करके गिरता है और मियां आज़ाद कहकहे लगाते हैं। क्यों हजरत, पूछना न पाछना और धमाक से लुढ़क जाना !

आज़ाद–बस, और थोड़ी दूर रह गया है।

हंसोड़–आपको थोड़ी दूर होगा, यहां तो कदम भर चलना मुश्किल हो रहा है। जरी देख-भाल कर कदम उठाइएगा। उफ्, हवा ने क्या जोर बांधा, मैं तो वल्लाह, कांपने लगा। अगर सलाह हो, घर पलट चलें। वह लीजिए, बूंदें भी पड़ने लगीं। किसी भले-मानुस के पास जाने का भला यह कौन मौका है।

आज़ाद–अजी, ये बातें उससे कीजिए, जो अपने होश में हो। यहां तो दीवानापन सवार है।

इतने में बड़ी बेगम का महल नजर पड़ा। आज़ाद ने मारे खुशी के टोपी उछाल

दी। तब तो हंसोड़ ने बिगड़कर उसे एक अंधे कुएं में फेंक दिया और कहा–बस, तुममें यही तो ऐब है कि अपने आपे में नहीं रहते। 'ओछे के घर तीतर, बाहर रखूं कि भीतर।'

आज़ाद–या तंग न कर नासेह नादां, मुझे इतना,
या लाके दिखा दे दहन ऐसा, कमर ऐसी।

तुम रूखे-फीके आदमी, चेहरे पर भूसा उड़ रहा है। तुम ये मुहब्बत की बातें क्या जानो?

जब महल के करीब पहुंचे, तो चौकीदार ने ललकारा–कौन? मियां हंसोड़ तो झिझके, मगर आज़ाद ने बढ़कर कहा–हम हैं, हम।

चौकीदार–अजी, हम का नाम तो फर्माइए, या ठंडी-ठंडी हवा खाइए।

आज़ाद–हम? हमारा नाम मियां आज़ाद है। तुम दिलबहार को इत्तिला कर दो।

खैर, किसी तरह आज़ाद अंदर पहुंचे। हुस्नआरा उस वक्त सो रही थीं और सिपहआरा बैठी एक शायर का दीवान पढ़ रही थी। आज़ाद की खबर सुनते ही बोली–कहां हैं कहां, बुला लाओ। मियां आज़ाद मकान में दाखिल हुए।

सिपहआरा–वह आए घर में हमारे
खुदा की कुदरत है;
कभी हम उनको, कभी
अपने घर को देखते हैं।

आज़ाद–यह रूखी खातिरदारी कब तक होगी? हमें दूल्हा भाई कब से कहिएगा?

सिपहआरा–खुदा वह दिन दिखाये तो।

आज़ाद–आपकी बाजी कहां हैं?

सिपहआरा–आज कुछ तबीयत नासाज है। दिलबहार, जगा दो। कहो मियां आज़ाद आए हैं।

हुस्नआरा अंगड़ाई लेती अठखेलियां करती चलीं और आज़ाद के करीब आकर बैठ गईं।

आज़ाद–इस वक्त हमारे दिल की कली खिल गई।

सिपहआरा–क्यों नहीं, फिर मुंह-मांगी मुराद भी तो मिल गई?

आज़ाद–आखिर अब हम कब तक तरसा करें? आज मैं बेकबुलवाए उठूं, तो आज़ाद नहीं।

हुस्नआरा–हमारा तो इस वक्त बुरा हाल है। नींद उमड़ी चली आती है। अब हमें सोने जाने दीजिए।

आज़ाद–(दुपट्टा पांव से दबाकर) हां, जाइए, आराम कीजिए।

हुस्नआरा–शरारत से आप बाज नहीं आते ! दामन तो दबाए हैं और कहते हैं, जाइए-जाइए, क्योंकर जायं?

आज़ाद–दुपट्टे को फेंक जाइए।

हुस्नआरा–बजा है, यह किसी और को सिखाइए, (बैठकर) अब साफ कह दूं।

आज़ाद–जरूर; मगर आपके तेवर इस वक्त बेढब हैं, खुदा ही खैर करे। जो

कुछ कहना हो कह डालिए। खुदा करे, मेरे मतलब की बात मुंह से निकले !

हुस्नआरा–आप लायक हैं, मगर एक परदेसी आदमी, ठौर न ठिकाना, घर न बार। किसी से आपका जिक्र करूं, तो क्या कहूं? किसके लड़के हैं? किसके पोते हैं? किस खानदान के हैं? शहर भर में यही खबर मशहूर हो जाएगी कि हुस्नआरा ने एक परदेसी के साथ शादी कर ली। मुझे तो इसकी परवा नहीं; लेकिन डर यह है कि कहीं इस निकाह से लोग पढ़ी-लिखी औरतों को नीची नजर से न देखने लगें। बात वह करनी चाहिए कि धब्बा न लगे। मैं पहले भी कह चुकी हूं और अब फिर कहती हूं कि शहर में नाम पैदा कीजिए, इज्जत कमाइए, चार भले आदमियों में आपकी कदर हो।

आज़ाद–कहिए, आग में फांद पडूं?

हुस्नआरा–माशा-अल्लाह, कही भी तो निराली? अगर आप आग में फांद पड़ें, तो लोग आपको सिड़ी समझेंगे।

सिपहआरा–कोई किताब लिखिए।

हुस्नआरा–नहीं; कोई बहादुरी की बात हो कि जो सुने, वाह-वाह करने लगे, और फिर अच्छी-अच्छी रईसजादियां चाहें कि उनके साथ मियां आज़ाद का ब्याह हो जाय। इस वक्त मौका भी अच्छा है। रूम और रूस में लड़ाई छिड़ने वाली है। रूम की मदद करना आपका फर्ज है। आप रूम की तरफ से लड़िए और जवांमर्दी के जौहर दिखाइए, तमगे लटकाए हुए आइए, तो फिर हिन्दोस्तान भर में आप ही की चर्चा हो।

आज़ाद–मंजूर, दिलोजान से मंजूर। जाऊं और बीच खेत जाऊं। मरे, तो सीधे जन्नत में जायेंगे। बचे, तो तुमको पायेंगे।

सिपहआरा–मेरे तो लड़ाई के नाम से होश उड़ जाते हैं। (हुस्नआरा से चिमटकर) बाजी, तुम कैसी बेदर्द हो, कहां काले कोसों भेजती हो। तुम्हें खुदा की कसम, इस खयाल से बाज आओ। आज़ाद जायेंगे, तो फिर उनकी सूरत देखने को तरस जाओगी। दिन-रात आंसू बहाओगी। क्यों मुफ्त में किसी की जान की दुश्मन हुई हो?

किनारे दरिया पहुंच के पानी,
पिया नहीं एक बूंद तिस पर,
चढ़ी है मौजों की हमसे त्यौरी
हुबाब आंखें बदल रहे हैं।

यह कहते-कहते सिपहआरा की आंखों से गोल-गोल आंसू की बूंदें गिरने लगीं।

हुस्नआरा–हैं-हैं, बहन, यह मुफ्त का रोना-धोना अच्छा स्वांग है, वह मुबारक दिन मेरी आंखों के सामने फिर रहा है, जब आज़ाद तमगे लटकाए हुए हमारे दरवाजे पर खड़े होंगे।

मियां आज़ाद पर इस वक्त वह जोबन था कि ओहोहो, जवानी फटी पड़ती थी, आंखें सुर्ख, जैसे कबूतर का खून; मुखड़ा गोरा, जैसे गुलाब का फूल; कपड़े वह बांके पहने थे कि सिर से पांव तक एक-एक अंग निखर गया था, टोपी वह बांकी कि बांकपन भी लोट जाय; कमर से दोहरी तलवारें लटकी हुईं। हुस्नआरा को उनका

चांद-सा मुखड़ा ऐसा भाया कि जी चाहा, इसी वक्त निकाह कर लूं; मगर दिल पर जब्त किया।

आज़ाद—आज हम घर से मौत की तलाश में ही निकले थे—

जब से सुना कि मरने का है नाम जिंदगी,
सिर से कफन को बांधे कातिल को ढूंढ़ते हैं।

सिपहआरा—प्यारे आज़ाद, खुदा के वास्ते इस खयाल से बाज आओ।

आज़ाद—या हाथ तोड़ जायेंगे, या खोलेंगे नकाब। हुस्नआरा-सी बीबी पाना दिल्लगी नहीं। अब हम फिर शादी का हर्फ भी जबान पर लाएं, तो जवांमर्द नहीं। अब हमारी-इनकी शादी उसी रोज होगी, जब हम मैदान से सुर्खरू होकर लौटेंगे। हम सिर कटवाएं, जख्म पर जख्म खाएंगे मगर मैदान से कदम न हटायेंगे।

सिपहआरा—जो आपने दालान तक भी कदम रखा तो हम रो-रोकर जान दे देंगे।

आज़ाद—तुम घबराओ नहीं, जीते बचे, तो फिर आयेंगे। हमारे दिल से हुस्नआरा की और तुम्हारी मुहब्बत जाती रहे, यह मुश्किल है। तुम मेरी खातिर से रोना-धोना छोड़ दो। आखिर क्या लड़ाई में सब के सब मर ही जाते हैं?

सिपहआरा—इतनी दूर जाकर ऐसी ही तकदीर हो, तो आदमी लौटे। अब मेरी जिंदगी मुहाल है। मुझे दफना के जाना। अल्लाह जाने, किन-किन जंगलों में रहोगे, कैसे-कैसे पहाड़ों पर चढ़ना होगा, कहां-कहां लड़ना-भिड़ना होगा। एक जरा-सी गोली तो हाथी का काम तमाम कर देती है, इनसान की कौन कहे। तुम वहां गोलियां खाओगे और हम दिन-रात बैठे-बैठे कुढ़ा करेंगे। एक-एक दिन एक-एक बरस हो जाएगा। और फिर क्या जाने, आओ न आओ, लड़ाई-चढ़ाई पर जाना कुछ हंसी थोड़े ही है। यह तो तुम्हीं मर्दों का काम है। हम तो यहीं से नाम सुन-सुनकर कांपते हैं।

हुस्नआरा—मेरी प्यारी बहन, जरा सब्र से काम लो।

सिपहआरा—न मानूंगी, न मानूंगी

हुस्नआरा—सुन तो लो।

सिपहआरा—जी, बस सुन चुकी। खून कीजिए, और कहिए, सुन तो लो।

हुस्नआरा—यह क्या बुरी-बुरी बातें मुंह से निकालती हो। हमें बुरा मालूम होता है। मैं उनको जबरदस्ती थोड़े ही भेजती हूं। वह तो आप जाते हैं।

सिपहआरा—समुंदर-समुंदर जाना पड़ेगा। कोई तूफान आ गया, तो जहाज ही डूब जाएगा।

आज़ाद—अब रात ज्यादा आई, आप लोग आराम करें, हम कल रात को यहां से कूच करेंगे।

सिपहआरा—इस तरह जाना था, तो हमारे पास दिल दुखाने आए क्यों थे? (हाथ पकड़कर) देखूं, क्योंकर जाते हैं।

आज़ाद—दिलोजिगर खून हो चुके हैं।

हवास तक अपने जा चुके हैं,

वही मुहब्बत का हौसला है,
हजार सदमे उठा चुके हैं।।

हुस्नआरा—हाय, किस गजब में जान पड़ी। हाथ-पांव टूटे जाते हैं, आंखें जल रही हैं। आज़ाद, अगर मुझे दुनिया में किसी की चाह है, तो तुम्हारी। लेकिन दिल से लगी है कि तुम रूसियों को नीचा दिखाओ। मरना-जीना मुकद्दर के हाथ है। कौन रहा है, कौन रहेगा।

ताज में जिनके टंकते थे गौहर;
ठोकरें खाते हैं वह सर-ता-सर।
है न शीरीं न कोहकन का पता;
न किसी जा है नल-दमन का पता है।
यही दुनिया का कारखाना है;
यह उलट फेर का जमाना है।

आज़ाद—हम तो जाते हैं, तुम सिपहआरा को समझाती रहना। नहीं तो राह में मेरे कदम न उठेंगे। कल रात को मिलकर कूच करूंगा।

हुस्नआरा—बहन, इनको जाने दो, कल आयेंगे।

सिपहआरा—जाइए, मैं आपको रोकने वाली कौन?

आज़ाद यहां से चले कि सामने से मियां चंडूबाज आते हुए मिल गए। गले से लिपटकर बोले—वल्लाह, आंखें आपको ढूंढ़ती थीं। सूरत देखने को तरस गए। वह जो चलते वक्त आपने तानकर चाबुक जमाया था, उसका निशान अब तक बना है। बारे मिले खूब। बी अलारक्खी तो मर गईं, बेचारी मरते वक्त खुदा की कसम, अल्लाह-अल्लाह कहा कीं और दम तोड़ने के पहले तीन दफा आज़ाद-आज़ाद कहकर चल बसीं।

आज़ाद ने चंडूबाज की सूरत देखी, तो हाथ-पांव फूल गए। रूम का जाना और तमगे लटकाना भूल गए। सोचे, अब इज्जत खाक में मिली। लेकिन जब चंडूबाज ने बयान किया कि अलारक्खी चल बसीं और मरते वक्त तक मेरे ही नाम की रट लगाती रही, तो बड़ा अफसोस हुआ। आंखों से आंसू बहने लगे। बोले—भाई, तुमने बुरी खबर सुनाई, हाय, मरते वक्त दो बातें भी न करने पाए।

चंडूबाज—क्या अर्ज करूं, कसम खुदा की, इस प्यार और इस हसरत से तुम्हें याद किया कि क्या कहूं। मेरी तो रोते-रोते हिचकी बंध गई। जरा-सा भी खटका होता तो कहतीं—आज़ाद आए। आप अपना एक रूमाल वहां भूल आए हैं, उसको हर रोज देख लिया करती थीं, मरते वक्त कहा कि हमारी कब्र पर यह रूमाल रख देना।

आज़ाद—(रोकर) उफ्, कलेजा मुंह को आता है। मुझे क्या मालूम था कि उस गरीब को मुझसे इतनी मुहब्बत थी।

चंडूबाज—एक गुलदस्ता अपने हाथ से बना कर दे गई हैं कि अगर मियां आज़ाद आ जाएं, तो उनको दे देना और कहना, अब हश्र में आपकी सूरत देखेंगे।

आज़ाद—भई, इसी वक्त दो। खुदा के वास्ते अभी लाओ। मैं तो मरा बेमौत।

लाओ, गुलदस्ता जरा चूम लूं। आंखों से लगाऊं, गले से लगाऊं।

चंडूबाज–(आंसू बहाकर) चलिए, मैं सराय में उतरा हुआ हूं। गुलदस्ता साथ है। उसको जान से भी ज्यादा प्यार करता हूं।

दोनों आदमी मिलकर चले, राह में अलारक्खी के रूप-रंग और भोली-भाली बातों का जिक्र रहा। चलते-चलते दोनों सराय में दाखिल हुए। मियां आज़ाद जैसे ही चंडूबाज की कोठरी में घुसे, तो क्या देखते हैं कि बी अलारक्खी बगुले के पर जैसा सफेद कपड़ा पहने खड़ी हैं। देखते ही मियां आज़ाद का रंग फक हो गया। चुप, अब हिलते हैं न बोलते हैं।

अलारक्खी–(तालियां बजाकर) आदाब अर्ज करती हूं। जरी इधर नजर कीजिए। यह कोसों की राह तय करके हम आप ही की जियारत के लिए आए हैं और आपको हमसे ऐसी नफरत कि आंख तक नहीं मिलाते ! वाह री किस्मत ! अब जरा सिर तो हिलाइए, गर्दन तो उठाइए, वह चांद-सा मुखडा तो दिखाइए। हाय, क्या जुल्म है, जिन पर हम जान देते हैं, वह हमारी सूरत से बेजार है ! कहिए, आपकी हुस्नआरा तो अच्छी हैं। जरा हमको तो उनका जोबन दिखाओ। हमने सुना, कभी-कभी बजरों पर दरिया की सैर को जाती हैं, कभी हमजोलियों को लेकर जश्न मनाती हैं। क्यों हजरत, हम बक रहे हैं? हमारा ही लहू पीए, जो इधर न देखे।

आज़ाद–खुदा की कसम, सिर्फ तुम्हीं को देखने आया हूं।

चंडूबाज–भई, आज़ाद की रोते-रोते हिचकी बंध गई थी। कसम खुदा की, मैंने जो यह फिकरा चुस्त किया कि अलारक्खी ने मरते वक्त आज़ाद-आज़ाद कह के दम तोड़ा, तो यह बेहोश होकर गिर पड़े।

अलारक्खी–खैर, इतनी तो ढारस हुई कि मरने के बाद भी हमको कोई पूछेगा। लेकिन–

आये तुरबत पे बहुत रोये, किया याद मुझे;
खाक उड़ाने लगे, जब कर चुके बरबाद मुझे।

आज़ाद–अलारक्खी, अब हमारी इज्जत तुम्हारे हाथ है। अगर तुम्हें हमसे मुहब्बत है, तो हमें दिक न करो। नहीं हम संखिया खाकर जान दे देंगे। अगर हमें जिलाना चाहती हो, तो हमें आज़ाद कर दो।

अलारक्खी–सुनो आज़ाद, हम भी शरीफजादी हैं, मगर अल्लाह को यही मंजूर था कि हम भठियारी बनकर रहें। याद है, हमारे बूढ़े मियां ने तुम्हें खत देकर हमारे मकान पर भेजा था और तुम कई दिन तक हमारे घर का चक्कर लगाते रहे थे? हम दिन-रात कुढ़ा करते थे। आखिर वह तो कब्र में पांव लटकाए बैठे ही थे, चल बसे। उस दिन हमने मसजिद में घी के चिराग जलाए। मुकद्दर खींचकर यहां लाया। लेकिन अल्लाह जानता है, जो मेरी आंखें किसी से लड़ी हों। तुमसे ब्याह करने का बहुत शौक था, लेकिन तुम राजी न हुए। अब हमने सुना है कि हुस्नआरा के साथ तुम्हारा निकाह होने वाला है। अल्लाह मुबारक करे। अब हमने आपको इजाजत दे दी, खुशी से ब्याह कीजिए, लेकिन हमें भूल न जाना। लौंडी बनकर रहूंगी, मगर तुमको न छोड़ूंगी।

आज़ाद–उफ्, तुम वह हो, जिसका उस बूढ़े से ब्याह हुआ था? यह भेद तो अब खुला। मगर हाय, अफसोस, तुमने यह क्या किया। तुम्हारी मां ने बड़ी ही बेवकूफी की, जो तुम जैसी कामिनी का एक बुड्ढे के साथ ब्याह कर दिया।

अलारक्खी–अपनी तकदीर !

कुछ देर तक आज़ाद बैठे अलारक्खी को तसल्ली देते रहे। फिर गला छुड़ाकर, चकमा देकर निकल खड़े हुए। कुछ ही दूर आगे बढ़े थे कि तबले की थपक कानों में आई। घर का रास्ता छोड़ महफिल में जा पहुंचे। देखा, वहां खूब धमा-चौकड़ी मच रही है। एक ने गजल गाई, दूसरी ने ठुमरी, तीसरी ने टप्पा। आज़ाद एक ही रसिया, वहीं जम गए। अब इस सनक को देखिए, कि गैर की महफिल और आप इंतजाम करते हैं, किसी हुक्के की चिलम भरवाते हैं, किसी गुड़गुड़ी को ताजा करवाते हैं ! कभी ठुमरी की फर्माइश, कभी गजल की। दस-पंद्रह गंवारों ने जो गाने की आवाज सुनी, तो धंस पड़े। मियां आज़ाद ने उन्हें धक्के देकर बाहर किया। मालिक मकान ने जो देखा कि एक शरीफ नौजवान आदमी इंतजाम कर रहे हैं, तो इनको पास बुलाया, तपाक से बिठाया, खाना खिलाया। यही बहार देखते-देखते आज़ाद ने रात काट दी। वहां से उठे, तो तड़का हो गया था।

मियां आज़ाद को आज ही रूम के सफर की तैयारी करनी थी। इसी फिक्र में बदहवास जा रहे थे। क्या देखते हैं, एक बाग में झूले पड़े हैं; कई लड़कियां हाथ-पांव में मेंहदी रचाए, गले में हार डाले पेंग लगा रही हैं और सब की सब सुरीली आवाज से लहरा-लहरा कर यों गा रही है–

नदिया-किनारे बेला किसने बोया, नदिया-किनारे;
बेला भी बोया, चमेली भी बोयी बिच-
बिच बोया रे गुलाब, नदिया-किनारे।

आज़ाद को यह गीत ऐसा भाया कि थोड़ी देर ठहर गए। फिर खुद झूले पर जा बैठे और पेंग लगाने लगे। कभी-कभी गाने भी लगते, इस पर लड़कियां खिलखिला कर हंस पड़ती थीं। एकाएक क्या देखते हैं कि एक काला-कलूटा मरियल सा आदमी खड़ा लड़कियों को घूर रहा है। आज़ाद ने कई बार यह कैफियत देखी, तो उनसे रहा न गया, एक चपत जमा ही तो दी। टीप खाते ही वह झल्ला उठा और गालियां देकर कहने लगा–न हुई विलायती इस वक्त पास, नहीं तो भुट्टा-सा सिर उड़ा देता। और जो कहीं जवान होता, तो खोदकर गाड़ देता। और जो कहीं भूखा होता, तो कच्चा ही खा जाता। और जो कहीं नशे की चाट होती, तो घोल के पी जाता।

आज़ाद पहचान गए, यह मियां खोजी थे। कौन खोजी? नबाब के मुसाहिब। कौन नबाब? वही बटेरबाज, जिनके सफशिकन को ढूंढ़ने आज़ाद निकले थे। बोले–अरे, भाई खोजी हैं? बहुत दिनों के बाद मुलाकात हुई। मिजाज तो अच्छा है?

खोजी–जी हां, मिजाज तो अच्छा है; लेकिन खोपड़ी भन्ना रही है। भला हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था। वह तो कहिए मैं तुम्हें पहचान गया; नहीं तो इस वक्त जान से मार डालता।

आज़ाद–इसमें क्या शक, आप हैं ही ऐसे दिलेर ! आप इधर कैसे आ निकले?

खोजी-आप ही की तलाश में तो आया था।

आज़ाद-नवाब तो अच्छे हैं?

खोजी-अजी वह गए चूल्हे में। यहां सर भन्ना रहा है। ले अब चलो, तुम्हारे साथ चलें। कुछ तो खिलवाओ यार। मारे भूख के बेदम हुए जाते हैं।

आज़ाद-हां, हां चलिए खूब शौक से।

दोनों मिलकर चले, तो आज़ाद ने खोजी को शराब की दूकान पर ले जाकर इतनी शराब पिलाई कि वह टें हो गए, उन्हें वही छोड़ मियां हंसोड़ के घर जा पहुंचे।

मियां हंसोड़ बहुत नाराज हुए कि मुझे तो ले जाकर हुस्नआरा के मकान के सामने खड़ा कर दिया और आप अंदर हो रहे। आधी रात तक तुम्हारी राह देखता रहा। यह आखिर आप रात को थे कहां?

आज़ाद अभी कुछ जवाब देने वाले ही थे कि एक तरफ से मियां पीरबख्श को आते देखा और दूसरी तरफ से चंडूबाज को। आप दूर ही से बोले-अजीब तरह के आदमी हो मियां। वहां से कहकर चले कि अभी आता हूं, पल भर की भी देर न होगी, और तब के गए-गए अब तक सूरत नहीं दिखाई, अलारक्खी बेचारी ढाढ़ें मार-मारकर रो रही हैं। चलिए उनके आंसू तो पोंछिए।

मियां पीरबख्श ने बातें सुनीं, तो उनके कान खड़े हुए। हज्जाम के मुंह से तो यह सुन ही चुके थे कि मियां आज़ाद किसी सराय में एक भठियारिन पर लट्टू हो गए थे, पर अब तक हुस्नआरा से उन्होंने यह बात छिपा रखी थी। इस वक्त जो फिर वही जिक्र सुना, तो दिल में सोचने लगे कि यहां तो लड़कियों को रात-रात भर नींद नहीं आती; हुस्नआरा तो किसी कदर जब्त भी करती हैं, मगर सिपहआरा बेचारी फूट-फूटकर रोती है, और यहां यह हैं कि कान पर जूं तक नहीं रेंगती। बोले-आप चले रहे हैं, या यहां बैठे हुए बी अलारक्खी के दुखड़े सुनिएगा? अगर कहीं दोनों बहनें सुन लें, तो कैसी हो? बस, अब भलमंसी इसी में है कि मेरे साथ चले चलिए, नहीं तो हुस्नआरा से हाथ धोइएगा और फिर अपनी फूटी किस्मत को रोइएगा।

चंडूबाज-मियां, होश की दवा करो? भला मजाल है कि यह अलारक्खी को छोड़कर यहां से जायं। क्या खूब, हम तो सैकड़ों कुएं झांकते यहां आए, आप बीच में बोलने वाले कौन?

आज़ाद-अजी, इन्हें बकने भी दो, हम तुम्हारे साथ अलारक्खी के पास चलेंगे, उस मुहब्बत की पुतली को दगा न देंगे। तुम घबराते क्यों हो? खाना तैयार है, आज मीठा पकवाया है; तुम जरा बाजार से लपककर चार आने की बालाई ले लो। मजे से खाना खायं। क्यों उस्ताद, है न मामले की बात, लाना हाथ।

चंडूबाज बालाई का नाम सुनते ही खिल उठे। झप से पैसे लिए और लुढ़कते हुए चले बालाई लाने। मियां आज़ाद उन्हें बुत्ता देकर पीरबख्श से बोले-चलिए, हजरत, हम और आप चलें। रास्ते में बातें होती जायेंगी।

दोनों आदमी वहां से चले। आज़ाद तो डबल चाल चलने लगे, पर मियां पीरबख्श पीछे रह गए। तब बोले-अभी, जरा कदम रोके हुए चलिए। किसी जमाने में हम भी जवान थे। अब यह फरमाइए कि यह अलारक्खी कौन है? जो कहीं हुस्नआरा

सुन पाए, तो आपकी सूरत न देखें; बड़ी बेगम तो तुमको अपने महल के एक मील इधर-उधर फटकने न दें। आप अपने पांव में आप कुल्हाड़ी मार रहे हैं। अब शादी-वादी होना खैर-सल्लाह है। सोच लीजिए कि अगर वहां इनकी बात चली, तो क्या जवाब दीजिएगा।

आज़ाद-जनाब, यहां सोचने का मर्ज नहीं। उस वक्त जो जबान पर आएगा, कह जाऊंगा। ऐसी वकालत करूं कि आप भी दंग हो जायं-जबान से फुलझड़ी छुटने लगें।

इतने में कोठी सामने नजर आई और जरा देर में दोनों आदमी महल में दाखिल हुए। सिपहआरा तो आज़ाद से मिलने दौड़ी, मगर हुस्नआरा अपनी जगह से न उठी। वह इस बात पर रूठी हुई थी कि इतना दिन चढ़ आया और मियां आज़ाद ने सूरत न दिखाई।

हुस्नआरा-बहन, इनसे पूछो कि आप क्या करने आए हैं?

आज़ाद-आप खुद पूछिए। क्या मुंह नहीं है या मुंह में जबान नहीं है!

सिपहआरा-यह अब तक आप कहां गायब रहे?

हुस्नआरा-अजी, हमें इनकी क्या परवा। कोई आए न आए, हम किसी के हाथ बिके थोड़े ही हैं।

सिपहआरा-बाजी की आंखें रोते-रोते लाल हो गईं।

हुस्नआरा-पूछो, आखिर आप चाहते क्या हैं?

आज़ाद-पूछे कौन, आखिर आप खुद क्यों नहीं पूछतीं-

कहूं क्या मैं तुझसे कि क्या चाहता हूं;
जफा हो चुकी, अब वफा चाहता हूं।
बहुत आशना हैं जमाने में, लेकिन-
कोई दोस्त दर्द-आशना चाहता हूं।

हुस्नआरा-इनसे कह दो, यहां किसी की वाही-तबाही बकबाद सुनने का शौक नहीं है। मालूम है, आप बड़े शायर की दुम हैं?

सिपहआरा-बहन, तुम लाख बनो, दिल की लगी कहीं छिपाने से छिपती है।

हुस्नआरा-चलो, बस, चुप भी रहो। बहुत कलेजा न पकाओ। हमारे दिल पर जो गुजर रही है, हम जानते हैं। चलो, हम और तुम कमरा खाली कर दें, जिसका जी चाहे बैठे, जिसका जी चाहे जाय। हयादार के लिए एक चुल्लू काफी है।

यह कहकर हुस्नआरा उठी और सिपहआरा भी खड़ी हुई। मियां आज़ाद ने सिपहआरा का पहुंचा पकड़ लिया। अब दिल्लगी देखिए कि मियां आज़ाद तो उसे अपनी तरफ खींचते हैं और हुस्नआरा अपनी तरफ घसीटती हुई कह रही हैं-हमारी बहन का हाथ कोई पकड़े, तो हाथ ही टूटे। जब हमने टका-सा जवाब दे दिया, तो फिर यहां आने वाला कोई कौन! वाह, ऐसे हयादार भी नहीं देखे!

आज़ाद-साहब, आप इतना खफा क्यों होती हैं? खुदा के वास्ते जरा बैठ जाइए। माना कि हम खतावार हैं, मगर हमसे जवाब तो सुनिए! खुदा गवाह है, हम बेकसूर हैं।

हुस्नआरा—बस-बस, जबान न खुलवाइए। बस अब रुख्सत। आप अब छह महीने के बाद सूरत दिखाइएगा, हम भी कलेजे पर पत्थर रख लेंगे।

यह कहकर हुस्नआरा तो वहां से चली गई और मियां आज़ाद अकेले बैठे-बैठे सोचने लगे कि इसे कैसे मनाऊं। आखिर उन्हें एक चाल सूझी। अरगनी पर से चादर उतार ली और मुंह ढांपकर लेट रहे। चेहरा बीमारों का-सा बना लिया और कराहने लगे। इत्तिफाक से मियां पीरबख्श उस कमरे में आ निकले। आज़ाद की सूरत जो देखी तो होश उड़ गए। जाकर हुस्नआरा से बोले—जल्द पलंग बिछवाओ, मियां आज़ाद को बुखार हो आया है।

हुस्नआरा—हैं हैं, यह क्या कहते हो ! पांव-तले से मिट्टी निकल गई।

सिपहआरा—कलेजा धड़-धड़ करने लगा। ऐसी सुनानी अल्लाह सातवें दुश्मन को भी न सुनाए।

हुस्नआरा—हाय मेरे अल्लाह मैं क्या करूं ! मैंने अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मारी।

जरा देर में पलंग बिछ गया ! हुस्नआरा, उसकी बहन, पीरबख्श और दिलबहार चारपाई के पास खड़े होकर आंसू बहाने लगे।

दिलबहार—मियां, किसी हकीम जी को बुलाओ।

सिपहआरा—चेहरा कैसा जर्द हो गया !

पीरबख्श—मैं अभी जाकर हकीम साहब को लाता हूं।

हुस्नआरा—हकीम जी का यहां क्या काम है? और, यों आप चाहे जिसको बुलाएं।

मियां पीरबख्श तो बाहर गए और हुस्नआरा पलंग पर जा बैठी, मियां आज़ाद का सिर अपने जानू पर रखा। सिपहआरा फूलों का पंखा झलने लगी।

हुस्नआरा—मेरी जबान कट पड़े। मेरी ही जली-कटी बातों ने यह बुखार पैदा किया।

यह कहकर उसने आहिस्ता-आहिस्ता आज़ाद की पेशानी को सहलाना शुरू किया। आज़ाद ने आंखें खोल दीं और बोले—

मेरे जनाजे को उनके कूचे में
नाहक अहबाब लेके आए;
निगाहे हसरत से देखते हैं
वह रुख से परदा हटा-हटा कर
सहर है नजदीक, शब है आखिर,
सरा से चलते हैं हम मुसाफिर,
जिन्हें है मिलना, वे सब हैं हाजिर,
जरस से कह दो, कोई सदा कर।

हुस्नआरा—क्यों हजरत, यह मक्कारी ! खुदा की पनाह, मेरी तो बुरी गत हो गई।

आज़ाद—जरा उसी तरह इन नाजुक हाथों से फिर माथा सहलाओ।

हुस्नआरा—मेरी बला जाती है, वह वक्त ही और था;

आज़ाद—मैंने कहा जो उनसे कि शब को यहीं रहो,

आंखें झुकाए बोले कि किस एतबार पर?

हुस्नआरा—आपने आखिर यह स्वांग क्यों रचा? छिपाइए नहीं, साफ-साफ बताइए।

आज़ाद—अब कहती हो कि तुम मेरी
महफिल में आए क्यों;
आता था कौन, कोई
किसी को बुलाये क्यों?
कहता हूं साफ-साफ
कि मरता हूं आप पर;
जाहिर जो बात हो,
उसे कोई छिपाये क्यों?

यहां मारे बुखार के दम निकल रहा है, आप मक्र समझती हैं।

यहां दोनों में यही नोकझोंक हो रही थी, इतने में मियां खोजी पता पूछते हुए आ पहुंचे।

खोजी—मियां होत, जरा आज़ाद को तो बुलाओ।

दरबान—किससे कहते हो? आये कहां से? हो कौन?

खोजी—ऐं, यह तो कुछ बातूनी-सा मालूम होता है। अबे, इत्तला कर दे कि ख्वाजा साहब आए हैं।

दरवान—ख्वाजा साहब? हमें तो जुलाहे से मालूम होते हो। भलेमानसों की सूरत ऐसी ही हुआ करती है?

आज़ाद ने ये बातें सुनीं, तो बाहर निकल आए और खोजी को बुला लिया।

खोजी—भाई, जरा आईना तो मंगवा देना।

आज़ाद—यह आईना क्या होगा, बंदगी न सलाम, बात न चीत, आते ही आते आईना याद आया। बंदर के हाथ में आईना भला कौन देने लगा !

खोजी—अजी मंगवाते हो या दिल्लगी करते हो। दरबान से हमसे झौड़ हो गई। मरदूद कहता है, तुम्हारी सूरत भलेमानसों की-सी नहीं। अब कोई उससे पूछे, फिर क्या चमार की-सी है, या पाजी की-सी।

आज़ाद—भई अगर सच पूछते हो, तो तुम्हारी सूरत से एक तरह का पाजीपन बरसता है। खुदा चाहे पाजी बनाए, मगर पाजी की सूरत न बनाए। पर अब उसका इलाज ही क्या?

खोजी—वाह, इसका कुछ इलाज ही नहीं? डॉक्टरों ने मुरदे तक के जिला लेने का तो बंदोबस्त कर लिया है,आप फरमाते हैं, इलाज ही नहीं। अब पाजी न बनेंगे, पाजी बनके जिए तो क्या।

आज़ाद—कल हम रूम जाने वाले हैं, चलते हो साथ?

खोजी—न चले, उस पर भी लानत, न ले चले, उस पर भी लानत !

आज़ाद—मगर वहां चंडू न मिलेगा, इतना याद रखिए।

खोजी—अजी अफीम मिलेगी कि वह भी न मिलेगी? बस, तो फिर हम अपना चंडू बना लेंगे। हमें जरूर ले चलिए।

आज़ाद अंदर जाकर बोले—हुस्नआरा, अब रुखसत का वक्त करीब आता जाता है, हंसी-खुशी रुखसत करो, खुदा ने चाहा तो फिर मिलेंगे।

हुस्नआरा की आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे। बोली—हाय, अंदरवाला नहीं मानता। उसको भी तो समझाते जाओ। यह किसका होकर रहेगा?

आज़ाद—तुम्हारी यह हालत देखकर मेरे कदम रुके जाते हैं। अब हमें जाने दो। जिंदगी शर्त है, हम फिर मिलेंगे और जश्न करेंगे। यह कहकर आज़ाद बाहर चले आए और खोजी के साथ चले। खोजी ने समझा था, रूम कहीं लखनऊ के आसपास होगा। अब जो सुना कि सात समुंदर पार जाना पड़ेगा, तो हक्का-बक्का हो गए। हाथ-पांव कांपने लगे। भई, हम समझते थे, दिल्लगी करते हो। यह क्या मालूम था कि सच-मुच तंग-तोबड़ा चढ़ा कर भागा ही चाहते हो। मियां, तुम लाख आलिम-फाजिल सही, फिर भी लड़के ही हो। यह खयाल दिल से निकाल डालो। एक जरा-सी चने के बराबर गोली पड़ेगी, तो टांय से रह जाओगे। आपको कभी मोरचे पर जाने का शायद इत्तिफाक नहीं हुआ। खुदा भलेमानस को न ले जाए। गजब का सामना होता है। वह गोली पड़ी, यह मर गया। दांय-दांय की आवाज से कान के परदे फट जाते हैं। तोप का गोला आया और अठारह आदमियों को गिरा दिया। गोला फटा और बहत्तर टुकड़े हुए, और एक-एक टुकड़े ने दस-दस आदमियों को उड़ा दिया। जो कहीं तलवार चलने लगी, तो मौत सामने नजर आती है, बेमौत जान जाती है। खटाखट तलवार चल रही है और हजारों आदमी गिरते जाते हैं। सो भई, वहां जाना कुछ खाला जी का घर थोड़े ही है। खुदा के लिए उधर रुख न करना। और, बंदा तो अपने हिसाब, जाने वाले को कुछ कहता है। हम एक तरकीब बताएं, वह काम क्यों न कीजिए कि हुस्नआरा आपको खुद रोके और लाखों कसमें दें। आप अंदर जाकर बैठिए और हमको चिक के पास बिठाइए। फिर देखिए, मैं कैसी तकरीर करता हूं कि दोनों बहनें कांप उठें; उनको यकीन हो जाय कि मियां आज़ाद गए और अंटागफील हुए। मैं साफ-साफ कह दूंगा कि भई आज़ाद जरा अपनी तसवीर तो खिंचवा लो। आखिर अब तो जाते ही हो। वल्लाह, जो कहीं यह तकरीर सुन पाए, तो हश्र तक तुम्हें न जाने दें और झप से शादी हो जाए।

आज़ाद—बस, अब और कुछ न फरमाइएगा। मरना-जीना किसी के अख्तियार की बात तो है नहीं, लाखों आदमी कोरे आते हैं और हजारों राह चलते लौट जाते हैं। हुस्नआरा हमसे कहे कि टर्की जाओ और हम बातें बनाएं, उसको धोखा दें ! जिससे मुहब्बत की उससे फरेब ! यह मुझसे हरगिज न होगा, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाए। आप मियां हंसोड़ के यहां जाइए और उनसे कहिए कि हम अभी आते हैं। हम पहुंचे और खाना, खाकर लंबे हुए। खोजी तो गिरते-पड़ते चले, मगर दो कदम जाकर फिर पलटे। भई, एक बात तो सुनो। क्या-क्या पकवा रखूं? आज़ाद बहुत ही झल्लाए। अजब नासमझ आदमी हो। यह भी कोई पूछने की बात है भला। उनके यहां जो कुछ मुमकिन होगा, तैयार करेंगे। यह कहकर आज़ाद तो अपने दो-चार दोस्तों से मिलने चले, उधर मियां खोजी हंसोड़ के घर पहुंचे। जाकर गुल मचाना शुरू किया कि जल्द खाना तैयार करो, मियां आज़ाद अभी-अभी जाने वाले हैं। उन्होंने

कहा है कि पांच सेर मीठे टुकड़े, सात सेर पुलाव, दस सेर फीरनी, दस ही सेर खीर, कोई चौदह सेर जरदा, कोई पांच सेर मुरब्बा और मीठे अचार की अचारियां जल्द तैयार हों। मियां हंसोड़ की बीबी खाना पकाने में बर्क थीं। हाथों-हाथ सब सामान तैयार कर दिया। मियां आज़ाद शाम को पहुंचे।

हंसोड़-कहिए, आज तो सफर का इरादा है। खाना तैयार है; कहिए, तो निकलवाया जाये। बर्फ भी मंगवा रखी है।

आज़ाद-खाना तो हम इस वक्त न खायेंगे, जरा भी भूख नहीं है।

हंसोड-खैर, आप न खाइएगा, न सही। आपके दोस्त कहां हैं? उनके साथ दो निवाले तुम भी खा लेना।

आज़ाद-दोस्त कैसे ! मैंने तो किसी दोस्त के लिए खाना पकाने को नहीं कहा था।

हंसोड-और सुनिएगा ! क्या आपने अपने ही लिए दस सेर खीर, अठारह सेर मीठे टुकड़े और खुदा जाने क्या-क्या अल्लम-गल्लम पकवाया है।

आज़ाद-आपसे यह कहा किस नामाकूल ने?

हंसोड़-खोजी ने, और किसने? बैठे तो हैं, पूछिए न।

आज़ाद-खोजी तुम मरभुखे ही रहे। यह इतनी चीजें क्या सिर पर लादकर ले जाओगे। लाहौल बिला कूबत !

खोजी-लाहौल काहे की? आप न खाइए, मैं तो डटकर चख चुका। रास्ते के लिए भी बांध रखा है।

आज़ाद-अच्छा, तो अब बोरियां-बंधना उठाइए, लादिए-फांदिए।

खोजी-जनाब, इस वक्त तो यह हाल है जैसे चूहे को कोई पारा पिला दे। अब बंदा लोट मारेगा। और यह तो बताओ, सवारी क्या है।

आज़ाद-इक्का।

खोजी-गजब खुदा का। तब तो मैं जा चुका। इक्के पर तो यहां कभी सवार ही नहीं हुए। और फिर खाना खाकर तो मर ही जाऊंगा।

खैर, मियां आज़ाद ने झटपट खाना खाया और असबाब कसकर तैयार हो गये। खोजी पड़े खर्राटे ले रहे थे ! रोते-गाते उठे। बाहर जाकर देखते हैं, तो एक समंद घोड़ी पूरी, अधमरा मरियल टट्टू। आज़ाद घोड़ी पर सवार हुए और मियां हंसोड़ की बीवी से बोले-भाभी, भूल न जाइएगा। भाई साहब तो भुलक्कड़ आदमी हैं, आप याद रखिएगा। आपके हाथ का खाना उम्र भर न भूलूंगा। उन्होंने रुखसत करते हुए कहा-जिस तरह पीठ दिखाते हो, खुदा करे, उसी तरह मुंह भी दिखाओ। इमाम जामिन को सौंपा।

अब सुनिए कि मियां खोजी ने अपने मरियल टट्टू को जो देखा, तो घबराये। घोड़े पर कभी जिंदगी भर सवार न हुए थे। लाख चाहते हैं कि सवार हो जायें, मगर हिम्मत नहीं पड़ती। यार लोग डराते हैं-देखो, देखो, वह पुस्त उछाली, वह दुलत्ती झाड़ी, वह मुंह खोलकर लपका, मगर टट्टू खड़ा है, कान तक नहीं हिलाता। एक दफे आंख बंद करके हजरत ने चाहा कि लद लें, मगर यारों ने तालियां जो बजायीं,

तो टट्टू भागा और मियां खोजी भद से जमीन पर। देखा, कहते न थे कि हम इस टट्टू पर न सवार होंगे। मगर आज़ाद ने घड़ी दिल्लगी देखने के लिए हमको उल्लू बनाया। वह तो कहो, हड्डी-पसली बच गयी, नहीं तो चुरमुर ही हो जाती। खैर, दो आदमियों ने उनको उठाया और लादकर घोड़ी की पीठ पर रख दिया। उन्होंने लगाम हाथ में ली ही थी कि एक बिगड़े-दिल ने चाबुक जमा दिया। टट्टू दुम दबाकर भागा और मियां खोजी लुढ़क गये। बारे आज़ाद ने आकर उनको उठाया।

खोजी–अब क्या रूम तक बराबर इस टट्टू ही पर जाना होगा?

आज़ाद–और नहीं क्या आपके वास्ते उड़नखटोला आयेगा?

खोजी–भला इस टट्टू पर कौन जाएगा?

आज़ाद–टट्टू, आप तो इसे टांघन कहते थे !

खोजी–भई, हमें आज़ाद कर दो। हम बाज आये इस सफर से?

आज़ाद–अरे बेवकूफ, रेल तक इसी पर चलना होगा। वहां से बम्बई तक रेल पर जायंगे।

मियां आज़ाद और खोजी आगे बढ़े। थोड़ी देर में खोजी का टट्टू भी गरमाया और आज़ाद की घोड़ी के पीछे कदम बढ़ाकर चलने लगा। चलते-चलते टट्टू ने शरारत की। बूट के हरे-भरे खेत देखे, तो उधर लपका। किसान ने जो देखा, तो लट्ठ लेकर दौड़ा और लगा बुरा-भला कहने। उसकी जोरू भी चमककर लपकी और कोसने लगी कि पलवइया मर जाय, कीड़े पड़ें, अभी-अभी पेट फटै, दाढ़ीजार की लहास निकलै। और किसान भी गालियां देने लगा–अरे यो टट्टू कौन सार केर आय? ससूर हमरे खेत में पैठाय दिहिस। मियां खोजी गालियां खाकर बिगड़ गये। उनमें एक सिफत यह थी कि बे-सोचे-समझे लड़ पड़ते थे; चाहे अपने से दुगुना-चौगुना हो, वह चिमट ही जाते थे। गुस्से की यह खासियत है कि जब आता है, कमजोर पर। मगर मियां खोजी का गुस्सा भी निराला था, वह जब आता था, शहजोर पर। किसान ने उनके टट्टू को कई लट्ठ जमाये, तो मियां खोजी तड़ से उतरकर किसान से गुंथ गये। वह गंवार आदमी, बदन का करारा और यह दुबले-पतले आदमी, हवा के झोंके में उड़ जायें। उसने इनकी गरदन दबोची और गद से जमीन पर फेंका। फिर उठे, तो उसकी जोरू इनसे चिमट गयी और लगी हाथापाई होने। उसने घूंसा जमाया और इनके पट्टे पकड़ कर फेंका, तो चारों खाने चित्त। दो थप्पड़ भी रसीद किये–एक इधर, एक उधर। किसान खड़ा हंस रहा है कि मेहरारू से जीत नाहीं पावत, यह मुसंडन से का लड़िहै भला। किसान की जोरू तो ठोंक-ठांक कर चल दी, और आपने पुकारना शुरू किया–कसम अब्बजान की, जो कहीं छुरा पास होता, तो इन दोनों की लाश इस वक्त फड़कती होती। वह तो कहिए, खुदा को अच्छा करना मंजूर था, कि मेरे पास छुरा न था, नहीं तो इतनी करौलियां भोंकता कि उमर भर याद करते। खड़ा तो रह ओ गीदी! इस पर गांव वालों ने खूब कहकहा उड़ाया। एक ने पूछा–क्यों मियां साहब, छुरी होती, तो क्या भोंककर मर जाते? इस पर मियां खोजी और भी आग हो गये।

मियां आज़ाद कोई दो गोली के टप्पे पर निकल गये थे। जब खोजी को पीछे

न देखा, तो चकराये कि माजरा क्या है? घोड़ी फेरी और आकर खोजी से बोले—यहां खेत में कब तक पड़े रहोगे? उठो, गर्द झाड़ो।

खोजी—करौली न हुई पास, नहीं तो इस वक्त दो लाशें यहां फड़कती हुई देखते।

आज़ाद—अजी, वह तो जब देखते तब देखते, इस वक्त तो तुम्हारी लोथ देख रहे हैं।

उन्होंने फिर खोजी को उठाया और टट्टू पर सवार कराया। थोड़ी देर में फिर दोनों आदमियों में एक खेत का फासला हो गया। खोजी से एक पठान ने पूछा कि शेख जी, आप कहां रहते हैं? हजरत ने झट से एक कोड़ा जमाया और कहा—अबे, हम शेख नहीं, ख्वाजा हैं। वह आदमी गुस्से से आग हो गया और टांग पकड़कर घसीटा, तो खोजी खट से जमीन पर। अब चारों खाने चित्त पड़े हैं, उठने का नाम नहीं लेते। आज़ाद ने जो पीछे फिरकर देखा, तो टट्टू आ रहा है, मगर खोजी नदारद। पलटे, देखें, अब क्या हुआ। इनके पास पहुंचे, तो देखा, फिर उसी तरह जमीन पर पड़े करौली की हांक लगा रहे हैं।

आज़ाद—तुम्हें शर्म नहीं आती ! कमजोरी मार खाने की निशानी। दम नहीं है, तो कटे क्यों मरते हो? मुफ्त में जूतियां खाना कौन जवांमरदी है?

खोजी—वल्लाह, जो करौली कहीं पास हो, तो चलनी ही कर डालूं। वह तो कहिए, खैरियत हुई कि करौली न थी, नहीं तो इस वक्त कब्र खोदनी पड़ती।

आज़ाद—अब उठोगे भी, या परसों तक यों ही पड़े रहोगे। तुमने तो अच्छा नाक में दम कर दिया।

खोजी—अजी, अब न उठेंगे, जब तक करौली न ला दोगे, बस अब बिना करौली के न बनेगी।

आज़ाद—बस, अब बेहूदा न बको; नहीं तो मैं अबकी एक लात जमाऊंगा।

खैर, दोनों आदमी यहां से चले तो खोजी बोले—यहां जोड़-जोड़ में दर्द हो रहा है। उस किसान की मुसंढ़ी औरत ने तो कचूमर ही निकाल डाला। मगर कसम है खुदा की, जो कहीं करौली पास होती, तो गजब ही हो जाता। एक को तो जीता छोड़ता ही नहीं।

आज़ाद—खुदा गंजे को पंजे नहीं देता। करौली की आपको हमेशा तलाश रही, मगर जब आये, पिट ही के आये; जूतियां ही खायीं। खैर, यह दुखड़ा कोई कहां तक रोये, अब यह बताओ कि हम क्या करें? जी मतला रहा है, बंद-बंद टूट रहा है, आंखें भी जलती हैं।

खोजी—लैनडोरी आ गयी। अब हजरत भी आते होंगे।

आज़ाद—यह लैनडोरी कैसी? और हजरत कौन? मैं कुछ नहीं समझा। जरा बताओ तो?

खोजी—अभी लड़के हो न, बुखार की आमद है। आंखों की जलन, जी का मतलाना, बदन का टूटना, सब उसी की अलामतें हैं। इस वक्त घोड़े पर सवार होकर चलना बुरा है। अब आप घोड़े से उतर पड़िए और चलकर कहीं लेट रहिए, कहना मनिए।

आज़ाद–यहां कोई अपना घर है, जो उतर पड़ूं? किसी से पूछो तो कि गांव कितनी दूर है। खुदा करे, पास ही हो, नहीं तो मैं यहीं गिर पड़ूंगा और कब्र भी यहीं बनेगी।

खोजी–अजी, जरा दिल को संभालो। कोई इतना घबराता है? कब्र कैसी? जरा दिल को ढारस दीजिए।

आज़ाद–वल्लाह, फुंका जाता हूं, बदन से आग निकल रही है।

खोजी–वह गांव सामने ही है, जरा घोड़ी को तेज कर दो।

आज़ाद ने घोड़ी को जरा तेज किया, तो वह उड़ गयी। खोजी ने भी कोड़े पर कोड़ा जमाना शुरू किया। मगर लद्दू टट्टू कहां तक जाता? आखिर खोजी ने झल्ला कर एक एड़ दी, तो टट्टू अगले पांव पर खड़ा हो गया और मियां खोजी संभल न सके, धम से जमीन पर आ रहे। अब टट्टू पर बिगड़ रहे हैं कि न हुई करौली इस वक्त, नहीं तो इतनी भोंकता कि बिलबिलाने लगता। खैर, किसी तरह उठे, टट्टू को पकड़ा और लदकर चले। दो-चार दिल्लगीबाज आदमियों ने तालियां बजायीं और कहना शुरू किया–लदा है, लदा है, लेना, जाने न पाये। खोजी बिगड़ खड़े हुए। हटो सामने से, नहीं तो हंटर जमाता हूं। मुझे भी कोई ऐसा-वैसा समझे हो ! मैं सिपाही आदमी हूं। नवाबी में दो-दो तलवारें कमर से लगी रहती थीं। अब लाख कमजोर हो गया हूं, लेकिन अब भी तुम जैसे पचास पर भारी हूं। लोगों ने खूब हंसी उड़ायी। जी हां, आप ऐसे ही जवांमर्द हैं। ऐसे सूरमा होते कहां हैं।

खोजी–उतरूं घोड़े से, आऊं?

यारों ने कहा–नहीं साहब, ऐसा गजब न कीजियेगा ! आप ठहरे पहलवान और सिपाही आदमी, कहीं मार डालिए आकर तो कोई क्या करेगा।

इस तरह गिरते-पड़ते एक सराय में पहुंचे और अंदर जाकर कोठरियां देखने लगे। सराय भर में चक्कर लगाये, लेकिन कोई कोठरी पसंद न आयी। भठियारियां पुकार रही हैं कि मुसाफिर इधर आओ, इधर देखो, खासी साफ-सुथरी कोठरी है। टट्टू बांधने की जगह अलग। इतना कहना था कि मियां खोजी आग हो गये। क्या कहा, टट्टू है, यह पीगू का टांघन है। एक भठियारी ने चमककर कहा–टांघन है या गधा? तब तो खोजी झल्लाये और छुरी और करौली की तलाश करने लगे। इस पर सराय भर की भठियारियों ने उन्हें बनाना शुरू किया। आखिर आप इतने दिक हुए कि सराय के बाहर निकल आये और बोले–भई, चलो, आगे के गांव में रहेंगे। यहां सब-के-सब शरीर हैं। मगर आज़ाद में इतना दम कहां कि आगे जा सकें। सराय में गये और एक कोठरी में उतर पड़े। खोजी ने भी बिस्तर जमाया। साईस तो कोई साथ था नहीं, खोजी को अपने ही हाथ से दोनों जानवरों के खरेरा करना पड़ा। भठियारी ने समझा, यह साईस है।

भठियारी–ओ साईस भैया, जरा घोड़ी को उधर बांधो।

खोजी–किसे कहती है री, साईस कौन है?

भठियारी–ऐ तो बिगड़ते क्यों हो मियां, साईस नहीं, चरकटे सही।

आज़ाद–चुप रहो, यह हमारे दोस्त हैं।

भठियारी–दोस्त हैं, सूरत तो भलेमानसों की-सी नहीं है।

खोजी–भई आज़ाद, जरा आईना तो निकाल देना। कई आदमी कह चुके। आज मैं अपना चेहरा जरूर देखूंगा। आखिर सबब क्या कि जिसे देखो, यही कहता है।

आज़ाद–चलो, वाहियात न बको, मेरा तो बुरा हाल है।

भठियारी ने चारपाई बिछा दी और आज़ाद लेटे।

खोजी ने कहा–अब तबीयत कैसी है?

आज़ाद–बुरी गत है; जी चाहता है, इस वक्त जहर खा लूं।

खोजी–जरूर, और उसमें थोड़ी संखिया भी मिला लेना।

आज़ाद–मर कमबख्त, दिल्लगी का यह मौका है?

खोजी–अब बूढ़ा हुआ, मरूं किस पर। मरने के दिन तो आ गये। अब तुम जरा सोने का खयाल करो। दो-चार घड़ी नींद आ जाय, तो जी हल्का हो जाये।

इतने में भठियारी ने आकर पूछा–मियां कैसे हो?

आज़ाद–क्या बताऊं, मर रहा हूं।

भठियारी–किस पर?

आज़ाद–तुम पर।

भठियारी–खुदा की संवार।

आज़ाद–किस पर?

भठियारी ने खोजी की तरफ इशारा करके कहा–इन पर।

खोजी–अफसोस, न हुई करौली।

आज़ाद–होती, तो क्या करते?

खोजी–भोंक लेते अपने पेट में।

आज़ाद–भई, अब कुछ इलाज करो, नहीं तो मुफ्त में दम निकल जायेगा।

भठियारी–एक हकीम यहां रहते हैं। मैं बुलाये लाती हूं।

यह कहकर बी भठियारी जाकर हकीम जी को बुला लायी। मियां आज़ाद देखते हैं, तो अजब ढंग के आदमी–धोती बांधे, गाढ़े की मिरजई पहने, चेहरे से देहातीपन बरस रहा है, आदमियत छू ही नहीं गयी।

आज़ाद–हकीम साहब, आदाब।

हकीम–नाहीं, दबाव नाहीं। बुखार में दाबे नुकसान होत है।

आज़ाद–आपका नाम?

हकीम–हमारा नाम दांगलू।

आज़ाद–दांगलू या जांगलू?

हकीम–नुस्खा लिखूं?

आज़ाद–जी नहीं, माफ कीजिए। बस, यहां से तशरीफ ले जाइए।

हकीम–बुखार में अक-बक करत हैं, चांद के पट्टे कतरवा डालो।

खोजी–कुछ बेधा तो नहीं हुआ ! न हुई करौली, नहीं तो सोंद पर रख देता।

हकीम–भाई, हमसे इनका इलाज न हो सकिहै। अब एक होय, तो इलाज करें। यो पागल को है हो? हमका अलई का पलवा बकत है ससुर।

आखिर खोजी ने झल्लाकर उनको उठा दिया और यह नुस्खा लिखा—आलूबुखारा दो दाना, तमरहिंदी छह माशा, अर्क गावजबां दो तोला।

आज़ाद—यह नुस्खा तो आप कल पिलायेंगे, यहां तो रात-भर काम ही तमाम हो जायगा।

खोजी—इस वक्त बंदा कुछ नहीं देने का। हां, आलू का पानी पीजिए, पांच दाने भिगोये देता हूं। खाना इस वक्त कुछ न खाना।

आज़ाद—वाह, खाना न मिला, तो मैं आप ही को चट कर जाऊंगा। इस भरोसे न रहिएगा।

खोजी—वल्लाह, एक दाना भी आपके पेट में गया और आप बरस भर तक यों ही पड़े रहे। आलू का पानी भी घूंट-घूंट करके पीना। यह नहीं कि प्याला मुंह से लगाया और गट-गट पी गये।

यह कहकर खोजी ने चंदन घिसकर आज़ाद की छाती पर रखा। पालक के पत्ते चारपाई पर बिछा दिए। खीरा काटकर माथे पर रखा और जरा-सा नमक बारीक पीसकर पांव में मला। तलवे सहलाये।

आज़ाद—यहां तो कोई हकीम भी नहीं।

खोजी—अजी, हम खुद इलाज करेंगे। हकीम न सही, हकीमों की आंखें तो देखी हैं।

आज़ाद—इलाज तक मुजायका नहीं, मगर मार न डालना भाई। हां ! जरा इतना एहसान करना।

आज़ाद की बेचैनी कुछ कम हुई, तो आंख लग गयी। एकाएक पड़ोस की कोठरी से शोरगुल की आवाज आयी। आज़ाद चौंक पड़े और पूछा—यह कैसा शोर है? भठियारी, तुम जरा जाकर उनको ललकारो।

खोजी—कहो कि एक शरीफ आदमी बुखार में पड़ा हुआ है। खुदा के वास्ते जरा खामोश हो जाओ।

भठियारी—मियां, मैं ठहरी औरतजात और वे मरदुए। और फिर अपने आपे में नहीं। जो मुझी पर पिल पड़े, तो क्या करूंगी? हां, भठियारे को भेजे देती हूं।

भठियारे ने जाकर जो उन शराबियों को डांटा, तो सब-के-सब उस पर टूट पड़े और चपतें मार-मारकर भगा दिया। इस पर भठियारी तैश में आकर उठी और उंगलियां मटकाकर इतनी गालियां सुनाईं कि शराबियों का नशा हिरन हो गया। वे इतना डरे कि कोठरी का दरवाजा बंद कर लिया।

लेकिन थोड़ी देर में फिर शोर हुआ और आज़ाद की नींद उचट गयी। खोजी की जो शामत आयी, तो शराबियों की कोठरी के दरवाजे को इस जोर से धमधमाया कि चूल निकल आयी। सब शराबी झल्लाकर बाहर निकल आये और खोजी पर बेभाव की पड़ने लगी। उन्होंने इधर-उधर छुरी और करौली की बहुत कुछ तलाश की, मगर खूब पिटे। इसके बाद वे सब सो गये, रात-भर कोई न मिनका। सुबह को उस कोठरी से रोने की आवाज आयी? खोजी ने जाकर देखा, तो एक आदमी मरा पड़ा है और बाकी सब खड़े रो रहे हैं। पूछा, तो एक शराबी ने कहा—भाई, हम

सब रोज शराब पिया करते हैं। कल की शराब बहुत तेज थी। हमने बहुत मना किया; पर बोतल की बोतल खाली कर दी। रात को हम लोग सोये, तो इतना अलबत्ता कहा कि कलेजा फुंका जा रहा है। अब जो देखते हैं, तो मरा हुआ है। आप तो जान से गया और हमको भी कत्ल कर गया।

खोजी-गजब़ हो गया ! अब तुम धरे जाओगे और सजा पाओगे !

शराबी-हम कहेंगे कि सांप ने काटा था।

खोजी-कहीं ऐसी भूल भी न करना।

शराबी-अच्छा, भाग जायंगे।

खोजी-तब तो जरूर ही पकड़े जाओगे। लोग ताड़ जायंगे कि कुछ दाल में काला है।

शराबी-अच्छा, हम कहेंगे कि छुरी मारकर मर गया और गले में छुरी भी भोंक देंगे।

खोजी-यह बात हिमाकत है, मैं जैसे कहूं, वैसे करो। तुम सब-के-सब रोओ और सिर पीटो। एक कहे कि मेरा सगा भाई था। दूसरा कहे कि मेरा बहनोई था; तीसरा उसे मामूं बताये। जो कोई पूछे कि क्या हुआ था, तो गुर्दे का दर्द बताना। खूब चिल्ला-चिल्लाकर रोना। जो यों आंसू न आवें तो मिरचें लगा लो। आंखों में धूल झोंक लो। ऐसा न हो कि गड़बड़ा जाओ और जेलखाने जाओ।

इधर तो शराबियों ने रोना-पीटना शुरू किया, उधर किसी ने जाकर थाने में जड़ दी कि सराय में कई आदमियों ने मिलकर एक महाजन को मार डाला। थानेदार और दस चौकीदार रप-रप करते आ पहुंचे। अरी ओ भठियारी, बता, वह महाजन कहां टिका हुआ था?

भठियारी-कौन महाजन? किसी का नाम तो लीजिए।

थानेदार-तेरा बाप, और कौन !

भठियारी-मेरा बाप? उसकी तलाश है, तो कब्रिस्तान जाइए।

थानेदार-खून कहां हुआ?

भठियारी-खून ! अरे तोबा कर बंदे ! खून हुआ होगा थाने पर।

थानेदार-अरे इस सराय में कोई मरा है रात को?

भठियारी-हां, तो यों कहिए। वह देखिए, बेचारे खड़े रो रहे हैं। उनके भाई थे। कल दर्द हुआ। रात को मर गये।

थानेदार-लाश कहां है?

शराबी-हुजूर, यह रखी है। हाय, हम तो मर मिटे। घर में जाकर क्या मुंह दिखायेंगे, किस मुंह से अब घर जायेंगे। किसी डॉक्टर को बुलवाइए, जरा नब्ज तो देख लें।

थानेदार-अजी, अब नब्ज में क्या रखा है। बेचारा बुरी मौत मरा। अब इसके दफन-कफन की फिक्र करो।

थानेदार चला गया, तो मियां खोजी खूब खिल-खिलाकर हंसे कि वल्लाह, क्या बात बनायी है। शराबियों ने उनकी खूब आवभगत की कि वाह उस्ताद, क्या

झांसा दिया। आपकी बदौलत जान बची; नहीं तो जाने किस मुसीबत में फंस जाते।

थोड़ी ही देर बाद किसी कोठरी से फिर शोर-गुल सुनायी दिया।

आज़ाद—अब यह कैसा गुल है भाई? क्या यह भी कोई शराबी है।

भठियारी—नहीं, एक रईस की लड़की है। उस पर एक परेत आया है। जरा सी लड़की, लेकिन इतनी दिलेर हो गयी है कि किसी के संभाले नहीं संभलती।

आज़ाद—यह सब ढकोसला है।

भठियारी—ऐ वाह, ढकोसला है। इस लड़की का भाई आगरे में था और वहां से पांच सौ रुपये अपने बाप की थैली से चुरा लाया। यहां जो आया, तो लड़की ने कहा कि तू चोर है, चोरी करके आया है।

आज़ाद—अजी, उस लड़के ने अपने बहन से कह दिया होगा, नहीं तो भला उसे क्या खबर होती?

भठियारी—भला गजलें उसे कहां से याद हैं?

आज़ाद—इसमें अचरज की कौन-सी बात है? तुम्हें भी दो-चार गजलें याद ही होंगी।

भठियारी—मैं यह न मानूंगी। अपनी आंखों देख आयी हूं।

आज़ाद तो खिचड़ी पकवाकर खाने लगे और मियां खोजी घास लाने चले। जब घसियारिन ने बारह आने मांगे, तो आपने करौली दिखायी। इस पर घसियारिन ने गट्ठा इन पर फेंक दिया। बेचारे गट्ठे के बोझ से जमीन पर आ रहे। निकलना मुश्किल हो गया। लगे चीखने—न हुई करौली, नहीं तो बता देता। अच्छे-अच्छे डाकू मेरा लोहा मानते हैं। एक नहीं, पचासों को मैंने चपरगट्टू किया है। यह घसियारिन मुझसे लड़े। अब उठाती है गट्ठा या आकर करौली भोंक दूं?

लोगों ने गट्ठा उठाया, तो मियां खोजी बाहर निकले। दाढ़ी-मूंछ पर मिट्टी जम गयी थी, लथ-पथ हो गये थे। उधर आज़ाद खिचड़ी खाकर लेटे ही थे कि के हुई और फिर बुखार हो आया। तड़पने लगे। तब तो खोजी भी घबराये। सोचे, अब बिना हकीम के काम न चलेगा? भठियारिन से पूछकर हकीम के यहां पहुंचे।

हकीम साहब पालकी पर सवार होकर आ पहुंचे।

आज़ाद—आदाब बजा लाता हूं।

खोजी—बेहद कमजोरी है। बात करने की ताकत नहीं।

हकीम—यह आपके कौन हैं?

खोजी—जी हुजूर, यह गुलाम का लड़का है।

हकीम—आप मुझे मसखरे मालूम होते हैं।

खोजी—जी हां, मसखरा न होता, तो लड़के का बाप ही क्यों होता !

आज़ाद—जनाब, यह बेहया-बेशर्म आदमी है। न इसको जूतियां खाने का डर, न चपतियाये जाने का खौफ। इसकी बातों का तो खयाल ही न कीजिए।

खोजी—हकीम साहब, मुझे तो कुछ दिनों से बवासीर की शिकायत हो गयी है।

हकीम—अजी, मैं खुद इस शिकायत में गिरफ्तार हूं। मेरे पास इसका आजमाया

हुआ नुस्खा मौजूद है।

खोजी–तो आपने अपने बवासीर का इलाज क्यों न किया?

आज़ाद–खोजी, तुम्हारी शामत आयी है। आज पिटोगे।

खैर, हकीम साहब ने नुस्खा लिखा और रुखसत हुए। अब सुनिये कि नुस्खे में लिखा था–रोगन-गुल। आपने पढ़ा रोगनगिल, यानी मिट्टी का तेल। आप नुस्खा बंधवाकर लाये और मिट्टी के तेल में पकाकर आज़ाद को पिलाया, तो मिट्टी के तेल की बदबू आयी। आज़ाद ने कहा–यह बदबू कैसी है? इस पर मियां खोजी ने उन्हें खूब ही ललकारा। वाह, बड़े नाजुक-मिजाज हैं, अब कोई इत्र पिलाये आपको, या केसर का खेत चराये, तब आप खुश हों। आज़ाद चुप हो रहे, लेकिन थोड़ी ही देर बाद इतने जोर का बुखार चढ़ा कि खोजी दौड़े हुए हकीम साहब के पास गये और बोले–जनाब, मरीज बेचैन है। और क्यों न हो, आपने भी तो मिट्टी का तेल नुस्खे में लिख दिया।

हकीम–मिट्टी का तेल कैसा? मैं कुछ समझा नहीं।

खोजी–जी हां, आप काहे को समझने लगे। आप ही तो रोगन-गिल लिख आये थे।

हकीम–अरे भले आदमी, क्या गजब किया ! कैसे जांगलुओं से पाला पड़ा है ! हमने लिखा रोगन-गुल, और आप मिट्टी का तेल दे आये ! वल्लाह, इस वक्त अगर आप मेरे मकान पर न आये होते, खड़े-खड़े निकलवा देता।

खोजी–आपके हवास तो खुद ही ठिकाने नहीं। आपके मकान पर न आया होता, तो आप निकलवा कहां से देते? जनाब, पहले फस्द खुलवाइए।

यह कहकर मियां खोजी लौट आये। आज़ाद ने कहा–भाई, हकीम को तो देख चुके, अब कोई डाक्टर लाओ।

खोजी–डाक्टरों की दवा गर्म होती है। बुखार का इलाज इन लोगों को मालूम ही नहीं।

आज़ाद–आप हैं अहमक ! जाकर चुपके से किसी डाक्टर को बुला लाइये।

खोजी पता पूछते हुए अस्पताल चले और डाक्टर को बुला लाये?

डाक्टर–जबान दिखाओ, जबान !

आज़ाद–बहुत खूब !

डाक्टर–आंखें दिखाओ?

आज़ाद–आंखें दिखाऊं, तो घबराकर भागो !

डाक्टर–क्या बक-बक करता है, आंख दिखा।

खैर, डाक्टर साहब ने नुस्खा लिखा और फीस लेकर चम्पत हुए। आज़ाद ने चार घंटे उनकी दवा की, मगर प्यास और बेचैनी बढ़ती गयी। सेरों बर्फ पी गये, मगर तसकीन न हुई। उल्टे और पेचिश ने नाक में दम कर दिया। सुबह होते मियां खोजी एक वैद्यराज को बुला लाये। उन्होंने एक गोली दी और शहद के साथ चटा दी। थोड़ी देर में आज़ाद के हाथ-पांव अकड़ने लगे। खोजी बहुत घबराये और दौड़े वैद्य को बुलाने। राह में एक होम्योपैथिक डाक्टर मिल गये। यह उन्हें घेर-घार कर लाये। उन्होंने एक छोटी-सी शीशी

से दवा की दो बूंदें पानी में डाल दीं। उसके पीते ही आज़ाद की तबीयत और भी बेचैन हो गयी।

मियां आज़ाद ने दो-तीन दिन में इतने हकीम, डाक्टर और वैद्य बदले कि अपनी ही मिट्टी पलीद कर ली। इस कदर ताकत भी न रही कि खटिया से उठ सकें। खोजी ने अब उन्हें डांटना शुरू किया—और सोइए ओस में ! जरा-सी लुंगी बांध ली और तर बिछौने पर सो रहे। फिर आप बीमार न हों, तो क्या हम हों। रोज कहता था कि ओस में सोना बुरा है; मगर आप सुनते किसकी हैं। आप अपने को तो जाली नूस समझते हैं और बाकी सबको गधा। दुनियां में बस, एक आप ही तो बुकरात हैं।

भठियारी—ऐ, तुम भी अजीब आदमी हो ! भला कोई बीमार को ऐसे डांटता है? जब अच्छे हो जायं, तो खूब कोस लेना। और जो ओस की कहते हो, तो मियां, यह तो आदत पर है। हम तो दस बरस से ओस ही में सोते हैं। आज तक जुकाम भी जो हुआ हो, तो कसम ले लो।

आज़ाद—कोसने दो। अब यहां घड़ी-दो-घड़ी के और मेहमान हैं। अब मरे। न जाने क़िस बुरी साइत घर से चले थे। हुस्नआरा के पास खत भेज दो कि हमको आकर देख जायं। आज इस वक्त सराय में लेटे हुए बातें कर रहे हैं, कल-परसों तक कब्र में होंगे—

आगोश-लहद में जब कि सोना होगा;
जुज खाक, न तकिया, न बिछौना होगा।
तनहाई में आह कौन होवेगा अनीस;
हम होवेंगे और कब्र का कोना होगा।

खोजी—मैं डरता हूं कि कहीं तुम्हें सरसाम न हो जाय।

भठियारी—चुप भी रहो, आखिर कुछ अक्ल भी है?

आज़ाद—मेरे दिन ही बुरे आये हैं। इनका कोई कसूर नहीं।

भठियारी—आपने भी तो हकीम की दवा की। हकीम लटकाये रहते हैं।

आज़ाद—खुदा हकीमों से बचाये। मूंग की खिचड़ी दे-देकर मरीज को अधमरा कर डालते हैं। उस पर प्याले भर-भर दवा। अगर दो महीने में भी खटिया छोड़ी, तो समझिए कि बड़ा खुशनसीब था।

खोजी—जी हां, जब डाक्टर न थे, तब तो सब मर ही जाते थे।

आज़ाद—खैर, चुप रहो, सिर मत खाओ। अब हमें सोने दो।

मियां आज़ाद की आंख लग गयी। खोजी भी ऊंघने लगे। एक आदमी ने आकर उनको जगाया और कहा—मेरे साथ आइये, आपसे कुछ कहना है। खोजी ने देखा, तो इनकी खासी जोड़ थी। उनसे अंगुल-दो-अंगुल दबते ही थे।

खोजी—तो आप पिले क्यों पड़ते हैं? दूर ही से कहिए, जो कुछ कहना हो।

मुसाफिर—मियां आज़ाद कहां हैं?

खोजी—आप अपना मतलब कहिए। यहां तो आज़ाद-वाजाद कोई नहीं है। आप अपना खास मतलब कहिए।

मुसाफिर–अजी, आज़ाद हमारे बहनोई हैं। हमारी बहन ने भेजा है कि देखो कहां हैं।

खोजी–उनकी शादी तो हुई नहीं, बहनोई क्योंकर बन गये?

मुसाफिर–कितने अक्ल के दुश्मन हो ! भला कोई बेवजह किसी को अपना बहनोई बनावेगा?

खोजी–भला आज़ाद की बीवी कहां हैं? हमको तो दिखा दीजिए।

मुसाफिर–अजी, इसी सराय के उस कोने में। चलो, दिखा दें। तुमसे क्या चोरी है।

मियां खोजी कोठरी के अंदर गये। बालों में तेल डाला। सफेद कपड़े पहने। लाल फुंदनेदार टोपी दी। मियां आज़ाद का एक खाकी कोट डाटा और जब खूब बन-ठन चुके, तो आईना लेकर सूरत देखने लगे। बस, गजब ही तो हो गया। दाढ़ी के बाल ऊंचे-नीचे पाये, मूंछें गिरी पड़ीं। आपने कैंची लेकर बाल बराबर करना शुरू किया। कैंची तेज थी, एक तरफ की मूंछ बिल्कुल उड़ गयी। अब क्या करते, अपने पांव में कुल्हाड़ी मारी। मजबूर होकर बाहर आये, तो मुसाफिर उन्हें देखकर हंस पड़ा। मगर आदमी था चालाक, जब्त किये रहा और खोजी को साथ ले चला। जाकर क्या देखते हैं कि एक औरत, इत्र में बसी हुई, रंगीन कपड़े पहने चारपाई पर सो रही है। जुल्फें काली नागिन की तरह लहराती हुई गर्दन के इर्द-गिर्द पड़ी हुई हैं। खोजी लगे आंखें सेंकने। इतने में उस औरत ने आंखें खोल दीं और खोजी को देखकर ललकारा–तुम कौन हो? यहां क्या काम?

खोजी–आपके भाई पकड़ लाये।

औरत–अच्छा, पंखा झलो, मगर आंखें बंद करके। खबरदार, मुझे न देखना।

खोजी पंखा झलने लगे और उस औरत ने झूठ-मूठ आंखें बंद कर लीं। जरा देर में आंख जो खोली, तो देखा कि खोजी आंखें फाड़-फाड़कर देख रहे हैं। उसका आंखें खोलना था कि मियां खोजी ने आंखें खूब जोर से बंद कर लीं।

औरत–क्यों जी, घूरते क्यों हो ! बताओ, क्या सजा दूं?

खोजी–इत्तिफाक से आंख खुल गयी।

औरत–अच्छा बताओ, मियां आज़ाद कहां हैं?

उधर मियां आज़ाद की आंख जो खुली, तो खोजी नदारद ! जब घंटों हो गये और खोजी न आये, तो उनका माथा ठनका कि कमजोर आदमी हैं ही, किसी से टर्राये होंगे, उसने गर्दन नापी होगी। भठियारे को भेजा कि जाकर ज़रा देखो तो। उसने हंसकर कहा–जरी से तो आदमी हैं, भेड़िया उठा ले गया होगा। दूसरा बोला–आज हवा सन्नाटे क। चलता ह, कह॰ उड़ गये होंगे। आखिर भठियारिन ने कहा कि उन्हें तो एक आदमी बुलाकर ले गया है। खोजी खूब बन-ठनकर गये हैं।

आज़ाद के पेट में चूहे दौड़ने लगे कि खोजी को कौन पकड़ ले गया। गिड़गिड़ाकर भठियारिन से कहा–चाहे जो हो, खोजी को लाओ। किसी से पूछो-पाछो। आखिर गये कहां?

इधर मियां खोजी उस औरत के साथ बैठे दस्तरख्वान पर हत्थे लगा रहे थे,

खाते जाते थे और तारीफें करते जाते थे। एक लुकमा खाया और कई मिनट तक तारीफ की। यह तो तारीफ ही करते रहे, उधर मियां मुसाफिर ने दस्तरख्वान साफ कर दिया। खोजी दिल में पछताये कि हमसे क्या हिमाकत हुई। पहले खूब पेट-भर खा लेते, फिर चाहे दिन भर बैठे तारीफ करते। उस औरत ने पूछा कि कुछ और लाऊं? शरमाइएगा नहीं। यह आपका घर है। खोजी कुछ मांगनेवाले ही थे कि मियां मुसाफिर ने कहा–नहीं जी, अब क्या हैजा कराओगी? यह कहकर उसने दस्तरख्वान हटा दिया और खोजी मुंह ताकते रह गये। खाना खाने के बाद पान की बारी आयी। दो ही गिलौरियां थीं। मुसाफिर ने एक तो उस औरत को दी और दूसरी अपने मुंह में रख ली। खोजी फिर मुंह देखकर रह गये। इसके बाद मुसाफिर ने उनसे कहा–मियां होत, अरे भाई, तुमसे कहते हैं।

खोजी–किससे कहते हो जी? क्या कहते हो?

मुसाफिर–यही कहते हैं कि जरा पलंग से उतरकर बैठो। क्या मजे से बराबर जाकर डट गये ! उतरा कि मैं पहुंचूं? और देखिएगा, आप पलंग पर चढ़कर बैठे हैं। अपनी हैसियत को नहीं देखता।

खोजी–चुप गीदी, न हुई करौली, नहीं तो भोंक देता।

औरत–करौली पीछे ढूंढ़िएगा, पहले जरा यहां से खिसककर नीचे बैठिए।

खोजी–बहुत अच्छा, अब बैठूं तो तोप पर उड़ा देना।

मुसाफिर–ले चलो, उठो, यह लो झाड़ू। अभी झाड़ू दे डालो।

खोजी–झाड़ू तुम दो। हमको भी कोई भड़भूजा समझा है? हम खानदानी आदमी हैं। रईसों से इस तरह बातें कहता है गीदी !

मुसाफिर–हमें तो नानबाई-सा मालूम होता है। चलिए, उठिए, झाड़ू दीजिए। बड़े रईसजादे बनकर बैठे हैं। रईसों की ऐसी ही सूरत हुआ करती है?

खोजी ने दिल में सोचा कि जिससे मिलता हूं, वह यही कहता है कि भलेमानस की ऐसी सूरत नहीं होती। और, इस वक्त तो एक तरफ की मूंछ ही उड़ ही गयी है, भलामानस कौन कहेगा। कुछ नहीं, अब हम पहले मुंह बनवायेंगे ! बोले–अच्छा, रुखसत।

मुसाफिर–वाह, क्या दिल्लगी है। बैठिए, चिलम भरके जाइएगा।

मियां खोजी ऐसे झल्लाये कि चिमट ही तो गये। दोनों में चपतबाजी होने लगी। दोनों का कद कोई छः-छः बालिश्त का, दोनों मरियल, दोनों चंडूबाज। यह आहिस्ता से उनके चपत लगाते हैं, वह धीरे से इन पर धप जमाते हैं। उन्होंने इनके कान पकड़े, इन्होंने उनकी नाक पकड़ी। उन्होंने इनको काट खाया, इन्होंने उनको नोच लिया। और मजा यह कि दोनों रो रहे हैं। मियां खोजी करौली की धुन बांधे हुए हैं। आखिर दोनों हांफ गये। न यह जीते, न वह। खोजी लड़खड़ा कर गिरे, तो चारों खाने चित्त। उस हसीना ने दो-तीन धौल ऊपर से जमा दिये। इनका तो यह हाल हुआ, उधर मियां मुसाफिर ने चक्कर खाया और धम से जमीन पर। आखिर हसीना ने दोनों को उठाया और कहा–बस, लड़ाई हो चुकी। अब क्या कट ही मरोगे? चलो, बैठो।

खोजी–न हुई करौली, नहीं तो भोंक देता। हत् तेरे की !

मुसाफिर–वह तो मैं हांफ गया, नहीं तो दिखा देता आपको मजा। कुछ ऐसा-वैसा समझ लिया है। सैकड़ों पेच याद हैं।

हसीना–खबरदार, जो अब किसी की जबान खुली ! चलो, अब चलें मियां आज़ाद के पास। उनकी भी तो खबर लें, जिस काम के लिए यहां तक आये हैं।

शाम हो गयी थी। हसीना दोनों आदमियों के साथ आज़ाद की कोठरी में पहुंची, तो क्या देखती है कि आज़ाद सोये हैं और भठियारिन बैठी पंखा झल रही है। उसने चट आज़ाद का कंधा पकड़कर हिलाया। आज़ाद की आंखें खुल गयीं। आंख का खुलना था कि देखा, अलारक्खी सिरहाने खड़ी हैं और मियां चंडूबाज सामने खड़े पांव दबा रहे हैं। आज़ाद की जान-सी निकल गयी। कलेजा धड़-धड़ करने लगा, होश पैतरे हो गये। या खुदा, यहां यह कैसे पहुंची? किसने पता बताया? जरा बीमारी हलकी हुई, तो इस बला ने आ दबोचा–

एक आफत से तो मर-मरके हुआ था जीना;
पड़ गयी और यह कैसी, मेरे अल्लाह, नयी।

खोजी–हजरत, उठिए, देखिए, सिरहाने कौन खड़ा है। वल्लाह, फड़क जाओ तो सही।

आज़ाद–(अलारक्खी से) बैठिए-बैठिए, खूब मिलीं?

खोजी–अजी, अभी हमसे और आपके साले से बड़ी ठांय-ठांय हो गयी। वह तो कहिए, करौली न थी, नहीं सालारजंग के पलस्तर बिगाड़ दिये होते।

आज़ाद ने खोजी, चंडूबाज और भठियारी को कमरे के बाहर जाने को कहा। जब दोनों अकेले रह गये, तो आज़ाद ने अलारक्खी से कहा–कहिए, आप कैसे तशरीफ लायी हैं? हम तो वह आज़ाद ही नहीं रहे। वह दिल ही नहीं, वह उमंग ही नहीं। अब तो रूम ही जाने की धुन है।

अलारक्खी–प्यारे आज़ाद, तुम तो चले रूम को, हमें किस के सुपुर्द किये जाते हो? न हो, जमीन ही को सौंप दो। अब हम किसके होकर रहें?

आज़ाद–अब हमारी इज्जत और आबरू आप ही के हाथ है। अगर रूम से जीते वापस आये, तो तुमको न भूलेंगे। अल्लाह पर भरोसा रखो, वही बेड़ा पार करेगा। मेरी तबीयत दो-तीन दिन से अच्छी नहीं है। कल तो नहीं, परसों जरूर रवाना हूंगा।

खोजी–(भीतर आकर) बी अलारक्खी अभी पूछ रही थीं कि मुझको किसके सुपुर्द किये जाते हो; आपने इसका कुछ जवाब न दिया। जो कोई और न मिले, तो हमीं यह मुसीबत सहें। हमारे ही सुपुर्द कर दीजिए। आप जाइए, हम और वह यहां रहेंगे।

आज़ाद–तुम यहां क्यों चले आये? निकलो यहां से।

अलारक्खी बड़ी देर तक आज़ाद को समझाती रही–हमारा कुछ खयाल न करो, हमारा अल्लाह मालिक है। तुम हुस्नआरा से कौल हारे हो, तो रूम जाओ और जरूर जाओ, खुदा ने चाहा तो सुर्खरू होकर आओगे। मैं भी जाकर हुस्नआरा ही के पास रहूंगी। उन्हें तसल्ली देती रहूंगी। जरा जो किसी पर खुलने पावे कि मुझसे-तुमसे क्या ताल्लुक है। इतना खयाल रहे कि जहां-जहां डाक जाती हो, वहां-वहां से खत

बराबर भेजते जाना। ऐसा न हो कि भूल जाओ। नहीं तो वह कुढ़-कुढ़ कर मर ही जायंगी। और, मेरा तो जो हाल है, उसको खुदा ही जानता है। अपना दुख किससे कहूं?

आज़ाद–अलारक्खी, खुदा की कसम, हम तुमको अपना इतना सच्चा दोस्त नहीं जानते थे। तुमको मेरा इतना खयाल और मेरी इतनी मुहब्बत है, यह तो आज मालूम हुआ।

इस तरह दो-तीन घंटे तक दोनों ने बातें की। जब अलारक्खी रवाना हुई, तो दोनों गले मिलकर खूब रोये।

छब्बीस

आज़ाद ने सोचा कि रेल पर चलने से हिन्दोस्तान की हालत देखने में न आयेगी। इसलिए वह लखनऊ के स्टेशन पर सवार न होकर घोड़े पर चले थे। एक शहर से दूसरे शहर जाना, जंगल और देहात की सैर करना, नये-नये आदमियों से मिलना उन्हें पसंद था। रेल पर ये मौके कहां मिलते। अलारक्खी के चले जाने के एक दिन बाद वह भी चले। घूमते-घामते एक कस्बे में जा पहुंचे। बीमारी से तो उठे ही थे, थककर एक मकान के सामने बिस्तर बिछाया और डट गये। मियां खोजी ने आग सुलगायी और चिलम भरने लगे। इतने में उस मकान के अंदर से एक बूढ़े निकले और पूछा–आप कहां जा रहे हैं?

आज़ाद–इरादा तो बड़ी दूर का करके चला हूं, रूम का सफर है, देखूं पहुंचता हूं या नहीं।

बूढ़े मियां–खुदा आपको सुर्खरू करे। हिम्मत करने वाले की मदद खुदा करता है। आइए, आराम से घर में बैठिए। यह भी आप ही का घर है।

आज़ाद उस मकान में गये, तो क्या देखते हैं कि एक जवान औरत चिक उठाये मुसकरा रही है। आज़ाद ज्यों ही फर्श पर बैठे वह हसीना बाहर निकल आयी और बोली–मेरे प्यारे आज़ाद, आज बरसों के बाद तुम्हें देखा। सच कहना, कितनी जल्दी पहचान गयी। आज मुंह-मांगी मुराद पायी।

मियां आज़ाद चकराये कि यह हसीना कौन है, जो इतनी मुहब्बत से पेश आती है। अब साफ-साफ कैसे कहें कि हमने तुम्हें नहीं पहचाना। उस हसीना ने यह बात ताड़ ली और मुस्करा कर कहा–

हम ऐसे हो गये अल्लाह-अकबर, ऐ तेरी कुदरत।
हमारा नाम सुनकर हाथ वह कानों पे धरते हैं।

आप और इतनी जल्द हमें भूल जायं। हम वह हैं जो लड़कपन में तुम्हारे साथ खेला किये हैं। तुम्हारा मकान हमारे मकान के पास था। मैं तुम्हारे बाग में रोज फूल चुनने जाया करती थी। अब समझे कि अब भी नहीं समझे?

आज़ाद–आहाहा, अब समझा, ओफ् ओह ! बरसों बाद तुम्हें देखा। मैं भी सोचता था कि या खुदा यह कौन है कि ऐसी बेझिझक होकर मिली। मगर पहचानते, तो क्योंकर पहचानते? तब में और अब में जमीन-आसमान का फर्क है। सच कहता हूं जीनत, तुम कुछ और ही हो गयी हो।

जीनत–आज किसी भले का मुंह देखकर उठी थी। जब से तुम गये, जिंदगी का मजा जाता रहा–

यह हसरत रह गयी किस-किस मजे से जिंदगी कटती;
अगर होता चमन अपना, गुल अपना, बागवां अपना।

आज़ाद–यहां भी बड़ी-बड़ी मुसीबतें झेलीं, लेकिन तुम्हें देखते ही सारी कुलफतें दूर हो गयीं–

तब लुत्फे-जिंदगी है, जब अब्र हो, चमन हो,
पेशे-नजर हो साकी, पहलू में गुलबदन हो।

यहां अख्तर नहीं नजर आती !

जीनत–है तो, मगर उसकी शादी हो गयी। तुम्हें देखने के लिए बहुत तड़पती थी। उस बेचारी को चचाजान ने जान-बूझ कर खारी कुएं में ढकेल दिया। एक लुच्चे के पाले पड़ी है, दिन-रात रोया करती है। अब्बजान जब से सिधारे, इनके पाले पड़े हैं। जब देखो, सोटा लिये कल्ले पर खड़े रहते हैं। ऐसे शोहदे के साथ ब्याह दिया, जिसका ठौर न ठिकाना। मैं यह नहीं कहती कि कोई रुपये वाला या बहादुरशाह के खानदान का होता। गरीब आदमी की लड़की कुछ गरीबों ही के यहां खुश रहती है। सबसे बड़ी बात यह है कि समझदार हो, चाल-चलन अच्छा हो, यह नहीं कि पढ़े न लिखे, नाम मुहम्मद फाजिल; अलिफ के नाम बे नहीं जानते, मगर दावा यह है कि हम भी हैं पांचवें सवारों में। हमारे नजदीक जिसकी आदत बुरी हो उससे बढ़कर पाजी कोई नहीं। मगर अब तो जो होना था, सो हुआ; तुम खूब जानते हो आज़ाद कि साली को अपने बहनोई का कितना प्यार होता है, मगर कसम लो, जो उसका नाम लेने का भी जी चाहता हो। बीबी का जेवर सब बेचकर चट कर गया–कुछ दांव पर रख आया, कुछ के औने-पौने किए। मकान-वकान सब इसी जुए के फेर में घूम गया। अब टके-टके को मुहताज है। डर मालूम होता है कि किसी दिन यहां आकर कपड़े-लत्ते न उठा ले जाय। चचा को उसका सब हाल मालूम था, मगर लड़की को भाड़ में झोंक ही दिया। आती होगी, देखना, कैसी घुलकर कांटा हो गई है। हड्डी-हड्डी गिन लो। ऐ अख्तरी, जरी यहां आओ। मियां आज़ाद आए हैं।

जरा देर में अख्तरी आई। आज़ाद ने उसको और उसने आज़ाद को देखा, तो दोनों बे-अख्तियार खिल-खिलाकर हंस पड़े। मगर जरा ही देर में अख्तर की आंखें भर आईं और गोल-गोल आंसू टप-टप गिरने लगे। आज़ाद ने कहा–बहन, हम तुम्हारा सब हाल सुन चुके, पर क्या करें, कुछ बस नहीं। अल्लाह पर भरोसा रखो, वही सबका मालिक है। किसी हालत में आदमी को घबराना न चाहिए। सब्र करनेवालों का दर्जा बड़ा होता है।

इस पर अख्तर ने और भी आठ-आठ आंसू रोना शुरू किया।

जीनत बोली—बहन, आज़ाद बहुत दिनों के बाद आए हैं। यह रोने का मौका नहीं।

आज़ाद—अख़्तर, वह दिन याद है, जब तुमको हम चिढ़ाया करते थे और तुम अंगूर की टट्टी में रूठकर छिप रहती थीं; हम ढूंढ़कर तुम्हें मना लाते थे और फिर चिढ़ाते थे? हमको जो तुम्हारी दोनों की मुहब्बत है, इसका हाल हमारा खुदा ही जानता है। काश, खुदा यह दिन न दिखाता कि मैं तुमको इस मुसीबत में देखता। तुम्हारी वह सूरत ही बदल गयी।

अख़्तर—भाई, इस वक्त तुमको क्या देखा, जैसे जान में जान आ गयी। अब पहले यह बताओ कि तुम यहां से जाओगे तो नहीं? इधर तुम गये, और उधर हमारा जनाजा निकला। बरसों बाद तुम्हें देखा है, अब न छोड़ूंगी।

इसी तरह बातें करते-करते रात हो गयी। आज़ाद ने दोनों बहनों के साथ खाना खाया। तब जीनत बोली—आज पुरानी सोहबतों की बहार आंखों में फिर गयी। आइए, खाना खाकर चमन में चलें। बाग तो वीरान है, मगर चलिए, जरा दिल बहलायें। कसम लीजिए, जो महीनों चमन का नाम भी लेती हों—

नजर आता है गुल आजर्दा, दुश्मन बागबां मुझको;
बनाना था न ऐसे बोस्तां में आशियां मुझको।

खाना खाकर तीनों बाग की सैर करने चले।

आज़ाद—ओहोहो, यह पुराना दरख्त है। इसी के साये में हम रात-रात बैठे रहते थे। आहाहा, यह वह रविश है, जिस पर हमारा पांव फिसला था और हम गिरे, तो अख़्तर खूब खिल-खिलाकर हंसी। तुम्हारे यहां एक बूढ़ी औरत थी, जैनब की मां।

अख़्तर—थी क्यों, क्या अब नहीं है? ऐ वह हमसे तुमसे हट्टी-कट्टी है, खासी कठौता-सी बनी हुई है।

आज़ाद—क्या वह बूढ़ी अभी तक जिंदा है? क्या आकबत के बोरिये बटोरेगी?

चलते-चलते बाग में एक जगह दीवार पर लिखा देखा कि मियां आज़ाद ने आज इस बाग की सैर की।

इतने में जीनत के बूढ़े चचा आ पहुंचे और बोले—भई, हमने आज जो तुम्हें देखा, तो खयाल न आया कि कहां देखा। खूब आये। यह तो बतलाओ, इतने दिन रहे कहां? जीनत तुम्हें रोज याद किया करती थी, उठते-बैठते तुम्हारा ही नाम जबान पर रहता था? अब आप यहीं रहिए। जीनत को जो तुमसे मुहब्बत है, वह उसका और तुम्हारा, दोनों का दिल जानता होगा। मेरी दिली आरजू है कि तुम दोनों का निकाह हो जाय। इसी बाग में रहिए और अपना घर संभालिए। मैं तो अब गोशे बैठकर खुदा की बंदगी करना चाहता हूं।

मियां आज़ाद ये बातें सुनकर पानी-पानी हो गये। 'हां' कहे, तो नहीं बनती, 'नहीं' कहें, तो शामत आये। सन्नाटे में थे कि कहें क्या। आख़िर बहुत देर के बाद बोले—आपने जो कुछ फरमाया, वह आपकी मेहरबानी है। मैं तो अपने को इस लायक नहीं समझता। जिसका ठौर न ठिकाना, वह जीनत के काबिल कब हो सकता है?

मियां आज़ाद तो यहां चैन कर रहे थे, उधर मियां खोजी का हाल सुनिए। मियां आज़ाद की राह देखते-देखते पीनक जो आ गयी, तो टट्टू एक किसान के खेत में जा पहुंचा। किसान ने ललकारा-अरे, किसका टट्टू है? आप जरा भी न बोले। उसने खूब गालियां दीं। आप बैठे सुना किये। जब उसने टट्टू को पकड़ा और कांजीहौस ले चला, तब आप उससे लिपट गये। उसने झल्लाकर एक धक्का जो दिया, तो आपने बीस लुढ़कनियां खायीं। वह टट्टू को ले चला। जब खोजी ने देखा कि वह हारी-जीती एक नहीं मानता, तो आप धम से टट्टू की पीठ पर हो रहे। अब आगे-आगे किसान, पीछे-पीछे टट्टू और टट्टू की पीठ पर खोजी। राह चलते लोग देखते थे। खोजी बार-बार करौली की हांक लगाते थे। इस तरह कांजीहौस पहुंचे। अब कांजीहौस का चपरासी और मुंशी बार-बार कहते कि हजरत, टट्टू पर से उतरिए, इसे हम भीतर बंद करें, मगर आप उतरने का नाम नहीं लेते, ऊपर बैठे-बैठे करौली और तमंचे का रोना रो रहे हैं। आखिर मजबूर होकर मुंशी ने खोजी को छोड़ दिया। आप टट्टू लिये हुए मूंछों पर ताव देते घर की तरफ चले, गोया कोई किला जीत कर आये हैं।

उधर आज़ाद से अख्तर ने कहा-क्यों भाई, वे पहेलियां भी याद हैं, जो तुम पहले बुझवाया करते थे? बहुत दिन हुए, कोई चिस्तां सुनने में नहीं आयी।

आज़ाद-अच्छा, बूझिए-

आं चीस्त दहन हजार दारद;
(वह क्या है, जिसके सौ मुंह होते हैं)
दर हर दहने दो मार दारद;
(हर मुंह में दो सांप होते हैं)
शाहेस्त नशिस्ता वर सरे-तख्त;
(एक बादशाह तख्त पर बैठा हुआ है)
आं रा हमा दर शुमार दारद।
(उसी को सब गिनते हैं)

अख्तर-हजार मुंह। यह तो बड़ी टेढ़ी खीर है?

जीनत-गिनती कैसी?

आज़ाद-कुछ न बतायेंगे। जो खुदा की बंदगी करते हैं, वह आप ही समझ जायंगे।

अख्तर-अहाहा, मैं समझ गयी। अल्लाह की कसम, समझ गयी। तसबीह है, क्यों कैसी बूझी?

आज़ाद-हां। अच्छा, यह तो कोई बूझे-

राजा के घर आयी रानी;
औघट-घाट वह पीवे पानी।
मारे लाज के डूबी जाय;
नाहक चोट परोसी खाय।

जीनत-भई, हमारी समझ में तो नहीं आता। बता दो, बस, बूझ चुकी।

अख़्तर—वाह, देखो, बूझते हैं। घड़ियाल है।

आज़ाद—वल्लाह, खूब बूझी। अब की बूझिए—

एक नार जब सभा में आवे;
सारी सभा चकित रह जावे।
चातुर चातुर वाके यार;
मूरख देखे मुंह पसार।

जीनत—जो इसको कोई बूझ दे, तो मिठाई खिलाऊं।

आज़ाद—यह इस वक्त यहां है। बस, इतना इशारा बहुत है।

अख़्तर—हम हार गये; आप बता दें।

आज़ाद—बता ही दूं 'यह पहेली है?'

जीनत—अरे, कितनी मोटी बात पूछी और हम न बता सके !

अख़्तर—अच्छा, बस एक और कह दीजिए। लेकिन अबकी कोई कहानी कहिए। अच्छी हो, लड़कों को बहलाने की न हो।

आज़ाद ने अपनी और हुस्नआरा की मुहब्बत की दास्तान बयान करनी शुरू की। बजरे पर सैर करना, सिपहआरा का दरिया में डूबना और आज़ाद का उसको निकालना; हुस्नआरा का आज़ाद से रूम जाने के लिए कहना और आज़ाद का कमर बांधकर तैयार हो जाना, ये सारी बातें बयान कीं।

अख़्तर—बेशक सच्ची मुहब्बत थी।

आज़ाद—मगर मियां आशिक वहां से चले, तो राह में नीयत डावांडोल हो गयी। किसी और के साथ शादी कर ली।

अख़्तर—तोबा ! तोबा ! बड़ा बुरा किया। बस, जबानी दाखिला था।

जीनत—सच्ची मुहब्बत होती, तो हूर पर भी आंख न उठाता। रूम जाता और फिर जाता। मगर वह कोई मक्कार आदमी था।

आज़ाद—वह आशिक मैं हूं और माशूक हुस्नआरा है। मैं अपनी ही दास्तान सुनायी और अपनी ही हालत बतायी। अब जो हुक्म दो, वह मंजूर, जो सलाह बताओ वह कबूल। रूम जाने का वादा कर आया हूं, मगर यहां तुमको देखा, तो अब कदम नहीं उठता। कसम ले लो, जो तुम्हारी मर्जी के खिलाफ करूं।

इतना सुनना था कि अख़्तर की आंखें डबडबा आयीं और जीनत का मुंह उदास हो गया। सिर झुकाकर रोने लगी।

अख़्तर—तो फिर आये यहां क्या करने?

जीनत—तुम तो हमारे दुश्मन निकले। सारी उमंगों पर पानी फेर दिया—

शिकवा नहीं है आप जो अब पूछते नहीं;
वह शक्ल मिट गयी, वह शबाहत नहीं रही।

अख़्तर—बाजी, अब इनको यही सलाह दो कि रूम जायं। मगर जब वापस आयें, तो हमसे भी मिलें, भूल न जायं।

इतने में बाहर से आवाज आयी कि न हुई करौली, वर्ना खून की नदी बहती होती, कई आदमियों का खून हो गया होता। वह तो कहिए, खैर गुजरी। आज़ाद ने

पुकारा—क्यों भाई खोजी आ गये?

खोजी—वाह-वाह ! क्या साथ दिया; हमको छोड़कर भागे, तो खबर भी न ली। यहां किसान से डंडा चल गया, कांजीहौस में चौकीदार से लाठी-पोंगा हो गया; मगर आपको क्या।

आज़ाद—अजी चलो, किसी तरह आ तो गये।

खोजी—अजी, यही बूढ़े मियां राह में मिले, वह यहां तक ले आये। नहीं तो सचमुच घास खाने की नौबत आती।

मियां आज़ाद दूसरे दिन दोनों बहनों से रुखसत हुए। रोते-रोते जीनत की हिचकियां बंध गयीं। आज़ाद भी नर्म-दिल आदमी थे। फूट-फूटकर रोने लगे। कहा—मैं अपनी तसवीर दिये जाता हूं, इसे अपने पास रखना। मैं खत बराबर भेजता रहूंगा। वापस आऊंगा, तो पहले तुमसे मिलूंगा, फिर किसी से। यह कहकर दोनों बहनों को पांच-पांच अशर्फियां दीं। फिर जीनत के चचा के पास जाकर बोले—आप बुजुर्ग हैं, लेकिन इतना हम जरूर कहेंगे कि आपने अख्तरी को जीते जी मार डाला। दीन का रखा न दुनिया का। आदमी अपनी लड़की का ब्याह करता है, तो देख लेता है कि दामाद कैसा है, यह नहीं कि शोहदे और बदमाश के साथ ब्याह कर दिया। अब आपको लाजिम है कि उसे किसी दिन बुलाइए, और समझाइए, शायद सीधे रास्ते पर आ जाय।

बूढ़े मियां—क्या कहें भाई, हमारी किस्मत ही फूट गयी। क्या हमको अख्तरी का प्यार नहीं है? मगर करें क्या? उस बदनसीब को समझाये कौन? किसी की सुने भी।

आज़ाद—खैर, अब जीनत की शादी जरा समझ-बूझकर कीजिएगा। अगर जीनत किसी अच्छे घर ब्याही जाय और उसी का शौहर चलन का अच्छा हो, तो अख्तर के भी आंसू पुंछें कि मेरी बहन तो खुश है, यही सही। चार दिन जो कहीं बहन के यहां जाकर रहेगी, तो जी खुश होगा, बड़ी ढारस होगी। अब बंदा तो रुखसत होता है, मगर आपको अपने ईमान और मेरी जान की कसम है, जीनत की शादी देख-भाल कर कीजिएगा।

यह कहकर आज़ाद घर से बाहर निकले, तो दोनों बहनों ने चिल्ला-चिल्लाकर रोना शुरू किया।

आज़ाद—प्यारी अख्तर और प्यारी जीनत, खुदा गवाह है, इस वक्त अगर मुझे मौत आ जाय, तो समझूं, जी उठा। मुझे खूब मालूम है, मेरी जुदाई तुम्हें अखरेगी, लेकिन क्या करूं, किसी ऐसी-वैसी जगह जाना होता, तो खैर, कोई मुजायका न था, मगर एक ऐसी मुहिम पर जाना है, जिससे इंकार करना किसी मुसलमान को गंवारा नहीं हो सकता। अब मुझे हंसी-खुशी रुखसत करो।

जीनत ने कलेजा थामकर कहा—जाइए ! इसके आगे मुंह से एक बात भी न निकली।

अख्तर—जिस तरह पीठ दिखायी, उसी तरह मुंह भी दिखाओ।

सत्ताईस

मियां आज़ाद और खोजी चलते-चलते एक नये कस्बे में जा पहुंचे और उसकी सैर करने लगे। रास्ते में एक अनोखी सज-धज के जवान दिखायी पड़े। सिर से पैर तक पीले कपड़े पहने हुए, ढीले पांयचे का पजामा, केसरिये केचुल-लोट का अंगरखा, केसरिया रंगी दुपल्ली टोपी, कंधों पर केसरिया रूमाल, जिसमें लचका टका हुआ। सिन कोई चालीस साल का।

आज़ाद—क्यों भई खोजी, भला भांपो तो, यह किस देश के हैं।

खोजी—शायद काबुल के हों।

आज़ाद—काबुलियों का यह पहनावा कहां होता है।

खोजी—वाह, खूब समझे ! क्या काबुल में गधे नहीं होते?

आज़ाद—जरा हजरत की चाल तो देखिएगा, कैसे कुंदे झाड़ते हुए चले जाते हैं। कभी जरी के जूते पर निगाह है, कभी रूमाल फड़काते हैं, कभी अंगरखा चमकाते हैं, कभी लचके की झलक दिखाते हैं। इस दाढ़ी-मूंछ का भी तो खयाल नहीं। यह दाढ़ी और यह लचके की गोट सुभान-अल्लाह !

खोजी आपको जरा छेड़िए तो, दिल्लगी ही सही।

आज़ाद—जनाब, आदाब अर्ज है। वल्लाह, आपके लिबास पर तो वह जोबन है कि आंख नहीं ठहरती, निगाह के पांव फिसले जाते हैं।

जर्दपोश—(शरमाकर) जी, इसका एक खास सबब है।

आज़ाद—वह क्या? क्या किसी सरकार से वर्दी मिली है? या सच कहना उस्ताद, किसी नाई से तो नहीं छीन लाये?

जर्दपोश—(अपने नौकर से) रमजानी, जरा बता तो देना, हमें अपने मुंह से कहते हुए शरम आती है।

रमजानी—हुजूर, मियां का निकाह होनेवाला है। इसी पहनावे की रस्म है हुजूर।

आज़ाद—रस्म की एक ही कही। यह अच्छी रस्म है—दाढ़ी-मूंछवाले आदमी, और लचका, वन्नत पट्ठा लगाकर कपड़े पहनें। अरे भई, ये कपड़े दुलहिन के लिए हैं, या आप जैसे मुछक्कड़-फक्कड़बेग के लिए? खुदा के लिए इन कपड़ों को उतारो, मरदों की पोशाक पहनो।

इधर आज़ाद तो यह फटकार सुनाकर अलग हुए, उधर खिदमतगार ने मियां जर्दपोश को समझाना शुरू किया—मियां, सच तो कहते थे। जिस गली-कूंचे में आप निकल जाते हैं, लोग तालियां बजाते और हंसी उड़ाते हैं।

जर्दपोश—हंसने दो जी, हंसते ही घर बसते हैं।

खिदमतगार—मियां, मैं जाहिल आदमी हूं, मुल बुरी बात बुरी ही है। हम गरीब आदमी हैं, फिर भी ऐसे कपड़े नहीं पहनते।

मियां आज़ाद उधर आगे बढ़े तो क्या देखते हैं, एक दुकड़ी सामने से आ रही है। उस पर तीन नौजवान रईस बड़े ठाट से बैठे हैं। तीनों ऐनकबाज हैं। आज़ाद बोले—यह नया फैशन देखने में आया। जिसे देखो, ऐनकबाज। अच्छी-खासी आंखें रखते हुए

भी अंधे बनने का शौक !

मियां आज़ाद को यह कस्बा ऐसा पसंद आया कि उन्होंने दो-चार दिन यहीं रहने की ठानी। एक दिन घूमते-घामते एक नवाब के दरबार में जा पहुंचे। सजी-सजायी कोठी, बड़े-बड़े कमरे। एक कमरे में गलीचे बिछे हुए, दूसरे में चौकियां, मेज, मसहरियां करीने से रखी हुईं। खोजी यह ठाट-बाट देखकर अपने नवाब को भूल गए। जाकर दोनों आदमी दरबार में बैठे। खोजी तो नवाबों की सोहबत उठाए थे, जाते ही जाते कोठी की इतनी तारीफ की कि पुल बांध दिए-हुजूर, खुदा जानता है, क्या सजी-सजाई कोठी है। कसम है हुसैन की, जो आज तक ऐसी इमारत नजर से गुजरी हो। हमने तो अच्छे-अच्छे रईसों की मुसाहबत की है, मगर कहीं यह ठाट नहीं देखा। हुजूर, बादशाहों की तरह हैं। हुजूर की बदौलत हजारों गरीबों-शरीफों का भला होता है। खुदा ऐसे रईस को सलामत रखें।

मुसाहब-अजी, अभी आपने देखा क्या है? मुसाहब लोग तो अब आ चले हैं। शाम तक सब आ जाएंगे। एक मेले का मेला रोज लगता है।

नवाब-क्यों साहब, यह फ्रीमेशन भी जादूगर हैं शायद? आखिर जादू नहीं, तो है क्या?

मुसाहब-हुजूर बजा फरमाए हैं। कुछ दिन हुए, मेरी एक फ्रीमेशन से मुलाकात हुई। मैं, आप जानिए, एक ही कांइयां। उनसे खूब दोस्ती पैदा की। एक दिन मैंने उनसे पूछा, तो बोले-यह वह मजहब है, जिससे बढ़कर दुनिया में कोई मजहब ही नहीं। क्यों नहीं हो जाते फ्रीमेशन? मेरे दिल में भी आ गई। एक दिन उनके साथ फ्रीमेशन हुआ। वहां हुजूर, करोड़ों लाशें थीं। सबकी सब मुझसे गले मिलीं और हंसी। मैं बहुत ही डरा। मगर उन लोगों ने दिलासा दिया-इनसे डरते क्यों हो? हां, खबरदार, किसी से कहना नहीं, नहीं तो ये लाशें कच्चा ही खा जाएंगी। इतने में खुदावंद आग बरसने लगी और मैं जल-भुनकर खाक हो गया। इसके बाद एक आदमी ने कुछ पढ़कर फूंका, तो फिर हट्टा-कट्टा मौजूद ! हुजूर, सच तो यों है कि दूसरा होता, तो रो देता, लेकिन मैं जरा भी न घबराया। थोड़ी देर के बाद एक देव जैसे आदमी ने मुझे एक हौज में ढकेल दिया। मैं दो दिन और दो रात वहीं पड़ा रहा। जब निकाला गया, तो फिर टैया-सा मौजूद। सबकी सलाह हुई कि इसको यहां से निकाल दो। हुजूर, खुदा-खुदा करके बचे, नहीं तो जान ही पर बन आई थी?

गप्पी-हुजूर, सुना है, कामरूप में औरतें मर्दों पर माश पढ़कर फूंकती और बकरा, बैल, गधा वगैरह बना डालती हैं। दिन भर बकरे बने, में-में किया किए, सानी खाया किए, रात को फिर मर्द के मर्द। दुनिया में एक से एक अनेक जादूगर पड़े हैं।

खुशामदी-हुजूर, यह मूठ क्या चीज है? कल रात को हुजूर तो यहां आराम फरमाते थे, मैं दो बजे के वक्त कुरान पढ़कर टहलने लगा, तो हुजूर के सिरहाने के ऊपर रोशनी-सी हुई। मेरे तो होश उड़ गए।

मुसाहब-होश उड़ने की बात ही है।

खुशामदी-हुजूर, मैं रात भर जागता रहा और हुजूर के पलंग के इर्द-गिर्द पहरा दिया किया।

नवाब—तुम्हें कुरान की कसम।

खुशामदी—हुजूर की बदौलत मेरे बाल-बच्चे पलते हैं, भला आपसे और झूठ बोलूं? नमक की कसम, बदन का रोआं-रोआं खड़ा हो गया। अगर मेरा बाप भी होता, तो मैं पहरा न देता, मगर हुजूर का नमक जोश करता था।

जमामार—हुजूर, यहां एक जोड़ी बिकाऊ है। हुजूर खरीदें, तो दिखाऊं। क्या जोड़ी है कि ओहोहो ! डेढ़ हजार से कम में न देगा।

मुसाहब—ऐ, तो आपने खरीद क्यों न ली। इतनी तारीफ करते हो और फिर हाथ से जाने दी। हुजूर, इन्हें हुक्म हो कि बस, खरीद ही लाएं। बादशाही में इनके यहां भी कई घोड़े थे, सवार भी खूब होते हैं, और चाबुक-सवारी में तो अपना सानी नहीं रखते।

नवाब—मुनीम से कहो, इन्हें दो हजार रुपये दें, और दो साईस इनके साथ जाएं।

जमामार मुनीम के घर पहुंचे और बोले—लाला जवाहिरमल, सरकार ने दो हजार रुपये दिलवाए हैं, जल्द आइए।

जवाहिरमल—तो जल्दी काहे की है? ये रुपये होंगे क्या?

जमामार—एक जोड़ी ली जाएगी। उस्ताद, देखो, हमको बदनाम न करना। चार सौ की जोड़ी है। बाकी रहे सोलह सौ। उनमें से आठ सौ यार लोग खायंगे, बाकी आठ सौ में छह सौ हमारे, दो सौ तुम्हारे। है पक्की बात न?

जवाहिरमल—तुम लो छह सौ, और हम लें दो सौ। मियां भाई हो न। अरे यार, तीन सौ हमको दे, पांच सौ तू उड़ा। यह मामले की बात है?

जमामार—अजी, मियां भाई की न कहिए। मियां भाई तो नवाब भी हैं, मगर अल्लाह मियां की गाय। तुम तो लाखों खा जाओ, मगर गाढ़े की लंगोटी लगाए रहो। खाने को हम भी खाएंगे, मगर शरबती के अंगरखे डाटे हुए, नवाब बने हुए, कोरमा और पुलाव के बगैर खाना न खायेंगे। तुम उबाली खिचड़ी ही खाओगे। खैर, नहीं मानते, तो जैसी तुम्हारी मरजी।

मियां जमामार जोड़ी लेकर पहुंचे, तो दरबार में उसकी तारीफें होने लगीं। कोई उसके थूथन की तारीफ करता है, कोई माथे की, कोई छाती की। खुशामदी बोले—वल्लाह, कनौटियां तो देखिए, प्यार कर लेने को जी चाहता है।

गप्पी—हुजूर, ऐसे जानवर किस्मत से मिलते हैं। कसम खुदा की, ऐसी जोड़ी सारे शहर में न निकलेगी।

मतलबी—हुजूर, दो-दो हजार की एक-एक घोड़ी है। क्या खूबसूरत हाथ-पांव हैं और मजा यह कि कोई ऐब नहीं।

नवाब—कल शाम को फिटन में जोतना। देखें कैसी जाती हैं।

गप्पी—हुजूर, आंधी की तरह जाएं, क्या दिल्लगी है कुछ।

रात को मियां आज़ाद सराय में पड़े रहे। दूसरे दिन शाम को फिर नवाब साहब के यहां पहुंचे। दरबार जमा हुआ था, मुसाहब लोग गप्पें उड़ा रहे थे। इतने में मसजिद से अजान की आवाज सुनाई दी। मुसाहबों ने कहा—हुजूर, रोजा खोलने का वक्त आ गया।

नवाब—कसम कुरान की, हमें आज तक मालूम ही न हुआ कि रोजा रखने से फायदा क्या होता है? मुफ्त में भूखों मरना कौन-सा सवाब है? हम तो हाफिज के चेले हैं, वह भी रोजा-नमाज कुछ न मानते थे।

आज़ाद—हुजूर ने खूब कहा—

दोश अज मसजिद सुए मैखाना आदम पीरे मा;
चीस्त याराने तरीकत बाद अजीं तदबीरे मा।

(कल मेरे पीर मसजिद से शराबखाने की तरफ आए। दोस्तो, बतलाओ, अब मैं क्या करूं)

खुशामदी—वाह-वाह, क्या शेर है ! सादी का क्या कहना।

गप्पी—सुना, गाते भी खूब थे। बिहाग की धुन पर सिर धुनते हैं।

आज़ाद दिल में खूब हंसे। यह मसखरे इतना भी नहीं जानते कि यह सादी का शेर है या हाफिज का। और मजा यह कि उनको बिहाग भी पसंद था। कैसे-कैसे गौखे जमा हैं।

मुसाहब—हुजूर, बजा फरमाते हैं। भूखों मरने से भला खुदा क्या खुश होगा?

नवाब—भई, यहां तो जब से पैदा हुए, कसम ले लो, जो एक दिन भी फाका किया हो। फिर भूख में नमाज की किसे सूझती है?

खुशामदी—हुजूर, आप ही के नमक की कसम, दिन-रात खाने की ही फिक्र रहती है। चार बजे और लौंडी की जान खाने लगे—लहसुन ला, प्याज ला, कबाब पके, तौबा !

हिन्दू मुसाहब—हुजूर, हमारे यहां भी व्रत रखते हैं लोग, मगर हमने तो हर व्रत के दिन गोस्त चखा।

खुशामदी—शाबाश लाला, शाबाश ! वल्लाह, तुम्हारा मजहब पक्का है।

नवाब—पढ़े-लिखे आदमी हैं, कुछ जाहिल-गंवार थोड़े ही हैं।

खोजी—वाह-वाह हुजूर ने वह बात पैदा की कि तौबा ही भली !

खुशामदी—वाह भई, क्या तारीफ की है। कहने लगे, तौबा ही भली। किस जंगल से पकड़ के आए हो भई? तुमने तो वह बात कही कि तौबा ही भली। खुदा के लिए जरी समझ-बूझकर बोला करो।

गप्पी—ऐ हजरत, बोले क्या, बोलने के दिन अब गए। बरसात हो चुकी न?

खोजी—मियां, एक-एक आओ, या कहो, चौमुखी लड़ें। हम इससे भी नहीं डरते। यहां उम्र भर नवाबों कही की सोहबत में रहे। तुम लोग अभी कुछ दिन सीखो। आप, और हम पर मुंह आए। एक बार हमारे नवाब साहब के यहां एक हजरत आए, बड़े भुलक्कड़। आते ही मुझ पर फिकरे कसने लगे। बस, मैंने जो आड़े हाथों लिया, तो झेंपकर एकदम भागे। मेरे मुकाबले में कोई ठहरे तो भला ! लो बस आइए, दो-दो चोंचें हों। पाली से नाकदम न भागो, तो मूंछें मुड़वा डालूं।

मुसाहब—आइए, फिर आप भी क्या याद करेंगे ! बंदे की जबान भी वह है कि कतरनी को मात करे। जबान आगे जाती है, बात पीछे रह जाती है।

खोजी—जबान क्या चर्खा है रांड का। खुदा झूठ न बुलाए, तो रोटी को हुजूर

लोती कहते होंगे।

मुसाहब—जब खुदा झूठ न बुलाए, तब तो आप और झूठ न बोलें। जब से होश संभाला, कभी सच बोले ही नहीं। एक दफे धोखे से सच्ची बात निकल आई थी, जिसका आज तक अफसोस है।

खोजी—और वह उस वक्त जब आपसे किसी ने आपके बाप का नाम पूछा था और आपने जल्दी में साफ-साफ बता दिया था।

इस पर सब के सब हंस पड़े और खोजी मूंछों पर ताव देने लगे। अभी ये बातें हो ही रही थीं कि एक टुकड़ी आई, और उस पर से एक हसीना उतर पड़ी। वह पतली कमर को लचकाती हुई आई, नवाब का मसनद घसीटा और बड़े ठाट से बैठ गई।

नवाब—मिजाज शरीफ?

आबादी—आपकी बला से।

मुसाहब—हुजूर खुदा की कसम, इस वक्त आप ही का जिक्र था।

आबादी—चल झूठे। अली की संवार तुझ पर और तेरे नवाब पर।

मुसाहब—खुदा की कसम।

आबादी—अब हम एक चपत जमायंगे। देखो नवाब, अपने इन गुर्गों को मना करो, मेरे मुंह न लगा करें।

इतने में एक महरी पांच-छः बरस के एक लड़के को गोद में लाई।

आबादी—हमारी बहन का लड़का है। लड़का क्या, पहाड़ी मैना है। भैया, नवाब को गालियां तो देना। क्यों नवाब, इनको मिठाई दोगे न?

नवाब—हां, अभी-अभी।

लड़का—पहले मिठाई लाओ, फिल हम दाली दे देंगे।

अब चारों, तरफ से मुसाहब बुलाते हैं—आओ, हमारे पास आओ। लड़के ने नवाब को इतनी गालियां दीं कि तौबा ही भली। नवाब साहब खूब हंसे और सारी महफिल लड़के की तारीफ करने लगी। खुदावंद, अब इसको मिठाई मंगवा दीजिए।

नवाब—अच्छा भई, इनको पांच रुपये की मिठाई ला दो।

आबादी—ऐ हटो भी। आप अपने रुपये रहने दें। क्या कोई फकीर है?

नवाब—अच्छा, एक अशर्फी की ला दो।

आबादी—भैया, नवाब को सलाम कर लो।

नवाब—अच्छा, यह तो हुआ, अब कोई चीज सुनाओ। पीलू की कोई चीज हो, तुम्हें कसम है।

आबादी—ऐ हटो भी, आज रोजे से हूं। आपको गाने की सूझती है।

फर्श पर कई नींबू पड़े हुए थे। बी साहिबा ने एक नींबू दाहिने हाथ में लिया और दूसरा नींबू उसी हाथ से उछाला और रोका। कई मिनट तक इसी तरह उछाला और रोका भी। लोग शोर मचा रहे हैं—क्या तुले हुए हाथ हैं, सुभान-अल्लाह ! वह बोलीं कि भला नवाब, तुम तो उछालो। जब जानें कि नींबू गिरने न पाए। नवाब ने एक नींब हाथ में लिया और दसरा उछाला. तो तड से नाक पर गिरा फिर उछाला.

तो खोपड़ी पर तड़ से।

आबादी–बस, जाओ भी। इतना भी शऊर नहीं है।

नवाब–यह उंगली में कपड़ा कैसा बंधा है?

आबादी–बूझो, देखें, कितनी अक्ल है।

नवाब–यह क्या मुश्किल है, छालियां कतरती होंगी।

आबादी–हां, वह खून का तार बंधा कि तौबा ! मैंने पानी डाला और कपड़ा बांध लिया।

मुसाहब–हुजूर, आज इस शहर में इनकी जोड़ नहीं है।

नवाब–भला कभी नवाब खफकानहुसैन के यहां भी जाती हो? सच-सच कहना।

आबादी–अली की संवार उस पर। हज कर आया है। उस मनहूस से कोई इतना तो पूछे कि आप कहां के ऐसे बड़े मौलवी बन बैठे?

नवाब–जी, बजा है, जो आपको न बुलाए, वह मनहूस हुआ।

आबादी–बुलाएगा कौन? जिसको गरज होगी, आप दौड़ा आएगा।

आज़ाद और खोजी यहां से चले, तो आज़ाद ने कहा–आप कुछ समझे? यह जोड़ी वही थी, जो रोशनअली खरीदकर लाए थे।

खोजी–यह कौन बड़ी बात है, इसी में तो रईसों का रुपया खर्च होता है। इनकी सोहबत में जब बैठिए खूब गप्प उड़ाइए और झूठ इस कदर बोलिए कि जमीन-आसमान के कुलाबे मिलाइए। रंग जम जाए, तो दोनों हाथों से लूटिए और सोने की ईंटें बनवाकर संदूक में रख छोड़िए। लेकिर ऐसे माल को रहते न देखा, मालूम नहीं होता, किधर आया और किधर गया।

आज़ाद–यह नवाब बिलकुल चोंगा है।

खोजी–और नहीं तो क्या, निरा चोंच।

आज़ाद–खुदा करे, ये रईसजादे पढ़-लिखकर भले आदमी हो जायं।

खोजी–अरे, खुदा न करे भाई, यह जाहिल ही रहें तो अच्छा। जो कहीं पढ़-लिख जायं, तो फिर इतने भलेमानसों की परवरिश कौन करे?

तीसरे दिन दोनों फिर नवाब की कोठी पर पहुंचे।

खोजी–खुदा ऐसे रईस को सलामत रखे। आज यहां सन्नाटा-सा नजर आता है, कुछ चहल-पहल नहीं है।

मुसाहब–चहल-पहल क्या खाक हो। आज मुसीबत का पहाड़ टूट पड़ा।

आज़ाद–खुदा खैर करे, कुछ तो फरमाइए।

नवाब–क्या अर्ज करूं, जब बुरे दिन आते हैं, तो चारों ही तरफ से बुरी ही बुरी बातें सुनने में आती हैं। घर में वजा-हमल (प्रसव) हो गया।

आज़ाद–यह तो कुछ बुरी बात नहीं। वजा-हमल के माने लड़का पैदा होना। यह तो खुशी का मौका है।

मुसाहब–हमारे हुजूर का मंशा-इस्कात-हमल (गर्भपात) से था।

खुशामदी–अजी, इसे वजा-हमल भी कहते हैं–लुगत देखिए।

नवाब–अजी, इतना ही होता, तो दिल को किसी तरह समझा लेते हैं। यहां

तो एक और मुसीबत ने आ घेरा।

मुसाहब–(ठंडी सांस लेकर) खुदा दुश्मन को भी यह दिन न दिखाए।

खुशामदी–हजरत, क्या अर्ज करूं, हुजूर का एक मेढ़ा मर गया, कैसा तैयार था कि क्या कहूं, गैंडा बना हुआ।

गप्पी–अजी, यों नहीं कहते कि गैंडे को टकरा देता, तो टें करके भागता। एक दफे मैं अपने साथ बाग ले गया। इत्तिफाक से एक राजा साहब पाठे पर सवार बड़े ठाट से आ रहे थे। बंदा, मेढ़े को ऐन सड़क पर लिए हुए डटा खड़ा है। सिपाही ने ललकारा कि हटा बकरी को सड़क से। इतना कहना था कि मैं आग ही तो हो गया। पूछा–क्या कहा भाई? फिर तो कहना। सिपाही आंखें नीली-पीली करके बोला–हटा बकरी को सामने से, सवारी आती है। तब तो जनाब, मेरे खून में जोश आ गया। मैंने मेढ़े को ललकारा, तो उसने झपटकर हाथी के मस्तक पर एक टक्कर लगाई। वह आवाज आई, जैसे कोई दरख्त जमीन पर आ रहा हो। बंदर डाल-डाल चीखने लगे, बंदरियां बच्चों को छाती से लगाए दबक रहीं, तो वजह क्या, उनको मेढ़े पर भेड़िए का धोखा हुआ। खोजी–मेढ़े को भेड़िया समझा। मगर वल्लाह, आपको तो बेदुम का लंगूर समझा होगा।

गप्पी–बस हजरत, एक टक्कर लगाकर पीछे हटा और बदन को तोलकर छलांग जो मारता है, तो हाथी के मस्तक पर। वहां से फिर उचका, फीलवान के माथे पर एक टक्कर लगाई, मगर आहिस्ता से। जरा इस तमीज को देखिएगा, समझा कि इसमें हाथी का-सा जोर कहां। मगर राजा का अदब किया। अब मैं लाख-लाख जोर करता हूं, पर वह किसकी सुनता है? गुस्सा आया, सो आया, जैसे सिर पर भूत सवार हो गया। छुड़ाकर फिर लपका और एक, दो, तीन, चार–बस, खुदा जाने इतनी टक्करें लगाईं कि हाथी हवा हो गया और चिंघाड़ कर भागा। आदमी पर आदमी गिरते हैं। आप जानिए, पाठे का बिगड़ना कुछ हंसी-ठट्ठा तो है नहीं। जनाब, वही मेढ़ा आज चल बसा।

आज़ाद–निहायत अफसोस हुआ !

खोजी–सिन शरीफ क्या था?

नवाब–सिन क्या था, अभी बच्चा था।

मुसाहब–हुजूर, वह आपका दुश्मन था, दोस्त न था।

नवाब–अरे भई, किसका दोस्त, कैसा दुश्मन। उस बेचारे का क्या कसूर? वह तो अच्छा गया, मगर हम सबको जीते-जी मार डाला।

आज़ाद–हजरत, यह दुनिया सराय-फानी है। यहां से जो गया, अच्छा गया। मगर नौजवान के मरने का रंज होता है।

मुसाहब–और फिर जवान कैसा कि होनहार। हाथ मलकर रह गए यार, बस और क्या करें।

आज़ाद–मरज क्या था?

मुसाहब–क्या मरज बताएं। बस किस्मत ही फूट गई।

खुशामदी–मगर क्या मौत पाई है, रमजान के महीने में, उसकी रूह जन्नत

में होगी। तूबा (स्वर्ग का एक वृक्ष) के तले जो घास है, वह चर रहा होगा।

इतने में एक महरी गुलबदन का लंहगा, जिसमें आठ-आठ अंगुल गोट लगी थी, फड़काती और गुलाबी दुपट्टे को चमकाती आई और नवाब के कान में झुककर बोली-बेगम साहबा हुजूर को बुलाती हैं।

नवाब-यह नादिरी हुक्म? अच्छा साहब, चलिए। यहां तो बेगम और महरी, दोनों से डरते हैं।

नवाब साहब अंदर गए, तो बेगम ने खूब ही आड़े हाथों लिया-ऐ, मैं कहती हूं, यह कैसा रोना-धोना है? कहां की ऐसी मुसीबत पड़ गई कि आंखें खून की बोटी बन गईं? मेढ़े निगोड़े मरा ही करते हैं। ऐसी अक्ल पर पत्थर पड़े कि मुए जानवर की जान को रो रहे हैं। तुम्हारी अक्ल को दिन-दिन दीमक चाटे जाती है क्या? और इन मुफ्तखोरों ने तो आपको और भी चंग पर चढ़ाया है। अल्लाह की कसम, अगर आपने रंज-वंज किया, तो हम जमीन-आसमान एक कर देंगे। आखिर वह मेढ़ा कोई आपका...बस, अब क्या कहूं। भीगी बिल्ली बने गटर-गटर सुन रहे हो।

नवाब-तुम्हारे सिर की कसम, अब हम उसका जिक्र भी न करेंगे। मगर जब आपकी बिल्ली मर गई थी, तो आपने दिन-भर खाना नहीं खाया था? अब हमारी दफे आप गुर्राती हैं?

मुसाहब-(परदे के पास से) वाह हुजूर, बिल्ली के लिए गुर्राना भी क्या खूब। वल्लाह, दिल से तो कोई फिकरा आपका खाली नहीं होता।

बेगम-देखो, इन मुए मुसंडों को मना कर दो कि ड्योढ़ी पर न आने पाएं।

दरबान ने जो इतनी शह पाई, तो एक डांट बताई। बस, जी सुनो, चलते-फिरते नजर आओ। अब ड्योढ़ी पर आने का नाम लिया, तो तुम जानोगे। बेगम साहबा हम पर खफा होती हैं। तुम्हारी गिरह से क्या जाएगा, हम सिपाही आदमी हम तो नौकरी से हाथ धो बैठेंगे।

मुसाहब सिपाही से तो कुछ न बोले, मगर बड़बड़ाते हुए चले। लोगों ने पूछा-क्यों भई, इस वक्त नाक-भौं क्यों चढ़ाए हो? बोले-अजी, क्या कहें, हमारे नवाब तो बस, बछिया के बाबा ही रहे ! बीवी ने डपट लिया। जन-मुरीद है ! जी आबरू का भी कुछ खयाल नहीं। औरतजात, फिर जोरू और उल्टे डांट बताए और दाढ़ी-मूंछों वाले होकर चुपचाप सुना करें ! वल्लाह, जो कहीं मेरी बीबी कहती, तो गला ही घोंट देता। यहां नाक पर मक्खी तक बैठने नहीं देते।

आज़ाद-भई, गुस्से को थूक दो। गुस्सा हराम होता है। उनकी बीबी हैं, चाहे घुड़कियां सुनें, चाहे झिड़कियां सहें, आप बीच में बोलने वाले कौन? और फिर जिसका खाते हो, उसी को कोसते हो ! उस पर दावा यह है कि नमकहलाल और कट मरने वाले लोग हैं।

इतने में नवाब साहब बाहर निकले। अमीरों के दरबार में आप जानिए, एक का एक दुश्मन होता है। सैकड़ों चुगलखोर रहते हैं। हरदम यही फिक्र रहती है कि दूसरे की चुगली खाएं और सबको दरबार से निकलवा कर हमीं-हम नजर आएं। दो मुसाहबों ने सलाह की कि आज नवाब निकलें, तो इसकी चुगली खाएं और इसको

खड़े-खड़े निकलवा दें। नवाब को जो आते देखा, तो चिल्लाकर कहने लगे–सुना भई, बस, अब जो कोई कलमा कहा, तो हमसे न बनेगी। जिसका खाए, उसी का गाए। यह नहीं कि जिसका खाएं, उसी को गालियां सुनाएं। नवाब साहब को चाहे आप पीठ पीछे जन-मुरीद बताएं, या भीगी बिल्ली कहें, मगर खबरदार जो आज से बेगम साहबा की शान में कोई गुस्ताखी की, खून ही पी लूंगा।

नवाब–(त्योरियां बदलकर) क्या?

हाफिज जी–कुछ नहीं हुजूर खैरियत है।

नवाब–नहीं, कुछ तो है जरूर।

रोशनअली–तो छिपाते क्यों हो, सरकार से साफ-साफ क्यों नहीं कह देते? हुजूर, बात यह है कि मियां साहब जब देखो तब हुजूर की हजो किया करते हैं। लाख-लाख समझाया, यह बुरी बात है, मियां कहकर, भाई कहकर, बेटा कहकर, बाबू कहकर, हाथ जोड़कर, हर तरह समझाया, मगर यह तो लातों के आदमी हैं, बातों से कब मानते हैं। हम भी चुप हो रहते थे कि भई, चुगली कौन खाए, मगर आप जनानी ड्योढ़ी से...हुजूर, बस, क्या कहूं, अब और न कहलाइए।

नवाब–इनको हमने मौकूफ कर दिया।

मियां मुसाहब तो खिसके। इतने में मटरगश्त आ पहुंचे और नवाब को सलाम करके बोले–खुदावंद, आज खूब सैर-सपाटा किया। इतना घूमा कि टांगों के टट्टू की गामचियां दर्द करने लगीं। कोई इलाज बताइएं।

हाफिज जी–घास खाइए या, किसी सालोत्री के पास जाइए।

नवाब–खूब ! टट्टू के लिए घास और सालोत्री की अच्छी कही। अब कोई ताजा-ताजा खबर सुनाइए, बासी न हो, गरमागरम !

मटरगश्त–वह खबर सुनाऊं कि महफिल भर को लोटपोट कर दूं। हुजूर, किसी मुल्क से चंद परीजाद औरतें आई हैं। तमाशाइयों की भीड़ लगी हुई है। सुना, थिएटर में नाचती हैं और एक-एक कदम और एक-एक ठोकर में आशिकों के दिल को पामाल करती हैं। उन्हीं में से एक परीजाद जो दन से निकल गई, तो बस, मेरी जान सन से निकल गई। दरिया किनारे खीमे पड़े हैं। वहीं इंदर का अखाड़ा सजा हुआ है। आज शाम को नौ बजे तमाशा होगा।

नवाब–भई, तुमने खूब मजे की खबर सुनाई। ईजानिब जरूर जायेंगे।

इतने में खुदायारखां, जिन्हें जरा पहले नवाब ने मौकूफ कर दिया था, आ बैठे और बोले–हुजूर, इधर खुदावंद ने मौकूफी का हुक्म सुनाया, उधर घर पहुंचा, तो जोरू ने तलाक दे दी। कहती है, 'रोटी न कपरा, सेंत-मेत का भतरा।'

आज़ाद–हुजूर, इन गरीब पर रहम कीजिए। नौकरी की नौकरी गई और बीबी की बीबी।

नवाब–हाफिज जी, इधर आओ, कुछ हाल ठीक-ठीक बताओ।

हाफिज–हुजूर, इन्होंने कहा कि नवाब तो निरे बछिया के ताऊ ही हैं, जनमुरीद ! और बेगम साहिबों को इस नाबकार ने वह-वह बातें कहीं कि बस, कुछ न पूछिए ! अजीब शैतान आदमी है। आपको यकीन न आए, तो उन्हीं से पूछ लीजिए।

नवाब–क्यों मियां आज़ाद, सच कहो, तुमने क्या सुना?

आज़ाद–हुजूर, अब जाने दीजिए, कुसूर हुआ। मैंने समझा दिया है।

हाफिज–यह बेचारे तो अभी-अभी समझा रहे थे कि ओ गीदी, तू अपने मालिक को ऐसी-ऐसी खोटी-खरी कहता है !

नवाब–(दरबान से) देखो जी हुसेन अली, आज से अगर खुदायारखां को आने दिया, तो तुम जानोगे। खड़े-खड़े निकाल दो। इसे फाटक में कदम रखने का हुक्म नहीं।

खुदायार–हुजूर, गुलाम से भी तो सुनिए। आज मियां रोशनअली ने मुझे ताड़ी पिला दी और यही मनसूबा था कि यह नशे में चूर हों, तो इसे किसी लिम में निकलवा दें। सो हुजूर, इनकी मुराद बन आई। मगर हुजूर, मैं इस दर को छोड़कर और जाऊं कहां? खुदा आपके बाल-बच्चों को सलामत रखे, यहां तो रोआं-रोआं हुजूर के लिए दुआ करता है। हुजूर तो पोतड़ों के रईस हैं, मगर चुगलखोरों ने कान भर दिए–

खुदा के गजब से जरा दिल में काप;
चुगलखोर के मुंह को डसते हैं सांप।

नवाब–अच्छा, यह बात है। खबरदार, आज से ऐसी बेअदबी न करना। जाओ, हमने तुमको बहाल किया।

मुसाहिबों ने गुल मचाया–वाह हुजूर, कितना रहम है ! ऐसे रईस पैदा काहे का होते हैं। मगर खुदायार खां को तो उनकी जोरू ने बचा लिया। न वह तलाक देती, न यह बहाल होते। वल्लाह, जोरू भी किस्मत से मिलती है।

अट्ठाईस

दूसरे दिन नौ बजे रात को नवाब साहब और उनके मुसाहब थियेटर देखने चले।

नवाब–भई, आबादीजान को भी साथ ले चलेंगे।

मुसाहब–जरूर, जरूर। हुजूर, उनके बगैर मजा किरकिरा हो जाएगा।

इतने में फिटन आ पहुंची और आबादीजान छम-छम करती हुई आकर मसनद पर बैठ गईं।

नवाब–वल्लाह, अभी आप ही का जिक्र था।

आबादी–तुमसे लाख दफे कह दिया कि हमसे झूठ न बोला करो। हमें कोई देहाती समझा है।

नवाब–खुदा की कसम, चलो तुमको तमाशा दिखा लाएं। मगर मरदाने कपड़े पहनकर चलिए, वर्ना हमारी बेइज्जती होगी।

आबादी ने तिनककर कहा–जो हमारे चलने में बेआबरूई है, तो सलाम।

यह कहकर वह जाने को उठ खड़ी हुई। नवाब ने दुपट्टा दबाकर कहा–हमारा

ही खून पिए, जो एक कदम भी आगे बढ़ाए, हमीं को रोये, जो रूठ कर जाय ! हाफिज जी, जरा मरदाने कपड़े तो लाइए।

गरज आबादीजान ने अमामा सिर पर बांधा, चुस्त अंगरखा और कसा हुआ घुटन्ना, टाटबाफी बूट, फुंदना झलकता हुआ, उनके गोरे बदन पर खिल उठा। नवाब साहब उनके साथ फिटन पर सवार हुए और मुसाहबों में कोई बग्घी पर, कोई टम-टम पर, कोई पालकी-गाड़ी पर लदे हुए तमाशा-घर में दाखिल हुए। मगर आबादीजान जल्दी में पाजेब उतारना भूल गई थी। वहां पहुंचकर नवाब ने अव्वल दर्जे के दो टिकट लिए और सरकस में दाखिल हुए। लेकिन पाजेब की छम-छम ने वह शोर मचाया कि सभी तमाशाइयों की निगाहें इन दोनों आदमियों की तरफ उठ गईं। जो है, इसी तरफ देखता है, ताड़ने वाले ताड़ गए, भांपने वाले भांप गए। नवाब साहब अकड़ते हुए एक कुर्सी पर जा डटे और आबादीजान भी उनकी बगल में बैठ गईं। बहुत बड़ा शामियाना टंगा हुआ था। बिजली की बत्तियों से चकाचौंध का आलम था। बीचों-बीच एक बड़ा मैदान, इर्द-गिर्द कोई दो हजार कुर्सियां। खीमा भर जग-मग कर रहा था। थोड़ी देर में दस-बारह जवान घोड़े कड़कड़ाते हुए मैदान में आए और चक्कर काटने लगे, इसके बाद एक जवान नाजनीन, आफत की परकाला, घोड़े पर सवार, इस शान से आई कि महफिल भर पर आफत ढाई। सारी महफिल मस्त हो गई। वह घोड़े से फुर्ती के साथ उचकी और फिर पीठ पर आ पहुंची। चारों तरफ से वाह-वाह का शोर मच गया। फिर उसने घोड़े को मैदान में चक्कर देना शुरू किया। घोड़ा सरपट जा रहा था, इतना तेज कि निगाह न ठहरती थी। यकायक वह लेडी तड़ से जमीन पर कूद पड़ी। घोड़ा ज्यों का त्यों दौड़ता रहा। एकदम में वह झपटकर फिर पीठ पर सवार हो गई उस पर इतनी तालियां बजीं कि खीमा भर गूंज उठा। इसके बाद शेरों की लड़ाई, बंदरों की दौड़ और खुदा जाने, कितने और तमाशे हुए। ग्यारह बजते-बजते तमाशा खतम हुआ। नवाब साहब घर पहुंचे, तो सांसें भरते थे और मियां आज़ाद दोनों हाथों से सिर धुनते थे। दोनों मिस वरजिना (तमाशा करने वाली औरत) की निगाहों के शिकार हो गए।

हाफिज जी बोले—हुजूर, अभी मुश्किल से तेरह-चौदह बरस का सिन होगा, और किस फुर्ती से उचककर घोड़े की पीठ पर हो रहती थी कि वाह जी वाह ! मियां रोशनअली बड़े शहसवार बनते थे। कसम खुदा की जो उनके बाप भी कब्र से उठ आएं, तो यह करतब देखकर होश उड़ जायं।

नवाब—क्या चांद-सा मुखड़ा है।

आबादीजान—यह कहां का दुखड़ा है? हम जाते हैं।

मुसाहब—नहीं हुजूर, ऐसा न फर्माइए, कुछ देर तो बैठिए।

लेकिन आबादीजान रूठकर चली ही गईं। अब नवाब का यह हाल है कि मुंह फुलाए, गम की सूरत बनाए बैठे सर्द आहें खींच रहे हैं। मुसाहब सब बैठे समझा रहे हैं; मगर आपको किसी तरह सब्र ही नहीं आता। अब जिंदगी बवाल है, जान जंजाल है। यह भी फख्र है कि हमारा दिल किसी परीजाद पर आया है, शहर भर

में धूम हो जाए कि नवाब साहब को इश्क चर्राया है—

ताकि मशहूर हो हजारों में;
हम भी हैं पांचवें सवारों में।

मुसाहबों ने सोचा, हमारे शह देने से यह हाथ से जाते रहेंगे, इसलिए वह चाल चलिए कि 'सांप मरे न लाठी टूटे।' लगे सब उस औरत की हजो करने। एक ने कहा—भाई, जादू का खेल था। दूसरे बोले—जी हां, मैंने दिन के वक्त देखा था, न वह रंग, न वह रोगन; न वह चमक-दमक, न वह जोबन; रात की परी देखे की टट्टी है। आखिर मिस वरजिना नवाब की नजरों से गिर गई। बोले—जाने भी दो, उसका जिक्र ही क्या। तब मुसाहबों की जान में जान आई। नवाब साहब के यहां से रुखसत हुए, तो आपस में बातें होने लगीं—

हाफिज जी—हमारे नवाब भी कितने भोले-भाले रईस हैं !

रोशनअली—अजी, निरे बछिया के ताऊ हैं। खुदायारखां ने ठीक ही तो कहा था।

खुदायारखां—और नहीं तो क्या झूठ बोले थे? हमें लगी-लिपटी नहीं आती। चाहे जान जाती रहे, मगर खुशामद न करेंगे।

हाफिज जी—भई, यह आज़ाद ने बड़ा अडंगा मारा है। इसको न पछाड़, तो हम सब नजरों से गिर जाएंगे।

रोशनअली—अजी, मैं तरकीब बताऊं, जो पट पड़े, तो नाम न रखूं। नवाब डरपोक तो हैं ही, कोई इतना जाकर कह दे कि मियां आज़ाद इश्तिहारी मुजरिम हैं। बस, फिर देखिए, क्या ताथैया मचती है। आप मारे खौफ के घर में घुस रहें और जनाने में तो कुहराम ही मच जाए। आज़ाद और उनके साथी अफ़ीमची, दोनों खड़े-खड़े निकाल दिए जाएं।

खुशामदी—वाह उस्ताद, क्या तड़ से सोच लेते हो ! वल्लाह, एक ही न्यारिए हो।

रोशनअली—फिर इन झांसों के बगैर काम भी तो नहीं चलता।

हाफिज जी—हां, खूब याद आया। परसों तेगबहादुर दक्खिन से आए हैं। बेचारे बड़ी तकलीफ में हैं। हमारे सच्चे दोस्तों में हैं। उनके लिए एक रोटी का सहारा हो जाए, तो अच्छा। आपमें से कोई छेड़ दे तो जरा, बस, फिर मैं ले उड़ूंगा। मगर तारीफ के पुल बांध दीजिए। नवाब को झांसे में लाना कोई बड़ी बात तो है नहीं। थाली के बैंगन हैं।

हाफिज जी—एक काम कीजिए, कल जब सब जमा हो जाएं, तो हम पहले छेड़ें कि इस दरबार में हर फन का आदमी मौजूद है और रियासत कहते इसी को हैं कि गुनियों की परवरिश की जाय, शरीफों की कदरदानी हुज़ूर ही का हिस्सा है। इस पर कोई बोल उठे कि और तो सब मौजूद हैं, बस, यहां एक बिनबटिए की कसर है। फिर कोई कहे कि आजकल दक्खिन से एक साहब आए हैं, जो बिनवट के फन में अपना सानी नहीं रखते। दो-चार आदमी हां में हां मिला दें कि उन्हें वह-वह पेंच याद हैं कि तलवार छीन लें; जरा से आदमी, मगर सामने

आए और बिजली की तरह तड़प गए। हम कहेंगे—वल्लाह, आप लोग भी कितने अहमक हैं कि ऐसे आदमी को हुजूर के सामने अब तक पेश नहीं किया और जो कोई रईस उन्हें नौकर रख ले, तो फिर कैसी हो? बस, देख लेना, नवाब खुद ही कहेंगे कि अभी-अभी लाओ। मगर तेगबहादुर से कह देना कि खूब बांके बनकर आएं, मगर बातचीत नरमी से करें, जिसमें हम लोग कहेंगे कि देखिए खुदावंद, कितनी शराफत है। जिन लोगों क्रो कुछ आता-जाता नहीं, वे ही जमीन पर कदम नहीं रखते।

मुसाहब—मगर क्यों मियां, यह तेगबहादुर हिन्दू हैं या मुसलमान? तेगबहादुर तो हिन्दुओं का नाम भी हुआ करता है किसी हिन्दू के घर मुहर्रम के दिनों में लड़का पैदा हुआ और इमामबख्श नाम रख दिया। हिन्दू भी कितने बेतुके होते हैं कि तोबा ही भली। पूछिए कि तुम जो ताजिये को सिजदा करते हो, दरगाहों में शरबत पिलाते हो, इमामबाड़े बनवाते हो, तो फिर मुसलमान ही क्यों नहीं हो जाते।

हाफिज जी—मगर तुम लोगों में भी तो ऐसे गौखे हैं जो चेचक में मालिन को बुलाते हैं, चौराहे पर गधे को चने खिलाते हैं, जनमपत्री बनवाते हैं। क्या यह हिन्दूपन नहीं है? इसकी न कहिए।

उधर मियां आज़ाद भी मिस वरजिना पर लट्टू हो गए। रात तो किसी तरह करवटें बदल-बदल कर काटी, सुबह होते ही मिस वरजिना के पास जा पहुंचे। उसने जो मियां आज़ाद की सूरत से उनकी हालत ताड़ ली, तो इस तरह चमक-चमक कर चलने लगी कि उनकी जान पर आफंत ढाई। आज़ाद उसके सामने जाकर खड़े हो गए, मगर मुंह से एक लफ्ज भी न निकला।

वरजिना—मालूम होता है, या तो तुम पागल हो, या अभी पागलखाने से रस्सियां तुड़ा कर आए हो।

आज़ाद—हां, पागल न होता, तो तुम्हारी अदा का दीवाना क्यों होता?

वरजिना—बेहतर है कि अभी से होश में आ जाओ, मेरे कितने ही दीवाने पागलखाने की सैर कर रहे हैं। रूस के तीन जनरल मुझ पर रीझे, यूनान में एक रईस लट्टू हो गए, इंगलिस्तान के कितने ही बांके आहें भरते रहे, जर्मनी के बड़े-बड़े अमीर साए की तरह मेरे साथ घूमा किए, रूम के कई पाशा जहर खाने पर तैयार हो गए। मगर दुनियां में दगाबाजी का बाजार गरम है, किसी से दिल न मिलाया, किसी को मुंह न लगाया। हमारे चाहने वाले को लाजिम है कि पहले आईने में अपना मुंह तो देखे।

आज़ाद—अब मुझे दीवाना कहिए या पागल, मैं तो मर मिटा—

फिरी चश्मे-बुते-बेपीर देखो;
हमारी गर्दिशे-तकदीर देखो।
उन्हें है तौक मन्नत का गरां बार,
हमारे पांव की जंजीर देखो।

वरजिना—मुझे तुम्हारी जवानी पर रहम आता है। क्यों जान देने पर तुले हुए हो?

आज़ाद–जीकर ही क्या करूंगा? ऐसी जिंदगी से तो मौत ही अच्छी।

वरजिना–आ गए तुम भी झांसे में। अरे मियां, मैं औरत नहीं हूं, जो तुम सो मैं। मगर कसम खाओ कि किसी से यह बात न कहोगे। कई साल से मैंने यही भेष बना रखा है। अमीरों को लूटने के लिए इससे बढ़कर और कोई तदबीर नहीं। एक-एक चितवन के हजारों पौंड लाता हूं, फिर भी किसी को मुंह नहीं लगाता। आज तुम्हारी बेकरारी देखकर तुमको साफ-साफ बता दिया।

आज़ाद–अच्छा मर्दाने कपड़े पहनकर मेरे सामने आओ, तो मुझे यकीन आए।

मिस वरजिना जरा देर में कोट और पतलून पहनकर आज़ाद के सामने आई और बोली–अब तो तुम्हें यकीन आया, मेरा नाम टामस हुड है। अगर तुमको वे चिट्ठियां जो ढेर मेरे पास पड़ी हैं, तो हंसते-हंसते तुम्हारे पेट में बल पड़ जाएं। देखिए, एक साहब लिखते हैं–

जनाजा मेरा गली में उनकी जो पहुंचे ठहरा के इतना कहना;
उठानेवाले हुए हैं मांदे सो थक के कांधा बदल रहे हैं।

दूसरे साहब लिखते हैं–

हम भी कुशता तेरी नैरंगी के हैं याद रहे;
ओ जमाने की तरह रंग बदलनेवाले।

एक बार इटली गया, वहां अक्सर अमीरों और रईसों ने मेरी दावतें कीं और अपनी लड़कियों से मेरी मुलाकात कराई। मैं कई दिन तक उन परियों के साथ हवा खाता रहा। और एक दिल्लगी सुनिए। एक अमीरजादी ने मेरे हाथ को चूमकर कहा कि हमारे मियां तुमसे शादी करना चाहते हैं। वह कहते हैं कि अगर तुमसे उनकी शादी न हुई, तो वह जहर खा लेंगे। यह अमीरजादी मुझे अपने घर ले गई। उसका शौहर मुझे देखते ही फूल उठा और ऐसी-ऐसी बातें कीं कि मैं मुश्किल से अपनी हंसी को जब्त कर सका।

आज़ाद बहुत देर तक टामस हुड से उनकी जिंदगी के किस्से सुनते रहे। दिल में बहुत शरमिंदा थे कि यहां कितने अहमक बने। यह बातें दिल में सोचते हुए सराय में पहुचें, तो फाटक ही के पास से आवाज़ आयी, लाना तो मेरी करौली न हुआ तमंचा, नहीं तो दिखा देता तमाशा। आज़ाद ने ललकारा कि क्या है भाई, क्या है, हम आ पहुंचे। देखा, तो खोजी एक कुत्ते को दुत्कार रहे हैं।

उनतीस

आज तो निराला समां है। गरीब, अमीर, सब रंगरलियां मना रहे हैं। छोटे-बड़े खुशी के शादियाने बजा रहे हैं। कहीं बुलबुल के चहचहे, कहीं कुमरी के कहकहे। ये ईद की तैयारियां हैं। नवाब साहब की मसजिद का हाल न पूछिए। रोजे तो आप पहले ही चट कर गए थे; लेकिन ईद के दिन धूमधाम से मजलिस सजी। नूर के तड़के

से मुसाहबों ने आना शुरू किया और मुबारक-मुबारक की आवाज ऐसी बुलंद की कि फरिश्तों ने आसमान को थाम लिया, नहीं तो जमीन और आसमान के कुलावे मिल जाते।

मुसाहब–खुदा ईद मुबारक करे। मेरे नवाब जुग-जुग जियें।

हाफिज जी–बरस दिन का दिन मुबारक करे!

रोशनअली–खुदा हुजूर की ईद मुबारक करे।

नवाब–आपको भी मुबारक हो। मगर सुना कि आज तो ईद में फर्क है। भई, आधा तीतर और आधा बटेर नहीं अच्छा।

मुसाहब–हुजूर, फिरंगीमहल के उलमा ने तो आज ही ईद का फतवा लगाया है।

नवाब–भला चांद कल किसी ने देखा भी?

मुसाहब–हुजूर, पक्के पुल पर चार भिश्तियों ने देखा, राजा की बाजार में हाफिज जी ने देखा और मेरे घर में भी देखा।

नवाब–आपकी बेगम साहिबा का सिन क्या है? हैं कोई चौदह-पंद्रह बरस की?

मुसाहब ने शरमाकर गरदन झुका ली।

नवाब–आप अपनी बेगम साहिबा की उम्र तो छिपाते हैं, फिर उनकी शहादत ही क्या? बाकी रहे हाफिज जी, उनकी आंखें पढ़ते-पढ़ते जाती रहीं; उनको दिन को ऊंट तो सूझता ही नहीं, भला सरेशाम, दोनों वक्त मिलते, नाखून के बराबर चांद क्या सूझेगा !

आज़ाद–हजरत, मैंने और मियां खोजी ने कल शाम को अपनी आंखों देखा।

नवाब–तो तीन गवाहियां मोतबर हुईं। हमारी ईद तो हर तरह आज है।

इतने में फिटन पर से आबादीजान मुस्कराती हुई आई।

नवाब–आइए-आइए, आपकी ईद किस दिन है?

आबादीजान–क्या कोई भारी जोड़ा बनवा रखा है? फटे से मुंह शर्म नहीं आती?

नवाब–ईद कुरबां है, यही दिन तो है कुरबानी का,

आज तलवार के मानिंद गले मिल कातिल।

हमको क्या, यहां तो तीसों रोजे चट किए बैठे हैं। दोवक्ता पुलाव उड़ता था। यह फिक्र तो उसको होगी जो दीन का टोकरा सिर पर लादे-लादे फिरते हैं।

आबादी–इन्हीं लच्छनों तो दोजख में जाओगे।

नवाब–खैर, एक तसकीन तो हुई ! आपसे तो वहां जरूर गले मिलेंगे।

मुसाहब–सुभान-अल्लाह ! क्या खूब सूझी, वल्लाह, खूब सूझी ! क्या गरमा-गरम लतीफा कहा है।

इतने में चंपा लौंडी अंदर से घबराई हुई आई। लुट गए, लुट गए ! ऐ हुजूर, चोरी हो गई। सब मूस ले गया।

नवाब–क्या, क्या, चोरी हो गई ! कब?

चंपा–रात को, और कब? इस वक्त जो बेगम साहिबा कोठरी में जाती हैं, तो रोशनी देखते ही आंखों तले अंधेरा छा गया। जाकर देखती हैं, तो एक बिलूका।

कपड़े-लत्ते सब तितर-बितर पड़े हैं।

मुसाहब–ऐ खुदावंद, कल तो एक बजे तक यहां दरबार गरम रहा। मालूम होता है, कोई पहले ही से घुसा बैठा था।

नवाब–जरी हमारी तलवार तो लाना भई ! एहतियात शर्त है। शायद छिपा बैठा हो।

तलवार लेकर घर में गए, तो देखते हैं कि बेगम साहिबा एक नाजुक पलंगड़ी पर सिर पकड़े बैठी हैं, और लौंडियां समझा रही हैं कि नवाब की सलामती रहे, एक से एक बढ़िया जोड़ा बन जाएगा। आप घबराती काहे को हैं? नवाब ने जाकर कोठरी को देखा और तलवार हाथ में लिए पैतरे बदलते हुए घर-भर का मुआयना किया। फिर बेगम से बोले–हमारा लहू पिए, जो रोए। आखिर यह रोना काहे का; माल गया, गया !

लौंडी–हां, सच तो फरमाते हैं। जान की सलामती रहे, माल भी कोई चीज है?

बेगम–आज ईद के दिन खुशियां मनाते, डोमनियां आतीं, मुबारकबादियां गातीं, दिन भर धमा-चौकड़ी मचती, रात को रतजगा करते, सो आज यह नया गुल खिला। मगर गहने की संदूकची छोड़ गया, इतना एहसान किया। अभी तक कलेजा धक-धक कर रहा है।

नवाब–हमारे सिर की कसम, लो उठो, मुंह धो डालो। ईद मनाओ, हमारा ही जनाजा देखे जो चोरी का गम करे। दो हजार कोई बड़ी चीज है !

आखिर बहुत कहने-सुनने पर बेगम साहिबा उठीं। लौंडी ने मुंह धुलाया। नवाब साहब ने कहा–तुम्हें वल्लाह, हंस तो दो, वह होंठ पर हंसी आई ! देखो मुस्कराती हो। वह नाक पर आई।

बेगम साहिबा खिलखिलाकर हंस पड़ीं और घर-भर में कहकहे पड़ने लगे। यों बेगम साहिब को हंसाकर नवाब साहब बाहर निकले, तो मुसाहब, हवाली-मवाली, खिदमतगार गुल मचाने लगे–हुजूर, कुछ तो बतलाइए, यह मामला क्या है? आखिर किधर से चोर आया? कोई कहता है–हुजूर, बेघर के भेदी के चोरी नहीं होती, हमको उस हबशिन पर शक है। हबशिन अंदर से गालियां दे रही है–अल्लाह करे झूठे पर बिजली गिरे, आसमान फट पड़े। किसी ने कहा–खुदावंद, चौकीदार की शरारत है। चौकीदार है कि लाखों कसमें खाता है। घर भर में हरबोंग मचा हुआ है। इतने में एक मसखरे ने बढ़कर कहा–हुजूर, कसम है कुरान की, हमें मालूम है। भला बे भला, हम पहचान गए, हमसे उड़कर कोई जाएगा कहां?

मुसाहब–मालूम हो, तो फिर बताते क्यों नहीं?

मसखरा–अजी, बताने से फायदा क्या? मगर मालूम मुझको बेशक है। इसमें शुबहा नहीं। गलत हो, तो हाथ-हाथ बदते हैं।

नवाब–अरे, जिस पर तुझे शक है, उसका नाम बता क्यों नहीं देता।

मुसाहब–बताओ, तुम्हें खुदा की कसम। किस पर तुमको शक है? आखिर किसको ताका है? भई, हमको बचा देना उस्ताद।

मसखरा–(नवाब साहब के कान में) हुजूर, यह किसी चोर का काम है।

मुसाहब–क्या कहा हुजूर, किसका नाम लिया?

नवाब–(हंसकर) आप चुपके से फरमाते हैं, यह किसी चोर का काम है।

लोगों के हंसते-हंसते पेट में बल पड़ गए। जिसे देखो, लोट रहा है। इतने में रेल के एक चपरासी ने आकर तार का लिफाफा दिया। लिफाफा देखते ही नवाब साहब का चेहरा फक हो गया, हाथ-पांव फूल गए। बोले–भई, किसी अंगरेजीदां को बुलाओ और तार पढ़वाओ। खुदा जाने, कहां से गोला आया है।

मुसाहब–क्यों मियां जवान, यह तार बड़े साहब के दफ्तर से आया है न?

चपरासी–नाहीं, रेलघर से आवा है।

मुसाहब–वाह रे अंगरेजो, अल्लाह जानता है, अपने फन के उस्ताद हैं। और सुनिए, जल्दी के लिए अब तार की खबर भी रेल पर आने लगी। वाह रे उस्ताद, अकल काम नहीं करती।

हाफिज जी–खुदा जाने, यह तार बोलता क्योंकर है? आखिर तार के तो जान नहीं होती।

ख़िदमतगार एक अंगरेजीदां को ले आया। तार पढ़ा गया, तो मालूम हुआ कि किसी ने मिरजापुर से पूछा है कि ईद आज है, या कल होगी?

मुसाहब–यह तो फरमाइए, भेजा किसने?

बाबू–निसारहुसेन ने।

नवाब–समझ गया। मिरजापुर में हमारे एक दोस्त हैं निसारहुसेन। उन्हीं ने तार भेजा होगा। इसका जवाब किसी से लिखवाइए जिससे आज ही पहुंच जाए। एक रुपया, दो रुपया, जो खर्च हो, दारोगा से दिलवा दो। और मियां नुदरत को तारघर भेजो और कहो कि अगर बाबू कुछ मांगे तो दे देना। मगर इतना कह देना कि खबर जरूर पहुंचे। ऐसा न हो कि कहीं राह में रुक रहे, तो गजब ही हो जाए।

मियां नुदरत लखनऊ के आदमी–नखास के बाहर उम्र भर कदम ही नहीं रखा। वह क्या जानें कि तारघर किस बला का नाम है। राह में एक-एक से पूछते जाते हैं–क्यों भई, तारघर कहां है? आखिरकार एक चपरासी ने कहा–कलकी बरक के सामने है। मियां नुदरत घबरा रहे थे, बुरे फंसे यार, तारघर में न जाने क्या वारदात हो। हम अंग्रेजी कानून-वानून नहीं जानते। देखें, आज क्या मुसीबत पड़ती है? खैर, खुदा मालिक है। चलते-चलते कोई दो घंटे में ऐशबाग पहुंचे। यहां से पता पूछते-पूछते चले हुसेनगंज। वहां एक बाबू सड़क पर खड़े थे। उनसे पूछा–क्यों बाबूजी, तारघर कहां है? उन्होंने कहा–सामने चले जाओ। फिर पलटे। बाबू जी एक रुपया लाया हूं और लिखवाना यह है कि आज ईद सुन्नियों की है, कल शियों की होगी। भला वहां बैठा रहूं? जब खबर पहुंच जाए, तब आऊं? बाबू ने कहा–ऐसा कुछ जरूरी नहीं। खैर, तारघर पहुंचे तो कलेजा धक-धक कर रहा है कि देखिए जान क्योंकर बचती है। थोड़ी देर फाटक पर खड़े रहे और वहां से मारे डर के बैरंग वापस। राह में दोनों रुपये उन्होंने भुनाए और बीबी के लिए पंचमेल मिठाई चंगेल में ले चले। रास्ते में यही सोचते रहे कि नवाब से यों चकमा चलेंगे, यों झांसा देंगे। चैन करो।

उस्ताद, अब तुम्हारे पौ-बारह हैं। हलवाई की दुकान और दादा जी का फातिहा, घर में जो खुश-खुश घुसे, तो बीबी देखते ही खिल गईं। झपटकर चंगेल उनके हाथ से छीनी। देखा, तो मुंह में पानी भर आया। बरफी पर चांदी का वरक लगा हुआ, इमर्तियां ताजी, लड्डू गरमागरम। पेड़े वह, जो मथुरा के पेड़ों के दांत खट्टे कर दें। दो-तीन लड्डू और एक बरफी तो देखते ही देखते चट कर गईं। पेड़ा उठाने ही को थीं कि मियां नुदरत ने झल्लाकर पहुंचा पकड़ लिया और बोले—अरे, बस भी करोगी? एक लड्डू खाया, मैं कुछ न बोला; दूसरा निकाला, मैं चुपचाप देखा किया। तीसरे लड्डू पर हाथ बढ़ाया, बरफी खाई और अब चली पेड़े पर हाथ डालने। अब खाने-पीने की चीज में टोक कौन, इतनी बड़ी लूमड़ हो गईं, मगर बिल्लड़ ही बनी रहीं। मरभुक्खों की तरह मिठाई पर गिर पड़ने के क्या माने? दो प्यालियां लाओ, अफीम घोलो, पियो। जब खूब नशे गठें, तो मिठाइयां चखो। खुदा की कसम, यह अफीम भी नेमत की मां का कलेजा है।

बीबी—(तिनककर) बस, नेमत की मां का कलेजा तुम्हीं खाओ। खाओ, चाहे भाड़ में जाओ। वाह, आज इतने बड़े त्यौहार के दिन मिठाई क्या लाए कि दिमाग ही नहीं मिलता। मोती की-सी आब उतार ली। एक पेड़े के खातिर पहुंचा धरके मरोड़ डाला।

इतने में बाहर से आवाज आई—मियां नुदरत हैं?

बीबी—सुनते हो, या कानों में ठेठियां हैं? एक आदमी गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रहा है, दरवाजे को चूल से निकाले डालता है। बोलते क्यों नहीं? कहीं चोरी करके तो नहीं आए हो?

नुदरत—जरी आहिस्ते-आहिस्ते बातें करो।

बीबी—ऐ है, सच कहिएगा। हम तो खूब गुल मचायेंगे। मामा, हम परदे में हुए जाते हैं। जाकर उनसे कह दो—घर में घुसे बैठे हैं।

नुंदरत—नहीं, नहीं यह दिल्लगी अच्छी नहीं। कह दो, नवाब साहब के यहां गए हैं।

मामा—(बाहर जाकर) मियां, क्या गुल मचा रहे हो? मैं तो समझी, कहीं से दौड़ आई है। वह तो सबेरे नवाब साहब के यहां गए थे, अभी आए नहीं। जो मिलें, तो भेज दीजिएगा।

पुकारने वाला—यह कैसी बात? नवाब साहब के यहां से तो हम भी अभी-अभी आ रहे हैं। वहां ढुंढ़स मची हुई है कि चल कहां दिए। अच्छा भाभी साहब से कहो, आज ईद के दिन दरवाजे पर आए हैं, कुछ सेवइयां-बेवइयां तो खिलाएं। हम तो बेतकल्लुफ आदमी हैं। तकाजा करके दावत लेते हैं।

मामा ने अंदर से ले जाकर बाहर बरामदे में एक मोढ़ा डाल दिया। उधर मियां-बीवी में तकरार होने लगी।

मियां—अजी, टाल भी दो। ऐसे-ऐसे मुफ्तखोरे बहुत आया करते हैं। मामा, तुम भी पागल ही रहीं। मोढ़ा डालने की भला क्या जरूरत थी?

बीवी—ऐ वाह, हम तो जरूर खातिर करेंगे। यह अच्छा कि नवाब के यहां जाकर

हमको गंवारिन बनाए। इसमें तुम्हारी नाक न कटेगी।

बीवी ने एक तश्तरी में पांच-छह डलियां मिठाई की करीने से लगाकर उस पर रेशमी हरा रूमाल ढक दिया और मामा से कहा—जाओ, दे आओ। मियां नुदरत की रूह पर सदमा हुआ कि चार-पांच डली तो बीवी बातें करते-करते चख गईं और पांच-छह अब निकल गईं। गजब ही हो गया। मामा मिठाई लेकर चली तो ड्योढ़ी में दो लड्डू चुपके से निकाल कर एक ताक में रख दिए। इत्तिफाक से एक छोकरा देख रहा था। जैसे मामा बाहर गई, वैसे ही दोनों लड्डू मजे से खा गया। चलिए, चोर के घर में मोर बैठा। मुसाहब ने रूमाल हटाया, तो कहा—वाह, भाभी साहब तो भाई साहब से भी बढ़कर निकलीं। यह हाथी के मुंह में जीरा। खैर, पानी तो लाओ। हजरत ने मिठाई खाई और पानी पिया, तो पान की फरमाइश की। बीवी ने अपने हाथ से दो गिलौरियां बनाईं। मुसाहब ने चखी, तो हुक्का मांगा। नुदरत ने कहा—देखा न, हाथ देते ही पहुंचा पकड़ लिया। मिठाई लाओ, पान खिलाओ, पानी पिलाओ, हुक्का भर लाओ, गोया बाबा के घर में बैठे हैं। इन मूजियों की तो कब्र तक से मैं वाकिफ हूं। और एक इस पर क्या मौकूफ है। नवाब के यहां जितने हैं, सब गुरगे, मुफ्तखोर, पराया माल ताकने वाले। मामा, जाकर कह दो, हुक्का यहां कोई नहीं पीता। लेकिन बीवी ने हुक्का भरवाकर भेज ही दिया। जब पी चुके, तो बाहर से आवाज दी कि मामा, चारपाई यहां मौजूद है। जरा दरी या गलीचा दे जाइएगा। अब ठीक दोपहर में कौन इतनी दूर जाए। जरा कमर सीधी कर लें। तब तो मियां नुदरत खूब ही झल्लाए। आखिर शैतान का मनसूबा क्या है? देख रहा है कि मालिक घर में नहीं है। फिर यह दरवाजे पर चारपाई पर सोना क्या माने? और मुझसे-इससे कहां का ऐसा याराना है कि आते ही भाभी साहिबा से फरमाइशें होने लगीं।

इधर मामा ड्योढ़ी में गईं कि लड्डू चुपके-चुपके खाएं। ताक में ढूंढ़ मारा, पर लड्डुओं का कहीं पता नहीं। छोकरे ने कहा—मामा, वहां क्या ढूंढ़ रही हो? वह तो चूहा खा गया। सच कहना कैसी हुई? चूहे ने तुम्हारे अच्छे कान कतरे?

मुसाहब—मामाजी, जरी दरी दे जाइए।

मामा—यहां दरी-वरी नहीं है।

मुसाहब—हम जानते हैं, बड़े भाई कहीं इस वक्त ईद मिलने गए हैं। बस, समझ जाइए।

नुदरत ने कहा—खुश हुईं? कुछ समझी भी? अब यह इस फिक्र में है कि तुमको हमको लड़वा दें। और मिठाई भेजो। गिलौरियां चखाओ !

जब मियां मुसाहब चंपत हुए तो मियां नुदरत भी चंगेल की तरफ बढ़े और अफीम की पीनक में खूब छककर मिठाई चखी। फिर चले नवाब के घर। कदम-कदम पर फिकरे सोचते जाते हैं। बारे दाखिल हुए, तो लोगों ने आसमान सिर पर उठाया।

नवाब—शुक्र है, जिंदा तो बचे। यह आप अब तक रहे कहां आखिर?

मुसाहब—हुजूर, तारघर तो यह सामने है।

हाफिज—हां, और नहीं तो क्या? बात करते तो आदमी पहुंचता है।

रोशनअली–कौन, मुझसे कहिए, तो इतनी देर में अठारह फेरे करूं।

नुदरत–हां भाई, घर बैठे जो चाहे कह लो, कोई जाएं, तो आटे-दाल को भाव मालूम हो। चलते-चलते आंधी-रोग आ जाता है। बकरी मर गई और खाने वाले को मजा ही न आया। आप लोग थान के टर्रे हैं। कहने लगे, दो कदम पर है। यहां से गए सआदतगंज, वहां से धनिया महरी के पुल, वहां से ऐशबाग, वहां से गनेशगंज, वहां से अमीनाबाद होते हुए तारघर पहुंचे। दम टूट गया, शल हो गए, मर मिटे, न खाना न दाना। आप लोग बैठे-बैठे यहां जों चाहे फरमाएं, कहने और करने में फर्क है।

नवाब–तो इस ठांय-ठांय से वास्ता, यह कहिए, खबर पहुंची कि नहीं?

नुदरत–खुदावंद, भला मैं इसका क्या जवाब दूं? खबर दे आया। बाबू ने मेरे सामने खट-खट किया, साहब ने रुपये लिए, चपरासियों को इनाम दिया। चार रुपये अपनी जेब से देने पड़े। वह तो कहिए, वहां मेरे एक जान-पहचान के निकल आए, नहीं बैरंग वापस आना पड़ता।

नवाब–खैर, तसकीन हुई ! अब फरमाइए, इतनी देर कहां हुई?

नुदरत–खुदावंद, जल्दी के मारे बग्घी किराए करके गया था, लौटती बार उसने वह पलटा खाया कि मैं समझा, बस कुचल ही गया। मगर खुदा कार-साज है गिरा तो, लेकिन बच गया। कोई घंटे तक कोचवान बम ही दुरुस्त किया किया। इससे देर हुई। हुजूर, अब घर जाता हूं।

नवाब–अरे भई, खाना तो खाते जाओ। अच्छा चार रुपये वे हुए और बग्घी के किराए के भी कोई तीन रुपये हुए होंगे? सात रुपये दारोगा से ले लो।

नुदरत–नहीं खुदावंद, झूठ नहीं बोलूंगा। चाहे फाका करूं, मगर कहूंगा सच ही। यही तो गुलाम में जौहर है। दो रुपये और पांच पैसे दिए। देखिए, खुदा को मुंह दिखाना है।

नवाब–दारोगा, इनको दस रुपये दे दो। सच बोलने का कुछ इनाम भी तो दूं।

तीस

दूसरे दिन सुबह को नवाब साहब जनानखाने से निकले, तो मुसाहबों ने झुक-झुककर सलाम किया। खिदमतगार ने चाय की साफ-सुथरी प्यालियां और चमचे लाकर रखे। नवाब ने एक-एक प्याली अपने हाथ से मुसाहबों को दी और सबने गरम-गरम दूधिया चाय उड़ानी शुरू की। एक-एक घूंट पीते जाते हैं और गप भी उड़ाते जाते हैं।

मुसाहब–हुजूर, काश्मीरी खूब चाय तैयार करते हैं।

हाफिज–हमारी सरकार में जो चाय तैयार होती है, सारी ख़ुदाई में तो बनती न होगी। जरा रंग तो देखिए, हिन्दू भी देखे, तो मुंह में पानी भर आए।

रोशनअली–कुरबान जाऊं, ऐसी चाय तो बादशाह के यहां भी नहीं बनती थी।

खुदा जाने मियां रहीम कहां से नुस्खा पा गए। मगर जरा तलखी बाकी रह जाती है।

रहीम–सुभान अल्लाह ! आप तो बादशाहों के यहां चाय पी चुके हैं और इतना भी नहीं जानते कि चाय में तलखी न हो, तो वह चाय ही नहीं।

खिदमतगार–खुदावंद, शिवदीन हलवाई हाजिर है।

नवाब–दारोगा जी, इस हलवाई का हिसाब कर दो, और समझा दो कि अगर खराब या सड़ी हुई बासी मिठाई भेजी, तो इसे सरकार से निकाल दिया जाएगा। परसों बरफी खराब भेजी थी। घर में शिकायत करती थीं।

दारोगा–सुनते हो शिवदीन? देखो, सरकार क्या फरमाते हैं? खबरदार जो सड़ी-गली मिठाई भेजी। अब तुमने नमकहरामी पर कमर बांधी है। खड़े-खड़े निकाल दिए जाओगे।

हलवाई–नहीं खुदावंद, अव्वल माल दूं अव्वल ! चाशनी जरा बहुत आ गई, तो दाना कम पड़ा। कड़ी हो गई। चाशनी की गोली देर में देखी, नहीं तो इस दूकान की बरफी तो शहरभर में मशहूर है। वह लज्जती होती है कि ओंठ बंधने लगते हैं।

दारोगा–चलो, तुम्हारा हिसाब कर दें। ले बतलाओ, कितने दिन से खर्च नहीं पाया, और तुम्हारा क्या आता है?

हलवाई–अगले महीने में पच्चीस रुपये और कुछ आने की आई थी। और अब की दस तारीख अंग्रेजी तक कोई सत्तर या अस्सी की।

दारोगा–अजी, तुम तो गद्देबाजियां करते हो ! सत्तर या अस्सी, सौ या पांच सौ, उस महीने में उतनी और इस महीने में इतनी। यह बखेड़ा तुमसे पूछता कौन है? हमें तो बस, गठरी बता दो, कितना हुआ?

हलवाई–अच्छा, हिसाब तो कर लूं, (थोड़ी देर के बाद) बस, एक सौ बयालीस रुपये और दस आने दीजिए। चाहे हिसाब कर लीजिए, बोलता जाऊं।

दारोगा–अजी, तुम कोई नये तो हो नहीं। बताओ इसमें यारों का कितना है? सच बोलना लाला ! (पीठ ठोंककर) आओ, वारे-न्यारे हों। क्यों, है न?

हलवाई–बस, सौ हमको दे दो, बयालीस तुम ले लो। सीधा-सीधा मैं तो यह जानता हूं।

दारोगा–अच्छा, मंजूर। मगर बयालीस के बावन करो। एक सौ तुम्हारे, बावन हमारे। सच कहना, दोनों महीनों में चालीस की मिठाई आई होगी या कम?

हलवाई–अजी हुजूर, अब इस भेद से आपको क्या वास्ता? आपको आम खाने से गरज है, या पेड़ गिनने से। सच-सच यह कि अब मिला कर अड़तीस रुपये की आई होगी। मुल वजन में मार देता हूं। सेर भर लड्डू मांग भेजे, हमने पांव सेर कम कर दिए।

दारोगा–ओह, इसकी न कहिए, यहां अंधेर-नगरी चौपट-राज है। यह दिमाग किसे कि तौलने बैठे। मियां लखलुट, बीवी उनसे बढ़कर। दस के पचास लो, और सेर के तीन पाव भेजो। मजे हैं। अच्छा, ये सौ रुपये गिन लो और एक सौ बावन की रसीद हमें दो।

हलवाई–यह मोल-तोल है। सौ और पांच हम लें और बाकी हुजूर को मुबारक रहें।

अब सुनिए, मियां खोजी ने ये सारी बातें सुन लीं। जब शिवदीन चला गया, तो बढ़कर बोले–अजी हजरत, आदाबरज है। कहिए, इसमें कुछ यारों का भी हिस्सा है? या बावन के बावन खुद ही हजम कर जाओगे और डकार तक न लोगे? अब हमारा और आपका साझा न होगा, तो बुरी ठहरेगी।

दारोगा–क्या? किससे कहते हैं आप ! यह साझा कैसा ! भंग तो नहीं पी गए हो कहीं? यह क्या वाही-तबाही बक रहे हो? यहां बेहूदा बकने वालों की जबान खींच ली जाती है। तुम टुकड़गदों को इन बातों से क्या वास्ता?

खोजी–(कमर कसकर) ओ गीदी, कसम खुदा की, इतनी करौलियां भोंकूगा कि याद करो। मुझे भी कोई ऐसा-वैसा समझे हो? मैं आदमी को दम के दम सीधा बना देता हूं। किसी और भरोसे न भूलिएगा। क्या खूब, अड़तीस के डेढ़ सौ दिलवाए, पचास खुद उड़ाए और ऊपर से गुर्राता है मर्दक ! अभी तो नवाब साहब से सारा कच्चा चिट्ठा जड़ता हूं। खड़े-खड़े न निकाल दिए जाओ, तो सही। हम भी तमाम उम्र रईसों की ही सोहबत में रहे हैं, घास नहीं छीला किए हैं। बाएं हाथ से बीस रुपये इधर रख दीजिए। बस; इसी में खैर है, वर्ना उल्टी आंतें गले पड़ेंगी। अब सोचते क्या हो? जरा चीं-चपड़ करोगे, तो कलई खोल दूंगा। बोलो, अब क्या राय है? बीस रुपये से गम खाओगे, या जिल्लत उठाओगे? अभी तो कोई कानोंकान नहीं सुनेगा, पीछे अलबता बड़ी टेढ़ी खीर है

दारोगा–वाह री फूटी किस्मत ! आज सुबह-सुबह बोहनी अच्छी हुई थी। अच्छे का मुंह देखकर उठे थे; मगर हजरत ने अपनी मनहूस सूरत दिखाई। अब बावन में से आपको बीस रुपये, रकम की रकम निकाल दें, तो हमारे पास क्या खाक रहे? और हां, खूब याद आया, बावन किस मरदूद को मिले। सैंतालीस ही तो हमारे हत्थे चढ़े। दस तुम भी लो भई। (गर्दन में हाथ डालकर) मान जाओ उस्ताद। हमें जरूरत थी इससे कहा, वरना क्या बात थी। और फिर हम तुम जिंदा हैं तो सैंकड़ों लूटेंगे मियां, ये हाथ दोनों लूटने ही के लिए हैं, या कुछ और?

खोजी–दस में तो हमारा पेट न भरेगा। अच्छा भई, पंद्रह दो।

आखिर दारोगा ने मजबूर होकर पंद्रह रुपये मियां खोजी को नजर किए और दोनों आदमी जाकर महफिल में शरीक हुए। थोड़े ही देर बैठ होंगे कि चोबदार ने आकर कहा–हुजूर, वह बजाज आया है, जो विलायती कपड़ा बेचता है। कल भी हाजिर हुआ था, मगर उस वक्त मौका न था, मैंने अर्ज न किया।

नवाब–दारोगा से कहो, मुझे क्या घड़ी-घड़ी आके परचा जड़ते हो। (दारोगा से) आओ भई, उसको भी लगे हाथों भुगता ही दो। झंझट क्यों बाकी रह जाय। कुछ और कपड़ा आया है विलायत से? आया हो, तो दिखाओ; मगर बाबा मोल की सनद नहीं।

बजाज–अब कोई दूज तक सब कपड़ा आ जायगा। और, हुजूर ऐसी बातें कहते हैं ! भला, इस ड्योढ़ी पर हमने कभी मोल-तोल की बात की है आज तक? और

यों तो आप अमीर हैं, जो चाहे कहें, मालिक हैं हमारे।

दारोगा और बजाज चले। जब दारोगा साहब की खपरैल में दोनों जाकर बैठे, तो मियां खोजी भी रेंगते हुए चले और दन से मौजूद ! दारोगा ने जो इनको देखा तो काटो तो बदन में लहू नहीं; मुर्दनी सी चेहरे पर छा गई ! चुप ! हवाइयां उड़ी हुईं। समझे कि यह खोजी एक ही काइयां है। इससे खुदा पनाह में रखे। सुबह को तो मरदूद ने हत्थे ही पर टोक दिया, और पंद्रह पटीले। अब जो देखा कि बजाज आया, तो फिर मौजूद। आज रात को इसकी टांग न तोड़ी हो, तो सही। मगर फिर सोचे कि गुड़ से जो मरे, तो जहर क्यों दें। आओ, इस वक्त चुनीं-चुनां करें, फिर समझा जाएगा। बोले–आओ भाईजान, इधर मोढ़े पर बैठो। अच्छी तरह भई? हुक्का लाओ, आपके लिए।

बजाज सदर-बाजार का रहने वाला एक ही उस्ताद था। ताड़ गया कि इसके बैठने से मेरा और दारोगा का मतलब खब्त हो जाएगा? किसी तदबीर से इसको यहां से निकालना चाहिए। पहले तो कुछ देर दारोगा से इशारों में बातें हुआ कीं। फिर थोड़ी देर के बाद बजाज ने कहा–मियां साहब, आपको यहां कुछ काम है?

खोज़ी–तुम अपनी कहो लालाजी, हमसे क्या वास्ता?

बजाज–तुम यहां से उठ जाओ। उठते हो कि मैं दूं एक लात ऊपर से।

खोजी–ओ गीदी, जबान संभाल; नहीं तो इतनी करौलियां भोंकूंगा कि खून-खराबा हो जाएगा।

बजाज–उठूं फिर मैं?

खोजी–उठके तमाशा भी देख ले !

बजाज–बेधा है क्या?

खोजी–वल्लाह, जो बे-ते किया, तो इतनी करौलियां...

खोजी कुछ और कहने ही को थे कि बजाज ने बैठे-बैठे मुंह दबा दिया और एक चपत जमायी। चलिए, दोनों गुंथ गये। अब दारोगा जी को देखिए। बीच-बचाव किस मजे से करते हैं कि खोजी के दोनों हाथ पकड़ लिये और कमर दबाये हुए हैं और बजाज ऊपर से इनको ठोंक रहा है। दारोगा साहब गला फाड़-फाड़ कर गुल मचाते जाते हैं कि मियां, क्यों लड़े मरते हो? भई, धौल-धप्पे की सनद नहीं। खोजी अपने दिल में झल्ला रहे हैं कि अच्छे मीरफैसली बने। इतने में किसी ने नवाब साहब से जाकर कह दिया कि मियां खोजी, दारोगा और बजाज तीनों गुंथे पड़े हैं। उसी वक्त बजाज भी दौड़ा हुआ आया और फरियाद की कि हुजूर, हम आपके यहां तो सस्ता माल देते हैं, मगर यह खोजी हिसाब-किताब के वक्त सर पर सवार हो गये। लाख-लाख कहा किये कि भई, हम अपने माल का भाव तुम्हारे सामने न बतायेंगे; मुल इन्होंने हारी मानी न जीती, और उल्टे पंजे झाड़ के चित-पट की ठहरायी। कमजोर, मार खाने की निशानी। मैंने वह गुद्दा दिया कि छठी का दूध याद करते होंगे। दारोगा भी रोते-पीटते आये कि दोहाई है, चारपाई की पट्टी तोड़ डाली, खासदान तोड़ डाला और सैकड़ों गालियां दीं।

मियां खोजी ऐसे धपियाये गये और इतनी बेभाव की पड़ी कि बस, कुछ पूछिए

नहीं। नवाब ने पूछा—आखिर झगड़ा क्या था?

दारोगा—हुजूर यह खोजी बड़े ही तीखे आदमी हैं। बात-बात पर करौली भोंकते हैं, और गीदी तो तकिया-कलाम है। इस वक्त लाला बलदेव ही से भिड़ पड़े। वह तो कहिए, मैंने बीच-बचाव कर दिया। वर्ना एक-आध का सिर ही फूट जाता।

बजाज—बड़े झल्ले आदमी हैं। दारोगा जी बेचारे न आ जायं तो कपड़े-वपड़े फाड़ डालें।

खोजी—तो अब रोते काहे को हो? अब यह दुखड़ा लेके क्यों बैठे हो।

नवाब—लप्पा-डग्गी तो नहीं हुई?

खोजी—नहीं हुजूर, शरीफों में कहीं हाथा-पाई होती है भला? हमने इनको ललकारा, इन्होंने हमको डांटा, मगर कुंदे तौल-तौल कर दोनों रह गये। भलेमानस पर हाथ उठाना कोई दिल्लगी है !

खैर, मियां खोजी तो महफिल में जाकर बैठे और उधर लाला बलदेव और दारोगा साहब हिसाब करने गये।

दारोगा—हां भाई, बताओ।

लाला—अजी बतायें क्या, जो चाहे दिलवा दो।

दारोगा—पहले यह बताओ, तुम्हारा आता क्या है? सौ, दो सौ, दस, बीस, पचास जो हो, कह दो।

लाला—दारोगा जी, आजकल कपड़ा बड़ा मंहगा है।

दारोगा—लाला, तुम निरे गावदी ही रहे। हमको मंहगे-सस्ते से क्या वास्ता? हमको तो अपने हक से मतलब। तुम तो इस तरह कहते हो, जैसे हमारी गिरह से जाता है।

लाला—फिर तो सात सौ तिरपन निकालिए।

दारोगा—बस, अरे मियां, अबकी इतने दिनों में सात-साढ़े सात सौ ही की नौबत आयी?

लाला—जी हां, आप से कुछ परदा थोड़े ही है। दो सौ और पचपन रुपये का कपड़ा आया है; अंदर-बाहर, सब मिलाकर। मगर परसों नवाब साहब कहने लगे कि अबकी तो तुम्हारा कोई पांच-छह सौ का माल आया होगा। मैंने कहा कि ऐसे मौके पर चूकना गधापन है, वह तो पांच-छह सौ का बताते थे, मेरे मुंह से निकल गया कि हिसाब किये से मालूम होगा। मुल कोई आठ-सात सौ का आया होगा। तो अब सात सौ तिरपन ही रखिए। इसमें हमारा और आपका समझौता हो जायगा।

दारोगा—अजी, समझौता कैसा, हम-तुम कुछ दो तो हैं नहीं; और हमारे-तुम्हारे तो बाप-दादा के वक्त से दोस्ताना है। बोलो कितने पर फैसला होता है?

लाला—बस, दो सौ छब्बीस तो हमको एक दीजिए और तीन सौ और दीजिए। इसके बाद बढ़े सो आपका।

दारोगा—(हंसकर) अच्छा भई, मंजूर। हाथ पर हाथ मारो। मगर सात सौ तिरपन रुपये छः आने की रसीद लिखो, जिसमें मालूम हो कि आने-पाई से हिसाब लैस है।

लाला–बड़े काइयां हो दारोगा जी ! अजी, दो सौ सत्ताईस रुपये छः आने कुल आपका?

खोजी–बल्कि आपके बाप का।

यह आवाज सुनकर दोनों चौकें। इधर-उधर देखते हैं, कोई नजर ही नहीं आता। दारोगा के हवास गायब। बजाज के बदन में खून का नाम नहीं। इतने में फिर आवाज आयी–कहो, कुछ यारों का भी हिस्सा है? तब दोनों के रहे-सहे होश और भी उड़ गये।

अब सुनिए–मियां खोजी खपरैल के पिछवाड़े एक मोखे की राह से सब सुन रहे थे। जब कुल कार्रवाई खतम हो गयी, तो आवाज लगायी, खैर दारोगा और लाला बलदेव ने उनको ढूंढ़ निकाला और लल्लो-पत्तो करने लगे।

बजाज–हमारा कसूर फिर माफ कीजिए।

दारोगा–अजी, ये ऐसे आदमी नहीं हैं। ये बेचारे किसी से लड़ने-भिड़ने वाले नहीं। बाकी लड़ाई-झगड़ा तो हुआ ही करता है। दिल में कुदरत आयी और साफ हो गये।

खोजी–ये बातें तो उम्र भर हुआ करेंगी। मतलब की बात फरमाइए। लाओ कुछ इधर भी।

दारोगा–जो कहो।

खोजी–सौ दिलवाइए पूरे। एक सौ लिये बगैर न टलूंगा। आज तुम दोनों ने मिलकर हमारी खूब मरम्मत की है।

दारोगा–यह तीस रुपये तो एक लीजिए और यह दस का नोट, बस ! और जो अलसेट कीजिए, तो इससे भी हाथ धोइए।

खोजी–खैर लाइए, चालीस ही क्या कम हैं।

दारोगा–हम समझते थे कि बस हमीं-हम हैं; मगर आप हमारे भी गुरु पैदा हुए।

मियां खोजी और दारोगा साहब हाथ में हाथ दिये जाकर महफिल में बैठे, गोया दोनों में दांत-काटी रोटी थी। मगर दारोगा का बस चलता, तो खोजी को काले पानी ही भेज देते, या जिंदा चुनवा देते। महफिल में लतीफे उड़ रहे थे।

नुदरत–हुजूर, आज एक आदमी ने हमसे पूछा कि अगर दरिया में नहायें, तो मुंह किस तरफ रखें। हमने कहा था कि भाई, अगर अक्लमंद हो, तो अपने कपड़ों की तरफ रखो, वर्ना चोर उठा ले जाएगा और आप गोते ही खाते रह जायेंगे।

हाफिज–पुराना लतीफा है।

आज़ाद–एक हकीम ने कहा कि जब तक मैं बिन ब्याहा था, तो बीवी वाले गूंगे हो गये थे और अब जो शादी कर ली, तो एक-एक मुंह में सौ-सौ जबानें हैं।

इतने में गन्धी ने आकर सलाम किया।

नवाब–दारोगाजी, इनको भी भुगता दो।

दारोगा और गन्धी खपरैल में पहुंचे, तो दारोगा ने पूछा–कितना इत्र आया?

गन्धी–देखिए, आपके यहां तो लिखा होगा।

दारोगा—हां, लिखा तो है। मगर खुदा जाने वह कागज कहां पड़ा है। तुम अपनी याद से जो जी में आये, बता दो।

गन्धी—पैंतीस रुपये तो कल के हुए, और अस्सी रुपये उधर के। बेगम साहबा ने अब की इत्र की भरमार ही कर दी। कराबे के कराबे खाली कर दिये।

दारोगा—अच्छा भई, फिर इसमें किसी के बाप का क्या इजारा। शौकीन हैं, रईसजादी हैं, अमीर हैं। इत्र उन्हीं के लिए है, या हमारे-आपके लिए? अच्छा, तो कुल एक सौ पन्द्रह रुपये हुए न ! तुम भी क्या याद करोगे। लो, सौ ये हैं और तीन नोट पांच-पांच के।

गंधी—अच्छा लीजिए, यह इत्र की शीशी आपके लिए लाया हूं।

दारोगा—किस चीज का है?

गंधी—सूंघिए, तो मालूम हो। खुदा जानता है, दस रुपये तोले में झड़ाझड़ उड़ा जा रहा है।

मियां गन्धी उधर रवाना हुए, इधर दारोगा जी खुश-खुश चले, तो आवाज आयी कि उस्ताद, इस शीशी में यारों का भी हिस्सा है। पीछे फिर के देखते हैं, तो मियां खोजी घूमते हुए चले आते हैं।

दारोगा—यार, तुमने तो बेतरह पीछा किया।

खोजी—अब्र की तो तुमको कुछ न मिला। मगर इस इत्र में से आधी शीशी लेंगे।

दारोगा—अच्छा भई, ले लेना। तुमसे तो कोर ही दबी है। दोनों आदमी जाकर महफिल में फिर शरीक हो गये।

इकतीस

एक दिन पिछले पहर से खटमलों ने मियां खोजी के नाक में दम कर दिया। दिन भर का खून जोंक की तरह पी गये। हजरत बहुत ही झल्लाये; चीख उठे, लाना करौली, अभी सबका खून चूस लूं। यह हांक जो औरों ने सुनी, तो नींद हराम हो गयी। चोर का शक हुआ। लेना-लेना, जाने न पाये। सराय भर में हुल्लड़ मच गया। कोई आंखें मलता हुआ अंधेरे में टटोलता है, कोई आंखें फाड़-फाड़कर अपनी गठरी को देखता है, कोई मारे डर के आंखें बंद किये पड़ा है। मियां खोजी ने जो चोर-चोर की आवाज सुनी, तो खुद भी गुल मचाना शुरू किया—लाना मेरी करौली। ठहर! मैं भी आ पहुंचा। पीनक में सूझ गयी कि चोर आगे भागा जाता है, दौड़ते-दौड़ते ठोकर खाते हैं तो अररर धों ! गिरे भी तो कहां, जहां कुम्हार के हंडे रखे थे। गिरना था कि कई हंडे चकनाचूर हो गये। कुम्हार ने ललकारा कि चोर-चोर ! यह उठने ही को थे कि उसने आकर दबोच लिया और पुकारने लगा—दौड़ो-दौड़ो, चोर पकड़ लिया। मुसाफिर और भठियारे सब के सब दौड़ पड़े। कोई डंडा लिये है, कोई लट्ठ

बांधे। किसी को क्या मालूम कि यह चोर है, या मियां खोजी। खूब बेभाव की पड़ी। यार लोगों ने ताक-ताककर जन्नाटे के हाथ लगाये। खोजी की सिट्टी-पिट्टी भूल गयी; न करौली याद रही, न तमंचा। जब खूब पिट-पिटा चुके, तो एक मुसाफिर ने कहा—भई, यह तो खोजी मालूम होते हैं। जब चिराग जलाया गया, तो आप दबके हुए नजर आये। मियां आज़ाद से किसी ने जाकर कह दिया कि तुम्हारे साथी खोजी चोरी की इल्लत में फंसे हैं, किसी मुसाफिर की टोपी चुरायी थी। दूसरे ने कहा—नहीं-नहीं, यह नहीं हुआ। हुआ यह कि एक कुम्हार की हांडियां चुराने गये थे। मुल जाग हो गयी।

मियां आज़ाद को यह बात कुछ जंची नहीं। सोचे, खोजी बेचारे चोरी-चकारी क्या जानें। फिर चोरी भी करते तो हांडियों की? दिल में ठान ली कि चलें और खोजी को बचा लायें। चारपाई से उतरे ही थे कि देखा, खोजी साहब झूमते चले आते हैं और बड़बड़ाते जाते हैं—हत् तेरी गीदी की, बड़ा आज़ाद बना है। चारपाई पर पड़ा जर्र-खर्र किया किया और हमारी खबर ही नहीं।

आज़ाद—खैर, हमको तो पीछे गालियां देना, पहले यह बताओ कि हाथ-पांव तो नहीं टूटे?

खोजी—हाथ-पांव ! अजी, आप उस वक्त होते तो देखते कि बंदे ने क्या-क्या जौहर दिखाये। पचास आदमी घेरे हुए थे, पूरे पचास, एक कम न एक ज्यादा, और मैं फुलझड़ी बना हुआ था। बस, यह कैफियत थी कि किसी को अंटी दी धम से जमीन पर, किसी को कूल पर लादकर मारा। दो-चार मेरे रोब में आकर थरथरा के गिर ही तो पड़े। दस-पांच की हड्डी-पसली चकनाचूर कर दी। जो सामने आया, उसे नीचा दिखाया।

आज़ाद—सच?

खोजी—खुदाई भर में कोई ऐसा जीवटदार आदमी दिखा तो दीजिए।

आज़ाद—भई, खुदाई भर का हाल तो खुदा ही को खूब मालूम है। मगर इतनी गवाही तो हम भी देंगे कि आप-सा बेहया दुनिया भर में न होगा।

दोनों आदमी इस वक्त सो रहे, दूसरे दिन सबेरे नवाब साहब के यहां पहुंचे।

आज़ाद—जनाब, रुखसत होने आया हूं। जिंदगी है, तो फिर मिलूंगा।

नवाब—क्या कूच की तैयारी कर दी? भई, वापस आना, तो मुलाकात जरूर करना।

आज़ाद और खोजी रुखसत हुए, तो खोजी पहुंचे जनानी ड्योढ़ी पर और दरबान से बोले—यार, जरा बुआ जाफरान को नहीं बुला देते। दरबान ने आवाज दी—बुआ जाफरान, तुम्हारे मियां आये हैं।

बुआ जाफरान के मियां खोजी से बिल्कुल मिलते-जुलते थे, जरा फर्क नहीं। वही सवा बालिश्त का कद, वही दुबले-पतले हाथ-पांव। जाफरान उनसे रोज़ कहा करती थी—तुम अफीम खाना छोड़ दो। वह कब छोड़ने वाले थे भला। इसी सबब से दोनों में दम भर नहीं बनती थी। जाफरान ने जो बाहर आकर देखा, तो हजरत पीनक ले रहे हैं। जल-भुनकर खाक ही तो हो गयीं। जाते ही मियां खोजी के पट्टे

पकड़कर एक, दो, तीन, चार, पांच चांटे लगा ही तो दिये। खोजी का नशा हिरन हो गया। चौंककर बोले–लाना तो करौली, खोपड़ी पिलपिली हो गयी। हाथ छुड़ाकर भागना चाहा; मगर वह देवनी नवाब का माल खा-खाकर हथनी बनी फिरती थी। इनको चुरमुर कर डाला। इधर गुल-गपाड़े की आवाज हुई, तो बेगम साहिबा, मामा, लौंडियां, सब पर्दे के पास दौड़ीं।

बेगम–जाफरान, आखिर यह है क्या? रुई की तरह इस बेचारे को तूम के धर दिया।

मामा–हुजूर, जाफरान का कसूर नहीं, यह उस मरदुए का कसूर है जो जोरू के हाथ बिक गया है। (खोजी के कान पकड़कर) जोरू के हाथ से जूतियां खाते हो, और जरा चूं नहीं करते?

खोजी–हाय अफसोस! अजी, यह जोरू किस मरदूद की है। खुदा-खुदा करो! भला मैं इस हुड़दंगी, काली-कलूटी डाइन के साथ ब्याह करता ! मार-मार के भुरकस निकाल लिया।

बुआ जाफरान ने जो ये बातें सुनीं, तो वह आवाज ही नहीं। गौर करके देखते हैं, तो यह कोई और ही है। दांतों के तले उंगली दबाकर खामोश हो रहीं।

लौंडी–ऐ वाह बुआ जाफरान ! इतनी भी नहीं पहचानतीं। यह बेचारे तो नवाब साहब के यहां बने रहते थे। आखिर तुमको सूझी क्या?

बेगम साहबा ने भी जाफरान को खूब आड़े हाथों लिया। इतने में किसी ने नवाब साहब से सारा किस्सा कह दिया ! महफिल भर में कहकहा पड़ गया।

नवाब–जाफरान की सजा यही है कि खोजी को दे दी जायं।

खोजी–बस, गुलाम के हाल पर रहम कीजिए। गजब खुदा का। मियां के धोखे-धोखे में तो इसने हमारे हाथ-पांव ढीले कर दिये और जो कहीं सचमुच मियां ही होते, तो चटनी ही कर डालती। क्या कहें, कुछ बस नहीं चलता, नहीं नवाबी होती, तो इतनी करौलियां भोंकी होतीं कि उम्र भर याद करती। यहां कोई ऐसे-वैसे नहीं। घास नहीं खोदा किये हैं।

बड़ी देर तक अंदर-बाहर कहकहे पड़े, तब दोनों आदमी फिर से रुखसत होकर चले। रास्ते में मियां आज़ाद मारे हंसी के लोट-लोट गये।

खोजी–जनाब, आप हंसते क्या हैं? मैंने भी ऐसी-ऐसी चुटकियां ली हैं कि जाफरान भी याद ही करती होगी।

आज़ाद–मियां, डूब मरो जाकर। एक औरत से हाथापाई में जीत न पाये !

खोजी–जी, वह औरत सौ मर्द की बराबर है। चिमट पड़े, तो आपके भी हवास उड़ जायं।

दोनों आदमी सराय पहुंचकर चलने की तैयारी करने लगे। खाना खाकर बोरिया-बकचा संभाल स्टेशन को चले।

खोजी–हजरत, चलने को तो हम चलते हैं, मगर इतनी शर्तें आपको कबूल करनी होंगी–

(1) करौली हमको जरूर ले दीजिए।

(2) बरस भर के लिए अफीम ले लीजिए। मैं अपने लादे-लादे फिरूंगा। वरना जंभाइयों पर जंभाइयां आयेंगी और बेमौत मर जाऊंगा। आप तो औरतों की तरह नशे के आदी नहीं; मगर मैं बगैर अफीम पिये एक कदम न चलूंगा। परदेस में अफीम मिले, या न मिले, कहां ढूंढ़ता फिरूंगा?

(3) इतना बता दीजिए कि व्रहां बुआ जाफरान की-सी डंडपेल देवनियां तो नजर न आयेंगी? वल्लाह, क्या कस-कस के लातें लगायी हैं, और क्या तान-तान के मुक्केबाजी की है कि पलेथन ही निकाल डाला।

(4) सराय में हम अब तमाम उम्र न उतरेंगे, और जो जहाज पर कुम्हार हुए तो हम डूब ही मरेंगे। हम ठहरे आदमी भारी-भरकम, कहीं पांव फिसल गया और एक-आध हंडा टूट गया, तो कुम्हार से ठांय-ठांय हो जायेगी।

(5) जिस रईस की सोहबत में बजाज आते होंगे, वहां हम न जायंगे।

(6) जहां आप चलते हैं, वहां कांजीहौस तो नहीं है कि गधे के धोखे में कोई हमको कान पकड़कर कांजीहौस पहुंचा दे।

(7) टट्टू पर हम सवार न होंगे, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय।

(8) मीठे पुलाव रोज पकें।

(9) हमको मियां खोजी न कहना। जनाब ख्वाजा साहब कहा कीजिए। यह खोजी के क्या माने?

(10) मोर्चे पर हम न जायंगे। लूट-मार में जो कुछ हाथ आये, वह हमारे पास रखा जाय।

(11) गोली खाने के तीन घंटे पहले और मरने के दो घड़ी पहले हमें बतला देना।

(12) अगर हम मर जायं, तो पता लगाकर हमारे वालिद के पास ही हमारी लाश दफन करना। अगर पता न लगे, तो किसी कबरिस्तान में जाकर सबसे अच्छी कबर के पास हमको दफन करना। और लिख देना कि यह ख्वाजा साहब के वालिद की कबर है।

(13) पीनक के वक्त हमको हर्गिज न छेड़ना।

आज़ाद–तुम्हारी सब शर्तें मंजूर। अब तो चलिएगा।

खोजी–एक बात और बाकी रह गयी।

आज़ाद–लगे हाथों वह भी कह डालिए।

खोजी–मैं अपनी दादीजान से तो पूछ लूं।

आज़ाद–क्या वह अभी जिंदा हैं? खुदा झूठ न बुलाये, तो आप कोई पचास के पेटे में होंगे? और वह इस हिसाब से कम-से-कम डेढ़ सौ बरस की भी न होंगी।

खोजी–अजी, मैं दिल्लगी करता था। उनकी तो हड्डियों तक का पता न होगा।

स्टेशन पर पहुंचे। गुल-गपाड़ा मचा हुआ था। दोनों आदमी भीड़ काटकर अंदर दाखिल हुए, तो देखा, एक आदमी गेरुए कपड़े पहने खड़ा है। फकीरों की-सी दाढ़ी, बाल कमर तक, मूंछें मुड़ी हुई, कोई पचास के पेटे में। मगर चेहरा सुर्ख, जैसे लाल अंगारा; आंखें आगभभूका।

आज़ाद—(एक सिपाही से) क्यों भई, क्या यह कोई फकीर हैं?

सिपाही—फकीर नहीं, चंडाल है। कोई चार महीने हुए, यहां आया और एक आदमी को सब्ज-बाग दिखाकर अपना चेला बनाया। रफ्ता-रफ्ता और लोग भी शागिर्द हुए। फिर तो हजरत पुजने लगे। अब कोई तो कहता है कि बाबा जी ने दस सेर मिठाई दरिया में डाल दी और दूसरे दिन जाकर कहा—गंगाजी, हमारी अमानत हमको वापस कर दो। दरिया लहरें मारता हुआ बाबा जी के पास आया और दस सेर गरमागरम मिठाई किसी ने आप ही आप उनके दामन में बांध दी। कोई कसमें खा-खाकर कहता है कि कई मुर्दे इन्होंने जिंदा कर दिए। एक साहब ने यहां तक बढ़ाया कि एक दिन मूसलाधार मेंह बरस रहा था और इन पर एक बूंद ने असर न किया। कोई फरिश्ता इन पर छतरी लगाए रहा।

आज़ाद—चिकने घड़े बन गए।

सिपाही—कुछ पूछिए नहीं। उन लोगों ने कहना शुरू कर दिया था कि यह कैदखाने से निकल जाएंगे; मगर तीन दिन से हवालात में हैं, और अब सिट्टी-पिट्टी भूली हुई है। मैं जो उधर से आऊं-जाऊं, तो रोज देखूं कि भीड़ लगी हुई है; मगर औरतें ज्यादा और मर्द कम। जो आता है, वह सिजदा करता है आपकी देखा-देखी मैं गया, मेरी देखा-देखी आप गए। बाबा जी के यहां रोज दरबार लगने लगा।

एक दिन का जिक्र है कि बाबा जी ने अपनी कोठरी में टाट के नीचे दस-पांच रुपये रख दिए और चुपके से बाहर निकल आए। जब दरबार जम गया, तो एक आदमी ने कहा—बाबा जी, हमको कुछ दिखाइए। बिना कुछ देखे हम एक न मानेंगे। बाबा जी ने आंखें नीली-पीली कीं और शेर की तरह गरजे—लोगों के होश उड़ गए। दो-चार डरपोक आदमियों ने तो मारे डर के आंखें बंद कर लीं। एक आदमी ने कहा—बाबा, अनजान है। इस पर रहम कीजिए। दूसरा बोला—नादान है, जाने दीजिए।

फकीर—नहीं, इससे पूछो, क्या देखेगा?

आदमी—बाबा, मैं तो रुपयों का भूखा हूं।

फकीर—बच्चा, फकीरों को दौलत से क्या काम? मगर तेरी खातिर करना भी जरूरी है। चल, चल, चल। बरसो, बरसो, बरसो। खन, खन, खन। अच्छा बच्चा, कुटी में देख; टाट का कोना उठा। खुदा ने तेरे लिए कुछ भेजा ही होगा। मगर दाहिना सुर चलता हो; तभी जाना, नहीं तो धोखा खायगा। वहां कोई डरावनी सूरत दिखाई दे, तो डर मत जाना, नहीं तो मर जायगा।

बाबा जी ने कुटी के एक कोने में परदा डाल दिया था और उस परदे में एक आदमी का मुंह काला करके बिठा दिया था। अब तो आदमी डरा कि न जाने कैसी भयानक सूरत नजर आएगी। कहीं डर जाऊं, तो जान ही जाती रहे। बाबा जी एक-एक से कहते हैं, मगर किसी की हिम्मत नहीं पड़ती। तब एक नौजवान ने उठकर कहा—लीजिए, मैं जाता हूं।

फकीर—बच्चा, जाता तो है। मगर जरा संभलकर जाना।

नौजवान बेधड़क कोठरी में घुस गया। टाट के नीचे से रुपये निकालकर जेब में रख लिए और चलने ही को था कि परदे में से वह काला आदमी निकल पड़ा

और जवान की तरफ मुंह खोलकर झपटा। जवान ने आव देखा न ताव, लकड़ी उसकी हलक में डाल दी और इतनी चोटें लगाईं कि बौखला दिया। जब वह रुपये लिए अकड़ता हुआ बाहर निकला, तो हवाली, मवाली सब दंग कि यह तो खुश-खुश आते हैं और हम समझे थे कि अब इनकी लाश देखेंगे।

नौजवान–(फकीर से) कहिए हजरत, और कोई करामात दिखाइएगा?

फकीर–बच्चा, तुम्हारी जवानी पर हमें तरस आ गया।

नौजवान–पहले जाकर अंदर देखिए तो आपके देव साहब की क्या हालत है? जरा मरहम-पट्टी कीजिए।'

'अगर वहां समझदार लोग होते तो समझ जाते कि बाबा जी पूरे ठग हैं, मगर वहां तो सभी जाहिल थे। वे समझे, बेशक बाबा जी ने नौजवान पर रहम किया। खैर, बाबा जी ने खूब हाथ-पांव फैलाये। एक दिन किसी महाजन के यहां गए। वहां मुहल्ले-भर के मर्द और औरतें जमा हो गईं। रात को जब सब लोग चले गए, तो इन्होंने महाजन के लड़के से कहा–हम तुमसे बहुत खुश हैं। जो चाहे मांग ले। लड़का इनके कदमों में गिर पड़ा। आपने फरमाया कि एक कोरी हांडी लाओ, चूल्हा गरम करो, मगर लकड़ी न हो, कंडे हों। कुम्हार ने सब सामान चुटकियों में लैस कर दिया। तब आपने लोहे का एक पत्तर मंगवाया। उसे हांडी में पानी भरकर डाल दिया। पानी को लेकर कुछ पढ़ा। थोड़ी देर के बाद एक पुड़िया दी और कहा–वह सफेद दवा उसमें डाल दे। थोड़ी देर के बाद जब महाजन का लड़का अंदर गया, तो बाबा जी ने लोहे का पत्तर निकाल दिया और अपने पास से सोने का पत्तर हांड़ी में डाल दिया, और चल दिये। महाजन का लड़का बाहर आया, तो बाबा जी का पता नहीं। हांड़ी को जो देखा, तो लोहे का पत्तर गायब, सोने का थक्का मौजूद। मुहल्ले-भर में शोर मच गया। लोग बाबा जी को ढूंढ़ने लगे। आखिर यहां तक नौबत पहुंची कि एक मालदार की बीवी ने चकमे में आकर अपना पांच-छः हजार का जेवर उतार दिया। बाबा जी जेवर लेकर उड़ गये। साल भर तक कहीं पता न चला। परसों पकड़े गये हैं।

थोड़ी देर के बाद गाड़ी आयी। दोनों आदमी जा बैठे।

बत्तीस

सुबह को गाड़ी एक बड़े स्टेशन पर रुकी। नये मुसाफिर आ-आ कर बैठने लगे। मियां खोजी अपने कमरे के दरवाजे पर खड़े घुड़कियां जमा रहे थे–आगे जाओ, यहां जगह नहीं है; क्या मेरे सिर पर बैठोगे? इतने में एक नौजवान दूल्हा बराती कपड़े पहने आकर गाड़ी में बैठ गया। बरात के और आदमी असबाब लदवाने में मसरूफ थे। दुलहिन और उसकी लौंडी जनाने कमरे में बैठायी गयी थीं। गाड़ी चलने वाली ही थी कि एक बदमाश ने गाड़ी में घुसकर दूल्हे की गरदन पर तलवार का ऐसा हाथ

लगाया कि सिर कटकर धड़ से अलग हो गया। उस बेगुनाह की लाश फड़कने लगी। स्टेशन पर कुहराम मच गया। सैकड़ों आदमी दौड़ पड़े और कातिल को गिरफ्तार कर लिया। यहां तो यह आफत थी, उधर दुलहिन और महरी में और ही बातें हो रही थीं।

दुलहिन–दिलबहार, देखो तो, यह गुल कैसा है? जरी झांककर देखना तो !

दिलबहार–हैं-हैं ! किसी ने एक आदमी को मार डाला है। चबूतरा सारा लहू-लुहान है।

दुलहिन–अरे गजब। क्या जाने, कौन था बेचारा !

दिलबहार–अरे ! बात क्या है ! लाश के सिरहाने खड़े तुम्हारे देवर रो रहे हैं।

एक दफे लाश की तरफ से आवाज आयी–हाय भाई, तू किधर गया ! दुलहिन का कलेजा धक-धक करने लगा। भाई-भाई करके कौन रोता है। अरे गजब ! वह घबराकर रेल से उतरी और छाती पीटती हुई चली। लाश के पास पहुंचकर बोली–हाय, लुट गयी। अरे लोगो, यह हुआ क्या?

दिलबहार–हैं-हैं दुलहिन, तुम्हारा नसीब फूट गया।

इतने में स्टेशन की दो-चार औरतें–तार-बाबू की बीवी, गार्ड की लड़की, ड्राइवर की भतीजी वगैरह ने आकर समझाना शुरू किया। स्टेशन मातमसरा बन गया। लोग लाश के इर्द-गिर्द खड़े अफसोस कर रहे थे। बड़े-बड़े संगदिल आठ-आठ आंसू रो रहे थे। सीना फटा जाता था। एकाएक दुलहिन ने एक ठंडी सांस ली, जोर से हाय करके चिल्लायी और अपने शौहर की लाश पर धम से गिर पड़ी। चंद मिनट में उसकी लाश भी तड़प कर सर्द हो गयी। लोग दोनों लाशों को देखते थे, और हैरत से दांतों उंगली दबाते थे। तकदीर के क्या खेल हैं, दुलहिन के हाथ-पांव में मेंहदी लगी हुई, सिर से पांव तक जेवरों से लदी हुई; मगर दम के दम में कफन की नौबत आ गयी। अभी स्टेशन से एक पालकी पर चढ़ कर आयी थी, अब ताबूत में जायगी। अभी कपड़ों से इत्र की महक आ रही थी कि काफूर की तदबीरें होने लगीं। सुबह को दरवाजे पर रोशनचौकी और शहनाई बज रही थी, अब मातम की सदा है। थोड़ी ही देर हुई कि शहर के लोग छतों और दूकानों से बरात देख रहे थे, अब जनाजा देखेंगे। दिलबहार दोनों लाशों के पास बैठी थी; मगर आंसुओं का तार बंधा हुआ था। वह दुलहिन के साथ खेली थी। दुनिया उसकी नजरों में अंधेरी हो गयी थी। दूल्हा के खिदमतगार कातिल को जोर-जोर से जूते और थप्पड़ लगा रहे थे और मरने वाले को याद करके ढाड़ें मार-मार के रोते थे। खैर, स्टेशन मास्टर ने लाशों को उठवाने का इंतजाम किया। गाड़ी तो चली गयी। मगर बहुत से मुसाफिर रेल पर से उतर आये। बला से टिकट के दाम गये। उस कातिल को देखकर सबकी आंखों से खून टपकता था। यही जी चाहता था कि इसको इसी दम पीस डालें। इतने में लाल कुर्ती का एक गोरा, जो बड़ी देर से चिल्ला-चिल्ला कर रो रहा था, गुस्से को रोक न सका, जोश में आके झपटा और कातिल की गरदन पकड़कर उसे खूब पीटा।

आजाद और मियां खोजी भी रेल से उतर पड़े थे। दोनों लाशों के साथ उनके

घर गये। राह में हजारों आदमियों की भीड़ साथ हो गयी। जिन लोगों ने उन दोनों की सूरत ख्वाब में भी न देखी थी, जानते भी न थे कि कौन हैं और कहां रहते हैं, वे भी जार-जार रोते थे। औरतें बाजारों, झरोखों और छतों पर से छाती पीटती थीं कि खुदा ऐसी घड़ी सातवें दुश्मन को भी न दिखाये। दुकानदारों ने जनाजे को देखा और दूकान बढ़ा के साथ हुए। रईसजादे सवारियों पर से उतर-उतर पड़े और जनाजे के साथ चले। जब दोनों लाशें घर पर पहुंचीं, तो सारा शहर उस जगह मौजूद था। दुलहिन का बाप हाय-हाय कर रहा था और दूल्हे का बाप सब्र की सिल छाती पर रखे उसे समझाता था—भाई सुनो, हमारी और तुम्हारी उम्र एक है, हमारे मरने के दिन नजदीक हैं। और दो-चार बरस बेहयाई से जिये तो जिये, वर्ना अब चल-चलाव है। किसी को हम क्या रोयें। जिस तरह तुम आज अपनी प्यारी बेटी को रो रहे हो, इसी तरह हजारों आदमियों को अपनी औलाद का गम करते देख चुके हो। इसका अफसोस ही क्या? वह खुदा की अमानत थी, खुदा के सुपुर्द कर दी गयी।

उधर कातिल पर मुकदमा पेश हुआ और फांसी का हुक्म हो गया। सुबह के वक्त कातिल को फांसी के पास लाये। फांसी देखते ही बदन के रोएं खड़े हो गये। बड़ी हसरत के साथ बोला—सब भाइयों को सलाम ! यह कहकर फांसी की तरफ नजर की और ये शेर पढ़े—

कोई दम कीजिए किसी तौर से आराम कहीं;
चैन देती ही नहीं गरदिशे अय्याम कही।
सैद लागर हूं, मेरी जल्द खबर ले सैयाद;
दम निकल जाय तड़प कर न तहे दाम कहीं।

खोजी—क्यों मियां, शेर तो उसने कुछ बेतुके से पढ़े। भला इस वक्त शेर का क्या जिक्र था।

आज़ाद—चुप भी रहो ! उस बेचारे की जान पर बन आयी है, और तुमको मजाक सूझता है—

उन्हें कुछ रहम भी आता है या रब, वक्ते खूं-रंजी;
छुरी जब हल्के-आजिज पर रवां जल्लाद करते हैं।

कातिल फांसी पर चढ़ा दिया गया और लाश फड़कने लगी। इतने में लोगों ने देखा कि एक आदमी घोड़ा कड़कड़ाता सामने से आ रहा है। वह सीधा जेलखाने में दाखिल हुआ और चिल्लाकर बोला—खुदा के वास्ते एक मिनट की मुहलत दो। मगर वहां तो लाश फड़क रही थी। यह देखते ही सवार धम से घोड़े से गिर पड़ा और रोकर बोला—यह तीसरा था। जेल के दारोगा ने पूछा—तुम कौन हो? उसने फिर आहिस्ता से कहा—यह तीसरा था। अब एक-एक आदमी उससे पूछता है कि मियां, तुम कौन हो और रोक लो, रोक लो की आवाज क्यों दी थी? वह सबको यही जवाब देता है—यह तीसरा था।

आज़ाद—आपकी हालत पर अफसोस आता है।

सवार—भई, यह तीसरा था।

इंसान का भी अजब हाल है। अभी दो ही दिन हुए कि शहर भर इस कातिल

के खून का प्यासा था। सब दुआ कर रहे थे कि इसके बदन को चील-कौए खायं। वे भी इस बूढ़े की हालत देखकर रोने लगे। कातिल की बेरहमी याद न रही। सब लोग उस बूढ़े सवार से हमदर्दी करने लगे ! आखिर, जब बूढ़े के होश-हवास दुरुस्त हुए, तो यों अपना किस्सा कहने लगा--

मैं कौम का पठान हूं। तीन ऊपर सत्तर बरस का सिन हुआ। खुदा ने तीन बेटे दिये। तीनों जवान हुए और तीनों ने फांसी पायी। एक ने एक काफिले पर छापा मारा। उस तरफ लोग बहुत थे। काफिले वालों ने उसे पकड़ लिया और अपने-आप एक फांसी बनाकर लटका दिया। जिस वक्त उसकी लाश को फांसी पर से उतारा, मैं भी वहां जा पहुंचा। लड़के की लाश देखकर गस की नौबत आयी मगर चुप। अगर जरा उन लोगों को मालूम हो जाय कि यह उसका बाप है, तो मुझे भी जीता न छोड़ें; एकाएक किसी ने उनसे कह दिया कि यह उसका बाप है। यह सुनते ही दस-पंद्रह आदमी चिमट गये और आग जलाकर मुझसे कहा कि अपने लड़के की लाश को इसमें जला। भाई, जान बड़ी प्यारी होती है। इन्हीं हाथों से, जिनसे लड़के को पाला था, उसे आग में जला दिया।

अब दूसरे लड़के का हाल सुनिए--वह रावलपिण्डी में राह-राह चला जाता था कि एक आदमी ने, जो घोड़े पर सवार था, उसको चाबुक से हटाया। उसने झल्लाकर तलवार म्यान से खींची और उसके दो टुकड़े कर डाले। हाकिम ने फांसी का हुक्म दिया। और आज का हाल तो आप लोगों ने खुद ही देखा। इस लड़की के बाप ने करार किया था कि मेरे बेटे के साथ निकाह पढ़वावेगा। लड़के ने जब देखा कि यह दूसरे की बीवी बनी, तो आपे से बाहर हो गया।

मियां आज़ाद और खोजी बड़ी हसरत के साथ वहाँ से चले।

खोजी--चलिए, अब किसी दूकान पर अफीम खरीद लें।

आज़ाद--अजी, भाड़ में गयी आपकी अफीम। आपको अफीम की पड़ी है, यहां मारे गम के खाना-पीना भूल गये।

खोजी--भई, रंज घड़ी-दो घड़ी का है। यह मरना-जीना तो लगा ही रहता है।

दोनों आदमी बातें करते हुए जा रहे थे, तो क्या देखते हैं कि एक दूकान पर अफीम झड़ाझड़ बिक रही है। खोजी की बांछें खिल गयीं, मुरादें मिल गयीं। जाते ही एक चवन्नी दूकान पर फेंकी। अफीम ली, लेते ही घोली और घोलते ही गट-गट पी गये।

खोजी--अब आंखें खुलीं।

आज़ाद--यों नहीं कहते कि अब आंखें बंद हुईं।

खोजी--क्यों उस्ताद, जो हम हाकिम हो जायं, तो बड़ा मजा आये। मेरा कोई अफीमची भाई किसी को कत्ल भी कर आये, तो बेदाग छोड़ दूं।

आज़ाद--तो फिर निकाले भी जल्द जाइए।

दोनों आदमी यही बातें करते हुए एक सराय में जा पहुंचे। देखा, एक बूढ़ा हिन्दू जमीन पर बैठा चिलम पी रहा है।

आज़ाद--राम-राम भई, राम-राम !

बूढ़ा–सलाम साहब, सलाम ! मुथना पहने हो और राम-राम कहते हो?

आज़ाद–अरे भाई, राम और खुदा एक ही हैं। समझ का फेर है। कहां जाओगे?

बूढ़ा–गांव यहां से पांच चौकी है। पहर रात का घर से चलेन, नहावा, पूजन कीन, चबेना बांधा और ठंडे-ठंडे चले आयन। आज कचहरी मां एक तारीख हती। सांझ ले फिर चले जाब। जमींदारी मां अब कचहरी धावे के सेवाय और का रहिगा?

आज़ाद–तो जमींदार हो? कितने गांव हैं तुम्हारे?

बूढ़ा–ऐ हजूर, अब यों समझो, कोई दुइ हजार खरच-बरच करके बच रहत हैं।

आज़ाद ने दिल में सोचा कि दो हजार साल की आमदनी और बदन पर ढंग के कपड़े तक नहीं ! गाढ़े की मिरजई पहने हुए हैं; इसकी कंजूसी का भी ठिकाना है? यह सोचते हुए दूसरी तरफ चले, तो देखा, एक कालीन बड़े तकल्लुफ से बिछा है और एक साहब बड़े ठाट से बैठे हुए हैं। जामदानी का कुरता, अद्धी का अंगरखा, तीन रुपये की सफेद टोपी, दो-ढाई सौ की जेब घड़ी, उसकी सोने की जंजीर गले में पड़ी हुई। करीब ही चार-पांच भले आदमी और बैठे हुए हैं और दोसेरा तंबाकू उड़ा रहे हैं। आज़ाद ने पूछा, तो मालूम हुआ, आप भी एक जमींदार हैं। पांच-छह कोस पर एक कस्बे में मकान है। कुछ 'सीर' भी होती है। जमींदारी से सौ रुपये माहवार की बचत होती है।

आज़ाद–यहां किस गरज से आना हुआ।

रईस–कुछ रुपये कर्ज लेना था, मगर महाजन दो रुपये सैकड़ा सूद मांगता है।

मियां आज़ाद ने जमींदार साहब के मुंशी को इशारे से बुलाया, अलग ले जाकर यों बातें करने लगे–

आज़ाद–हजरत, हमारे जरिये से रुपया लीजिए। दस हजार, बीस हजार, जितना कहिए; मगर जागीर कुर्क कर लेंगे और चार रुपये सैकड़ा सूद लेंगे।

मुंशी–वाह ! नेकी और पूछ-पूछ ! अगर आप चौदह हजार भी दिलवा दें, तो बड़ा एहसान हो। और, सूद चाहे पांच रुपये सैकड़ा लीजिए तो कोई परवाह नहीं। सूद देने में तो हम आंधी हैं।

आज़ाद–बस, मिल चुका। यह सूद की क्या बात-चीत है भला? हम कहीं सूद लिया करते हैं? मुनाफा नहीं कहते?

मुंशी–अच्छा हुजूर, मुनाफा सही।

आज़ाद–अच्छा, यह बताओ कि जब सौ रुपये महीना बच रहता है, तो फिर चौदह हजार कर्ज क्यों लेते हैं?

मुंशी–जनाब, आपसे तो कोई परदा नहीं। सौ पाते हैं, और पांच सौ उड़ाते हैं। अच्छा खाना खाते हैं, बारीक और कीमती कपड़े पहनते हैं, यह सब आये कहां से? बंक से लिया, महाजनों से लिया; सब चौदह हजार के पेटे में आ गये। अब कोई टका नहीं देता।

आज़ाद दिल में उस बूढ़े ठाकुर का इन रईस साहब से मुकाबला करने लगे। यह भी जमींदार, यह भी जमींदार; उनकी आमदनी डेढ़ सौ से ज्यादा, इनकी मुश्किल

से सौ, वह गाढ़े की धोती और गाढ़े की मिरजई पर खुश हैं, और यह शरबती और जामदानी फड़काते हैं। वह ढाई तल्ले का चमरौंधा जूता पहनते हैं, यहां पांच रुपया की सलीमशाही जूतियां। वह पालक और चने की रोटियां खाते हैं और यह दो वक्त शीरमाल और मुर्गपुलाव पर हाथ लगाते हैं, वह टके गज की चाल चलते हैं, यहां हवा के घोड़ों पर सवार। दोनों पर फटकार ! वह कंजूस और यह फजूलखर्च। वह रुपये को दफन किये हुए, यह रुपये लुटाते फिरते हैं। वह खा नहीं सकते, तो यह बचा नहीं सकते।

शाम को दोनों आदमी रेल पर सवार होकर पूना जा पहुंचे।

तेंतीस

रेल से उतर कर दोनों आदमियों ने एक सराय में डेरा जमाया और शहर की सैर को निकले। यों तो यहां की सभी चीजें भली मालूम होती थीं, लेकिन सबसे ज्यादा जो बात उन्हें पसंद आयी, वह यह थी कि औरतें बिला चादर और घूंघट के सड़कों पर चलती-फिरती थीं। शरीफजादियां बेहिजाब नकाब उठाये; मगर आंखों में हया और शर्म छिपी हुई।

खोजी-क्यों मियां, यह तो कुछ अजब रस्म है? ये औरतें मुंह खोले फिरती हैं। शर्म और हया सब भून खायी। वल्लाह, क्या आज़ादी है !

आज़ाद-आप खासे अहमक हैं। अरब में, असम में, अफगानिस्तान में, मिसर में, तुर्किस्तान में, कहीं भी परदा है? परदा तो आंख का होता है। कहीं चादर हया सिखाती है? जहां घूंघट काढ़ा, और नजर पड़ने लगी।

खोजी-अजी, मैं दुनिया की बात नहीं चलाता। हमारे यहां तो कहारियां और मालिनें तक परदा करती हैं, न कि शरीफजादियां ही। एक कदम तो बेपरदे के जाती नहीं।

आज़ाद-अरे मियां, नकाब को शर्म से क्या सरोकार? आंख की हया से बढ़कर कोई परदा ही नहीं; हमारे मुल्क में तो परदे का नाम नहीं; मगर हिन्दोस्तान का तो बाबा आदमी ही निराला है।

खोजी-आपका मुल्क कौन? ज़रा आपके मुल्क का नाम तो सुनूं।

आज़ाद-कश्मीर। वही कश्मीर जिसे शायरों ने दुनिया का फिरदौस माना है। वहां हिन्दू-मुसलमान औरतें बुरका ओढ़कर निकलती हैं, मगर यह नहीं कि औरतें घर के बाहर कदम ही न रखें। यह रोग तो हिन्दुस्तान ही में फैला है ! हम तो जब तुर्की से आयेंगे, तो यहीं बिस्तर जमायेंगे और हुस्नआरा को साथ लेकर आज़ादी के साथ हवा खायेंगे।

खोजी-यार, बात तो अच्छी है, मगर मेरी बीवी तो इस लायक ही नहीं कि हवा खिलाने ले जाऊं। कौन अपने ऊपर तालियां बजवाये? फिर अब तो बूढ़ी हुई

और रंग भी ऐसा साफ नहीं।

आज़ाद–तो इसमें शरम की कौन-सी बात है? आप उनके काले मुंह से झेंपते क्यों हैं?

खोजी–जब हब्श जाऊंगा, तो वहां हवा खिलाऊंगा। आप नई रोशनी के लोग हैं। आपकी हुस्नआरा आपसे भी बढ़ी हुई, जो देखे फड़क जाय कि क्या चांद-सूरज की जोड़ी है। ऐसी शक्ल-सूरत हो, तो हवा खिलाने में कोई मुजायका नहीं। हम अब क्या जोश दिखायें; न वह उमंग है, न वह तरंग।

आज़ाद–हम कहते हैं, बुआ जाफरान को ब्याह लो और एक टट्टू ले लो। बस, इसी तरह वह भी बाजारों में हवा खायें।

खोजी–(कान पकड़कर) या खुदा, बचाइयो। पीच पी, हजार निआमत खायी। मारे चपतों के खोपड़ी गंजी कर दी थी। क्या वह भूल गया?

आज़ाद–यहां से बंबई भी तो करीब है।

खोजी–अरे गजब ! क्या जहाज पर बैठना होगा? तो भई, मेरे लिए अफीम ले दो।

पूने से बंबई तक दिन में कई गाड़ियां जाती थीं। दोनों आदमियों ने सराय में पहुंचकर खाना खाया और बंबई रवाना हुए। शाम हो गयी थी। एक होटल में जाकर ठहरे। आज़ाद तो दिन भर के थके हुए थे, लेटते ही खर्राटे लेने लगे। खोजी अफीमची आदमी, नींद कहां? इसी फिक्र में बैठे हुए थे कि नींद को क्योंकर बुलाऊं। इतने में क्या देखते हैं कि एक लंबी-तड़ंगी, पंचहत्थी औरत चमकती-दमकती चली आती है। पूरे सात फुट का कद, न जौ-भर कम, न जौ-भर ज्यादा। धानी चादर ओढ़े, इठला-इठला कर चलती हुई मियां खोजी के पास आकर खड़ी हो गयी। खोजी ने उसकी तरफ नजर डाली, तो उसने एक तीखी चितवन से उनको देखा और आगे चली। आपको शरारत जो सूझी तो सीटी बजाने लगे। सीटी की आवाज सुनते ही वह इनकी तरफ झुक पड़ी और छमाछम करती हुई कमरे में चली आयी। अब मियां खोजी के हवास पैंतरे हुए कि अगर आज़ाद की आंख खुल गयी, तो ले ही डालेंगे; और जो कहीं रीझ गये, तो हमारी खैरियत नहीं। हम बस, नींबू और नोन चाट कर जायंगे। इशारे से कहा–जरी आहिस्ता बोलो।

औरत–अरे वाह मियां ! अच्छे मिले।

खोजी–मियां आज़ाद सोये हुए हैं।

औरत–इनका बड़ा लिहाज करते हो; क्या बाप हैं तुम्हारे?

खोजी–खुदा के वास्ते चुप भी रहो।

औरत–चलो, हम-तुम दूसरी कोठरी में चलकर बैठें।

दोनों पास की एक कोठरी में जा बैठे। औरत ने अपना नाम केसर बतलाया और बोली–अल्लाह जानता है, तुम पर मेरी जान जाती है। खुदा की कसम, क्या हाथ-पांव पाये हैं कि जी चाहता है, चूम लूं। मगर दाढ़ी मुड़वा डालो।

खोजी–(अकड़कर) अभी क्या, जवानी में देखना हमको !

क्या खूब अभी जवानी शायद आने वाली है। कुछ ऊपर पचास का सिन

हुआ, और आप अभी लड़के ही बने हुए हैं। उस औरत ने आपको उंगलियों पर नचाना शुरू किया, लेकिन आप समझे कि सचमुच रीझ ही गयी और भी बफलने लगे।

औरत–डील-डौल कितना प्यारा है कि जी खुश हो गया। मगर दाढ़ी मुड़वा डालो।

खोजी–अगर मैं कसरत करूं, तो अच्छे-अच्छे पहलवानों को लड़ा दूं।

औरत–जरा कान तो फटफटा लो, शाबाश !

खोजी–एक बात कहूं, बुरा तो न मानोगी?

औरत–बुरा मानूंगी, तो जरा खोपड़ी सहला दूंगी।

खोजी–जांबख्शी करो, तो कहूं।

औरत–(चपत लगाकर) क्या कहता है, कह !

खोजी–भई, यह धौल-धप्पा शरीफों में जायज नहीं।

औरत–तुझ मुए को कौन निगोड़ी शरीफ समझती है।

एक चपत और पड़ी। खोजी ने त्योरियां बदलकर कहा–भई, आदत मुझे पसंद नहीं। मुझे भी गुस्सा आ जायेगा।

औरत–आंखें क्या नीली-पीली करता है? फोड़ दूं दोनों आंखें?

खोजी–अब हमारा मतलब तो इस झंझट में खब्त हुआ जाता है। अब तो बताओ, कुछ मांगें, तो दोगी?

औरत–हां, क्यों नहीं, एक लप्पड़ इधर और दूसरा उधर। क्या मांगते हो?

खोजी–कहना यह है कि....मगर कहते हुए दिल कांपता है।

औरत–अब मैं तुमको ठीक न बनाऊं कहीं।

खोजी–तुम्हारे साथ ब्याह करने को जी चाहता है।

औरत–ऐ, अभी तुम बच्चे हो। दूध के दांत तक तो टूटे नहीं। ब्याह क्या करोगे भला?

खोजी–वाह-वाह ! मेरे दो बच्चे खेलते हैं। अभी तक इनके नजदीक लौंडे ही हैं हम।

औरत–अच्छा, कुछ कमाई-वमाई तो निकाल, और दाढ़ी मुड़वा।

खोजी–(दस रुपये देकर) लो, यह हाजिर है।

औरत–देखूं ! ऊंह, हाथी के मुंह में जीरा।

खोजी–लो, यह पांच और लो। अजी, मैं तुमको बेगम बनाकर रखूंगा।

औरत–अच्छा, एक शर्त से शादी करूंगी। तड़के उठ के मुझे सात बार सलाम करना और मैं सात चपतें लगाऊंगी।

खोजी–अजी, बल्कि और दस।

औरत–अच्छा, इसी बात पर कुछ और निकालो।

खोजी–लो, यह पांच और लो। तुम्हारे दम के लिए सब कुछ हाजिर है।

औरत ने झट से मियां खोजी को गोद में उठा लिया और बगल में दबाकर ले चली, तो खोजी बहुत चकराये। लाख हाथ-पांव मारे, मगर उसने जो दबाया, तो

इस तरह ले चली, जैसे कोई चिड़ीमार जानवरों को फड़फड़ाते हुए ले चले। अब सारा जमाना देख रहा है कि खोजी फड़कते हुए जाते हैं और वह औरत छम-छम करती चली जाती है।

खोजी–अब छोड़ती है, या नहीं?

औरत–अब उम्र-भर तो छोड़ने का नाम न लूंगी। हम भलेमानसों की बहू-बेटियां छोड़ देना क्या जानें। बस, एक के सिर हो रहीं। भागे कहां जाते हो मियां।

खोजी–मैं कैदी हूं?

औरत–(चपत लगाकर) और नहीं, कौन है तू? अब मैं कहीं जाने भी दूंगी?

खोजी पीछे हटने लगे, तो उसने पट्टे पकड़कर खूब बेभाव की लगायी। अब झल्लाये और गुल मचाया कि कोई है? लाना करौली? बहुत से तमाशाई खड़े हंस रहे थे।

एक–क्या है मियां? यह धर-पकड़ कैसी?

औरत–आप कोई काजी हैं? यह हमारे मियां हैं, हम चाहे चपतियाएं चाहे पीटें। किसी को क्या?

दूसरा–मेहरारू गर्दन दाबे उठाये लिये जात है, वह करौली निकारत है।

खोजी–बुरे फंसे ! यारो, जरा मियां आज़ाद को सराय से बुलाना।

औरत ने फिर खोजी को गोद में उठाया और मशक की तरह पीठ पर रखकर 'मसक दरियाव, ठंडा पानी' कहती हुई ले चली।

एक आदमी–कैसे मर्द हो जी ! औरत से जीत नहीं पाते? बस, इज्जत डुबो दी बिलकुल।

खोजी–अजी, इस औरत पर शैतान की फटकार। यह तो मरदों के कान काटती है।

इतने में मियां आज़ाद की नींद खुली, तो खोजी गायब। बाहर निकले, तो देखा खोजी को एक औरत दबाये खड़ी है। ललकारकर कहा–तू कौन है। उन्हें छोड़ती क्यों नहीं?

औरत ने खोजी को छोड़ दिया और सलाम करके बोली–हुजूर, मेरा इनाम हुआ। मैं बहुरूपिया हूं।

दूसरे दिन खोजी मियां आज़ाद के साथ शहर की सैर करने चले, तो शहर भर के लौंडे-लपाड़िये साथ, पीछे-पीछे तालियां बजाते जाते हैं। एक बोला–कहो चड्डा, बीबी ने चांद गंजी कर दी न? हत् तेरे की ! दूसरा बोला–कहो उस्ताद, खोपड़ी का क्या रंग है?

बेचारे खोजी को रास्ता चलना मुश्किल हो गया। दो-चार आदमियों ने बहुरूपिये की तारीफ की, तो खोजी जल-भुन कर खाक हो गये। अब किसी से न बोलते हैं, न चालते। दुम दबाये, डग बढ़ाये, गर्दन झुकाये पत्तातोड़ भाग रहे हैं। बारे खुदा-खुदा करके दोपहर को फिर सराय में आये। नीम की ठंडी-ठंडी छांह में लेट गये, तो एक भठियारिन ने मुस्करा के कहा–गाज पड़े ऐसी औरत पर, जो मियां को गोद में उठाये और बाजार भर में नचाये। गरज सराय की भठियारियों ने खोजी को ऐसा

उंगलियों पर नचाया कि खुदा की पनाह ! ऐसे झेंपे कि करौली तक भूल गये।

इतने में क्या देखते हैं कि एक लंबे डील-डौल का खूबसूरत जवान तमंचा कमर से लगाये, ऊदी पगड़ी सिर पर जमाये, बांकी-तिरछी छवि दिखाता हुआ अकड़ता चला आता है। भठियारियां छिप-छिप के झांकने लगीं। समझीं कि मुसाफिर है, बोलीं-मियां, इधर आओ, यहां बिस्तर जमाओ। मियां मुसाफिर, देखो, कैसा साफ-सुथरा मकान है। पकरिया की ठंडी-ठंडी छाह है, जरा तो तकलीफ होगी नहीं। सिपाही बोला-हमें बाजार से कुछ सौदा खरीदना है। कोई हमारे साथ चले, तो सौदा खरीदकर हम आ जायें। एक भठियारी बोली-चलिए, हम चलते हैं। दूसरी बोली-लौंडी हाजिर है। सिपाही ने कहा-मैं किसी परायी औरत को नहीं ले जाना चाहता। कोई पढ़ा-लिखा मर्द चले, तो पांच रुपये दें। मियां खोजी के कान में जो भनक पड़ी, तो कुलबुलाकर उठ बैठे और कहा-मैं चलता हूं, मगर पांचों नकद गिनवा दीजिए। मैं अलसेट से डरता हूं। सिपाही ने झट से पांचों गिन दिये। रुपये तो खोजी ने टेंट में रखे और सिपाही के साथ चले। रास्ते में जो इन्हें देखता है, कहकहा लगाता है-बचा की खोपड़ी जानती होगी, छठी का दूध याद आ गया होगा ! जब चारों ओर से बौछारें पड़ने लगीं तो खोजी बहुत ही झल्लाये और गुल मचाकर एक-एक को डांटने लगे। चलते-चलते एक अफीम की दुकान पर पहुंचे।

सिपाही-कहो भई जवान, है शौक? पिलवाऊं?

खोजी-अजी, मैं तो इस पर आशिक हूं।

सिपाही ने मियां खोजी को खूब अफीम पिलायी। जब खूब सरूर गंठे तो सिपाही ने उनको साथ लिया और चला। बातें होने लगीं। खोजी बोले-भई, अफीम पिलायी है, तो मिठाई भी खिलवाओ। एहसान करे, तो पूरा।

सिपाही-अजी, अभी लो। ये चार गंडे की पंचमेल मिठाई हलवाई की दुकान से लाओ।

हलवाई की दुकान से खोजी ने लड़-लड़ के खूब मिठाई ली और झूमते हुए चले। भूख के मारे रास्ते ही में डलिया निकालकर चखनी शुरू कर दी। सिपाही कनखियों से देखता जाता था; मगर आंख चुरा लेता था। आखिर दोनों आदमी एक बजाज की दुकान पर पहुंचे। सिपाही ने खोजी की तरफ इशारा करके कहा-इनके अंगरखे के बराबर जामदानी निकाल दीजिए।

बजाज-हुजूर, अपने अंगरखे के लिए लें, तो कुछ हमें भी मिल रहे। इनका तो अंगरखा और पाजामा सब गज भर में तैयार है।

खोजी-निकालो, जामदानी निकालो। बहुत बातें न बनाओ। अभी एक धक्का दूं, तो पचास लुढ़कनियां खाओ।

बजाज-लीजिए, क्या जामदानी है। बहुत बढ़िया ! मोल-तोल दस रुपये गज। मगर सात रुपये गज से कौड़ी कम न होगी।

सिपाही-भई, हम तो पांच रुपये के दाम देंगे।

बजाज-अब तकरार कौन करे। आप छह के दाम दे दें।

सिपाही-अच्छा, दो गज उतार दो।

सिपाही ने बजाज से सब मिलाकर कोई पचीस रुपये का कपड़ा लिया और गट्ठा बांधकर उठ खड़ा हुआ।

बजाज–रुपये?

सिपाही–अभी घर से आकर देंगे? जरा कपड़े पसंद तो करा लायें। यह हमारा साला बैठा है, हम अभी आये।

वह तो ले-देकर चल दिया। खोजी अकेले रह गये। जब बहुत देर हो गयी, तो बजाज ने गर्दन नापी–कहां चले आप? कहां, चले कहां?

खोजी–हम क्या किसी के गुलाम हैं?

बजाज–गुलाम नहीं हो तो और हो कौन? तुम्हारे बहनोई तुमको बिठा कर कपड़ा ले गये हैं।

खोजी पीनक से चौंके थे। सिपाही और बजाज में जब बातें हो रही थीं, तब वह पीनक में थे। झल्लाकर बोले–अबे किसका बहनोई? और कौना साला? कुछ वाही हुआ है?

इतने में एक आदमी ने आकर खोजी से कहा–तुम्हारे बहनोई तुम्हें यह खत दे गये हैं। खोजी ने खोलकर पढ़ा तो लिखा था–

'हत् तेरे की, क्यों? खा गया न झांसा? देख, अबकी फिर फांसा। तब की बीबी बनके चपतियाया, अब की बहनोई बनके झांसा दिया। और अफीम खाओगे?'

खोजी 'अरे ! 'करके रह गये। वांह रे बहरूपिये, अच्छा घनचक्कर बनाया। खैर, और तो जो हुआ, वह हुआ, अब यहां से छुटकारा कैसे हो। बजाज इस दम टुटरूंटू, और करौली पास नहीं। मगर एक दफे रोब जमाने की ठानी। दूकान के नीचे उतरकर बोले–इस फेरे में भी न रहना ! मैंने बड़े-बड़ों की गर्दनें ढीली कर दी हैं।

बजाज–यह रोब किसी और पर जमाइएगा। जब तक आपके बहनोई न आयेंगे, दूकान से हिलने न दूंगा।

बारे थोड़ी ही देर में एक आदमी ने आकर बजाज को पचीस रुपये दिये और कहा–अब इनको छोड़ दीजिए।

चौंतीस

इधर तो ये बातें हो रही थीं, उधर आज़ाद से एक आदमी ने आकर कहा–जनाब, आज मेला देखने न चलिएगा? वह-वह सूरतें देखने में आती हैं कि देखता ही रह जाय।

नाज़ से पायंचे उठाए हुए, शर्म से जिस्म को चुराये हुए!
नशए-बादए शबाब से चूर, चाल मस्ताना, हुस्न पर मगरूर।
सैकड़ों बल कमर को देती हुई, जाने ताऊस कब्क लेती हुई।

चलिए और मियां खोजी को साथ लीजिए। आज़ाद रंगीले थे ही, चट तैयार

हो गए। सज-धजकर अकड़ते हुए चले। कोई पचास कदम चले होंगे कि एक झरोखे से आवाज आई–

खुदा जाने यह आराइश करेगी कत्ल किस-किसको,
तलब होता है शानः आइने को याद करते हैं।

मियां आज़ाद ने जो ऊपर नजर की, तो झरोखे का दरवाजा खोजी की आंख की तरह बंद हो गया। आज़ाद हैरान कि खुदा, यह माजरा क्या है? यह जादू था, छलावा था, आखिर था क्या? आज़ाद के साथी ने यह रंग देखा, तो आहिस्ते से कहा–हजरत, इस फेर में न पड़िएगा।

इतने में देखा कि वह नाजनीन फिर नकाब उठाए झरोखे में आ खड़ी हुई और अपनी महरी से बोली–फीनस तैयार कराओ, हम मेले जाएंगे।

आज़ाद कुछ कहने वाले ही थे कि ऊपर से एक कागज नीचे आया। आज़ाद ने दौड़कर उठाया, तो मोटे कलम से लिखा था–

'दिल्लगी करती हैं परियां मेरे दीवाने से।'

आज़ाद पढ़ते ही उछल पढ़े। यह शेर पढ़ा–

'हम ऐसे हो गए अल्लाहो-अकबर ! ऐ तेरी कुदरत,
हमारे नाम से अब हाथ वह कानों पै धरते हैं।'

इतने में एक महरी अंदर से आई और मुसकिराकर मियां आज़ाद को इशारे से बुलाया। आज़ाद खुश-खुश महताबी पर पहुंचे, तो दिल बाग-बाग हो गया। देखा, एक हसीना बड़े ठाट-बाट से एक कुर्सी पर बैठी है। मियां आज़ाद को कुर्सी पर बैठने का इशारा किया और बोली–मालूम होता है, आप चोट खाए हैं; किसी के जुल्फ में दिल फंसा है–

खुलते हैं कुछ इश्तियाक के तौर;
रुख मेरी तरफ, नजर कहीं और।

आज़ाद ने देखा तो इस नाजनीन की शक्ल व सूरत हुस्नआरा से मिलती थी। वही सूरत, वही गुलाब-सा चेहरा ! वही नशीली आंखें ! बाल बराबर भी फर्क नहीं। बोले–बरसों इस कूचे की सैर की; मगर अब दिल फंसा चुके।

हसीना–तो बिसमिल्लाह, जाइए।

आज़ाद–जैसी हुजूर की मरजी।

हसीना–वाह री, बददिमागी ! कहिए, तो आपका कच्चा चिट्ठा कह चलूं? मियां आज़ाद आप ही का नाम है न? हुस्नआरा से आप ही की शादी होनेवाली है न?

आज़ाद–ये बातें आपको कैसे मालूम हुईं?

हसीना–क्यों, क्या पते की कही । अब बता ही दूं। हुस्नआरा मेरी छोटी चचाजाद बहन है। कभी-कभी खत आ जाता है। उसने आपकी तसवीर भेजी है और लिखा है कि उन्हें बंबई में रोक लेना। अब आप हमारे यहां ठहरें। मैं आपको आजमाती थी कि देखूं, कितने पानी में हैं। अब मुझे यकीन आ गया कि हुस्नआरा से आपको सच्ची मुहब्बत है।

आज़ाद–तो फिर मैं यहीं उठ आऊं?

हसीना–जरूर।

आज़ाद–शायद आपके घर में किसी को नागवार गुजरे?

हसीना–वाह, आप खूब जानते हैं कि कोई शरीफजादी किसी अजनबी आदमी को इस तरह बेधड़क अपने यहां न बुलाएगी। क्या मैं नहीं जानती कि तुम्हारे भाई साहब किसी गैर आदमी को बैठे देखेंगे, तो उनकी आंखों से खून टपकने लगेगा? मगर वह तो खुद इस वक्त तुम्हारी तलाश में निकले हैं। बहुत देर से गए हुए हैं, आते ही होंगे । अब आप मेरे आदमी को भेज दीजिए। आपका असबाब ले आए।

आज़ाद ने खोजी के नाम यह रुक्का लिखा–

'ख्वाजा साहब,

असबाब लेकर इस आदमी के साथ चले आइए। यहां इत्तिफाक से हुस्नआरा की बहन मिल गईं। यार, हम-तुम दोनों हैं किस्मत के धनी। यहां अफीम की दुकान भी करीब ही है।

–तुम्हारा
आज़ाद।'

पैंतीस

खोजी ने दिल में ठान ली कि अब जो आयेगा, उसको खूब गौर से देखूंगा। अब की चकमा चल जाय, तो टांग की राह निकल जाऊं। दो दफे क्या जानें, क्या बात हो गई कि वह चकमा दे गया। उड़ती चिड़िया पकड़ने वाले हैं। हम भी अगर यहां रहते होते, तो उस मरदूद बहुरूपिये को चचा ही बनाकर छोड़ते।

इतने में सामने से एक घसियारा एक घास का गट्ठा सिर पर लादे, पसीने में तर आ खड़ा हुआ और खोजी से बोला–हुजूर, घास तो नहीं चाहिए?

खोजी–(खूब गौर से देखकर) चल, अपना काम कर। हमें घास-वास कुछ नहीं चाहिए। घास कोई और खाते होंगे।

घसियारा–ले लीजिए हुजूर, हरी-हरी दूब है।

खोजी–चल बे चल, हम पहचान गए। हमसे बहुत चकमेबाजी न करना बचा। अब की पलेथन ही निकाल डालूंगा। तेरे बहुरूपिये की दुम में रस्सा।

इत्तिफाक से घसियारा बहरा था। वह समझा, बुलाते हैं। इनकी तरफ आने लगा। तब तो मियां खोजी गुस्सा जब्त न कर सके और चिल्ला उठे–ओ गीदी; बस आगे न बढ़ना, नहीं तो सिर धड़ से जुदा होगा। यह कहकर लपके और गट्ठा पकड़कर चाहा कि घसियारे को चपत लगावें। उसने जो छुड़ाने के लिए जोर किया, तो मियां खोजी मुंह के बल जमीन पर आ रहे और गट्ठा उनके ऊपर गिर पड़ा। तब आप गट्ठे के नीचे से गुर्राने लगे–अबे ओ गीदी, इतनी करौलियां भोंकूंगा कि छठी का

दूध याद आ जाएगा। बदमाश ने नाकों दम कर दिया। बारे बड़ी मुश्किल से आप गट्ठे के नीचे से निकले और मुंह फुलाए बैठे थे कि आज़ाद का आदमी आकर बोला—चलिए, आपको मियां आज़ाद ने बुलाया है।

खोजी—किससे कहता है? कमबख्त अब की संदेसिया बनकर आया ! तब की खूब घसियारा बना था। पहले औरत का भेस बदला ! फिर सिपाही बना, चल, भाग।

आदमी—रुक्का तो पढ़ लीजिए।

खोजी—मैं जलती-बलती लकड़ी से दाग दूंगा, समझे? मुझे कोई लौंडा मुकर्रर किया है? तेरे जैसे बहुरूपिये यहां जेब में पड़े रहते हैं।

आदमी ने जाकर आज़ाद से सारा हाल कहा—हुजूर, वह तो कुछ झल्लाये से मालूम होते हैं। मैंने लाख-लाख कहा किया, उन्होंने एक तो सुनी नहीं। बस, दूर ही दूर से गुर्राते रहे।

आज़ाद—खत का जवाब लाये?

आदमी—गरीबपरवर, कहता जाता हूं कि करीब फटकने तो दिया नहीं, जवाब किससे लाता?

ये बातें हो ही रही थीं कि उस हसीना के शौहर आ पहुंचे और कहने लगे—शहर भर घूम आया, सैकड़ों चक्कर लगाए, मगर मियां आज़ाद का कहीं पता न चला। सराय में गया, तो वहां खबर मिली कि आए हैं। एक साहब बैठे हुए थे, उनसे पूछा तो बड़ी दिल्लगी हुई। ज्यों ही मैं करीब गया, तो वह कुलबुलाकर उठ खड़े हुए—कौन? आप कौन? मैंने कहा—यहां मिया आज़ाद नामी कोई साहब तशरीफ लाए हैं? बोले—फिर आपसे वास्ता? मैंने कहा—साहब, आप तो काटे खाते हैं। तो मुझे गौर से देखकर बोले—इस बहुरूपिये ने मेरी नाक में दम कर दिया। आज भलेमानस की सूरत बनाकर आए हैं !

बेगम—जरी ऊपर आओ देखो, हमने मियां आज़ाद को घर बैठे बुलवा लिया ! न कहोगे।

आज़ाद—आदाब बजा लाता हूं।

मिरजा—हजरत, आपको देखने के लिए आंखें तरसती थीं।

मिरजा—जनाब, इसका जिक्र न कीजिए। आपसे मिलने की मुद्दत से तमन्ना थी।

उधर मियां खोजी अपने दिल में सोचे कि बहुरूपिये को कोई ऐसा चमका देना चाहिए कि वह भी उम्र भर याद करे। कई घंटे तक इसी फिक्र में गोते खाते रहे। इतने में मिरजा साहब का आदमी फिर आया। खोजी ने उससे खत लेकर पढ़ा, तो लिखा था—आप इस आदमी के साथ चले आइए, वर्ना बहुरूपिया आपको फिर धोखा देगा। भाई, कहा मानो, जल्द आओ। खोजी ने आज़ाद की लिखावट पहचानी, तो असबाब वगैरह समेटकर खिदमतगार के सिपुर्द किया और कहा—तू जा, हम थोड़ी देर में आते हैं। खिदमतगार तो असबाब लेकर उधर चला, इधर आप बहुरूपिये के मकान का पता पूछते हुए जा पहुंचे। इत्तिफाक से बहुरूपिया घर में न था, और उसकी बीवी अपने मैके भेजने के लिए कपड़ों का एक पार्सल बना रही थी। तीस रुपये

की गड्डी भी उसमें रख दी थी। पार्सल तैयार हो चुका, तो लौंडी से बोली–देख, कोई पढ़ा-लिखा आदमी इधर से निकले, तो इस पार्सल पर पता लिखवा लेना। लौंडी राह देख रही थी कि मियां खोजी जा निकले।

खोजी–क्यों नेकबख्त, जरा पानी पिला दोगी?

लौंडी यह सुनते ही फूल गई। खोजी की बड़ी खातिरदारी की, पान खिलाया, हुक्का पिलाया और अंद्र से पार्सल लाकर बोली–मियां, इस पर पता तो लिख दो।

खोजी–अच्छा लिख दूंगा, कहां जाएगा? किसके नाम है? कौन भेजता है?

लौंडी–मैं बीबी से सब हाल पूछ आऊं, बतलाऊं।

खोजी–अच्छी बात है, जल्द आना।

लौंडी दौड़कर पूछ आई और पता-ठिकाना बताने लगी।

खोजी चकमा देने तो गये ही थे, झट पार्सल पर अपना लखनऊ का पता लिख दिया और अपनी राह ली। लौंडी ने फौरन डाकखाने में पार्सल दिया और रजिस्ट्री कराके चलती हुई। थोड़ी देर के बाद बहुरूपिया जो घर में घुसा, तो बीबी ने कहा–तुम भी बड़े भुलक्कड़ हो। पार्सल पर पता तो लिखा ही न था। हमने लिखवाकर भेज दिया।

बहुरूपिया–देखूं, रसीद कहां है? (रसीद पढ़कर) ओफ ! मार डाला। बस, गजब ही हो गया।

बीबी–खैर तो है?

बहुरूपिया–तुमसे क्या बताऊं? यह वही मर्द है, जिससे मैंने कई रुपये ऐंठे थे। बड़ा चकमा दिया।

छत्तीस

मियां आज़ाद मिरजा साहब के साथ जहाज की फिक्र में गए। इधर खोजी ने अफीम की चुस्की लगाई और पलंग पर दराज हुए। जैनब लौंडी जो बाहर आई, तो हजरत को पीनक में देखकर खूब खिलखिलायी और बेगम से जाकर बोली–बीबी, जरी परदे के पास आइए, तो लोट-लोट जाइए। मुआ खोजी अफीम खाये औंधे मुंह पड़ा हुआ है। जरी आइए तो सही। बेगम ने परदे के पास से झांका; तो उनको एक दिल्लगी सूझी। झप से एक बत्ती बनायी और जैनब से कहा कि ले, चुपके से इनकी नाक में बत्ती कर। जैनब एक ही शरीर; बिस की गांठ। वह जाकर बत्ती में तीता मिर्च लगा लाई और खोजी की खटिया के नीचे घुसकर मियां खोजी की नाक में आधी बत्ती दाखिल ही तो कर दी। उफ ! इस वक्त मारे हंसी के लिखा ही नहीं जाता। खोजी जो कुलबुलाकर उठे, तो आःछी, छीं-छीं, ओ गेद–आःछीः। ओ गीदी कहने को थे कि छींक आ गई, और बिगड़े। ओ ना–आछ। ओ नामाकूल कहने को थे कि छींक ने जबान बंद कर दी। इत्तिफाक से पड़ोस में एक पुराने फैशन के भले आदमी

नौकरी की तलाश में एक हाकिम के पास जाने वाले थे। वह जैसे ही सामने आये, वैसे ही खोजी ने छींका। बेचारे अंदर चले गये। पान खाया, जरा देर इधर-उधर टहले। फिर डयोढ़ी तक पहुंचे कि छींक पड़ी। फिर अंदर गए। चिकनी डली खाई। रवाना होने ही को थे कि इधर आ:छीं की आवाज आई और उधर बीबी ने लौंडी दौड़ाई कि चलिए, अंदर बुलाती हैं। अंदर जाके उन्होंने जूते बदले, पानी पिया और रुखसत हुए। बाहर आकर इक्के पर बैठने ही को थे कि खोजी ने नाक की दुनाली बंदूक से एक और फैर दाग दी। तब तो बहुत ही झल्लाये। हत् तेरी नाक काटूं और पाऊं तो कान भी साफ कतर लूं। मर्दक ने मिर्चों की नास ली है क्या? नाक क्या नाक छींकनी की झाड़ी है। मनहूस ने घर से निकलना मुश्किल कर दिया। बीबी अंदर से बोली कि नाक ही कटे मुए की। जरी जैनब को बुलाकर पूछो तो यह किस नकटे को बसाया है? अल्लाह करे, गधे की सवारी हो।

मियां-बीवी पानी पी-पी कर बेचारे को कोस रहे थे। उधर खोजी का छींकते-छींकते हुलिया बिगड़ रहा था। बेगम साहबा घर के अंदर हंसी के मारे लोटी पड़ती थीं। मगर वाह री जैनब ! वह दम साधे अब तक चारपाई के नीचे दबकी पड़ी थी। मगर मारे हंसी के बुरा हाल था। जब छींकों का जोर जरा कम हुआ, तो उन्होंने गुल मचाया, ओ गीदी, भला बे बहुरूपिये, निकाली न कसर तूने ! अच्छा बचा, चचा ही बनाकर छोड़ते सही। चारपाई से उठे, मुंह-हाथ धोया। ठंडे-ठंडे पानी से खूब तरेड़े दिए; खोपड़ी पर खूब पानी डाला, तब जरा तसकीन हुई। बैठकर बहुरुपिये को कोसने लगे-खुदा करे, सांप काटे मरदूद को। न जाने मेरे साथ क्या जिद पड़ गई है। कल तेरे छप्पर पर चिनगारी न रख दी, तो कहना।

यों कोसते हुए उन्होंने सब दरवाजे बंद कर लिए कि बहुरूपिया फिर न आ जाए। अब तो जैनब चकराई। कलेजा धक-धक करने लगा और करीब था कि चीखकर निकल भागे, मगर जब मियां खोजी चारपाई पर दराज हो गए और नाक पर हाथ रख लिया, तो जैनब की जान में जान आई। चुपके से खिसकती हुई निकली और अंदर भागी।

बेगम-जाओ, फिर नाक में बत्ती करो।

जैनब-ना बीबी, अब मैं नहीं जाने की। सिड़ी-सौदाई आदमी के मुंह कौन लगे।

जैनब का देवर दस बरस का छोकड़ा बड़ा ही शरीर था। नस-नस में शरारत भरी हुई थी। कमरे में जाके झांका, तो देखा, हजरत पीनक ले रहे हैं। कुत्ता घर में बंधा था। झट उसको जंजीर से खोल जंजीर से रस्सी बांधी और बाहर ले जाकर चारपाई के पाये से कुत्ते को बांध दिया। खोजी की टांग में भी वही रस्सी बांध दी और चंपत हो गया। कुत्ते ने जो भूंकना शुरू किया, तो खोजी चौंककर उठे। देखते हैं तो टांग में रस्सी और रस्सी में कुत्ता। अब इधर खोजी चिल्लाते हैं, उधर कुत्ता चिल्ल-पों मचाता है। जैनब दौड़ी हुई घर में से आई। खैर तो है? क्या हुआ? अरे, तुम्हारी टांग में कुत्ता कौन बांध गया?

खोजी-यह उसी बहुरूपिये मर्दक का काम है, किसी और को क्या पड़ी थी?

जैनब–मगर, मुआ आया किधर से? किवाड़ तो सब बंद पड़े हुए हैं?

खोजी–यही तो मुझे भी हैरत है। मगर अबकी मैंने भी नाक पर इस जोर से हाथ रखा कि बहुरुपिया भी मेरा लोहा मान गया होगा। मगर यह तो सोचो कि आया किस तरफ से?

जैनब–मियां, कहते डर मालूम होता है। इस जगह एक शैतान रहता है।

खोजी–शैतान। अजी नहीं, यह उस बहुरूपिये ही का काम है।

जैनब–अब तुम यों थोड़े ही मानोगे। एक दिन शैतान चारपाई उलट देगा, तो मालूम होगा।

खोजी–यह बात थी, तो अब तक हमसे क्यों न कहा भला ! जान लोगी किसी की?

जैनब–मैं भी कहूं कि बंद दरवाजे से कुत्ता आया कैसे? मेरा माथा ठनका था, मुदा बोली नहीं।

खोजी–अब आज़ाद आएं, तो उनको आड़े हाथों लूं। वह भूत-चुड़ैल एक के भी कायल नहीं। सोयें तो मालूम हो।

खोजी तो इसी फिक्र में बैठे-बैठे पीनक लेने लगे। आज़ाद और मिरजा साहब आए, तो उन्हें ऊंघते देखकर दोनों हंस पड़े।

आज़ाद–(खोजी के कान में) क्या पहुंच गए?

खोजी ने हांक लगाई–'बहुरूपिया, बहुरूपिया' और इस जोर से आज़ाद का हाथ पकड़ लिया कि अपने हिसाब से चोर को गिरफ्तार किया था। आंखें तो हजरत की बंद हैं, मगर 'बहुरूपिया-बहुरूपिया' गुल मचाते जाते हैं। मियां आज़ाद ने इस जोर से झटका दिया कि हाथ छूट गया और खोजी फट से मुंह के बल जमीन पर आ रहे। आज़ाद ने गुल मचाया कि भागा, भागा, वह बहुरूपिया भागा जाता है। खोजी भी 'लेना-लेना' कहते हुए लपके। दस से पांच कदम ही चलकर आप हांफ गए और बोले–'निकल गया, निकल गया।' मैंने तो गर्दन नापी थी, मगर नाली बीच में आ गई। इससे बच गया, वर्ना पकड़ ही लेता।

आज़ाद–अजी, मैं तो देख ही रहा था कि आप बहुरूपिये के कल्ले तक पहुंच गए थे।

इतने में एक काजी साहब मियां आज़ाद से मिलने आए। आज़ाद ने नाम पूछा, तो बोले–अब्दुल कुद्दुस।

खोजी–क्या ! उस्तु खुद्दुस ! यह नई गढ़त का नाम है।

आज़ाद–निहायत गुस्ताख आदमी हो तुम। बस, चोंच संभालो।

खोजी की आंखें बंद थीं। जब आज़ाद ने डांट बताई तो आपने आंखें खोल दीं। काजी साहब पर नजर पड़ी। देखते ही आग हो गए और बकने लगे–और देखिएगा जरी, मरदूद आज मौलाना बनकर आया है। भई, गिरगिट के से रंग बदलता है। उस दिन घसियारा बना था; आज मौलवी बन बैठा।

काजी साहब बहुत झेंपे। मगर आज़ाद ने कहा कि जनाब, यह दीवाना है। यों ही ऊल-जलूल बका करता है।

जब काजीसाहब चले गए, तब आज़ाद ने खोजी को खूब ललकारा–नामाकूल ! बिना देखे-भाले, बेसमझे-बूझे, जो चाहता है, बक देता है। कुछ पढ़े-लिखे होते, तो आदमियों की कद्र करते। लिखे न पढ़े नाम मुहम्मद फाजिल।

खोजी–जी हां, बस, अब एक आप ही बड़े लुकमान बने हैं। हमको यह समझाते हैं कि कोई गधा है। और यहां अरबी चाटे बैठे हैं। अफआल, फालुआ मा फालअत। और सुनिए–गल्लम्, गल्लमा, गल्लमू।

मिरजा–यह कौन सीगा है भाई?

खोजी–जी, यह सीगा अल्लम-गल्लम है। यहां दीवान के दीवान जबान पर हैं। मगर मुफ्त की शेखी जताने से क्या फायदा।

मिरजा साहब के घर के सामने एक तालाब था। खोजी अभी अपने कमाल की डींग मार ही रहे थे कि शोर मचा–एक लड़का डूब गया। दौड़ो, दौड़ो ! तैराक अपने करतब दिखाने लगे। कोई पुल पर से कूदा धम ! कोई चबूतरे से आया तड़। कोई मल्लाही चीरता है, कोई खड़ी लगा रहा है। नौसिखिये अपने किनारे ही पर हाथ-पांव मारते हैं, और डरपोक आदमी दूर से ही सैर देख रहे हैं। भई, पानी और आग से जोर नहीं चलता, इनसे दूर ही रहना चाहिए।

आज़ाद ने जो शोर सुना तो दौड़े हुए पुल पर आए और धम से कूद पड़े। गोता लगाते ही उस लड़के का हाथ मिल गया। निकालकर किनारे लाए, तो देखा, जान बाकी है। लोगों ने मिलकर उसको उलटा लटकाया। जब पानी निकल गया, तो लड़के को होश आया।

अब सुनिए कि वह लड़का बंबई के एक पारसी रईस रुस्तमजी का इकलौता लड़का था। अभी आज़ाद लड़के को होश में लाने की फिक्र ही कर रहे थे कि किसी ने जाकर रुस्तम जी को यह खबर सुनाई। बेचारे दौड़े आए और आज़ाद को गले से लगा लिया।

रुस्तम–आपने अपने लड़के को डूबने से बचाया। बंदा आपका बहुत शुक्रगुजार है।

आज़ाद–अगर आपस में इतनी हमदर्दी भी न हो, तो आदमी ही क्या?

खोजी–सच है, सच है। हम ऐसे शेरों के तुम ऐसे शेर ही होते हैं। मैं भी अगर यहां होता, तो जरूर कूद पड़ता। मगर यार, अब दुआ मांगनी पड़ी कि यह मोटी तोंदवाला भी किसी दिन गोता खाय, तो फिर यारों के गहरे हैं।

आज़ाद–(पारसी से) मैं बड़े मौके से पहुंच गया !

रुस्तम–अपने को बड़ी खुशी का बातचीत।

खोजी–कुछ उल्लू का पट्ठा मालूम होता है।

रुस्तम–काल आप आवे, तो हमारा लेडी लोग आपको गाना सुनावे।

खोजी–अजी, क्या बेवक्त की शहनाई बजाते हो? अजी, कुछ अफीम घोलो, चुस्की लगाओ, मिठाई मंगवाओ। रईस की दुम बने हैं।

आज़ाद–कल मैं जरूर आऊंगा।

रईस–आप तो अपना का बाप है।

खोजी–बल्कि दादा। .खूब पहचाना, वाह पट्ठे।

रुस्तम जी आज़ाद से यह वादा लेकर चले गए, तो खोजी और आज़ाद भी घर आए। शाम को रुस्तम जी ने पांच हजार रुपयों की एक थैली आज़ाद के पास भेजी और खत में लिखा कि आप इसे जरूर कबूल करें। मगर आज़ाद ने शुक्रिये के साथ लौटा दिया।

सैंतीस

जरा ख्वाजा साहब की किता देखिएगा। वल्लाह, इस वक्त फोटो उतारने के काबिल है। न हुआ फोटो। सुबह का वक्त है। आप खारुए की एक लुंगी बांधे पीपल के दरख्त के साये में खटिया बिछाए ऊंघ रहे हैं, मगर गुड़गुड़ी भी एक हाथ में थामे हैं। चाहे पियें न, मगर चिलम पर कोयले दहकते रहें? इत्तिफाक से एक चील ने दरख्त पर से बीट कर दी। तब आप चौंके और चौंकते ही आ ही गए। बहुत उछले-कूदे और इतना गुल मचाया कि मुहल्ला भर सिर पर उठा लिया। हत् तेरे गीदी की, हमें भी कोई वह समझ लिया है। आज चील बनकर आया है। करौली तो वहां तक पहुंचेगी नहीं; तोड़ेदार बंदूक होती, तो वह ताक के निशाना लगाता कि याद ही करता।

आज़ाद–यह किस पर गर्म हो रहे हो ख्वाजा साहब?

खोजी–और ऊपर से पूछते हो, किस पर गर्म हो रहे हो? गर्म किस पर होंगे। वही बहुरूपिया है, जो मौलवी बनकर आया था।

मिरजा–तो फिर अब उसे कुछ सजा दीजिए।

खोजी–सजा क्या खाक दूं ! मैं जमीन पर, वह आसमान पर। कहता तो हूं कि तोड़ेदार बंदूक मंगवा दीजिए, तो फिर देखिए, कैसा निशाना लगाता हूं। मगर आपको क्या पड़ी है। जायगा तो गरीब ख्वाजा के माथे ही।

मिरजा–हम बताएं, एक जीना मंगवा दें और आप पेड़ पर चढ़ जाएं, भागकर जायगा कहां?

खोजी–(उछलकर) लाना हाथ।

मिरजा साहब ने आदमी से कहा कि जीना अंदर से ले आओ, मगर जल्द लाना। ऐसा न हो कि बैठ रहो।

खोजी–हां मियां, इसी साल आना। मेरे यार, ऐसा न हो कि गीदी भाग निकले।

आदमी जब अंदर सीढ़ी लेने गया, बेगम ने पूछा–सीढ़ी क्या होगी?

आदमी–हुजूर, वही जो सिड़ी है खफकान, उन पर कहीं चील ने बीट कर दी; तो अब सीढ़ी लगाकर पेड़ पर चढ़ेंगे।

हंसोड़ औरत, खूब ही खिलखिलाईं और फौरन छत पर जा पहुंचीं। आबी दुपट्टा खिसका जाता है, जूड़ा खुला पड़ता है और जैनब को ललकार रही हैं कि उससे कहो, जल्द सीढ़ी ले जाय। मियां खोजी ने सीढ़ी देखी, तो कमर कसी और कांपते

हुए जीने पर चढ़ने लगे। जब आखिरी जीने पर पहुंचकर दरख्त की टहनी पर बैठे, तो चील की तरफ मुंह करके बोले-गांस लिया, गांस लिया, फांस लिया; फांस लिया, हत् तेरे गीदी की, अब जाता कहां है? ले, अब मैं भी कल्ले पर आ पहुंचा। बचा, आज ही तो फंसे हो। रोज झांसे देकर उड़ंछू हो जाया करते थे। अब सोचो तो, जाओगे किधर से? ले, आइए बस, अब चोट के सामने। मैंने भी करौली तेज कर रखी है।

इतने में पीछे फिरकर जो देखते हैं, तो जीना गायब। लगे सिर पीटने। इधर चील भी फुर्र से उड़ गयी। इधर के रहे न उधर के। बेगम साहबा ने जो यह कैफियत देखी, तो तालियां बजाकर हंसने लगीं।

खोजी-यह मिरजा साहब कहां गये। जरी चार आंखें तो कीजिए हमसे। आखिर हमको आसमान पर चढ़ाकर गायब कहां हो गये? अरे यारो, कोई सांस डकार ही नहीं लेता। अरे मियां आज़ाद ! मिरजा साहब ! कोई है, या सब मर गये? आखिर हम कब तक यहां टंगे रहें?

बेगम-अल्लाह करे, पीनक आये।

खोजी-यह कौन बोला? (बेगम को देखकर) वाह हुजूर, आपको तो ऐसी दुआ न देनी चाहिए।

मियां आज़ाद सोचें कि खोजी अफीमी आदमी, ऐसा न हो, पांव डगमगा जायं, तो मुफ्त का खून हमारी गर्दन पर हो। आदमी से कहा-जीना लगा दो। बेगम ने जो सुना, तो हजारों कसमें दीं-खबरदार, सीढ़ी न लगाना। बारे सीढ़ी लगा दी गयी और खोजी नीचे उतरे। अब सबसे नाराज हैं। सबको आंखें दिखा रहे हैं-आप लोगों ने क्या मुझे मसखरा समझ लिया है। आप लोगों जैसे मेरे लड़के होंगे।

इतने में एक आदमी ने आकर मिरजा साहब को सलाम किया।

मिरजा-बंदगी। कहां रहे सलारी, आज तो बहुत दिन के बाद दिखायी दिये।

सलारी-कुछ न पूछिए, खुदावंद, बड़ी मुसीबत में फंसा हूं।

मिरजा-क्या है क्या? कुछ बताओ तो?

सलारी-क्या बताऊं, कहते शर्म आती है। परसों मेरा दामाद मेरी लड़की को लिए गांव जा रहा था। जब थाने के करीब पहुंचा, तो थानेदार साहब घोड़े पर सवार होकर कहीं जा रहे थे। इनको देखते ही बाग रोक ली और मेरे दामाद से पूछा-तुम कौन हो? उसने अपना नाम बताया। अब थानेदार साहब इस फिक्र में हुए कि मेरी लड़की को बहलाकर रख लें और दामाद को धता बता दें। बोले-बदमाश, यह तेरी बीबी नहीं हो सकती। सच बता, यह कौन है? और तू इसे कहां से भगा लाया है?

दामाद-यह मेरी जोरू है।

थानेदार-सुअर, हम तेरा चालान कर देंगे। तेरी ऐसी किस्मत कहां कि यह हसीना तुझको मिले ! अगर तू हमारी नौकरी कर ले तो अच्छा; नहीं तो हम चालान करते हैं। (औरत से) तुम कौन हो, बोलो?

दामाद-दारोगा जी, आप मुझसे बातें कीजिए।

मेरी लड़की मारे शर्म के गड़ी जाती थी। गर्दन झुकाकर थर-थर कांपती थी। अपने दिल में सोचती थी कि अगर जमीन में गढ़ा हो जाता, तो मैं धंस जाती। सिपाही

अलग ललकार रहा है और थानेदार अलग कल्ले पर सवार।

दामाद–मेरे साथ किसी सिपाही को भेज दीजिए। मालूम हो जाय कि यह मेरी ब्याहता बीबी है या नहीं।

थानेदार–चुप बदमाश, मैं बदमाशों की आंख पहचान जाता हूं। तुम कहां के ऐसे खुशनसीब हो कि ऐसी परी तुम्हारे हाथ आयी। यह सब बनावट की बातें हैं।

सिपाही–हां, दारोग़ा जी, यही बात है।

आखिर थानेदार साहब मेरी लड़की को एक दरख्त की आड़ में ले गये और सिपाही ने मेरे दामाद को दूसरी तरफ ले जाकर खड़ा किया। थानेदार बोला–बीबी, जरा गर्दन तो उठाओ। भला तुम इस परकटे के काबिल हो ! खुदा ने चेहरा तो नूर-सा दिया है, लेकिन शौहर लंगूर-सा।

लड़की–मुझे वह लंगूर ही पसंद है।

इधर तो थानेदार साहब यह इजहार ले रहे थे, उधर सिपाही मेरे दामाद को और ही पट्टी पढ़ा रहे थे। भाई, सुनो, सूबेदार साहब के सामने तो मैं उनकी सी कह रहा था। न कहूं, तो जाऊं कहां? मगर इनकी नीयत बहुत खराब है। छटा हुआ गुरगा है।

दामाद–और कुछ नहीं, बस, मैं समझ गया कि फांसी जरूर पाऊंगा। अब तो मुझे चाहे जाने दे या न जाने दे मैं इसे बेमारे न रहूंगा। अब बेइज्जती में बाकी क्या रह गया।

थानेदार–सिपाही, सिपाही, यह कहती हैं कि यह आदमी इन्हें भगा लाया है।

लड़की–जिसने यह कहा हो, उस पर आसमान फट पड़े।

दामाद–अब आपकी मरजी क्या है? जो हो, साफ-साफ कहिए।

खैर, थानेदार साहब एक कुर्सी पर डट गये और मेरी लड़की से कहा कि तुम इस सामने वाली कुर्सी पर बैठो। अब खयाल कीजिए कि गृहस्थ औरत बिना घूंघट निकाले कुंए तक पानी भरने भी नहीं जाती, वह इतने आदमियों के सामने कुर्सी पर कैसे बैठती। सिपाही झुक-झुककर देख रहे थे और वह बेचारी गर्दन झुकाये बुत की तरह खड़ी थी। तब थानेदार ने धमकाकर कहा–तुम दस बरस के लिए भेजे जाओगे। पूरे दस बरस के लिए।

दामाद–जब कोई जुर्म साबित हो जाय।

थानेदार–हां, आप कानून भी जानते हैं? तो हम अब जाब्ते की कार्रवाई करें।

दामाद–यह कुल कार्रवाई जाब्ते ही की तो है। खैर, इस वक्त तो आपके बस में हूं, जो चाहे कीजिए। मगर मेरा खुदा सब देख रहा है।

थानेदार–तुम हमारा कहा क्यों नहीं मान लेते? हम बस, इतना चाहते हैं कि तुम नौकरी कर लो और अपनी जोरू को लेकर यहीं रहा करो।

दामाद–आपसे मैं अब भी मिन्नत से कहता हूं कि इस बात को दिल से निकाल डालिए। नहीं तो बात बढ़ जायगी।

इतने में किसी ने पीछे से आकर मेरे दामाद की मुश्कें कस लीं और ले चले, और एक सिपाही मेरी लड़की को थानेदार साहब के घर की तरफ ले चला। अब

रात का वक्त है। एक कमरे में थानेदार लड़की के पैरों पर गिर पड़ा। उसने एक ठोकर दी और झपटकर इस तेजी से भागी कि थानेदार के होश उड़ गये। अब गौर कीजिए कि कमसिन औरत, परदेस का वास्ता, अंधेरी रात, रास्ता गुम, मियां नदारद। सोची, या खुदा, कहां जाऊ और क्या करूं? कभी मियां की मुसीबत पर रोती, कभी अपनी हालत पर। इस तरह गिरती-पड़ती चली जाती थी कि एक तिलंगे से भेंट हो गयी। बोला–कौन जाता है? कौन जाता है छिपा हुआ? लड़की थर-थर कांपने लगी। डरते-डरते बोली–गरीब औरत हूं। रास्ता भूलकर इधर निकल आयी। आखिर बड़ी मुश्किल से कानों का करन-फूल देकर अपना गला छुड़ाया। आगे बढ़ी, तो उसका शौहर मिल गया। सिपाहियों ने उसे एक मकान में बंद कर दिया था, मगर वह दीवार फांदकर निकल भागा आ रहा था। दोनों ने खुदा का शुक्र किया और एक सराय में रात काटी। सुबह को मेरे दामाद ने थानेदार को घोड़े पर से खींचकर इतनी लकड़िया मारीं कि बेदम हो गया। गांववाले तो थानेदार के दुश्मन थे ही, एक ने भी न बचाया; बल्कि जब देखा कि अधमरा हो गया, तो दो-चार लातें भी जमायीं। अब मेरा दामाद मेरे घर में छिपा बैठा है। बतलाइए, क्या करूं?

खोजी–मुझे तो मालूम होता है कि यह भी उसी बहुरूपिये की शरारत थी।

सलारी–कौन बहुरूपिया?

मिरजा–तुम्हारी समझ में न आयेगा। यह किस्सा-तलब बात है।

सलारी–तो फिर मुझे क्या हुक्म होता है? हम तो गरीब टके के आदमी हैं। मगर आबरूदार हैं।

आज़ाद–बस, जाकर चैन करो। जब शोर-गुल मचे, तो आना। सलाह की जायगी।

सलारी ने सलाम़ किया और चला गया।

अड़तीस

खोजी ने एक दिन कहा–अरे यारो, क्या अंधेर है। तुम रूम चलते-चलते बुड्ढे हो जाओगे। स्पीचें सुनीं, दावतें चखीं, अब बकचा संभालो और चलो। अब चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, हम एक न मानेंगे। चलिए, उठिए। कूच बोलिए।

आज़ाद–मिरजा साहब, इतने दिनों में खोजी ने एक यही बात तो पक्की कही। अब जहाज का जल्द इंतजाम कीजिए।

खोजी–पहले यह बताइए कि कितने दिनों का सफर है?

आज़ाद–इससे क्या वास्ता? हम कभी जहाज पर सवार हुए हों तो बतायें।

खोजी–जहाज ! हाय गजब ! क्या तरी-तरी जाना होगा? मेरी तो रूह कांपने लगी। भैया, मैं नहीं जाने का।

आज़ाद–अजी, चलो भी, वहां तुरकी औरत के साथ तुम्हारा ब्याह कर देंगे।

खोजी–खुश्की-खुश्की चलो तो भई, मैं चलूंगा। समुद्र में जाते पांव डगमगाता है।

मिरजा–जनाब, आपको शर्म नहीं आती? इतनी दूर तक साथ आये, अब साथ छोड़ देते हो? डूब मरने की बात है।

खोजी–क्या खूब ! यों भी डूबूं और वों भी डूबूं। खुश्की ही खुश्की क्यों नहीं चलते?

मिरजा–आप भी वल्लाह, निरें चोंच ही रहे। खुश्की की राह से कितने दिनों में पहुंचोगे भला? खुश्की की एक ही कही।

खोजी–अब आपसे हुज्जत कौन करे। जहाज का कौन एतबार। जरा किसी सुराख की राह से पानी आया, और बस पहुंचे जहन्नुम सीधे !

आज़ाद–तो न चलोगे? साफ-साफ बता दो। अभी सबेरा है।

खोजी–चलें तो बीच खेत, मगर पानी का नाम सुना और कलेजा दहल उठा। भला क्यों साहब, यह तो बताइए कि समुद्र का पाट गंगा के पाट से कोई दूना होगा या कुछ कमोबेश?

मिरजा–जी बस, और क्या। चलिए, आपको समुद्र दिखलावें न, थोड़ी ही फासले पर है।

खोज़ी–क्यों नहीं। हमको ले चलिए और झप से चपरगट्टू करके जहाज पर बिठा दीजिए। एक शर्त से चलते हैं। बेगम साहबा जमानत करें। हमारे सिर की कसम खायें कि जबरदस्ती न करेंगे।

आज़ाद–इसमें क्या दिक्कत है। चलिए, हम बेगम साहबा से कहलाये देते हैं। आप और आपके बाप, दोनों के सिर की कसम खा लें तो सही।

मिरजा–हां-हां, वह जमानत कर देंगी। आइए, उठिए।

मियां आज़ाद और मिरजा, दोनों मिलकर गये और बेगम से कहा--इस सिड़ी से इतना कह देना कि तू जहाज देखने जा। ये लोग जबरदस्ती सवार न करेंगे। बेगम साहबा ने जो सारी दास्तान सुनी, तो तिनककर बोलीं कि हम न कहेंगे। आप लोगों ने जरा-सी बात न मानी और सीढ़ी हटा ली। अच्छा, खैर, परदे के पास बुला लो।

खोजी ने परदे के पास आकर सलाम किया, मगर जवाब कौन दे। बेगम साहबा तो मारे हंसी के लोटी जाती हैं। मियां आज़ाद के खयाल से अपनी चुलबुलाहट पर लजाती भी हैं और खिलखिलाती भी। शर्म और हंसी, दोनों ने मिलकर रुखसारों को और भी सुर्ख कर दिया। इतने में खोजी ने फिर हांक लगायी कि हुजूर ने गुलाम को क्यों याद फरमाया है?

मिरजा–कहती हैं कि हम जमानत किये लेते हैं।

खोजी–आप रहने दीजिए, उन्हीं को कहने दीजिए।

बेगम–ख्वाजा साहब, बंदगी। आप क्या पूछते हैं?

खोजी–ये लोग मुझे जहाज दिखाने लिये जाते हैं। जाऊं या न जाऊं? जो हुक्म हो, वह करूं।

बेगम–कभी भूले से न जाना। नहीं फिर के न आओगे।

खोजी–आप इनकी जमानत करती हैं।

बेगम–मैं किसी की जामिन-वामिन नहीं होती। 'जर दीजिए जामिन न हूजिए'।

ये डूबो ही देंगे। मुई करौली रखी ही रहेगी।

खोजी—चलिए, बस, हद हो गयी। अब हम नहीं जाने के।

आज़ाद—भई, तुम जरा साथ चलकर सैर तो देख आओ।

खोजी—वाह ! अच्छी सैर है। किसी की जान जाय, आपके नजदीक सैर है। उस जाने वाले पर तीन हरफ।

खैर, समझा-बुझाकर दोनों आदमी खोजी को ले चले। जब समुद्र के किनारे पहुंचे तो खोजी उसे देखते ही कई कदम पीछे हटे और चीख पड़े। फिर दस-पांच कदम पीछे खिसके और रोने लगे। या खुदा, बचाइए। लहरें देखते ही किसी ने कलेजे को मसोस लिया।

मिरजा—क्या लुत्फ है। खुदा की कसम, जी चाहता है, फांद ही पड़ूं।

खोजी—कहीं भूल से फांदने-वांदने का इरादा न करना। हयादार के लिए एक चुल्लू काफी है।

आज़ाद—अजब मसखरा है भई, एक आंख से रोता है, एक आंख से हंसता है।

इतने में दो-चार मल्लाह सामने आये। खोजी ने जो उन्हें गौर से देखा, तो मिरजा साहब से बोले—ये कौन हैं भई? इनकी तो कुछ वजा ही निराली है। भला, ये हमारी बोली समझ लेंगे।

मिरजा—हां हां, खूब। उर्दू खूब समझते हैं।

खोजी—(एक मल्लाह से) क्यों भई मांझी, जहाज पर कोई जगह ऐसी भी है, जहां समुंदर नजर न आये और हम आराम से बैठे रहें? सच बताना उस्ताद ! अजी, हम पानी से बहुत डरते हैं भई !

मांझी—हम आपको ऐसी जगह बैठा देंगे, जहां पानी क्या, आसमान तो सूझ ही न पड़े।

खोजी—अरे, तेरे कुरबान। एक बात और बता दो। गन्ने मिलते जायंगे राह में या उनका अकाल है?

मांझी—गन्ने वहां कहां? क्या कुछ मंडी है? अपने साथ चाहे जितने ले चलिए।

खोजी—हाय, गंडेरियां ताजी-ताजी खाने में न आयेंगी। भला हलवाई की दुकान तो होगी? आखिर ये इतने शौकीन अफीमची जो जाते हैं, तो खाते क्या हैं?

मांझी—अजी, जो चाहो, साथ रख लो।

खोजी—और जो मुंह-हाथ धोने को पानी की जरूरत हो तो कहां से आवे?

आज़ाद—पागल है पूरा। इतना नहीं समझता कि समुंदर में जाता है और पूछता है कि पानी कहां से आयेगा।

खोजी—तो आप क्यों उलझ पड़े? आपसे पूछता कौन है? क्यों यार मांझी, भला हम गन्ने यहां से बांध ले चलें और जहाज पर चूसें, मगर छिलके फेकेंगे कहां। आखिर हम दिन भर में चार-छह पौंडे खाया ही चाहें।

आज़ाद—यह बड़ी टेढ़ी खीर है, गन्नों के छिलके खाने पड़ेंगे?

खोजी—आपसे कौन बोलता है? क्यों भई जो करौली बांधें तो हर्ज तो नहीं है कुछ?

मांझी–लैसन ले लीजिएगा और क्या हर्ज है?

खोजी–देखिए, एक बात तो मालूम हुई न ! अच्छा यह बताओ कि बहुरूपिये तो जहाज पर नहीं चढ़ने पाते?

मांझी–चाहे जो सवार हो। दाम दे, सवार हो ले।

खोजी–यह तो तुमने बेढब सुनायी। जहाज पर कुम्हार तो नहीं होते?

मांझी–आज तलक कोई कुम्हार नहीं गया।

खोजी–ऐ, मैं तेरी जबान को कुरबान। बड़ी ढारस हुई। खैर कुम्हार से तो बचे। बाकी रहा बहुरूपिया। उस गीदी को समझ लूंगा। इतनी करौलियां भोंकूं कि याद ही करे। हां, बस एक और बात भी बता देना। यह कैद तो नहीं है कि आदमी सुबह-शाम जरूर ही नहाय?

मांझी–मालूम देता है, अफीम बहुत खाते हो?

खोजी–हां, खूब पहचान गये। यह क्योंकर बूझ गये भई? शौक हो, तो निकालूं?

मांझी–राम-राम ! हम अफीम छूते तक नहीं।

खोजी–ओ गीदी ! टके का आदमी और झख मारता है। निकालूं करौली?

मिरजा-हां, हां, ख्वाजा साहब ! देखिए, जरी करौली म्यान ही में रहे।

खोजी–खैर, आप लोगों की खातिर है। वर्ना उधेड़कर धर देता पाजी को। आप लोग बीच में न पड़ें, तो भुरकुस ही निकाल दिया होता।

इतने में घोड़े पर सवार एक अंग्रेज आकर आज़ाद से बोला–इस दरख्त का क्या नाम है?

आज़ाद–इसका नाम तो मुझे मालूम नहीं। हम लोग जरा इन बातों की तरफ कम ध्यान देते हैं।

अंग्रेज–हम अपने मुल्क की सब घास-फूस पहचानता है।

खोजी–विलायत का घसियारा मालूम होता है।

अंग्रेज–चिड़िया का इल्म जानता है आप?

आज़ाद–जी नहीं यह इल्म यहां नहीं सिखाया जाता।

अंगेज–चिड़िया का इल्म हम खूब जानता है।

खोजी–चिड़ीमार है लंदन का। बस, कलई खुल गई।

अंग्रेज घोड़ा बढ़ाकर निकल गया। इधर आज़ाद और मिरजा साहब के पेट में हंसते-हंसते बल पड़ गये।

उनतालीस

शाम के वक्त मिरजा साहब की बेगम ने परदे के पास आकर कहा–आज इस वक्त कुछ चहल-पहल नहीं है; क्या खोजी इस दुनिया से सिधार गये?

मिरजा–देखो खोजी, बेगम साहबा क्या कह रही हैं।

खोजी-कोई अफीम तो पिलवाता नहीं, चहल-पहल कहां से हो। लतीफे सुनाऊं, तो अफीम पिलवाइएगा।

बेगम-हां, हां, कहो तो। मरो भी, तो पोस्ते ही के खेत में दफनाये जाओ। काफूर की जगह अफीम हो, तो सही।

खोजी-एक खुशनवीस थे। उनके कलम से ऐसे हरूफ निकलते थे, जैसे सांचे के ढले हुए। मगर इन हजरत में एक सख्त ऐब यह था कि गलत न लिखते थे।

आज़ाद-कुछ जांगलू हो क्या?

खोजी-खुदा इन लोगों से बचाये। भई, मेरे तो नाकों-दम हो गया। बात पूरी सुनी नहीं और एतराज करने को मौजूद। बात काटने पर उधार खाये हुए हो। मेरा मतलब यह था कि वह गलत न लिखते थे; मगर ऐब यह था कि अपनी तरफ से कुछ मिला देते थे। एक दफे एक आदमी को कुरान लिखाने की जरूरत हुई। सोचे कि इनसे बढ़कर कोई खुशनवीस नहीं, अगर दस-पांच रुपये ज्यादा भी खर्च हों, तो बला से, लिखवायेंगे इन्हीं से।

बेगम-ऐ वाह री अकल ! कोई आप ही के से जांगलू होंगे। गली-गली तो छापेखाने हैं। कोई छपा हुआ कुरान क्यों न मोल ले लिया?

खोजी-हुजूर, वह सीधे-सादे मुसलमान थे। मंतिक (न्याय) नहीं पढ़े थे। खैर साहब खुशनवीस के पास पहुंचे और कहा-हजरत, जो उजरत मांगिए, दूंगा; मगर अर्ज यह है, कहिए; कहूं, कहिए, न कहूं। खुशनवीस ने कहा-जरूर कहिए। खुदा की कसम, ऐसा लिखूं कि जो देखे, फड़क जाय। वह बोले-हजरत, यह तो सही है, लेकिन अपनी तरफ से कुछ न बढ़ा दीजिएगा। खुशनवीस ने कहा-क्या मजाल, आप इतमीनान रखिए, ऐसा न होने पावेगा। खैर, वह हजरतें तो घर गये, इधर मियां खुशनवीस लिखने बैठे। जब खतम कर चुके, तो किताब लेकर चले। लीजिए हुजूर कुरान मौजूद है। उन्होंने पूछा-एक बात साफ फरमा दीजिए। कहीं अपनी तरफ से तो कुछ नहीं मिला दिया? खुशनवीस ने कहा-जनाब, बदलते या बढ़ाते हुए हाथ कांपते थे। मगर इसमें जगह-जगह शैतान का नाम था। मैंने सोचा, खुदा के कलाम में शैतान का क्या जिक्र? इसलिए कहीं आपके बाप का नाम लिख दिया, कहीं अपने बाप का।

बेगम-बस, यही लतीफा है? यह तो सुन चुकी हूं।

खोजी-इस धांधली की सनद नहीं। जब अफीम पिलाने का वक्त आया तो धांधली करने लगीं।

मिरजा साहब बोले-अजी, यह पिलवावें या न पिलवावें, मैं पिलवाये देता हूं।

यह कहकर उन्होंने एक थाली में थोड़ा-सा कत्था घोलकर खोजी को पिला दिया। खोजी को दिन को तो ऊंट सूझता न था; रात को कत्थे और अफीम के रंग में क्या तमीज करते। पूरा प्याला चढ़ा लिया और अफीम पीने के खयाल से पीनक लेने लगे। मगर जब रात ज्यादा हो गयी तो आपको अंगड़ाइयां आने लगीं; जम्हाइयों की डाक बैठ गयी, आंखों से पानी जारी हो गया। डिबिया जेब से निकाली कि शायद कुछ खुरचन-उरचन पड़ी-पड़ायी हो, तो इस दम जी जायं। मगर देखा, तो

सफाचट। बस, सन से जान निकल गयी। आधी रात का वक्त, अब अफीम आये तो कहां से? सोचे, भई, चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, अफीम कहीं-न-कहीं से ढूंढ़ ही लावेंगे। दन से चल ही तो खड़े हुए। गली में सिपाही से मुठभेड़ हुई।

सिपाही–कौन?

खोजी–हम हैं ख्वाजा साहब।

सिपाही–किस दफ्तर में काम करते हो?

खोजी–पुलिस के दफ्तर में। मानिकजी-भाईजी की जगह पर आज से काम करते हैं। यार, इस वक्त कहीं से जरा-सी अफीम लाओ, तो बड़ा एहसान हो। आखिर उस्ताद, पाला हमीं से पड़ेगा। तुम्हारे ही दफ्तर में हैं।

सिपाही–हां, हां, लीजिए, इसी दम। मैं तो खुद अफीम खाता हूं। अफीम तो लो यह है, मगर इस वक्त घोलिएगा काहे में?

खोजी–वाह ! सिपाही हो कि बातें? घर की हुकूमत है ! सरकारी सिपाही सभी मानते हैं।

सिपाही–अच्छा, चलो, पिला दें !

खोजी–वाह सूबेदार साहब ! बड़े बुरे वक्त काम आये। हम, आप जानिए, अफीमची आदमी, शाम को अफीम खाना भूल गये, आधी रात को याद आया। डिबिया खोली, तो सन्नाटा ! ले, कहीं से पानी और प्याली दिलवाओ, तो जी उठें।

खैर, सिपाही ने खोजी को खूब अफीम पिलवायी। यहां तक कि घर को लौटे, तो रास्ता भूल गये। एक भलेमानस के दरवाजे पर पहुंचे, तो पीनक में सूझी कि यही मिरजा साहब का मकान है। लगे जंजीर खड़खड़ाने–खोलो, खोलो। भई, अब तो खड़ा नहीं रहा जाता। दरवाजा खोल देना।

ख्वाजा साहब तो बाहर खड़े गला फाड़-फाड़कर चिल्लाते हैं और अंदर उस मकान में मियां का दम निकला जाता है। कोई एक ऊपर दस बरस का सिन, खेल-कूद के दिन, खोजी के भी चचा, दुबले-पतले हाथ-पांव, कद तीन कम सवा दो इंच का। सिवा हड्डी और चमड़े के गोश्त का कहीं नाम नहीं। और उनकी बीबी खासी देवनी, हट्टी-कट्टी मुसंडी, बड़े डील-डौल की औरत, उठती जवानी, मगर एक आंख से कानी। एक घूंसा तानके लगावे, तो शीदी लंधौर का भुरकस निकल जाय। कोई दो-तीन कम बीस बरस की उम्र। दोनों मीठी नींद सो रहे थे कि खोजी ने धमधमाना शुरू किया।

मियां–या खुदा, बचाइयो ! इस अंधेरी रात में कौन आया? मारे डर के रूह कांपती है, मगर जो बीबी को जगाऊं और मर्दाने कपड़े पहनाकर ले जाऊं, तो यह हजरत भी कांपने लगें।

खोजी–खोलो, मीठी नींद सोने वालों, खोलो। यहां जाते देर नहीं हुई, और किवाड़े झप से बंद कर लिये? खटिया-वटिया सब गायब कर दी?

मियां–बेगम, बेगम, क्या सो गयीं?

वहां सुनता कौन है, जवानी की नींद है कि दिल्लगी। कोई चारपाई भी उलट दे, तो कानों-कान खबर न हो। सिर पर चक्की चले तो भी आंख न खुले। मियां

आंखों को मारे डर के एक हाथ से बंद किये बीबी के सिरहाने खड़े हैं; मगर थर-थर कांप रहे हैं। आखिर एक बार किचकिचा के खूब जोर से कंधा हिलाया और बोले—ओ बेगम, सुनती हो कि नहीं? जगी हैं, मगर दम साधे पड़ी हैं।

बेगम—(हाथ झटककर) ऐ हटो, लेके कंधा उखाड़ डाला। अल्लाह करे, ये हाथ टूटें। हमारी मीठी-मीठी नींद खराब कर दी। खुदा जानता है, मैं तो समझी, हालाडोला आ गया। खुदा-खुदा करके जरा आंख लगी, तो यह आफत आयी। अब की जगाया, तो तुम जानोगे। फिर अपने दांव को तो बैठकर रोते हैं। बेहया, चल दूर हो।

मियां—अरे, क्या फिर सो गयी? जैसे नींद के हाथों बिक गयी हो। बेगम, सुनती हो कि नहीं?

बेगम—क्या है क्या? कुछ मुंह से बोलोगे भी? बेगम-बेगम की अच्छी रट लगायी है। डर लगता हो तो मुंह ढांप कर सो रहो। एक तो आप न सोयें, दूसरे हमारी नींद भी हराम करें।

खोजी—अरे, भई खोलो ! मर गया पुकारते-पुकारते।

मियां—बेगम खुदा करे, बहरी हो जायं। देखो तो यहां किवाड़ कौन तोड़ डालता है? बंदा तो इस अंधियारी में हुमसने वाला नहीं। जरी तुम्हीं दरवाजे तक जाकर देख लो।

बेगम—जी ! मेरी पैजार उठती है। तुम्हारी तो वही मसल हुई कि 'रोटी खाय दस-बारह, दूध पिये मटका सारा, काम करने को नन्हा बेचारा।' पहले तो मैं औरतजात, डर गयी तो फिर कैसी हो? चोर-चाकर से बीबी को भिड़वाते हैं। मर्द बने हैं, जोरुओं से कहते हैं कि बाहर जाकर चोर से लड़ो।

खोजी—अजी बेगम साहबा , खुदा की कसम, अफीम खाने गया था। जरी दरवाजा खुलवा दीजिए। यह मिरजा साहब, और मौलाना आज़ाद तो मेरी जान के दुश्मन हैं।

बेगम ने जो अफीम का नाम सुना, तो आग-भभूका हो गयीं। उठकर मियां के एक लात लगायी और ऊपर से कोसने लगीं—इस अफीम को आग लगे, पीने वाले का सत्यनाश हो जाय। एक तो मेरे मां-बाप ने इस निखट्टू के खूंटे में बांधा, दूसरे इसके मां-बाप ने अफीम इसकी घुट्टी में डाल दी। क्यों जी, तुमने कसम खायी थी कि आज से अफीम न पीऊंगा? न तुम्हारी कसम का एतबार, न जबान का। कसम भी क्या मूली-गाजर है कि कर-कर करके चबा गये।

मियां—(गर्द झाड़-पोंछकर) क्यों जी, और जो मैं भी एक लात कसके जमाने के लायक होता तो फिर कैसी ठहरती?

बीबी—मैं तो पहले बातों से समझाती हूं और कोई न समझे तो फिर लातों से खबर लेती हूं। मैं तो इस फिक्र में हूं कि तुमको खिला-पिलाकर हट्टा-कट्टा बना दूं, पड़ोसी ताने न दें। और तुम पियो अफीम तो जी जले या न जले?

मियां साहब दिल ही दिल में अपने मां-बाप को गालियां दे रहे थे। यहां धान-पान आदमी, बीबी लाके बिठा दी देवनी। वे तो ब्याह करके छुट्टी पा गये, लातें हमें खानी पड़ती हैं। मैं तो समझा कि अपना काम ही तमाम हो गया; मगर बेहया ज्यों का त्यों मौजूद। बोले—तुम्हारी जान की कसम, कौन मरदूद चंडू के करीब भी

गया हो। आज या कभी अफीम की सूरत भी देखी हो। और यों खामख्वाह बदगुमानी का कौन-सा इलाज है। जरी चलके देखो तो ! आखिर है कौन? आव देखा न ताव, कसकर एक लात जमा दी, बस। और कहीं कमर टूट जाती?

खोजी पीनक में जंजीर पकड़े थे। इधर मियां बीबी चले, तो इस तरह कि बीबी आगे-आगे हाथ में चिमटा लिए हुए और मियां पीछे-पीछे मारे डर के आंखें बंद किये हुए। दरवाजा खुला, तो खोजी धम से गिरे सिर के बल और मियां मारे खौफ के खोजी पर अर-र-र करके आ रहे। बीबी ने ऊपर से दोनों को दबोचा। खोजी का नशा हिरन हो गया। निकलकर भागे तो नाक की सीध पर चलते हुए मिरजा साहब के मकान पर दाखिल। वहां देखा, खिदमतगार पड़ा खर्राटे ले रहा है। चुपके-से अपनी खटिया पर दराज हुए; मगर मारे हंसी के बुरा हाल था। सोचे, हम तो थे ही, यह मियां हमारे भी चचा निकले।

चालीस

सुबह का वक्त था। मियां आज़ाद पलंग से उठे तो देखा, बेगम साहबा मुंह खोले बेतकल्लुफी से खड़ी उनकी ओर कनखियों से ताक रही हैं। मिरजा साहब को आते देखा, तो बदन को चुरा लिया, और छलांग मारी, तो जैनब की ओट में थीं।

मिरजा—कहिए, आज क्या इरादे हैं?

आज़ाद—इस वक्त हमको किसी ऐसे आदमी के पास ले चलिए, जो तुरकी के मामलों से खूब वाकिफ हो। हमें वहां का कुछ हाल मालूम ही नहीं। कुछ सुन तो लें। वहां के रंग-ढंग तो मालूम हों।

मिरजा—बहुत खूब; चलिए, मेरे एक दोस्त हेडमास्टर हैं। बहुत ही जहीन और यारबाश आदमी हैं।

आज़ाद तैयार हुए तो बेगम ने कहा—ऐ, तो कुछ खाते तो जाओ। ऐसी अभी क्या जल्दी है?

आज़ाद—जी नहीं। देर होगी।

बेगम—अच्छा, चाय तो पी लीजिए।

थोड़ी देर में दोनों आदमियों ने चाय पी, पान खाये और चले। हेड मास्टर का मकान थोड़ी ही दूर था, खट से दाखिल। सलाम-वलाम के बाद आज़ाद ने रूम और रूस की लड़ाई का ताजा हाल पूछा।

हेडमास्टर—तुरकी की हालत बहुत नाजुक हो गयी है।

खोजी—यह बताइए कि वहां तोप दग रही है या नहीं? दनादन की आवाज कान में आती है या नहीं?

हेडमास्टर—दनादन की आवाज तो यहां तक आ चुकी, मगर लड़ाई छिड़ गयी है और खूब जोरों से हो रही है।

खोजी--उफ्, मेरे अल्लाह ! यहां तो जान ही निकल गयी।

आज़ाद--मियां, हिम्मत न हारो। खुदा ने चाहा, तो फतह है।

खोजी--अजी, हिम्मत गयी भाड़ में, यहां तो काफिया तंग हुआ जाता है।

आज़ाद--लड़ाई रूस से हो रही है, या आपस में?

हेडमास्टर--आपस ही में समझिए। अक्सर सूबे बिगड़ गये और लड़ाई हो रही है।

आज़ाद--यह तो बुरी हुई।

खोजी--बुरी हुई, तो फिर जाते क्यों हो? क्या तबाही आयी है?

हेडमास्टर--सर्विया की फौज सरहद को पार कर गयी। तुरकों से एक लड़ाई भी हुई। सुना है कि सर्विया हार गया। मगर उसका कहना है कि यह सब गलत है। हम डटे हुए हैं, और तुरकों को बासिनिया की सरहद पर जक दी।

खोजी--अब मेरे गये बगैर बेड़ा न पार होगा। कसम खुदा की, इतनी करौलियां भोंकी हों कि परे के परे साफ हो जायं। दिल्लगी है कुछ।

हेडमास्टर--दूसरी खबर यह है कि सर्विया और तुरकों में सख्त लड़ाई हुई, मगर न कोई हारा, न जीता। सर्विया वाले कहते हैं कि हमने तुरकों को भगा दिया।

खोजी--भई आज़ाद, सुनते हो? वापस चलो। अजी, शर्त तो यही है न कि तमगे लटका कर आओ? आप वापस चलिए मैं एक तमगा बनवा दूंगा।

कुछ देर तक मियां आज़ाद और हेडमास्टर साहब में यही बातें होती रहीं। दस बजते-बजते यहां से रुखसत होकर घर आये। जब खाना खाकर बैठे तो बेगम साहबा ने आज़ाद से कहा--हजरत, जरा इस मिसरे पर कोई मिसरा लगाइए--

इसलिए तसवीर जानां हमने खिंचवायी नहीं।

आज़ाद--हां-हां सुनिए--

गैर देखे उनकी सूरत इसकी ताब आयी नहीं;
इसलिए तसवीर जानां....नहीं।
उसकी फुरकत जेहन में अपने कभी आयी नहीं;
इसलिए तसवीर जानां....नहीं।

बेगम--कहिए, आपकी खातिर से तारीफ कर दें। मगर मिसरे जरा फीके हैं।

आज़ाद--अच्छा, ले आप ही कोई चटपटा मिसरा कहिए।

बेगम--ऐ, हम औरतजात, भला शेर-शायरी क्या जानें। और जो आपकी यही मरजी है, तो लीजिए--

लौहे-दिल ढूंढ़ा किये पर हाथ की आयी नहीं;
इसलिए.... ....नहीं।

खोजी--वाह, बेगम साहब ! आपने तो सुलेमान सावजी के भी कान काटे। पर अब जरा मेरी उपज भी सुनिएगा--

पीनके-अफयूं से टुक फुरसत कभी पायी नहीं,
इसलिए.... ....नहीं।

इस मिसरे का सुनना था कि मिरजा साहब, उनकी हंसोड़ बीबी और मियां

आज़ाद—हंसते-हंसते लोट गये। अभी यही चर्चा हो रही थी कि इतने में एक आदमी ने बाहर से आवाज दी। मिरजा ने जैनब से कहा कि जाओ, देखो तो कौन है? मियां खलीफा हों तो कहना, इस वक्त हम बाल न बनवायेंगे। तीसरे पहर को आ जाइए। जैनब आटा गूंथ रही थी। 'अच्छा' कहकर चुप हो रही। आदमी ने फिर बाहर से आवाज दी। तब तो जैनब को मजबूर होकर उठना ही पड़ा। नाक-भौं चढ़ाती, नौकर को जली-कटी सुनाती चली। जो है, मेरी ही जान का ग्राहक है। जिसे देखो, मेरा ही दुश्मन। वाह एक काम छोड़ दूसरे पर लपको। अबकी चांद हो, तो मैं तनख्वाह लेके अपने घर बैठ रहूं। क्यों, निगोड़ी नौकरी का भी कुछ अकाल है? जैनब का कायदा था कि काम सब करती थीं, मगर बड़बड़ाकर। बात-बात पर तिनक जाना तो गोया उसकी घुट्टी में पड़ा था। मगर अपने काम में चुस्त थी। इसलिए उसकी खातिर होती थी। मुंह-फुलाकर बाहर गयी। पहले तो जाते ही खिदमतगार को खूब आड़े हाथों लिया—क्या घर भर में मैं ही अकेली हूं? जो पुकारता है, मुझी को पुकारता है। मुए उल्लू के मुंह में नाम पड़ गया है।

खिदमतगार ने कहा—मुझसे क्यों बिगड़ती हो? यह मियां आये हैं; हुजूर से जाकर इनका पैगाम कह दो। मगर जरा समझ-बूझकर कहना। सब बातें सुन लो अच्छी तरह।

जैनब- (उस आदमी से) कौन हो जी? क्या कहते हो? तुम्हें भी इसी वक्त आना था?

आदमी—मल्लाह हूं, और हूं कौन? जाकर अपने मियां से कह दो, आज जहाज रवाना होगा। अभी दस घंटे की देर है। तैयार हो जाइए।

जैनब ने अंदर जाकर यह खबर दी। बेगम साहबा ने जहाज का नाम सुना, तो धक से रह गयी। चेहरे का रंग फीका पड़ गया। कलेजा धड़-धड़ करने लगा। अगर जब्त न करतीं, तो आंसू जारी हो जाते।

मिरजा—लीजिए हजरत, अब कूच की तैयारी कीजिए।

आज़ाद—तैयार बैठा हूं। यहां कोई लंबा-चौड़ा सामान तो करना नहीं। एक बैग, एक दरी, एक लोटा, एक लकड़ी। चलिए, अल्लाह-अल्लाह, खैरसल्लाह ! वक्त पर दन से खड़ा हूंगा।

खोजी—यहां भी वही हाल है। एक डिबिया, एक प्याली, चंडू पीने की एक निगाली; एक कतार, एक दोना मिठाई का, एक चाकू, एक करौली, बस, अल्लाह अल्लाह, खैरसल्लाह। बंदा भी कील-कांटे से दुरुस्त है।

यह सुनकर मियां आज़ाद और मिरजा साहब दोनों हंस पड़े। मगर बेगम साहबा के होंठों पर हंसी न आयी। मिरजा साहब, तो उसी वक्त मल्लाह से बातें करने के लिए बाहर चले गये और यहां मियां आज़ाद और बेगम साहबा, दोनों अकेले रह गये। कुछ देर तक बेगम ने मारे रंज के सिर तक न उठाया। फिर बहुत संभलकर बोलीं—मेरा तो दिल बैठा जाता है।

आज़ाद—आप घबराइए नहीं, मैं जल्दी वापस आऊंगा।

बेगम—हाय, अगर इतनी ही उम्मीद होती, तो रोना काहे का था?

आज़ाद—सब्र को हाथ से न जाने दीजिए। खुदा बड़ा कारसाज है।

बेगम–आंखों में अंधेरा-सा छा गया। क्या आज ही जाओगे? आज ही? तुम्हारे जाने के बाद मेरी न जाने क्या हालत होगी?

आज़ाद–खुदा ने चाहा, तो हंसी-खुशी फिर मिलेंगे।

इतने में मिरजा साहब ने आकर कहा कि सुबह को तड़के जहाज रवाना होगा।

बेगम–यों जाने को सभी जाते हैं, लाखों मर्द-औरत हर साल हज कर आते हैं; मगर लड़ाई में शरीक होना। बस, यही खयाल तो मारे डालता है।

आज़ाद–ये लाखों आदमी जो लड़ने जाते हैं, क्या सब के सब मर ही जाते हैं? फिर कजा का वक्त कौन टाल सकता है? जैसे यहां, वैसे वहां।

मिरजा–भई, मेरा तो दिल गवाही देता है कि आप सुर्खरू होकर आयेंगे। और यों तो जिंदगी और मौत खुदा के हाथ है।

बेगम–ये सब बातें तो मैं भी जानती हूं। मगर समझाऊं किसे?

मिरजा–जब जानती हो, तब रोना-धोना बेकार है। हाथ-मुंह धो डालो। जैनब, पानी लाओ। यही तो तुममें ऐब है कि सुबह का काम शाम को और शाम का सुबह को करती हो। लाओ पानी झटपट।

जैनब–या अल्लाह ! अब आलू छीलूं या पानी लाऊं।

आखिर जैनब दिल ही दिल में बुरा-भला कहती पानी लायी। बेगम ने मुंह धोया और बोलीं–अब मैं कोई ऐसी बात न कहूंगी, जिससे मियां आज़ाद को रंज हो।

खोजी–अजी मियां आज़ाद ! चलने का वक्त करीब आया। कुछ मेरी भी फिक्र है? वह करौली लेते ही लेते रह गये? अफीम का क्या बंदोबस्त किया? यार, कहीं ऐसा न हो कि अफीम राह में न मिले और हम जीते जी मर मिटें। जरी जैनब को बाजार तक भेजकर कोई साठ-सत्तर कतारे तो नर्म-नर्म मंगवा दीजिए। नहीं तो मैं जीता न फिरूंगा।

जैनब–हां, जैनब ही तो घर भर में फालतू है। लपककर बाजार से ले क्यों नहीं आते? क्या चूड़ियां टूट जायंगी? और मैं औरतजात अफीम लेने कहां जाऊंगी भला?

बेगम–रास्ते में इस पगले के सबब से खूब चहल-पहल रहेगी।

आज़ाद–हां, इसीलिए तो लिये जाता हूं। मगर देखिए, क्या-क्या बेहूदगियां करते हैं?

खोजी–अजी, आपसे सौ कदम आगे रहूं, तो सही।

मिरजा–इसमें क्या शक है? लेकिन उस तरफ कोई बहुरूपिया हुआ, तो कैसी ठेहरेगी?

खोजी–सच कहता हूं, इतनी करौलियां भोंकूं कि याद करे। मैं दगानेवाली पलटन में रिसालदार था। अवध में खुदा जाने कितनी गढ़ियां जीत लीं।

बेगम–ऐ रिसालदार साहब, आपकी करौली क्या हुई? मोरचा खा गयी हो तो साफ कर लीजिए। ऐसा न हो, मोरचे पर म्यान ही में रहे।

जैनब–रिसालदार साहब, हमारे लिए वहां से क्या लाइएगा?

खोजी–अजी, जीते आवें, तो यह बड़ी बात है। यहां तो बदन कांप रहा है।

इन्हीं बातों में चलने का वक्त आ गया। आज़ाद ने अपना और खोजी का सामान बांधा। बग्घी तैयार हुई। जब मियां आज़ाद ने चलने के लिए लकड़ी उठायी तो बेगम बेचारी बेअख्तियार रो दीं। कांपते हुए हाथों से इमामजामिन की अशरफी बांधी और कहा–जिस तरह पीठ दिखाते हो, उसी तरह मुंह भी दिखाना।

मियां आज़ाद, मिरजा और खोजी जाकर बग्घी पर बैठे। जब गाड़ी चली, तो खोजी बोले–हमसे कोई नहाने को कहेगा, तो हम करौली ही भोंक देंगे।

मिरजा–तो जब कोई कहे न?

खोजी–हां, बस, इतना याद रखिएगा जरा। और, हम यह भी बताये देते हैं कि गन्ना चूस-चूस कर समुंदर के बाप में फेंकेंगे, और जो कोई बोलेगा, तो दबोच बैठेंगे। हां, ऐसे-वैसे नहीं हैं यहां !

सामने समुद्र नजर आने लगा।

इकतालीस

हुस्नआरा मीठी नींद सो रही थी। ख्वाब में क्या देखती है कि एक बूढ़े मियां सब्ज कपड़े पहने उसके करीब आकर खड़े हुए और एक किताब देकर फरमाया कि इसे लो और इसमें फाल देखो। हुस्नआरा ने किताब ली और फाल देखा, तो यह शेर था–

हमें क्या खौफ है, तूफान आवे या बला टूटे।

आंख खुल गयी तो न बूढ़े मियां थे, न किताब। हुस्नआरा फाल-वाल की कायल न थी; मगर फिर भी दिल को कुछ तसकीन हुई। सुबह को वह अपनी बहन सिपहआरा से इस ख्वाब का जिक्र कर रही थी कि लौंडी ने आज़ाद का खत लाकर उसे दिया।

हुस्नआरा–हम पढ़ेंगे।

सिपहआरा–वाह, हम पढ़ेंगे।

हुस्नआरा–(प्यार से झिड़ककर) बस, यही बात तो हमें भाती नहीं।

सिपहआरा–न भावें, धमकाती क्या हो?

हुस्नआरा–मेरी प्यारी बहन, देखो, बड़ी बहन का इतना कहना मान जाओ। लाओ खत खुदा के लिए।

सिपहआरा–हम तो न देंगे।

हुस्नआरा–तुम तो खाहमख्वाह जिद करती हो, बच्चों की तरह मचली जाती हो।

सिपहआरा–रहने दीजिए, वाह-वाह ! हम आज़ाद का खत न पढ़ें?

यह कहकर सिपहआरा ने आज़ाद का खत पढ़ सुनाया–

'अब तो जाते हैं हिंद से आज़ाद,
फिर मिलेंगे अगर खुदा लाया।

आज जहाज पर सवार होता हूं। दो घंटे और हिन्दुस्तान में हूं। उसके बाद सफर,

सफर, सफर ! मैं खुश हूं। मगर इस खयाल से जी बेचैन है कि तुम बेकरार होगी। अगर यह मालूम हो जाता कि तुम भी खुश हो, तो जी जाता। अब तो यही धुन है कि कब रूम पहुंचूं। बस रुखसत।

—तुम्हारा आज़ाद।'

'हां, प्यारी सिपहआरा को खूब समझाना। उनका दिल बहुत नर्म है। इस वक्त खोजी पानी की सूरत देखकर मचल रहे हैं।'

हुस्नआरा—यह मुआ खोजी अभी जीता ही है?

सिपहआरा—उसे तो पानी का नाम सुनकर जूड़ी चढ़ आती थी।

हुस्नआरा—आखिर बेचारे जहाज पर सवार हो गये। अब देखें रूम से कब खत आता है?

सिपहआरा—अब तो फाल पर ईमान लायी? देखा, मैं क्या कहती थी? अब मिठाई खिलवाइए। जरी, कोई यहां आना। पांच रुपये की पंचमेल मिठाई लाओ।

हुस्नआरा—यह क्या खब्त है?

सिपहआरा—आपकी बला से। एक डली तुम भी खा लेना।

हुस्नआरा—खूब ! पांच रुपये की मिठाई, और उसमें हमको एक डली मिले? आते ही आते आधी न चख जाऊं, तो कहना।

सिपहआरा—वाह, दे चुकी मैं ! ऐसी कच्ची नहीं हूं !

हुस्नआरा—भला किताब से आगे का हाल क्या मालूम होगा? मुझे बड़ी हंसी आती है, जब कोई फाल देखता है। आंखें बंद किये हुए थोड़ी देर बड़बड़ाये, और किताब खोली। फिर अपने-अपने तौर पर मतलब निकालने लगे। यह सब ढकोसला है। हमको बड़े उस्तांद ने सबक पढ़ाया है।

थोड़ी देर में सिपाही ने बाहर से आवाज दी कि मामा, मिठाई ले जाओ। सिपहआरा दौड़ी—मुझे देना। हुस्नआरा अलग फुर्ती से झपटी कि हमें, हमें। अब मामा बेचारी किसको दे, एक चंगेल, दो गाहक। उसने हुस्नआरा को चंगेली दे दी।

हुस्नआरा—अब बतलाइए, खाने में लग्गा लगाऊं? बरफी पर चांदी के चमकते हुए वर्क कितनी बहार देते हैं।

सिपहआरा—मामा, तुम दीवानी हो गयी हो कुछ ! रुपये हमने दिए थे या इन्होंने? पराया माल क्या झप से उठा दिया ! वाह-वाह ! हां-हां—कहती जाती हूं, सुनती ही नहीं।

मामा—वह आपकी बड़ी....

सिपहआरा—चलो बस रहने भी दो। ऊपर से बातें बनाती हो।

सिपहआरा ने मिठाई बांटी, तो मामा हुस्नआरा की बूढ़ी दादी को भी उसमें से दस-पांच डलियां दे आयी।

बूढ़ी—यह मिठाई कैसी !

मामा—हुजूर, हुस्नआरा ने फाल देखी थी।

बूढ़ी—फाल कैसी?

मामा—चिट्ठी आयी थी कहीं से।

बूढ़ी–चिट्ठी कैसी?

मामा–बीबी, वही जो हैं, देखिए, क्या नाम है उनका जदाई।

बूढ़ी–जदाई कैसी? ला, मेरी छड़ी तो दे।

बूढ़ी बेगम कमर झुकाये, लठिया टेकते हुए चलीं। आकर देखा, दोनों बहन मिठाई चख रही हैं।

बूढ़ी–यह मिठाई कैसी आई है?

सिपहआरा–अम्मांजान, हुस्नआरा हमसे शर्त हारी हैं। कहती थी, हमारे दीवान-हाफिज में चार सौ सफ़े हैं; मैंने कहा, नहीं चार सौ चालीस हैं।

बूढ़ी–यह बात थी। मामा सठिया गई है क्या? जाने क्या-क्या बकती थी।

शाम के वक्त दोनों बहनें सहेलियों के साथ हाथ में हाथ दिये छत पर अठखेलियां कर रही थीं। एक ने दूसरे के चुटकी ली, किसी ने किसी को गुदगुदाया, जरा खयाल नहीं कि तिमंजिले पर खड़ी हैं, जरा पांव डगमगाया तो गजब ही हो जाय। हवा सन-सन चल रही थी। एकाएक एक पतंग आकर गिरी। सिपहआरा ने लपककर लूट लिया। आहाहा, इस पर तो किसी ने कुछ लिखा है–माहीजालवाला पतंग, सब की सब दौड़ पड़ीं। हुस्नआरा ने ये शेर पढ़ कर सुनाये–

बहुत तेज है आजकल तीरे मिजगां;
कोई दिल निशाना हुआ चाहता है।
मेरे कत्ल करने को आता है कातिल;
तमाम आज किस्सा हुआ चाहता है।

हुस्नआरा का माथा ठनका कि कुछ दाल में काला है। ताड़ गयी कि कोई नये आशिक पैदा हुए, मुझ पर या सिपहआरा पर शैदा हुए। मालूम नहीं, कौन है? कहीं मुझे बाहर देख तो नहीं लिया? दिमाग फिर गया है मुए का। जब सब सहेलियां अपने-अपने घर चली गयीं तो हुस्नआरा ने बहन से कहा–तुम कुछ समझीं? यह पतंग पर क्या लिखा था? तुम तो खेल रही थीं, मैं उस वक्त से इसी फिक्र में हूं कि माजरा क्या है?

सिपहआरा–कुछ-कुछ तो मैं भी समझती हूं, मगर अब किसी से कहो-सुनो नहीं।

हुस्नआरा–लच्छन बुरे हैं। इस पतंग को फाड़-फूड़कर फेंक दो। कोई देखने न पाये।

इतने में खिदमतगार ने मामा को आवाज दी और मामा बाहर से एक लिफाफा ले आयी। हुस्नआरा ने जो लिफाफा लिया, तो मारे खुशबू के दिमाग तर हो गया फिर माथा ठनका। खुशबू कैसी ! मामा से बोली–किसने दिया है?

मामा–एक आदमी खिदमतगार को दे गया है। नाम नहीं बताया। दिया और लंबा हुआ।

सिपहआरा–खोलो तो, देखो है क्या?

लिफाफा खोला, तो एक खत निकला। लिखा था–'एक गरीब मुसाफिर हूं, कुछ दिनों के लिए आपके पड़ोस में आकर ठहरा हूं। इसलिए कोई गैर न समझिएगा। सुना है कि आप दोनों बहनें शतरंज खेलने में बर्क हैं। यह नक्शा भेजता हूं। मेरी खातिर से इसे हल कर दो, तो बड़ा एहसान हो। मैंने तो बहुत दिमाग लड़ाया, पर

नक्शा समझ में न आया।

—मिरजा हुमायूं फर।'

इस खत के नीचे शतरंज का एक नक्शा दिया हुआ था।

सिपहआरा—बाजी, सच कहना, यह तो कोई बड़े उस्ताद मालूम होते हैं। मगर तुम जरा गौर करो, तो चुटकियों में हल कर लो। तुम तो बड़े-बड़े नक्शे हल कर लेती हो। भला इसकी क्या हकीकत है?

हुस्नआरा—बहन, यह नक्शा इतना आसान नहीं है। इसको देखो तो अच्छी तरह। मगर यह तो सोचो कि भेजा किसने है !

सिपहआरा—हुमायूं फर तो किसी शाहजादे ही का नाम होगा। मामा को बुलाओ और कहो, सिपाही से पूछें, कौन लाया था? क्या कहता था? आदमी का पता मिल जाय, तो भेजनेवाले का पता मिला दाखिल है।

मामा ने बाहर जाकर इशारे से सिपाही को बुलाया।

सिपाही—कहो, क्या कहती हो।

मामा—जरा, इधर तो आ।

सिपाही—वहां कोने में क्या करूं आन के। कोई वहां हौले-हौले बातें करते देखेगा, तो क्या कहेगा। यहां से निकलवा दोगी क्या?

मामा—ऐ चल छोकरे ! कल का लौंडा, कैसी बातें करता है? छोटी बेगम पूछती हैं कि जो आदमी लिफाफा लाया था, वह किधर गया? कुछ मालूम है?

सिपाही—वह तो बस लाया, और देके चम्पत हुआ; मगर मुझे मालूम है, वह, सामनेवाले बाग में एक शाहजादे आनके टिके हैं, उन्हीं का चोबदार था।

हुस्नआरा ने यह सुना, तो बोली—शाहजादे तो हैं, मगर बदतमीज।

सिपहआरा—यह क्यों?

हुस्नआरा—अव्वल तो किसी कुंआरी शरीफजादी के नाम खत भेजना बुरा, दूसरे पतंग गिराया। खत भेजा, वह भी इत्र में बसा हुआ।

सिपहआरा—बाजी, यह तो बदगुमानी है कि खत को इत्र में बसाया। शाहजादे हैं, हाथ की खुशबू खत में भी आ गयी। मगर खत अदब से लिखा है।

हुस्नआरा—उनको खत भेजने की जुर्रत क्योंकर हुई। अब खत आये, तो न लेना, खबरदार। वह शाहजादे, हमारा उनका मुकाबला क्या? और फिर बदनामी का डर।

सिपहआरा—अच्छा, नक्शा तो सोचिए। इसमें तो कोई बुराई नहीं।

हुस्नआरा ने बीस मिनट तक गौर किया और तब हंसकर बोली—लो, हल कर दिया। न कहोगी। अल्लाह जानता है, बड़ी टेढ़ी खीर है। लाओ, फिर अब जवाब तो लिख भेजें। मगर डर मालूम होता है कि कहीं उंगली देते ही पहुंचा न पकड़ लें। जाने भी दो। मुफ्त की बदनामी उठाना भला कौन सी दानाई है?

सिपहआरा—नहीं-नहीं बहन, जरूर लिख भेजो। फिर चाहे कुछ न लिखना।

हुस्नआरा—अच्छा, लाओ लिखें, जो होना होगा, सो होगा !

सिपहआरा—हम बतायें। खत-वत तो लिखो नहीं, बस, इस नक्शे को हल करके डाक में भेज दो।

बयालीस

शहर से कोई दो कोस के फासले पर एक बाग है, जिसमें एक आलीशान इमारत बनी हुई है। इसी में शाहजादा हुमायूं फर आकर ठहरे हैं। एक दिन शाम के वक्त शाहजादा साहब बाग में सैर कर रहे थे और दिल ही दिल में सोचते थे कि शाम भी हो गयी मगर खत का जवाब न आया। कहीं हमारा खत भेजना उन्हें बुरा तो न मालूम हुआ। अफसोस, मैंने जल्दी की। जल्दी का काम शैतान का। अपने खत और उसकी इबारत को सोचने लगे कि कोई बात अदब के खिलाफ जबान से निकल गयी हो तो गजब ही हो जाय। इतने में क्या देखते हैं कि एक आदमी सांड़नी पर सवार दूर से चला आ रहा है। समझे, शायद मेरे खत का जवाब लाता होगा। खिदमतगारों से कहा कि देखो, यह कौन आदमी है? खत लाया है या खाली हाथ आया है? आदमी लोग दौड़े ही थे कि सांड़नी सवार हवा हो गया।

थोड़ी देर में एक चपरासी नजर आया। समझे, बस, यह कासिद है। चपरासी ने दरबान को खत दिया और शाहजादा साहब की बांछें खिल गयीं। दिल ने गवाही दी कि सारी मुरादें मिल गयीं। खत खोला, तो एक लेक्चर का नोटिस था। मायूस होकर खत को रख दिया और सोचा कि अब खत का जवाब आना मुश्किल है। गम गलत करने को एक गजल गाने लगे। इतने ही में डाक का हरकारा लाल पगिया जमाये, धानी दगला फड़काये, लहबर तोते की सूरत बनाये आ पहुंचा और खत देकर रवाना हुआ। शाहजादे ने खत खोला और इबारत पढ़ी तो फड़क गये। हाय, क्या प्यारी जबान है, क्या बोल-चाल है। जबान और बयान में भी निगाह की तरह जादू कूट-कूट कर भरा है। उस नाजुक हाथ के सदके, जिसने ये सतरें लिखी हैं। लिखते वक्त कलाई लचकी जाती होगी। एक-एक लफ्ज से शोखी टपकती है, एक-एक हरफ से रंगीनी झलकती है। और नक्शा तो ऐसा हल किया कि कलम तोड़ दिये। आखिर में लिखा था-

इश्क का हाल बेसवा जानें,
हम बहू-बेटियां ये क्या जानें?

खुद ही शेर पढ़ते थे और खुद ही जवाब देते थे।

एकाएक उनके एक दोस्त आये और बोले-कहिए, कुछ जवाब आया? या धता बता दिया?

शाहजादा-वाह, धता तुम जैसों को बताती होंगी। लो, यह जवाब है।

दोस्त-(लिफाफा पढ़कर) वाह, बड़े अदब से खत लिखा है।

शाहजादा-जनाब, कुछ बाजारी औरतें थोड़े हैं। एक-एक लफ्ज से शराफत बरसती है।

दोस्त-फिर पूछते क्या हो ! गहरे हैं। हमें न भूलिएगा।

अब शाहजादे को फिक्र हुई कि किसी तरह मुलाकात की ठहरे। बने या बिगड़े। जब आमने-सामने बात हो, तब दिल को चैन आये। सोचते-सोचते आपको एक हिकमत सूझ ही गयी। मूंछों का सफाया कर दिया, नकली बाल लगा लिये, जनाने कपड़े

पहने और पालकी पर सवार होकर हुस्नआरा के दरवाजे पर जा पहुंचे। अपनी महरी को साथ ले लिया था। महरी ने पुकारा–अरे, कोई है? जरी अंदर खबर कर दो कि मिरजा हुमायूं फर की बहन मिलने आयी हैं।

बड़ी बेगम ने जो सुना, तो आकर हुस्नआरा से बोलीं–जरा करीने से बैठाना। तमीज से बातें करना। कोई भारी सा जोड़ा पहन लो, समझीं !

हुस्नआरा–अम्मांजान, कपड़े तो बदल लिये हैं?

बड़ी बेगम–देखूं ! यह क्या सफेद दुपट्टा है?

हुस्नआरा–नहीं, अम्मांजान, गुलाबी है। वही जामदानी का दुपट्टा जिसमें कामदानी की आड़ी बेल है।

बड़ी बेगम–बेटा, कोई और भारी जोड़ा निकालो।

हुस्नआरा–हमें तो यही पसंद है।

इतने में आशिक बेगम पालकी से उतरीं और जाकर बोलीं–आदाब बजा लाती हूं।

हुस्नआरा–तस्लीम ! आइए।

आशिक–आओ बहन, गले तो मिलें।

दोनों बहनें बेझिझक आशिक बेगम से गले मिलीं।

सिपहआरा–

आमद हमारे घर में किसी महलका की है;
यह शाने किर्दगार यह कुदरत खुदा की है।

हुस्नआरा–

यह कौन आया है रखकर फूल, मुए अंबर अफशां में;
सबा इतरायी फिरती है जो इन रोजों गुलिस्तां में।

आशिक–

'सफदर' जबां से राजे मुहब्बत अयां न हो;
दिल आशनाए-दर्द हो, लब पर फुगां न हो।

सिपहआरा–आपने आज गरीबों पर करम किया। हमारे बड़े नसीब।

आशिक–बहन, हमारी तो कई दिन से ख्वाहिश थी कि आपसे मिलें, मगर फिर हम सोचे कि शायद आपको नागवार हो। हम तो गरीब हैं। अमीरों से मिलते हुए जरा वह मालूम होता है।

हुस्नआरा–बजा है। आप तो खुदा के फज्ल से शाहजादी हैं, हम तो आपकी रिआया हैं।

आशिक–आप दोनों बहनें एक दिन कोठे पर टहल रही थीं, तो हुमायूं फर ने मुझे बुलाकर दिखाया था।

हुस्नआरा ने गिलौरी बना कर दी और आशिक बेगम ने उन्हीं के हाथों से खायी। कत्था केवड़े में बसा हुआ, चांदी-सोने का वर्क लगा हुआ, चिकनी डली और इलायची। गरज कि बड़े तकल्लुफ वाली गिलौरियां थीं। थोड़ी देर के बाद तरह-तरह के खाने दस्तरख्वान पर चुने गये और तीनों ने मिलकर खाना खाया। खाना खाकर आशिक

बेगम ने बेतकल्लुफी से हुस्नआरा की रानों पर सिर रख दिया और लेट रहीं। सिपहआरा ने उठकर कश्मीर का एक दुशाला उढ़ा दिया और करीब आकर बैठ गयी।

आशिक–बहन, अल्लाह जानता है, तुम दोनों बहनें चांद को भी शरमाती हो।

हुस्नआरा–और आप?

अपने जोबन से नहीं यार खबरदार हनोज;
नाजो-अंदाज से वाकिफ नहीं जिनहार हनोज।

तीनों में बहुत देर तक बातें होती रहीं। दस बजे के करीब आशिक बेगम उठ बैठीं और फरमाया कि बहन, अब हम रुख्सत होंगे। जिंदगी है तो फिर मिलेंगे।

सिपहआरा–

बेचैन कर रहा है क्या-क्या दिलोजिगर को;
हरदम किसी का कहना, जाते हैं हम तो घर को।

इस तरह मुहब्बत की बातें करके आशिक बेगम रुखसत हुईं और जाते वक्त कह गयीं कि एक दिन आपको हमारे यहां आना पड़ेगा। पालकी पर सवार होकर आशिक बेगम ने मामाओं, खिदमतगारों और दरबानों को दो-दो अशर्फियां इनाम की दीं और चुपके से मामा को एक तसवीर देकर कहा कि यह दे देना।

क़हारों ने तो पालकी उठायी और मामा ने अंदर जाकर तसवीर दी। हुस्नआरा ने देखा, तो धक से रह गयीं। तसवीर के नीचे लिखा था–

'प्यारी,

मैं आशिक बेगम नहीं हूं, हुमायूं फर हूं। अब अगर तुमने बेवफाई की तो जहर खाकर जान दे दूंगा।'

हुस्नआरा–बहन, गजब हो गया !

सिपहआरा–क्या, हुआ क्या? बोलो तो !

हुस्नआरा–लो, यह तसवीर देखो।

सिपहआरा–(तसवीर देखकर) अरे, गजब हो गया ! इसने तो बड़ा जुल दिया।

हुस्नआरा–(हीरे की कील नाक से निकालकर) बहन, मैं तो यह खाकर सो रहती हूं।

सिपहआरा–(कील छीनकर) उफ् जालिम ने बड़ा धोखा दिया।

हुस्नआरा–हम गले मिल चुकीं। जालिम जानू पर सिर रखकर सोया।

सिपहआरा–मगर बा जी, इतना तो सोचो कि बहन कह-कहकर बात करते थे। बहन बना गये हैं।

हुस्नआरा–यह सब बातें हैं। किसकी बहन और कैसा भाई !–

वह यों मुझे देखकर गया है;
खाल उसकी जो खींचिए, सजा है।

सिपहआरा–वाह ! किसी की मजाल पड़ी है जो हमसे शरारत करे?

हुस्नआरा–खबरदार, अब उससे कुछ वास्ता न रखना। आदमियों को ताकीद कर दो कि किसी का खत बेसमझे-बूझे न लें, वर्ना निकाल दिये जायंगे?

सिपहआरा–जरी सोच लो। लोग अपने दिल में क्या कहेंगे कि अभी तो इतने

जोश से मिलीं और अभी यह नादिरी हुक्म।

हुस्नआरा–हां, सच तो है। अभी तक हमीं तुम जानते हैं।

सिपहआरा–कहीं ऐसा न हो कि वह किसी से जिक्र कर दें।

हुस्नआरा–इससे इतमिनान रखो। वह शोहदे तो हैं नहीं।

सिपहआरा–वाह, शोहदे नहीं, तो और हैं कौन ! शोहदों के सिर पर क्या सींग होते हैं?

हुस्नआरा–अब आज से छत पर न चढ़ना।

सिपहआरा–वाह बहन, बीच खेत चढ़ें। किसी ने देख ही लिया तो क्या ! अपना दिल साफ रहना चाहिए।

हुस्नआरा–मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि शाहजादे साहब तुम्हारी फिक्र में हैं।

सिपहआरा–चलिए,. बस, अब छेड़खानी रहने दीजिए।

हुस्नआरा–अरे वाह ! दिल में तो खुशी हुई होगी। चाहे जबान से न कहो।

सिपहआरा–आप भी क्या वाही-तबाही बकती हैं?

हुस्नआरा–आखिर बुरा क्या है? शाहजादे हैं कि नहीं। और सूरत तो तुम देख ही चुकी हो। लो आज के दूसरे ही महीने दरवाजे पर शहनाई बजती होगी।

सिपहआरा–हम उठकर चले जायंगे, हां ! यह हंसी हमको गवारा नहीं।

हुस्नआरा–खुदा की कसम, मैं दिल्लगी से नहीं कहती। आखिर उस बेचारे में क्या बुराई है ! हसीन, मालदार, शौकीन, नेकबख्त।

सिपहआरा–बस, और दस-पांच बातें कहिए न।

सिपहआरा के दिल पर इन बातों का बहुत बड़ा असर हुआ। आदमी की तबीयत भी क्या जल्द पलटा खाती है। अभी तो हुमायूं फर को बुरा-भला कह रही थीं और अब दिल ही दिल में खिली जाती हैं कि हां, है तो सच। आखिर उनमें ऐब ही क्या है?

दोनों बहनों में तो ये बातें हो रही थीं और वह महरी, जो आशिक बेगम के साथ आयी थी, दरवाजे पर चुपकी खड़ी सुन रही थी। जब हुस्नआरा चुप हुईं, तो उसने अंदर पहुंचकर सलाम किया।

हुस्नआरा–कौन हो?

महरी–हुजूर, मैं हूं अच्छन।

हुस्नआरा–कहां से आयी हो?

महरी–आप मुझे इतनी जल्द भूल गयीं। बेगम साहबा ने भेजा है।

हुस्नआरा–बेगम साहबा कौन?

महरी–वही आशिक बेगम जो आपसे मिल गयी हैं।

हुस्नआरा–कहो, क्या पैगाम भेजा है।

महरी–(मुसकिराकर) हुजूर को जरा वहां तक तकलीफ दी है।

महरी का मुसकिराना दोनों बहनों को बहुत बुरा लगा। मगर करतीं क्या। महरी उन्हें चुप देखकर बोली–बेगम साहबा ने फरमाया कि अगर कुछ हर्ज न हो, तो इस वक्त हमारे यहां आइए।

सिपहआरा–कह देना, हमें फुरसत नहीं।

महरी–उन्होंने कहा है कि अगर आपको फुरसत न हो तो मैं खुद ही आ जाऊं।

सिपहआरा–जी, कुछ जरूरत नहीं है। बस, अब दूर ही से सलाम है। और अब आज से तुम न आना यहां। सुना कि नहीं?

महरी–बहुत अच्छा। लौंड़ी हुक्म बजा लावेगी। बेगम साहबा की जैसी नौकरी, वैसी ही हुजूर की।

सिपहआरा–चलो, बस। बहुत बातें न बनाओ। कह देना, खैर इसी में है कि अब कोई खत-वत न आये। शाहजादे हैं, इससे छोड़ दिया, कोई दूसरा होता तो खून हो जाता। इतने बड़े शाहजादे और गरीब शरीफजादियों पर नजर डालते हैं। बस चले, तो वह सजा दूं कि उम्र भर याद करें। वाह ! अच्छा जाल फैलाया है।

हुस्नआरा–बस, अब खामोश भी रहो। कोई सुन लेगा। अब कुछ कहो न सुनो। (महरी से) चलो, सामने से हटो।

महरी–हुजूर, जानबख्शी हो तो अर्ज करूं।

हुस्नआरा–अब तुम जाओ, हमने कई दफे कह दिया। नहीं पछताओगी।

महरी रवाना हुई। कसम खायी कि अब नहीं आने की। सिपहआरा का चेहरा मारे गुस्से के लाल-भभूका हो गया। हुस्नआरा समझाती थीं कि बहन, अब और बातों का खयाल करो। लेकिन सिपहआरा ठंडी न होती थीं। बहुत देर के बाद बोलीं–बस मालूम हुआ कि कोई शोहदा है; अगर सच्ची मुहब्बत है, तो हया और शर्म के साथ जाहिर करना चाहिए या इस बेतुकेपन से?

तेंतालिस

शाहजादा हुमायूं फर महरी को भेज कर टहलने लगे, मगर सोचते जाते थे कि कहीं दोनों बहनें खफा न हो गयी हों, तो फिर बेढब ठहरे। बात की बात जाय, और शायद जान के भी लाले पड़ जायं। देखें, महरी क्या खबर लाती है। खुदा करे, दोनों महरी को साथ लेकर छत पर चली आवें। इतने में महरी आयी और मुंह फुलाकर खड़ी हो गयी।

शाहजादा–कहो, साफ-साफ।

महरी–हुजूर, क्या अर्ज करूं।

शाहजादा–वह तो हम तुम्हारी चाल ही से समझ गये थे कि बेढब हुई। कह चलो, बस।

महरी–अब लौंडी वहां नहीं जाने की।

शाहजादा–पहले मतलब की बात तो बताओ कि हुआ क्या?

महरी–मैंने जाकर परदे के पास से सुना कि आप ही की बातें चुपके-चुपके कर रही हैं। मैं जो गयी, तो बड़ी बहन ने रुखाई के साथ बातें कीं, और छोटी बहन

तो बस बरस ही पड़ीं। मैं खड़ी कांप रही थी कि किस मुसीबत में पड़ी। बहुत तेज होके बोलीं-अब न आना, नहीं तो तुम जानोगी। और उनसे भी कान खोल के कह देना कि बहुत चल न निकलें। बहुत ही बिगड़ीं। मैं चोर की तरह चुपके-चुपके सुनती रही।

हुमायूं-अफसोस ! तो बहुत ही बिगड़ीं?

महरी-क्या कहूं हुजूर, अपने आपे ही में नहीं थीं।

हुमायूं-हमने बड़ी गलती की। पहले तो हमें जाना न था, और गये तो पहचनवाना न था।

महरी-अब जाने-वाने का इरादा न कीजिएगा?

दूसरे दिन हुमायूं फर छत पर निकले, तो क्या देखते हैं कि हुस्नआरा बेगम अपने कोठे पर चढ़ी हैं और मुंह पर नकाब डाले खड़ी हैं। इतने में सिपहआरा भी ऊपर आयीं और शाहजादे को देखते ही उचककर आड़ में हो रहीं। दम के दम में हुस्नआरा भी आंखों से ओझल हो गयीं। बेचारे नजर भर देखने भी न पाये थे कि दोनों नजर से गायब हो गयीं। सोचे, ऐसी ही हया फट पड़ी थी, तो कोठे पर क्यों आयीं !

अब उधर की कैफियत सुनिए। हुस्नआरा को मालूम ही न था कि हजरत इस वक्त कोठे पर टहल रहे हैं। जब सिपहआरा ने कोठे पर आकर शाहजादे को देख लिया तो चुपके से कहा-बहन, यहीं बैठ जाओ, वह तांक-झांक से बाज न आवेंगे। हुस्नआरा ने छलांग भरी, तो खट से नीचे। सिपहआरा भी उचककर जीने पर जा पहुंची !

हुस्नआरा-पटकी पड़े। ऐ वाह, अच्छा घर परख लिया है।

सिपहआरा-मेरा बस चले, तो उसका घर उजड़वा दूं।

हुस्नआरा-यह क्या सितम करती हो? घर आबाद करते हैं या उजड़वाते हैं?

सिपहआरा-बा जी, अल्लाह खैर करे। यह मुआ जब देखो, कोठे पर खड़ा रहता है।

हुस्नआरा-तो तुम काहे को अपनी जबान खराब करती हो? आदमी ही तो वह भी है !

सिपहआरा-बा जी, तुम चाहे मानो, चाहे न मानो, यह मुआ बहुरूपिया है कोई।

इतने में एक लौंडी ने आकर कहा-लीजिए, बड़ी बेगम साहबा ने यह मिठाई दी है। वह जो उस दिन आयी नहीं थीं, उन्होंने मिठाइयों के दो ख्वान भेजे हैं।

लौंडी की लड़की का नाम प्यारी था। उसने मिठाई जो देखी, तो तुतलाकर बोली-जला-सी हमें दीजिए।

सिपहआरा-अरे वाह, इनको दीजिए। बड़ी वह बनके आयी हैं ! अच्छा, इतना बता दे कि के ब्याह करेगी?

प्यारी-पहले मिठाई दीजिए, तो बताऊं।

सिपहआरा-तो मिल चुकी। गढ़ैया में मुंह धो आ।

प्यारी-मैं एक खसम करूंगी, औल फिल छोड़के दूसला। और फिल तीसला।

फिल चौथा। उन सबको लातें माल-माल के निकाल दूंगी। ले, अब दीजिए।

सिपहआरा–जा अब न दूंगी।

हुस्नआरा–दे दो, दे दो, रो रही है।

सिपहआरा–अच्छा ले, मगर पानी न पीने दूंगी।

प्यारी–हां, न पीऊंगी। लाओ तो जला।

इस पर कहकहा पड़ा। जरा-सी लड़की और कैसी बातें बनाती है ! इतने में बड़ी बेगम आकर बोलीं–अरे, तुम्हारी वही गोइयां जो उस दिन आयी थीं, उन्हीं के यहां से मिठाई के दो ख्वान आये हैं। एक औरत साथ थी। कह गयी है कि दोनों बहनों को कल बुलाया है। सो कल किसी वक्त चली जाना, घड़ी दो घड़ी दिल बहला के चली आना। नहीं तो मुफ्त की शिकायत होगी।

हुस्नआरा–कल की कल के हाथ है अम्मांजान !

बेगम साहबा तो चली गयीं। इधर हुस्नआरा का रंग उड़ गया। बोलीं–बहन, यह टेढ़ी खीर है।

सिपहआरा–एक काम कीजिए। अब बे खुशामद के काम न चलेगा। उनके नाम एक खत लिखिए और साफ-साफ मतलब समझा दीजिए। मुए को अच्छे-अच्छे लटके याद हैं। अब इधर दाल न गली, तो अम्मांजान से लासा लगाया और वह भी कितनी भोली हैं।

एकाएक दरवाजे पर एक नया गुल खिला। दस-बारह आदमियों ने मिलकर गाना शुरू किया–

मान करे नंदलाल सों,
सोहागिन जचा मान करे नंदलाल सों।
दूध-पूत और अन्न-धन-लच्छमी,
गोद खिलाये नंदलाल सों।मान०।

दस-पांच आदमी गाते हैं। दो-चार ताल देते जाते हैं। दो-एक मजीरा बजाते हैं। एक हजरत ढोलकी थप-थपाते हैं।

घर भर में खलबली मच गयी कि यह माजरा क्या है? लड़का किसके हुआ है? बड़ी बेगम बेवा और दोनों बहनें कुंआरी। यह क्या अंधेर है भई।

मामा–अरे, तुम कौन लोग हो?

कई आदमी–ऐ हुजूर, खुदा सलामत रखे। भांड़ हैं।

एक साहब हिनहिनाकर बोले–मेरे बछेड़े की कुछ न पूछो। यह मां के पेट ही से हिनहिनाता निकला था।

दूसरे साहब ने उचककर फरमाया–हें-हें-हें, दो बागे हैं, और उधर तालियां बज रही हैं। 'मान करे नंदलाल....'

बड़ी बेगम–अरे लोगो, यह है क्या? यह दिन-दहाड़े क्या अंधेर हैं? इन निगोड़े भांड़ों से पूछो–आये किसके यहां हैं?

दरबान–चुप रहो जी, आखिर कहां आये हो?

एक भांड़–वाह शेरा, क्यों न हो। क्या दुम हिलाके भूंके हो।

दरबान–आखिर तुम लोगों से किसने क्या कहा? कुछ घास तो नहीं खा गये हो?

मामा–यह क्या गजब करते हो !

भाड़–गजब पड़े बुरे की जान पर, और आंख लड़े हमसे।

सिपाही–मियां, कसम खाकर कहते हैं कि यहां लड़का–वड़का नहीं हुआ। तुम मानते ही नहीं हो।

भांड़–वाह जवान ! क्यों न हो, खड़ी मूंछें और चढ़ी दाढ़ी।

सिपाही–(आहिस्ता) भला लड़का होगा किसके? दो लड़कियां, वे कुंआरी हैंगी; एक बड़ी बेगम, वह बूढ़ी खप्पट। और तो कोई औरत ही नहीं; तुम यह बक क्या रहे हो।

भांड़–यह अच्छी दिल्लगी है भई, फिर उस मर्द ने कहा ही क्यों था?

सिपाही–यह कांटे किसके बोये हुए हैं?

भांड़–अरे साहब, कुछ न पूछिए। बड़ा चकमा हो गया।

दरबान–ले, अब मजीरा-वजीरा हटाओ; नहीं तो यहां ठीक किये जाओगे।

भांड़–वल्लाह, हो बड़े नमकहलाल।

उधर दोनों बहनों में यों बातें होने लगीं–

सिपहआरा–यह उसी की शरारत है।

हुस्नआरा–किनकी? नहीं; तोबा।

सिपहआरा–आप चाहे न मानें हम तो यही कहेंगे।

हुस्नआरा–बहन, वह शाहजादा हैं, उनसे यह हरकत नहीं हो सकती।

सिपहआरा–अच्छा, फिर ये भांड़ क्यों आये? अगर किसी ने बहकाकर भेजा नहीं, तो आये कैंसे?

हुस्नआरा–हां, कहती तो सच हो; मगर अल्लाह जानता है, उससे ऐसी हरकत नहीं हो सकती।

सिपहआरा–आप मेरे कहने से उन्हें एक खत लिख भेजिए कि फिर ऐसी हरकत की, तो हम जहर ही खा लेंगे।

हुस्नआरा खत लिखने पर राजी हो गयीं और यों खत लिखा–

'हया से मुंह न मोड़ेंगे, सताये जिसका जी चाहे;
वफादारी में हमको आजमाये जिसका जी चाहे।
कभी मानिंदे गौहर आबरू 'सफदर' न जायेगी;
बजाहिर खाक में हमको मिलाये जिसका जी चाहे।

अरे जालिम, कुछ खुदा का डर भी है? क्यों जी, शरीफों की ये ही हरकतें होती हैं? शर्म नहीं आती ! बहन बनाकर अब ये शरारतें करते हो ! ये ही मरदों के काम हैं !

अगर अब किसी को भेजा तो हम हीरे की कनी खा लेंगी। खून तुम्हारी गर्दन पर होगा। आखिर तुम अपने दिल में हमको समझते क्या हो? अगर भूत सिर पर सवार है, तो कहीं और मुंह काला कीजिए। हम घरगिरस्त शरीफजादियां, इन बातों से क्या वास्ता? दिल लेना जानें न दिल देना।

'कांटों में न हो अगर उलझना,
थोड़ा लिखा बहुत समझना।'

हुमायूं फर के पास जब यह खत पहुंचा तो बहुत शरमाये। समझ गये कि यहां हमारी दाल न गलेगी। दिल में इरादा कर लिया कि अब भूलकर भी ऐसी चालें न चलेंगे।

चौवालीस

हुस्नआरा और सिपहआरा, दोनों रात को सो रही थीं कि दरबान ने आवाज दी—मामा जी, दरवाजा खोलो।

मामा—दिलबहार, देखो कौन पुकारता है?

दिलबहार—ऐ वाह, फिर खोल क्यों नहीं देतीं?

मामा—मेरी उठती है जूती, दिन भर की थकी-मांदी हूं।

दिलबहार—और यहां कौन चंदन-चौकी पर बैठा है?

दरबान—अजी, लड़ लेना पीछे, पहले किवाड़ें खोल जाओ।

मामा—इतनी रात गये क्यों आफत मचा रखी है?

दरबान—अजी, खोलो तो, सवारियां आयी हैं।

हुस्नआरा—कहां से? अरे दिलबहार ! मामा ! क्या सब की सब मर गयीं? अब हम जायें दरवाजा खोलने?

हुस्नआरा की आवज सुनकर सब की सब एकदम उठ खड़ी हुईं। मामा ने परदा कराकर सवारियां उतरवायीं।

सिपहआरा—अख्हा रूहअफजा बहन हैं, और बहारबेगम। आइए, बंदगी।

ये दोनों हुस्नआरा की चचेरी बहनें थीं। दोनों की शादी हो चुकी थी। ससुराल से दोनों बहनों से मुलाकात करने आयी थीं। चारों बहनें गले मिलीं। खैर-आफियत के बाद हुस्नआरा ने कहा—दो बरस के बाद आप लोगों से मुलाकात हुई।

बहारबेगम—हां, और क्या !

सब की सब बातें करते-करते सो गयीं। सुबह को हुस्नआरा ने बड़ी बेगम से दोनों बहनों के आने की खबर सुनायी।

बड़ी बेगम—जभी मेरी बायीं आंख फड़कती थी। मैं भी कहूं कि अल्लाह, क्या खुशखबरी सुनूंगी। कहां, हैं कहां, जरा बुलाओ तो।

हुस्नआरा—अभी सो रही हैं।

बड़ी बेगम—ऐ, तो जगा दे बेटा ! अच्छी तो हैं?

हुस्नआरा ने आकर देखा, तो दोनों गाफिल सो रही हैं। रूहअफजा की लटें काली नागिन की तरह बल खाकर तकिये पर से पलंग के नीचे लहरा रही हैं। बहारबेगम का दुपट्टा कहीं है, दुलाई कहीं। हाथ सीने पर रखे हुए खर्राटे ले रही हैं।

हुस्नआरा–अजी, सोती ही रहिएगा ! अम्मांजान बुलाती हैं।

रूहअफजा–बहन, अब तक आंखों में नींद भरी है। नमाज पढ़ लूं, तो चलूं।

हुस्नआरा–(बहारबेगम का हाथ हिलाकर) ऐ बहन, अब उठो।

बहारबेगम–अल्लाह, इतना दिन चढ़ आया ! सारे घर में धूप फैल गई।

हुस्नआरा–उठिए, अम्मांजान बुला रही हैं।

बहारबेगम–रूहअफजा को तो जगाओ।

सिपहआरा–वह क्या बैठी हैं सामने।

दोनों ने उठकर नमाज पढ़ी और बेगम के पास चलीं। रूहअफजा जाते ही बड़ी बेगम से चिमट गईं। बहार भी उनसे मिलीं और अदब के साथ फर्श पर बैठीं।

बड़ी बेगम–क्यों रूहअफजा, अब तो उस बीमारी ने पीछा छोड़ा? क्या कहते हैं, तोबा मुझे तो उसका नाम भी नहीं आता।

सिपहआरा–(मुस्कराकर) डेंगू बुखार। आप तो रोज-रोज भूल जाती हैं।

बड़ी बेगम–हां, वही डंकू।

सिपहआरा–डंकू नहीं, डेंगू।

रूहअफजा–अब एक महीने से पीछा छुटा है कहीं। मेरी तो जान पर बन आई थी।

बड़ी बेगम–चेहरा कैसा जर्द पड़ गया है !

बहारबेगम–अब तो आप इन्हें अच्छी देखती हैं ! यह तो घुलकर कांटा हो गई थीं।

बड़ी बेगम–हकीम मुहम्मद हुसेन ने इलाज किया था न वहां?

रूहअफजा–जी नहीं, एक डॉक्टर था।

बड़ी बेगम–ऐ है, भूले से इलाज न करना डागडर-वागडर का।

रूहअफजा–मैं तो उसकी बोली ही न समझूं। कहे, जबान दिखाओ। अब मुंह दिखावें तब तो जबान दिखावें? मैंने कहा–यह तो हश्र तक नहीं होने का। फिर नब्ज देखी, तो हाथ परदे से निकाल लिया और कहा, चूड़ियां उतार डालो। मैंने सोने की चूड़ियां तो उतार डालीं, मगर शीशे की एक चूड़ी पहने रही। तब कहने लगा, हमसे बातें करो। तब तो मैंने दूल्हा भाई को बुलाया और कहा–वाह साहब, आप तो अच्छे डाक्टर को लाए ! मुंह क्या, हम तो एड़ी भी न दिखावें और कहता है, हमसे बातें करो। यहां निगोड़ी गिटपिट किसे आती है ! बस, दरगुजरी ऐसे इलाज से। आप इन्हें धता बताइए। इतने में उसने घड़ी जेब से निकाली और कहने लगा–गिनती गिनो। सुनिए, जैसे लड़कियों के मदरसे में इम्तहान ले रहे हों। आखिर मैंने एक-दो-पांच-बीस-ग्यारह–अनाप-शनाप बका। बड़ी कड़वी दवाइयां दीं। बारे बच गई।

बड़ी बेगम–बहार । यह तुम महीनों खत क्यों नहीं भेजती हो?

बहार बेगम–अम्मांजान, खतों का तो मैं तार बांध दूं, मगर जब कोई लिखने वाला भी हो।

रूहअफजा–यह तो गिरस्ती के धंधे में ऐसी पड़ गईं कि पढ़ा-लिखा सब चौपट कर दिया।

हुस्नआरा–और दूल्हा भाई ने तो खत लिखने की कसम खाई है।

रूहअफजा–दिन भर बैठे शेर कहा करते हैं।

बड़ी बेगम–कहो, तुम्हारी सास तो अच्छी हैं।

बहारबेगम–हां, न मुझे मौत आती है, न उन्हें।

हुस्नआरा–कल-परसों तक दूल्हा भाई यहां आवेंगे, तो मैं उनको खूब झाड़ूंगी।

बड़ी बेगम–बहार, सच्ची बात तो यह है कि तुम भी जरा तेज-मिजाज हो।

सिपहआरा–जो एक गर्म और नर्म हो, तो बात बने। और जो दोनों तेज हुए, तो कैसे बने?

बहारबेगम–अब तुम अपनी सास से न लड़ना। तुम नर्म ही रहना। मेरे तो नाक में दम आ गया।

बड़ी बेगम–अब की मिरजा यहां आएं, तो समझाऊं।

बहारबेगम–अम्मांजान, मुझसे उनसे हश्र तक न बनेगी। जो कोई लौंडी-बांदी भी मुझसे अच्छी तरह बातें करे, तो जल मरती है। और मैं जान-बूझकर और जलाती हूं।

हुस्नआरा–बहन, मिल-जुलकर रहना चाहिए।

बहारबेगम–जब तुम ससुराल जाओगी, ऐसी ही सास पाओगी और फिर मिल-जुलकर रहोगी, तो सात बार सलाम करूंगी।

रूहअफजा–झगड़ा सारा यह है कि दूल्हा भाई इनकी खातिर बहुत करते हैं। बस, इनकी सास जली मरती हैं कि यह जोरू की खातिर क्यों करता है?

बहारबेगम–अल्लाह जानता है, हजारों दफे तरह दे जाती हूं, मगर जब नहीं रहा जाता, तो मैं भी बकने लगती हूं। मुझे तो उन्होंने बेहया कर दिया। अब वह एक कहती हैं, तो मैं दस सुनाती हूं।

बड़ी बेगम–(पीठ ठोंककर) शाबाश !

हुस्नआरा–मेरी तरफ से भी पीठ ठोंक दीजिएगा।

बहारबेगम–बहन, अभी किसी से पाला नहीं पड़ा। हमको तो ऐसा दिक कर रखा है कि अल्लाह करे, अब वह मर जाएं, या हम।

चारों बहनें यहां से उठकर अपने कमरे में गईं और बनाव-सिंगार करने लगीं। हुस्नआरा, सिपहआरा और रूहअफजा तो बन-ठनकर मौजूद हो गईं, मगर बहारबेगम अभी बाल ही संवार रही थीं।

रूहअफजा–इन्हें जब देखो, बाल ही संवारा करती हैं।

बहारबेगम–तुम आए दिन यही ताना दिया करती हो।

रूहअफजा–ऐसी तो सूरत भी अल्लाह ने नहीं बनाई है !

बहारबेगम ने कोई दो घंटे में कंघी-चोटी से फरागत पायी। फिर चारों निकलकर बातें करने लगीं। सिपहआरा डली कतरती थीं, हुस्नआरा गिलौरियां बनाती थीं, रूहअफजा एक तसवीर की तरफ गौर से देखती थीं; मगर बहारबेगम की निगाह आईने ही पर थी।

सिपहआरा–अरे, अब तो आईना देख चुकीं? या घंटों सूरत ही देखा कीजिएगा।

बहारबेगम–तुम कहती जाओ, हम जवाब ही न देंगे।

रूहअफजा—अल्लाह जानता है, इन्हें यह मरज है।

सिपहआरा—हां, मालूम तो होता है।

बहारबेगम—तुम सब बहनें एक हो गयीं। अपनी ही जबान थकाओगी।

हुस्नआरा—रूहअफजा, तुम उठकर आईने पर कपड़ा गिरा दो।

रूहअफजा—चिढ़ जायेंगी।

हुस्नआरा—हां बहन, बताओ तो, यह बात क्या है? सास से बनती क्यों नहीं तुमसे?

बहारबेगम—ऐसी सास को तो बस, चुपके से जहर दे दे। कुछ कम सत्तर की होने आयीं, अभी खासी कठौता-सी बनी हैं। मेरा हाथ पकड़ लें, तो छुड़ाना मुश्किल हो जाय। मुई देवनी है।

हुस्नआरा—क्या यह भी कोई ऐब है?

बहारबेगम—एक दिन का जिक्र सुनो, किसी के यहां से महरी आयी। कुछ मेवे लायी थी। वह उस वक्त झूठ-मूठ कुरान-शरीफ पढ़ रही थीं। महरी ने आके मुझको सलाम किया और मेवे की तश्तरी सामने रख दी। बस, दिन भर मुंह फुलाये रहीं।

हुस्नआरा—मगर बातें तो बड़ी मीठी-मीठी करती हैं।

बहारबेगम—एक दिन किसी ने उनको दो चकोतरे दिये। उन्होंने एक चकोतरा मुझको भेजा और एक मेरी ननद को। वह उनसे भी बढ़कर बिस की गांठ। जाकर मां से जड़ दिया कि भाई ने हमको आधा सड़ा हुआ चकोतरा दिया और भाभी को बड़ा-सा ! बस, इस पर सुबह से शाम तक चरखा कातती रहीं।

हुस्नआरा—मैं एक बात पूंछूं? सच-सच कहना। दुल्हा भाई तो प्यार करते हैं?

बहारबेगम—यही तो खैर है।

हुस्नआरा—दिल से?

बहारबेगम—दिल और जान से।

हुस्नआरा—भला, मां से बनती है !

बहारबेगम—वह खुद जानते हैं कि बुढ़िया चिड़चिड़ी औरत है।

हुस्नआरा—बहन, वह तो बड़ी हैं ही, मगर तुम भी तेजी के मारे उनको और जलाती हो। जो मिलके चलो, वह तुम्हारा पानी भरने लगें।

बहारबेगम—अच्छा तुम्हीं बताओ, कैसे मिल के चलूं?

हुस्नआरा—अब की जब जाओ, तो अदब के साथ झुककर सलाम करो।

बहारबेगम—किसको?

हुस्नआरा—अपनी सास को, और किसको।

बहारबेगम—वाह ! मर जाऊं, मगर सलाम न करूं मुरदार को।

हुस्नआरा—बस, यही तो बुरी बात है।

बहारबेगम—रहने दीजिए, बस। वह तो हमको देखकर जल मरें, और हम उनको झुककर सलाम करें। एक दिन मामा से बोलीं कि हमारा पानदान उसको क्यों दे आयी? मेरे मुंह से बस, इतनी-सी बात निकल गयी कि मेरी सास काहे को हैं, यह तो मेरी सौत हैं। बस, इस पर इतना बिगड़ीं कि तोबा ही भली?

हुस्नआरा–बहन, तुमने भी तो गजब किया। तुम्हारे नजदीक यह इतनी-सी ही बात थी? सास को सौत बनाया, और उसको इतनी-सी ही बात कहती हो! अगर तुम्हारी बहू आये और तुम्हें सौत बनाये, तब देखूंगी, उछलती-कूदती हो कि नहीं।

सिपहआरा–उफ्! बड़ी बुरी बात कही।

रूहअफजा–तो अब बन चुकी बस।

बहारबेगम–तुम सबको उसने कुछ रिश्वत जरूर दी है। जब कहतीं हो, उसी की-सी।

सिपहआरा–हमारी बहन, और ऐसी मुंहफट! सास को सौत बनाये!

हुस्नआरा–और फिर शरमाये न शरमाने दे।

बहारबेगम–अच्छा बताइए, तो पहले झुकके सलाम करूं खूब जमीन पर सोकर। फिर?

हुस्नआरा–मेरे तो बहन, रोंगटे खड़े हो गये कि तुमसे यह कहा क्योंकर गया।

बहारबेगम–बताओ-बताओ। हमारी कसम, बताओ।

हुस्नआरा–तुम हंसोगी, और हमें होगा रंज।

बहारबेगम–नहीं, हंसेंगे नहीं। बोलो।

हुस्नआरा–जाकर सलाम करो।

बहारबेगम–जो वह जवाब न दें, तो अपना-सा मुंह लेकर रह जाऊं?

सिपहआरा–वाह! ऐसा हो नहीं सकता।

हुस्नआरा–न जवाब दें, तो कदमों पर गिर पड़ो।

बहारबेगम–मेरी पैजार गिरती है कदमों पर। वह जैसा मेरे साथ करती हैं, वैसा उनकी आंखों, घुटनों के आगे आए।

हुस्नआरा–खर्च तो उजला है, या कंजूस हैं?

बहारबेगम–तीन सौ वसीके के हैं, ढाई सौ गांव से आते हैं। नकद कोई डेढ़ लाख से ज्यादा ही ज्यादा होगा। मकान, बाग, दुकानें अलग हैं। वकालत में कोई छह-सात सौ महीना मिलता है।

हुस्नआरा–तुमको क्या देते हैं?

बहारबेगम–बुढ़िया से चुराकर मेरे ऊपर के खर्च के लिए सौ रुपये मुकर्रर हैं।

सिपहआरा–रूहअफजा बहन, तुम्हारे मियां क्या तनख्वाह पाते हैं?

रूहअफजा–चार-सौ हुए हैं। चार-पांच सौ जमीन से मिल जाते हैं।

हुस्नआरा–तुम्हारी सास तो अच्छी हैं।

रूहअफजा–हां, बेचारी बड़ी सीधी हैं। हां, उनकी लड़की ने अलबत्ता मेरी नाक में दम कर दिया है। जब आती है, रोज मां को भरा करती है।

सिपहआरा–बहारबेगम जो वहां होतीं, तो उनसे भी न बनती।

बहारबेगम–अच्छा, चुप ही रहिएगा, नहीं तो काट खाऊंगी। बड़ी वह बनके आयी हैं।

इतने में काली-काली घटा छा गयी। ठंडी-ठंडी हवा चलने लगी। बहार ने कहा–जी चाहता है, छत पर से दरिया की सैर करें। सबने कहा–हां-हां, चलिए।

मगर हुस्नआरा को याद आ गयी कि हुमायूं फर जरूर खबर पायेंगे और कोठे पर आके सतायेंगे। लेकिन मजबूर थी। चारों चौकड़ियां भरती हुई छत पर जा पहुंचीं। हवा इस जोर से चलती थी कि दुपट्टा खिसका जाता था। गोरा-गोरा बदन साफ नजर आता था। किसी ने जाकर हुमायूं फर से कह दिया कि इस वक्त तो सामने वाला कोठा इंदर का अखाड़ा हो रहा है। उनको ताब कहां? चट से कोठे पर आ पहुंचे। सिपहआरा ऊपर के कमरे में हो रहीं। रूहअफजा वहीं बैठ गयीं। हुस्नआरा ने एक छलांग भरी, तो रावटी में। मगर बहारबेगम ने बेढब आंखें लड़ायीं। हुमायूं फर ने बहुत झुककर सलाम किया।

बहारबेगम–आंखें ही फूटें, जो इधर देखे।

हुमायूं–(हाथ के इशारे से) अपना गला आप काट डालूंगा।

बहारबेगम–शौक से।

नन्हीं-नन्हीं बूंदें पड़ने लगीं और चारों परियां नीचे चल दीं। मिरजा हुमायूं फर मुंह ताकते रह गये।

हुस्नआरा–(बहार से) आप तो खूब डटके खड़ी हो गयीं।

बहारबेगम–क्यों, क्या कोई घोलकर पी जायेगा ! मैं इन्हें जानती हूं, हुमायूं फर तो हैं।

सिपहआरा–तुम क्योंकर जानती हो बहन !

बहारबेगम–ऐ वाह, और सुनिएगा लड़कपन में हम खेला किये हैं इनके साथ। खूब चपतें जमाया किये हैं इनको ! इनकी मां और दादी में खूब झोटामझोटा हुआ करता था।

इतने में मामा ने आकर कहा–बड़ी बेगम साहबा ने ये मेवे भेजे हैं।

सिपहआरा–देखूं। ये चिलगोजे लेती जाओ।

प्यारी–हमको दीजिए।

सिपहआरा–इनको दीजिए। 'पीर न शहीद, नकटों को छापा।' सबके बदले इनको दीजिए।

हुस्नआरा–पहले सलाम कर।

चारों बहनों ने मजे से मेवे चखे। एक दूसरी के हाथ से छीन-छीन कर खाती थीं। जवानी की उमंग का क्या कहना !

उधर मिरजा हुमायूं फर अपनी छत पर खड़े यह शेर पढ़ रहे थे–

न मुड़कर भी बेदर्द कातिल ने देखा; तड़पते रहे नीम जां कैसे-कैसे।

जब बड़ी देर तक छत पर किसी को न देखा तो, यह शेर जबान पर लाये–

कल बदामोंज (रकीब) ने क्या तुमको सिखाया है हाय।
आज वह आंख, वह चमक, वह इशारा ही नहीं।

पैंतालीस

एक दिन हुस्नआरा को सूझी कि आओ, अबकी अपनी बहनों को जमा करके एक लेक्चर दूं। बहारबेगम बोलीं—क्या? क्या दोगी?

हुस्नआरा—लेक्चर-लेक्चर। लेक्चर नहीं सुना कभी?

बहारबेगम—लेक्चर क्या बला है?

हुस्नआरा—वही, जो दूल्हा भाई जलसों में आये दिन पढ़ा करते हैं।

बहारबेगम—तो हम क्या तुम्हारे दूल्हा भाई के साथ-साथ घूमा करते हैं? जाने कहां-कहां जाते हैं, क्या पढ़-पढ़के सुनाते हैं। इतना हमको मालूम है कि शेर बहुत कहते हैं। एक दिन हमसे कहने लगे—चलो, तुमको सैर करा लायें। फिटन पर बैठ लो। रात का वक्त है, तुम दुशाले से खूब मुंह और जिस्म चुरा लेना। मैंने कानों पर हाथ धरे कि न साहब, बंदी ऐसी सैर से दरगुजरी। वहां जाने कौन-कौन हो, हम नहीं जाने के।

सिपहआरा—अब की आवें तो उनके साथ हम जरूर जायें !

बहारबेगम—चलो, बैठो, लड़कियां बहनोइयों के साथ यों नहीं जाया करतीं।

रूहअफजा—मगर सुनेगा कौन? दस-पांच लड़कियां और भी तो हों कि हमीं-तुम टुटरूं टूं?

सिपहआरा—देखिए, मैं बुलवाती हूं। अभी मामा को भेजे देती हूं।

हुस्नआरा—मगर नजीर को न बुलवाओ। उनके साथ जानीबेगम भी आयेंगी वह बात-बात में शाखें निकालती हैं। उन्हें खब्त है कि हमसे बढ़कर कोई हसीन ही नहीं। 'शक्ल चुड़ैलों की, नाज परियों का', दिन-रात बनाव-संवार ही में लगी रहती हैं।

सिपहआरा—फिर अच्छा तो है ! बहारबेगम से भिड़ा देना।

थोड़ी देर में डोलियों पर डोलियां और बग्घियों पर बग्घियां आने लगीं। दरबान बार-बार आवाज देता था कि सवारियां आयी हैं। लौंडियां जा-जाकर मेहमानों को सवारियों पर से उतरवाती थीं और वे चमक-चमक कर अंदर आती थीं। आखिर में जानीबेगम और नजीरबेगम भी आयीं। जानीबेगम की बोटी-बोटी फड़कती थी; आंखें नाचती रहती थीं। नजीरबेगम भोली-भाली शरमीली लड़की थी। शरम से आंखें झुकी पड़ती थीं। जब सब आ चुकीं। तो हुस्नआरा ने अपना लेक्चर सुनाना शुरू किया—

''मेरी प्यारी बहनो, सास-बहुओं के झगड़े, ननद-भावजों के बखेड़े, बात-बात पर तकरार, मियां-बीबी की जूती-पैजार से खुदा की पनाह। इन बुरी बातों से खुदा बचाये। भलेमानसों की बहू-बेटियों में ऐसी बात न आने पाये। इस फूट की हमारे ही देश में इतनी गर्मबाजारी है कि सास की जबान पर कोसना जारी है, बहू मसरूफ गेरिया व जारी है और मियां की अक्ल मारी है। ननद भावज से मुंह फुलाये हुए, भावज ननद से त्योरियां चढ़ाये हुए। बहू हिचकियां ले-लेकर रोती है, सास जहर खाकर सोती है। और, जो सास गुस्सेवर हुई और बहू जबान की तेज, तो मार-पीट की नौबत पहुंचती है। मियां अगर बीबी की-सी कहें, तो अम्मां की घुड़कियां सहें; अम्मां की-सी कहें, तो बीबी की बातें सुनें। मां उधर, बीबी इधर कान भरती है,

वह इनके और यह उनके नाम से कानों पर हाथ धरती हैं।

'मगर ताली एक हाथ से नहीं बजती। सास भली हो, तो बहू को मना ले; और बहू आदमी हो, तो सास को आदमी बना ले। एक शरीफजादी ने अपने मामा से कहा कि हमारी सास तो हमारी सौत हैं। खुदा जाने, उनकी जबान से यह बात कैसे निकली ! इस पर भी उन्हें दावा है कि हम शरीफजादी हैं। अगर वह हमारी राय पर चलें, तो उनकी सास उन्हें अपने सिर पर बिठायें। वह सीधी जाकर सास के कदमों पर गिर पड़ें और आज से उनकी किसी बात का जवाब न दें। क्या उनकी सास का सिर फिर गया है या उन्हें बावले कुत्ते ने काटा है? बहू अगर सास की खिदमत करे, तो दुनिया भर की सासों में कोई ऐसी न मिले, जो छेड़कर बहू से लड़े।

'अब सोचो तो जरा दिल में, इस तकरार और जूती-पैजार का अंजाम क्या है? घर में फूट, एक-दूसरे की सूरत से बेजार, लौंडियों-बांदियों में जलील, सारी दुनिया में बदनाम, घर तबाह। एक चुप हजार बला को टालती है, फसाद को जहन्नुम में डालती है। हां, जो यह खयाल हो कि सास एक कहें, तो दस सुनायें, वह दो बातें कहें, तो बीस मरतबे उनको उल्लू बनायें, तो बस, मेल हो चुका। सास न हुई, भूनी मूंग हुई। आखिर उसका भी कोई दरजा है या नहीं? या बस, बहू ससुराल में जाते ही मालकिन बन बैठे, सास को ताक पर रख दे और मियां पर हुकूमत चलाने लगे? अब मैं आप लोगों से इतना चाहती हूं कि सच-सच अपनी सासों का हाल बयान कीजिए।'

एक–अल्लाह करे, हमारी सास को आज रात ही को हैजा हो।

दूसरी–अल्लाह करे, हमारी सास को हैजा हो गया हो।

तीसरी–अल्लाह करे, हमारी सास ऐसी जगह मरे, जहां एक बूंद पानी न मिले।

बहारबेगम–या खुदा, मेरी सास के पांव में बावला कुत्ता काटे और वह भूंक-भूंक कर मरे।

चौथी–हम तो अपनी सास को पहले ही चट कर गये। जहन्नुम चली गयीं।

पांचवीं–सास तो सास, हमारी ननद ने नाक में दम कर दिया।

जानीबेगम–मेरी सास तो मेरे आगे चूं नहीं कर सकतीं। बोलीं, और मैंने गला घोंटा।

इस लेक्चर का और किसी पर तो ज्यादा नहीं, मगर नजीरबेगम पर बहुत असर हुआ। हुस्नआरा से बोलीं–बहन, हम कल से आया करेंगे, हमें कुछ पढ़ाओगी?

हुस्नआरा–हां, हां, जरूर आओ।

जानीबेगम–ऐ वाह, यह क्या पढ़ायेंगे भला ! हमारे पास आओ, तो हम रोज पढ़ा दिया करें।

नजीरबेगम–आपके तो पड़ोस ही में रहते हैं हम, मगर बहन, तुम तो हुड़दंगा सिखाती हो। दिन भर कोठे पर घोड़े की तरह दौड़ा करती हो, कभी नीचे कभी ऊपर !

जानीबेगम–(नजीरबेगम का हाथ पकड़कर) मरोड़ डालूं हाथ।

नजीर–देखा, देखा; बस, कभी हाथ मरोड़ा, कभी ढकेल दिया।

ज़ानीबेगम–(नजीर का गाल काटकर) अब खुश हुई?

सिपहआरा–ऐ वाह, लेके गाल काट लिया।

जानीबेगम–फिर औरत हैं, या मर्द हैं कोई।

नजीरबेगम–अब आप अपनी मुहब्बत रहने दें।

जब सब मेहमान बिदा हुए, तो चारों बहनें मिलकर गयीं और बड़ी बेगम के साथ एक ही दस्तरख्वान पर खाना खाया। खाते वक्त यों गुफ्तगू हुई–

बहारबेगम–हुस्नआरा की शादी कहीं तजवीजी?

बड़ी बेगम–हां, फिक्र में तो हूं।

बहारबेगम–फिक्र नहीं अम्मांजान, अब दिन-दिन चढ़ता है।

बड़ी बेगम–अपने जाने तो जल्दी ही कर रही हूं।

बहारबेगम–जल्दी क्या दो-चार बरस में?

रूहअफजा–बहन, अल्लाह-अल्लाह करो।

बहारबेगम–बेचारी सिपहआरा भी ताक रही हैं कि हम इनका भी जिक्र करें।

सिपहआरा–देखिए, यह छेड़खानी अच्छी नहीं, हां !

बड़ी बेगम–(मुस्कराकर) तुम जानो, यह जानें।

बहारबेगम–अभी कल शाम ही को तो तुमने कहा था कि अम्मांजान से हमारे ब्याह की सिफारिश करो। आज मुकरती हो? भला खाओ तो कसम कि तुमने नहीं कहा?

सिपहआरा–वाह, जरा-जरा-सी बात पर कोई कसम खाया करता है !

रूहअफजा–पानी मरता है कुछ?

सिपहआरा–जी हां, आप भी बोलीं?

रूहअफजा–अच्छा, कसम खा जाओ न !

सिपहआरा–काहे को खायं?

बड़ी बेगम–ऐ, तो चिढ़ती क्यों हो बेटी !

सिपहआरा–अम्मांजान, झूठ-मूठ लगाती हैं। चिढ़ें नहीं?

रूहअफजा–क्या ! झूठ-मूठ?

सिपहआरा–और नहीं तो क्या?

रूहअफजा–अच्छा, हमारे सिर की कसम खाओ।

सिपहआरा–अल्लाह करे, मैं मर जाऊं।

रूहअफजा–चलो बस, रो दीं। अब कुछ न कहो।

बहारबेगम–अम्मांजान, एक रईस हैं। उनका लड़का कोई उन्नीस-बीस वर्ष का होगा। खुदा जानता है, बड़ा हसीन है। आजकल सिकंदरनामा पढ़ता है।

बड़ी बेगम–खाने-पीने से खुश हैं?

रूहअफजा–खुश? आठ तो घोड़े हैं उनके यहां।

बहारबेगम–अम्मांजान, वह लड़का हुस्नआरा के ही लायक है। दो लड़के हैं। दोनों लायक, होशियार, नेकचलन। हमारे यहां दूसरे-तीसरे आया करते हैं।

रूहअफजा–जरूर मंजूर कीजिए।

बड़ी बेगम–अच्छा-अच्छा, सोच लूं।

हुस्नआरा ने यह बात-चीत सुनी तो होश उड़ गये। खुदा ही खैर करे। ये दोनों बहनें अम्मांजान को पक्का कर रही हैं। कहीं मंजूर कर लें, तो गजब ही हो जाय। बेचारे आज़ाद वहां मुसीबतें झेल रहे हैं, और यहां जश्न हो। इस फिक्र में उससे अच्छी तरह खाना भी न खाया गया। अपने कमरे में आकर लेट रही और मुंह ढांपकर खूब रोयी। खाना खाने के बाद वे तीनों भी आयीं और हुस्नआरा को लेटे देखकर झल्लायीं।

बहारबेगम–मकर करती होंगी। सोयेंगी क्या अभी।

सिपहआरा–नहीं बहन, यह तकिये पर सिर रखते ही सो जाती हैं।

बहारबेगम–जी हां, सुन चुकी हूं। एक तुमको तकिये पर सिर रखते ही नींद आ जाती है, दूसरे इनको।

रूहअफजा–(गुदगुदाकर) उठो बहन, हमारा ही खून पिये, जो न उठे। मेरी बहन न, उठ बैठो शाबाश?

सिपहआरा–सोने दीजिए। आंखें मारे नींद के मतवाली हो रही हैं।

बहारबेगम–रसीली मतवालियों ने जादू डाला। हमारे यहां पड़ोस में रोज तालीम होती है। मगर हमारे मियां को इससे बड़ी चिढ़ है कि औरतें नाच देखें या गाना सुनें। मर्दों की भी क्या हालत है ! घर की जोरू से बातें न करें, बाहर शेर। अल्लाह जानता है, हम तो उन सब मुई बेसवाओं को ऐड़ी-चोटी पर कुरबान कर दें। एक ने मिस्सी की घड़ी जमायी थी, जैसे बत्तख ने कीचड़ खायी हो।

रूहअफजा–(हुस्नआरा को चूम कर) उठो बहन !

हुस्नआरा–(आंखें खोलकर) सिर में दर्द है।

बहारबेगम–संदली-रंगों से माना दिल मिला;
दर्द सर की किसके माथे जायगी।

हुस्नआरा–यहां इन झगड़ों में नहीं पड़ते।

बहारबेगम–दुरुस्त।

रूहअफजा–जरूर किसी से आंख लड़ायी है, इसी से नींद आयी है। अच्छा अब सच-सच कह दो, किससे दिल मिला है?–दिल दीजिए तो यार तरहदार देखकर।

सिपहआरा–और क्या।–
माशूक कीजिए तो परीजाद कीजिए।

हुस्नआरा–किसी से मिलने का अब हौसला नहीं है जां :
बहुत उठाये मजे उनसे आशना होकर।

रूहअफजा–बस, बहुत बातें न बनाइए। हम सब सुन चुकी हैं। भला किसी पर दिल नहीं आया, तो आंखों से आंसू क्योंकर निकलें? जरी, आइने में सूरत देखिए।

सिपहआरा–ऐ बहन, यह धान-पान आदमी, जरी सिर में दर्द हुआ, और लेट रहीं।

बहारबेगम–लड़की बातें बनाती है। हमको चुटकियों पर उड़ाती है।

हुस्नआरा–अब आप जो चाहे कहें। यहां न कोई आशिक है, न कोई माशूक।

रूहअफजा–उड़ो न। कह चलूं सब?

हुस्नआरा–हां, हां, कहिए। सौ काम छोड़के। आपको खुदा की कसम।

रूहअफजा–अच्छा, इस वक्त दिल क्यों भर आया?

हुस्नआरा–

दिल ही तो है न संग व खिश्त, दर्द से भर न आये क्यों,
रोयेंगे हम हजार बार, कोई हमें रुलाये क्यों?

बहारबेगम–(तालियां बजाकर) खुल गयी न बात?

रूहअफजा–जादू वह, जो सिर पर चढ़ के बोले।

हुस्नआरा–मुंह में जबान है, जो चाहो, बको।

बहारबेगम–अच्छा, बड़ी सच्ची हो, तो एक बात करो। हम एक हाथ में कोई चीज लें। और दूसरा हाथ खाली रखें। मुट्ठी बांध के आयें, और तुम एक हाथ मारो। जो खाली हाथ पर पड़े, तो तुम झूठी। दूसरे हाथ पर पड़े, तो हम झूठे।

हुस्नआरा–ऐ वाह, छोकरियों का खेल।

रूहअफजा–अक्खाह, और आप हैं क्या?

सिपहआरा–अच्छा, आप आइए। मगर हम दोनों हाथ देख लेंगे।

बहारबेगम–हां-हां, देख लेना।

बहारबेगम ने दूसरे कमरे में जाकर एक छोटी-सी शीशे की गोली दाहिने हाथ में रखी और बायां हाथ खाली। दोनों मुट्ठियां खूब जोर से बंद कर लीं और जाकर बोलीं–अच्छा, मारो हाथ पर हाथ।

हुस्नआरा–ये वाहियात बातें हैं।

रूहअफजा–तो कांपी क्यों जाती हो?

सिपहआरा–बा जी, बोलो, किस हाथ में है?

हुस्नआरा–उधर वाले में।

सिपहआरा–नहीं बा जी, धोखा खाती हो। हम तो बाएं हाथ पर मारते हैं।

बहारबेगम–(बायां हाथ खोलकर) सलाम।

सिपहआरा–अरे, वह हाथ तो दिखाओ।

बहारबेगम–देखो! है शीशे की गोली कि नहीं?

हुस्नआरा–देखा। कहा था कि उस हाथ में है। कहा न माना।

रूहअफजा–कहिए, अब तो सच है?

हुस्नआरा–यह सब ढकोसले हैं।

बहारबेगम–अच्छा बहन, अब इतना बता दो कि मियां आज़ाद कौन हैं?

हुस्नआरा–क्या जानें, क्या वाही-तबाही बकती हो।

बहारबेगम–अब छिपाने से क्या होता है भला। सुन तो चुके ही हैं हम।

हुस्नआरा–बतायें क्या, जब कुछ बात भी हो?

सिपहआरा–इन दोनों बहनों ने ख्वाब देखा था कल मालूम होता है।

हुस्नआरा–हां, सच कहा ! ख्वाब देखा होगा।

रूहअफ़जा–ख्वाब तो नहीं देखा, मगर सुना है कि सूरत-शक्ल में करोड़ों में एक हैं।

बहारबेगम–हुस्नआरा ने तो अपना जोड़ छांट लिया, अब सिपहआरा का निकाह हुमायूं फर के साथ हो जाये, तो हम समझें कि यह बड़ी खुशनसीब हैं।

सिपहआरा–मेरे तो तलवों को भी न पहुंचें।

हुस्नआरा–तूती का कौए से जोड़ लगाती हो?

बहारबेगम–वाह, चेहरे से नूर बरसता है। जी चाहता है कि घंटों देखा करें। अम्मां से आज ही तो कहूंगी मैं।

हुस्नआरा–कह दीजिएगा, धमकाती क्या हो !

सिपहआरा–आपके कहने से होता क्या है? यहां कोई पसंद भी करे।

रूहअफजा–इनकार करोगी, तो पछताओगी।

छियालीस

सबेरे हुस्नआरा तो कुछ पढ़ने लगी और बहारबेगम ने सिंगारदान मंगाकर निखरना शुरू किया।

हुस्नआरा–बस, सुबह तो सिंगार, शाम तो सिंगार। कंघी-चोटी, तेल-फुलेल। इसके सिवा तुम्हें और किसी चीज से वास्ता नहीं। रूहअफजा सच कहती हैं कि तुम्हें इसका रोग है।

बहारबेगम–चलो, फिर तुम्हें क्या? तुम्हारी बातों में खयाल बंट गया, मांग टेढ़ी हो गयी।

हुस्नआरा–है-है ! गजब हो गया। यहां तो दुल्हा भाई भी नहीं हैं ! आखिर यह निखार दिखलाओगी किसे?

बहारबेगम–हम उठकर चले जायेंगे। तुम छेड़ती जाती हो और यह मुआ छपका सीधा नहीं रहता।

हुस्नआरा–अब तक मांग का खयाल था, अब छपके का खयाल है।

बहारबेगम–अच्छा, एक दिन हम तुम्हारा सिंगार कर दें, खुदा की कसम वह जोबन आ जाये कि जिसका हक है।

हुस्नआरा–फिर अब साफ-साफ कहलाती हो। तुम लाख बनो-ठनो, हमारा जोबन खुदादाद होता है। हमें बनाव-चुनार की क्या जरूरत भला !

बहारबेगम–अपने मुंह मियां मिट्ठू बन लो।

हुस्नआरा–अच्छा, सिपहआरा से पूछो। जो यह कहें वह ठीक।

सिपहआरा–जिस तरह बहार बहन निखरती हैं, उस तरह अगर तुम भी निखरो, तो चांद का टुकड़ा बन जाओ। तुम्हारे चेहरे पर सुर्खी और सफेदी के सिवा नमक भी बहुत है। मगर वह गोरी-चिट्टी हैं बस, नमक नहीं।

रूहअफजा–सच्ची बात तो यह है कि हुस्नआरा हम सब में बढ़-चढ़कर हैं।

इतने में एक फिटन खड़खड़ाती हुई आयी, मुश्की जोड़ी जुती हुई। नवाब

खरशेदअली उतरकर बड़ी बेगम के पास पहुंचे और सलाम किया।

बड़ी बेगम–आओ बेटा, बायीं आंख जब फड़कती है, तब कोई-न-कोई आता जरूर है। उस दिन आंख फड़की, तो लड़कियां आयीं। यह रूहअफजा की क्या हालत हो गयी है?

नवाब साहब–अब तो बहुत अच्छी हैं। मगर परहेज नहीं करतीं। तीता मिर्च न हो, तो खाना न खायें। फिर भला अच्छी क्योंकर हों?

यहां से बातें करके नवाब साहब उस कमरे में पहुंचे, जिसमें चारों बहनें बैठी थीं। नवाब साहब का लिबास देखिए, जुर्राब खाकी रंग का, घुटन्ना चुस्त, कुर्ता सफेद फलालैन का। उस पर स्याह बनात का दगलना और हरी गिरंट की गोट। बांकी नुक्केदार टोपी। पांव में स्याह वारनिश का बूट, एक सफेद दुलाई ओढ़े हुए। हुस्नआरा और सिपहआरा ने नीची गरदन करके बंदगी की। रूहअफजा ने कहा–आप बे-इत्तला किये हमारे कमरे में क्यों चले आये साहब?

नवाब साहब–हुक्म हो, तो लौट जाऊं।

बहारबेगम–शौक से। बिन बुलाये कोई नहीं आता, लो सिपहआरा, अब इनके साथ बग्घी पर हवा खाने जाओ।

सिपहआरा–वाह, क्या झूठ-मूठ लगाती हो। भला मैंने कब कहा था।

रूहअफजा–हम गवाह हैं।

नवाब साहब–अच्छा, फिर उसमें ऐब ही क्या है।

इतने में रूहअफजा एक शीशे की तश्तरी में चिकनी डलियां रख कर लायी। नवाब साहब ने दो उठाकर खा लीं और 'आख थू, आख थू!' करते-करते बोले–पानी मंगाओ खुदा के वास्ते।

वह चिकनी डली असल में मिट्टी की थी। चारों बहनों ने कहकहा लगाया और वह हजरत बहुत झेंपे। जब मुंह धो चुके, तो सिपहआरा ने एक गिलौरी दी।

नवाब साहब–(गिलौरी खोलकर) अब बेदेखे-भाले खाने वाले की ऐसी-तैसी। कहीं इसमें मिरचें न झोंक दी हों। इस वक्त तो भूख लगी हुई है। आंतें कुलहु-अल्लाह पढ़ रही हैं।

हुस्नआरा–बासी खीर खाइए, तो लाऊं?

नवाब साहब–नेकी और पूछ-पूछ

हुस्नआरा जाकर एक कुफली उठा लायी। नवाब साहब ने बड़ी खुशी से ली, मगर खोलते हैं तो मेंढकी उचककर निकल पड़ी !

नवाब साहब–खूब ! यह रूहअफजा से भी बढ़ कर निकलीं। 'बड़ी बी तो बड़ी बी, छोटी बी सुभान अल्लाह।'

रात को नवाब साहब आराम करने गये तो, बहारबेगम ने पूछा–कहो, तुम्हारी अम्मांजान तो जीती हैं? या ढुलक गयीं?

नवाब साहब–क्या बेतुकी उड़ाती हो, ख्वाहमख्वाह दिल दुखाती हो। ऐसी बातें करती हो कि सारा शौक ठंडा पड़ जाता है।

बहारबेगम–हां, उनकी तो मुहब्बत फट पड़ी है तुमको। बत्तीस धार का दूध

पिलाया है कि नहीं !

नवाब साहब—इसी से आने को जी नहीं चाहता था।

बहारबेगम—तो क्यों आये? क्या चकला निगोड़ा उजड़ गया है? या बाजार में किसी ने आग लगा दी?

नवाब साहब—अच्छा, इस वक्त तो खुदा के लिए ये बातें न करो? कोई छह दिन के बाद मुलाकात हुई है।

बहारबेगम—क्या कहीं आज और ठिकाना न लगा?

नवाब साहब—तुम जो जैसे लड़ने पर तैयार होकर आयी हो।

बहारबेगम—क्यों? आज प्राटन साहब न बनोगे? कोट पतलून पहन के न जाओगे? मुझसे उड़ते हो !

नवाब साहब रंगीन मिजाज आदमी थे। बहारबेगम को उनके सैर-सपाटे बुरे मालूम होते थे। इसी सबब से कभी-कभी मियां-बीबी में चख चल जाती थी। मगर अब की मरतबा बहारबेगम ने एक ऐसी बात सुनी थी कि आखों से खून बरसने लगा था? एक दिन नवाब साहब कोट-पतलून डाटकर एक बंगले पर जा पहुंचे और दरवाजा खटखटाया। अंदर से आदमी ने आकर पूछा—आप कहां से आते हैं? आपने कहा—हमारा नाम प्राटन साहब है। मेमसाहब को बुलाओ। अब सुनिए, एक कुंजड़िन जो पड़ोस में रहती थी वहां तरकारी बेचने गयी हुई थी। वह इन हजरत को पहचान गयी और घर में आकर बहारबेगम से कच्चा चिट्ठा कह सुनाया। बेगम सुनते ही आग-भभूका हो गयी और सोचीं कि आज तो आने दो, कैसा आड़े-हाथों लेती हूं कि छठी का दूध याद आ जाय। इस वक्त मौका मिला, तो उबल पड़ी। नवाब ने जो पत्ते-पत्ते की सुनी, तो सन्नाटे में आ गए।

बहारबेगम—कहिए, प्राटन साहब, मिजाज तो अच्छे हैं?

नवाब साहब—तुम क्या कहती हो? मेरी तो समझ ही में नहीं आता कुछ।

बहारबेगम—हां, हां, आप क्या समझेंगे। हम हिंदुस्तानी और आप खासी विलायत के प्राटन साहब ! हमारी बोली आप क्या समझेंगे?

नवाब साहब—कहीं भंग तो नहीं पी गई हो?

बहारबेगम—अब भी नहीं शरमाते?

नवाब साहब—खुदा गवाह है, जो कुछ समझ में भी आया है।

बहारबेगम—जलाए जाओ और फिर कहो कि धुआं न निकले। मैं क्या जानती थी कि तुम प्राटन साहब बन जाओगे।

इधर तो मियां-बीवी में नोक-झोंक हो रही थी, उधर उनकी सालियां दरवाजे के पास खड़ी चुपके-चुपके झांकती और सारी दास्तान सुन रही थीं। मारे हंसी के रहा न जाता था। आखिर जब एक मरतबा बहार ने जोर से नवाब का हाथ झटककर कहा—आप तो प्राटन साहब हैं, मैं आपको अपने घर में न घुसने दूंगी—तो सिपहआरा खिलखिलाकर हंस पड़ी। बहार ने हंसी की आवाज सुनी, तो धक से रह गयी। नवाब भी हक्का-बक्का हो गए।

नवाब साहब—तुम्हारी बहनें बड़ी शोख हैं।

रूहअफजा–बहन, सलाम !

सिपहआरा–दूल्हा भाई, बंदगी अर्ज।

हुस्नआरा–मैं भी प्राटन साहब को आदाब अर्ज करती हूं।

नवाब साहब–समझा दो, यह बुरी बात है।

सिपहआरा–बिगड़ते क्यों हो प्राटन साहब !

बहारबेगम–(कमरे से निकलकर) ऐ, तो अब भागी कहां जाती हो?

रूहअफजा–बहन, अब जाइए। प्राटन साहब से बातें कीजिए।

बहारबेगम–आओ-आओ, तुम्हें खुदा की कसम।

सिपहआरा–कोई अपना भाई-बंद हो तो आएं। भला प्राटन साहब को क्या मुंह दिखाएं?

नवाब साहब–इस प्राटन के नाम ने तो हमें खूब झंडे पर चढ़ाया। कैसे रुसवा हुए।

बहारबेगम–अपनी करतूतों से।

सिपहआरा–अब तो कलई खुल गयी?

तीनों बहनों ने नवाब साहब को खूब आड़े हाथों लिया। बेचारे बहुत झेंपे। जब वे चली गयीं, तो बहारबेगम ने प्राटन साहब का कसूर माफ कर दिया–

दिलों में कहने-सुनने से अदावत आ ही जाती है;
जब आंखें चार होती हैं, मुहब्बत आ ही जाती है।

सैंतालीस

आज हम उन नवाब साहब के दरबार की तरफ चलते हैं, जहां खोजी और आज़ाद ने महीनों मुसाहबत की थी और आज़ाद बटेर की तलाश में महीनों सैर-सपाटे करते रहे थे। शाम का वक्त था। नवाब साहब एक मसनद पर शान से बैठे हुए थे। इर्द-गिर्द मुसाहब लोग बैठे हुक्के गुड़गुड़ाते थे। बी अलारक्खी भी जाकर मसनद का कोना दबाकर बैठीं।

नवाब साहब–यों आइए, बी साहब !

अलारक्खी–(खिसककर) बहुत खूब !

मुसाहब–(दूसरे मुसाहब के कान में) क्या जमाना है, वाह ! हम शरीफ और शरीफ के लड़के और यह इज्जत कि जूतियों पर बैठे हैं। कोई टके को नहीं पूछता।

नुदरत–यार, क्या कहें, अब्बाजान चकलेदार थे, जिसका चाहा, भुट्टा-सा सिर उड़ा दिया। डंका सामने बजता था। इन्हीं आंखों के सामने दोनों तरफ आदमी झुक-झुककर सलाम करते थे, और इन्हीं आंखों यह भी देख रहे हैं कि बेसवा आकर मसनद पर बैठ गयी और हम नीचे बैठे हैं। वाह री किस्मत ! फूट गयी।

नवाब साहब–आपका नाम क्या है बी साहब?

अलारक्खी–हुजूर, मुझे अलारक्खी कहते हैं।

नवाब साहब–क्या प्यारा नाम है !

नुदरत–हुजूर, चाहे आप बुरा माने या भला, हम तो बीच खेत कहेंगे कि आपके यहां शरीफों की कदर नहीं। गजब खुदा का, यह टके की बाजारी औरत मसनद पर आके बैठ जाय और हम शरीफ लोग ठोकरें खायें ! आसमान नहीं फट पड़ता ! कैसे-कैसे गौखे रईस जमा हैं दुनिया में।

इतना कहना था कि हाफिज जी बिगड़ खड़े हुए और लपक के नुदरत के मुंह पर एक लप्पड़ जमाया। वह आदमी थे करारे, लप्पड़ खाते ही आग हो गये। झपट के हाफिज जी को दे पटका। इस पर कुल मुसाहब और हवाली-मवाली उठ खड़े हुए।

एक–छोड़ दे बे !

दूसरा–इतनी लातें लगाऊंगा कि भुरकस निकल जायगा।

तीसरा–मर्दक, जिसका नमक खाता है, उसी को गालियां सुनाता है?

नवाब साहब–निकाल दो इसे बाहर।

हाफिज–देखिए तो नमकहराम की बातें !

नवाब साहब–आज से दरबार में न आने पाये।

तीन-चार आदमियों ने मिलकर हाफिज जी को छुड़ाया। दरबार में हुल्लड़ मचा हुआ था। अलारक्खी खड़े-खड़े थरथराती थीं और नवाब साहब उनको दिलासा देते जाते थे।

एक मुसाहब–(अलारक्खी से) ऐ हुजूर, आप न घबरायें।

दूसरा मुसाहब–वल्लाह बी साहबा, जो आप पर जरा भी आंच आने पाये।

नवाब–तुम तो मेरी पनाह में हो जी !

अलारक्खी–जी हां, मगर खौफ मालूम होता है।

नवाब–अभी उस मूजी को यहां से निकलवाये देता हूं।

हाफिज–हुजूर, वह बाहर खड़े सबको गालियां दे रहे हैं।

सबने मिलकर मियां नुदरत को बाहर तो निकाल दिया पर वह टर्रा आदमी था, बाहर जाकर एंड़ी-बेंड़ी सुनाने लगा–ऐसे रईस पर आसमान फट पड़े, जो इन टके-टके की औरतों को शरीफों से अच्छा समझे। किसी जमाने में हम भी हाथीनशीन थे। चौदह-चौदह हाथी हमारे दरवाजे पर झूमते थे। आज इस नवबढ़ रईस ने हमको फर्श पर बिठाया और मालजादी को मसनद पर जगह दी। खुदा इस मर्दक से समझे।

नवाब साहब–यह कौन गुल मचा रहा है?

एक मुसाहब–वही है हुजूर।

दूसरा मुसाहब–नहीं हुजूर, वह कहां ! वह भागा पत्तातोड़। यह कोई फकीर है। भूखों मरता है।

नवाब–कुछ दिलवा दो भई !

एक मुसाहब ने दारोगा जी को बुलाया और उनसे दस रुपये लेकर चला। जब उसके लौट आने पर भी बाहर का शोर न बंद हुआ, तो नवाब ने खिदमतगार को

भेजा कि देख, अब कौन चिल्ला रहा है? खिदमतगार ने बाहर जाकर जो देखा, तो मियां नुदरत खड़े गालियां सुना रहे हैं। जब वह नवाब साहब के पास जाने लगा, तो दारोगा जी ने उसे रोककर समझाया—अगर तुमने ठीक-ठीक बतला दिया, तो हम तुम को मार ही डालेंगे। खबरदार, यह न कहना कि मियां नुदरत गालियां दे रहे हैं। बल्कि यों बयान करना कि वह फकीर तो दस रुपये लेकर चल दिया, मगर और कोई फकीर, जो उस वक्त वहां मौजूद थे, आपको दुआएं दे रहे हैं। उनका सवाल है कि हुजूर के दरबार से कुछ उन्हें भी मिलें।

नवाब साहब ने यह सुना, तो उन्हें यकीन आ गया। बेचारे भोले-भाले आदमी थे, हुक्म दिया कि इसी वक्त सब फकीरों को इनाम मिले, कोई दरबार से नामुराद न लौटे; वर्ना मैं जहर खाकर मर जाऊंगा।

हाफिज—दारोगा जी, इन फकीरों को चालीस रुपये दे दीजिए।

नवाब—क्या, चालीस ! भला सौ रुपये तो तकसीम करो !

मुसाहब—ऐ, खुदा सलामत रखे।

हाफिज—वाह-वाह क्यों न हो मेरे नवाब।

दारोगा ने सौ रुपये लिये और बाहर निकले। कई मुसाहब भी उनके साथ-साथ बाहर आ पहुंचे।

एक—ऐसे गौखे रईस कहां मिलेंगे?

दूसरा—क्या पागल है, वल्लाह !

हाफिज—बेवकूफ, काठ का उल्लू।

दारोगा—कह देंगे कि दे आये।

हाफिज—लेकिन जो फिर गुल मचाये?

दारोगा—अजी, उसको निकाल बाहर कर दो। दो धक्के।

सबने मियां नुदरत को घेर लिया और कोसों तक रगेदते हुए ले गये। वह गालियां देते हुए चले, अलारक्खी को भी खूब कोसा।

नवाब ने लाखों कसमें दीं कि अलारक्खी खाना खायें और कुछ दिन उसी बगीचे में आराम से रहें; मगर अलारक्खी ने एक न मानी। मियां नुदरत का उसे बार-बार ताने देना, उसे टके की औरत और बेसवा कहना उसके दिल में कांटे की तरह खटक रहा था। उसकी आंखों में आंसू भर आये।

नवाब—सच कहिए बी साहबा, आखिर आप क्यों इस कदर रंजीदा हैं अगर मुझसे कोई खता हुई हो तो माफ करो।

अलारक्खी—जाने हमें इस वक्त क्या याद आया। आपसे क्या बतायें। दिल ही तो है।

नवाब—मुझसे तो कोई कसूर नहीं हुआ?

अलारक्खी—हुजूर, ये सब किस्मत का खेल हैं। हमारी-सी बेहया जिंदगी किसी की न हो? मां-बाप ने अंधे कुएं में ढकेल दिया; आप चैन से उड़ाया किये हमें भाड़ में झोंक गये। हमारे बूढ़े मियां शादी करते ही दूसरे शहर में जा बसे। हम उनके नाम को रो बैठे। जब वह अंटागफील हो गये, तो हमारी मां ने बड़ा जश्न किया

और एक-दूसरे लड़के से शादी ठहरायी। मगर अम्मां से किसी ने कह दिया-खबरदार लड़की को अब न ब्याहना, भलेमानसों से बेवा का निकाह नहीं होता। बस, अम्मां चट से बदल गयीं। आखिर मैं एक रात को घर से निकल भागी। लेकिन उस दिन से आज तक जैसी पाक पैदा हुई थी, वैसी ही हूं। आज उस आदमी ने तो मुझे टके की औरत और बेसवा बनाया, तो मेरा दिल भर आया। कसम ले लीजिए जो मियां आज़ाद के सिवा किसी से कभी आंखें लड़ी हों।

नवाब-कौन, कौन? किसका नाम तुमने लिया?

हाफिज-अच्छा पता लगा। वह तो नवाब साहब के दोस्त हैं।

नवाब-हमको उनकी खबर मिले, तो फौरन बुलवा लें।

अलारक्खी-वह तो कहीं बाहर गये हैं। कुछ दिनों हमारी सराय में ठहरे थे। अच्छे खूबसूरत जवान हैं। उनको एक भोले-भाले नवाब मिल गये थे। नवाब ने एक बटेर पाला था। मियां आज़ाद ने उसे काबुक से निकालकर छिपा लिया। नवाब के मुसाहबों ने बटेर की खूब तारीफें कीं। किसी ने कहा, कुरान पढ़ता था, किसी ने कहा, रोजे रखता था। सबने मिलकर नवाब को उल्लू बना लिया। मियां आज़ाद को ऊंटनी दी गयी कि जाकर बटेर ढूंढ़ लाओ। आज़ाद ऊंटनी लेकर हमारे यहां बहुत दिन तक रहे।

नवाब साहब मारे शर्म के गले जाते थे। उम्र भर में आज ही तो उन्हें खयाल आया कि, ऐसे मुसाहबों से नफरत करना लाजिम है। मुसाहबों ने लाख-लाख चाहा कि रंग जमायें, मगर नवाब और भी बददिमाग हो गये।

नवाब-वह भोला-भाला नवाब मैं ही हूं। आपने इस वक्त मेरी आंखें खोल दीं।

मुसाहब-गरीबपरवर, खुदा जानता है, हम लोग कट मरनेवाले हैं।

नवाब-बस, हम समझ गये।

हाफिज-हुजूर, तोप-दम कर दीजिए, जो जरा खता हो। हम लोग जान देने-वाले आदमी हैं।

नवाब-बस, चिढ़ाओ नहीं। अब कलई खुल गयी।

मुसाहब-खुदा जानता है।

नवाब-अब कसमें खाने की कुछ जरूरत नहीं। जो हुआ सो हुआ, आगे समझा जायगा।

अलारक्खी-जो मुझको मालूम होता, तो यह जिक्र ही कभी न करती।

नवाब-खुदा की कसम, तुमने मुझ पर और मेरे बाप पर, दोनों पर इस वक्त एहसान किया। तुम जिक्र न करतीं, तो मैं हमेशा अंधा बना रहता, तुमने तो इस वक्त मुझे जिला लिया।

मुसाहब-जिसने जो कह दिया, वही हुजूर ने मान लिया। बस, यही तो खराबी है। जरा हमारी खिदमतों को देखें, तो हमको मोतियों में तोलें-कसम खुदा की-मोतियों में तोलें।

नवाब-मेरा बस चले, तो तुम सबको काले पानी भेज दूं। और ऊपर से बातें

बनाते हो? बटेर भी रोजा रखते हैं?

हाफिज–खुदावंद, खुदा की खुदाई में क्या कुछ बईद है।

नवाब–चलो बस, खुदाई में दखल न दो। मालूम हुआ, बड़े दीनदार हो। मेरा बस चले, तो तुमको ऐसी जगह कत्ल करूं, जहां पानी तक न मिले।

हाफिज–अगर कोई कसूर साबित हो, तो कत्ल कर डालिए।

मुसाहब–खुदावंद, वह आज़ाद एक ही गुर्गा है, बड़ा दगाबाज।

अलारक्खी–बस, बस, उनको न कुछ कहिएगा। उनका-सा आदमी कोई हो तो ले !

नवाब–क्या शक है। खैर, अब भी सवेरा है, सस्ते छूटे।

अलारक्खी–छूटे तो सस्ते ! ऐ हां, यह कहां की नमकहलाली है कि बटेर को रोजादार और नमाजी बना दिया? जो सुनेगा, क्या कहेगा?

नवाब–नमकहलाल के बच्चे बने हैं !

मुसाहब–खुदावंद ! जो चाहे, कह लीजिए, हम लोग हुज्जत और तकरार थोड़े ही कर सकते हैं।

नवाब–अजी, तुम तो जहर दे दो, संखिया खिला दो। खूब देख चुका।

अलारक्खी–ऐसे बेईमानों से खुदा बचाये।

मुसाहब–हां, मसनद पर बैठकर जो चाहो कह लो। बाजार में झोटमझोट करती फिरती हो, और यहां आके बातें बनाती हो।

नवाब–बस, जबान बंद करो। मेरा दिल खट्टा हो गया।

मुसाहब–जो हम खतावार हों, तो हमारा खुदा हमसे समझे। जरा भी किसी बात में नमकहरामी की हो, तो हम पर आसमान फट पड़े। हुजूर चाहे न मानें, मगर दुनिया कहती है कि जैसे मुसाहब हुजूर को मिले हैं, वैसे बड़े खुशकिस्मतों को मिलते हैं।

नवाब–यों कहो कि जिसकी किस्मत फूट जाती है, उसको तुम जैसे गुर्गे मिलते हैं। बस, आप लोग बोरिया-बंधना उठाइए और चलते-फिरते नजर आइए।

मुसाहब–हुजूर, मरते दम तक साथ न छोड़ेंगे, न छोड़ेंगे।

हाफिज–यह दामन छोड़कर कहां जायें?

मिरजा–कहीं ठिकाना भी है?

हाफिज–ठिकाना तो सब कुछ हो जाय, मगर छोड़कर जाने को भी जब जी चाहे। जिसका इतने दिन तक नमक खाया, उससे भला अलग होना कैसे गवारा हो? मार डालिए, मगर हम तो इस ड्योढ़ी से नहीं जाने के। यह दर और यह सर। मरें भी तो हुजूर ही की चौखट पर, और जनाजा भी निकले, तो इसी दरवाजे से !

नवाब–बातें न बनाओ। जहां सींग समाय, चले जाओ।

हाफिज–हुजूर को खुदा सलामत रखे। जहां हुजूर का पसीना गिरे, वहां हमारा खून जरूर गिरेगा।

मगर नवाब साहब इन चकमों में न आये। खिदमतगारों को हुक्म दिया कि इन सबों को पकड़कर बाहर निकाल दो। अगर न जायें, तो ठोकर मारकर निकाल दो।

अब अलारक्खी का भी हाल सुनिए। उनको मियां नुदरत की बातों का ऐसा कलक हुआ, दिल पर ऐसी चोट लगी कि अपने कुल जेवर और असबाब बेचकर बस्ती के बाहर एक टीले पर फकीरों की तरह रहने लगी। कसम खा ली कि जब तक आज़ाद रूम से न लौटेंगे, इसी तरह रहूंगी।

अड़तालीस

जिस जहाज पर मियां आज़ाद और खोजी सवार थे, उसी पर एक नौजवान अंग्रेज अफसर और उसकी मेम भी थी। अंग्रेज का नाम चार्ल्स अपिल्टन था और मेम का वेनेशिया।

आज़ाद को उदास देखकर वेनेशिया ने अपने शौहर से पूछा—इस जेंटिलमैन से क्योंकर पूछें कि यह बार-बार लंबी सांसें क्यों ले रहा है?

साहब—तुम ऐसे-वैसे आदमियों को जेंटिलमैन क्यों कहती हो? यह तो निगर (काला आदमी) है।

मेम—निगर तो हम हबशी को कहते हैं। यह तो गोरा-चिट्टा, खूबसूरत आदमी है।

साहब—तो क्या खूबसूरत होने से कोई जेंटिलमैन हो जाता है? इंग्लैंड के सब सिपाही गोरे होते हैं, तो क्या इससे ये सब-के-सब जेंटिलमैन हो गये?

मेम—तुम तो अपनी दलील से आप कायल हो गये। जब गोरे चमड़े से कोई जेंटिलमैन नहीं होता, तो फिर तुम सब क्यों जेंटिलमैन कहलाओ? और इन लोगों को निगर क्यों कहो? वाह, अच्छा इंसाफ है !

इतने में जहाज के एक कोने से आवाज आयी कि ओ गीदी, न हुई करौली, नहीं तो लाश फड़कती होती।

मियां आज़ाद डरे कि ऐसा न हो, मियां खोजी किसी अंग्रेज से लड़ पड़ें, अफीम की लहर में किसी से बेवजह झगड़ पड़ें। करीब जाकर पूछा—यह क्या बिगड़े जी? किस पर गुल मचाया?

खोजी—अजी, जाओ भी, यहां शिकार हाथ से जाता रहा। वल्लाह, गिरफ्तार ही कर लिया था। गीदी को पाता, तो इतनी करौलियां लगाता कि छठी का दूध याद आ जाता। मगर पांव फिसल गया और वह निकल गया !

आज़ाद—तुम्हें एक आंच की हमेशा कसर रह जाती है। यह था कौन?

खोजी—था कौन, वही बहुरूपिया। और किसको पड़ी थी भला !

आज़ाद—बहुरूपिया !

खोजी—जी हां, बहुरूपिया ! बड़ा ताज्जुब हुआ आपको?

आज़ाद—भई हां, ताज्जुब कहीं लेने जाना है। क्या बहुरूपिया भी जहाज पर सवार हो लिया है? बड़ा लागू है भई?

खोजी–सवार नहीं हुआ, तो आया कहां से?

आज़ाद–क्या सोते हो खोजी, या पीनक में हो?

खोजी–खोजी की ऐसी-तैसी। फिर तुमने खोजी कहा हमको !

आज़ाद–माफ करना भई, कसूर हुआ।

खोजी–वाह, अच्छा कसूर हुआ ! किसी को जूते लगाइए और कहिए, कसूर हुआ। जब देखो, खोजी-खोजी।

आज़ाद–अच्छा जनाब ख्वाजा साहब, अब तो राजी हुए ! यह बहुरूपिया कहां से आ गया?

खोजी–अरे साहब, अब तो ख्वाब में भी आने लगा। अभी मैं सोता था, आप आ पहुंचे। मेरे हाथ में उस वक्त अफीम की डिबिया थी। फेंक के डिबिया और लेके कतारा जो पीछे झपटा, तो दो कोस निकल गया। मगर शामत यह आयी कि एक जगह जरा-सा पानी पड़ा था ! मेरी तो जान ही निकल गयी। फिसला, तो आरा रा रा धों !

आज़ाद–क्या गिर पड़े? जाओ भी !

ख़ोजी–बस, कुछ न पूछिए। मेग गिरना ऐसा मालूम हुआ, जैसे हाथी पहाड़ से गिरा। धड़ाम-धड़ाम !

आज़ाद–इसमें क्या शक है। आपके हाथ-पांव ही ऐसे हैं। वह तो कहिए, बड़ी खैरियत गुजरी !

खोजी–और क्या ! मगर जाता कहां है गीदी। रगेद के मारूं ! यहां पलटन में सूबेदारी कर चुके हैं।

मेम और साहब, दोनों मियां आज़ाद और खोजी की बातें सुन रहे थे। साहब तो उर्दू खूब समझते थे, मगर मेम साहब कोरी थीं। साहब ने तर्जुमा करके बताया, तो वेनेशिया भी मारे हंसी के लोट गयी ! यह इंच भर का आदमी, एक-एक माशे के हाथ-पांव और आपके गिरने से इतनी बड़ी आवाज हुई कि जैसे हाथी गिरे !

साहब–सिड़ी है कोई। जाने क्या वाही-तबाही बकता है।

मेम–तुम चुप रहो। हम इस जेंटिलनमैन से पूछते हैं, यह कौन पागल है।

साहब–अच्छा, मगर हिन्दोस्तानी बदतमीज होते हैं। तुम इससे बातें न करो।

मेम–अच्छा, तुम्हीं पूछो।

इस पर साहब ने उंगली के इशारे से आज़ाद को बुलाया। आज़ाद भला कब सुनने वाले थे। बोले ही नहीं। साहब पलटनी आदमी, चेहरा मारे गुस्से से लाल हो गया। खयाल हुआ कि वेनेशिया तालियां बजायेगी कि एक निगर तक मुखातिब न हुआ, बात का जवाब न दिया। वेनेशिया ने जब यह हालत देखी तो इठलाती और मुस्कराती हुई मियां आज़ाद की तरफ गयी। आज़ाद लेडियों से बोलने-चालने के आदी तो थे ही, एक खूबसूरत लेडी को आते देखा, तो टोपी उतारकर सलाम किया और पूछा–आप कहां तशरीफ ले जायेंगी?

मेम–घर जा रही हूं। यह ठिगना आदमी कौन है? खूब बातें करता है। हंसते-हंसते पेट में बल पड़-पड़ गये।

आज़ाद—जी हां, बड़ा मसखरा है।

मेम—चार्ली, यह तो कहते हैं कि वह बौना मसखरा है।

साहब—इसकी बातें बड़े मजे की होती हैं।

साहब का गुस्सा ठंडा हो गया। आज़ाद का डील-डौल देखकर डर गये। इधर-उधर की बातें होने लगीं। इतने में जहाज पर एक दिल्लगीबाज को सूझी कि आओ, खोजी को बनायें। दो-चार और शोहदे उससे मिल गये। जब देखा कि मियां खोजी पीनक में सो गये, तो एक आदमी ने दो लाल मिरचें उनकी नाक में डाल दीं। खोजी ने जो आंख खोली, तो मारे छींकों के बौखला गये। बावले कुत्ते की तरह इधर-उधर दौड़ने लगे। मेम और साहब तालियां बजा-बजाकर हंसने लगे।

आज़ाद—जनाब ख्वाजा साहब !

खोजी—बस, अलग रहिएगा, आक् छी !

आज़ाद—आखिर यह हुआ क्या? कुछ बताओ तो !

खोजी—चलिए, आपको क्या; चाहे जो कुछ हुआ। आ....छीं !

आज़ाद—यार, यह उसी बहुरूपिये की शरारत है।

खोजी—देखिए तो, कितनी करौलियां भोंकी हों कि आ....छीं ! याद ही तो करे—छी !

आज़ाद—मगर तुम तो गिर-गिर पड़ते हो मियां ! एक दफे जी कड़ा करके पकड़ क्यों नहीं लेते?

खोजी—नाक में मिरचें डाल दीं। गीदी ने !

आज़ाद—अबकी आप ताक में बैठे रहिए। बस, आते ही पकड़ लीजिए। मगर है बड़ा शरीर, सचमुच नाक में दम कर दिया।

खोजी—कुछ ठिकाना है ! नाक में मिरचें झोंकने की कौन-सी दिल्लगी है?

आज़ाद—और वया साहब, यह बेजा बात है।

खोजी—बेजा-वेजा के भरोसे न रहिएगा, मैं किसी दिन हाथ-पांव ढीले कर दूंगा। कहां के बड़े कड़ेखां हैं आप ! मैंने भी सूबेदारी की है।

आज़ाद—तो आप मेरे हाथ-पांव क्यों ढीले करते हैं? मैंने तो आपका कुछ बिगाड़ा नहीं !

खोजी—(आंखें खोलकर) अरे ! यह आप थे ! भई, माफ करना। बस, देखते जाओ, अब गिरफ्तार ही किया चाहता हूं गीदी को।

आज़ाद—लेकिन, जरा होशियार रहिएगा? बहुरूपिया गया जहन्नुम में, ऐसा न हो, कोई हजरत रुपये-पैसे गायब कर दे, बेवकूफ कहीं का ! अबे गधे, यहां बहुरूपिया कहां?

खोजी—बस, चोंच संभालिए, बंदा चलता है। दोस्ती हो चुकी। कुछ आपके गुलाम नहीं है। और सुनिए, हम गधे हैं। क्या जाने कितने गधे हमने बना डाले।

आज़ाद—खैर, यही सही। लेकिन जाइएगा कहां? यहां भी कुछ खुश्की है?

खोजी—अरे ओ जहाज के कप्तान ! जहाज रोक ले—अभी रोक ले

साहब—वह क्यों न सुनेगा। दो-चार हाथ करौली के लगाइए, तो फिर सुने।

इतने में हाजरी खाने का वक्त आया। आज़ाद ने बेतकल्लुफी के साथ उन दोनों के साथ खाना खाया। फिर तीनों टहलने लगे। आज़ाद को वेनेशिया की एक-एक छवि भाती थी। और वह हसीना कभी शोखी से इठलाती थी, कभी नाज के साथ मुस्कराती थी। इतने में खोजी ने यह शेर पढ़ा–

अगर तुम नहीं तो और बुते महजबीं सही,
हमको तो दिल्लगी से गरज है, कहीं सही।

आज़ाद ने जो यह शेर सुना, तो खोजी के पास आकर बोले–यह क्या गजब करते हो जी? इसका शौहर, शेर खूब समझ लेता है।

खोजी–वह गीदी इन इशारों को क्या जाने।

आज़ाद–तुम बड़े शरीर हो।

खोजी–क्यों उस्ताद, हमीं से यह उड़नघाइयां बताते हो, क्यों? सच कहना, हुस्नआरा के लगभग है कि नहीं। बम्बईवाली बेगम भी ऐसी ही शोख थी।

वेनेशिया ने खोजी को मुस्कराते देखा, तो उंगली के इशारे से बुलाया। खोजी तो रेशाखतमी हो गये। बहुत ऐंठते और अकड़ते हुए चले। गोया लंधौर पहलवान के भी चचा हैं। वाह, क्यों न हो। इस वक्त जरा पांव फिसले, तो दिल्लगी हो। मेम साहब के पास पहुंचे।

आज़ाद–टोपी उतारकर सलाम करो खोजी।

खोजी का लफ्ज सुनना था कि ख़्वाजा साहब का गुस्सा एक सौ बीस दरजे पर जा पहुंचा। बस, पलट पड़े और पलटते ही उलटे पांव भागने लगे।

आज़ाद–ओ गीदी, जो पलट गया, तो इतनी करौलियां भोंकी होंगी कि छठी का दूध याद आ गया होगा।

मेम–क्यों खोजी, क्या मुझसे खफा हो गये?

आज़ादा–क्यों भई, क्या शैतान ने फिर उंगली दिखा दी? मियां खोजी?

खोजी–खोजी पर खुदा की मार ! खोजी पर शैतान की फटकार ! एक दफा खोजी कहा, मैं खून पीकर रह गया, अब फिर दोहराया। खुदा जाने, कब का दिया इस गाढ़े वक्त काम आया। नहीं तो मारे करौलियों के भुट्टा-सा सिर उड़ा देता। लाख गया-गुजरा हूं, तो क्या हुआ, उम्र भर रिसालदारी की है, घास नहीं खोदी।

मेम–अच्छा, यह खोजी के नाम पर बिगड़े ! हम समझे, हमसे रूठ गये।

खोजी–नहीं मेम साहब, कैसी बात आप फरमाती हैं !

आज़ाद–जरा इनसे इनकी बीबी जान का हाल पूछिए। उसका नाम बुआ जाफरान है। देवनी है देवनी।

खोजी ने बुआ जाफ़रान का नाम सुना, तो रंग हो गया और सहमकर आंखें बंद कर लीं। आज़ाद ने जब वेनेशिया से सारा किस्सा कहा, तो मारे हंसी के लोट-लोट गयी।

उनचास

एक आलीशान महल की छत पर हुस्नआरा और उनकी तीनों बहनें मीठी नींद सो रही हैं। बहारबेगम की जुल्फ से अम्बर की लपटें आती थीं; रूहअफजा के घुंघर वाले बाल नौजवानों के मिजाज की तरह बल खाते थे; सिपहआरा की मेहंदी अजब लुत्फ दिखाती थी और हुस्नआरा बेगम के गोरे-गोरे मुखड़े के गिर्द काली-काली जुल्फों को देखकर धोखा होता था कि चांद ग्रहण से निकला है।

इधर तो ये चारों परियां बेखबर आराम में हैं, उधर शाहजादा हुमायूं फर अपने दोस्त मीर साहब से इधर-उधर की बातें कर रहे हैं।

मीर—कुछ अड़ोसी-पड़ोसियों का तो हाल कहिए। दोनों हसीनाएं नजर आती हैं या नहीं?

शाहजादा—अरे मियां, अब तो चौकड़ी है। एक से एक बढ़-चढ़कर। सब मस्त हैं। मगर बला की हयादार।

मीर—यह कहिए, गहरे हो उस्ताद !

शाहजादा—अजी, अभी ख्वाब देख रहा था एक महरी हुस्नआरा का खत लायी है। खत पढ़ रहा था कि आप बला की तरह आ पहुंचे। जी चाहता है, गोली मार दूं।

मीर—क्यों साहब, आपने तो कान पकड़े थे।

शाहजादा—दिल पर काबू भी तो हो?

मीर—कलंक का टीका लगाओगे? खुदा के लिए फिर तोबा करो। आखिर चारों छोकरियों में से आप रीझे किस पर? या चारों पर दिल आया है?

शाहजादा—चार निकाह तो जायज हैं !

मीर—तो यह क़हिए, चारों पर दांत हैं।

शाहजादा—नहीं मियां, हंसता हूं। दो ही तो कुंआरी हैं।

ये बातें हो ही रही थीं कि एकाएक महल्ले में चोर-चोर का गुल मचा। कोई चिराग जलाता है, कोई बीबी के जेवर टटोलता है। चारों तरफ खलबली मच गई। पूछने से मालूम हुआ कि बड़ी बेगम साहबा के घर में चोर घुसा था। शाहजादे ने जो ये बात सुनी, तो मीर साहब से बोले....भई मौका तो अच्छा है। चलो, इस वक्त जरा हो आए।

मीर—सोच लो, ऐसा न हो, पीछे मेरे माथे जाए। तुम तो शाहजादे बनकर छूट जाओगे, उल्लू मैं बनूंगा। आखिर वहां चल कर क्या कहोगे?

शाहजादा—अजी, कहेंगे क्या ! बस, अफसोस करेंगे। शायद इसी फेर में एक झलक मिल जाए। और नहीं, तो आवाज ही सुन लेंगे।

दोनों आदमी बेगम साहबा के मकान पर पहुंचे, तो क्या देखते हैं कि चालीस-पचास आदमी एक चोर को घेरे खड़े हैं और चारों तरफ से उस पर बेभाव की पड़ रही है। एक ने तड़ से चपत जमाई, दूसरे ने खोपड़ी पर धौल लगाई। चोर पर इतनी पड़ी कि बिलबिला गया। झल्ला-झल्लाकर रह जाता था। दो-तीन भले आदमी लोगों को समझा रहे थे, बस करो, अब तो खोपड़ी पिलपिली कर दी। क्या जमाते ही जाओगे?

एक–भाई, खूब हाथ गरमाए।

दूसरा–हम तो पोले हाथ से लगाते थे। जिसमें चोट कम आए, मगर आवाज खूब हो।

चोर–छूटूंगा तो एक-एक से समझूंगा। क्या करूं, बेबस हूं; वर्ना सबको पीसकर धर देता।

बहारबेगम के मियां भी खड़े थे। बोले–एक ही शैतान है।

शाहजादा–आखिर, यह आया किधर से?

नवाब साहब–मैं घूमकर कोई दस बजे के लगभग आया। खाना खाकर लेटा ही था कि नींद आ गई। यह गुल मचा, तो तलवार लेकर दौड़ पड़ा। अब सुनिए, मैं तो ऊपर से आ रहा हूं, और चोर नीचे से ऊपर जाता है। रास्ते में मुठभेड़ हुई। इसने छुरी निकाली, मगर मैंने भी तलवार का वह हाथ चलाया कि जरा हाथ ओछा न पड़े, तो भंडारा खुल जाए। फिर तो ऐसा सहमा कि होश उड़ गए। भागते राह न मिली। अब छत पर पहुंचा और चाहता था कि झपटकर नीचे कूद पड़े; मगर मेरी छेटी साली ने इस फुर्ती से रस्सी का फंदा बनाकर फेंका कि उलझकर गिरा। उठकर भागने को ही था कि मैं गले पर पहुंच गया और जाते ही छाप बैठा। औरतों ने दोहाई देना शुरू की; लेकिन मैंने न छोड़ा। आपने इस वक्त कहां तकलीफ़ फरमाई?

शाहजादा–मैंने कहा, चलकर देखूं क्या बात हुई। बार शुक्र है कि खैरियत हुई। मगर आपकी साली बड़ी दिलेर हैं। दूसरी औरत हो, तो डर जाय !

यहां तो यह बातें हो रही थीं, उधर अंदर चारों बहनों में भी जिक्र था। चारों हंस-हंसकर बातें कर रही थीं....

सिपहआरा–है-है बा जी, मैंने जब उसे काले-काले संडे को देखा, तो सन से जान निकल गई।

रूहअफजा–मुआ तंबाकू का पिंडा।

हुस्नआरा–वह तो खैर गुजरी कि संदूक हाथ से गिर पड़ा, नहीं तो सब मूल ले जाता।

सिपहआरा–बहारबेगम की चिड़चिड़ी सास लाखों ही सुनाती कि मेरी बहू के गहने सब बेच खाए।

बहारबेगम–चोर-चोर की भनक कान में पड़ी, तो मैं कुलबुलाकर चौंक पड़ी। भागी, तो जूड़ा भी खुल गया। अल्लाह जानता है, बड़ी मेहनत से बांधा था चलो खैर !

रूहअफजा–बस, हमारी बाजी को चोटी कंघी की फिक्र रहती है?

हुस्नआरा–जितना इनको इस बात का खयाल है, उतना हमारे खानदान-भर में किसी को नहीं है। जभी तो दूल्हा भाई इतने दीवाने रहते हैं।

बहारबेगम–चलो, बैठी रहो; छोटे मुंह बड़ी बात !

हुस्नआरा–दूल्हा भाई को इनके साथ इश्क है।

बहारबेगम–क्या टर-टर लगाई है नाहक !

अब दिल्लगी सुनिए कि मिरजा हुमायूं फर बाहर बैठे चुपके-चुपके सारी बातें सुन रहे थे। नवाब बेचारे कट-कट गए, मगर चुप। अंदर जाकर समझाएं, तो अदब

के खिलाफ; चुपके बैठे रहें, तो भी रहा नहीं जाता। जान अजाब में थी। खैर, हुक्का पीकर शाहजादा रुखसत हुए। उनके चले जाने के बाद नवाब साहब अंदर आए और बोले—तुम लोगों की भी अजब आदत है। जब देखोगी कि कोई गैर आदमी आके बैठे है, बस, तभी गुल मचाओगी। इस वक्त एक भलेमानस बैठे थे और यहां चुहल हो रही थे।

बहारबेगम—वह भलामानस निगोड़ा कौन था, जो इतने वक्त पंचायत करने आ बैठा?

रूहअफजा—तो अब कोई उनके मारे अपने घर में बात न करे? घोटकर मार न डालिए।

हुस्नआरा—हम भी तो सुनें, वह भलेमानस कौन थे?

नवाब—अजी, यही जो सामने रहते हैं, शाहजादे।

हुस्नआरा—तो आपने आकर हमसे कह क्यों न दिया? फिर हम काहे को बोलते?

बहारबेगम—अपनी खता न कहेंगे, दूसरों को ललकारेंगे।

नवाब—उस वक्त वहां से आने का मौका न था। मुझसे पूछा कि चोर को किसने पकड़ा। मैंने कहा, मेरी छोटी साली ने, तो बहुत ही हंसे।

नवाब साहब बाहर चले गए, तो फिर बातें होने लगीं—

सिपहआरा—जरा उसकी ढिठाई तो देखो कि चोर का नाम सुनते ही आ डटा। भला क्या वजह थी इसकी? ऐसा कहां का बड़ा रुस्तम था?

हुस्नआरा—तीन बजे के वक्त आप जो आए, तो क्यों आए !

रूहअफजा—मैं बताऊं ! उसको यह खबर न होगी कि दूल्हा भाई घर पर हैं। यह न होते, तो घर में घुस पड़ता।

सिपहआरा—काम तो शोहदों के जैसे हैं।

अब एक और दिल्लगी सुनिए। चोर आया, गुल-गपाड़ा हुआ, पकड़ा गया जमाने भर में हुल्लड़ मचा, मुहल्ला भर जाग उठा; चोर थाने पर पहुंचा; मगर बड़ी बेगम साहबा अभी तक खर्राटे ही ले रही हैं। जब जागीं, तो मामा से बोलीं—कुछ गुल-सा मचा था अभी?

मामा—हां, कुछ आवाज तो आई थी !

बेगम—जरी किसी से पूछो तो।

मामा—ऐ बीबी, पूछना इसमें क्या है? भेड़िया-वेड़िया आया होगा।

बेगम—मैंने आज हाथी को ख्वाब में देखा है; अल्लाह बचाए।

इतने में चोर के आने की खबर मिली। तब तो बेगम साहबा के होश उड़ गए। मामा को भेजा कि जा पूछ, कुछ ले तो नहीं गया।

हुस्नआरा—अम्मांजान बहुत जल्द जागीं; क्या तू भी घोड़े बेचकर सोई थी ! अल्लाह री नींद !

मामा—जरी आंख लग गई थीं। मगर कुछ गुल की आवाज जरूर आई थी।

हुस्नआरा—मुहल्ला भर जाग उठा, तुम्हारे नजदीक कुछ ही कुछ गुल था। ठीक ! जाके अम्मां से कह दे कि चोर आया, मगर जाग हो गई।

सिपहआरा—ऐ, काहे के वास्ते बहकती हो। मामा, तू जाके सो रह, शोर-गुल

कहीं कुछ न था, कोई सोते में बर्रा उठा होगा।

हुस्नआरा–नहीं, मामा, यह दिल्लगी करती हैं। चोर आया था।

मामा–ऐ, गया चूल्हे में निगोड़ा चोर ! इधर आने का रुख करे, तो आंखें ही फूट जाएं। क्या हंसी-ठट्ठा है।

सिपहआरा–देखो तो सही भला !

मामा–अभी बेगम साहबा सुन लें, तो दुनिया सिर पर उठा लें।

मामा ने जाकर बेगम से कहा–हुजूर, कुछ है न वै, बेकार को जगाया। न भेड़िया, न चोर, कोई सोते-सोते बर्रा उठा था।

बेगम–जरा बाहर जाकर तो पूछ कि यह गुल कैसा था?

महरी–बीवी, मैं अभी बाहर से आई हूं, कोठे पर कलमुंहा आया था। कोठरी का कुलुफ तोड़कर जब संदूक उठाया, तो जाग हो गई। इतने में नवाब साहब कोठे पर से नंगी तलवार लिए दौड़े आए।

बेगम–नवाब साहब के दुश्मनों को तो कहीं चोट-ओट नहीं आई?

महरी–ना बीबी, एक फांस तक तो चुभी नहीं।

बेगम–चोर कुछ ले तो नहीं गया।

महरी–एक झंझी तक नहीं।

बेगम–चोर अब कहां है?

महरी–खादिमहुसैन थाने पर ले गया।

मामा–अब चक्की पीसनी पड़ेगी।

बेगम–तू तो कहती थी कि कोई सोते-सोते बर्रा उठा था। झूठी जमाने भर की ! चल, जा, हट !

अब थाने का हाल सुनिए। थानेदार नदारद; जमादार शराब पिए मस्त; कांस्टेबिल अपनी-अपनी ड्यूटी पर। एक कांस्टेबिल पहरे पर खड़ा सो रहा था। खादिमहुसैन ने बहुत गुल मचाया। तब जाके हजरत की नींद खुली। बिगड़े कि मुझे जगाया क्यों? चोर को छोड़ दो।

खादिमहुसैन–वाह, छोड़ देने की एक ही कही। मैं भी थाने में मुहर्रिर रह चुका हूं!

कांस्टेबिल–न छोड़ोगे तुम?

खादिमहुसैन–होश की दवा करो मियां ! इसके साथ तुमको भी फंसाऊं तो सही।

कांस्टेबिल–(चोर से) तुझे इन्होंने अपने यहां के घंटे रखा था?

चोर–पकड़ के बस यहां ले आये?

कांस्टेबिल–दुत गौखे ! अबे, तू कहना है कि मैं राह-राह चला जाता था, इनसे मुझसे लागडाट थी। इन्होंने घात पाकर मुझको पकड़ लिया, खूब पीटा और चार घंटे तक अस्तबल की कोठरी में बंद रखा।

चोर–लागडाट क्या बताऊं?

कांस्टेबिल–कह देना कि मेरी जोरू पर यह बुरी निगाह डालते थे। बस, लागडाट हो गई।

चोर–मगर मेरी ज़ोरू तो चार बरस हुए, एक के साथ निकल गई।

कांस्टेबिल–बस, तो बात बन गई। कह देना, इन्हीं की साजिश से निकली थी। तो इन पर दो जुर्म कायम होंगे। एक यह कि तुमको झूठ-मूठ फांस लिया, दूसरे जबरदस्ती कैद रखा।

खादिमहुसैन–तुम्हारी बातों पर कुछ हंसी आती है, कुछ गुस्सा।

कांस्टेबिल–जब बड़ा घर देखोगे, तब हंसी का हाल खुल जायगा।

खादिमहुसैन–हमारे घर में चोरी हो और हमीं फंसें?

खैर कांस्टेबिल साहब रोजनामचा लिखने बैठे। खादिमहुसैन ने सारी दास्तान बयान की। जब उसने यह कहा कि नवाब साहब तलवार लेकर दौड़े, तो कांस्टेबिल ने कलम रोक दिया और कहा–जरा ठहरो, तलवार का लाइसेंस उनके पास है?

खादिमहुसैन–उनके साथ तो बीस सिपाही तलवार बांधे निकलते हैं। तुम एक लाइसेंस लिए फिरते हो।

आखिर रिपोर्ट खतम हुई और खादिम अपने घर आया।

पचास

एक दिन मियां आज़ाद मिस्टर और मिसेज अपिल्टन के साथ खाना खा रहे थे कि एक हंसोड़ आ बैठे और लतीफे कहने लगे। बोले–अजी, एक दिन बड़ी दिल्लगी हुई। हम एक दोस्त के यहां ठहरे हुए थे। रात को उसके ख़िदमतगार की बीबी दस अंडे चट कर गई। जब दोस्त ने पूछा, तो खिदमतगार ने बिगड़ी बात बनाकर कहा क़ि बिल्ली खा गई। मगर मैंने देख लिया था। जब बिल्ली आई तो वह औरत उसे मारने दौड़ी। मैंने कहा–बिल्ली को मार न डालना, नहीं तो फिर अंडे हजम न होंगे।

आज़ाद–बात तो यही है। खाय कोई, नाम बिल्ली का बद

अपिल्टन–आप शादी क्यों नहीं करते?

हंसोड़–शादी करना तो आसान है, मगर बीबी का संभालना मुश्किल। हां, एक शर्त पर हम शादी करेंगे। बीवी दस बच्चों की मां हो।

मेम–बच्चों की कैद क्यों की?

हंसोड़–आप नहीं समझीं। अगर जवान आई, तो उसके नखरे उठाते-उठाते नाक में दम आ जायगा; अधेड़ बीबी हुई तो नखरे न करेगी और बच्चे बड़े काम आयेंगे।

आज़ाद–वह क्या?

हंसोड़–कहत के दिनों में बेच लेंगे।

इतने में क्या देखते हैं मियां खोजी लुढ़कते हुए चले आते हैं। एक सूखा कतारा हाथ मे है।

आज़ाद–आइए। बस, आप ही कसर थी।

खोजी–मुझे बैठे-बैठे खयाल आया कि किसी से पूंछूं तो कि यह समुंदर है क्या चीज और किसकी दुआ से बना है?

हंसोड़—मैं बताऊं। अगले जमाने में एक मुल्क था घामड़-नगर।

खोजी—जरी ठहर जाइएगा। वहां अफीम भी बिकती थी?

हंसोड़—उस मुल्क के बाशिंदे बड़े दिलेर होते थे, मगर कद के छोटे। बिल्कुल टेनी मुर्गे के बराबर।

खोजी—(मूंछों पर ताव देकर) हां-हां छोटे कद के आदमी तो दिलेर होते ही हैं।

हंसोड़—और कोई बगैर करौली बांधे घर से न निकलता था।

खोजी—(अकड़कर) क्यों मियां आज़ाद, अब न कहोगे?

हंसोड़—मगर उन लोगों में एक ऐब था, सब-के-सब अफीम पीते थे।

खोजी—(त्योरियां चढ़ाकर) ओ गीदी !

आज़ाद—हैं, हैं। शरीफ आदमियों से यह बदजबानी !

खोजी—हम तो सिर से पांव तक फुंक गए, आप शरीफ लिए फिरते हैं।

हंसोड़—वहां की औरतें बड़ी गरांडील होती थीं। जहां मियां जरा बिगड़े, और बीबी ने बगल में दबाकर बाजार में घसीटा।

खोजी—अहाहा, सुनते हो चोर। वह बहुरूपिया वहीं का था। अब तो उस गीदी का मकान भी मिल गया। चचा बना कर छोड़ूं, तो सही।

हंसोड़—वे सब रिसालदारी करते थे।

खोजी—और वहां क्या-क्या होता था? उस मुल्क के आदमियों की तसवीरें भी आपके पास हैं?

हंसोड़—थीं, तो मगर अब नहीं रहीं। बस, बिलकुल तुम्हारे ही से हाथ-पांव थे। करारे जवान। पौंड़े बहुत खाते थे।

खोजी—ओहोहो ! वे सब हमारे ही बाप-दादा थे। देखो भाई आज़ाद, अब यह बात अच्छी नहीं। वहां से लम्बे-चौड़े वादे करके लाए थे कि करौली जरूर ले लेंगे, और यहां साफ मुकर गए। अब हमें करौली मंगा दे, तो खैरियत है, नहीं तो हम बिगड़े जायेंगे। वल्लाह, कौन गीदी दम भर ठहरे यहां।

आज़ाद—और यहां से आप जायेंगे कहां? जहन्नुम में?

वेनेशिया—कुछ रुपये भी हैं? जहाज का किराया कहां से दोगे?

आज़ाद—मैं इनका खजांची हूं। यह घर जाय, किराया मैं दे दूंगा।

हंसोड़—इस खजांची के लफ्ज पर हमें एक लतीफा याद आया। शादी के पहले नौजवान लेडियां अपने आशिक को अपना खजाना कहती हैं। शादी होने के बाद उसे खजांची कहने लगती हैं। खजांची के खजांची और मियां के मियां।

वेनेशिया—अच्छा हुआ, तुम्हारी बीबी चल बसीं; नहीं तो तुम्हारी किफायत उनकी जान ही ले लेती।

हंसोड़—अजीब औरत थी, शादी के बाद ऐसी रोनी सूरत बनाए रहती थी कि मालूम होता था, आज बाप के मरने की खबर आई है। दो बरस के बाद हमसे छह महीने के लिए जुदाई हुई। अब जो देखता हूं, तो और ही बात है। बात-बात पर मुस्कराना और हंसना। बात हुई और खिल गई। मैंने पूछा, क्या तुम वही हो जो नाक-भौं चढ़ाए रहती थीं? मुस्किराकर कहा—हां, हूं, तो वही ! मैंने कहा—खैर, काया पलट

तो हुई। हंस कर बोली—वाह इसमें ताज्जुब काहे का। एक दिन मुझे खयाल आ गया, बस, तब से अब हर वक्त हंसती हूं। तब तो मैंने अपना मुंह पीट लिया। रोनी सूरत बना कर बोला—हम तो खुश हुए थे कि अब हमसे तुमसे खूब बनेगी, मगर मालूम हो गया कि तुम्हारी हंसी और रोने, दोनों का एतबार नहीं। अगर तुम्हें इसी तरह बैठे-बैठे किसी दिन खयाल आ गया कि रोना अच्छा, तो फिर ही शुरू कर दोगी।

आज़ाद—मुझे भी एक बात याद आ गई। हमारे मुहल्ले में एक ख्वाजा साहब रहते थे। उनके एक लड़की थी, इतनी हसीन थी कि चांद भी शरमा जाए। बात करते वक्त बस यही मालूम होता था कि मुंह से फूल झड़ते हैं। उसकी शादी एक गंवार जाहिल से हुई, जो इतना बदसूरत था कि उससे बात करने को भी जी न चाहता था। आखिर लड़की इसी गम में कुढ़-कुढ़ कर मर गई।

इक्यावन

कई दिन तक तो जहाज खैरियत से चला गया, लेकिन पेरिस के करीब पहुंचकर जहाज के कप्तान ने सबको इत्तिला दी कि एक घंटे में बड़ी सख्त आंधी आने वाली है। यह खबर सुनते ही सबके होश-हवास गायब हो गए। अक्ल ने हवा बतलाई, आंखों में अंधेरी छाई, मौत का नक्शा आंखों के सामने फिरने लगा। तुर्रा यह कि आसमान फकीरों के दिल की तरह साफ था, चांदनी खूब निखरी हुई, किसी को सानगुमान भी नहीं हो सकता था कि तूफान आएगा; मगर बैरोमीटर से तूफान की आमद साफ जाहिर थी। लोगों के बदन के रोंगटे खड़े हो गए, जान के लाले पड़ गए; या खुदा, जाएं तो कहां जाए और इस तूफान से नजात क्योंकर पाए? कप्तान के भी हाथ-पांव फूल गए और उसके नायब भी सिट्टी-पिट्टी भूल गए। सीढ़ियों से तख्ते पर आते थे और घबराकर फिर ऊपर चढ़ जाते थे। कप्तान लाख-लाख समझाता था, मगर किसी को उसकी बात का यकीन न आता था—

किसी तरह से समझता नहीं दिले नाशाद;
वही है रोना, वही चीखना, वही फरियाद।

इतने में हवा ने वह जोर बांधा कि लोग त्राहि-त्राहि करने लगे। कप्तान ने एक पाल तो रहने दिया, और जहाज को खुदा की राह में छोड़ दिया। लहरों की यह कैफियत कि आसमान से बातें करती थीं। जहाज झोंके खाकर गेंद की तरह इधर से उधर उछलता था। सब-के-सब जिंदगी से हाथ धो बैठे, अपनी जानों को रो बैठे। बच्चे सहमकर अपनी मांओं से चिपटे जाते थे। कोई औरत मुंह ढंककर रोती थी कि उम्र भर की कमाई इस समुद्र में गंवाई। कोई अपने प्यारे बच्चे को छाती से लगाकर कहती—बेटा, अब हम रुखसत होते हैं। पर वह नादान मुसकिराता था और इस भोलेपन से मां के दिल पर बिजलियां गिराता था। किसी को मारे खौफ के चुप लग गई थी, किसी के हाथ-पांव में कंपकंपी थी। कोई समुद्र में कूद पड़ने का इरादा करके

रह जाता था, कोई बैठा देवताओं को मनाता था। क्या बूढ़े, क्या जवान, सबकी अक्ल गुल थी। वेनेशिया के चेहरे का रंग काफूर हो गया। हंसोड़ के दिल में हंसी का खयाल कोसों दूर हो गया। मियां आज़ाद का चेहरा जर्द, अपिल्टन के हाथ-पांव सर्द। मियां आज़ाद सोचने लगे, या खुदा, यह किस मुसीबत से दो-चार किया, माशूक के एवज मौत को गले का हार किया ! जी लगाने की खूब सजा पाई, इश्क की धुन में जान भी गंवाई। हमारी हड्डियां तक गल जाएगी; पर हुस्नआरा हमारी खबर भी न पाएगी। सिपहआरा बार-बार फाल देखेंगी कि आज़ाद कब मैदान से सुर्खरू होकर आयेंगे और हम कब मसजिद में घी का चिराग जलाएंगे; मगर आज़ाद की किश्ती गोते खाती है और जरा देर में तह की खबर लाती है।

जहाज में तो यह कुहराम मचा था, मगर खोजी लंबी ताने सो ही रहे थे। इस नींद पर खुदा की मार, इस पीनक पर शैतान की फटकार ! आज़ाद ने जगाया कि ख्वाजा साहब, उठिए, तूफान आया है। हजरत ने लेटे ही लेटे भुनभुनाकर फरमाया कि चुप गीदी, हमने ख्वाब में बहुरूपिया पकड़ पाया है। तब तो आज़ाद झल्लाए और कसकर एक लात लगाई। खोजी कुलबुलाकर उठ बैठे और समुद्र की भयानक सूरत देखी, तो कांप उठे।

कप्तान खूब समझता था कि हालत हर घड़ी नाजुक होती जाती है, लेकिन पुराना आदमी था, कलेजा मजबूत किए हुए था। इससे लोगों को तसल्ली होती थी कि शायद जान बच निकले। सामने पेरिस को जंजीरा नजर आता था; मगर वहां तक पहुंचना मुहाल था। सबके सब दुआ कर रहे थे कि जहाज किसी तरह इस टापू तक पहुंच जाए। मरने की तैयारियां हो रही थीं। इतने में आज़ाद ने क्या देखा कि अपिल्टन वेनेशिया का हाथ पकड़कर तख्ते पर खड़े रो रहे हैं। आज़ाद को देखते ही वेनिशया ने कहा—मिस्टर आज़ाद, रुखसत ! हमेशा के लिए रुखसत !

आज़ाद—रुखसत !

हंसोड़—है-है ! लो, अब भंवर में जहाज आ गया।

यह सुनकर औरतों ने वह फरियाद मचाई कि लोगों के कलेजे दहल गए।

अपिल्टन--बस, इतनी ही दुनिया थी!

आज़ाद—हां, इतनी ही दुनिया थी !

खोजी—भई, आज़ाद, खुदा गवाह है, मैं इस वक्त अफीम के नशे में नहीं ! अफसोस, तुम्हारी जान जाती है, हुस्नआरा समझेंगी कि आज़ाद ने धोखा दिया। हाय आज़ाद, तेरी जवानी मुफ्त गई।

एकाएक जहाज तीन बार घूमा और हवा के झोंके से कई गज के फासले पर जा पहुंचा। अब लाइफबोट के सिवा और कोई तदबीर न थी। जहाज डूबने ही को था, दस फुट से ज्यादा पानी उसमें समा गया था। लाइफ-बोट समुद्र में उतारे गए और आज़ाद लड़कों और औरतों को उठा-उठाकर लाइफ-बोट में बैठाने लगे। उनकी अपनी जान खतरे में थी, मगर इसकी उन्हें परवाह न थी। जब वह वेनेशिया के पास पहुंचे, तो उसने इनसे हाथ मिलाया और अपिल्टन और वह, दोनों लाइफ-बोट में कूद पड़े। आज़ाद की दिलेरी पर लोग हैरत से दांतों तले उंगली दबाते थे। लोगों

को यकीन हो गया था कि यह कोई फरिश्ता है, जो बेगुनाहों की जान बचाने के लिए आया है।

टापू के वाशिंदे किनारे पर खड़े रोशनी कर रहे थे कि शोले उठें और जहाज के लोग समझ जाएं कि जमीन करीब है। सैकड़ों आदमी गुल मचाते थे, तालियां बजाते थे। कुछ लोग रो रहे थे। मगर कुछ ऐसे भी थे, जो दिल में खिले जाते थे कि अब पौ-बारह है।

एक—बस, अब जहाज डूबा। तड़के ही से लैस होकर आ डटूंगा।

दूसरा—हमें एक बार जवाहिरात का एक संदूक मिल गया।

तीसरा—अजी, हमने इसी तरह बहुत-कुछ पैदा किया।

चौथा—अजी, क्या बकते हो? कुछ तो खुदा से डरो। वे सब तो मुसीबत में हैं, और तुम लोगों को लूट की धुन सवार है। शर्म हो, तो चुल्लू-भर पानी में डूब मरो।

मियां खोजी बार-बार हिम्मत बांधकर लाइफ-बोट की तरफ जाते और डरकर लौट आते थे। आखिर आज़ाद ने उन्हें भी घसीटकर लाइफ-बोट में पहुंचाया। वहां जाते ही उन्होंने गुल मचाया कि अफीम की डिबिया तो वहीं रह गई ! मियां जरी कोई लपक के हमारी डिबिया ले आए। आज़ाद ने कहा—मियां तुम भी कितने पागल हो? यहां जानों के लाले पड़े हैं, तुम्हें अपनी डिबिया ही की फिक्र है।

लाइफ-बोट कुल तीन थे उनमें मुश्किल से पचास-साठ आदमी बैठ सकते थे। लेकिन हर शख्स चाहता था कि मैं भी लाइफ-बोट में पहुंच जाऊं। कप्तान ने यह हालत देखी, तो जंजीरें खोल दीं। किश्तियां बह निकलीं। अब बाकी आदमियों की जो हालत हुई, वह बयान में नहीं आ सकती। अगर कोई फोटोग्राफर इन बदनसीबों की तसवीर उतारता, तो बड़े से बड़े संगदिल भी उसे देखकर सिर धुनते। मौत चिमटी जाती है, और मौत के पंजों में फंसी हुई जान फड़फड़ा रही है। मगर जान बड़ी प्यारी चीज है। लोग खूब जानते थे कि जहाज के डूबने में देर नहीं, लाइफ-बोट भी दूर निकल गए। मगर फिर भी यह उम्मीद है, शायद किसी तरह बच जाए। दो बदनसीब बहनें यों बातें कर रही थीं—

बड़ी बहन—कूद पड़ो पानी में। शायद बच जाएं।

छोटी बहन—लहरें कहीं न कहीं पहुंचा ही देंगी।

बड़ी—अम्मां सुनेंगी तो क्या करेंगी?

छोटी—मैं तो कूदती हूं।

बड़ी—क्यों जान देती है?

एक औरत ने अपने प्यारे बच्चे को समुद्र में फेंक दिया और कहा—यह लड़का तेरे सिपुर्द करती हूं।

यह कहकर खुद भी गिर पड़ी।

अब सुनिए: जिस लाइफ-बोट पर वेनेशिया और अपिल्टन थे, वह हवा के झोंके से पेरिस से दूर हट गया। वेनेशिया ने कहा—अब कोई उम्मेद नहीं।

अपिल्टन—खुदा पर भरोसा रखो।

वेनेशिया—या खुदा, हमें बचा ले। हम बेगुनाह हैं।

अपिल्टन—सब्र, सब्र !

वेनिशिया—लो, आज़ाद की किश्ती भी इधर ही आने लगी। अब कोई न बचेगा।

दोनों किश्तियां थोड़ी ही फासले पर जा रही थीं, इतने में एक लहर ने अपिल्टन की किश्ती को ऐसा झोंका दिया कि वह नीचे-ऊपर होने लगी और तीन आदमी समुद्र में गिर पड़े। अपिल्टन भी उनमें से एक थे। उनके गिरते ही वेनेशिया ने एक चीख मारी और बेहोश हो गईं। आज़ाद ने यह हाल देखा, तो फौरन बोट पर से कूद पड़े और जान हथेली पर लिए हुए, लहरों को चीरते, अपिल्टन की मदद को चले। इधर अपिल्टन का कुत्ता भी पानी में कूदा और उनके सिर के बाल दांतों से पकड़े ऊपर लाया। मियां आज़ाद भी तैरते हुए जा पहुंचे और अपिल्टन को पकड़ लिया। उसी वक्त किश्ती भी आ पहुंची और लोगों ने मदद देकर अपिल्टन को खींच लिया। मगर किश्ती इतनी तेजी से निकल गई कि आज़ाद उस पर न आ सके। अब उनके लिए मौत का सामना था। मगर वह कलेजा मजबूत किए टापू की तरफ तैरते चले जाते थे। टापू वालों ने उन्हें आते देखा, तो और भी हौसला बढ़ाया, और हिम्मत दिलाई। सबके सब दुआ कर रहे थे कि या खुदा, इस जवान को बचा। ज्यों ही आज़ाद टापू के करीब पहुंचे, रस्सियां फेंकी गईं और आज़ाद ऊपर आए। सबने उनकी पीठ ठोंकी। वेनेशिया ने मियां आज़ाद से कहा—तुम न होते तो, मैं कहीं की न रहती। तुम्हारा एहसान कभी न भूलूंगी।

अपिल्टन—भाई, देखना, भूल न जाना। टर्की से खत लिखते रहना।

आज़ाद—जरूर, जरूर !

वेनेशिया—आज़ाद, जैसे बहन को अपने भाई से मुहब्बत होती है, वैसे ही मुझको तुमसे मुहब्बत है।

आज़ाद—मैं जहां रहूंगा, आप लोगों से जरूर मिलूंगा।

खोजी—यार, हमारी अफीम की डिबिया जहाज ही में रह गई। देखें, किस खुशनसीब के हाथ लगती है।

सब लोग यह जुमला सुनकर खिलखिलाकर हंस पड़े।

बावन

माल्टा में आर्मीनिया, अरब, यूनान, स्पेन, फ्रांस सभी देशों के लोग हैं। मगर दो दिन से इस जजीरे में एक बड़े गरांडील जवान का गुजर हुआ है। कद कोई आध गज का, हाथ-पाव दो-दो माशे के; हवा जरा तेज चले, तो उड़ जायं। मगर बात-बात पर तीखे हुए जाते हैं। किसी ने जरा तिरछी नजर से देखा, और आपने करौली सीधी की। न दीन की फिक्र थी, न दुनिया की, बस अफीम हो, और चाहे कुछ हो या न हो।

आज़ाद ने कहा—भई, तुम्हारा यह फिकरा उम्र भर न भूलेगा कि देखें हमारी अफीम की डिबिया किस खुशनसीब के हाथ लगती है।

खोजी-फिर, उसमें हंसी की क्या बात है? हमारी तो जान पर बन आयी और आपको दिल्लगी सूझती है। जहाज के डूबने का किस मर्दक को रंज हो। मगर अफीम के डूबने का अलबत्ता रंज है। दो दिन से जम्हाइयों पर जम्हाइयां आती हैं पैसे लाओ, तो देखूं, शायद कहीं मिल जाय।

मियां आज़ाद ने दो पैसे दिये और आप एक दूकान पर पहुंचकर बोले-अफीम लाना जी?

दूकानदार ने हाथ से कहा कि हमने समझा नहीं।

खोजी-अजब जांगलू है ! अबे, हम अफीम मांगते हैं।

दूकानदार हंसने लगा।

खोजी-क्या फटी जूती की तरह दांत निकालता है ! लाता है अफीम कि निकालूं करौली।

इतने में मियां आज़ाद पहुंचे और कहा-यहां क्या खरीदारी होती है?

खोजी-अजी, यहां तो सभी जांगलू ही जांगलू रहते हैं। घंटे भर से अफीम मांग रहा हूं, सुनता ही नहीं।

आज़ाद-फिर कहने से तो आप बुरा मानते हैं। भला यह बारूद बेचता है या अफीम? बिल्कुल गौखे ही रहे !

खोजी-अगर अफीम का यही हाल रहा, तो तुर्की तक पहुंचना मुहाल है।

आज़ाद-भई, हमारा कहना मानो। हमें टर्की जाने दो और तुम घर जाओ।

खोजी-वाह वाह, अब मैं साथ छोड़नेवाला नहीं। और मैं चला जाऊंगा, तो तुम लड़ोगे किसके बिरते पर?

आज़ाद-बेशक, आप ही के बिरते पर तो मैं लड़ने जाता हूं न?

खोजी-कौन? कसम खाके कहता हूं, जब सुनिएगा; यही सुनिएगा कि ख्वाजा साहब ने तोप में कीलें लगा दी।

आज़ाद-जी, इसमें क्या शक है।

खोजी-शक-वक के भरोसे न रहिएगा ! अकेली लकड़ी चूल्हे में भी नहीं जलती। जिस वक्त ख्वाजा साहब अरबी घोड़े पर सवार होंगे और अकड़कर बैठेंगे, उस वक्त अच्छे-अच्छे जंडैल-कंडैल झुक-झुककर सलाम करेंगे।

इतने में एक हब्शी सामने से आ निकला। करारा जवान, मछलियां भरी हुई, सीना चौड़ा। खोजी ने जो देखा कि एक आदमी अकड़ता हुआ सामने से आ रहा है, तो आप भी ऐंठने लगे। हब्शी ने करीब आकर कंधे से जरा धक्का दिया, तो मियां खोजी ने बीस लुढ़कनियां खायीं। मगर बेहया तो थे ही, झाड़-पोंछकर उठ खड़े हुए, और हब्शी को ललकारकर कहा-अबे ओ गीदी, न हुई करौली इस वक्त। जरा मेरा पैर फिसल गया, नहीं तो वह पटकनी देता कि अंजर-पंजर ढीले हो जाते !

आज़ाद-तुम क्या, तुम्हारा गांव भर तो इसका मुकाबला कर ले !

खोजी-अच्छा, लड़ाकर देख लो न ! छाती पर न चढ़ बैठूं, तो ख्वाजा नाम नहीं। कहो, ललकारूं जाकर।

आज़ाद-बस, जाने दीजिए। क्यों हाथ-पांव के दुश्मन हुए हो !

दूसरे दिन आज़ाद वहां से रवाना हुआ। आज़ाद को बार-बार हुस्नआरा की याद आती थी। सोचते थे, कहीं लड़ाई में मारा गया, तो उससे मुलाकात भी न होगी। खोजी से बोले—क्यों जी, हम अगर मर गये, तो तुम हुस्नआरा को हमारे मरने की खबर दोगे, या नहीं?

खोजी—मरना क्या हंसी-टट्ठा है? मरते हैं हम जैसे दुबले-पतले बूढ़े अफीमची कि तुम ऐसे हट्टे-कट्टे जवान?

आज़ाद—शायद हमीं तुमसे पहले मर जायं?

खोजी—हम तुमको अपने से पहले मरने ही न देंगे। उधर तुम बीमार हुए, और हमने इधर जहर खाया।

आज़ाद—अच्छा, जो हम डूब गये?

खोजी—सुनो मियां, डूबनेवाले दूसरे ही होते हैं। वह समुंदर में डूबने नहीं आया करते, उनके लिए एक चुल्लू काफी होता है।

आज़ाद—जरा देर के लिए मान लो कि हम मर गये तो इत्तिला दोगे न?

खोजी—पहले तो हम तुमसे पहले ही डूब जायेंगे, और अगर बदनसीबी से बच गए, तो जाकर कहेंगे—आज़ाद ने शादी कर ली, और गुलछर्रे उड़ा रहे हैं।

आज़ाद—तब तो आप दोस्ती का हक खूब अदा करेंगे !

खोजी—इसमें हिकमत है।

आज़ाद—क्या है, हम भी सुनें?

खोजी—इतना भी नहीं समझते। अरे, मियां, तुम्हारे मरने की खबर पाकर हुस्नआरा की जान पर बन आएगी, वह सिर पटक-पटककर दम तोड़ देगी, और जो यह सुनेगी कि आज़ाद ने दूसरी शादी कर ली, तो उसे तुम्हारे नाम से नफरत हो जायगी, और रंज तो पास फटकने भी न पाएगा। क्यों, है न अच्छी तरकीब?

आज़ाद—हां, है तो अच्छी !

खोजी—देखा, बूढ़े आदमी डिबिया में बंद कर रखने के काबिल होते हैं। तुम लाख पढ़ जाओ, फिर लौंडे ही हो हमारे सामने। मगर तुम्हारी आजकल यह क्या हालत है? कोई किताब पढ़कर दिल क्यों नहीं बहलाते?

आज़ाद—जी उचाट हो रहा है। किसी काम में जी नहीं लगता।

खोजी—तो खूब सैर करो। या, पहले तो हमें उम्मीद ही नहीं कि हिन्दोस्तान पहुंचें, लेकिन जिंदा बचे, और हिन्दोस्तान की सूरत देखी, तो जमीन पर कदम न रखेंगे। लोगों से कहेंगे, तुम लोग क्या जानो, माल्टा कहां है? खूब गप्पें उड़ाएंगे।

यों बातें करते हुए दोनों आदमी एक कोठे में गए। वहां कहवे की दुकान थी। आज़ाद ने एक आदमी के हाथ अफीम मंगाई। खोजी ने अफीम देखी तो खिल गए। वहीं घोली और चुस्की लगाई। वाह आज़ाद, क्यों न हो, यह एहसान उम्र-भर न भूलूंगा। इस वक्त हम भी अपने वक्त के बादशाह है।

फिक्र दुनिया की नहीं रहती है मख्वारों में,
गम गलत हो गया जब बैठ गए यारों में।

उस दूकान में बहुत से अखबार मेज पर पड़े थे। आज़ाद एक किताब देखने

लगे। मालिक-दूकान ने देखा, तो पूछा—कहां का सफर है?

आज़ाद—टर्की जाने का इरादा है।

मालिक—वहां हमारी भी कोठी है। आप वहीं ठहरिएगा।

आज़ाद—आप एक खत लिख दें, तो अच्छा हो।

मालिक—खुशी से। मगर आजकल तो वहां जंग छिड़ी है।

आज़ाद—अच्छा, छिड़ गई?

मालिक—हां, छिड़ गई। लड़ाई सख्त होगी। लोहे से लोहा लड़ेगा।

जब आज़ाद यहां से चलने लगे, तो मालिक ने अपने लड़के के नाम खत लिखकर आज़ाद को दिया। दोनों आदमी वहां से आकर जहाज पर बैठे।

तिरपन

रात के ग्यारह बजे थे, चारों बहनें चांदनी का लुत्फ उठा रही थीं। एकाएक मामा ने कहा—ऐ हुजूर, जरी चुप तो रहिए, यह शोर-गुल कैसा हो रहा है? आग लगी है कहीं।

हुस्नआरा—अरे, वह शोले निकल रहे हैं। यह तो बिलकुल करीब है।

नवाब साहब—कहां हो सबकी सब ! जरूरी सामान बांधकर अलग करो। पड़ोस में शाहजादे के यहां आग लग गई। जेवर और जवाहिरात अलग कर लो। असबाब और कपड़े को जहन्नुम में डालो।

बहारबेगम—हाय, अब क्या होगा !

हुस्नआरा—हाय-हाय, शोले आसमान की खबर लाने लगे !

नीचे उतरकर सबों ने बड़ी फुरती से सब चीजें बाहर निकालीं और फिर कोठे पर गईं, तो क्या देखती हैं कि हुमायूं फर की कोठी में आग लगी है और हर तरफ से शोले उठ रहे हैं। ये सब इतनी दूर पर खड़ी थीं, मगर ऐसा मालूम होता था कि चारों तरफ भट्ठी ही भट्ठी है। धन्निया जो चटकीं, तो बस, यही मालूम हुआ कि बादल गरज रहा है।

बहारबेगम—हाय, लाखों पर पानी पड़ गया !

सिपहआरा—बहन, इधर तो आओ। देखो, हजारों आदमी जमा हैं। जरा देखो, वह कौन है? हैं-हैं ! वह कौन है?

बहारबेगम—कहां कौन है?

सिपहआरा—यह महताबी पर कौन है?

हुस्नआरा—अरे, यह तो हुमायूं फर हैं। गजब हो गया। अब यह क्योंकर बचेंगे?

सिपहआरा फूट-फूटकर रोने लगी। फिर बोली—बा जी, अब होगा क्या? चारों तरफ आग है। बचेगा क्योंकर बेचारा !

बहारबेगम—इसकी जवानी पर तरस आता है।

हुस्नआरा मुंह ढांपकर खूब रोईं। सिपहआरा का यह हाल था कि आंसुओं का

तार न टूटता था। हुमायूं फर महताबी पर इस ताक में सोए थे कि शायद इन हसीनों में से किसी का जलवा नजर आए। लेकिन ठंडी हवा चली, तो आंख लग गई। जब आग लगी और चारों तरफ गुल मचा, तो जागे; लेकिन कब? जब महताबी के नीचे के हिस्से में चारों तरफ आग लग चुकी थी। खिदमतगारों के हाथ-पांव फूल गए। यही सोचते थे, किसी तरह से इस बेचारे की जान बचाए। असबाब बटोरने की फिक्र किसे। कोई शाहजादे की जवानी को याद करके रोता था, कोई सिर धुनकर कहता था–गरीब बूढ़ी मां के दिल में क्या गुजरेगी? शहर से गोल के गोल आदमी आकर जमा हो गए। सिपाही और चौकीदार, शहर के रईस और अफसर उमड़े चले आते थे। दरिया से हजारों घड़े पानी लाया जाता था। भिश्ती और मजदूर आग बुझाने में मसरूफ थे। मगर हवा इस तेजी पर थी कि पानी तेल का काम देता था। शाहजादे इस नाउम्मेदी की हालत में सोच रहे थे कि जिन लोगों के दीदार के लिए मैंने अपनी जान गंवाई, उन्हें मालूम हो जाय, तो मैं समझूं कि जी उठा। इतने में इधर नजर पड़ी, तो देखा कि सबकी सब औरतें कोठे पर खड़ी हाय-हाय कर रही हैं। सोचे, खैर शुक्र है। जिसके लिए जान दी, उसको अपना मातम करते तो देख लिया। एकाएक उन्हें अपना छोटा भाई याद आया। उसकी तरफ मुखातिब होकर कहा–भाई, घर-बार तुम्हारे सुपुर्द है। मां को तसल्ली देना कि हुमायूं फर न रहा, तो मैं तो हूं। यह फिकरा सुनकर सब लोग रोने लगे। इतने में आग के शोले और करीब आए और हवा ने और जोर बांधा, तो शाहजादा ने सिपहआरा की तरफ नजर करके तीन बार सलाम किया ! चारों बहनें दीवारों से सिर टकराने लगीं कि हाय, यह क्या सितम हुआ। शाहजादे ने यह कैफियत देखी, तो इशारे से मना किया। लेकिन दोनों बहनों की आंखों में इतने आंसू भरे हुए थे कि उन्हें कुछ दिखाई न दिया।

सिपहआरा खिड़की के पास जाकर फिर सिर पीटने लगी। हुमायूं फर उसे देखकर अपना सदमा भूल गये और हाथ बांधकर दूर ही से कहा–अगर यह करोगी, तो हम अपनी जान दे देंगे ! गोया जान बचने की उम्मीद ही तो थी ! चारों तरफ आग के शोले उठ रहे थे, धुआं बादल की तरह छाया हुआ था, भागने की कोई तदबीर नहीं। हवा कहती है कि मैं आज ही तेजी दिखलाऊंगी, और आप कहते हैं कि मैं अपनी जान दे दूंगा।

इतने में जब आग बहुत ही करीब आ गयी, तो हुमायूं फर की हिम्मत छूट गयी। बेचैनी की हालत में सारी छत पर घूमने लगे। आखिर यहां तक नौबत आयी कि जो लोग करीब खड़े थे, वह लपटों के मारे और दूर भागने लगे। आग हुमायूं फर से सिर्फ एक गज के फासले पर थी। आंच से फुंके जाते थे। जब जिंदगी की कोई उम्मीद न रही, तो आखिरी बार सिपहआरा की तरफ टोपी उतारकर सलाम किया और बदन को तौलकर धम से कूद पड़े।

उधर सिपहआरा ने भी एक चीख मारी और यहां खिड़की से नीचे कूदी।

शाहजादा साहब नीचे घास पर गिरे। यहां जमीन बिल्कुल नर्म और गीली थी। गिरते ही बेहोश हो गये। लोग चारों तरफ से दौड़ पड़े और हाथों-हाथ जमीन से उठा लिया। लुत्फ की बात यह कि सिपहआरा को भी जरा चोट नहीं लगी थी। उसने

उठते ही कहा कि लोगो, हुमायूं शाहजादा बचा हो, तो हमें दिखा दो। नहीं तो उसी की कब्र में हमको भी जिंदा दफन कर देना।

इतने में नवाब साहब ने सिपहआरा को अलग ले जाकर कहा—तुम घबराओ नहीं। शाहजादा साहब खैरियत से हैं।

सिपहआरा—हाय ! दूल्हा भाई, मैं क्योंकर मानूं !

नवाब साहब—नहीं बहन, आओ, हम उन्हें अभी दिखाये देते हैं।

सिपहआरा—फिर दिखाओ मेरे दूल्हा भाई !

नवाब साहब—जरा भीड़ छंट जाय, तो दिखाऊं। तब तक घर चली चलो।

सिपहआरा—फिर दिखाओगे? हमारे सिर पर हाथ रखकर कहो।

नवाब साहब—इस सिर की कसम जरूर दिखायेंगे।

सिपहआरा को अंदर पहुंचाकर नवाब साहब हुमायूं फर के यहां पहुंचे, तो देखा कि टांग में कुछ चोट आयी है। डाक्टर पट्टी बांध रहा है और बहुत से आदमी उन्हें घेरे खड़े हैं। लोग इस बात पर बहस कर रहे हैं कि आग लगी क्योंकर? रात भर शाहजादे की हालत बहुत खराब रही। दर्द के मारे तड़प-तड़प उठते। सुबह को चारपाई से उठकर बैठे ही थे कि चिट्ठीरसां ने आकर एक खत दिया। शाहजादे ने इस खत को नवाब साहब की तरफ बढ़ा दिया। उन्होंने यह मजमून पढ़ सुनाया।

'अजी हजरत, तसलीम।

सच कहना, कैसा बदला लिया। लाख-लाख समझाया, मगर तुमने न माना। आखिर, तुम खुद ही मुसीबत में पड़े। तुमने हमारा दिल जलाया है, तो हम तुम्हारा घर भी न जलायें? जिस व़क्त यह खत तुम्हारे पास पहुंचेगा, मकान जल-भुनकर खाक हो गया होगा।

शहसवार।'

शाहजादे साहब ने यह मजमून सुना, तो त्योरियों पर बल पड़ गये और चेहरा मारे गुस्से के सुर्ख पड़ गया।

चौवन

रात का वक्त था, एक सवार हथियार साजे, रातों-रात घोड़े को कड़कड़ाता हुआ बगटुट भागा जाता था। दिल में चोर था कि कहीं पकड़ न जाऊं ! जेलखाना झेलूं। सोच रहा था, शाहजादे के घर में आग लगायी है, खैरियत नहीं। पुलिस की दौड़ आती ही होगी। रात भर भागता ही गया। आखिर सुबह को एक छोटा-सा गांव नजर आया। बदन थककर चूर हो गया था। अभी घोड़े से उतरा ही था कि बस्ती की तरफ से गुल की आवाज आयी। वहां पहुंचा, तो क्या देखता है कि गांव भर के वाशिंदे जमा हैं, और दो गंवार आपस में लड़ रहे हैं। अभी यह वहां पहुंचा ही था कि एक ने दूसरे के सिर पर ऐसा लट्ठ मारा कि वह जमीन पर आ रहा। लोगों ने लट्ठ मारने

वाले को गिरफ्तार कर लिया और थाने पर लाये। शहसवार ने दरियाफ्त किया, तो मालूम हुआ कि दोनों की एक जोगिन से आशनाई थी।

सवार–यह जोगिन कौन है भई?

एक गंवार–इतनी उमिर आयी, अस जोगिन कतहूं न दीख।

इतने में थानेदार आ गये। जख्मी को चारपाई पर डालकर अस्पताल भिजवाया और खूनी को गवाहों के साथ थाने ले गये। मियां सवार भी उनके साथ हो लिये, थाने में तहकीकात होने लगी।

थानेदार–यह किस बात पर झगड़ा हुआ जी?

चौकीदार–हुजूर, वह सास जौन जोगिन बनी है।

थानेदार–हमसे तुमसे इतना पूछता है कि किस बात पर लड़ाई हुआ?

चौकीदार–जैसे इहौ वहां जात रहै और वहौ वहां जात रहै। तौन आपस में लाग-डांट है गयी। ऐ बस एक दिन मार-धार है गयी बस, लाठी चलै लाग। मूर से रकत बहुत बहा।

मौलवी–सूबेदार साहब, आज दोनों ने खूब कुज्जियां चढ़ायी थीं।

थानेदार–आप कौन हैं?

मौलवी–हुजूर, गांव का काजी हूं।

थानेदार–यहीं मकान है आपका?

मौलवी–जी हां, पुराना रईस हूं।

शहसवार–बेशक!

थानेदार–देहात वाले भी अजीब जांगलू होते हैं। एक बार एक मुशायरे में जाने का इत्तफाक हुआ। बड़े-बड़े गंवार के लट्ठ जमा थे। एक साहब ने शेर पढ़ा, तो आखिर में फरमाते हैं–बीमार हौं। लोग हैरत में थे कि इस हौं कि क्या माने? फिर हजरत ने फरमाया–सरशार हौं। मारे हंसी के लोट गया। हां, मौलवी साहब, फिर क्या हुआ?

मौलवी–बस, जनाब, फिर दोनों में कुश्ती हुई। कभी यह ऊपर, वह नीचे, कभी वह नीचे, यह ऊपर। तब तो मैं भागा कि चौकीदार से कहूं। दौड़ता गया।

थानेदार–जनाब, इस महावरे को याद रखिएगा।

मौलवी–बस, मैं दौड़ के पूरन चौकीदार के मकान पर गया। उसकी जोडू बोली–

सवार–कौन बोली?

थानेदार–(हंसकर) सुना नहीं आपने? जोडू!

मौलवी–हुजूर, हुक्काम हैं, आपको हंसना न चाहिए।

थानेदार–जी हां, मैं हुक्काम हूं; मगर आप भी तो उमरा हैं। हां, फरमाओ जी।

मौलवी–देखिए, फरमाता हूं।

सवार–अब हंसी जब्त नहीं हो सकती।

मौलवी–बस जनाब, वहां से मैं इस चौकीदार को लाया। वहां आकर देखा, तो खून के दरिया बह रहे थे।

इतने में खबर आयी कि जख्मी दुनिया से रवाना हो गया। थानेदार साहब मारे खुशी के फूल गये। मामूली मार-पीट 'खून' हो गयी। खूनी का चालान किया और

जज ने उसे फांसी की सजा दे दी।

जिस वक्त खूनी को फांसी हो रही थी, मियां सवार भी तमाशा देखने आ पहुंचे। मगर उस वक्त की हालत देखकर उनके दिल पर ऐसा असर हुआ कि आंखें खुल गयीं। सोचने लगे–दुनिया से नाता तोड़ लें। किसी से हसद और कीना न रखें। अगर कहीं पकड़ गया होता, तो मुझे भी यों ही फांसी मिलती। खुदा ने बहुत बचाया। मगर जरा इस जोगिन को देखना चाहिए। यह दिल में ठानकर जोगिन के मकान की तरफ चले।

जब लोगों से पूछते हुए मकान पर पहुंचे, तो देखा कि एक खूबसूरत बाग है और एक छोटा-सा खुशनुमा बंगला, बहुत साफ-सुथरा। मकान क्या, परीखाना था। जोगिन के करीब जाकर उसको सलाम किया। जोगिन के पोर-पोर पर जोबन था। जवानी फटी पड़ती थी। सिर से पैर तक संदली कपड़े पहने हुए थी। शहसवार हजार जान से लोट-पोट हो गये। जोगिन इनकी चितवनों से ताड़ गयी कि हजरत का दिल आया है।

सवार–बड़ी दूर से आपका नाम सुनकर आया हूं।

जोगिन–अक्सर लोग आया करते हैं। कोई आये, तो खुशी नहीं, न आये तो रंज नहीं।

सवार–मैं चाहता हूं कि उम्र भर आपके कदमों के तले पड़ा रहूं।

जोगिन–आपका मकान कहां है?

सवार–

घर बार से क्या फकीर को काम?
क्या लीजिए छोड़े गांव का नाम।

जोगिन–यहां कैसे आये?

सवार–रमते जोगी तो हैं ही, इधर भी आ निकले।

जोगिन–आखिर इतना तो बतलाओ कि हो कौन?

सवार–एक बदनसीब आदमी।

जोगिन–क्यों?

सवार–अपने कर्मों का फल।

जोगिन–सच है !

सवार–मुझे इश्क ही ने तो गारद कर दिया। एक बेगम की दो लड़कियां हैं। उनसे आंखें लड़ गयीं। जीते जी मर मिटा।

जोगिन–शादी नहीं हुई?

सवार–एक दुश्मन पैदा हो गया। आज़ाद नाम था। बहुत खूबसूरत सजीला जवान।

मियां आज़ाद का नाम सुनते ही जोगिन के चेहरे का रंग उड़ गया। आंखों से आंसू गिरने लगे। शहसवार दंग थे कि बैठे-बिठाए इसे क्या हो गया।

सवार–जरा दिल को ढाढस दो, आखिर तुम्हें किस बात का रंज है?

जोगिन–खौफ से लेते नहीं नाम कि सुन ले कोई;
दिल ही दिल में तुम्हें हम याद किया करते हैं।

हमारी दास्तान गम से भरी हुई है। सुनकर क्या करोगे। हां, तुम्हें एक सलाह देती हूं। अगर चाहते हो कि दिल की मुराद पूरी हो तो दिल साफ रखो।

सवार–तुम्हारे सिवा अगर किसी और पर नजर पड़े, तो आंखें फूट जायं।

जोगिन–यही दिल की सफाई है?

सवार–शीशी से गुलाब निकाल लो। मगर गुलाब की बू बाकी रहेगी। दुनिया को छोड़ तो बैठें, पर इश्क दिल से न जायगा। अब हम चाहते हैं कि तुम्हारे ही साथ जिंदगी बसर करें। आज़ाद उसके साथ रहें, हम तुम्हारे साथ।

जोगिन–भला तुम आज़ाद को पाओ, तो क्या करो?

सवार–कच्चा ही चबा जाऊं?

जोगिन–तो फिर हमसे न बनेगी? अगर तुम्हारा दिल साफ नहीं, तो अपनी राह लगो।

सवार–अच्छा, अब आज से आज़ाद का नाम ही न लेंगे।

पचपन

आज़ाद का जहाज इस्कंदरिया पहुंचा, तो वह खोजी के साथ एक होटल में ठहरे। अब खाना खाने का वक्त आया, तो खोजी बोले–लाहौल, यहां खाने वाले की ऐसी तैसी चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय, मगर हम जरा-सी तकलीफ के लिए अपना मजहब न छोड़ेंगे, आप शौक से जायं और मजे से खाए; हमें माफ ही रखिए।

आज़ाद–और अफीम खाना मजहब के खिलाफ नहीं?

खोजी–कभी नहीं ! और, अगर हो भी तो क्या यह जरूरी है कि एक काम मजहब के खिलाफ किया, तो और सब काम मजहब के खिलाफ ही करें?

आज़ाद–अजी, तो किस गधे ने तुमसे कहा कि यहां खाना मजहब के खिलाफ है? मेज-कुर्सी देखी और चीख उठे कि मजहब के खिलाफ है? इस खब्त की भी कोई दवा है !

खोजी–अजी, वह खब्त ही सही। आप रहने दीजिए।

आज़ाद–खाओ या जहन्नुम में जाओ।

खोजी–जहन्नुम में वे जाएंगे, जो यहां खाएंगे। यहां तो सीधे जन्नत में पहुंचेंगे।

आज़ाद–वहां अफीम कहां से आयेगी?

इतने में दो तुर्की आये और अपनी कुर्सियों पर बैठकर मजे से खाने लगे। आज़ाद की चढ़ी बनी। पूछा, ख्वाजा साहब, बोल गीदी, अब शरमाया या नहीं? खोजी ने पहले तो कहा ये मुसलमान नहीं है। फिर कहा, शायद हों ऐसे-वैसे ! मगर जब मालूम हुआ कि दोनों खास तुर्की के रहने वाले हैं, तो बोले–आप लोग यहां होटल में खाना खाते हैं? क्या यह मजहब के खिलाफ नहीं?

तुर्की–मजहब के खिलाफ क्यों होने लगा?

आखिर खोजी झेंपे। फिर होटल में खाना खाया। थोड़ी देर के बाद आज़ाद तो एक साहब से मिलने चले और मियां खोजी ने पीनक लेना शुरू किया। जब नींद खुली, तो सोचे कि हम बैठे-बैठे कब तक यहां मक्खियां मारेंगे। आओ देखें, अगर कोई हिन्दुस्तानी भाई मिल जाय, तो गप्पें उड़ें। इधर-उधर टहलने लगे। आखिरकार एक हिन्दुस्तानी से मुलाकात हुई। सलाम-बंदगी के बाद बातें होने लगीं। ख्वाजा साहब ने पूछा—क्यों साहब, यहां कोई अफीम की दूकान है? उस आदमी ने इसका कुछ जवाब ही नहीं दिया। खोजी तीखे आदमी। उनको भला यह ताब कहां से कि किसी से सवाल करें और वह जवाब न दे? बिगड़ खड़े हुए—न हुई करौली खुदा की कसम ! वरना तमाशा दिखा देता।

हिन्दुस्तानी ने समझा, यह पागल है। अगर बोलूंगा, तो खुदा जाने, काट खाय, या चोट करे। इससे यही अच्छा कि चुप ही रहो। मियां खोजी समझे कि दब गया, और भी अकड़ गये। उसने समझा, अब चोट किया ही चाहता है। जरा पीछे हट गये। उसका पीछे हटना था कि मियां खोजी और भी शेर हुए। मगर कुंदे तौल-तौलकर जाते थे। फिर रोब से पूछा—क्यों बे, यहां ठंडा पानी मिल सकता है? वह गरीब झट-पट ठंडा पानी लाया। खोजी ने दो-चार घूंट पानी पिया और अकड़कर बोले—मांग, क्या मांगता है? उस आदमी ने समझा, यह जरूर दीवाना है ! आपकी हालत तो इतनी खराब है, पल्ले टका तो है नहीं और कहते हैं—मांग, क्या मांगता है? खोजी ने फिर तनकर कहा—मांग कुछ। उस आदमी ने डरते-डरते कहा—यह जो हाथ में है, दे दीजिए।

खोजी का रंग उड़ गया। जान तक मांगता, तो देने में देर न करते; मगर चीनिया बेगम तो नहीं दी जाती।

उससे पूछा—तुम यहां कब से हो, क्या नाम है? उसने जवाब दिया—मुझे तहौवरखां कहते हैं !

खोजी—भला, इस होटल में मुसलमान लोग खाना खाते हैं?

तहौवरखां—बराबर ! क्यों न खाएं?

होटलवालों ने मिसकोट की कि खोजी को छेड़ना चाहिए। इस होटल में काहिरा का रहने वाला बौना था। लोग सोचे, इस बौने और खोजी से पकड़ हो तो अच्छा। बौना बड़ा शरीर था। लोगों ने उससे कहा—चलो, तुम्हारी कुश्ती बदी गयी है। वह देखो, एक आदमी हिन्दोस्तान से आया है। कितना अच्छा जोड़ है। यह सुनकर बौना मियां खोजी के करीब गया और झुककर सलाम किया। खोजी ने जो देखा कि एक आदमी हमसे भी ऊंचा मिला, तो अकड़कर आंखों से सलाम का जवाब दिया। बौने ने इधर-उधर देखकर एक दफा मौका जो पाया, तो मियां खोजी की टोपी उतारकर पड़ाक से एक धौल जमायी और टोपी फेंककर भागा। मगर जरा-जरा से पांव, भागकर जाता कहां? खोजी भी झपटे। आगे-आगे बौना और पीछे-पीछे मियां खोजी। कहते जाते थे—ओ गीदी, न हुई करौली, नहीं तो इसी दम भोंक देता। आखिर बौना हांपकर खड़ा हो गया। तब तो खोजी ने लपककर हाथ पकड़ा और पूछा—क्यों बे ! इस पर बौने पर मुंह चिढ़ाया। खोजी गुस्से में भरे तो थे ही, आपने भी एक धप जड़ी।

खोजी–और लेगा?

बौना–(अपनी जबान में) छोड़, नहीं मार ही डालूंगा।

खोजी–दे मारूं उठाकर?

बौना–रात आने दो।

खोजी ने झल्लाकर बौने को उठाकर दे मारा, चारों खाने चित्त, और अकड़कर बोले–वो मारा ! और लेगा ! खोजी से ये बातें?

इतने में आज़ाद आ गये। खोजी तने बैठे थे, उम्र भर में उन्होंने आज पहली ही मर्तबा एक आदमी को नीचा दिखाया था। आज़ाद को देखते ही बोले–इस वक्त एक कुश्ती और निकली !

आज़ाद–कुश्ती कैसी?

खोजी–कैसी होती है कुश्ती? कुश्ती और क्या?

आज़ाद–मालूम होता है, पिटे हो।

खोजी–पिटनेवाले की ऐसी-तैसी। और कहने वाले को क्या कहूं?

आज़ाद–कुश्ती निकाली।

तहौवरखां–हां हुजूर, यह सच कहते हैं।

खोजी–लीजिए, अब तो आया यकीन।

आज़ाद–क्या हुआ, क्या?

तहौवरखां–जी, यहां एक बौना है। उसने इनके एक धौल लगायी।

आज़ाद–देखा न ! मैं तो समझा ही था कि पिटे होंगे।

खोजी–पूरी बात तो सुन लो।

तहौवरखां–बस, धौल खाकर लपके। उसके कई चपतें लगायीं और उठाकर दे पटका।

खोजी–वह पटखनी बतायी कि याद ही तो करता होगा। दो महीने तक खटिया से न उठ सकेगा।

तहौवरखां–वह देखिए, सामने कौन खड़ा अकड़ रहा है? तुम तो कहते थे कि दो महीने तक उठ ही न सकेगा।

रात को कोई नौ बजे खोजी ने पानी मांगा। अभी पानी पी ही रहे थे कि कमरे का लैंप गुल हो गया और कमरे में चटाख-चटाख की आवाज गूंजने लगी।

खोजी–अरे, यह तो वही बौना मालूम होता है। पानी इसी ने पिलाया था और चपत भी इसी ने जड़ी। दिल में कहा–तड़का न होगा? जिंदा खोदकर गाड़ दूं तो सही।

खोजी पानी पीकर लेटे कि दस्त की हाजत हुई। बौने ने पानी में जमालगोटा मिला दिया था। तिल-तिल पर दस्त आने लगे। मशहूर हो गया कि खोजी को हैजा हुआ। डाक्टर बुलाया गया। उसने दवा दी और खोजी दस्तों के मारे निढाल होकर चारपाई पर गिर पड़े। आज़ाद एक रईस से मिलने गये थे। होटल के एक आदमी ने उनको जाकर इत्तला दी। घबराए हुए आये। खोजी ने आज़ाद को देखकर सलाम किया, और आहिस्ता से बोले–रुखसत। खुदा करे, तुम जल्द यहां से लौटो। यह कहकर तीन बार कलमा पढ़ा।

आज़ाद—कैसी तबीयत है?

खोजी—मर रहा हूं, एक हाफिज बुलवाओ और उससे कहो, कुरान शरीफ पढ़े।

आज़ाद—अजी, तुम दो दिन में अच्छे हो जाओगे।

खोजी—जिंदगी और मौत खुदा के हाथ है। मगर भाई, खुदा के वास्ते जरा अपनी जान का खयाल रखना। हम तो अब चलते हैं। अब तक हंसी-खुशी तुम्हारा साथ दिया; मगर अब मजबूरी है। आब-दाने की बात है, हमको यहां की मिट्टी घसीट लायी।

आज़ाद—अजी नहीं, आज के चौथे रोज दनदनाओगे। देख लेना। डंड पेलते होंगे।

खोजी—खुदा के हाथ है।

आज़ाद—देखिए, कब मुलाकात होती है।

खोजी—इस बूढ़े को कभी-कभी याद करते रहना। एक बात याद रखना, परदेस का वास्ता है, सबसे मिल-जुल कर रहना। जूती-पैजार, लड़ाई-झगड़ा किसी से न करना। समझदार हो तो क्या, आखिर बच्चे ही हो। यार, जुदाई ऐसी अखर रही है कि बस, क्या बयान करूं।

आज़ाद—अच्छे हो जाओ, तो हिन्दोस्तान चले जाना।

खोजी—अरे मियां, यहां दम भर का भरोसा नहीं है।

दूसरे दिन आज़ाद खोजी से रुखसत होकर जहाज पर सवार हुए। इतने दिनों के बाद खोजी की जुदाई से उन्हें बहुत रंज हो रहा था। थोड़ी देर के बाद नींद आ गयी, तो ख्वाब देखा कि वह हुस्नआरा बेगम के दरवाजे पर पहुंचे और वह उन्हें फूलों का एक गुलदस्ता दे रही है। एकाएक तोप दगी और आज़ाद की आंख खुल गयी। जहाज कुस्तुनतुनिया पहुंच गया था।

छप्पन

आज़ाद तो उधर काहिरे की हवा खा रहे थे, इधर हुस्नआरा बीमार पड़ीं। कुछ दिन तक तो हकीमों और डाक्टरों की दवा हुई, फिर गंडे-ताबीज की बारी आयी। आखिर आबोहवा तब्दील करने की ठहरी। बहारबेगम के पास गोमती के किनारे एक बहुत अच्छी कोठी थी। चारों बहनें, बड़ी बेगम और घर के नौकर-चाकर सब इस नयी कोठी में आ पहुंचे।

बेगम—मकान तो बड़ा कुशादा है ! देखूं, चंद्रबेधी है या सूर्यबेधी।

हुस्नआरा—हां अम्मांजान, यह जरूर देखना चाहिए।

रूहअफजा—ले लो, जरूर। हजार काम छोड़कर।

दोनों बहनें हंसती-बोलती मकान के दालान और कमरे देखने लगीं। छत पर एक कमरे के दरवाजे जो खोले, तो देखा, दरिया लहरें मार रहा है। हुस्नआरा ने कहा—बाजी, इस वक्त तो जी खुश हो गया। हमारी पलंगड़ी यहीं बिछे। बरसों की बीमार यहां रहे, तो दो दिन में अच्छा-भला चंगा हो जाय।

सिपहआरा–बहार बहन, भला कभी अंधेरे-उजाले दूल्हा भाई नहाने देते हैं दरिया में?

बहारबेगम–ऐ हैं, इसका नाम भी न लेना। इनको बहुत चिढ़ है इस बात की।

सुबह का वक्त था, चारों बहनें ऊंची छत पर हवा खाने लगीं कि इतने में एक तरफ से धुआं उठा। हुस्नआरा ने पूछा–यह धुआं कैसा है?

रूहअफजा–इस घाट पर मुर्दे जलाये जाते हैं।

हुस्नआरा–मुर्दे यहीं जलते हैं?

बहारबेगम–हां, मगर यहां से दूर है।

सिपहआरा–हाय, क्या जाने कौन बेचारा जल रहा होगा?

रूहअफजा–जिंदगी का भरोसा नहीं।

बड़ी बेगम ने सुना कि यहां मुर्दे जलाये जाते हैं, तो होश उड़ गये। बोलीं–ऐ बहार, तुम यहां कैसे रहती हो? खुरशद दूल्हा आयें, तो उनसे कहूं।

हुस्नआरा–फायदा? बरसों से तो वह यहां रहते हैं, भला तुम्हारे कहने से मकान छोड़ देंगे।

सिपहआरा–यह हमेशा यहां रहते हैं, कुछ भी नहीं होता। हम जो दो दिन रहेंगे, तो मुर्दे आकर चिपट जाएंगे भला?

बड़ी बेगम का बस चलता, तो खड़े-खड़े चली जातीं ! मगर अब मजबूर थीं। यहां से चारों बहनें दूसरी छत पर गयीं तो बहारबेगम ने कहा–यह जो उस तरफ दूर-दूर तक ऊंचे-ऊंचे टीले नजर आते हैं, यहां आबादी थी। जहां तुम बैठी हो, यहां वजीर का मकान था। मजाल क्या था कि कोई इस तरफ आ जाता। मगर अब वहां खाक उड़ती है, कुत्ते लोट रहे हैं।

इतने में एक किश्ती इसी घाट पर आकर रुकी। उस पर दो-तीन आदमी उतरे एक बूढ़े, दूसरे नौजवान। दोनों एक कालीन पर बैठे और बातें करने लगे। बूढ़े मियां ने कहा–मियां आज़ाद-सा दिलेर जवान भी कम देखने में आयेगा। यह उन्हीं का शेर है....

सीने को चमन बनायेंगे हम,
गुल खायेंगे गुल खिलायेंगे हम।

जवान–(गुलबाज) मियां आज़ाद कौन थे जनाब?

इस पर बूढ़े मियां ने आज़ाद की सारी दास्तान बयान कर दी। दोनों बहनें कान लगाकर दोनों आदमियों की बातें सुनती थीं और रोती थीं। हैरत हो रही थी कि ये दोनों कौन हैं और आज़ाद को कैसे जानते हैं? महरी से कहा–जाके पता लगा कि वह दोनों आदमी जो दरख्त के साथ बैठे हुक्का पी रहे हैं, कौन हैं? महरी ने एक भिश्ती के लड़के को इस काम पर तैनात किया। लड़के ने जरा देर में आकर कहा–दोनों आदमी सराय में ठहरेंगे और दो दिन यहां रहेंगे। मगर हैं कौन, यह पता न चला। महरी ने जाकर यही बात हुस्नआरा से कह दी। हुस्नआरा ने कहा–उस लड़के को यह चवन्नी दो और कहो, जहां ये टिकें, इनके साथ जाये और देख आये। महरी ने जोर से पुकारा–अबे ओ शुबराती ! सुन, इन दोनों आदमियों के साथ जा। देख, कहां टिकते हैं।

शुबराती–अजी, अभी पहुंचा।

शुबराती चले। रास्ते में आपको शौक चर्राया कि छल्लामीरी खेलें। एक घंटे में शुबराती ने कोई डेढ़ पैसे की कौड़ियां जीतीं। मगर लालच का बुरा हो, जमे तो दम के दम में डेढ़ पैसे वह हारे, बारह कौड़िया गिरह से गयीं, वहां से उदास होकर चले। राह में बंदर का तमाशा हो रहा था। अब मियां शुबराती जा चुके। कभी बंदरियां को छेड़ा, कभी बकरे पर ढेला फेंका। मदारी ने देखा कि लौंडा तेज है, तो बोला—इधर आओ जवान, आदमी हो कि जानवर?

शुबराती—आदमी।

मदारी—सुअर कि शेर?

शुबराती—हम शेर, तुम सुअर।

मदारी—गधा कि गधी?

शुबराती—गधा।

मदारी—उल्लू कि बैल !

शुबराती—तुम उल्लू, तुम्हारे बाप बैल, और तुम्हारे दादा बछिया के ताऊ।

थोड़ी देर के बाद मियां शुबराती यहां से रवाना हुए, तो एक रईस के यहां एक सपेरा सांप का तमाशा दिखा रहा था। मियां शुबराती भी डट गये। सपेरा तोंबी में भैरवी का रंग दिखाता था।

रईस—तब जानें, जब किसी के सिर से सांप निकालो।

सपेरे ने कहा—हजूर, मंतर में सब कुदरत है। मुल कोई आध सेर आटा तो पेट भर खाने को दो। जिसके बदन से कहिए, सांप निकालूं।

लौंडे यह सुनकर हुर्र हो गये कि धरे न जायं। मियां शुबराती डटे खड़े रहे।

सपेरा—वाह जवान, तुम्हीं एक बहादुर हो।

शुबराती—और हमारे बाप हमसे बढ़कर।

सपेरा—यहां बैठ तो जाओ।

मियां शुबराती बेधड़क जा बैठे। सपेरे ने झूठमूठ कोई मंत्र पढ़ा और जोर से मियां शुबराती की खोपड़ी पर धप जमा कर कहा यह लीजिए सांप। वाह-वाह का दौंगड़ा बज गया। रईस ने सपेरे को पांच रुपये इनाम दिये और कहा—इस लौंडे को भी चार आने पैसे दे दो। मियां शुबराती ने चवन्नी पायी, तो फूले न समाये। जाते ही गोल-गप्पे वाले से पैसे के कचालू, धेले के दही-बड़ी, धेले की सोंठ की टिकिया ली और चखते हुए चले। फिर तकिये पर जाकर कौड़िया खेलने लगे। दो पैसे की कौड़ियां हारे। वहां से उठे, तो हलवाई की दूकान पर एक आने की पूरियां खायीं और कुएं पर पानी पिया। वहां से आकर महरी को पुकारा।

महरी—कहो, वह हैं?

शुबराती—वह तो चले गये।

महरी—कुछ मालूम है, कहां गये?

शुबराती—रेल पर सवार होकर कहीं चल दिये।

महरी ने जाकर हुस्नआरा से यह खबर कही, तो उन्होंने कहा—लौंडे से पूछो, शहर ही में हैं या बाहर चले गये? महरी ने जाकर फिर शुबराती से पूछा—शहर में

हैं या बाहर चले गये? शुबराती को इसकी याद न रही कि मैंने पहले क्या कहा था, बोला–किसी और सराय में उठ गये।

महरी–क्यों रे झूठे, तू तो कहता था, रेल पर चले गये?

शुबराती–मैंने?

महरी–चल झूठे, तू गया कि नहीं।

शुबराती–अब्बा की कसम, गया था।

महरी–चल दूर हो, मुआ झूठा।

इतने में बड़ी बेगम का पुराना नौकर हुसैनबख्श आ गया। हुस्नआरा ने उसे बुलवाकर कहा–बड़े मियां, एक साहब आज़ाद के जानने वालों में यहां आये हैं और किसी सराय में ठहरे हैं। तुम जरा इस लौंडे शुबराती के साथ उस सराय तक जाओ और पता लगाओ कि वह कौन साहब हैं। अब मियां शुबराती चकराये कि खुदा ही खैर करे। दिल में चोर था, कहीं ऐसा न हो कि वह अभी सराय में टिके ही हों, तो मुझ पर बेभाव की पड़ने लगें। दबे दांतों कहा चलिए। आगे-आगे हुसैनबख्श और पीछे-पीछे मियां शुबराती चले। राह में शुबराती ने एक लौंडे की खोपड़ी पर धप जमायी, और आगे बढ़े, तो एक दीवाने पर कई ढले फेंके, और दो कदम गये, तो एक बूढ़ी मामा से कहा–नानी, सलाम ! वह गालियां देने लगी, मगर आप बहुत खिलखिलाये। और आगे चले, तो एक अंधा मिला। आपने उससे कहा–आगे गड्ढा है, और उसकी लाठी छीन ली। हुसैनबख्श कभी मुस्कराते थे, कभी समझाते। चलते-चलते एक तेली मिला, मियां शुबराती ने पूछा–क्यों भई तेली, मरना तो अपनी खोपड़ी हमें दे देना। मंतर जगाऊंगा। तेली ने कहा–चुप ! लौंडा बड़ा शरीर है। और आगे बढ़े, तो एक रंगरेज से पूछा–क्यों बड़े भाई, अपनी दाढ़ी नहीं रंगते? उसने कहा–कहो तुम्हारे बाप की दाढ़ी रंग दे नील से। अब सुनिए, दो हिन्दू बोरिया-बकसा संभाले कहीं बाहर जाने के लिए घर से निकले। मियां शुबराती एक आंख दबाकर सामने जा खड़े हुए। वे समझे, सचमुच काना है। एक ने कहा–अबे, हट सामने से, ओ बे काने! आपने वह आंख खोल दी। दूसरी दबा ली। दोनों आदमी इसे असगुन समझकर अंदर चले गये। इतने में एक कानी औरत सामने से आयी। मियां शुबराती ने देखते ही हांक लगायी–'एक लकड़िया बांसे की, कानी आंख तमाशे की।'

ज्यों ही दोनों सराय में पहुंचे, हुसैनबख्श ने बढ़कर बूढ़े मियां को सलाम किया। बड़े मियां बोले–जनाब, मियां आज़ाद से मेरी पुरानी मुलाकात है। मेरी लड़कियों के साथ वह मुद्दत तक खेला किये हैं। मेरी छोटी लड़की से उनके निकाह की भी तजवीज हुई थीं; मगर अब तो वह एक बेगम से कौल हार चुके हैं। इसके बाद कुछ और बातें हुईं। शाम को हुसैनबख्श रुखसत हुए और घर आकर हुस्नआरा से कहा–वह तो आज़ाद के पुराने मुलाकाती हैं। शायद आज़ाद ने उनकी एक लड़की से निकाह करने का वादा भी किया है। यह सुनते ही हुस्नआरा का रंग फक हो गया। रात को हुस्नआरा ने सिपहआरा से कहा–कुछ सुना? उस बुड्ढे की एक लड़की के साथ आज़ाद का निकाह होने वाला है।

सिपहआरा–गलत बात है।

हुस्नआरा–क्यों?

सिपहआरा–क्यों क्या, आज़ाद ऐसे आदमी ही नहीं।

हुस्नआरा–दिल्लगी हो, जो कहीं आज़ाद उससे भी इकरार कर गये हों। चलो खैर, चार निकाह तो जायज भी हैं। लेकिन अल्लाह जानता है, यकीन नहीं आता। आज़ाद अगर ऐसे हरजाई होते तो जान हथेली पर लेकर रूम न जाते।

हुस्नआरा ने जबान से यह इतमीनान जाहिर किया, पर दिल से यह खयाल दूर न कर सकी कि मुमकिन है, आज़ाद ने वहां भी कौल हारा हो। एक तो उनकी तबीयत पहले ही से खराब थी, उस पर यह नयी फिक्र पैदा हुई तो फिर बुखार आने लगा। दिल को लाख-लाख समझातीं कि आज़ाद बात के धनी हैं, लेकिन यह खयाल दूर न होता। इधर एक नयी मुसीबत यह आ गयी कि उनके एक आशिक और पैदा हो गये। यह हजरत बहारबेगम के रिश्ते में भाई होते थे। नाम था मिर्जा अस्करी। अस्करी ने हुस्नआरा को लड़कपन में देखा था। एक दिन वह बहारबेगम से मिलने आये, और सुना कि हुस्नआरा बेगम आजकल यहीं हैं, तो उन पर डोरे डालने लगे। बहारबेगम से बोले–अब तो हुस्नआरा सयानी हुई होंगी?

बहारबेगम–हां, खुदा के फजल से अब सयानी हैं।

अस्करी–दोनों बहनों में हुस्नआरा गोरी हैं न?

बहारबेगम–ऐ, दोनों खासी गोरी-चिट्टी हैं; मगर हुस्नआरा जैसी हसीन हमने तो नहीं देखी। गुलाब के फूल जैसा मुखड़ा है।

अस्करी–तुम हमारी बहन कैसी हो?

बहारबेगम–इसके क्या माने?

अस्करी–अब साफ-साफ क्या कहूं, समझ जाओ। बहन हो, बड़ी हो, इतने ही काम आओ। फिर और नहीं तो क्या आकबत में बख्शाओगी?

बहारबेगम–अस्करी, खुदा जानता है, हमें दिल से तुम्हारी मुहब्बत है।

अस्करी–बरसों साथ-साथ खेले हैं।

बहारबेगम–अरे, यों क्यों नहीं कहते कि मैंने गोदियों में खिलाया है।

अस्करी–यह हम न मानेंगे। ऐसी आप कितनी बड़ी हैं मुझसे। बरस नहीं हद दो बरस।

बहारबेगम–ऐ लो, इस झूठ को देखो, छतें पुरानी हैं।

अस्करी–अच्छा, फिर कोई पंद्रह-बीस बरस की छुटाई-बड़ाई है?

बहारबेगम–हई है?

अस्करी–अच्छा, अब फिर किस दिन काम आओगी?

बहारबेगम–भई, अगर हुस्नआरा मंजूर कर लें, तो है। मैं आज अम्मांजान से जिक्र करूंगी।

इतने में हुस्नआरा बेगम ने ऊपर से आवाज दी–ऐ बाजी, जरी हमको हरे-हरे मुलायम सिंघाड़े नहीं मंगा देतीं? मुहम्मद अस्करी ने रसूखियत जताने के लिए मामा से कहा–मेरे आदमी से जाकर कहो कि चार सेर ताजे सिंघाड़े तुड़वा कर ले आये। हुस्नआरा ने जो उनकी आवाज सुनी, ता सिपहआरा से पूछा–यह कौन आया

है? सिपहआरा ने कहा—ऐ, वही तो हैं अस्करी ! थोड़ी देर में मिर्जा अस्करी तो चले गये, और चलते वक्त बहारबेगम से कह गए कि हमने जो कहा है, उसका खयाल रहे। बहारबेगम ने कहा—देखो, अल्लाह चाहे तो आज के दूसरे ही महीने हुस्नआरा बेगम के साथ मंगनी हो। हुस्नआरा उसी वक्त नीचे आ रही थी। यह बात उनके कान में पड़ गयी। पांव-तले से मिट्टी निकल गयी। उलटे-पांव लौट गयीं और सिपहआरा से यह किस्सा कहा। उसके भी होश उड़ गये। कुछ देर तक दोनों बहनें सन्नाटे में पड़ी रहीं। फिर सिपहआरा ने दीवाने-हाफिज उठा लिया और फाल देखी, तो सिरे पर ही यह शेर निकला—

बेरौ ई दाम मुर्गे दिगर नेह;
कि उनका रा बुलंद अस्त आशियाना।

(यह जाल दूसरी चिड़िया पर डाल। उनका घोंसला बहुत ऊंचा है।)

सिपहआरा यह शेर पढ़ते ही उछल पड़ी। बोली—लो फतह है। बेड़ा पार हो गया।

इतने में बहारबेगम आ पहुंचीं और हुस्नआरा से बोलीं—तुम लोगों ने मिर्जा अस्करी को तो देखा होगा? कितना खूबसूरत जवान है !

सिपहआरा—देखा क्यों नहीं, वही शौकीन से आदमी है न?

बहारबेगम—अबकी आयेगा तो ओट में से दिखा दूंगी। बड़ा हंसमुख, मिलनसार आदमी है। जिस वक्त आता है, मकान भर महकने लगता है। मेरी बीमारी में बेचारा दिन भर में तीन-तीन फेरे करता था।

हुस्नआरा ये बातें सुनकर दिल ही दिल में सोचने लगी कि यह कह क्या रही हैं। कैसे अस्करी? यहां तो आज़ाद को दिल दे चुके। वह टर्की सिधारे, हम कौल हारे। इनको अस्करी की पड़ी है। बहार बेगम ने बड़ी देर तक अस्करी की तारीफ की; मगर हुस्नआरा कब पसीजने वाली थी। आखिर, बहारबेगम खफा होकर चली गयी।

दूसरे दिन जब अस्करी फिर आये, तो बहारबेगम ने उनसे कहा—मैंने हुस्नआरा से तुम्हारा जिक्र तो किया, मगर वह बोली तक नहीं। उस मुए आज़ाद पर लट्टू हो रही हैं।

अस्करी—मैं एक तरकीब बताऊं, एक काम करो। जब हुस्नआरा बेगम और तुम पास बैठी हो, तो आज़ाद का जिक्र जरूर छेड़ो। कहना अस्करी अभी-अभी अखबार पढ़ता था, उसका एक दोस्त है आज़ाद, वह नानबाई का लड़का है। उसकी बड़ी तारीफ छपी है। कहता था, इस नानबाई के लौंडे की खुशकिस्मती तो देखो, कहां जाकर शिप्पा लड़ाया है? जब वह कहें कि आज़ाद शरीफ आदमी हैं, तो कहना, अस्करी के पास आज़ाद के न जाने कितने खत पड़े हैं। वह कसम खाता है कि आज़ाद नानबाई का लड़का है, बहुत दिनों तक मेरे यहां हुक्के भरता रहा।

यह कहकर मिर्जा अस्करी तो बिदा हुए, और बहारबेगम हुस्नआरा के पास पहुंची।

हुस्नआरा—कहां थीं बहन? आओ, दरिया की सैर करें।

बहारबेगम—जरा अस्करी से बात करने लगी थी। किसी अखबार में उनके एक दोस्त की बड़ी तारीफ छपी है। क्या जाने, क्या नाम बताया था? भला ही-सा नाम

है। हां, खूब याद आया, आज़ाद। मगर कहता था कि नानबाई का लड़का है।

हुस्नआरा–किसका?

बहारबेगम–नानबाई का लड़का बताया था। तुम्हारे आशिक साहब का भी तो यही नाम है। कहीं वही अस्करी के दोस्त न हों।

सिपहआरा–वाह, अच्छे आपके अस्करी हैं जो नानबाइयों के छोकरों से दोस्ती करते फिरते हैं।

बहार तो यह आग लगाकर चलती हुई, इधर हुस्नआरा के दिल में खलबली मची। सोचीं, आज़ाद के हाल से किसी को इत्तला तो है नहीं, शायद नानबाई ही हों। मगर शक्ल-सूरत, यह इल्म और कमाल, यह लियाकत और हिम्मत नानबाई में क्योंकर आ सकती है? नानबाई फिर नानबाई हैं। आज़ाद तो शाहजादे मालूम होते हैं। सिपहआरा ने कहा–बाजी, बहार बहन तो उधार खाये बैठी हैं कि अस्करी के साथ तुम्हारा निकाह हो। सारी कारस्तानी उसी की है। अस्करी के हथकंडों से अब बचे रहना। वह बड़ा नटखट मालूम होता है।

शाम को मामा ने एक खत लाकर हुस्नआरा को दिया। उन्होंने पूछा–किसका खत है?

मामा–पढ़ लीजिए।

सिपहआरा–क्या डाक पर आया है?

मामा–जी नहीं, कोई बाहर से दे गया है।

हुस्नआरा ने खत खोलकर पढ़ा। खत का मजमून यह था–

कदम रख देखकर उल्फत के दरिया में जरा ऐ दिल;
खतरा है डूब जाने का भी दरिया के नहाने में।

हुस्नआरा बेगम की खिदमत में आदाब। मैं जताये देता हूं कि आज़ाद के फेर में न पड़िए। वह नीच कौम आपके काबिल नहीं। नानबाई का लड़का, तंदूर जलाने में ताक, आटा गूंधने में मश्शाक। वह और आपके लायक हो ! अव्वल तो पाजी, दूसरे दिल का हरजाई, और फिर तुर्रा यह कि अनपढ़ ! बहार बहन मुझे खूब जानती हैं। मैं अच्छा हूं या बुरा, इसका फैसला वही कर सकती हैं। आज़ाद मेरे दुश्मन नहीं, मैं उन्हें खूब जानता हूं। इसी सबब से आपको सलाह देता हूं कि आप उसका खयाल दिल से दूर कर दें। खुदा वह दिन न दिखाये कि आज़ाद से तुम्हारा निकाह हो।

तुम्हारा
–अस्करी

हुस्नआरा ने इस खत के जवाब में यह शेर लिखा–

न छेड़ ऐ निकहते बादे-बहारी, राह लग अपनी;
तुझे अठखेलियां सूझी हैं, हम बेजार बैठे है।

सिपहआरा ने कहा–क्यों बा जी, हम क्या कहते थे? देखा, वही बात हुई न? और झूठा तो इसी से साबित है कि मियां आज़ाद को अनपढ़ बताते हैं। खुदा की शान, यह और आज़ाद को अनपढ़ कहें। हम तो कहते ही थे कि यह बड़ा नटखट मालूम होता है।

हुस्नआरा ने यह पुर्जा मामा को दिया कि जा, बाहर दे आ। अस्करी ने यह खत पाया, तो जल उठे। दिल में कहा–अगर आज़ाद को नीचा न दिखाया, तो कुछ न किया। जाकर बड़ी बेगम से मिले और उनसे खूब नमक-मिर्च मिला-मिलाकर बातें कीं। बहारबेगम ने भी हां-में-हां मिलाई और अस्करी की खूब तारीफें कीं। आज़ाद को जहां तक बदनाम करते बना, किया। यहां तक कि आखिर बड़ी बेगम भी अस्करी पर लट्टू हो गयीं मगर हुस्नआरा और सिपहआरा अस्करी का नाम सुनते ही जल उठती थीं। दोनों आज़ाद को याद कर-करके रोया करतीं, और बहारबेगम बार-बार अस्करी का जिक्र करके उन्हें दिक किया करतीं। यहां तक कि एक दिन बड़ी बेगम के सामने सिपहआरा और बहारबेगम में एक झौड़ हो गयी। बहार कहती थी कि हुस्नआरा की शादी मिर्जा अस्करी से होगी, और जरूर होगी। सिपहआरा कहती थीं–यह मुमकिन नहीं।

एक दिन बड़ी बेगम ने हुस्नआरा को बुला भेजा, लेकिन जब हुस्नआरा गयीं, तो मुंह फेर लिया। बहारबेगम भी वहीं बैठी थीं। बोली–अम्मांजान तुमसे बहुत नाराज हैं हुस्नआरा !

बेगम–मेरा नाम ना लो।

बहारबेगम–जी नहीं, आप खफा न हों। मजाल है, आपका हुक्म न मानें।

बेगम–सुना हुआ है सब।

बहारबेगम–हुस्नआरा, अम्मांजान के पास आओ।

हुस्नआरा परेशान कि अब क्या करूं। डरते-डरते बड़ी बेगम के पास जा बैठी। बड़ी बेगम ने उनकी तरफ देखा तक नहीं।

बहारबेगम–अम्मांजान, यह आपके पास आयी हुई हैं, इनका कसूर माफ कीजिए।

बेगम–जब यह मेरे कहने में नहीं हैं, तो मुझसे क्या वास्ता? अस्करी-सा लड़का मशाल लेकर भी ढूंढ़ें, तो न पाये। मगर इन्हें अपनी ही जिद है।

बहारबेगम–हुस्नआरा, खूब सोचकर इसका जवाब दो।

बेगम–मैं जवाब-सवाब कुछ नहीं मांगती।

बहारबेगम–आप देख लीजिएगा, हुस्नआरा आपका कहना मान लेंगी।

बेगम–हां, देख लिया।

बहारबेगम–अम्मांजान, ऐसी बातें न कहिए।

बेगम–दिल जलता है बहार, दिल जलता है ! अपने दिल में क्या-क्या सोचते थे, मगर अब उठ ही जायें यहां से, तो अच्छा।

यह कहकर बड़ी बेगम उठ कर चली गयीं। हुस्नआरा भी ऊपर चली गयीं और लेटकर रोने लगीं। थोड़ी देर में बहार ने आकर कहा–हुस्नआरा, जरी पर्दे ही में रहना, अस्करी आते हैं। हुस्नआरा ने अस्करी का नाम सुना, तो कांप उठीं। इतने में अस्करी आकर बरामदे में खड़े हो गये।

बहारबेगम–बैठो अस्करी।

अस्करी–जी हां, बैठा हूं। खूब हवादार मकान है। इस कमरे में तुम रहती हो न?

बहारबेगम–नहीं, इसमें हमारी बहनें रहती हैं।

अस्करी–अब हुस्नआरा की तबीयत कैसी है?

बहारबेगम—पूछ लो, बैठी तो हैं।

अस्करी—नहीं, बताओ तो आखिर?

बहारबेगम—तुम भी तो हकीम हो? भला पर्दे के पास से नब्ज तो देखो?

हुस्नआरा मुस्किरायीं। सिपहआरा ने कहा—ऐ, हटो भी ! बड़े आये वहां से हकीम !

!बहारबेगम—तुम तो हवा से लड़ती हो।

सिपहआरा—लड़ती ही हैं !

अस्करी—इस वक्त खाना खा चुकी होंगी। शाम को नब्ज देख लूंगा।

बहारबेगम—ऐ, अभी खाना कहां खाया?

सिपहआरा—हां-हां खा चुकी हैं।

मिर्जा अस्करी तो रुखसत हुए, मगर बहारबेगम को सब्र कहां? पूछा—हुस्नआरा, अब बोलो, क्या कहती हो? सिपहआरा तिनक कर बोलीं....अब कोई और बात भी है, या रात-दिन यही जिक्र है? कह दिया एक दफा कि जिस बात से यह चिढ़ती हैं, वह क्यों करो।

बहारबेगम—होना वही है, जो हम चाहती हैं।

हुस्नआरा—खैर, बहन जो होना है, हो रहेगा। उसका जिक्र ही क्या?

सिपहआरा—बहार बहन, नाहक बैठे-बिठाये रंज बढ़ाती हो।

बहारबेगम—याद रखना, अम्मांजान अभी-अभी कसम खा चुकी हैं कि वह तुम दोनों की सूरत न देखेंगी। बस, तुम्हें अब अख्तियार है, चाहे मानो, चाहे न मानो।

कई दिन इसी तरह गुजर गये। हुस्नआरा जब बड़ी बेगम के सामने जातीं, तो वह मुंह फेर लेतीं। दोनों बहनें रात-दिन रोया करतीं। सोचीं कि यह तो सब के सब हमारे खिलाफ हैं, आओ, रूहअफजा को बुलायें, शायद वह हमारा साथ दें। मामा ने कहा—मैं अभी-अभी जाती हूं। जहां तक बन पड़ेगा, बहुत कहूंगी। और, कहना क्या है, ले ही आऊंगी।

इतने में बहारबेगम ने आकर कहा—ऐ हुस्नआरा, जरी पर्दा करके अस्करी को नब्ज दिखा दो। जीने पर खड़े हैं। हुस्नआरा मजबूर हो गयी। सिपहआरा को इशारे से बुलाया और कहा—बहार बहन तो बाहर ही बैठेंगी। मेरे बदले तुम नब्ज दिखा दो। सिपहआरा ने मुस्किरा कर कहा—अच्छा, और पर्दे के पास बैठ कर नब्ज दिखायी।

अस्करी—दूसरा हाथ लाइए।

बहारबेगम—बुखार तो नहीं है?

अस्करी—थोड़ा-सा बुखार जरूर है। कमजोरी बहुत है।

जब अस्करी चले गये, तो हुस्नआरा ने बहारबेगम से कहा—आपके अस्करी तो बड़े होशियार हैं !

बहारबेगम—क्या शक भी है?

हुस्नआरा—उफ्, मारे हंसी के बुरा हाल है। वाह रे हकीम !

सिपहआरा—'नीम हकीम, खतरे जान।'

बहारबेगम—यह काहे से?

हुस्नआरा—नब्ज किसकी देखी थी?

बहारबेगम–तुम्हारी।

हुस्नआरा–अरे वाह, कहीं देखी हो न? बस, देख ली हिकमत।

बहारबेगम–फिर किसकी नब्ज देखी? क्या सिपहआरा बैठ गयी थीं।

सिपहआरा–और नहीं तो क्या? कमजोरी बताते थे। कमजोरी हमारे दुश्मनों को हो !

बहारबेगम–भला इलाज में क्या हंसी करनी थी?

बाहर जाकर बहार ने अस्करी को खूब आड़े-हाथों लिया–ऐ बस, जाओ भी, मुफ्त में हमको बद बनाया ! हुस्नआरा ने हंसी-हंसी में सिपहआरा को अपनी जगह बिठा दिया, और तुम जरा न पहचान सके। खुदा जानता है, मुझे बहुत शरम आयी।

शाम को रूहअफजा बेगम आ पहुंचीं और बड़ी बेगम के पास जाकर सलाम किया।

बड़ी बेगम–तुम कब आयीं?

रूहअफजा–अभी-अभी चली आती हूं। हुस्नआरा कहां है?

बहारबेगम–हमें उनका हाल मालूम नहीं। कोठे पर हैं।

रूहअफजा–जरी, बुलवाइए !

बहारबेगम–दोनों बहनें हमसे खफा हैं।

रूहअफजा कोठे पर गयी, तो दोनों बहनें उनसे गले मिलकर खूब रोयीं।

रूहअफजा–यह तुमको क्या हो गया हुस्नआरा? वह सूरत ही नहीं। माजरा क्या है?

सिपहआरा–अब तो आप आयी हैं; सब कुछ मालूम हो जायेगा। सारा घर हमसे फिरंट हो रहा है। हमें तो खाना-पीना उठना-बैठना सब हराम है !

बहारबेगम को यह सब्र कैसे होता कि रूहअफजा आयें और दोनों बहनें इनसे अपना दुखड़ा रोयें। आकर धीरे से बैठ गयीं।

रूहअफजा–बहन, यह क्या बात है ! आखिर किस बात पर यह रंजारंजी हो रही है?

बहारबेगम–मैं तुमसे पूछती हूं, अस्करी में क्या बुराई है ! शरीफ नहीं है वह, या पढ़ा-लिखा नहीं है, या अच्छे खानदान का नहीं है? आखिर इनके इनकार का सबब क्या है?

सिपहआरा–हमने एक दफे कह दिया कि हम अस्करी का नाम नहीं सुनना चाहते।

रूहअफजा–तो यह कहो, बात बहुत बढ़ गयी है। मुझे जरा भी कुछ हाल मालूम होता, तो फौरन ही आ जाती।

बहारबेगम–अब आयी हो, तो क्या बना लोगी? यह एक न मानेंगी।

रूहअफजा–वह तो शायद मान भी जायें, मगर आपका मान जाना अलबत्ता मुश्किल है।

बहारबेगम–यह कहिए, आप इनकी तरफ से लड़ने आयी हैं?

रूहअफजा–हां, हमसे तो यह नहीं देखा जाता कि खाहमख्वाह झगड़ा हो।

ये बातें हो रही थीं कि बड़ी बेगम साहबा भी लठिया टेकती हुई आयीं।

रूहअफजा–आइए अम्मांजान, बैठिए।

बेगम–मैं बैठने नहीं आयी, यह कहने आयी हूं कि अस्करी के साथ हुस्नआरा

का निकाह जरूर होगा। इसमें सारी दुनिया एक तरफ हो, मैं किसी की न सुनूंगी। मैं जान दे दूंगी। यह न मानेंगी, तो जहर खा लूंगी; मगर करूंगी यही, जो कह रही हूं।

बड़ी बेगम यह कहकर चली गयीं। इतना रोयीं कि आंखें लाल हो गयीं। रूहअफजा ने समझाया, तो बोलीं....बहन। अम्मांजान मानेंगी नहीं, और हम सिवा आज़ाद के और किसी के साथ शादी न करेंगे? नतीजा यह होना है कि हमीं न होंगे।

सत्तावन

हुस्नआरा बेगम की जान अजाब में थी। बड़ी बेगम से बोल-चाल बंद, बहारबेगम से मिलना-जुलना तर्क। अस्करी रोज एक नया गुल खिलाता। वह एक ही काइयां था, रूहअफजा को भी बातों में लगा कर अपना तरफदार बना लिया। मामा को पांच रुपये दिए। वह उसका दम भरने लगी। महरी को जोड़ा बनवा दिया, वह भी उसका कलमा पढ़ने लगी। नवाब साहब उसके दोस्त थे ही। हुसैनबख्श को भी गांठ लिया। बस, अब सिपहआरा के सिवा हुस्नआरा का कोई हमदर्द न था। एक दिन रूहअफजा चुपके-चुपके उधर आईं, तो देखा, कमरे के सब दरवाजे बंद हैं। शीशे से झांक कर देखा, हुस्नआरा रो रही हैं और सिपहआरा उदास बैठी हैं। रूहअफजा का दिल भर आया। धीरे से दरवाजा खोला और दोनों बहनों को गले लगाकर कहा—आओ, हवा में बैठें। जरी, मुंह धो डालो। यह क्या बात है ! जब देखो, दोनों बहनें रोती रहती हो?

सिपहआरा—बहन, जान-बूझ कर क्यों अनजान बनती हो? भला आपसे भी कोई बात छिपी है? मगर आप भी हमारे खिलाफ हो गईं ! खैर अल्लाह मालिक है।

रूहअफजा—तुम्हारी तो नयी बातें हैं? जहां तुम्हारा पसीना गिरे, वहां हम लहू गिराएं, और तुम समझती हो कि हम तुम्हें जलाते हैं। हम तो मुहब्बत से पूछते हैं, और तुम हमीं से बिगड़ती हो।

हुस्नआरा—सुनो बाजी, तुम कौन-सी बातें नहीं जानती हो, जो पूछती हो। हम साफ साफ कह चुके कि या तो उम्र भर कुंवारी ही रहेंगे या आज़ाद के साथ निकाह होगा।

सिपहआरा—ऐसे-ऐसे 360 अस्करी हों, तो क्या? हलवा खाने को मुंह चाहिए।

रूहअफजा—अब इस वक्त बात बढ़ जाएगी। और कोई बात करो।

हुस्नआरा—हम इतना चाहते हैं कि आप जरा इंसाफ करें।

रूहअफजा—मगर यह गुत्थी क्यों कर सुलझेगी?

इतने में मामा ने अखबार लाकर रख दिया। हुस्नआरा ने पढ़ना शुरू किया। एकाएक एक मजमून देखकर चौंक उठी। मजमून यह था कि मियां आज़ाद ने टर्की में एक साईस की बीबी से शादी कर ली। साईस को जहर दिलवा दिया और अब साईमिन के साथ गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। हुस्नआरा ने अखबार फेंक दिया और उठ कर कमरे में चली गईं। सिपहआरा ने भांप लिया कि जरूर आज़ाद की कुछ खबर है। अखबार उठाकर देखने लगीं, तो एक मजमून नजर पड़ा। सन्नाटे में आ गईं। जिस आज़ाद के लिए वहां सारी

दुनिया से लड़ाई हो रही थी, जिसका दोनों आसरा लगाए बैठी थीं, उसका यह हाल। हुस्नआरा को जाकर तसकीन देने लगी—बाजी, यह सब गलत है।

हुस्नआरा—किस्मत की खूबी है।

सिपहआरा—हम तो फाल देखेंगे।

हुस्नआरा—हमारा तो दिल टूट गया। हाय, हम क्या जानते थे कि मुहब्बत यह बुरा दिन दिखाएगी।

हाल अव्वल से यह न था जाहिर;
कि इसी गम में होंगे हम आखिर।

अपना किया अपने आगे आया। मिर्जा आज़ाद के हथकंडे क्या मालूम थे। इनको हमारा जरा खयाल न आया। एक नीच कौम की औरत को ब्याहा। हुस्नआरा को भूल गए। यहां महीनों इसी रंज में गुजर गए कि टर्की क्यों भेजा। बैठे बिठाए उनकी जान के दर पे क्यों हुईं। रात-दिन मांगी कि वह खैरियत से घर आएं। मगर यह क्या मालूम था कि एकाएक यह गम की बिजली गिर पड़ेगी! किस्मत फूट गई अब तो यह आरजू है कि एक दफा चार आंखें हों, फिर झुककर सलाम करूं।

सिपहआरा—अगर यही करना था, तो इतनी दूर गए क्या करने थे?

रूहअफजा कमरे में आई, तो देखा, हुस्नआरा दुलाई ओढ़े पड़ी हैं। बदन पर हाथ रखा, तो तेज बुखार। हुस्नआरा उन्हें देख कर रोने लगीं। रूहअफजा बोलीं—बहन, तबीयत को काबू में रखो। ऐसा भी नौज कोई बीमारी में घबराए। बहारबेगम ने सुना, तो वह भी घबराई हुई आईं। बदन पर हाथ रखा, तो मालूम हुआ, जैसे किसी ने झुलसा दिया। हुस्नआरा ने रोकर कहा—बाजी, हर तरह की बीमारी मैंने उठाई है; मगर दिल कभी इतना कमजोर न हुआ था। मालूम होता है कि जान निकल रही है। बहारबेगम ने बड़ी बेगम को बुलवाया। वह भी बदहवास आईं और हुस्नआरा के माथे पर हाथ रखकर बोलीं—अल्ला, यह हुआ क्या !

बहारबेगम—बुखार सा बुखार है।

नवाब साहब दौड़े हुए आए। देखा, तो कुहराम मचा हुआ है। इतने में अस्करी आए। बहारबेगम ने कहा—भैया जरी नब्ज तो देखो। यह दम के दम में क्या हो गया?

अस्करी—(नब्ज देखकर) बहन, क्या बताऊं, नब्ज ही नहीं मिलती !

इस फिफरे पर बहारबेगम सिर पीटने लगीं। नवाब साहब ने समझाया, यह वक्त दवा और इलाज का है, रोना तो उम्र-भर है। अस्करी फौरन बड़े हकीम साहब को बुलाने गए। शाहजादा हुमायूं फर भी आए थे। बोले—मैं जाकर सिविलसर्जन को साथ लाता हूं। सर्जन साहब आए और नब्ज देखकर कहा—दिल पर कोई सदमा पहुंचा है। किसी अजीज के मरने की खबर सुनी हो, या ऐसी ही कोई और बात हो। नुस्खा लिखा और फीस ले कर चल दिए। इतने में बड़े हकीम साहब आए और नब्ज देखकर अस्करी के कान में कहा—काम तमाम हो गया। नुस्खा लिखकर आप भी बाहर गए। बहारबेगम सबसे ज्यादा बेकरार थीं।

शाम का वक्त था, बड़ी बेगम नमाज पढ़ रही थीं, बहारबेगम उदास बैठी हुई थीं, नवाब साहब हुमायूं फर के साथ इसी बीमारी का जिक्र कर रहे थे कि एकाएक अंदर से रोने की आवाज आई।

नवाब साहब–क्या हुआ, क्या ! हुआ क्या !!

बहारबेगम–जो कुछ होना था, वह हो गया।

नवाब साहब ने जाकर देखा, तो हुस्नआरा की आंख फिर गई थीं और बदन ठंडा हो गया था। नवाब साहब को देखते ही बड़ी बेगम ने एक ईंट उठाई और सिर पर पटक ली। सिपहआरा ने तीन बार दीवार से सिर टकराया। नवाब साहब डॉक्टर को बुलाने दौड़े।

अट्ठावन

रूम पहुंचकर आज़ाद एक पारसी होटल में ठहरे। उसी होटल में जार्जिया की एक लड़की भी ठहरी हुई थी। उसका नाम था मीडा। आज़ाद खाना खाकर अखबार पढ़ रहे थे कि मीडा को बाग में टहलते देखा। दोनों की आंखें चार हुईं। आज़ाद के कलेजे में तीर सा लगा। मीडा भी कनखियों से देख रही थी कि यह कौन आदमी है। आदमी तो निहायत हसीन है, मगर तुर्की नहीं मालूम होता है।

आज़ाद को भी बाग की सैर करने की धुन सवार हुई, तो एक फूल तोड़कर मीडा के सामने पेश किया, मीडा ने फूल तो ले लिया, मगर बिना कुछ कहे-सुने घोड़े पर सवार होकर चली गई। आज़ाद सोच रहे थे कि यहां किसी से जान न पहचान, अब इस हसीना को क्योंकर देखेंगे? इसी फिक्र में बैठे थे कि होटल का मालिक आ पहुंचा। आज़ाद ने उससे बातों-बातों में पता लगा लिया कि यह एक कुंआरी लेडी है। इसकी खूबसूरती की दूर-दूर चर्चा है। जिसे देखिए इसका आशिक है। पियानो बजाने का दिली शौक है। घोड़े पर सवार होती है कि अच्छे-अच्छे शहसवार दंग रह जाते हैं।

शाम के वक्त आज़ाद एक किताब देख रहे थे कि एक औरत ने आकर कहा–एक साहब बाहर आपकी तलाश में खड़े हैं। आज़ाद को हैरत कि यह कौन है? बाहर आए, तो देखा, एक औरत मुंह पर नकाब डाले खड़ी है। इन्हें देखते ही उसने नकाब उलट दी। यह मीडा थी।

मीडा–मैं वही हूं, जिसे आपने फूल दिया था।

आज़ाद–और मैंने आपकी सूरत को अपने दिल पर खींच लिया था।

मीडा–यहां कब तक ठहरिएगा?

आज़ाद–लड़ाई में शरीक होना चाहता हूं।

मीडा–इस लड़ाई का बुरा हो, जिसने हजारों घरों को बर्बाद कर दिया ! भला, अगर आप न जाएं, तो कोई हर्ज है?

आज़ाद–मजबूरी है !

मीडा ने आज़ाद का हाथ पकड़ लिया और बाग में टहलते-टहलते बोली–जब तक आप यहां रहेंगे, मैं रोज आऊंगी।

आज़ाद–मेरे लिए यह बड़ी खुशनसीबी की बात है। मैं अच्छी सायत देखकर

घर से चला था।

मीडा–आपने वजीर जंग से अपने लिए क्या तय किया?

आज़ाद–अभी तो उनसे मिलने की नौबत ही नहीं आई।

मीडा–मुझे उम्मीद है कि मैं आपको कोई अच्छा ओहदा दिला सकूंगी।

आज़ाद–आपका वतन कहां है?

मीडा–जार्जिया।

आज़ाद–तो यह कहिए, आप कोहकाफ की परी हैं।

इस तरह की बातें करके मीडा चली गई। आज़ाद कुछ देर तक सन्नाटे में खड़े रहे। इतने में एक फ्रांसीसी अफसर आकर बोला–तुम अभी किससे बातें कर रहे थे?

आज़ाद–मिस मीडा से।

अफसर–तुम्हें मालूम हैं, उससे मेरी शादी होनेवाली है?

आज़ाद–बिलकुल नहीं।

यह सुनते ही उस अफसर ने, जिसका नाम जदाब था, तलवार खींचकर आज़ाद पर हमला किया। आज़ाद ने खाली दी। एकाएक किसी ने पीछे से आज़ाद पर तलवार चलाई। तलवार छिलती हुई बायें कंधे पर लगी। पलटकर आज़ाद ने जो एक तुला हुआ हाथ लगाया, तो वह जख्मी होकर गिर पड़ा। आज़ाद संभलने ही को थे कि जदाब फिर उन पर झपटा। आज़ाद ने फिर खाली दी और कहा–मैं चाहूं तो तुम्हें मार सकता हूं। मगर मुझे तुम्हारी जवानी पर रहम आता है। यह कहकर आज़ाद ने पैंतरा बदला और तलवार उसके हाथ से छीन ली। इतने में होटल से कई आदमी निकल आए और आज़ाद की तारीफ करने लगे। जदाब ने शरमिंदा होकर कहा–मुझे इसका अफसोस है कि मेरे एक दोस्त ने मुझसे बगैर पूछे आप पर पीछे से हमला किया। इसके लिए मैं आपसे माफी मांगता हूं। दोनों आदमी गले तो मिले, मगर फ्रांसीसी के दिल से कुदूरत न गई।

दूसरे दिन मियां आज़ाद हमीदपाशा के पास गए, जो जंग के वजीर थे। हमीद ने आज़ाद का डील-डौल देखा और उनकी बातचीत सुनी, तो फौजी ओहदा देने का वादा कर लिया। आज़ाद खुश-खुश लौटे आते थे कि मीडा घोड़े पर सवार आ पहुंची।

मीडा–आप कहां गए थे?

आज़ाद–वजीर-जंग के पास। कल तो आपकी बदौलत मेरी जान ही गई थी।

मीडा–सुन चुकी हूं।

आज़ाद–अब आपसे बोलते डर मालूम होता है !

मीडा–जीत तो तुम्हारी ही हुई। तुम मुझे दिल में बुरा समझ रहे होगे; मगर मेरा दिल काबू से बाहर है। मेरा दिल तुम पर आया है। मैं चाहती हूं, मेरी तुम्हारे साथ शादी हो।

आज़ाद–मुझे अफसोस है कि मेरी शादी तय हो चुकी है। खुदा को गवाह करके कहता हूं, आपकी एक-एक अदा मेरे दिल में चुभ गई है। मगर मैं मजबूर हूं।

मीडा ने उदास होकर कहा–पछताओगे, और घोड़ा बढ़ा दिया। उसी रात को मीडा ने हमीदपाशा से जाकर कहा कि आज़ाद नाम का जो हिन्दुस्तानी आज आपके

पास आया था, वह रूस का मुखबिर है। उससे होशियार रहिएगा।

हमीद—तुम्हें इसका पूरा यकीन है?

मीडा—मुझे आज़ाद के एक दोस्त ही से यह बात मालूम हुई।

हमीद—तुम्हारा जिम्मा।

मीडा—बेशक।

यह आग लगाकर मीडा घर आई; मगर बार-बार यह सोचती थी कि मैंने बहुत बुरा किया। एक बेगुनाह को मुफ्त में फंसाया। खयाल आया कि जाकर वजीर जंग से कह दे कि आज़ाद बेगुनाह है, मगर बदनामी के खौफ से जाने की हिम्मत न पड़ती थी। मियां आज़ाद होटल में बैठे हुक्का पी रहे थे कि एक तुर्की अफसर ने आ कर कहा—आपको टर्की की सरकार ने कैद कर लिया।

आज़ाद—मुझको?

अफसर—जी हां।

आज़ाद—आप गलती कर रहे हैं।

अफसर—नहीं, मुझे आप ही का पता दिया गया है।

आज़ाद—आखिर मेरा कसूर?

अफसर—मुझे बताने का हुक्म नहीं।

तीन दिन तक आज़ाद कैदखाने में रहे, चौथे दिन हमीदपाशा के सामने लाए गए।

हमीद—मुझे मालूम हुआ कि तुम रूसी जासूस हो।

आज़ाद—बिलकुल गलत। मैं काश्मीर का रहने वाला हूं। आप बतला सकते हैं कि किसने मुझ पर इलजाम लगाया?

हमीद—एक शरीफ लेडी ने, जिसका नाम मीडा है।

आज़ाद मीडा का नाम सुनते ही सन्नाटे में आ गए। दिल के टुकड़े-टुकड़े हो गए। मुंह से एक बात भी न निकली। अब आज़ाद फिर कैदखाने में आए, तो मुंह से बेअख्तियार निकल गया—मीडा ! मीडा !! तूने मुझ पर बड़ा जुल्म किया !

आज़ाद को इसका इतना रंज हुआ कि उसी दिन से बुखार आने लगा। दो-तीन दिन में उनकी हालत इतनी खराब हो गई कि जेल के दारोगा ने सुबह-शाम सैर करने का हुक्म दे दिया। एक दिन वह शाम को बाहर सैर कर रहे थे कि एक खूबसूरत नौजवान घोड़ा दौड़ाता हुआ उनके करीब आकर खड़ा हो गया।

जवान—माफ कीजिएगा, आपकी सूरत मेरे एक दोस्त से मिलती है। मैंने समझा शायद वही हों। आप कुछ बीमार मालूम पड़ते हैं !

आज़ाद—जी हां, कुछ बीमार हूं। मुझे खयाल आता है कि मैंने कहीं आपको देखा है।

जवान—शायद देखा हो।

यह कह कर वह मुसकिराया। आज़ाद ने फौरन पहचान लिया। यह मुसकिराहट मीडा की थी। आज़ाद ने कहा—मीडा, तुमने मुझ पर बड़ा जुल्म किया। मुझे तुमसे ऐसी उम्मेद न थी।

मीडा—मैं अपने किए पर खुद शर्मिंदा हूं। मुझे माफ करो।

उनसठ

मियां खोजी पंद्रह रोज में खासे टांठे हो गये, तो कांसल से जाकर कहा–मुझे आज़ाद के पास भेज दिया जाए। कांसल ने उनकी दरख्वास्त मंजूर कर ली। दूसरे दिन खोजी जहाज पर बैठ कुसतुनतुनियां चले। उधर मियां आज़ाद अभी तक कैदखाने में ही थे। हमीदपाशा ने उनके बारे में खूब तहकीकात की थी, और गो उन्हें इतमिनान हो गया था कि आज़ाद रूसी जासूस नहीं हैं, फिर भी अब तक आज़ाद रिहा न हुए थे।

एक दिन मियां आज़ाद कैदखाने में बैठे हुए थे कि एक फ्रांसीसी कैदी आया। उस पर भी जासूसी का इल्जाम था। आज़ाद ने पूछा–आपने अपनी सफाई नहीं पेश की?

फ्रांसीसी–अंधेर है, अंधेर ! मैं तो इन तुर्कों का जानी दुश्मन हूं।

आज़ाद–मुझे यह सुनकर अफसोस हुआ। मैं तो तुर्कों का आशिक हूं। ऐसी दिलेर कौम दुनिया में नहीं है।

फ्रांसीसी–अभी आप इन लोगों को अच्छी तरह नहीं जानते। आप ही को बेवजह कैद कर लिया।

आज़ाद–लड़ाई के दिनों में सभी जगह ऐसी गलतियां हो जाती हैं।

फ्रांसीसी–आप रूसी जबान नहीं जानते?

आज़ाद–बिलकुल नहीं।

फ्रांसीसी–रूस की सरकार ने बहुत मजबूर होकर लड़ाई की है।

आज़ाद–मैं तो समझता हूं, रूसवालों की ज्यादती है, सारा यूरोप टर्की का दुश्मन है।

इस तरह की बातें करके फ्रांसीसी चला गया और दूसरे ही दिन मियां आज़ाद आज़ाद कर दिए गए। यह कैदी फ्रांसीसी न था, हमीदपाशा ने एक तुर्की अफसर को आज़ाद के दिल का भेद लेने के लिए भेजा था।

शाम का वक्त था, आज़ाद बैठे हुए मीडा से बातें कर रहे थे कि एक आदमी ने आ कर कहा–हुजूर, एक नाटा-सा आदमी बाहर खड़ा है, और कहता है कि हमें कोठी के अंदर जाने दो। आज़ाद ने कहा–आने दो। एक मिनट में मियां खोजी आकर खड़े हो गए। आज़ाद ने दौड़कर उन्हें गले लगा लिया और खैर-आफियत पूछने के बाद अपनी रामकहानी सुनाई। मियां खोजी ने जब आज़ाद के कैद होने का हाल सुना, तो बिगड़कर बोले–खुदा ने चाहा, तो हम तुम्हारा बदला लेंगे। खड़े-खड़े बदला न ले लें, तो नाम नहीं।

आज़ाद–खैर, अब इसका अफसोस न कीजिए। मिस मीडा अभी आती होंगी, जरा उनके सामने बेहूदगी न कीजिएगा।

खोजी–भई, अभी उन्हें मत आने दो। जरा हम बन-ठन लें। अफसोस यही है कि हमारे पास करौली नहीं। बेकरौली के हमसे कुछ न हो सकेगा।

आज़ाद–क्या उनसे लड़िएगा?

खोजी–नहीं साहब, लड़ना कैसा ! बैकरौली के जोबन नहीं आता। आप ये बातें क्या जानें।

इतने में मिस मीडा दूसरे कमरे से निकल आईं। खोजी ने अपना ठाट बनाने के लिए मेज पर का कपड़ा ओढ़ लिया, तौलिया सिर में बांधा और एक छुरी हाथ में लेकर मीडा की तरफ घूरने लगे। मीडा ने जो उनकी सूरत देखी, तो मुसकिरा दी। खोजी खिल गए। आज़ाद से बोले–क्यों आज़ाद, सच कहना, मुझे देखते ही कैसा खिल गईं ! मीडा ने आज़ाद से पूछा–यह कौन आदमी है?

आज़ाद–एक पागल है। इसको यह खब्त है कि जो औरत इसे देखती है, रीझ जाती है। तुम जरा इसको बनाओ।

मीडा ने खोजी को इशारे से करीब बुलाया। आप जाकर एक कुर्सी पर डट गए।

मीडा–(हाथ में हाथ देकर) आपका नाम क्या है?

खोजी–(आज़ाद से) मुझे समझाते जाओ जी !

आज़ाद ने दुभाषिए का काम करना शुरू किया। मीडा जो कहती थी, उनको समझाते थे, और वह जो कुछ कहते थे, इसे समझाते थे।

मीडा–कल आपकी दावत है। आप शराब पीते हैं?

खोजी–हां–नहीं। मगर अच्छा; नहीं-नहीं। कह दो अफीम पीता हूं।

मीडा–यह आपका गुलाब सा चेहरा कुम्हला जाएगा !

खोजी ने अकड़कर आज़ाद की तरफ देखा।

मीडा–आप कुछ गाना भी जानते हैं।

खोजी–हां, और नाचना भी जानता हूं।

मीडा–अहो-हो, तो फिर नाचो।

खोजी ने नाचना शुरू किया। अब मीडा हंसने लगी, तो आप और भी फूल गए। थोड़ी देर में मीडा होटल से चली गई। तब आज़ाद ने कहा–भई, खोजी, यह बात अच्छी नहीं। मैं तुमको ऐसा नहीं जानता था।

खोजी–तो मैं क्या करूं। जब वे खुद ही मेरे पीछे पड़ी हुई हैं, तो रुखाई करना भी तो अच्छा नहीं मालूम होता।

थोड़ी देर में मीडा का खत आया। आज़ाद ने कहा–जनाब ख्वाजा साहब, हमको तो जरा खत दिखाना।

खोजी–बस, बस, चलिए, अलग हटिए।

आज़ाद–लाओ, हम पढ़ दें। तुमसे भला क्या पढ़ा जाएगा?

खोजी–अजब आदमी हैं आप ! आप कहां के ऐसे बड़े आलिम हैं !

खोजी ने खत को तीन बार चूमा और आज़ाद को अलग बुलाकर पढ़ने को दिया। लिखा था–

'मेरे प्यारे जवान, तुम्हारी एक-एक अदा ने मेरे दिल में जगह कर ली है। तुम्हारी सारस की-सी गर्दन और बंदर की सी हरकतें जब याद आती हैं, तो मैं उछल-उछल पड़ती हूं। अब यह बताओ कि आज किस वक्त आओगे? यह खत अपने

दोस्त आज़ाद को न दिखाना और वादे पर जरूर आना।'

खोजी–यार, तुम्हें तो सब हाल मालूम हो गया, मगर उससे कह न देना।

आज़ाद–मैं तो जाकर शिकायत करूंगा कि हमसे छिपाया क्यों? अभी-अभी खत भेजता हूं।

खोजी–खैर, जाइए, कह दीजिए। वह हम पर आशिक हैं। तुम ऐसे हजार लगी-लिपटी बातें करें, होता क्या है। आपकी हकीकत ही क्या है !

आज़ाद–यार, अब तुम्हारे साथ न रहेंगे।

खोजी–आखिर, सबब बताइए।

आज़ाद–गजब खुदा का। मीडा सी माहरू और हमारे सामने तुम्हें यह खत लिखे।

खोजी खिलखिलाकर हंस पड़े। बोले–यह बात है? हम जवान ही ऐसे हैं, इसको कोई क्या करे। लेकिन अगर तुम खिलाफ हो गए, तो वल्लाह, मैं मीडा से बात तक न करूंगा। मुझे जान से भी ज्यादा प्यारे हो। कसम खुदा की, अब दुनिया में तुम्हारे सिवा मेरा और कोई नहीं। बस फकत तुम ! और हम तो बूढ़े हुए। यह भी मिस मीडा की मेहरबानी है। अजी, मिसर में तो तुम न थे। वहां पर भी एक औरत मुझ पर आशिक हो गई थी ! मगर खराबी यह थी कि न हम उसकी बात समझें, न वह हमारी ! हां, इशारों में खूब बातें हुईं। अच्छा, फिर एक हज्जाम तो बुलाओ आज जाना है न !

आज़ाद ने एक हज्जाम बुलवाया। हजामत बनने लगी।

खोजी–घोटो, घोटो, घोटे जा। अभी खूटी बाकी हैं। खूब घोटो।

हज्जाम ने फिर छुरा फेरा। खोजी ने फिर टटोलकर कहा–अभी खूंटी बाकी है, घोटो !

हज्जाम–तो हुजूर, कब तक घोटा करूं।

खोजी–दूने पैसे देंगे हम।

हज्जाम–माना, मगर कोई हद भी है?

खोजी–तुमको इससे क्या मतलब !

हज्जाम–खून निकलने लगेगा।

आज़ाद–और अच्छा है; लोग कहेंगे, नौसा के चेहरे से खून बरसता है।

खोजी–हां, खूब सोची।

हज्जाम–(किसबत संभालकर) अब किसी और नाई से घुटवाइए।

आज़ाद–अच्छा, पट्टे तो कतरते जाओ।

हज्जाम ने झल्लाकर आधे बाल कतर डाले। एक तरफ की आधी मूंछ उड़ा दी। खोजी एक तो यों ही बड़े हसीन थे, अब हज्जाम ने बाल कतरकर और भी ठीक बना दिया। खोजी ने जो आईने में अपनी सूरत देखती, तो मूंछें नदारद। झल्लाकर कहा–ओ गीदी, यह क्या किया? हज्जाम डरा कि कहीं यह साब मार न बैठें।

आज़ाद–क्यों, क्यों खफा हो गए भई !

खोजी–इसने पट्टे ऊल-जलूल कतरे, और आप बोले तक नहीं?

आज़ाद–मैं सच कहता हूं, आप इतने हसीन कभी न थे।

खोजी–और चेहरे की तो फिक्र करो।

आज़ाद–हां, हां, घबराते क्यों हो?

खोजी–हमको याद आता है कि नौशा के सामने छोटे-छोटे लड़के गजलें पढ़ते हैं। दो-एक लौंडे बुलवा लीजिए, तो उनको गजलें रटा दें।

आज़ाद ने दो लड़के बुलवाए, और मियां खोजी उनको गजलें याद कराने लगे। एक गजल मियां आज़ाद ने यह बतलाई–

भला यह तो बताओ कि यह कौन बशर है;
सब सूरते लंगूर, फकत दुम की कसर है।

खोजी–चलिए, बस अब दिल्लगी रहने दीजिए। वाह, अच्छे मिले !

आज़ाद–अच्छा, और गजल लिखवाए देता हूं–

फ़ुगां है, आह है, नाला है, बेकरारी है,
फिराके-यार में हालत अजब हमारी है।

खोजी–वाह, शादी को इस शेर से क्या वास्ता !

कहा था बुलबुल से हाल मैंने
तेरे सितम का बहुत छिपा कर,
यह किसने उनको खबर सुनायी
कि हंस पड़े फूल खिलखिलाकर।
मेरे जनाजे को उनके कूचे में
नाहक अहबाब लेके आये;
निगाहे-हसरत से देखते हैं
वह रुख से परदा उठा-उठा कर।

खोज़ी–वाह, जंनाजे का शादी से क्या मतलब है भला !

आज़ाद–ऊपरवाला शेर पसंद है?

खोजी–हां, हंसना और खिलखिलाना, ऐसे लफ्ज हों, तो क्या पूछना !

आज़ाद–अच्छा, और सुनिए।

खोजी–नहीं, इतना ही काफी है। जरा बाजे वालों की तो फिक्र कीजिए। हाथी, घोड़े, पालकी, सभी चाहिए। मगर हमारे लिए जो घोड़े मंगवाइएगा, वह जरा सीधा हो।

आज़ाद–भला, घोड़ा न मिले, तो खच्चर हो तो कैसा?

खोजी–वाह, आपने मुझे कोई गधा समझा है?

इतने में होटल का मैनेजर आ गया और यह तैयारियां देखकर हंसने लगा।

खोजी–क्यों साहब, यह आप हंसे क्यों?

मैनेजर–जनाब, यहां शरीफ लोग शदियों में बाजे-गाजे नहीं लै जाते, और पैदल ही ज़ाते हैं। हां, एक बात हो सकती है, दस-पांच आदमियों को थालियां दे दीजिए, बांस की खपाचों से उन्हें बजाते जायं। आवाज की आवाज और बाजे का बाजा।

खोजी–भई आज़ाद, सोच लो।

आज़ाद–वह जब वहां दस्तूर ही नहीं, तो फिर क्या किया जायगा? हां, नौशे का पैदल जाना जरा बदनामी की बात है।

मैनेजर–तो पैदल न जाइए। जिस तरह यहां के रईस लोग जाते हैं, उस तरह जाइए–आदमी की गोद में।

खोजी–मंजूर। मगर हमको उठा सकेगा कोई?

मैनेजर–हम इसका बंदोबस्त कर देंगे। आप घबराएं नहीं।

दो घड़ी दिन रहे खोजी की बरात चली। तीन मजदूर आगे-आगे थालियां बजाते जाते हैं, दो लौंडे आगे-पीछे साथ। खोजी एक मजदूर की गोद में, गेरुए कपड़े पहने, अकड़े बैठे हैं। एकाएक आप बोले–अरे रे रे ! रोक लो बरात। रोक लो। पंशाखवाले कहां हैं? कोई बोलता ही नहीं। परदेस में भी इंसान पर क्या मुसीबत पड़ती है? अब मैं दूल्हा बनकर रहूं, या इंतजाम करूं ! ये दोनों गीदी तो निरे जांगलू ही निकले। फिर याद आया कि निशान का हाथी तो है ही नहीं। अरे ! करौली भी नहीं। हुक्म दिया कि लौटा दो बरात। चलो होटल में।

आज़ाद–यह क्यों भई? क्या बात है? लौटे क्यों जाते हो?

खोजी–निशान का हाथी तो है ही नहीं।

आज़ाद–अजब आदमी हो भई, आप लड़ने जाते हैं, या शादी करने? और फिर यहां हाथी कहां? कहिए तो खच्चर पर एक झंडी रखवा दें।

इतने में मिस मीडा आती हुई दिखाई दीं। खोजी उन्हें देखते ही और भी अकड़ गए। क्या कहूं, मेरे साथ के आदमी सब गोली मार देने लायक हैं। कोई इंतजाम ही न किया।

मीडा–खैर, कल आ जाइएगा। मगर आप से एक बात कहनी है। यहां एक रूसी बहुत दिनों से मेरा आशिक है। पहले उससे लड़ो, फिर हमारे साथ शादी हो।

खोजी–मजाल है उसकी कि मेरे सामने खड़ा हो जाय? हम पचास आदमियों से अकेले लड़ सकते हैं। जब बरात होटल पहुंची, तो मीडा ने कहा–तो उनसे कब लड़िएगा?

खोजी–जब कहिए। खून पी जाऊंगा !

मीडा–अच्छा, कल तैयार रहिएगा !

दूसरे दिन मीडा ने एक तुर्की पहलवान को लाकर होटल में बिठा दिया और खोजी से बोली–लीजिए, आपका दुश्मन आ गया। खोजी ने जब उसे देखा, तो होश उड़ गए। दुनिया भर के आदमियों से दो मुट्ठी ऊंचा। दिल में सोचने लगे, यह तो कच्चा ही खा जायगा। एक चपत दे, तो हम जमीन में धंस जायं। इससे लड़ेगा कौन भला? मारे डर के जरा पीछे हट गए। मीडा ने कहा–आप तो अभी से डरने लगे। खोजी एकाएक धड़ाम से गिर पड़े और चिल्लाने लगे–इस तरह का दर्द हो रहा है कि कुछ न पूछो। अफसोस, दिल की दिल में ही रह गई ! वल्लाह, वह पटकनी देता कि कमर टूट जाती। मगर खुदा को मंजूर न था। तुर्की पहलवान ने इनका हाथ पकड़कर झटका दिया, तो दस कदम पर जा गिरे। बोले–ओ गीदी, जरा बीमार हो गया हूं, नहीं तो कच्चा ही खा जाता, नमक भी न मांगता।

आखिर इस बात पर फैसला हुआ कि जब खोजी अच्छे हो जायं, तो फिर किसी दिन क़ुश्ती हो।

साठ

मियां शहसवार का दिल दुनिया से तो गिर गया था, मगर जोगिन की उठती जवानी देखकर धुन समाई कि इसको निकाह में लावें। उधर जोगिन ने ठान ली थी कि उम्र भर शादी न करूंगी। जिसके लिए जोगिन हुई, उसी की मुहब्बत का दम भरूंगी। एक दिन शहसवार ने जो सुना कि सिपहआरा कोठे पर से कूद पड़ी, तो दिल बेअख्तियार हो गया। चल खड़े हुए कि देखें, माजरा क्या है? रास्ते में एक मुंशी से मुलाकात हो गई। दोनों आदमी साथ-साथ बैठे, और साथ ही साथ उतरे। इत्तफाक से रेल से उतरते ही मुंशी जी को हैजा हो गया। देखते-देखते चल बसे। शहसवार ने जो देखा कि मुंशी के पास दौलत काफी है, तो फौरन उनके बेटे बन गए और सारा माल-असबाब लेकर चंपत हो गए। सात हजार की अशर्फियां, दस हजार के नोट और कई सौ रुपये हाथ आए। रईस बन बैठे। फौरन जोगिन के पास लौट गए।

जोगिन–क्या गए नहीं?

शहसवार–आधी ही राह से लौट आए। मगर हम अमीर होकर आए हैं।

जोगिन–अमीर कैसे ! बोलो? हमको बनाते हो?

शहसवार–कसम खुदा की, हजारों ले कर आया हूं। आंखें खुल जायंगी।

दुनिया के भी अजब कारखाने हैं। शहसवार को बाईस हजार तो नकद मिले और अब कपड़ों की गठरी खोली, तो एक टोपी निकल आई, जिसमें हीरे और मोती टंके हुए थे। जोगिन के आशिकों में एक जौहरी भी था। उसने यह टोपी बीस हजार में खरीद ली। जब जौहरी चला गया, तो शहसवार ने जोगिन से कहा–लो, अब तो अल्लाह मियां ने छप्पर फ़ाड़ के दौलत दी। कहो, अब निकाह की ठहरती है? क्यों मुफ्त में जवानी खोती हो?

जोगिन–अब रंग लाई गिलहरी। ओछे के घर तीतर, बाहर रखूं कि भीतर। रुपये क्या मिल गए, अपने आपको भूल गए।

शहसवार सचमुच ओछा था। अब तक तो आप जोगिन की खुशामद करते थे, ढई दिए बैठे थे कि कभी न कभी तो दिल पसीजेगा; मगर अब जमीन पर पांव ही नहीं रखते। बात-बात पर तिनकते हैं। जोगिन तो दुनिया से मुंह मोड़े बैठी थी, इनके चोंचले क्यों बर्दाश्त करती? शहसवार से नफरत करने लगी।

एक दिल शहसवार हवा के घोड़े पर सवार डींग मारने लगे–इस वक्त हम भी लाख के पेटे में हैं। और लाख रुपये जिसके पास होते हैं, उनको लोग तीन-चार लाख का आदमी आंकते हैं। अब दो घोड़े और लेंगे। मगर हम यह महाजनी कारखाना न रखेंगे कि चारमाजा और जीनपोश। बस, अंगरेजी कोठी और एक जोड़ी फिटन के लिए। जो देखे, कहे, रईस जाता है। और रईस के क्या दो सींग होते हैं सिर पर? एक कोठी भी बनवाएंगे। कोई ताल्लुकेदार अपना इलाका बेचे, तो खड़े-खड़े खरीद लें।

जोगिन–अच्छा, खाना तो खा लो।

शहसवार–आज खाना क्या पका है?

जोगिन–बेसन की रोटी।

शहसवार–यह तो रईसों का खाना नहीं।

जोगिन–रईस कौन है?

शहसवार–हम-तुम, दोनों। क्या अब भी रईस होने में शक है? हां, खूब याद आया, एक हाथी भी खरीदेंगे।

जोगिन–हां, बस इसी की कसर थी। दो-तीन गधे भी खरीदना।

शहसवार–गधे तो रईसों के यहां नहीं देखे।

जोगिन–नयी बात सूझी।

शहसवार–हां, खूब सूझी।

जोगिन–फिर, यह सब कब खरीदोगे?

शहसवार–जब चाहें ! रुपये का तो सारा खेल है। तीस-चालीस हजार रुपये बहुत होते हैं। इंसान गिने, तो बरसों में गिनती खतम हो।

जोगिन–अजी, दो-तीन आदमी तो इतने अर्से में मर जाएं, दस-पांच की आंखें फूट जायं।

उस दिन से शहसवार की हालत ही कुछ और हो गई। कभी रोते, कभी बहकी-बहकी बातें करते। आखिर जोगिन ने वहां से कहीं भाग जाने का इरादा किया। पड़ोस में एक आदमी रहता था, जो मोम के खिलौने खूब बनाता था। मोम के आदमी ऐसे बनाता था कि असल में धोखा होता था। उसे बुलाकर जोगिन ने उसके कान में कुछ कहा और कारीगर दस दिन की मुहलत लेकर रुखसत हुआ।

नौ दिन तक तो जोगिन ने किसी तरह काटे, दसवें दिन एकाएक शहसवार ने उसे देखा, तो चुपचाप पड़ी है। बुलाया; जवाब नदारत। करीब जाकर देखा तो पछाड़ खाकर गिर पड़े। लगे दीवार से सिर टकराने ! जी में आया कि जहर खा लें और इसी के साथ चले चलें। क्या लुत्फ से दिन कटते थे, अब ये रुपये किस काम आवेंगे। जान जाने का रंज नहीं, मगर यह रुपया कहां जाएगा? आखिर वसीयत लिखी कि मेरे बाद मेरी सारी जायजाद सिपहआरा को दी जाए। यह वसीयत लिखकर शहसवार ने सिर पीटना शुरू किया। खिलौना बनाने वाला कारीगर उसे समझाने लगा–सब्र कीजिए ! हाय, क्या मिजाज था। यह कह कर वह अपने भाई को बुला लाया। दोनों ने लाश को खूब लपेट कर कंधे पर उठाया। मियां शहसवार पीछे-पीछे चले।

कारीगर–तुम क्यों आते हो? कब्रिस्तान बहुत दूर है।

शहसवार–कब्र तक तो चलने दो।

कारीगर–क्या गजब करते हो। थानेवालों को खबर हो गई तो मुफ्त में धरे जाओगे।

शहसवार–मिट्टी तो दे दूं।

कारीगर–बस, अब साथ न आइए।

इकसठ

कैदखाने से छूटने के बाद मियां आज़ाद को रिसाले में एक ओहदा मिल गया। मगर अब मुश्किल यह पड़ी कि आज़ाद के पास रुपये न थे। दस हजार रुपये के बगैर तैयारी मुश्किल। अजनबी आदमी, पराया मुल्क, इतने रुपये का इंतजाम करना आसान न था। इस फिक्र में मियां आज़ाद कई दिन तक गोते खाते रहे। आखिर यही सोचा कि यहां कोई नौकरी कर लें और रुपये जमा हो जाने के बाद फौज़ में जायं। मन मारे बैठे हुए थे कि मीडा आकर कुर्सी पर बैठ गई। जिस तपाक के साथ आज़ाद रोज पेश आया करते थे, उसका आज पता न था। चकराकर बोली—उदास क्यों हो ! मैं तो तुम्हें मुबारकबाद देने आई थी। यह उलटी बात कैसी?

आज़ाद—कुछ नहीं। उदास तो नहीं हूं।

मीडा—जरा आईने में सूरत तो देखिए।

आज़ाद—हां, मीडा, शायद कुछ उदास हूं। मैंने तुमसे अपने दिल की कोई बात कभी नहीं छिपाई। मुझे ओहदा तो मिल गया, मगर यहां टका पास नहीं। कुछ समझ में नहीं आता क्या करूं?

मीडा—बस, इसीलिए आप इतने उदास हैं ! यह तो कोई बड़ी बात नहीं। तुम इसकी कोई फिक्र न करो।

यह कहकर मीडा चली गई और थोड़ी देर बाद उसके आदमी ने आकर एक लिफाफा आज़ाद के हाथ में रख दिया। आज़ाद ने लिफाफा खोला, तो उछल पड़े। इंस्तेबोल-बैंक के नाम बीस हजार का चेक था। आज़ाद रुपये पाकर खुश तो हुए, मगर यह अफसोस जरूर हुआ कि मीडा ने अपने दिल में न जाने क्या समझा होगा। उसी वक्त बैंक गए, रुपये लिए और सब सामान ठीक करके दूसरे दिन फौज में दाखिल हो गए।

दोपहर के वक्त घड़घड़ाहट की आवाज आई। खोजी ने सुना, तो बोले—यह आवाज कैसी है भई? हम समझ गए। भूचाल आने वाला है। इतने में किसी ने कहा—फौज जा रही है। खोजी कोठे पर चढ़ गए। देखा, फौज सामने आ रही है। यह घड़घड़ाहट तोपखाने की थी। जरा देर में आज़ाद पर नजर पड़ी। घोड़े की बाग उठाए, रान जमाए चले जाते थे। खोजी ने पुकारा—मियां आज़ाद ! अरे मियां, इधर, इधर ! वाह, सुनते ही नहीं। फौज में क्या हो गए, मिजाज ही नहीं मिलते। हम भी पलटन में रह चुके हैं, रिसालदार थे, पर यह न था कि किसी की बात न सुनें।

सारे शहर में एक मेला सा लगा हुआ था, कोठे फटे पड़ते थे। औरतें अपने शौहरों को लड़ाई पर जाते देखती थीं और उन पर फूलों की बौछार करती थीं। मांएं अपने बेटों के लिए खुदा से दुआ कर रही थीं।

फौज तो मैदान को गई और मियां खोजी मिस मीडा से मिलने चले। मीडा की एक सहेली का नाम था मिस रोज। मीडा खोजी को देखते ही बोली—लीजिए, मैंने आपकी शादी मिस रोज से ठीक कर दी। अब कल बरात ले कर आइए।

खोजी—खुदा आपको इस नेकी का बदला दे। मैं तो वजीर-जंग को भी नवेद दूंगा।

मीडा—अजी, सुलतान को भी बुलाइए।

खोजी—तो फिर बंदोबस्त कीजिए। शादी के लिए नाच सबसे ज्यादा जरूरी है। अगर तबले पर थाप न पड़ी, महफिल न जमी, तो शादी ही क्या?

मीडा—मगर यहां तो आदमी का नाच मना है। कहीं कोई औरत नाचे, तो गजब ही हो जाए।

खोजी—अच्छा, फिर किसी सबील से नाच का नाम तो हो जाए।

मीडा—इसकी तदबीर यों कीजिए कि किसी बंदर नचाने वाले को बुला लीजिए। खर्च भी कम और लुत्फ भी ज्यादा। तीन बंदरवाले काफी होंगे।

खोजी—तीन तो मनहूस हैं। पांच हो जाएं, तो अच्छा !

खैर, दूसरे दिन खोजी बरात सजाकर मीडा के मकान की ओर चले। आगे निशान का खच्चर था, पीछे रीछ और बंदर। दस-पांच लड़के मशालें लिए खोजी के चारों तरफ चले जाते थे, और खोजी टट्टू इतना मरियल था कि खोजी बार-बार उछलते थे, एड़-पर-एड़ लगाते थे, मगर वह दो कदम आगे जाता था तो चार कदम पीछे। एकाएक टट्टू बैठ गया। इस पर लड़कों ने उसे डंडे मारना शुरू किया। खोजी बिगड़कर बोले—ओ मसखरो, तुम सब हंसते क्या हो। जल्द कोई तदबीर बताओ, वर्ना मारे क़रौलियों के बौला दूंगा।

साईस—हुजूर, मैं इस घोड़े की आदत खूब जानता हूं। यह बगैर चाबुक खाए उठने वाले नहीं।

खोजी—तू मसलहत करता है कि किसी तदबीर से टट्टू को मनाता है?

साईस—आप उतर पड़िए।

खोजी उतर पड़े और साईस ने टट्टू को मार-मार कर उठाया। खोजी फिर सवार होने चले। एक पैर रकाब पर रखकर दूसरा उठाया ही था कि टट्टू चलने लगा। खोजी अरा-रा करके धम से जमीन पर आ रहे। पगड़ी यह गिरी, करौली वह गिरी। डिबिया एक तरफ, टट्टू एक तरफ। साईस ने कहा—उठिए, उठिए ! घोड़े से गिरना शहसवारों ही का काम है। जिसे घोड़ा नसीब नहीं, वह क्या गिरेगा?

खोजी—खैरियत यह हुई कि मैं घोड़े पर न गिरा, वर्ना मेरे बोझ से उसका काम ही तमाम हो जाता।

खोजी ने फिर सिर पर पगड़ी रखी, करौली कमर से लगाई और एक लड़के से पूछा—यहां आईना तो कहीं नहीं मिलेगा? फिर से पोशाक सजी है, जरा मुंह तो देख लेते।

लड़का—आईना तो नहीं है, कहिए पानी ले आऊं। उसी में मुंह देख लीजिए। यह कहकर वह एक हांड़ी में पानी लाया। खोजी पीनक में तो थे ही, हांड़ी जो उठाई तो सारा पानी ऊपर आ रहा। बिगड़ कर हांडी पटक दी। फिर आगे बढ़े। मगर दो-चार कदम चलकर याद आया कि मिस रोज का मकान तो मालूम ही नहीं; बरात जाएगी कहां? बोले—यारो, गजब हो गया ! जुलूस रोक लो। कोई मकान जानता है?

साईस—कौन मकान?

खोजी—वही जी जहां चलना है।

साईस–मुझे क्या मालूम? जिधर कहिए चलूं।

खोजी–तुम लोग अजीब घामड़ हो। बरात चली और दुलहिन के घर का पता तक न पूछा।

साईस–नाम तो बताइए? किसी से पूछ लिया जाए।

खोजी–अरे, भई, मुझे उनका नाम न लेना चाहिए। अटकल से चलो उसी तरफ।

साईस–अरे, कुछ नाम तो बताइए !

खोजी–कोहकाफ की परी कह दो। पूरा नाम हम न लेंगे।

एक तरफ कई आदमी बैठे हुए थे। साईस ने पूछा–यहां कोई परी रहती है?

एक आदमी ने कहा–मुझे और तो नहीं मालूम, मगर शहर-बाहर पूरब को तरफ जो एक तालाब है, वहां पार साल जो एक फकीर टिके थे, उनके पास एक परी थी।

खोजी–लो, चल न गया पता ! उसी तालाब की तरफ चले चलो।

अब सुनिए। उस तालाब पर एक रईस की कोठी थी। उसकी बीवी मर गई थी। घर में मातम हो रहा था। दरवाजे पर जो यह शोर-गुल मचा, तो उसने अपने नौकरों से पूछा–यह कैसा गुल है? बाहर निकल कर खूब पीटो बदमाशों को ! दो-तीन आदमी डंडे ले-ले कर फाटक से निकले।

खोजी–वाह रे आप के यहां का इंतजाम ! कब से बरात खड़ी, और दरवाजे पर रोशनी तक नदारद !

एक आदमी–तू कौन है बे? क्या रात को बंदर नचाने आया है?

खोजी–जबान संभाल ! जाकर अपने मालिक से कह, बरात आ गई है।

आदमियों ने बरात को पीटना शुरू किया। खोजी पर एक चपत पड़ी, तो पगड़ी गिर पड़ी। दूसरे ने टट्टू पर डंडे जमाए।

खोजी–भई, ऐसी दिल्लगी न करो। कुछ कमबख्ती तो नहीं आयी तुम सबकी?

बंदर वालों पर जब मार पड़ी, तो वे सब भागे। लड़के भी चिराग फेंकेक-फांक कर भागे। टट्टू ने भी एक तरफ की राह ली। बेचारे खोजी अकेले पिट-पिटा कर होटल की तरफ चले।

बासठ

जोगिन शहसवार से जान बचाकर भागी, तो रास्ते में एक वकील साहब मिले। उसे अकेले देखा, तो छेड़ने की सूझी। बोले–हुजूर को आदाब ! आप इस अंधेरी रात में अकेले कहां जाती हैं?

जोगिन–हमें न छेड़िए।

वकील–शाहजादी हो? नवाबजादी हो? आखिर हो कौन?

जोगिन–गरीबजादी हूं।

वकील–लेकिन आवारा।

जोगिन–जैसा आप समझिए।

वकील–मुझे डर लगता है कि तुम्हें अकेला पाकर कोई दिक न करे। मेरा मकान करीब है, वहीं चल कर आराम से रहो।

जोगिन–मुझे आपके साथ जाने में कोई उज्र नहीं, मगर शर्त यही है कि मेरी इज्जत के खिलाफ कोई बात न हो।

वकील–यह आप क्या फर्माती हैं? मैं शरीफ आदमी हूं।

वकील साहब देखने में तो शरीफ मालूम होते थे, मगर दिल के बड़े खोटे थे। जोगिन ने समझा कि इस वक्त और कहीं जाना तो मुनासिब नहीं। रात को यहीं रह जाऊं, तो क्या हरज? वकील साहब के घर गई तो देखा, एक कमरे में टाट पर दरी बिछी है, और एक टूटी मेज पर कलम-दावात रखी है। समझ गई, यह कोई टटपूंजिए वकील हैं।

रात ज्यादा आ गई थी। जब जोगिन सोई, तो वकील साहब ने अपने नौकर सलारबख्श को यों पट्टी पढ़ाई–तुम सुबह इनसे कहना कि वकील साहब बहुत बड़े रईस हैं। इनके बाप चकलेदार थे। इनके यहां दो बग्घियां हैं और आदमियों की तनख्वाह महीने में तीन सौ रुपये देते हैं।

सलारबख्श–भला वह यह न कहेंगी कि रईस हैं, तो फटेहालों क्यों रहते हैं? एक तो खटिया आपके पास, और उस पर ये बातें कि हम ऐसे और हम वैसे। हां, मैं इतना कह दूंगा कि हमारे हुजूर दिल के बड़े वह हैं।

वकील–वह के क्या माने?

सलारबख्श–अजी, चालाक हैं।

वकील–आज खाना दिल लगाकर पकाना।

सलारबख्श–तो किसी बावरची को बुला लीजिए न ! दो रुपये खरचिए, तो अच्छे से अच्छे खाने पकवा दूं। और, इनके लिए कोई मामा रखिए। बे इसके बात न बनेगी। हां, चाहे मार डालिए हमें, हम झूठ न बालेंगे कभी।

वकील–देखो, सब फिक्र हो जाएगी।

सलारबख्श–फिक्र क्या खाक होगी? मुकदमेवाले तो आते ही नहीं।

वकील–अजी, एक मुकदमे में उम्र भर की कसर निकल जाएगी।

सलारबख्श–तो क्या मिलेगा एक मुकदमे में?

वकील–अजी, मिलने की न कहो। मिलें, तो दो लाख जाएं।

सलारबख्श–ऐं, इतना झूठ ! मियां, मैं नौकरी नहीं करने का। देखिए, छत न गिर पड़े कहीं ! लोग कहते हैं, काल पड़ता है, हैजा आता है, मेंह नहीं बरसता। बरसे क्या खाक, इस झूठ को तो देखिए, कुछ ठिकाना है, दो लाख एक मुकदमे में आप पाएंगे। कभी बाबा राज ने भी दो लाख की सूरत देखी थी? हमने तो आपके बाबा को भी जूतियां चटकाते ही देखा। वह तो कहिए, फकीर की दुआ से रोटियां चली जाती है। यही गनीमत समझो?

वकील–तुम बड़े गुस्ताख हो।

सलारबख्श–मैं तो खरी-खरी कहता हूं।

वकील–खैर, कल एक काम तो करना ! जरा दो-एक आदमियों को लगा लाना।

सलारबख्श–क्या करना?

वकील–दो आदमियों को मुवक्किल बना कर ले आना, जिसमें यह समझें के इनके पास मुकदमे बहुत आते हैं। हम तो रंग जमाते हैं न अपना। यह बात ! समझे !

सलारबख्श–अगर दो-एक को फांस-फूंस कर लाए भी, तो फायदा क्या? टका तो वसूल न होगा।

वकील–वह समझेंगी तो कि यह बहुत बड़े वकील हैं।

सलारबख्श–अच्छा, इस वक्त तो सोइए। सुबह देखी जाएगी।

दोनों आदमी सोए। सबसे पहले जोगिन की आंख खुली। सलारबख्श से बोली–क्यों जी, इनका नाम क्या है?

सलारबख्श–इनका नाम है हींगन।

जोगिन–क्या? हींगन? तब तो शरीफ जरूर होंगे। और इनके बाप का नाम क्या है? बैंगन।

सलारबख्श–बाप का नाम मदारी।

जोगिन–वाह, बस, मालूम हो गया। और पेशा क्या है?

सलारबख्श–दलाली करते हैं।

जोगिन–एं, यह दल्लाल हैं?

सलारबख्श–जी, और क्या। बाप-दादे के वक्त से दलाली होती आती है।

वकील साहब लेटे-लेटे सुन रहे थे और दिल ही दिल में सलारबख्श को गालियां दे रहे थे कि पाजी ने जमा-जमाया रंग फीका कर दिया। इतने में बारह की तोप दगी और वकील साहब उठ बैठे।

वकील–पानी लाओ। आज वह दूसरा खिदमतगार कहां है?

सलारबख्श–हुजूर, चिट्ठी ले गया है।

वकील–और मामा नहीं आई?

सलारबख्श–रात उसके लड़का हुआ है।

वकील–और कालेखां कहां मर गया आज !

सलारबख्श–लालखां के पास गया है हुजूर !

वकील–और हमारा मुहर्रिर?

सलारबख्श–उन्हें नवाब साहब ने बुलवा भेजा है।

वकील–सब मुवक्किल कहां हैं?

सलारबख्श–हुजूर सब वापस चले गए।

वकील–कुछ परवा नहीं। हमको मुकदमों की क्या परवा !

सलारबख्श–हुजूर के घर की रियासत क्या कम है।

वकील–(जोगिन से) आज तो आप खूब सोईं।

जोगिन–मारे सर्दी के रात भर कांपती रही। कसम ले लो, जो आंखें भी झपकी हों। यह तो बताइए, आपका नाम क्या है?

वकील–हमारा नाम मौलवी मिरजा मुहम्मद सादिकअली बेग, वकील अदालत।

जोगिन–'घर की पुटकी बासी साग।'

वकील–ऐ, और सुनिए।

जोगिन–तुम्हारा नाम हींगन है? और बैंगन के लड़के हो? दलाली करते हो?

वकील–हींगन किस पाजी का नाम है?

सलारबख्श–इनसे किसी ने हींगन कह दिया होगा।

वकील–तेरे सिवा और कौन कहने बैठा होगा?

सलारबख्श–तो क्या मैं ही अकेला आपका नौकर हूं कुछ? पंद्रह-बीस आदमी हैं। किसी ने कह दिया होगा। इसको हम क्या करें, ले भला?

वकील–ऊपर से और हंसता है बेगैरत ! (जोगिन से) हमसे एक फकीर ने कहा है कि तुम जल्द बादशाह होने वाले हो।

जोगिन–हां, फिर उल्लू तुम्हारे सिर पर बैठा ही चाहता है। दो ही तरह से गरीब आदमी बादशाह हो सकता है–या तो टांग टूट जाए, या उल्लू सिर पर बैठे। अच्छा, आपकी आमदनी क्या होगी?

वकील–यह न पूछो। कुछ रुपया गांव से आता है, कुछ वसीका है, कुछ वकालत से पैदा करते हैं।

जोगिन–और सवारी क्या है आपके पास?

वकील–आजकल तो बस, एक पालकी है और दो घोड़े।

जोगिन–बंधते कहां हैं?

सलारबख्श–इधर एक अस्तबल है, और उसके पास ही फीलखाना।

जोगिन–ऐं, क्या आपके पास हाथी भी है?

वकील–नहीं जी कहने दो इसे। यह यों ही कहा करता है।

जोगिन–अच्छा, वकालत में क्या मिलता होगा?

वकील–अब तो आजकल मुकदमे ही कम हैं।

जोगिन–तो भी भला?

सलारबख्श–इसकी न पूछिए, किसी महीने में दो-चार हाथी आ गए, किसी महीने दस-पांच ऊंट मिल गए।

वकील–तू उठ जा यहां से। हजार बार कह दिया कि मसखरेपन से हमको नफरत है, मगर मानता ही नहीं शैतान ! तुझसे कुछ कहा था हमने !

सलारबख्श–हां, हां, याद आ गया। लीजिए अभी जाता हूं।

वकील साहब सलारबख्श के साथ बरामदे में आए कि कुछ और समझा दें, तो सलारबख्श ने कहा–अभी सबों को फांस लाता हूं। आप इतमिनान से बैठें। मगर यह भी बैठी रहें, जिसमें लोग समझें कि वकील की बड़ी आमदनी है। मैं कह दूंगा कि गाना सुनने के लिए नौकर रखा है। सौ रुपये महीना देते हैं।

वकील–सौ नहीं दो सौ कहना।

सलारबख्श–वही बात कहिएगा, जो बेतुकी हो। भला किसी को भी दुनिया में यकीन आवेगा कि यह वकील दो सौ रुपये खर्च कर सकता है?

वकील—क्यों, क्यों?

सलारबख्श—अब आप तो हिंदी की चिंदी निकालते हैं, धेले-धेले पर तो आप मुकदमे लेते हैं, दो सौ की रकम भला आप क्या खर्च करेंगे?

वकील—अच्छा, बक न बहुत। जा, फांस ला दो-चार को।

सलारबख्श बाहर जाकर दो-चार अड़ोसियों-पड़ोसियों को सिखाकर-पढ़ाकर मूंछों पर ताव देते हुए आया और हुक्का भरकर जोगिन के सामने पेश किया।

जोगिन—क्या कक्कड़वाले की दूकान से लाए हो? हटा ले जाओ इसे ! तुम्हें मदरिया भी नहीं जुरता?

वकील—अरे, तू यह हुक्का कहां से उठा लाया? वह हुक्का कहां है, जो नसीरुदीन हैदर के पीने का था? वह गंगा-जमनी गुडगुड़ी कहां है, जो हमारे साले ने भेजी थी।

सलारबख्श—वह हुजूर के बहनोई ले गए।

वकील—तो आखिर, पेचवान और चांदी का हुक्का क्यों नहीं निकालते? यह भदेसल हुक्का उठा लाए वहां से।

सलारबख्श—खुदावंद, वह सब तो बंद हैं।

जोगिन—आखिर यह सब समान बंद कहां है? जरी सा तो मकान आपका, मुर्गी के टापे के बरब्बर। वह किन कोठों में बंद है सबका सब?

इतने में एक मुकदमेवाला आया। एक हाथ में झाड़ू, दूसरे में पंजा। आते ही झाड़ू कोने में खड़ी कर दी और पंजा टेक कर बैठा गया। वकील साहब सिर से पैर तक फुंक गए। पूछा—तुम कौन? उसने कहा—हम भंगी हैं साहब। जोगिन मुसकिराई। वकील ने सलारबख्श की तरफ देखा। सलारबख्श सिर खुजलाने लगा।

वकील—क्या चाहता है?

भंगी—हुजूर, मेरी टट्टी का एक बांस कोई निकाल ले गया। हुजूर को वकील करने आया हूं। गुलाम हूं खुदावंद।

वकील—कोई है, निकाल दो इस पाजी को।

सलारबख्श—खुदावंद, अमीरों का मुकदमा तो आप लें, और गरीबों का कौन ले? वकील तो दर्जी की सुई है, कभी रेशम में, कभी लट्ठे में !

वकील—गरीबों का मुकदमा गरीब वकील ले।

सलारबख्श—अब तो हुजूर, इसकी फरियाद सुन ही लें। अच्छा मेहतर, बताओ क्या दोगे?

मेहतर—हमारे पास तो दो मट्ठू-साही हैं।

वकील—(झल्ला कर) निकालो, निकालो इस कंबख्त को !

वकील साहब ने गुस्से में मेहतर की झाड़ू उठा ली और उस पर खूब हाथ साफ किया। वह झाड़ू-पंजा छोड़ कर भागा।

जोगिन—अच्छा, आप अब अलग ही रहिएगा। जा कर गुस्ल कीजिए।

वकील—आज तो बड़ी सर्दी है।

जोगिन—अल्लाह जानता है, गुस्ल करो, नहीं तो छुएंगे नहीं।

सलारबख्श—हां, सच तो कहती हैं।

वकील–तू चुप रह।

जोगिन ने सलारबख्श को हुक्म दिया कि तुम पानी भरो। सलारबख्श पानी भर लाए। वकील साहब ने रोते-रोते कपड़े उतारे, लुंगी बांधी और बैठे। जैसे बदन पर पानी पड़ा, आप गुल मचाकर भागे। सलारबख्श चमड़े का डोल लिए हुए पीछे दौड़ा। फिर पानी पड़ा, फिर रोए। जोगिन मारे हंसी के लोट-लोट गई। बारे किसी तरह आपका गुस्ल पूरा हुआ। थर-थर कांप रहे थे। मुंह से बात न निकलती थी। उस पर सलारबख्श ने पंखा झलना शुरू किया, तब तो और भी झल्लाए और कसकर उसे दो-तीन लातें लगाईं। सलारू भाग खड़े हुए।

जोगिन–अब यह दरी तो उठवाओ।

वकील–क्यों, दरी ने क्या कसूर किया?

सलारबख्श–हुजूर, भंगी तो इसी पर बैठा था।

वकील–अरे, तू फिर बोला ! कसम खुदा की, मारते-मारते उधेड़ कर रख दूंगा।

जोगिन–सलारबख्श, यह चांदनी उठा ले जाओ।

दरी उठी, तो कलई खुल गई। नीचे एक फटा-पुराना टाट पड़ा था, बाबा आदम के वक्त का। वकील कट गए। जोगिन ने कहा–ले, अब इस पर कोई फर्श बिछवाओ।

वकील–वह बड़ी दरी लाओ, जो छकड़े पर लदकर आई थी।

सलारबख्श–वह ! उसको तो एक लौंडा चुरा ले गया।

जोगिन–खुदा की पनाह, छकड़े पर लद कर तो मुई दरी आई, और जरा सा लौंडा चुरा ले गया !

वकील–अच्छा, वह न सही, जाओ, और जो कुछ मिले उठा लाओ।

यह कहकर वकील साहब तो बरामदे में चले गए और सलारबख्श जाकर अपना कंबल और एक दस्तरख्वान उठा लाया। वकील कमरे में आए, तो देखा कि दस्तरख्वान बिछा हुआ है और जोगिन खिलखिलाकर हंस रही है। सलारबख्श एक कोठरी में छिप रहा था। वकील ने झल्लाकर डंडा निकाला और कोठरी में घुसकर उसे दो-तीन डंडे लगाए। फिर डांट कर कहा–आखिर जो तू मेरा नमक खाता है, तो मेरा रंग क्यों फीका करता है? मैं एक कहूं तो दो कहा कर। खैर-ख्वाही के माने यह हैं। सिखला दिया, समझा दिया, मगर तू हिंदी की चिंदी निकालता है।

सलारबख्श–अच्छा, हुजूर जैसा कहते हैं, वही करूंगा। और भी जो कुछ समझाना हो, समझा दीजिए। फिर मैं नहीं जानता।

वकील–अच्छा, हम जाते हैं, तू आकर कहना कि कसूर माफ कीजिए। और रोना खूब।

वकील साहब यह हिदायत करके चले गए और जोगिन से बातें करने लगे। इतने में सलारबख्श रोता हुआ आया। जोगिन धक से रह गई। सलारू थोड़ी देर तक खूब रोए, फिर वकील के कदमों पर गिरकर कहा–हुजूर, मेरा कसूर माफ करें।

वकील–अबे, तो कोई इस तरह रोता है?

जोगिन–मैं तो समझी कि आपके अजीजों में से कोई चल बसा।

इतने में वकील साहब के नाम एक खत आया। जोगिन ने पूछा–किसका खत है?

वकील–साहब के पास से आया है।

जोगिन–कौन साहब? कोई अंगरेज हैं?

वकील–हां, जिले के हाकिम हैं। हमसे याराना है।

सलारबख्श–आपसे न ! और उनसे भी तो याराना है, जिन्होंने जुर्माना ठोंक दिया था?

वकील–साहब ने हमें बुलाया है।

जोगिन–तो शायद आज तुम्हारी दावत वहीं है? तभी आज खाना-वाना नहीं पक रहा है। दोपहर होने को आई, और अभी तक चूल्हा नहीं जला।

वकील–अरे सलारू, खाना क्यों नहीं पकाता?

सलारबख्श–बाजार बंद है।

जोगिन–आग लगे तेरे मसखरेपन को ! यहां आंतें कूं-कां कर रही हैं, और तुझे दिल्लगी सूझती है।

वकील ने बाहर जाकर सलारू से कहा–बनिये से आटा क्यों नहीं लाता?

सलारबख्श–हुजूर, कोई दे भी। कोई दस बरस से तो हिसाब नहीं हुआ। बाजार में निकलता हूं, तो चारों तरफ से तकाजे होने लगते हैं।

वकील–अबे, इस वक्त तो किसी बहाने से मांग ला। आखिर कभी-न-कभी मुक़दमे आवेंगे ही। हमेशा यों ही सन्नाटा थोड़े ही रहेगा?

खैर, सलारबख्श ने खाना पकाया, और कोई चार बजे आठ मोटी-मोटी रोटियां, एक प्याली में माष की दाल और दूसरी में आध पाव गोश्त रख कर लाया !

वकील–अबे, आज पुलाव नहीं पका?

सलारबख्श–हुजूर, बिल्ली खा गई।

वकील–और गोश्त भी एक ही तरह का पकाया?

सलारबख्श–हुजूर मैं पानी भरने चला गया, तो कुत्ता चख गया।

जोगिन–यहां की बिल्ली और कुत्ते बड़े लागू हैं !

सलारबख्श–कुछ न पूछिए।

इतने में किसी ने दरवाजे पर हाथ मारा।

सलारबख्श–कौन साहब हैं।

वकील–देखो, मामू साहब न हों। कह देना, घर में नहीं हैं।

सलारबख्श–हुजूर, वह है मम्मन तेली।

वकील–कह दो, हम तेल-वेल न लेंगे। रात को हमारे यहां मोमबत्तियां जलती हैं, और खाने में तेल आता नहीं। फिर तेली का यहां क्या काम?

सलारबख्श–मुकदमा लाया है हुजूर !

तेली मैले-कुचैले कपड़े पहने हाथ में कुप्पी लिये आ कर बैठ गया।

वकील–क्या मांगता है?

तेली–एक आदमी ने हम पर नालिश कर दी है हुजूर ! अब आप ही बचावें तो बच सकता हूं।

वकील–मेहनताना क्या दोगे?

सलारबख्श–हाय, हाय, पहले इसकी फरियाद तो सुनो कि वह कहता क्या

है ! बस, मुर्दा दोजख में जाय चाहे बिहिश्त में, आपको अपने हलवे-मांडे से काम। बताओ भई, क्या दोगे?

तेली—एक पली तेल।

वकील—निकाल दो इसे, निकाल दो !

तेली—अच्छा साहब, तीन पली ले लो।

सलारबख्श—अच्छा, आधी कुप्पी तेल दे दो। बस, इतना कहना मानो।

वकील—हैं-हैं, क्यों शरह बिगाड़ते हो? तुम जाओ जी।

सलारबख्श—पहले देखिए तो ! राजी भी होता है?

तेली आधी कुप्पी तेल देने पर राजी न हुआ और चला गया? थोड़ी देर के बाद सलारबख्श ने दबी जबान कहा—हुजूर शाम को क्या पकेगा?

वकील—अबे, शाम तो हो गयी। अब क्या पकेगा?

सलारबख्श—खुदावंद, इस तरह तो मैं टें हो जाऊंगा। आप न खायं, हमारे वास्ते तो बतला दीजिए।

वकील—अपने वास्ते छिछड़े ले आ जाकर।

सलारबख्श—(आहिस्ता से) वे भी बचने जो पावें आपसे।

जोगिन को हंसी आ गयी। वकील ने कहा—मेरी बात पर हंसती होगी? मैं ऐसी ही कहता हूं। इस पर जोगिन को और भी हंसी आयी।

वकील—अल्लाह री शोखी—

खूब रू जितने हैं दिल लेती है सबकी शोख,
है मगर आपकी शोखी तो गजब की शोखी !

रात को जोगिन ने अपने पास से पैसे देकर बाजार से खाना मंगवाया, और खाकर सोयी। सुब्रह को वकील साहब की नींद खुली, तो देखा, जोगिन का कहीं पता नहीं। घर भर में छान मारा। हाथ-पांव फूल गये। बोले—सलारू गजब हो गया। हमारी किस्मत फूट गयी।

सलारबख्श—फूट गयी खुदावंद, आपकी किस्मत फूट गयी।

वकील—फिर अब?

सलारबख्श—क्या अर्ज करूं हुजूर !

वकील—घर भर में तो देख चुके न तुम?

सलारबख्श—हां और तो सब देख चुका, अब एक परनाला बाकी है, वहां आप झांक लें।

तिरेसठ

जमाना भी गिरगिट की तरह रंग बदलता है। वही अलारक्खी जो इधर-उधर ठोकरें खाती-फिरती थी, जो जोगिन बनी हुई एक गांव में पड़ी थी, आज सुरैया बेगम बनी

हुई सरकस के तमाशे में बड़े ठाट से बैठी हुई है। यह सब रुपये का खेल है।

सुरैया बेगम–क्यों महरी, रोशनी काहे की है? न लैंप, न झाड़, न कंवल और सारा खेमा जगमगा रहा है।

महरी–हुजूर, अक्ल काम नहीं करती, जादू का खेल है। बस, दो अंगारे जला दिए और दुनिया भर जगमगाने लगी।

सुरैयाबेगम–दारोगा कहां हैं? किसी से पूछें तो कि रोशनी काहे की है?

महरी–हुजूर, वह तो चले गये।

सुरैया बेगम–क्या बाजा है, वाह-वाह !

महरी–हुजूर, गोरे बजा रहे हैं।

सुरैया बेगम–जरा घोड़ों को तो देखो, एक से एक बढ़-चढ़ कर हैं। घोड़े क्या, देव हैं। कितना चौड़ा माथा है और जरा सी थुंथनी। कितनी थोड़ी सी जमीन में चक्कर देते हैं ! वल्लाह, अक्ल दंग हैं।

महरी–बेगम साहब, कमाल है।

सुरैया बेगम–इन मेमों का जिगर तो देखो, अच्छे-अच्छे शहसवारों को मात करती हैं।

महरी–सच है हुजूर, यह सब जादू के खेल हैं।

सुरैया बेगम–मगर जादूगर भी पक्के हैं।

महरी–ऐसे जादूगरों से खुदा समझे।

इस पर एक औरत जो तमाशा देखने आयी थी, चिढ़कर बोली–ऐ वाह, यह बेचारे तो हम सबका दिल खुश करें, और आप कोसें ! आखिर उनका कुसूर क्या है, यही न कि तमाशा दिखाते हैं?

महरी–यह तमाशे वाले तुम्हारे कौन हैं?

औरत–तुम्हारे कोई होंगे।

महरी–फिर तुम चिटकीं तो क्यों चिटकीं?

औरत–बहन, किसी को पीठ-पीछे बुरा न कहना चाहिए।

महरी–ऐ, तो तुम बीच में बोलनेवाली कौन हो?

औरत–तुम सब तो जैसे लड़ने आयी हो। बात की, और मुंह नोंच लिया।

सुरैया बेगम के साथ महरी के सिवा और भी कई लौंडियां थीं, उनमें एक का नाम अब्बासी था। वह निहायत हसीना और बला की शोख थी। उन सबों ने मिलकर इस औरत को बनाना शुरू किया–

महरी–गांव की मालूम होती हैं !

अब्बासी–गंवारिन तो हैं ही, यह भी कहीं छिपा रहता है?

सुरैया बेगम–अच्छा, अब बस, अपनी जबान बंद करो। इतनी मेमें बैठी हैं, किसी की जबान तक न हिली। और हम आपस में कटी मरती हैं।

इतने में सामने एक जीबरा लाया गया। सुरैया बेगम ने कहा–यह कौन जानवर है? किसी मुल्क का गधा तो नहीं है? चूं तक नहीं करता। कान दबा दौड़ा जाता है।

अब्बासी–हुजूर, बिल्कुल बस में कर लिया।

महरी–इन फिरंगियों की जो बात है, अनोखी, जरा इस मेम को तो देखिए, अच्छे-अच्छे शहसवारों के कान काटे।

सवार लेडी ने घोड़े पर ऐसे-ऐसे करतब दिखाये कि चारों तरफ तालियां पड़ने लगीं। सुरैया बेगम ने भी खूब तालियां बजायी। जनाने दरजे के पास ही दूसरे दरजे में कुछ और लोग बैठे थे। बेगम साहब को तालियां बजाते सुना तो एक रंगीले शेख जी बोले–कोई माशूक है इस परदए जंगारी में।

मिरजा साहब–रगों में शोखी कूट-कूट कर भरी है।

पंडित जी–शौकीन मालूम होती हैं।

शेख जी–वल्लाह, अब तमाशा देखने को जी नहीं चाहता।

मिरजा साहब–एक सूरत नजर आयी।

पंडित जी–तुम बड़े खुशनसीब हो।

ये लोग तो यों चहक रहे थे। इधर सरकस में एक बड़ा कठघरा लाया गया, जिसमें तीन शेर बंद थे। शेरों के आते ही चारों तरफ सन्नाटा छा गया। अब्बासी बोली–देखिए हुजूर, वह शेर जो बीच वाले कठघरों में बंद है, वही सबसे बड़ा है।

महरी–और गुस्सेवर भी सबसे ज्यादा। मालूम होता है कि आदमी का सिर निगल जायेगा।

सुरैया बेगम–कहीं कठघरा तोड़ कर निकल भागें तो सबको खा जायं।

महरी–नहीं हुजूर, सधे हुए हैं। देखिए, वह आदमी एक शेर का कान पकड़ कर किस तौर पर उसे उठाता-बैठाता है। देखिए-देखिए हजूर, उस आदमी ने एक शेर को लिटा दिया और किस तरह पांव से उसे रौंद रहा है।

अब्बासी–शेर क्या है, बिल्कुल बिल्ली है। देखिए, अब शेर से उस आदमी की कुश्ती हो रही है। कभी शेर आदमी को पछाड़ता है, कभी आदमी शेर के सीने पर सवार होता है।

यह तमाशा कोई आध घंटे तक होता रहा। इसके बाद बीच में एक बड़ी मेज बिछायी गयी और उस पर बड़े-बड़े गोश्त के टुकड़े रखे गये। एक आदमी ने सींख को एक टुकड़े में छेद दिया और गोश्त को कठघरे में डाला। गोश्त का पहुंचना था कि शेर उसके ऊपर ऐसे लपका जैसे किसी जिंदा जानवर पर शिकार करने के लिए लपकता है। गोश्त को मुंह में दबा कर बार-बार डकारता था और जमीन पर पटक देता था। जब डकारता, मकान गूंज जाता और सुननेवालों के रोंगटे खड़े हो जाते। बेगम ने घबराकर कहा–मालूम होता है, शेर कठघरे से निकल भागा है। कहां है दारोगा जी, जरा उनको बुलाना तो !

बेगम साहब तो यहां मारे डर के चीख़ रही थीं और उनसे थोड़ी ही दूर पर वकील साहब और मियां सलारबख्श में तकरार हो रही थी–

वकील–रुक क्यों गया बे? बाहर क्यों नहीं चलता?

सलारबख्श–तो आप ही आगे बढ़ जाइए न !

वकील–तो अकेले हम कैसे जा सकते हैं?

सलारबख्श–यह क्यों? क्या भेड़िया खा जायगा? या पीठ पर लादकर उठा ले जायगा, ऐसे दुबले-पतले भी तो आप नहीं हैं। बैठिए तो कांख दे।

वकील–बगैर नौकर के जाना हमारी शान के खिलाफ है।

सलारबख्श–तो आपका नौकर कौन है? हम तो इस वक्त मालिक मालूम होते हैं?

वकील–अच्छा, बाहर निकल कर इसका जवाब दूंगा, देख तो सही।

सलारबख्श–अजी, जाओ भी; जब यहां ही जवाब न दिया तो बाहर क्या बनाओगे? अब चुपके ही रहिए। नाहक-बिन-नाहक को बात बढ़ेगी।

वकील–बस, हम इन्हीं बातों से तो खुश होते हैं।

सलारबख्श–खुदा सलामत रखे हुजूर को। आपकी बदौलत हम भी दो गाल हंस-बोल लेते हैं।

वकील–यार, किसी तरह इस सुरैया बेगम का पता तो लगाओ कि यह कौन है। शिब्बोजान तो चकमा देकर चली गयीं, शायद यही निकाह पर राजी हो जायं।

सलारबख्श–जरूर ! और खूबसूरत भी आप ऐसे ही हैं।

सुरैया बेगम चुपके-चुपके ये बातें सुनती और दिल ही दिल में हंसती जाती थी। इतने में एक खूबसूरत जवान नजर पड़ा। हाथ-पांव सांचे के ढले हुए, मसें भींगती हुई, मियां आज़ाद से सूरत बिल्कुल मिलती थी। सुरैया बेगम की आंखों में आंसू भर आये। अब्बासी से कहा–जरी, दारोगा साहब को बुलाओ। अब्बासी ने बाहर आ कर देखा तो दारोगा साहब हुक्का पी रहे हैं। कहा–चलिए, नादिरी हुक्म है कि अभी-अभी बुला लाओ।

दारोग–अच्छा-अच्छा। चलते हैं। ऐसी भी क्या जल्दी है। जरा हुक्का तो पी लेने दो।

अब्बासी–अच्छा, न चलिए, फिर हमको उलाहना न दीजिएगा ! हम जताये जाते हैं।

दारोगा–(हुक्का पटककर) चलो साहब, चलो। अच्छी नौकरी है, दिन-रात गुलामी करो तब भी चैन नहीं। यह महीना खत्म हो ले तो हम अपने घर की राह लें।

दारोगा साहब जब सुरैया बेगम के पास पहुंचे तो उन्होंने आहिस्ता से कहा–वह जो कुर्सी पर एक जवान काले कपड़े पहन कर बैठा हुआ है, उसका नाम जा कर दर्याफ्त करो। मगर आदमियत से पूछना।

दारोगा–या खुदा, हुजूर बड़ी कड़ी नौकरी बोलीं। गुलाम को ये सब बातें याद क्योंकर रहेंगी। जैसा हुक्म हो।

अब्बासी–ऐ, तो बातें कौन ऐसी लंबी-चौड़ी हैं जो याद न रहेंगी?

दारोगा–अरे भाई, हममें-तुममें फर्क भी तो है। तुम अभी सत्रह-अठारह वर्ष की हो और यहां बिल्कुल सफेद हो गये हैं। खैर, हुजूर, जाता हूं।

दारोगा साहब ने जवान के पास जाकर पूछा तो मालूम हुआ कि उनका नाम मियां आज़ाद है। बेगम साहब ने आज़ाद का नाम सुना तो मारे खुशी के आंखों में आंसू भर आये। दारोगा को हुक्म दिया, जाकर पूछ आओ, अलारक्खी को भी आप

जानते हैं? आज नमक का हक अदा करो। किसी तरकीब से इनको मकान तक लाओ।

दारोगा साहब समझ गये कि इस जवान पर बीबी का दिल आ गया। अब खुदा ही खैर करे। अगर अलारक्खी का जिक्र छेड़ा और ये बिगड़ गये तो बड़ी किरकिरी होगी। और अगर न जाऊं तो यह निकाल बाहर करेंगी। चले, पर हर कदम पर सोचते जाते थे कि न जाने क्या आफत आये। जा कर जवान के पास एक कुर्सी पर बैठ गये और बोले—एक अर्ज है हुजूर, मगर शर्त यह है कि आप खफा न हों। सवाल के जवाब में सिर्फ 'हां' या 'नहीं' कह दें।

जवान—बहुत खूब ! 'हां' कहूंगा या 'नहीं'।

दारोगा—हुजूर का गुलाम हूं।

जवान—अजी, आप इतना इसरार क्यों करते हैं, आपको जो कुछ कहना हो कहिए। मैं बुरा न मानूंगा।

दारोगा—एक बेगम साहब पूछती हैं, कि हुजूर अलारक्खी के नाम से वाकिफ हैं?

जवान—बस, इतनी ही बात ! अलारक्खी को मैं खूब जानता हूं। मगर यह किसने पूछा है?

दारोगा—कल सुबह को आप जहां कहें, वहां आ जाऊं। सब बातें तय हो जायंगी।

जवान—हजरत, कल तक की खबर न लीजिए, वरना आज रात को मुझे नींद न आयेगी।

दारोगा ने जाकर बेगम साहब से कहा—हुजूर वह तो इसी वक्त आने को कहते हैं ! क्या कह दूं। बेगम बोलीं—कह दो, जरूर साथ चलें।

उसी जगह एक नवाब अपने मुसाहबों के साथ बैठे तमाशा देख रहे थे। नवाब ने फरमाया—क्यों मियां नत्थू, यह क्या बात निकाली है कि जिस जानवर को देखो, बस मैं आ गया। अक्ल काम नहीं करती।

नत्थू—खुदावंद, बस बात सारी यह है कि ये लोग अक्ल के पुतले हैं। दुनिया के परदे पर कोई ऐसी चीज नहीं जिसका इल्म इनके यहां न हो। चिड़िया का इल्म इनके यहां, हल चलाने का इल्म इनके यहां, गाने-बजाने का इल्म इनके यहां। कल जो बारहदरी की तरफ से हो कर गुजरा, तो देखा, बहुत से आदमी जमा हैं। इतने में अंगरेजी बाजा बजने लगा तो हुजूर, जो गोरे बाजा बजाते थे, उनके सामने एक एक किताब खुली हुई थी। मगर बस, धोंतू, धोंतू ! इसके सिवा कोई बोल ही सुनने में नहीं आया।

मिरजा—हुजूर के सवाल का जवाब तो दो ! हुजूर पूछते हैं कि जानवरों को बस में क्योंकर लाये !

नत्थू—कहा न कि इनके यहां हर बात का इल्म है। इल्म के जोर से देखा होगा कि कौन जानवर किस पर आशिक है। बस, वही चीज मुहैया कर ली।

नवाब—तसल्ली नहीं हुई। कोई खास वजह जरूर है।

नत्थू—हुजूर, हिन्दोस्तान का नट भी वह काम करता है जो किसी से न हो सके। बांस गाड़ दिया, ऊपर चढ़ गया और अंगूठे के जोर से खड़ा हो गया।

मिरजा–हुजूर गुलाम ने पता लगा लिया। जो कभी झूठ निकले तो नाक कटवा डालूं। बस, हम समझ गये। हुजूर आज तक कोई बड़े से बड़ा पहलवान भी शेर से नहीं लड़ सका। मगर इस जवान की हिम्मत को देखिए कि अकेला तीन-तीन शेरों से लड़ता रहा। यह आदमी का काम नहीं है, और अगर है तो कोई आदमी कर दिखाये! हुजूर के सिर की कसम, यह जादू का खेल है। वल्लाह, जो इसमें फर्क हो तो नाक कटवा डालूं।

नवाब–सुभान-अल्लाह, बस यही बात है।

नत्थू–हां, यह माना। यहां पर हम भी कायल हो गये। इंसाफ शर्त है।

नवाब–और नहीं तो क्या, जरा-सा आदमी, और आधे दर्जन शेरों से कुश्ती लड़े! ऐसा हो सकता है भला! शेर लाख कमजोर हो जाय, फिर शेर है। ये सब जादू के जोर से शेर, रीछ और सब जानवर दिखा देते हैं। असल में शेर-वेर कुछ भी नहीं हैं। सब जादू ही जादू है।

नत्थू–हुजूर हर तरह से रुपया खींचते हैं। हुजूर के सिर की कसम। हिन्दोस्तानी इससे अच्छे शेर बना कर दिखा दें। क्या यहां जादूगरी है ही नहीं? मगर कदर तो कोई करता ही नहीं। हुजूर जरा गौर करते तो मालूम हो जाता कि शेर लड़ते तो थे, मगर पुतलियां नहीं फिरती थीं। बस, यहां मालूम हो गया कि जादू का खेल है।

जबरखां–वल्लाह, मैं भी यही कहनेवाला था। मियां नत्थू मेरे मुंह से बात छीन ले गये।

नत्थू–भला शेरों को देख कर किसी को डर लगता था? ईमान से कहिएगा।

जबरखां–मगर जब जादू का खेल है तो शेर से लड़ने में कमाल ही क्या है!

नवाब–और सुनिए, इनके नजदीक कुछ कमाल ही नहीं! आप तो वैसे शेर बना दीजिए! क्या दिल्लगीबाजी है? कहने लगे, इसमें कमाल ही क्या है।

मिरजा–हुजूर यह ऐसे ही बेपर की उड़ाया करते हैं।

नत्थू–जादू के शेरों से न लड़े तो क्या सचमुच के शेरों से लड़े? वाह री आपकी अक्ल!

नवाब–कहिए तो उससे, जो समझदार हो। बेसमझ से कहना फजूल हैं।

नत्थू–हुजूर, कमाल यह है कि हजारों आदमी यहां बैठे हैं, मगर एक की समझ में न आया कि क्या बात है।

नवाब–समझे तो हमीं समझे!

मिरजा–हुजूर की क्या बात है। वल्लाह, खूब समझे!

इतने में एक खिलाड़ी ने एक रीछ को अपने ऊपर लादा और दूसरे की पीठ पर एक पांव से सवार हो कर उसे दौड़ाने लगा। लोग दंग हो गये। सुरैया बेगम ने उस आदमी को पचास रुपये इनाम दिये।

वकील साहब ने यह कैफियत देखी तो सुरैया बेगम का पता लगाने के लिए बेकरार हो गये। सलारबख्श से कहा–भैया सलारू; इस बेगम का पता लगाओ। कोई बड़ी अमीर-कबीर मालूम होती है।

सलारबख्श–हमें तो यह अफसोस है कि तुम भालू क्यों न हुए। बस, तुम इसी

लायक हो कि रस्सों से जकड़ कर दौड़ाये।

वकील–अच्छा बचा, क्या घर न चलोगे?

सलारबख्श–चलेंगे क्यों नहीं, क्या तुम्हारा कुछ डर पड़ा है?

वकील–मालिक से ऐसी बातें करता है? मगर यार, सुरैया बेगम का पता लगाओ।

मियां आज़ाद नवाब और वकील दोनों की बातें सुन-सुनकर दिल ही दिल में हंस रहे थे। इतने में नवाब साहब ने आज़ाद से पूछा–क्यों जनाब, यह सब नजरबंदी है या कुछ और?

आज़ाद–हजरत, यह सब तिलस्मात का खेल है। अक्ल काम नहीं करती।

नवाब–सुना है, पांच कोस के उधर का आदमी अगर आये तो उस पर जादू का खाक असर न हो।

आज़ाद–मगर इनका जादू बड़ा कड़ा जादू है। दस मंजिल का आदमी भी आये तो चकमा खा जाये।

नवाब–आपके नजदीक वह कौन अंगरेज बैठा था?

आज़ाद–जनाब, अंगरेज और हिन्दोस्तानी कहीं नहीं हैं। सब जादू का खेल है।

नवाब–इनसे जादू सीखना चाहिए।

आज़ाद–जरूर सीखिए ! हजार काम छोड़कर।

जब तमाशा खत्म हो गया तो सुरैया बेगम ने आज़ाद को बहुत तलाश कराया, मगर कहीं उनका पता न चला। वह पहले ही एक अंगरेज के साथ चल दिये थे। बेगम ने दारोगा जी को खूब डांटा और कहा–अगर तुम उन्हें न लाओगे तो तुम्हारी खाल खिंचवा कर उसमें भुस भरूंगी।

चौंसठ

सुरैया बेगम मियां आज़ाद की जुदाई में बहुत देर तक रोया कीं, कभी दारोगा पर झल्लायी, कभी अब्बासी पर बिगड़ीं, फिर सोचतीं कि अलारक्खी के नाम से नाहक बुलवाया, बड़ी भूल हो गयी; कभी खयाल करतीं कि वादे के सच्चे हैं, कल शाम को जरूर आयेंगे, हजार काम छोड़ के आयेंग। रात भींग गयी थी, महरियां सो रही थीं, महलदार ऊंघता, शहर-भर में सन्नाटा था; मगर सुरैया बेगम की नींद मियां आजाद ने हराम कर दी थी–

भरे आते हैं आंसू आंख में ऐ यार क्या बाइस,
निकलते हैं कि सदफ से गौहरे शहवार क्या बाइस।

सारी रात परेशानी में गुजरी, दिल बेकरार था, किसी पहलू चैन नहीं आता था, सोचतीं कि अगर मियां आज़ाद वादे पर न आये तो कहां ढूढ़ंगी। बूढ़े दारोगा पर दिल ही दिल में झल्लाती थीं कि पता तक नहीं पूछा। मगर आज़ाद तो पक्का वादा कर गये थे, लौट कर जरूर मिलेंगे, फिर ऐसे बेदर्द कैसे हो गये

कि हमारा नाम भी सुना और परवा न की। यह सोचते-सोचते उन्होंने यह गजल गानी शुरू की–

न दिल को चैन मर कर भी हवाए यार में आये;
तड़प कर खुल्द से फिर कूचए दिलदार में आये।
अजब राहत मिली, कुछ दीन-दुनिया की नहीं परवा,
जूनूं के साया में पहुंचे बड़ी सरकार में आये।
एवज जब एक दिल के लाख दिल हो मेरे पहलूं में,
तड़पने का मजा तब फुरकते दिलदार में आये।
नहीं परवा, हमारा सिर जो कट जाये तो कट जाये,
थके बाजू न कातिल का न बल तलवार में आये।
दमे-आखिर वह पोछे अश्क 'सफदर' अपने दामन से,
इलाही रहम इतना तो मिजाजे यार में आये;

सुरैया बेगम की सारी रात जागते गुजरी। सबेरे दारोगा ने आ कर सलाम किया।

बेगम–आज का इकरार है न?

दारोगा–हां हुजूर, खुदा मुझे सुर्खरू करे। अलारक्खी का नाम सुनकर तो वे बेखुद हो गये। क्या अर्ज करूं हुजूर !

बेगम–अभी जाइए और चारों तरफ तलाश कीजिए।

दारोगा–हुजूर, जरा सबेरा तो हो ले, दो-चार आदमियों से मिलूं, पूछूं-वूछूं, तब तो मतलब निकले। यों उटक्करलैस किस मुहल्ले में जाऊं और किससे पूछूं?

अब्बासी–हुजूर, मुझे हुक्म हो तो मैं भी तलाश करूं। मगर भारी सा जोड़ा लूंगी।

बेगम–जोड़ा? अल्लाह जानता है, सिर से पांव तक जेवर से लदी होगी।

बी अब्बासी बन-ठन कर चलीं और उधर दारोगा जी मियाने पर लद कर रवाना हुए। अब्बासी तो खुश-खुश जाती थी और यह मुंह बनाये सोच रहे थे कि जाऊं तो कहां जाऊं? अब्बासी लहंगा फड़काती हुई चली जाती थी कि राह में एक नवाब साहब की एक महरी मिली। दोनों में घुल-घुल कर बातें होने लगीं।

अब्बासी–कहो बहन, खुश तो हो?

बन्नू–हां बहन, अल्लाह का फजल है। कहां चलीं?

अब्बासी–कुछ न पूछो बहन, एक साहब का पता पूछती फिरती हूं।

बन्नू–कौन हैं, मैं भी सूनूं।

अब्बासी–यह तो नहीं जानती, पर नाम है मियां आज़ाद। खासे घबरू जवान हैं।

बन्नू–अरे, उन्हें मैं खूब जानती हूं। इसी शहर के रहनेवाले हैं। मगर हैं बड़े नटखट, सामने ही तो रहते हैं। कहीं रीझी तो नहीं हो? है तो जवान ऐसा ही।

अब्बासी–ऐ, हटो भी? यह दिल्लगी हमें नहीं भाती।

बन्नू–लो, यह मकान आ गया। बस, इसी में रहते हैं। जोड़ू न जांता, अल्लाह मियां से नाता।

बन्नू तो अपनी राह गयी, अब्बासी एक गली में हो कर एक बुढ़िया के मकान पर पहुंची। बुढ़िया ने पूछा–अब किस सरकार में हो जी !

अब्बासी–सुरैया बेगम के यहां।

बुढ़िया–और उनके मियां का क्या नाम है?

अब्बासी–जो तजवीज करो।

बुढ़िया–तो क्वांरी हैं या बेवा ! कोई जान-पहचान मुलाकाती है या कोई नहीं है?

अब्बासी–एक बूढ़ी सी औरत कभी-कभी आया करती हैं। और तो हमने किसी को आते-जाते नहीं देखा।

बुढ़िया–कोई देवजाद भी आता-जाता है?

अब्बासी–क्या मजाल ! चिड़िया तक तो पर नहीं मार सकती? इतने दिनों में सिर्फ कल तमाशा देखने गयी थीं।

बुढ़िया–ऐ लो, और सुनो ! तमाशा देखने जाती हैं और फिर कहती हो कि ऐसी-वैसी नहीं हैं? अच्छा, हम टोह लगा लेंगी।

अब्बासी–उन्होंने तो कसम खायी है कि शादी ही न करूंगी, और अगर करूंगी भी तो एक खूबसूरत जवान के साथ जो आपका पड़ोसी है। मियां आज़ाद नाम है।

बुढ़िया–अरे, यह कितनी बड़ी बात है ! गो मैं वहां बहुत कम आती-जाती हूं, पर वह मुझे खूब जानते हैं। बिल्कुल घर का सा वास्ता है। तुम बैठो, मैं अभी....।

यह कह कर बुढ़िया ने एक औरत को बुला कर कहा–छोटे मिरजा के पास जाओ और कहो कि आपको बुलाती हैं। या तो हमको बुलाइए या खुद आइए।

इस औरत का नाम मुबारक कदम था। उसने जाकर मिरजा आज़ाद को बुढ़िया का पैगाम सुनाया–हुजूर, वह खबर सुनाऊं कि आप भी फड़क जायं। मगर इनाम देने का वादा कीजिए।

आज़ाद–आज़ाद नहीं, अगर मालामाल न कर दें।

मुबारक–उछल पड़िएगा।

आज़ाद–क्या कोई रकम मिलनेवाली है?

मुबारक–अजी, वह रकम मिले कि नवाब हो जाओ। एक बेगम साहबा ने पैगाम भेजा है। बस, आप मेरी बुढ़िया के मकान तक चले चलिए।

आज़ाद–उनको यहीं न बुला लाओ।

मुबारक–मैं बैठी हूं, आप बुलवा लीजिए। थोड़ी देर में बुढ़िया एक डोली पर सवार आ पहुंची और बोली–क्या इरादे हैं? कब चलिएगा?

आज़ाद–पहले कुछ बातें तो बताओ। हसीन है न?

बुढ़िया–अजी, हुस्न तो वह है कि चांद भी मात हो जाय, और दौलत का तो कोई ठिकाना नहीं; तो कब चलने का इरादा है?

आज़ाद–पहले खूब पक्का-पोढ़ा कर लो, तो मुझे ले चलो। ऐसा न हो कि वहां चल कर झेंपना पड़े।

पैंसठ

हमारे मियां आज़ाद और इस मिरजा आज़ाद में नाम के सिवा और कोई बात नहीं मिलती थी। वह जितने ही दिलेर, ईमानदार, सच्चे आदमी थे; उतने ही यह फरेबी, जालिये और बदनियत थे। बहुत मालदार तो थे नहीं; मगर सवा सौ रुपये वसीके के मिलत्ते थे। अकेला दम, न कोई अजीज, न रिश्तेदार; पल्ले सिरे के बदमाश, चोरों के पीर, उठाईगीरों के लंगोटिये यार, डाकुओं के दोस्त, गिरहकटों के साथी। किसी की जान लेना इनके बायें हाथ का करतब था। जिससे दोस्ती की, उसी की गरदन काटी। अमीर से मिल-जुल कर रहना और उसकी घुड़की-झिड़की सहना, इनका खास पेशा था। लेकिन जिसके यहां दखल पाया, उसको या तो लंगोटी बंधवा दी या कुछ ले-देकर अलग हुए। शहर के महाजन और साहूकार इनसे थरथर कांपते रहते ! जिस महाजन से जो मांगा, उसने हाजिर किया और जो इनकार किया तो दूसरे रोज चोरी हो गयी। इनके मिजाज की अजब कैफियत थी। बच्चों में बच्चे, बूढ़ों में बूढ़े, जवानों में जवान। कोई बात ऐसी नहीं जिसका उन्हें तजर्बा न हो। एक साल तक फौज में भी नौकरी की थी। वहां आपने एक दिन यह दिल्लगी की कि रिसाले के बीस घोड़ों की अगाड़ी-पिछड़ी खोल डाली। घोड़े हिनहिना कर लड़ने लगे। सब लोग तो पड़े सो रहे थे। घोड़े जो खुले, तो सब के सब चौंक पड़े। एक बोला-लेना-लेना ! चोर-चोर ! पकड़ लेना, जाने न पाये। बड़ी मुश्किल से चंद घोड़े पकड़े गये। कुछ जख्मी हुए, कुछ भाग गये। अब तहकीकात शुरू हुई। मिरजा आज़ाद भी सबके साथ हमदर्दी करते थे और उस बदमाश पर बिगड़ रहे थे। जिसने घोड़े छोड़े थे। अफसर से बोले-यह शैतान का काम है, खुदा की कसम।

अफसर-उसकी गोशमाली की जायगी।

आज़ाद-वह इसी लायक है। मिल जाय तो चचा ही बना कर छोड़ूं !

खैर, एक बार एक दफ्तर में आप क्लर्क हो गये। एक दिन आपको दिल्लगी सूझी, सब अमलों के जूते उठा कर दरिया में फेंक दिये। सरिश्तेदार उठे, इधर-उधर जूता ढूंढ़ते हैं, कहीं पता ही नहीं। नाजिर उठे, जूता नदारद। पेशकार को साहब ने बुलाया, देखते हैं तो जूता गायब।

पेशकार-अरे भाई, कोई साहब जूता ही उड़ा ले गये।

चपरासी-हुजूर, मेरा जूता पहन लें।

पेशकार-वाह, अच्छा लाला विशुनदयाल, जरा अपना बूट तो उतार दो।

लाला विशुनदयाल पटवारी थे। इनका लक्कड़तोड़ जूता पहन कर पेशकार साहब बड़े साहब के इजलास पर गये।

साहब-वेल-वेल पेशकार, आज बड़ा अमीर हो गया। बहुत बड़ा कीमती बूट पहना है।

पेशकार-हुजूर, कोई साहब जूता उड़ा ले गये। दफ़्तर में किसी का जूता नहीं बचा।

बड़े साहब तो मुस्कराकर चुप हो गये; मगर छोटे साहब बड़े दिल्लगीबाज आदमी

थे। इजलास से उठकर दफ्तर में गये तो देखते हैं कि कहकहे पर कहकहा पड़ रहा है। सब लोग अपने-अपने जूते तलाश रहे हैं। छोटे साहब ने कहा—हम उस आदमी को इनाम देना चाहते हैं जिसने यह काम किया। जिस दिन हमारा जूता गायब कर दे, हम उसको इनाम दें।

आज़ाद—और अगर हमारा जूता गायब कर दे तो हम पूरे महीने की तनख्वाह दे दें।

एक बार मिरजा आज़ाद एक हिन्दू के यहां गये। वह इस वक्त रोटी पका रहे थे। आपने चुपके से जूता उतारा और रसोई में जा बैठे, ठाकुर ने डांट कर कहा—ऐं, यह क्या शरारत।

आज़ाद—कुछ नहीं, हमने कहा, देखें, किस तदबीर से रोटी पकाते हो।

ठाकुर—रसोई जूठी कर दी।

आज़ाद—भई, बड़ा अफसोस हुआ। हम यह क्या जानते थे। अब यह खाना बेकार जायगा?

ठाकुर—नहीं जी, कोई मुसलमान खा लेगा !

आज़ाद—तो हमसे बढ़ कर और कौन है?

आज़ाद बिस्मिल्लाह कहकर थाली में हाथ डालने को थे कि ठाकुर ने ललकारा—हैं-हैं, रसोई तो जूठी कर चुके, अब क्या बरतनों पर भी दांत है?

खैर, आज़ाद ने पत्तों में खाना खाया और दुआ दी कि खुदा करे, ऐसा एक उल्लू रोज फंस जाये।

डोम-धारी, तबलिये, गवैये, कलावंत, कथक, कोई ऐसा न था जिससे मिरजा आज़ाद से मुलाकात न हो। एक बार एक बीनकार को दो सौ रुपये इनाम दिये। तब से उस गिरोह में इनकी धाक बैठ गयी थी। एक बार आप पुलीस के इंस्पेक्टर के साथ जाते थे। दोनों घोड़ों पर सवार थे। आज़ाद का घोड़ा टर्रा था और इनसे बिना मजाक के रहा न जाये। चुपके से उतर पड़े। घोड़ा हिनहिनाता हुआ इंस्पेक्टर साहब के घोड़े की तरफ चला? उन्होंने लाख संभाला, लेकिन गिर ही पड़े। पीठ में बड़ी चोट आयी।

अब सुनिए, बुढ़िया और अब्बासी जब बेगम साहब के यहां पहुंची तो बेगम का कलेजा धड़कने लगा। फौरन कमरे के अंदर चली गयीं। बुढ़िया ने आ कर पूछा—हुजूर, कहां तशरीफ रखती हैं?

बेगम—अब्बासी, कहो क्या खबरें हैं?

अब्बासी—हुजूर के अकबाल से सब मामला चौकस है।

बेगम—आते हैं या नहीं? बस, इतना बता दो।

अब्बासी—हुजूर, आज तो उनके यहां एक मेहमान आ गये। मगर कल जरूर आयेंगे।

इतने में एक महरी ने आ कर कहा—दारोगा साहब आये हैं।

बेगम—आ गये ! जीते आये, बड़ी बात !

दारोगा—हां हुजूर, आपकी दुआ से जीता आया। नहीं तो बचने की तो कोई

सूरत ही न थी।

बेगम—खैर, यह बतलाओ, कहीं पता लगा?

दारोगा—हुजूर के नमक की कसम कि शहर का कोई मुकाम न छोड़ा।

बेगम—और कहीं पता न चला? है न !

दारोगा—कोई कूचा, कोई गली ऐसी नहीं जहां तलाश न की हो।

बेगम—अच्छा, नतीजा क्या हुआ? मिले या न मिले?

दारोगा—हुजूर, सुना कि रेल पर सवार हो कर कहीं बाहर जाते हैं। फौरन गाड़ी किराये की और स्टेशन पर जा पहुंचा, मियां आज़ाद से चार आंखें हुईं कि इतने में सीटी कूकी और रेल खड़खड़ाती हुई चली। मैं लपका कि दो-दो बातें कर लूं, मगर अंगरेज ने हाथ पकड़ लिया।

बेगम—यह सब सच कहते हो न?

दारोगा—झूठ कोई और बोला करते होंगे।

बेगम—सुबह से तो कुछ खाया न होगा?

दारोगा—अगर एक घूंट पानी के सिवा कुछ और खाया हो तो कसम ले लीजिए।

अब्बासी—हुजूर, हम एक बात बतायें तो इनकी शेखी अभी-अभी निकल जाये। कहारों को यहीं बुलाकर पूछना शुरू कीजिए।

बेगम साहब को यह सलाह पसंद आयी। एक कहार को बुला कर तहकीकात करने लगीं।

अब्बास—बचा, झूठ बोले तो निकाल दिये जाओगे।

कहार—हुजूर, हमें जो सिखाया है, वह कहे देते हैं।

अब्बासी—क्या कुछ सिखाया भी है?

कहार—सुबह से अब तक सिखाया ही किये या कुछ और किया? यहां से अपनी ससुराल गये। वहां किसी ने खाने को भी न पूछा तो वहां से एक मजलिस में गये। हिस्से लिये और चख कर बोले—कहीं ऐसी जगह चलो जहां किसी की निगाह न पड़े। हम लोगों ने नाके से बाहर एक तकिये में मियाना उतारा। दारोगा जी ने वहां नानबाई की दूकान से सालन और रोटी मंगा कर खायी। हम लोगों को चबैने के लिए पैसे दिये। दिन भर सोया किये। शाम को हुक्म दिये, चलो।

अब्बासी—दारोगा साहब, सलाम ! अजी, इधर देखिए दारोगा साहब।

बेगम—क्यों साहब, यह झूठ ! रेल पर गये थे? बोलिए !

दारोगा—हुजूर, यह नमकहराम है, क्या अर्ज करूं !

दारोगा का बस चलता तो कहार को जीता चुनवा देते, मगर बेबस थे। बेगम ने कहा—बस, जाओ। तुम किसी मसरफ के नहीं हो।

रात को अब्बासी बेगम साहब से मीठी-मीठी बातें कर रही थीं कि गाने की आवाज आयी। बेगम ने पूछा—कौन गाता है?

अब्बासी—हुजूर, मुझे मालूम है। यह एक वकील हैं। सामने मकान है। वकील को तो नहीं जानती, मगर उनके यहां एक आदमी नौकर है, उसको खूब जानती हूं। सलारबख्श नाम है। एक दिन वकील साहब इधर से जाते थे। मैं दरवाजे पर खड़ी

थी। कहने लगे–महरी साहब, सलाम ! कहो, तुम्हारी बेगम साहब का नाम क्या है? मैंने कहा, आप अपना मतलब कहिए, तो कहने लगे–कुछ नहीं, यो ही पूछता था।

बेगम–ऐसे आदमियों को मुंह न लगाया करो।

अब्बासी–मुखतार है हुजूर, महताबी से मकान दिखायी देता है।

बेगम–चलो देखें तो, मगर वह तो न देख लेंगे ! जाने भी दो।

अब्बासी–नहीं हुजूर, उनको क्या मालूम होगा। चुपके से चल कर देख लीजिए। बेगम साहब महताबी पर गयीं तो देखा कि वकील साहब पलंग पर फैले हुए हैं और सलारू हुक्का भर रहा है। नीचे आयीं तो अब्बासी बोली–हुजूर, वह सलारबख्श कहता था कि किसी पर मरते हैं।

बेगम–वह कौन थी? जरा नाम तो पूछना।

अब्बासी–नाम तो बताया था, मगर मुझे याद नहीं है। देखिए, शायद जेहन में आ जाय। आप दस-पांच नाम तो लें।

बेगम–नजीरबेगम, जाफीरबेगम, हुसेनीखानम, शिब्बोखानम !

अब्बासी–(उछल कर) जी हां, यही; यही मगर शिब्बोखानम नहीं, शिब्बोजान बताया था।

सुरैया बेगम ने सोचा इस पगले का पड़ोस अच्छा नहीं, जुल देके चली आयी हूं, ऐसा न हो, ताक-झांक करे। दरवाजे तक आ ही चुका, अब्बासी और सलारू में बातचीत भी हुई; अब फकत इतना मालूम होना बाकी है कि यही शिब्बोजान हैं। कहीं हमारे आदमियों पर यह भेद खुल जाय तो गजब ही हो जाय। किसी तरह मकान बदल देना चाहिए। रात को तो इसी खयाल में सो रहीं। सुबह को फिर वही धुन समायी कि आज़ाद आयें और अपनी प्यारी-प्यारी सूरत दिखायें। वह अपना हाल कहें, हम अपनी बीती सुनायें। मगर आज़ाद अब की मेरा यह ठाट देखेंगे तो क्या खयाल करेंगे। कहीं न समझें कि दौलत पा कर मुझे भूल गयी। अब्बासी को बुला कर पूछा–तो आज कब जाओगी?

अब्बासी–हुजूर, बस कोई दो घड़ी दिन रहे जाऊंगी और बात की बात में साथ ले कर आ जाऊंगी।

उधर मिरजा आज़ाद बन-ठन कर जाने ही को थे कि एक शाह साहब खट-पट करते हुए कोठे पर आ पहुंचे। आज़ाद ने झुक कर सलाम किया और बोले–आप खूब आये। बतलाइए, हम जिस काम को जाना चाहते हैं वह पूरा होगा या नहीं?

शाह–लगन चाहिए। धुन हो तो ऐसा कोई काम नहीं जो पूरा न हो।

आज़ाद–गुस्ताखी माफ कीजिए तो एक बात पूछूं, मगर बुरा न मानिएगा !

शाह–गुस्ताखी कैसी, जो कुछ कहना हो शौक से कहो।

आज़ाद–उस पगली औरत से आपको क्यों मुहब्बत है?

शाह–उसे पगली न कहो, मैं उसकी सूरत पर नहीं, उसकी सीरत पर मरता हूं। मैंने बहुत से औलिया देखे, पर ऐसी औरत मेरी नजर से आज तक नहीं गुजरी। अलारक्खी सचमुच जन्नत की परी है। उसकी याद कभी न भूलेगी। उसका एक आशिक आप ही के नाम का था।

इन्हीं बातों में शाम हो गयी, आसमान पर काली घटाएं छा गयीं और जोर से मेंह बरसने लगे। आज़ाद ने जाना मुलतबी कर दिया। सुबह को आप एक दोस्त की मुलाकात को गये। वहां देखा कि कई आदमी मिल कर एक आदमी को बना रहे हैं और तालियां बजा रहे हैं। वह दुबला-पतला, मरा-पिटा आदमी था। इनको करीने से मालूम हो गया कि वह चंडूबाज है। बोले-क्यों भाई चंडूबाज, कभी नौकरी भी की है?

चंडूबाज-अजी हजरत, उम्र भर डंड पेले और जोड़िया हिलायीं। शाही में अब्बाजान की बदौलत हाथी-नशीन थे। अभी पारसाल तक हम भी घोड़े पर सवार हो कर निकलते थे। मगर जुए की लत थी, टके-टके को मुहताज हो गये। आखिर, सराय में एक भठियारी अलारक्खी के यहां नौकरी कर ली।

आज़ाद-किसके यहां?

चंडूबाज-अलारक्खी नाम था। ऐसी खूबसूरत कि मैं क्या अर्ज करूं।

आज़ाद-हां ! रात को भी एक आदमी ने तारीफ की थी।

चंडूबाज-तारीफ कैसी ! तसवीर ही न दिखा दूं?

यह कह कर चंडूबाज ने अलारक्खी की तसवीर निकाली।

आज़ाद-ओ-हो-हो।

अजब है खींची मुसव्विर ने किस तरह तसवीर;
कि शोखियों से वह एक रंग पर रहें क्योंकर।

चंडूबाज-क्यों, है परी या नहीं?

आज़ाद-परी, परी, असली परी।

चंडूबाज-उसी सराय में मियां आज़ाद नाम के एक शरीफ टिके थे। उन पर आशिक हो गयीं। बस, कुछ आप ही की-सी सूरत थी।

आज़ाद-अब यह बताओ कि वह आजकल कहां है?

चंडूबाज-यह तो नहीं जानते, मगर यहीं कहीं हैं। सराय से तो भाग गयी थीं।

आज़ाद ने ताड़ लिया कि अलारक्खी और सुरैया बेगम में कुछ न कुछ भेद जरूर है। चंडूबाज को अपने घर लाए और खूब चंडू पिलाया। जब दो-तीन छींटे पी चुके तो आज़ाद ने कहा-अब अलारक्खी का मुफस्सल हाल बताओ।

चंडूबाज-अलारक्खी की सूरत तो आप देख ही चुके, अब उनकी सीरत का हाल सुनिए। शोख, चुलबुली, चंचल, आगभभूका, तीखी.चितवन, मगर हंसमुख। मियां आज़ाद पर रीझ गयीं। अब आज़ाद ने वादा किया कि निकाह पढ़वाएंगे, मगर कौल हार कर निकल गए। इन्होंने नालिश कर दी, पकड़ आए, मगर फिर भाग गए। इसके बाद एक बेगम हुस्नआरा थीं, उस पर रीझे। उन्होंने कहा-रूम की लड़ाई में नाम पैदा करके आओ तो हम निकाह पर राजी हों। बस, रूम की राह ली। चलते वक्त उनकी अलारक्खी से मुलाकात हुई तो उनसे कहा-हुस्नआरा तुम्हें मुबारक हो, मगर हमको न भूल जाना। आज़ाद ने कहा-हरगिज नहीं।

आज़ाद-हुस्नआरा कहां रहती हैं?

चंडूबाज-यह हमें नहीं मालूम।

आज़ाद—अलारक्खी को देखो तो पहचान लो या न पहचानो?

चंडूबाज—फौरन पहचान लें। न पहचानना कैसा?

मियां चंडूबाज तो पीनक लेने लगे। इधर अब्बासी मिरजा आज़ाद के पास आयी और कहा—अगर चलना है तो चले चलिए, वरना फिर आने-जाने का जिक्र न कीजिएगा। आपके टालमटोल से वह बहुत चिढ़ गयी हैं। कहती हैं, आना हो तो आएं और न आना हो तो न आएं। वह टालमटोल क्यों करते हैं?

आज़ाद ने कहा—मैं तैयार बैठा हूं। चलिए।

यह कह कर आज़ाद ने गाड़ी मंगवायी और अब्बासी के साथ अंदर बैठे। चंडूबाज कोचबक्स पर बैठे। गाड़ी रवाना हुई। सुरैया बेगम के महल पर गाड़ी पहुंची तो अब्बासी ने अंदर जा कर कहा—मुबारक, हुजूर आ गए।

बेगम—शुक्र है।

अब्बासी—अब हुजूर चिक की आड़ बैठ जाएं।

बेगम—अच्छा, बुलाओ।

आज़ाद बरामदे में चिक के पास बैठे। अब्बासी ने कमरे के बाहर आ कर कहा—बेगम साहब फरमाती हैं कि हमारे सिर में दर्द है, आप तशरीफ ले जाइए।

आज़ाद—बेगम साहब से कह दीजिए कि मेरे पास सिर के दर्द का एक नायाब नुसखा है।

अब्बासी—वह फरमाती हैं कि ऐसे-ऐसे मदारी हमने बहुत चंगे किए हैं।

आज़ाद—और अपने सिर के दर्द का इलाज नहीं कर सकतीं?

बेगम—आपकी बातों से सिर का दर्द और बढ़ता है। खुदा के लिए आप मुझे इस वक्त आराम करने दीजिए।

आज़ाद—हम ऐसे हो गए अल्लाह अकबर ऐ तेरी कुदरत,
हमारा नाम सुन कर हाथ वह कानों पर धरते हैं।
या तो वह मजे-मजे की बातें थीं; और अब यह बेवफाई!

बेगम—तो यह कहिए कि आप हमारे पुराने जाननेवालों में हैं। कहिए, मिजाज तो अच्छे हैं?

आज़ाद—दूर से मिजाजपुर्सी भली मालूम नहीं होती।

बेगम—आप तो पहेलियां बुझवाते हैं। ऐ अब्बासी, यह किस अजनबी को सामने ला कर बैठा दिया? वाह-वाह !

अब्बासी—(मुस्कराकर) हुजूर जबरदस्ती धंस पड़े।

बेगम—मुहल्लेवालों को इत्तिला दो।

आज़ाद—थाने पर रपट लिखवा दो और मुश्कें बंधवा दो।

यह कहकर आज़ाद ने अलारक्खी की तसवीर अब्बासी को दी और कहा—इसे हमारी तरफ से पेश कर दो। अब्बासी ने जाकर बेगम साहब को वह तसवीर दी। बेगम साहब तसवीर देखते ही दंग हो गयीं। ऐं, इन्हें यह तसवीर कहां मिली? शायद यह तसवीर छिपा कर ले गए थे। पूछा—इस तसवीर की क्या कीमत है?

आज़ाद—यह बिकाऊ नहीं है।

बेगम–तो फिर दिखायी क्यों?

आज़ाद–इसकी कीमत देनेवाला कोई नजर नहीं आता।

बेगम–कुछ कहिए तो, किस दाम की तसवीर है !

आज़ाद–हुजूर मिला लें। एक शाहजादे इस तसवीर के दो लाख रुपये देते थे।

बेगम–यह तसवीर आपको मिली कहां?

आज़ाद–जिसकी यह तसवीर है उससे दिल मिल गया है।

बेगम–जरी मुंह धो आइए।

इस फिफरे पर अब्बासी कुछ चौंकी, बेगम साहब से कहा–जरा हुजूर मुझे तो दें। मगर बेगम ने संदूकचा खोलकर तसवीर रख दी।

आज़ाद–इस शहर की अच्छी रस्म है। देखने को चीज ली और हजम ! बी अब्बासी, हमारी तसवीर ला दो।

बेगम–लाखों कुदूरतें हैं, हजारों शिकायतें।

आज़ाद–किससे?

कुदूरत उनको है मुझसे नहीं है सामना जब तक,
इधर आंखें मिलीं उनसे उधर दिल मिल गया दिल से।

बेगम–अजी, होश की दवा करो।

आज़ाद–हम तो इस जब्त के कायल हैं।

बेगम–(हंसकर) बजा।

आज़ाद–अब तो खिलखिला कर हंस दीं। खुदा के लिए, अब इस चिक के बाहर आओ या मुझी को अंदर बुलाओ। नकाब और घूंघट का तिलस्म तोड़ो। दिल बेकाबू है।

बेगम–अब्बासी, इनसे कहो कि अब हमें सोने दें। कल किसी की राह देखते-देखते रात ,आंखों में कट गयी।

आज़ाद–दिन का मौका न था, रात को मेंह बरसने लगा।

बेगम–बस, बैठे रहो।

यह अबस कहते हो, मौका न था और घात न थी;
मेंहदी पांवों में न थी आपके, बरसात न थी।
कजअदाई के सिवा और कोई बात न थी,
दिन को आ सकते न थे आप तो क्या रात न थी?
बस, यही कहिए कि मंजूर मुलाकात न थी।

आज़ाद–माशूकपन नहीं अगर इतनी कजी न हो।

अब्बासी दंग थी कि या खुदा, यह क्या माजरा है। बेगम साहब तो जामे से बाहर ही हुई जाती हैं। महरियां दांतों अंगुलियां दबा रही थीं। इनको हुआ क्या है। दारोगा साहब कटे जाते थे, मगर चुप।

बेगम–कोई भी दुनिया में किसी का हुआ है? सबको देख लिया। तड़पा-तड़पा कर मार डाला। खैर, हमारा भी खुदा है।

आज़ाद–पिछली बातों को अब भूल जाइए।

बेगम–बेमुरौवतों को किसी के दर्द का हाल क्या मालूम? नहीं तो क्या वादा करके मुकर जाते।

आज़ाद–नालिश भी तो दाग दी आपने !

बेगम–इंतजार करते-करते नाक में दम आ गया।

राह उनकी तकते-तकते यह मुद्दत गुजर गयी;
आंखों को हौसला न रहा इंतजार का।

आज़ाद, बस दिल ही जानता है। ठान ली थी कि जिस तरह मुझे जलाया है, उसी तरह तरसाऊंगी। इस वक्त कलेजा बांसों उछल रहा है। मगर बेचैनी और भी बढ़ती जाती है ! अब उधर का हाल तो कहो, गए थे ।

, आज़ाद–वहां का हाल न पूछो। दिल पाश-पाश हुआ जाता है !

सुरैया बेगम ने समझा कि अब पाला हमारे हाथ रहा। कहा–आखिर, कुछ तो कहो। माजरा क्या है?

आज़ाद–अजी, औरत की बात का एतबार क्या?

बेगम–वाह, सबको शामिल न करो। पांचों अुंगलियां बराबर नहीं होतीं। अब यह बतलाइए कि हमसे जो वादे किये थे वे याद हैं या भूल गये?

इकरार जो किये थे कभी हमसे आपने;
कहिए, वे याद हैं कि फरामोश हो गये?

आज़ाद–याद हैं। न याद होना क्या माने?

बेगम–आपके वास्ते हुक्का भर लाओ।

आज़ाद–हुक्म हो तो अपने खिदमतगार से हुक्का मंगवा लूं। अब्बासी, जरा उनसे कहो, हुक्का भर लायें।

अब्बासी ने जाकर चंडूबाज से हुक्का भरने को कहा। चंडूबाज हुक्का ले कर ऊपर गये तो अलारक्खी को देखते ही बोले–कहिए अलारक्खी साहब, मिजाज तो अच्छे हैं?

सुरैया बेगम धक से रह गयीं। वह तो कहिए, खैर गुजरी कि अब्बासी वहां पर न थी। वरना बड़ी किरकिरी होती। चुपके से चंडूबाज को बुला कर कहा–यहां हमारा नाम सुरैया बेगम है। खुदा के वास्ते हमें अलारक्खी न कहना। यह तो बताओ, तुम इनके साथ कैसे हो लिये। तुमसे इनसे तो दुश्मनी थी? चलते वक्त कोड़ा मारा था।

चंडूबाज–इसके बारे में फिर अर्ज करूंगा।

आज़ाद–क्या खुदा की शान है कि खिदमतगार को अंदर बुलाया जाय और मालिक तरसे।

बेगम–क्यों घबराते हो? जरा बातें तो कर लेने दो? उस मुए मसखरे को कहां छोड़ा?

आज़ाद–वह लड़ाई पर मारा गया।

बेगम–ऐ है, मार डाला गया। बड़ा हंसोड़ था बेचारा।

सुरैया बेगम ने अपने हाथों से गिलौरियां बनायीं और अपने ही हाथ से मिरजा

आज़ाद को खिलायीं। आज़ाद दिल में सोच रहे थे कि या खुदा, हमने कौन-सा ऐसा सवाब का काम किया, जिसके बदले में तू हम पर इतना मिहरबान हो गया है ! हालांकि न कभी की जान, न पहचान। यकीन हो गया कि जरूर हमने कोई नेक काम किया होगा। चंडूबाज को भी हैरत हो रही थी कि अलारक्खी ने इतनी दौलत कहां पायी। इधर-उधर भौचक्के हो-हो कर देखते थे, मगर सबके सामने कुछ पूछना अदब के खिलाफ समझते थे। इतने में आज़ाद बोले-जमाना भी कितने रंग बदलता है।

सुरैया बेगम-हां, यह तो पुराना दस्तूर है। लोग इकरार कुछ करते हैं और करते कुछ हैं।

आज़ाद-यों नहीं कहतीं कि लोग चाहते कुछ हैं और होता कुछ और है।

सुरैया बेगम-दो-चार दिन और सब्र करो। जहां इतने दिनों खामोश रहे, अब चंद रोज तक और चुपके रहो।

चंडूबाज-खुदावंद, ये बातें तो हुआ ही करेंगी, अब चलिए, कल फिर आइएगा। मगर पहले बी अला....।

सुरैया बेगम-जरा समझ-बूझ कर !

चंडूबाज-कुसूर हुआ।

आज़ाद-हम समझे ही नहीं, क्या कुसूर हुआ?

सुरैया बेगम-एक बात है। यह खूब जानते हैं।

आज़ाद-फिर अब चलूं। मगर ऐसा न हो कि यह सारा जोश दो-चार दिन में ठंडा पड़ जाय। अगर ऐसा हुआ तो मैं जान दे दूंगा।

सुरैया बेगम-मैं तो यह खुद ही कहने को थी। तुम मेरी जबान से बात छीन ले गये।

आज़ाद-हमारी मुहब्बत का हाल खुदा ही जानता है।

सुरैया बेगम-खुदा तो सब जानता है, मगर आपकी मुहब्बत का हाल हमसे ज्यादा और कोई नहीं जानता। या (चंडूबाज की तरफ इशारा करके) यह जानते हैं। याद है न? अगर अबकी भी वैसा ही इकरार है तो खुदा ही मालिक है।

आज़ाद-अब उन बातों का जिक्र ही न करो।

सुरैया बेगम-हमें इस हालत में देख कर तुम्हें ताज्जुब तो जरूर हुआ होगा कि इस दरजे पर यह कैसे पहुंच गयी। वह बूढ़ा है जिसकी तरफ से आपने खत लिखा था?

आज़ाद मिरजा कुछ जानते होते तो समझते, हां-हां कहते जाते थे।

आखिर इतना कहा-तुम भी तो वकील के पास गयी थीं? और हमको पकड़वा बुलाया था? मगर सच कहना, हम भी किस चालाकी से निकल भागे थे?

सुरैया बेगम-और उसका आप को फख्र है। शरमाओ न शरमाने दो।

आज़ाद-अजी, वह मौका ही और था।

सुरैया बेगम ने अपना सारा हाल कह सुनाया। अपना जोगिन बनना, शहसवार का आना, थानेदार के घर से भागना, फिर वकील साहब के यहां फंसना, गरज सारी

बातें कह सुनायीं।

आज़ाद–ओफ्-ओह, बहुत मुसीबतें उठायीं।

सुरैया बेगम–अब तो यही जी चाहता है कि शुभ घड़ी निकाह हो तो सारा गम भूल जाय।

चंडूबाज–हम बेगम साहब की तरफ होंगे। आप ही ने तो कोड़ा जमाया था !

आज़ाद–कोड़ा अभी तक नहीं भूले। हम तो बहुत सी बातें भूल गये !

सुरैया बेगम–अब तो रात बहुत ज्यादा गयी, क्यों न नीचे जा कर दारोगा साहब के कमरे में सो रहो।

आज़ाद उठने ही को थे कि अजान की आवाज कान में आयी। बातों में तड़का हो गया। आज़ाद यहां से चले तो रास्ते में सुरैया बेगम का हाल पूछने लगे–क्यों जी, बेगम साहब हमको वही आज़ाद समझती हैं? क्या हमारी उनकी सूरत बिल्कुल मिलती है?

चंडूबाज–जनाब, आप उनसे बीस हैं, उन्नीस नहीं।

आज़ाद–तुमने कहीं कह तो नहीं दिया कि और आदमी है?

चंडूबाज–वाह-वाह, मैं कह देता तो आप वहां धंसने भी पाते? अब कहिए तो जा कर जड़ दूं। बस, ऐसी ही बातों से तो आग लग जाती है?

ये बातें करते हुए आज़ाद घर पहुंचे और गाड़ी से उतरने ही को थे कि कई कांस्टेबलों ने उनको घेर लिया। आज़ाद ने पैंतरा बदल कर कहा–ऐं, तुम लोग कौन हो?

जमादार ने आगे बढ़ कर वारंट दिखाया और कहा–आप मेरे हिरासत में हैं। चंडूबाज दबके-दबके गाड़ी में बैठे थे। एक सिपाही ने उनको भी निकाला। आज़ाद ने गुस्से में आ कर दो कांस्टेबलों को थप्पड़ मारे, तो उन सबों ने मिल कर उनकी मुश्कें कस लीं और थाने की तरफ ले चले। थानेदार ने आज़ाद को देखा तो बोले–आइए मिरजा साहब, बहुत दिनों के बाद आप नजर आये। आज आप कहां भूल पड़े?

आज़ाद–क्या मरे हुए से दिल्लगी करते हो ! हवालात से बाहर निकाल दो तो मजा दिखाऊं। इस वक्त जो चाहो, कह लो, मगर इजलास पर सारी कलई खोल दूंगा। जिस-जिस आदमी से तुमने रिश्वत ली है, उनको पेश करूंगा, भाग कर जाओगे कहां?

थानेदार–रस्सी जल गयी, मगर रस्सी का बल न गया।

आज़ाद तो डींगें मार रहे थे और चंडूबाज को चंडू की धुन सवार थी। बोले–अरे यारो, जरी चंडू पिलवा दो भई। आखिर इतने आदमियों में कोई चंडूबाज भी है, या सब के सब रूखे ही हैं?

थानेदार–अगर आज चंडू न मिले तो क्या हो?

चंडूबाज–मर जायं और क्या हो?

थानेदार–अच्छा देखें, कैसे मरते हो? कोई शर्त बदता है? हम कहते हैं कि अगर इसको चंडू न मिले तो यह मर जाय।

इंस्पेक्टर—और हम कहते हैं कि यह कभी न मरेगा।

चंडूबाज—वाह री तकदीर, समझे थे, अलारक्खी के यहां अब चैन करेंगे, चैन तो रहा दूर, किस्मत यहां ले आयी।

थानेदार—अलारक्खी कौन? यह बता दो, तो चंडू मंगा दूं।

चंडूबाज—साहब, एक औरत है जो सराय में रहती थी।

अब सुनिए, शाम के वक्त सुरैया बेगम बन-ठन कर बैठी आज़ाद का इंतजार कर रही थी। मगर आज़ाद तो हवालत में थे। वहां आता कौन? अब्बासी को आज़ाद के गिरफ़्तार होने की खबर तो मिल गयी, मगर उसने सुरैया बेगम से कहा नहीं।

छियासठ

शाहजादा हुमायूं फिर कई महीने तक नेपाल की तराई में शिकार खेल कर लौटे, तो हुस्नआरा की महरी अब्बासी को बुलावा भेजा। अब्बासी ने शाहजादे के आने की खबर सुनी तो चमकती हुई आयी। शाहजादे ने देखा तो फड़क गये। बोले—आइए, बी महरी साहबा हुस्नआरा बेगम का मिजाज तो अच्छा है?

अब्बासी—हां, हुजूर !

शाहजादा—और दूसरी बहन? उनका नाम तो हम भूल गये।

अब्बासी—बेशक, उनका नाम तो आप जरूर ही भूल जाये होंगे। कोठे पर से धूप में आईना दिखाये, घूरा-घूरी किये और लोगों से पूछे—बड़ी बहन ज्यादा हसीन हैं या छोटी? है ताज्जुब की बात कि नहीं?

शाहजादा—हमें तो तुम हसीन मालूम होती हो।

अब्बासी—ऐ हुजूर, हम गरीब आदमी, भला हमें कौन पूछता है?

शाहजादा—हमारे घर पड़ जाओ।

अब्बासी—हुजूर तो मुझे शर्मिंदा करते हैं। अल्लाह जानता है, क्या मिजाज पाया है। यही हंसना-बोलना रह जाता है हुजूर !

शाहजादा—अब किसी तरकीब से ले चलो।

अब्बासी—हुजूर, भला मैं कैसे ले चलूं ! रईसों का घर, शरीफों की बहू-बेटियों में पराये मर्द का क्या काम।

शाहजादा—कोई तरकीब सोचो, आखिर किस दिन काम आओगी?

अब्बासी—आज तो किसी तरह मुमकिन नहीं। आज एक मिस आने वाली हैं।

शाहजादा—फिर किसी तरकीब से मुझे वहां पहुंचा दो। आज तो आंखें सेंकने का खूब मौका है।

अब्बासी—अच्छा, एक तदबीर है। आज बाग ही में बैठक होगी। आज चलकर किसी दरख्त पर बैठ रहें।

शाहजादा–नहीं भाई, यह हमें पसंद नहीं। कोई देख ले तो नाहक उल्लू बनूं। बस, तुम बागबान को गांठ लो। यही एक तदबीर है।

अब्बासी ने आ कर माली को लालच दिया। कहा–अगर शाहजादे को अंदर पहुंचा दो तो दो अशर्फियां इनाम दिलवाऊं। माली राजी हो गया। तब अब्बासी ने आ कर शाहजादे से कहा–लीजिए हजरत, फतह है। मगर देखिए, धोती और मीरजाई पहननी पड़ेगी और मोटे कपड़े की भद्दी सी टोपी दीजिए, तब वहां पहुंच पाइएगा।

शाम को हुमायूं फर ने माली का वेष बनाया और माली के साथ बाग में पहुंचे तो देखा कि बाग के बीचोंबीच एक पक्का और ऊंचा चबूतरा है और चारों बहनें कुर्सियों पर बैठी मिस फैरिंगटन से बातें कर रही हैं। माली ने फूलों का एक गुलदस्ता बना कर दिया और कहा–जा कर मेज पर रख दो। हुमायूं फर ने मिस साहब को झुक कर सलाम किया और एक कोने में चुपचाप खड़े हो गए।

सिपहआरा–हीरा-हीरा, यह कौन है?

हीरा–हुजूर, गुलाम है आपका। मेरा भांजा है।

सिपहआरा–क्या नाम है?

हीरा–लोग हुमायूं कहते हैं हुजूर।

सिपहआरा–आदमी तो सलीकेदार मालूम होता है। अरे, हुमायूं, थोड़े फूल तोड़ ले और महरी को दे दे कि मेरे सिरहाने रख दो।

शाहजादा ने फूल तोड़ कर महरी को दिए और फूलों के साथ रूमाल में एक रुक्का बांध दिया। खत का मजमून यह था–

'मेरी जान,

अब सब्र की ताकत नहीं। अगर जिलाना हो तो जिला लो, वर्ना कोई हिकमत काम न आयगी !

हुमायूं फर'

जब शाहजादा हुमायूं फर चले गए तो सिपहआरा ने माली से कहा–अपने भांजे को नौकर रख लो।

माली–हुजूर, सरकार ही का नमक तो खाता है। यों भी नौकर है, वों भी नौकर है।

सिपहआरा–मगर हुमायूं तो मुसलमानों का नाम होता है।

माली–हां हुजूर, वह मुसलमान हो गया है।

दूसरे दिन शाम को सिपहआरा और हुस्नआरा बाग में आईं तो देखा, चबूतरे पर शंतरज के दो नक्शे खिंचे हुए हैं।

सिपहआरा–कल तक तो ये नकशे नहीं थे। अहाहा, हम समझ गए। हुमायूं माली ने बनाए होंगे।

माली–हां, हुजूर, उसी ने बनाया है।

सिपहआरा–बहन, जब जानें कि नकशा हल कर दो।

हुस्नआरा–बहुत टेढ़ा नकशा है। इसका हल करना मुश्किल है (माली से) क्यों

जी, तुम्हारे भांजे को शतरंज खेलना किसने सिखाया?

माली–हुजूर, उसको शौक है, लड़कपन से खेलता है।

हुस्नआरा–उससे पूछो, इस नकशे को हल कर देगा?

माली–कल बुलवा दूंगा हुजूर !

सिपहआरा–इसका भांजा बड़ा मनचला मालूम होता है।

हुस्नआरा–हां, होगा। इस जिक्र को जाने दो।

सिपहआरा–क्यों-क्यों, बाजीजान ! तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों बदल गया?

हुस्नआरा–कल इसका जवाब दूंगी।

सिपहआरा–नहीं, आखिर बताओ तो? तुम इस वक्त खफा क्यों हो?

हुस्नआरा–यह मिरजा हुमायूं फर की शरारत है।

सिपहआरा–ओफ ओह ! यह हथकंडे !

हुस्नआरा–(माली से) सच-सच बता, यह हुमायूं कौन है? खबरदार जो झूठ बोला।

सिपहआरा–भांजा है तेरा?

माली–हुजूर ! हुजूर !

हुस्नआरा–हुजूर-हुजूर लगाई है, बताता नहीं। तेरा भांजा और यह नकशे बनाए?

माली–हुजूर, मैं माली नहीं हूं, जाति का कायस्थ हूं, मगर घर-बार छोड़ कर बागवानी करने लगा। हमारा भांजा पढ़ा-लिखा हो तो कौन ताज्जुब की बात है !

हुस्नआरा–चल झूठे, सच-सच बता। नहीं अल्लाह जानता है, खड़े-खड़े निकलवा दूंगी।

सिपहआरा अपने दिल से सोचने लगी कि हुमायूं फर ने बेतौर पीछा किया। और फिर अब तो उनको खबर पहुंच ही गयी है तो फिर माली बनने की क्या जरूरत है !

हुस्नआरा–खुदा गवाह है। सजा देने के काबिल आदमी है। भलमनसी के यह मानी नहीं हैं कि किसी के घर में माली या चमार बनकर घुसे। यह हीरा निकाल देने लायक है। इसको कुछ चटाया होगा, जभी फिसल पड़ा।

माली के होश उड़ गए। बोला–हुजूर मालिक हैं। बीस बरस से इस सरकार का नमक खाता हूं, मगर कोई कुसूर गुलाम से नहीं हुआ। अब बुढ़ापे में हुजूर यह दाग न लगाएं।

हुस्नआरा–कल अपने भांजे को जरूर लाना।

सिपहआरा–अगर कुसूर हुआ है तो सच-सच कह दे।

माली–हुजूर, झूठ बोलने की तो मेरी आदत नहीं।

दूसरे दिन शाहजादा ने माली को फिर बुलवाया और कहा–आज एक बार और दिखा दो।

माली–हुजूर, ले चलने में तो गुलाम को उज्र नहीं, मगर डरता हूं कि कहीं बुढ़ापे में दाग न लग जाए !

शाहजादा–अजी वह मौकूफ कर देंगी तो हम नौकर रख लेंगे।

माली–सरकार, मैं नौकरी को नहीं, इज्जत को डरता हूं।

शाहजादा–क्या महीना पाते हो?

माली–6 रुपये मिलते हैं हुजूर।

शाहजादा–आज से 6 रुपये यहां से तुम्हारी जिंदगी भर मिला करेंगे। क्यों, हमारे आने के बाद औरतें कुछ कहती नहीं थीं?

माली–आपस में कुछ बातें करती थीं; मगर मैं सुन नहीं सका। तो मैं शाम को आऊंगा।

शाहजादा–तुम डरो नहीं, तुम्हारा नुकसान नहीं होने पाएगा।

माली तो सलाम करके रवाना हुआ और हुमायूं फर दुआ मांगने लगे कि किसी तरह शाम हो। बार-बार कमरे के बाहर जाते, बार-बार घड़ी की तरफ देखते। सोचे, आओ जरा सो रहें। सोने में वक्त भी कट जाएगा और बेकरारी भी कम हो जाएगी। लेटे; मगर बड़ी देर तक नींद न आई। खाना खाने के बाद लेटे तो ऐसी नींद आई कि शाम हो गई। उधर सिपहआरा ने हीरा माली को अकेले में बुलाकर डांटना शुरू किया। हीरा ने रोकर कहा–नाहक अपने भांजे को लाया। नहीं तो यह लथाड़ क्यों सुननी पड़ती।

सिपहआरा–कुछ दीवाना हुआ है बुड्ढे ! तेरा भांजा और इतना सलीकेदार? इतना हसीन?

हीरा–हुजूर, अगर भांजा न हो तो नाक कटवा डालूं।

सिपहआरा–(महरी से) जरा तू इसे समझा दे कि अगर सच-सच बतला दे तो कुछ इनाम दूं।

महरी ने माली को अलग ले जा कर समझाना शुरू किया–अरे भले आदमी बता दे। जो तेरा रत्ती भर नुकसान हो तो मेरा जिम्मा।

हीरा–इस बुढ़ौती में कलंक का टीका लगवाना चाहती हो?

महरी–अब मुझसे तो बहुत उड़ो नहीं, शाहजादा हुमायूं फर के सिवा और किसी की इतनी हिम्मत नहीं हो सकती। बता, थे वही कि नहीं?

हीरा–हां आए तो वही थे।

महरी–(सिपहआरा से) लीजिए हुजूर, अब इसे इनाम दीजिए।

सिपहआरा–अच्छा हीरा, आज जब वे आएं तो यह कागज दे देना।

इत्तिफाक से हुस्नआरा बेगम भी टहलती हुई आ गईं। वह भी दफ्ती पर एक शेर लिख लाई थीं। सिपहआरा को दे कर बोलीं–हीरा से कह दो, जिस वक्त हुमायूं फर आएं, यह दफ्ती दिखा दे।

सिपहआरा–ऐ तो बाजी, जब हुमायूं फर हों भी?

हुस्नआरा–कितनी सीदी हो? जब हों भी?

सिपहआरा–अच्छा, हुमायूं फर ही सही ! यह शेर तो सुनाओ।

हुस्नआरा–हमने यह लिखा है–

असीरे हिर्स वशहवत हर कि शुद नाकाम मीबाशद;
दरीं आतश कसे गर पुख्ता बाशद खाम मीबाशद।

(जो आदमी हिर्स और शहवत में कैद हो गया, वह नाकाम रहता है। इस आग में अगर कोई पका भी हो तो भी कच्चा रहता है।)

हीरा ने झुक कर सलाम किया और शाम को हुमायूं फर के मकान पहुंचा।

हुमायूं–आ गए? अच्छा, ठहरो। आज बहुत सोए।

हीरा–खुदावंद, बहुत खफा हुईं और कहा कि हम तुमको मौकूफ कर देंगे।

हुमायूं–तुम इसकी फिक्र न करो।

हीरा–हुजूर, मुझे आध सेर आटे से मतलब है।

झुटपुटे वक्त हुमायूं हीरा के साथ बाग में पहुंचे। यहां हीरा ने दोनों बहनों के लिखे हुए शेर हुमायूं फर को दिखाए। अभी वह पढ़ ही रहे थे कि हुस्नआरा बाग में आ गई और हीरा को बुला कर कहा–तुम्हारा भांजा आया?

हीरा–हाजिर है हुजूर !

हुस्नआरा–बुलाओ !

हुमायूं ने आ कर सलाम किया और गर्दन झुका ली।

हुस्नआरा–तुम्हारा क्या नाम है जी?

हुमायूं–हुमायूं।

हुस्नआरा–क्यों साहब, मकान कहां है?

हुमायूं–

घर बार से क्या फकीर को काम,
क्या लीजिए छोड़े गांव का नाम?

हुस्नआरा–अक्खाह, आप शायर भी हैं।

हुमायूं–हुजूर, कुछं बक लेता हूं।

हुस्नआरा–कुछ सुनाओ।

हुमायूं–हुक्म हो तो जमीन पर बैठ जाऊं।

सिपहआरा–बड़े गुस्ताख हो तुम। कहीं नौकर हो?

हुमायूं–जी हां, हुजूर। आजकल शाहजादा हुमायूं फर की बहन के यहां नौकर हूं।

इतने में बड़ी बेगम आ गईं। हुमायूं फर मारे खौफ के भाग गए।

सड़सठ

सुरैया बेगम ने आज़ाद मिरजा के कैद होने की खबर सुनी तो दिल पर बिजली-सी गिर पड़ी। पहले तो यकीन न आया, मगर जब खबर सच्ची निकली तो हाय-हाय करने लगी।

अब्बासी–हुजूर, कुछ समझ में नहीं आया। मगर उनके एक अजीज हैं। वह पैरवी करनेवाले हैं। रुपये भी खर्च करेंगे।

सुरैया बेगम—रुपया निगोड़ा क्या चीज है। तुम जा कर कहो कि जितने रुपयों की जरूरत हो, हमसे लें।

अब्बासी आज़ाद मिरजा के चाचा के पास जा कर बोली—बेगम साहब ने मुझे आपके पास भेजा है और कहा है कि रुपये की जरूरत हो तो हम हाजिर हैं। जितने रुपये कहिए, भेज दें।

यह बड़े मिरजा आज़ाद से भी बढ़ कर बगड़ेबाज थे। सुरैया बेगम के पास आ कर बोले—क्या कहूं बेगम साहब, मेरी तो इज्जत खाक में मिल गई।

सुरैया बेगम—या मेरे अल्लाह, क्या यह गजब हो गया?

बड़े मिरजा—क्या करूं, सारा जमाना तो उनका दुश्मन है। पुलिस से अदावत, अमलों से तकरार। मेरे पास इतने रुपये कहां कि पैरवी करूं। वकील बगैर लिये-दिये मानते नहीं। जान अजाब में है।

सुरैया बेगम—इसकी तो आप फिक्र ही न करें। सब बंदोबस्त हो जायगा। सौ दो सौ, जो कहिए, हाजिर है।

बड़े मिरजा—फौजदारी के मुकदमे में ऊंचे वकील जरा लेतं बहुत हैं। मैं कल एक बारिस्टर के पास गया था। उन्होंने कहा कि एक पेशी के दो सौ लूंगा। अगर आप चार सौ रुपये दें दें तो उम्मेद है कि शाम तक आज़ाद तुम्हारे पास आ जायं।

बेगम साहब ने चार सौ रुपये दिलवा दिये। बड़े मिरजा रुपये लेकर बाहर गये और थोड़ी देर के बाद आकर चारपाई पर धम से गिर पड़े और बोले—आज तो इज्जत ही गयी थी, मगर खुदा ने बचा लिया। मैं जो यहां से गया तो एक साहब ने आ कर कहा—आज़ाद मिरजा को थानेदार हथकड़ी पहना कर चौक से ले जायगा। बस, मैंने अपना सिर पीट लिया। इत्तिफाक से एक रिसालदार मिल गये। उन्होंने मेरी यह हालत देखी तो कहा—दो सौ रुपये दो तो पुलिसवालों को गांठ लूं। मैंने फौरन दो सौ रुपये निकाल कर उनके हाथ पर रखे। अब दो सौ और दिलवाइए तो वकीलों के पास जाऊं। बेगम ने दो सौ रुपये और दिलवा दिये। बड़े मिरजा दिल में खुश हुए, अच्छा शिकार फंसा। रुपये ले कर चलते हुए।

इधर सुरैया बेगम रो-रो कर आंखें फोड़े डालती थीं। महरियां समझातीं, दिन-रात रोने से क्या फायदा, अल्लाह पर भरोसा रखिए; उसकी मर्जी हुई तो आज़ाद मिरजा दो-चार दिन में घर आयेंगे। मगर ये नसीहतें बेगम साहब पर कुछ असर न करती थीं। एक दिन एक महरी ने आ कर कहा—हुजूर, एक औरत डयोढ़ी पर खड़ी है। कहिए तो बुलाऊं। बेगम ने कहा—बुला लो। वह औरत परदा उठा कर आंगन में दाखिल हुई और झुक कर बेगम को सलाम किया। उसकी सजधज सारी दुनिया की औरतों से निराली थी। गुलबनद का चुस्त पाजामा, बांका अमामा, मखमल का दगला, उस पर हलका कारचोबी का काम, हाथ में आबनूस का पिंजड़ा, उसमें एक चिड़िया बैठी हुई। सारा घर उसी की ओर देखने लगा। सब की सब दंग थीं कि खुदा, यह उठती जवानी, गुलाब सा रंग, और यों गली-कूचों की सैर करती फिरे! अब्बासी बोली—क्यों बीबी, तुम्हारा मकान कहां है? और यह पहनावा किस मुल्क का है? तुम्हारा नाम क्या है बीबी?

औरत—हमारा घर मनचले जवानों का दिल है और नाम माशूक है।

यह कह कर उसने पिंजड़ा सामने रख दिया और यों चहकने लगी—हुजूर, आपको यकीन न आयगा। कल मैं परिस्तान में बैठी वहां की सैर देख रही थी कि पहाड़ पर बड़े जोरों की आंधी आई और इतनी गर्द उड़ी कि आसमान के नीचे एक और आसमान नजर आने लगा। इसके साथ ही घड़घड़ाहट की आवाज आई और एक उड़नखटोला आसमान से उतर पड़ा।

अब्बासी—अरे, उड़नखटोला ! इसका जिक्र तो कहानियों में सुना करते थे।

औरत—बस, हुजूर, उस उड़नखटोले में से एक सचमुच की परी उतरी और दम के दम में खटोला गायब हो गया। वह परी असल में परी न थी, वह एक इनसान थी। मैं उसे देखते ही हजार जान से आशिक हो गई। अब सुना है कि वह बेचारा कहीं कैद हो गया है।

सुरैया बेगम—क्या, कैद है ! भला, उस जवान का नाम भी तुम्हें मालूम है?

औरत—जी हां, हुजूर, मैंने पूछ लिया है। उसे आज़ाद कहते हैं।

सुरैया बेगम—अरे, यह तो कुछ और ही गुल खिला। किसी ने तुम्हें बहका तो नहीं दिया?

औरत—हुजूर, वह आपके यहां भी आए थे। आप भी उन पर रीझी हुई हैं।

सुरैया बेगम—मुझे तो तुम्हारी सब बातें दीवानों की बकझक मालूम होती हैं। कहां, परी आज़ाद, कहां उड़नखटोला ! समझ में कोई बात नहीं आती।

औरत—इन बातों को समझने के लिए जरा अक्ल चाहिए।

यह कह कर उसने पिंजड़ा उठाया और चली गई।

थोड़ी देर में दारोगा साहब ने अंदर आ कर कहा—दरवाजे पर थानेदार और सिपाही खड़े हैं। मिरजा आज़ाद जेल से भाग निकले हैं। और वही आज औरत के वेष में आए थे। बेगम साहब के होश-हवास गायब हो गए ! अरे, यह आज़ाद थे !

अड़सठ

आज़ाद अपनी फौज के साथ एक मैदान में पड़े हुए थे कि एक सवार ने फौज में आ कर कहा—अभी बिगुल दो। दुश्मन सिर पर आ पहुंचा। बिगुल की आवाज सुनते ही अफसर, प्यादे, सवार सब चौंक पड़े। सवार ऐंठते हुए चले, प्यादे अकड़ते हुए बढ़े। एक बोला—मार लिया है। दूसरे ने कहा—भगा दिया है। मगर अभी तक किसी को मालूम नहीं कि दुश्मन कहां है। मुखबिर दौड़ाए गए तो पता चला कि रूस की फौज दरिया के उस पार पैर जमाए खड़ी है। दरिया पर पुल बनाया जा रहा है और अनोखी बात यह थी कि रूसी फौज के साथ एक लेडी, शहसवारों की तरह रान-पटरी जमाए, कमर से तलवार लटकाए, चेहरे को नकाब से छिपाए, अजब शोखी और बांकपन के साथ लड़ाई में शरीक होने के लिए आई है। उसके साथ दस जवान

औरतें घोड़ों पर सवार चली आ रही हैं। मुखबिर ने इन औरतों की कुछ ऐसी तारीफ की कि लोग सुन कर दंग रह गए। बोला—इस रईसजादी ने कमस खाई है कि उम्र भर क्वांरी रहूंगी। इसका बाप एक मशहूर जनरल था, उसने अपनी प्यारी बेटी को शहसवारी का फन खूब सिखाया था। रूस में बस यही एक औरत है जो तुर्कों से मुकाबला करने के लिए मैदान में आई है। उसने कसम खाई है कि आज़ाद का सिर ले कर जार के कदमों पर रख दूंगी।

आज़ाद—भला, यह तो बतलाओ कि अगर वह रईस की लड़की है तो उसे मैदान से क्या सरोकार? फिर मेरा नाम उसको क्या मालूम हुआ?

मुखबिर—अब यह तो हुजूर, वही जानें, उनका नाम मिस क्लारिसा है। वह आपसे तलवार का मुकाबिला करना चाहती हैं। मैदान में अकेले आप से लड़ेंगी, जिस तरह पुराने जमाने में पहलवानों में लड़ाई का रिवाज था।

आज़ाद पाशा के चेहरे का रंग उड़ गया। अफसरों ने उनको बनाना शुरू किया। आज़ाद ने सोचा, अगर कबूल किए लेता हूं तो नतीजा क्या ! जीता, तो कोई बड़ी बात नहीं। लोग कहेंगे, लड़ना-भिड़ना औरतों का काम नहीं। अगर चोट खाई तो जग की हंसाई होगी। मिस मीडा ताने देंगी। अलारक्खी आड़े हाथों लेंगी कि एक छोकरी से चरकों खा गए। सारी डींग खाक में मिल गई। और अगर इनकार करते हैं तो भी तालियां बजेंगी कि एक नाजुकबदन औरत के मुकाबिले से भागे। जब खुद कुछ फैसला न कर सके तो पूछा—दिल्लगी तो हो चुकी है, अब बतलाइए कि मुझे क्या करना चाहिए?

जनरल—सलाह यही है कि अगर आपको बहादुरी का दावा है तो कबूल कर लीजिए, वर्ना चुपके ही रहिए।

आज़ाद—जनाब, खुदा ने चाहा, तो एक चोट न खाऊं और बेदाग लौट आऊं। औरत लाख दिलेर हो, फिर भी औरत है !

जनरल—यहां मूछों पर ताव दे लीजिए, मगर वहां कलई खुल जायगी।

अनवर पाशा—जिस वक्त वह हसीना हथियार कस कर सामने आयगी, होश उड़ जाएंगे। गश पर गश आएंगे। ऐसी हसीन औरत से लड़ना क्या कुछ हंसी है? हाथ न उठेगा। मुंह की खाओगे। उसकी एक निगाह तुम्हारा काम-तमाम कर देगी।

आज़ाद—इसकी कुछ परवा नहीं ! यहां तो दिली आरजू है कि किसी नाजनीन की निगाहों के शिकार हों।

यही बातें हो रही थीं कि एक आदमी ने कहा—कोई साहब हजरत आज़ाद को ढूंढ़ते हुए आए हैं। अगर हुक्म हो, तो लाऊं। बड़े तीखे आदमी हैं। मुझसे लड़ पड़े थे। आज़ाद ने कहा, उसे अंदर आने दो। सिपाही के जाते ही मियां खोजी अकड़ते हुए आ पहुंचे।

आज़ाद—मुद्दत के बाद मुलाकात हुई, कोई ताजा खबर कहिए।

खोजी—कमर तो खोलने दो, अफीम घोलू, चुस्की लगाऊं तो होश आए। इस वक्त थका-मांदा, मरा-मिटा आ रहा हूं। सांस तक नहीं समाती है।

आज़ाद-मिस मीडा का हाल तो कहो !

खोजी-रोज कुम्मैत घोड़े पर सवार दरिया किनारे जाती हैं। रोज अखबार पढ़ती हैं। जहां तुम्हारा नाम आया, बस, रोने लगीं।

आज़ाद-अरे, यह अंगुली में क्या हुआ है जी ! जल गई थी क्या?

खोजी-जल नहीं गई थी जी, यह अपनी सूरत गले का हार हुई।

आज़ाद-ऐ, यह माजरा क्या है? एक कान कौन कतर ले गया है?

खोजी-न हम इतने हसीन होते, न परियां जान देतीं !

आज़ाद-नाक भी कुछ चिमटी मालूम होती है।

खोजी-सूरत, सूरत ! यही सूरत बला-ए-जान हो गई। इसी के हाथों यह दिन देखना पड़ा।

आज़ाद-सूरत-मूरत नहीं, आप कहीं से पिट कर आए हैं। कमजोर, मार खाने की निशानी ! किसी से भिड़ पड़े होंगे। उसने ठोंक डाला होगा ! यही बात हुई है न?

खोजी-अजी, एक परी ने फूलों की छड़ियों से सजा दी थी।

आज़ाद-अच्छा, कोई खत-वत लाए हो? या चले आए यों ही हाथ झुलाते?

खोजी-दो-दो खत हैं। एक मिस मीडा का, दूसरा हुरमुज जी का।

आज़ाद और खोजी नहर के किनारे बैठे बातें कर रहे थे। अब जो आता है, खोजी को देख कर हंसता है। आखिर खोजी बिगड़ कर बोले-क्या भीड़ लगाई है? चलो, अपना काम करो।

आज़ाद-तुमको किसी से क्या वास्ता, खड़े रहने दो।

खोजी-अजी नहीं, आप समझते नहीं। ये लोग नजर लगा देंगे।

आज़ाद-हां, आपका कल्ला-ठल्ला देखकर नजर लग जाय-तो ताज्जुब भी नहीं।

खोजी-अजी, वह एक सूरत ही क्या कम है। और कसम से लो कि किसी मर्दक को अब तक मालूम हुआ हो कि हम इतने हसीन हैं ! और हमें इसका कुछ गरूर भी नहीं-

मुतलक नहीं गरूर जमालोकमाल पर।

आज़ाद-जी, हां, बाकमाल लोग कभी गरूर नहीं करते, सीधे-सादे होते ही हैं। अच्छा, आप अफीम घोलिए, साथ है या नहीं?

खोजी-जी नहीं, और क्या ! आपके भरोसे आते हैं? अच्छा, लाओ, निकलवाओ। मगर जरा उम्दा हो। कमसरियट के साथ तो होती होगी?

आज़ाद-अब तुम मरे। भला यहां अफीम कहां? और कमसरियट में? क्या खूब !

खोजी-तब तो बे-मौत मरे। भई, किसी से मांग लो।

आज़ाद-यहां अफीम का किसी को शौक ही नहीं।

खोजी-इतने शरीफजादे हैं और अफीमची एक भी नहीं? वाह !

आज़ाद-जी हां, सब गंवार हैं। मगर आज दिल्लगी होगी, जब अफीम न मिलेगी और तुम तड़पोगे, बिलबिलाओगे।

खोजी-यह तो अभी से जम्हाइयां आने लगीं। कुछ तो फिक्र करो यार !

आज़ाद-अब यहां अफीम न मिलेगी। हां, करौलियां जितनी चाहो, मंगा दूं।

खोजी–(अफीम की डिबिया दिखा कर) यह भरी है अफीम ! क्या उल्लू समझे थे ! आने के पहले ही मैंने हुरमुज जी से कहा कि हुजूर, अफीम मंगवा दें। अच्छा, यह लीजिए हुरमुज जी का खत।

आज़ाद ने खत खोला तो यह लिखा था–

'माई डियर आज़ाद,

जरा खोजी से खैर व आफियत तो पूछिए, इतना पिटे कि दो दांत टूट गए, कान कट गए और घूंसे और मुक्के खाए। आप इनसे इतना पूछिए कि लालारुख कौन है?

तुम्हारा

हुरमुज।'

आज़ाद–क्यों साहब, यह लालारुख कौन है?

खोजी–ओफ ओफ, हम पर चकमा चल गया। वाह रे हुरमुज जी, वल्लाह। अगर नमक न खाए होता तो जा कर करौली भोंक देता।

आज़ाद–नहीं, तुम्हें वल्लाह, बताओ तो, यह लालारुख कौन है?

खोजी–अच्छा हुरमुज जी समझेंगे?

सौदा करेंगे दिल का किसी दिलरुबा के साथ
इस बावफा को बेचेंगे एक बेवफा के हाथ।

हाय लालारुख, जान जाती है, मगर मौत भी नहीं आती।

आज़ाद–पिटे हुए हो, कुछ हाल तो बतलाओ। हसीन है?

खोजी–(झल्ला कर) जी नहीं, हसीन नहीं है। काली-कलूटी हैं। आप भी वल्लाह, निरे चोंच ही रहे ! भला, किसी ऐसी-वैसी की जुर्रत कैसे होती कि हमारे साथ बात करती ! याद रखो, हसीन पर जब नजर पड़ेगी, हसीन ही की पड़ेगी। दूसरे की मजाल नहीं।

'गालिब' इन सीमी तनों के वास्ते,
चाहनेवाला भी अच्छा चाहिए।

आज़ाद–अच्छा, अब लालारुख का तो हाल बताओ।

खोजी–अजी, अपना काम करो, इस वक्त दिल काबू में नहीं है। वह हुस्न है कि आपके बाबाजान ने भी न देखा होगा। मगर हाथों में चुल है। घंटे भर में पांच-सात बार जरूर चपतियाती थीं। खोपड़ी पिलपिली कर दी। बस, हमको इसी बात से नफरत थी। वर्ना, नखशिख से दुरुस्त ! और चेहरा चमकता हुआ, जैसे आबनूस। एक दिन दिल्लगी-दिल्लगी में उठ कर पचास जूते लगा दिए, तड़-तड़-तड़ ! हैं, हैं, यह क्या हिमाकत है, हमें यह दिल्लगी पसंद नहीं, मगर वह सुनती किसकी हैं ! अब फरमाइए, जिस पर पचास जूते पड़ें, उसकी क्या गति होगी। एक रोज हंसी-हंसी में कान काट लिया। एक दिन दूकान पर खड़ा हुआ सौदा खरीद रहा था। पीछे से आ कर दस जूते लगा दिए। एक मरतबे एक हौज में हमको ढकेल दिया। नाक टूट गई। मगर हैं लाखों में लाजवाब !

तर्जे-निगाह ने छीन लिए जाहिदों के दिल,
आंखें जो उनकी उठ गईं दस्ते दुआ के साथ।

आज़ाद–तो यह कहिए, हंसी-हंसी में खूब जूतियां खाईं आपने !

खोजी–फिर यह तो है ही, और इश्क कहते किसे हैं? एक दफा मैं सो रहा था, आने के साथ ही इस जोर से चाबुक जमाई कि मैं तड़प कर चीख उठा। बस, आग हो गईं कि हम पीटें, तो तुम रोओ क्यों? जाओ, बस, अब हम न बोलेंगी। लाख मनाया, मगर बात तक न की। आखिर यह सलाह ठहरी कि सरे बाजार वह हमें चपतियाएं और हम सिर झुकाए खड़े रहें।

लब ने जो जिलाया तो तेरी आंख ने मारा;
कातिल भी रहा साथ मसीह के हमेशा।
परदा न उठाया कभी चेहरा न दिखाया;
मुश्ताक रहे हम रुखे जेबा के हमेशा।

आज़ाद–किसी दिन हंसी-हंसी में आपको जहर न खिला दे?

खोजी–क्यों साहब खिला दें क्यों नहीं कहते? कोई कंडेवाली मुकर्रर की है। वह भी रईसजादी हैं। आपकी मिस मीडा पर गिर पड़ें तो यह कुचल जाएं। अच्छा हमारी दास्तान तो सुन चुके, अपनी बीती कहो।

आज़ाद–एक नाजनीन हमसे तलवार लड़ना चाहती है। क्या राय है? पैगाम भेजा है कि किसी दिन आज़ाद पाशा से और हमसे अकेले तलवार चले।

खोजी–मगर तुमने पूछा तो होता कि सिन क्या है? शक्ल-सूरत कैसी है?

आज़ाद–सब पूछ चुके हैं। रूस में उसका सानी नहीं है। मिस मीडा यहां होतीं तो खूब दिल्लगी रहती। हां, तुमने तो उनका खत दिया ही नहीं। तुम्हारी बातों में ऐसा उलझा कि उसकी याद ही न रही।

खोजी ने मीडा का खत निकाल कर दिया। यह मजमून था–

'प्यारे आज़ाद,

आजकल अखबारों ही में मेरी जान बसती है। मगर कभी-कभी खत भी तो भेजा करो। यहां जान पर बन आई है, और तुमने वह चुप्पी साधी है कि खुदा की पनाह। तुमसे इस बेवफाई की उम्मेद न थी।

यों तो मुंह-देखे की होती है मुहब्बत सबको,
जब मैं जानूं कि मेरे बाद मेरा ध्यान रहे।

तुम्हारी
मीडा।'

उनहत्तर

दूसरे दिन आज़ाद का उस रूसी नाजनीन से मुकाबिला था। आजाद को रात-भर नींद नहीं आई। सबेरे उठ कर बाहर आए तो देखा कि दोनों तरफ की फौजें आमने-सामने खड़ी हैं और दोनों तरफ से तोपे चल रही हैं।

खोजी दूर से एक ऊंचे दरख्त की शाख पर बैठे लड़ाई का रंग देख रहे थे और चिल्ला रहे थे, होशियार, होशियार ! यारो ! कुछ खबर भी है? हाय ! इस वक्त अगर तोड़ेदार बंदूक होती तो परे के परे साफ कर देता। इतने में आज़ाद पाशा ने देखा कि रूसी फौज के सामने एक हसीना कमर में तलवार लटकाए, हाथ में नेजा लिए, घोड़े पर शान से बैठी सिपाहियों को आगे बढ़ने के लिए ललकार रही है। आज़ाद की उस पर निगाह पड़ी तो दिल में सोचे, खुदा इसे बुरी नजर से बचाए। यह तो इस काबिल है कि इसकी पूजा करे। यह, और मैदाने-जंग ! हाय-हाय, ऐसा न हो कि उस पर किसी का हाथ पड़ जाय। गजब की चीज है यह हुस्न, इंसान लाख चाहता है, मगर दिल खिंच ही जाता है, तबीयत आ ही जाती है।

उस हसीना ने जो आज़ाद को देखा तो यह शेर पढ़ा—

संभल के रखियो कदम राहे-इश्क में मजनूं,
कि इस दयार में सौदा बरहनः पाई है।

यह कहकर घोड़ा बढ़ाया। आज़ाद के घोड़े की तरफ झुकी और झुकते ही उन पर तलवार का वार किया। आज़ाद ने वार खाली दिया और तलवार को चूम लिया। तुर्कों ने इस जोर से नारा मारा कि कोसों तक मैदान गूंजने लगा। मिस क्लारिसा ने झल्ला कर घोड़े को फेरा और चाहा कि आज़ाद को दो टुकड़े कर दें, मगर जैसे ही हाथ उठाया, आज़ाद ने अपने घोड़े को आगे बढ़ाया और तलवार को अपनी तलवार से रोक कर हाथ से उस परी का हाथ पकड़ लिया। तुर्कों ने फिर नारा मारा और रूसी झेंप गए। मिस क्लारिसा भी लजाई और मारे गुस्से के झल्ला कर वार करने लगीं। बार-बार चोट आती थी, मगर आज़ाद की यह कैफियत थी कि कुछ चोटें तलवार पर रोकीं और कुछ खाली दीं। आज़ाद उससे लड़ तो रहे थे, मगर वार करते दिल कांपता था। एक दफा उस शेरदिल औरत ने ऐसा हाथ जमाया कि कोई दूसरा होता, तो उसकी लाश जमीन पर फड़कती नजर आती, मगर आज़ाद ने इस तरह बचाया कि हाथ बिलकुल खाली गया। जब उस खातून ने देखा कि आज़ाद ने एक चोट भी नहीं खाई तो फिर झुंझला कर इतने वार किए कि दम लेना भी मुश्किल हो गया। मगर आज़ाद ने हंस-हंस कर चोटें बचाईं। आखिर उसने ऐसा तुला हुआ हाथ घोड़े की गर्दन पर जमाया कि गर्दन कट कर दूर जा गिरी। आज़ाद फौरन कूद पड़े और चाहते थे कि उछल कर मिस क्लारिसा के हाथ से तलवार छीन लें कि उसने घोड़े को चाबुक जमाई और अपनी फौज की तरफ चली। आज़ाद संभलने भी न पाए थे कि घोड़ा हवा हो गया। आज़ाद घोड़े पर लटके रह गए।

जब घोड़ा रूस की फौज में दाखिल हुआ तो रूसियों ने तीन बार खुशी के आवाजें लगाए और कोई चालीस-पचास आदमियों ने आज़ाद को घेर लिया। दस आदमियों ने एक हाथ पकड़ा, पांच ने दूसरा हाथ। दो-चार ने टांग ली। आज़ाद बोले—भई, अगर मेरा ऐसा ही खौफ है तो मेरे हथियार खोल लो और कैद कर दो। दस आदमियों का पहरा रहे। हम भाग कर जाएंगे कहां? अगर तुम्हारे यही हथकंडे हैं तो दस पांच दिन में तुर्क जवान आप ही आप बंधे चले आएंगे। मिस क्लारिसा की तरह पंद्रह-बीस परियां मोर्चे पर जाएं तो शायद तुर्कों की तरफ से गोलंदाजी ही बंद हो जायं।

एक सिपाही–टंगे हुए चले आए, सारी दिलेरी धरी रह गई।

दूसरा सिपाही–वाह री क्लारिसा ! क्या फुर्ती है।

आज़ाद–इसमें तो शक नहीं कि इस वक्त शिकार हो गए। मिस क्लारिसा की अदा ने मार डाला।

एक अफसर–आज हम तुम्हारी गिरफ्तारी का जश्न मनाएंगे।

आज़ाद–हम भी शरीक होंगे। भला, क्लारिसा भी नाचेंगी?

अफसर–अजी, वह आपको अंगुलियों पर नचाएंगी। आप हैं किस भरोसे?

आज़ाद–अब तो खुदा ही बचाए तो बचें। बुरे फसे।

तेरी गली में हम इस तरह से हैं आये हुए;
शिकार हो कोई जिस तरह चोट खाये हुए।

अफसर–आज तो हम फूले नहीं समाते। बड़े मूढ़ को फांसा।

आज़ाद–अभी खुश हो लो; मगर हम भाग जाएंगे ! मिस क्लारिसा को देख कर तबीयत लहराई, साथ चले आए।

अफसर–वाह, अच्छे जवांमर्द हो। आए लड़ने और औरत को देख फिसल पड़े। सूरमा कहीं औरत पर फिसला करते हैं?

आज़ाद–बूढ़े हो गये हो न ! ऐसा तो कहा ही चाहो।

अफसर–हम तो आपकी शहसवारी की बड़ी धूम सुनते थे। मगर बात कुछ और ही निकली। अगर आप मेरे मेहमान न होते तो हम आपके मुंह पर कह देते कि आप शोहदे हैं। भले आदमी, कुछ तो गैरत चाहिए।

इतने में एक रूसी सिपाही ने आ कर अफसर के हाथ में एक खत रख दिया। उसने पढ़ा तो यह मजमून था–

(1) हुक्म दिया जाता है कि मियां आज़ाद को साइबेरिया के उन मैदानों में भेजा जाए, जो सबसे ज्यादा सर्द हैं।

(2) जब तक यह आदमी जिंदा रहे, किसी से बोलने न पाए। अगर किसी से बात करे तो दोनों पर सौ-सौ बेंत पड़ें।

(3) खाना सिर्फ एक वक्त दिया जाय। एक दिन आध सेर उबला हुआ साग दिया और दूसरे दिन गुड़ और रोटी। पानी के तीन कटोरे रख दिए जायं, चाहे एक ही बार पी जाए चाहे दस बार पिए।

(4) दस सेर आटा रोज पीसे और दो घंटे रोज दलेल बोली जाय। चक्की का पाट सिर पर रख कर चक्कर लगाए। जरा दम न लेने पाए।

(5) हफ्ते में एक बार बरफ में खड़ा कर दिया जाय और बारीक कपड़ा पहनने को दिया जाय।

आज़ाद–बात तो अच्छी है, गरमी निकल जायगी।

अफसर–इस भरोसे भी न रहना। आधी रात को सिर पर पानी का तड़ेड़ा रोज दिया जाएगा।

आज़ाद मुंह से तो हंस रहे थे, मगर दिल कांप रहा था कि खुदा ही खैर करे। ऊपर से हुक्म आ गया तो फरियाद किससे करें और फरियाद करें भी तो सुनता

कौन है? बोले, खत्म हो गया या और कुछ है।

अफसर—तुम्हारे साथ इतनी रियायत की गई है कि अगर मिस क्लारिसा रहम करें तो कोई हलकी सजा दी जाए।

आज़ाद—तब तो वह जरूर ही माफ कर देंगी।

यह कह कर आज़ाद ने यह शेर पढ़ा—

खोल दी है जुल्फ किसने फूल से रुखसार पर?
छा गई काली घटा है आन कर गुलजार पर।

अफसर—अब तुम्हारे दीवानापन में हमें कोई शक न रहा।

आज़ाद—दीवाना कहो, चाहे पागल बनाओ। हम तो मर मिटे।

सख्तियां ऐसी उठायीं इन बुतों के हिज्र में।
रंज सहते-सहते पत्थर-सा कलेजा हो गया।

सत्तर

शाम के वक्त हलकी-फुलकी और साफ-सुथरी छोलदारी में मिस क्लारिसा बनाव-चुनाव करके एक नाजुक आराम-कुर्सी पर बैठी थी। चांदनी निखरी हुई थी, पेड़ और पत्ते दूध में नहाए हुए और हवा आहिस्ता-आहिस्ता चल रही थी ! उधर मियां आज़ाद कैद में पड़े हुए हुस्नआरा को याद करके सिर धुनते थे कि एक आदमी ने आ कर कहा—चलिए, आपको मिस साहब बुलाती हैं। आज़ाद छोलदारी के करीब पहुंचे तो सोचने लगे, देखें यह किस तरह पेश आती है। मगर कहीं साइबेरिया भेज दिया तो बेमौत ही मर जाएंगे। अंदर जा कर सलाम किया और हाथ बांध कर खड़े हो गए। क्लारिसा ने तीखी चितवन कर कहा—कहिए मिजाज ठंडा हुआ या नहीं?

आज़ाद—इस वक्त तो हुजूर के पंजे में हूं, चाहे कत्ल कीजिए, चाहे सूली दीजिए।

क्लारिसा—जी तो नहीं चाहता कि तुम्हें साइबेरिया भेजूं, मगर वजीर के हुक्म से मजबूर हूं। वजीर ने मुझे अख्तियार तो दे दिया है कि चाहूं तो तुम्हें छोड़ दूं, लेकिन बदनामी से डरती हूं। जाओ रुखसत।

फौज के अफसर ने हुक्म दिया कि सौ सवार आज़ाद को ले कर सरहद पर पहुंचा आएं। उनके साथ कुछ दूर चलने के बाद आज़ाद ने पूछा—क्यों यारो, अब जान बचने की भी कोई सूरत है या नहीं?

एक सिपाही—बस, एक सूरत है कि जो सवार तुम्हारे साथ जायं वह तुम्हें छोड़ दें।

आज़ाद—भला, वे लोग क्यों छोड़ने लगे?

सिपाही—तुम्हारी जवानी पर तरस आता है। अगर हम साथ चले तो जरूर छोड़ देंगे।

तीसरे दिन आज़ाद पाशा साइबेरिया जाने को तैयार हुए। सौ सिपाही परे जमाए

हुए, हथियारों से लैस, उनके साथ चलने को तैयार थे। जब आज़ाद घोड़े पर सवार हुए तो हजारों आदमी उनकी हालत पर अफसोस कर रहे थे। कितनी ही औरतें रुमाल से आंसू पोंछ रही थीं। एक औरत इतनी बेकरार हुई कि जाकर अफसर से बोली—हुजूर, यह आप बड़ा गजब करते हैं। ऐसे बहादुर आदमी को आप साइबेरिया भेज रहे हैं।

अफसर—मैं मजबूर हूं। सरकारी हुक्म की तामील करना मेरा फर्ज है।

दूसरी स्त्री—इस बेचारे की जान का खुदा हाफिज़ है। बेकसूर जान जाती है।

तीसरी स्त्री—आओ, सब की सब मिल कर चलें और मिस साहब से सिफारिश करें। शायद दिल पसीज जाय।

ये बातें करके वह कई औरतों के साथ मिस क्लारिसा के पास जा कर बोलीं—हुजूर, यह क्या गजब करती हैं। अगर आज़ाद मर गए तो आपकी कितनी बड़ी बदनामी होगी?

क्लारिसा—उनको छोड़ना मेरे इमकान से बाहर है।

वह स्त्री—कितनी जालिम ! कितनी बेरहम हो ! जरा आज़ाद की सूरत तो चल कर देख लो।

क्लारिसा—हम कुछ नहीं जानते !

अब तक तो आज़ाद को उम्मेद थी कि शायद मिस क्लारिसा मुझ पर रहम करें लेकिन जब इधर से कोई उम्मेद न रही और मालूम हो गया कि बिना साइबेरिया गए जान न बचेगी तो रोने लगे। इतने जोर से चीखे के मिस क्लारिसा के बदन के रोयें खड़े हो गए और थोड़ी ही दूर चले थे कि घोड़े से गिर पड़े।

एक सिपाही—अरे यारो, अब यह मर जायगा।

दूसरा सिपाही—मरें या जिए, साइबेरिया तक पहुंचाना जरूरी है।

तीसरा सिपाही—भई, छोड़ दो। कह देना, रास्ते में मर गया।

चौथा सिपाही—हमारी फौज में ऐसा खूबसूरत और कड़ियल जवान दूसरा नहीं है। हमारी सरकार को ऐसे बहादुर अफसर की कदर करनी चाहिए थी।

पांचवां सिपाही—अगर आप सब लोग एक-राय हों तो हम इसकी जान बचाने के लिए अपनी जान खतरे में डालें। मगर तुम लोग साथ न दोगे।

छठा सिपाही—पहले इसे होश में लाने की फिक्र तो करो।

जब पानी के खूब छींटे दिए गए तो आज़ाद ने करवट बदली। सवारों की जान में जान आई। सब उनको ले कर आगे बढ़े।

इकहत्तर

आज़ाद तो साइबेरिया की तरफ रवाना हुए, इधर खोजी ने दरख्त पर बैठे-बैठे अफीम की डिबिया निकाली। वहां पानी कहां? एक आदमी दरख्त के नीचे बैठा था। आपने उससे कहा—भाईजान, जरा पानी पिला दो। उसने ऊपर देखा, तो एक बौना बैठा हुआ

है। बोला—तुम कौन हो? दिल्लगी यह हुई कि वह फ्रांसीसी था। खोजी उर्दू में बात करते थे, वह फ्रांसीसी में जवाब देता था।

खोजी—अफीम घोलेंगे मियां ! जरा सा पानी दे डालो भाई !

फ्रांसीसी—वाह, क्या सूरत है। पहाड़ पर न जा कर बैठो?

खोजी—भई वाह रे हिन्दोस्तान। वल्लाह, इस फसल में सबीलों पर पानी मिलता है, केवड़े का बसा हुआ। हिन्दू पौसरे बैठाते हैं और तुम जरा पानी भी नहीं देते।

फ्रांसीसी—कहीं ऊपर से गिर न पड़ना।

खोजी—(इशारे से) अरे मियां पानी-पानी !

फ्रांसीसी—हम तुम्हारी बात नहीं समझते।

खोजी—उतरना पड़ा हमें ! अबे, ओ गीदी, जरा-सा पानी क्यों नहीं दे जाता? क्या पांवों की मेंहदी गिर जाएगी?

फ्रांसीसी ने जब अब भी पानी न दिया तो खोजी ऊपर से पत्ते तोड़-तोड़ फेंकने लगे। फ्रांसीसी झल्ला कर बोला—बचा, क्यों शामतें आई हैं। ऊपर आ कर इतने घूंसे लगाऊंगा कि सारी शरारत निकल जायगी। खोजी ने ऊपर से एक शाख तोड़ कर फेंकी। फ्रांसीसी ने इतने ढेले मारे कि खोजी की खोपड़ी जानती होगी। इतने में एक तुर्क आ निकला। उसने समझा-बुझा कर खोजी को नीचे उतारा। खोजी ने अफीम घोली, चुस्की लगाई और फिर दरख्त पर जा कर एक मोटी शाख से टिक कर पीनक लेने लगे। अब सुनिए कि तुर्कों और रूसियों में इस वक्त खूब गोले चल रहे थे। तुर्कों ने जान तोड़ कर मुकाबिला किया, मगर फ्रांसीसी तोपखाने ने उनके छक्के छुड़ा दिए और उनका सरदार आसफ पाशा गोली खाकर गिर पड़ा। तुर्क तो हार कर भाग निकले। रूसियों की एक पलटन ने इस मैदान में पड़ाव डाला। खोजी पीनक से चौंक कर यह तमाशा देख रहे थे कि एक रूसी जवान की नजर उन पर पड़ी। बोला—कौन? तुम कौन हो? अभी उतर आओ।

खोजी ने सोचा, ऐसा न हो कि फिर ढेले पड़ने लगें। नीचे उतर आए। अभी जमीन पर पांव भी न रखा था कि एक रूसी ने इनको गोद में उठा कर फेंका तो धम से जमीन पर गिर गए।

खोजी—ओ गीदी, खुदा तुमसे और तुम्हारे बाप से समझे !

एक रूसी—भई, यह पागल है कोई।

दूसरा—इसको फौज के साथ रखो। खूब दिल्लगी रहेगी।

रूसियों ने कई तुर्क सिपाहियों को कैद कर लिया था। खोजी भी उन्हीं के साथ रख दिए गए। तुर्कों को देख कर उन्हें जरा तसकीन हुई। एक तुर्क बोला—तुम तो आज़ाद के साथ आए थे न? तुम उनके कौन हो?

खोजी—मेरा लड़का है जी, तुम नौकर बनाते हो !

तुर्क—ऐं, आप आज़ाद पाशा के बाप हैं !

खोजी—हां-हां, तो इसमें ताज्जुब की कौन बात है। मैंने ही तो आज़ाद को मार-मार कर लड़ना सिखाया।

तुर्कों ने खोजी को आज़ाद का बाप समझ कर फौजी कायदे से सलाम किया।

तब खोजी रोने लगे–अरे यारो, कहीं से तो हमें लड़के की सूरत दिखा दो। क्या तुमको इसी दिन के लिए पाल-पोस कर इतना बड़ा किया था? अब तुम्हारी मां को क्या सूरत दिखाऊंगा?

तुर्क–आप ज्यादा बेचैन न हों। आज़ाद जरूर छूटेंगे।

खोजी–भई, मेरी इतनी इज्जत न करो। नहीं तो रूसियों को शक हो जाएगा। कि यह आज़ाद पाशा के बाप हैं। तब बहुत तंग करेंगे।

तुर्क–खुदा ने चाहा तो अफसर लोग आपको जरूर छोड़ देंगे।

खोजी–जैसी मौला की मर्जी !

बहत्तर

बड़ी बेगम का बाग परीखाना बना हुआ है। चारों बहनें रविशों में अठखेलियां करती हैं। नाजो-अदा से तौल-तौल कर कदम धरती हैं। अब्बासी फूल तोड़-तोड़ कर झोलियां भर रही हैं। इतने में सिपहआरा ने शोखी के साथ गुलाब का फूल तोड़ कर गेतीआरा की तरफ फेंका। गेतीआरा ने उछाला तो सिपहआरा की जुल्फ को छूता हुआ नीचे गिरा। हुस्नआरा ने कई फूल तोड़े और जहानारा बेगम से गेंद खेलने लगीं। जिस वक्त गेंद फेंकने के लिए हाथ उठाती थीं, सितम ढाती थीं। वह कमर का लचकना और गेसू का बिखरना, प्यारे-प्यारे हाथों की लोच और मुसकिरा-मुसकिरा कर निशानेबाजी करना अजब लुत्फ दिखाता था।

अब्बासी–माशा-अल्लाह, हुजूर किस सफाई के साथ फेंकती हैं।

सिपहआरा–बस अब्बासी, अब बहुत खुशामद की न लो। क्या जहानारा बहन सफाई से नहीं फेंकतीं? बाजी जरी झपटती ज्यादा हैं। मगर हमसे न जीत पाएंगी। देख लेना।

अब्बासी–जिस सफाई से हुस्नआरा बेगम गेंद खेलती हैं, उस सफाई से जहानारा बेगम का हाथ नहीं जाता।

सिपहआरा–मेरे हाथ से भला फूल गिर सकता है ! क्या मजाल !

इतने में जहानारा बेगम ने फूल को नोच डाला और उफ कह कर बोलीं–अल्लाह जानता है, हम तो थक गए।

सिपहआरा–ऐ वाह, बस इतने में ही थक गईं? हमसे कहिए, शाम तक खेला करें।

अब सुनिए कि एक दोस्त ने मिरजा हुमायूं फर को जा कर इत्तिला दी कि इस वक्त बाग में परियां इधर से उधर दौड़ रही हैं। इस वक्त की कैफियत देखने काबिल है। शाहजादे ने यह खबर सुनी तो बोले–भई, खुशखबरी तो सुनाई, मगर कोई तदबीर तो बताओ। जरा आंखें ही सेंक लें। हां, हीरा माली को बुलाओ। जरा देखें।

हीरा ने आकर सलाम किया।

शाहजादा–भई, इस वक्त किसी हिकमत से अपने बाग की सैर कराओ।

हीरा–खुदावंद, इस वक्त तो माफ करें, सब वहीं हैं।

शाहजादा–उल्लू ही रहे, अरे मियां, वहां सन्नाटा होता तो जाकर क्या करते ! सुना है, चारों परियां वहीं हैं ! बाग परिस्तान हो गया होगा ! हीरा, ले चल, तुझे अपने नारायन की कसम ! जो मांगे, फौरन दूं।

हीरा–हुजूर ही का नमक खाता हूं या किसी और का? मगर इस वक्त मौका नहीं है।

शाहजादा–अच्छा, एक शेर लिख दूं, वहां पहुंचा दो।

यह कहकर शाहजादा ने यह शेर लिखा–

छकाया तूने आलम को साकी जामे-गुलगूं से,
हमें भी कोई एक सागर, हम भी हैं उम्मेदवारों में।

हीरा यह रुक्का ले कर चला। शाहजादे ने समझा दिया कि सिपहआरा को चुपके से दे देना। हीरा गया तो देखा कि अब्बासी और बूढ़ी महरी में तकरार हो रही है। सुबह के वक्त अब्बासी हुस्नआरा के लिए कुम्हारिन के यहां से दो झंझरियां लाई थी। दाम एक आना बताया। बड़ी बेगम ने जो यह झंझरियां देखीं तो महरी को हुक्म दिया कि हमारे वास्ते भी लाओ। महरी वैसी ही झंझरियां दो आने की लाई। इस वक्त अब्बासी डींग मारने लगी कि मैं जितनी सस्ती चीज लाती हूं, कोई दूसरा भला ला तो दे। महरी और अब्बासी में पुरानी चश्मक थी। बोली–हां भई, तुम क्यों न सस्ती चीज लाओ ! अभी कमसिन हो न?

अब्बासी–तुम भी तो किसी जमाने में जवान थीं। बाजार भर को लूट लाई होगी। मेरे मुंह न लगना।

महरी–होश की दवा कर छोकरी। बहुत बढ़-बढ़ कर बातें न बना मुई ! जमाने भर की आवारा ! और सुनो?

अब्बासी–देखिए हुजूर, यह लाम काफ जबान से निकालती हैं। और मैं हुजूर का लिहाज करती हूं। जब देखो, ताने के सिवा बात ही नहीं करतीं।

महरी–मुंह पकड़ कर झुलस देती मुरदार का !

अब्बासी–मुंह झुलस अपने होतों-सोतों का।

महरी–हुजूर, अब हम नौकरी छोड़ देंगे। हमसे यह बातें न सुनी जाएंगी।

अब्बासी–ऐं, तुम तो बेचारी नन्ही हो। हमीं गर्दन मारने के काबिल हैं ! सच है, और क्या !

सिपहआरा–सारा कुसूर महरी का है। यही रोज लड़ा करती है अब्बासी से।

महरी–ऐ हुजूर, पीच पी हजार नेमत पाई ! जो मैं ही झगड़ालू हूं तो बिस्मिल्लाह, हुजूर लौंडी को आज़ाद कर दें। कोई बात न चीत, आप ही गाली-गुफ्ते पर आमादा हो गई।

जहानारा–'लड़ेंगे जोगी-जोगी और जायगी खप्पड़ों के माथे।' अम्मांजान सुन लेंगी तो हम सबकी खबर लेंगी।

अब्बासी—हुजूर इनसाफ से कहें। पहल किसकी तरफ से हुई।

जहानारा—पहल तो महरी ने की। इसके क्या मानी कि तुम जवान हो इससे सस्ती चीज मिल जाती है। जिसको गाली दोगी, वह बुरा मानेगी ही।

हुस्नआरा—महरी, तुम्हें यह सूझी क्या? जवानी का क्या जिक्र था भला !

अब्बासी—हुजूर, मेरा कसूर हो तो जो चोर की सजा वह मेरी सजा।

महरी—मेरे अल्लाह, औरत क्या, बिस की गांठ है।

अब्बासी—जो चाहो सो कह लो, मैं एक बात का भी जवाब न दूंगी।

महरी—इधर की उधर और उधर की इधर लगाया करती है। मैं तो इसकी नस-नस से वाकिफ हूं !

अब्बासी—और मैं तो तेरी कब्र तक से वाकिफ हूं।

महरी—एक को छोड़ा, दूसरे के बैठी, उसको खाया, अब किसी और को चट करेगी। और बातें करती है।

सत्तर...के बाद कुछ कहने ही को थी कि अब्बासी ने सैंकड़ों गालियां सुनाईं। ऐसी जामे से बाहर हुई कि दुपट्टा एक तरफ और खुद दूसरी तरफ। हीरा माली ने बढ़ कर दुपट्टा दिया तो कहा—चल हट, और सुनो ! इस मुए बूढ़े की बातें। इस पर कहकहा पड़ा। शोर सुनते ही बड़ी बेगम साहब लाठी टेकती हुई आ पहुंचीं, मगर यह सब चुहल में मस्त थीं। किसी को खबर भी न हुई।

बड़ी बेगम—यह क्या शोहदापन-मचा था? बड़े शर्म की बात है। आखिर कुछ कहो तो? यह क्या धमाचौकड़ी मची थी? क्यों महरी, यह क्या शोर मचा था?

महरी—ऐ हुजूर, बात मुंह से निकली और अब्बासी ने टेंटुआ लिया। और क्या बताऊं।

बड़ी बेगम—क्यों अब्बासी, सच-सच बताओ ! खबरदार !

अब्बासी—(रो कर) हुजूर !

बड़ी बेगम—अब टेसुए पीछे बहाना, पहले हमारी बात का जवाब दो।

अब्बासी—हुजूर, जहानारा बेगम से पूछ लें, हमें आवारा कहा, बेसवा कहा, कोसा, गालियां दीं, जो जबान पर आया, कह डाला। और हुजूर, इन आंखों की ही कसम खाती हूं, जो मैंने एक बात का भी जवाब दिया हो। चुप सुना की।

बड़ी बेगम—जहानारा, क्या बात हुई थी? बताओ साफ-साफ।

जहानारा—अम्मांजान, अब्बासी ने कहा कि हम दो झंझरियां एक आने की लाए और महरी ने दो आने दिए, इसी बात पर तकरार हो गई।

बड़ी बेगम—क्यों महरी, इसके क्या माने? क्या जवानों को बाजारवाले मुफ्त उठा देते हैं? बाल सफेद हो गए, मगर अभी तक अवारापन की बू नहीं गई। हमने तुमको मौकूफ किया, महरी ! आज ही निकल जाओ।

इतने में मौका पा कर हीरा ने सिपहआरा को शाहजादे का खत दिया। सिपहआरा ने पढ़ कर यह जवाब लिखा—भई, तुम तो गजब के जल्दबाज हो। शादी-ब्याह भी निगोड़ा मुंह का नेवाला है ! तुम्हारी तरफ से पैगाम तो आता ही नहीं।

हीरा खत लेकर चल दिया।

तिहत्तर

कोठे पर चौका बिछा है और एक नाजुक पलंग पर सुरैया बेगम सादी और हलकी पोशाक पहने आराम से लेटी हैं। अभी हम्माम से आई हैं। कपड़े इत्र में बसे हुए हैं। इधर-उधर फूलों के हार और गजरे रखे हैं, ठंडी-ठंडी हवा चल रही है। मगर तब भी महरी पंखा लिए खड़ी है। इतने में एक महरी ने आ कर कहा—दारोगा जी हुजूर से कुछ अर्ज करना चाहते हैं। बेगम साहब ने कहा—अब इस वक्त कौन उठे। कहो, सुबह को आएं। महरी बोली—हजूर कहते हैं, बड़ा जरूरी काम है। हुक्म हुआ कि दो औरतें चादर ताने रहें और दारोगा साहब चादर के उस पार बैठें। दारोगा साहब ने आ कर कहा—हुजूर, अल्लाह ने बड़ी खैर की। खुदा को कुछ अच्छा ही करना मंजूर था। ऐसे बुरे फसे थे कि क्या कहें !

बेगम—ऐं, तो कुछ कहोगे भी?

दारोगा—हुजूर, बदन के रोएं खड़े होते हैं।

इस पर अब्बासी ने कहा—दारोगा जी, घास तो नहीं खा गए हो ! दूसरी महरी बोली—हुजूर, सठिया गए हैं। तीसरी ने कहा—बौखलाए हुए आए हैं। दारोगा साहब बहुत झल्लाए। बोले—क्या कदर होती है, वाह ! हमारी सरकार तो कुछ बोलती ही नहीं और महरियां सिर चढ़ी जाती हैं। हुजूर इतना भी नहीं कहतीं कि बूढ़ा आदमी है। उससे न बोलो।

बेगम—तुम तो सचमुच दीवाने हो गए हो। जो कहना है, वह कहते क्यों नहीं?

दारोगा—हुजूर, दीवाना समझें या गधा बनाएं, गुलाम आज कांप रहा है। वह जो आज़ाद है, जो यहां कई बार आए भी थे, वह बड़े मक्कार, शाही चोर, नामी डकैत, परले सिरे के बगड़ेबाज, काले जुआरी, धावत शराबी, जमाने भर के बदमाश, छटे हुए गुर्गे, एक ही शरीर और बदजात आदमी हैं। तूती का पिंजड़ा ले कर वही औरत के वेष में आया था। आज सुना, किसी नवाब के यहां भी गए थे। वह आज़ाद जिनके धोखे में आप हैं, वह तो रूम गए हैं। इनका-उनका मुकाबिला क्या ! वह आलिम-फाजिल, यह बेईमान-बदमाश। यह भी उसने गलत कहा है कि हुस्नआरा बेगम का ब्याह हो गया।

बेगम—दारोगा, बात तो तुम पते की कहते हो, मगर ये बातें तुमसे बताई किसने?

दारोगा—हुजूर, वह चंडूबाज जो आज़ाद मिरजा के साथ आया था। उसी ने मुझे बयान किया।

बेगम—ऐ है, अल्लाह ने बहुत बचाया।

महरी—और बातें कैसी चिकनी-चुपड़ी करता था?

दारोगा साहब चले गए तो बेगम ने चंडूबाज को बुलाया। महरियों ने पर्दा करना चाहा तो बेगम ने कहा—जाने भी दो। बूढ़े खूसट से पर्दा क्या?

चंडूबाज—हुजूर, कुछ ऊपर सौ बरस का सिन है।

बेगम—हां, आज़ाद मिरजा का तो हाल कहो।

चंडूबाज—उसके काटे का मंतर ही नहीं।

बेगम–तुमसे कहां मुलाकात हुई?

चंडूबाज–एक दिन रास्ते में मिल गए।

बेगम–वह तो कैद न थे! भागे क्योंकर?

चंडूबाज–हुजूर, यह न पूछिए, तीन-तीन पहरे थे। मगर खुदा जाने, किस जादू-मंतर से तीनों को ढेर कर दिया और भाग निकला।

बेगम–अल्ला बचाए ऐसे मूजी से।

चंडूबाज–हुजूर, मुझे भी खूब सब्जबाग दिखाया।

महरी–अल्लाह जानता है, मैं उसकी आंखों से ताड़ गई थी कि बड़ा नटखट है।

चंडूबाज–हुजूर, यह कहना तो भूल ही गया था कि कैद से भाग कर थानेदार के मकान पर गया और उसे भी कत्ल कर दिया।

बेगम–सब आदमियों में से निकल भागा?

महरी–आदमी है कि जिन्नात?

अब्बासी–हुजूर, हमें आज डर मालूम होता है। ऐसा न हो, हमारे यहां भी चोरी करे।

चंडूबाज रुख्सत हो कर गए तो सुरैया बेगम सो गईं। महरियां भी लेटीं, मगर अब्बासी की आंखों में नींद न थी। मारे खौफ के इतनी हिम्मत भी न बाकी रही कि उठ कर पानी तो पीती। प्यास से तालू में कांटे पड़े थे। मगर दबकी पड़ी थी। उसी वक्त हवा के झोंकों से एक कागज उड़ कर उसकी चारपाई के करीब खड़खड़ाया तो दम निकल गया।

सिपाही ने आवाज दी–'सोनेवाले जागते रहो।' और यह कांप उठी। डर था, कोई चिमट न जाए। लाशें आंखों-तले फिरती थीं। इतने में बारह का गजर ठनाठन बजा। तब अब्बासी ने अपने दिल से कहा, अरे, अभी बारह ही बजे। हम समझे थे, सबेरा हो गया। एकाएक कोई विहाग की धुन में गाने लगा–

सिपहिया जागत रहियो,
इस नगरी के दस दरवाजे निकस गया कोई और।
सिपहिया जागत रहियो।

अब्बासी सुनते-सुनते सो गई, मगर थोड़ी देर में ठनाके की आवाज आई तो जग उठी। आदमी की आहट मालूम हुई। हाथ-पांव कांपने लगे। इतने में बेगम साहब ने पुकारा–अब्बासी, पानी पिला। अब्बासी ने पानी पिलाया और बोली–हुजूर, अब कभी लाशों-वाशों का जिक्र न कीजिएगा। मेरा तो अजब हाल था। सारी रात आंखों में ही कट गई।

बेगम–ऐसा भी डर किस काम का, दिन को शेर, रात को भेड़।

बेगम साहब सोने को ही थीं कि एक आदमी ने फिर गाना शुरू किया।

बेगम–अच्छी आवाज है।

अब्बासी–पहले भी गा रहा था।

महरी–ऐं, यह वकील हैं।

कुछ देर तक तीनों बातें करते-करते सो गईं। सबेरे मुंह-अंधेरे महरी उठी तो देखा कि बड़े कमरे का ताला टूटा पड़ा है। दो संदूक टूटे-फूटे एक तरफ रखे हुए हैं और असबाब सब तितर-बितर। गुल मचा कर कहा—अरे ! लुट गई, हाय लोगो, लुट गई। घर में कुहराम मच गया। दारोगा साहब दौड़ पड़े। अरे, यह क्या गजब हो गया। बेगम की भी नींद खुली। यह हालत देखी तो हाथ मल कर कहा—लुट गई। यह शोरगुल सुन कर पड़ोसिनें गुल मचाती हुई कोठे पर आईं और बोलीं—बहन, यह बमचख कैसा है ! क्या हुआ? खैरियत तो है।

बेगम—बहन, मैं तो मर मिटी !

पड़ोसिन—क्या चोरी हो गयी? दो बजे तक तो मैं आप लोगों की बातें सुनती रही। यह चोरी किस वक्त हुई?

अब्बासी—बहन, क्या कहूं, हाय।

पड़ोसिन—देखिए तो अच्छी तरह। क्या-क्या ले गया, क्या-क्या छोड़ गया?

बेगम—बहन, किसके होश ठिकाने हैं।

अब्बासी—मुझ जलम जली को पहले ही खटका हुआ था। कान खड़े हो गये, मगर फिर कुछ सुनायी न दिया। मैंने कुछ खयाल न किया।

दारोगा—हुजूर, यह किसी शैतान का काम है। पाऊं तो खा ही डालूं।

महरी—जिस हाथ से संदूक तोड़े, वह कट कर गिर पड़े। जिस पांव से आया उसमें कीड़े पड़ें। मरेगा बिलख-बिलख कर।

अब्बासी—अल्लाह करे, अठवारे ही में खटिया मचमचाती निकले।

महरी—मगर अब्बासी, तुम भी तो एक ही कलजिभी हो। वही हुआ।

सुरैया बेगम ने असबाब की जांच की तो आधे से ज्यादा गायब पाया। रो कर बोलीं—लोगो, मैं कहीं की न रही। हाय मेरे अब्बा, दौड़ो। तुम्हारी लाड़िली बेटी आज लुट गयी ! हाय मेरी अम्मांजान ! सुरैया बेगम अब फकीरिन हो गयी।

पड़ोसिन—बहन, जरा दिल को ढारस दो। रोने से और हलाकान होगी।

बेगम—किस्मत ही पलट गयी। हाय !

पड़ोसिन—ऐ ! कोई हाथ पकड़ लो। सिर फोड़े डालती हैं। बहन, बहन ! खुदा के वास्ते सुनो तो ! देखो, सब माल मिला जाता है। घबराओ नहीं।

इतने में एक महरी ने गुल मचा कर कहा—हुजूर, यह जोड़ी कड़े की पड़ी है।

अब्बासी—भागते भूत की लंगोटी ही सही।

लोगों ने सलाह दी कि थानेदार को बुलाया जाय, मगर सुरैया बेगम तो थानेदार से डरी हुई थी; नाम सुनते ही कांप उठीं और बोलीं—बहन, माल चाहे यह भी जाता रहे, मगर थानेवालों को मैं अपनी ड्योढ़ी न नांघने दूंगी। दारोगा जी ने आंख ऊपर उठायी तो देखा, छत कटी हुई है। समझ गये कि चोर छत काट कर आया था। एकाएक कई कांस्टेबिल बाहर आ पहुंचे। कब वारदात हुई? नौ दफे तो हम पुकार गये। भीतर-बाहर से बराबर आवाज आयी। फिर यह चोरी कब हुई? दारोगा जी ने कहा—हमको इस टांय-टांय से कुछ वास्ता नहीं है जी? आये वहां से रोब जमाने ! टके का आदमी और हमसे जबान मिलाता है। पड़े-पड़े सोते रहे और इस वक्त तहकीकात

करने चले हैं? साठ हजार का माल गया। कुछ खबर भी है !

कांस्टेबिलों ने जब सुना कि साठ हजार की चोरी हुई तो होश उड़ गये। आपस में यों बातें करने लगे–

एक–साठ हजार ! पचास और दुइ साठ? काहे?

दूसरा–पचास दुइ साठ नहीं, पचास और दस साठ !

तीसरा–अजी खुदा-खुदा करो। साठ हजार। क्या निरे जवाहिरात ही थे? ऐसे कहां के सेठ हैं !

दारोगा–समझा जायगा, देखो तो सही? तुम सबकी साजिश है।

एक–दारोगा, तरकीब तो अच्छी की ! शाबाश !

दूसरा–बेगम साहब के यहां चोरी हुई तो बला से। तुम्हारी तो हाड़ियां चढ़ गयीं। कुछ हमारा भी हिस्सा है?

इतने में थानेदार साहब आ पहुंचे और कहा, हम मौका देखेंगे। परदा कराया गया। थानेदार साहब अंदर गये तो बोले–अक्खाह, इतना बड़ा मकान है। तो क्यों न चोरी हो?

दारोगा–क्या? मकान इतना बड़ा देखा और आदमी रहते हैं सो नहीं देखते।

थानेदार–रात को यहां कौन सोया था?

दारोगा–अब्बासी, सबके नाम लिखवा दो।

थानेदार–बोलो अब्बासी महरी, रात को किस वक्त सोयी थीं तुम?

अब्बासी–हुजूर, कोई ग्यारह बजे आंखें लगीं।

थानेदार–एक-एक बोटी फड़कती है। साहब के सामने इतना न चमकना।

अब्बासी–यह बातें मैं नहीं समझती। चमकना-मटकना बाजारी औरतें जानें। हम हमेशा बेगमों में रहा किये हैं। यह इशारे किसी और से कीजिए। बहुत थानेदारी के बल पर न रहिएगा। देखा कि औरतें ही औरतें घर में हैं तो पेट से पांव निकाले।

थानेदार–तुम तो जामे से बाहर हुई जाती हो।

बेगम साहब कमरे में खड़ी कांप रही थीं। ऐसा न हो, कहीं मुझे देख ले। थानेदार ने अब्बासी से फिर कहा–अपना बयान लिखवाओ।

अब्बासी–हम चारपाई पर सो रहे थे कि एक बार आंख खुली। हमने सुराही से पानी उंडेला और बेगम साहब को पिलाया।

थानेदार–जो चाहो, लिखवा दो। तुम पर दरोगहलफी का जुर्म नहीं लग सकता।

अब्बासी–क्या ईमान छोड़ना है? जो ठीक-ठीक है वह क्यों छिपायें?

अब्बासी ने अंगुलियां मटका-मटका कर थानेदार को इतनी खरी-खोटी सुनायीं कि थानेदार साहब की शेखी किरकिरी हो गयी। दारोगा साहब से बोले–आपको किसी पर शक हो तो बयान कीजिए। बे-भेदिये के चोरी नहीं हो सकती। दारोगा ने कहा–हमें किसी पर शक नहीं। थानेदार ने देखा कि यहां रंग न जमेगा तो चुपके से रुखसत हुए।

चौहत्तर

खोजी आज़ाद के बाप बन गये तो उनकी इज्जत होने लगी। तुर्की कैदी हरदम उनकी खिदमत करने को मुस्तैद रहते थे। एक दिन एक रूसी फौजी अफसर ने उनकी अनोखी सूरत और माशे-माशे भर के हाथ-पांव देखे तो जी चाहा कि इनसे बातें करें। एक फारसीदां तुर्क को मुतरिज्जम बना कर ख्वाजा साहब से बातें करने लगा।

अफसर–आप आज़ाद पाशा के बाप हैं?

खोजी–बाप तो क्या हूं, मगर खैर, बाप ही समझिए। अब तो तुम्हारे पंजे में पड़ कर छक्के छूट गये।

अफसर–आप भी किसी लड़ाई में शरीक हुए थे?

खोजी–वाह, और जिंदगी-भर करता क्या रहा? तुम जैसा गौखा अफसर आज ही देखा। हमारा कैंडा ही गवाही देता है कि हम फौज के जवान हैं। कैंडे से नहीं पहचानते? इसमें पूछने की क्या जरूरत है। दगलेवाली पलटन के रिसालदार थे। आप हमसे पूछते हैं? कोई लड़ाई देखी है। जनाब, यहां वह-वह लड़ाइयां देखी हैं कि आदमी की भूख-प्यास बंद हो जाय।

अफसर–आप गोली चला सकते हैं?

खोजी–अजी हजरत, अब फस्द खुलवाइए। पूछते हैं गोली चलायी है। जरा सामने आ जाइए तो बताऊं। एक बार एक कुत्ते से और हमसे लाग-डाट हो गयी। खुदा की कसम, हमसे कुत्ता ग्यारह-बारह कदम पर पड़ा था। धरके दागता हूं तो पों-पों करता हुआ भाग खड़ा हुआ।

अफसर–ओ हो। आप खूब गोली चलाता है।

खोजी–अजी, तुम हमको जवानी में देखते।

अफसर ने इनकी बेतुकी बातें सुन कर हुक्म दिया कि दोनाली बंदूक लाओ।

तब तो मियां खोजी चकराये। सोचे कि हमारी सात पीढ़ियों तक तो किसी ने बंदूक चलायी नहीं और न हमको याद आता है कि बंदूक कभी उम्र भर छुई भी हो; मगर, इस वक्त तो आबरू रखनी चाहिए। बोले–इस बंदूक में गज तो नहीं होता?

अफसर–उड़ती चिड़िया पर निशाना लगा सकते हो?

खोजी–उड़ती चिड़िया कैसी ! आसमान तक के जानवरों को भून डालूं।

अफसर–अच्छा तो बंदूक लो।

खोजी–ताक कर निशाना लगाऊं तो दरख्त की पत्तियां गिरा दूं?

यह कह कर आप टहलने लगे।

अफसर–आप निशाना क्यों नहीं लगाता? उठाइए बंदूक।

खोजी ने जमीन में खूब जोर से ठोकर मारी और एक गजल गाने लगे। अफसर दिल में खूब समझ रहा था कि यह आदमी महज डींगें मारना जानता है। बोला–अब बंदूक लेते हो या इसी बंदूक से तुमको निशाना बनाऊं?

खैर, बड़ी देर तक दिल्लगी रही। अफसर खोजी से इतना खुश हुआ कि पहरेवालों

को हुक्म दे दिया कि इन पर बहुत सख्ती न रखना। रात को खोजी ने सोचा कि अब भागने की तदबीर सोचनी चाहिए वरना लड़ाई खत्म हो जायगी और हम न इधर के रहेंगे, न उधर के। आधी रात को उठे और खुदा से दुआ मांगने लगे कि ऐ खुदा ! आज रात को तू मुझे इस कैद से नजात दे। तुर्कों का लश्कर नजर आये और मैं गुल मचा कर कहूं कि हम अ पहुंचे, आ पहुंचे। आज़ाद से भी मुलाकात हो और खुश-खुश वतन चलें।

यह दुआ मांग कर खोजी रोने लगे। हाय, अब वह दिन कहां नसीब होंगे कि नवाबों के दरबार में गप उड़ा रहे हों। वह दिल्लगी, वह चुहल अब नसीब हो चुकी। किस मजे से कटी जाती थी और किस लुत्फ से गड़ेरियां चूसते थे ! कोई खुटियां खरीदता है, कोई कतारे चुकाता है। शोर-गुल की यह कैफियत है कि कान पड़ी आवाज नहीं सुनायी देती, मक्खियों की भिन्न-भिन्न एक तरफ, छिलकों का ढेर दूसरी तरफ, कोई औरत चंडूखाने में आ गयी तो और भी चुहल होने लगी।

दो बजे खोजी बाहर निकले तो उनकी नजर एक छोटे से टट्टू पर पड़ी। पहरेवाले सो रहे थे। खोजी टट्टू के पास गये और उसकी गरदन पर हाथ फेर कर कहा-बेटा, कहीं दगा न देना। माना कि तुम छोटे-मोटे टट्टू हो और ख्वाजा साहब का बोझ तुमसे न उठ सकेगा, मगर कुछ परवा नहीं, हिम्मते मरदां मददे खुदा। टट्टू को खोला और उस पर सवार हो कर आहिस्ता-आहिस्ता कैंप से बाहर की तरफ चले। बदन कांप रहा था, मगर जब कोई सौ कदम के फासिले पर निकल गये तो एक सवार ने पुकारा-कौन जाता है? खड़ा रह !

खोजी-हम हैं जी. ग्रासकट, सरकारी घोड़ों की घास छीलते हैं।

खोजी जब जरा दूर निकल आये तो दो-चार बार खूब गुल मचाया-मार लिया, मार लिया ! ख्वाजा साहब दो करोड़ रूसियों में से बेदाग निकले आते हैं। लो भई तुर्कों, ख्वाजा साहब आ पहुंचे।

अपनी फतह का डंका बजा कर खोजी घोड़े से उतरे और चादर बिछा कर सोये तो ऐसी मीठी नींद आयी कि उम्र भर न आयी थी। घड़ी भर रात बाकी थी कि उनकी नींद खुली। फिर घोड़े पर सवार हुए और आगे चले। दिन निकलते-निकलते उन्हें एक पहाड़ के नजदीक एक फौज मिली। आपने समझा कि तुर्कों की फौज है। चिल्लाकर बोले-आ पहुंचे, आ पहुंचे। अरे यारो दौड़ो। ख्वाजा साहब के कदम धो-धोकर पीओ, आज ख्वाजा साहब ने वह काम किया कि रुस्तम के दादा से भी न हो सकता। दो करोड़ रूसी पहरा दे रहे थे और मैं पैंतरे बदलता हुआ दन से गायब, लकड़ी टेकी और उड़ा। दो करोड़ रूसी दौड़े, मगर मुझे पकड़ पाना दिल्लगी नहीं। कह दिया, लो हम लंबे होते हैं, चोरी से नहीं चले, डंके की चोट कह कर चले।

अभी वह यह हांक लगा ही रहे थे कि पीछे से किसी ने दोनों हाथ पकड़ लिये और घोड़े पर से उतार लिया।

खोजी-ऐं, कौन है भाई? मैं समझ गया मियां आज़ाद हैं।

मगर आज़ाद वहां कहां, यह रूसियों की फौज थी। उसे देखते ही खोजी का नशा हिरन हो गया। रूसियों ने उन्हें देख कर खूब तालियां बजायीं। खोजी दिल ही

दिल में कटे जाते थे, मगर बचने की कोई तदबीर न सूझती थी। सिपाहियों ने खोजी को चपतें जमानी शुरू कीं। उधर देखा, इधर पड़ी। खोजी बिगड़ कर बोले—अच्छा गीदी, इस वक्त तो बेबस हूं, अबकी फंसाओ तो कहूं। कसम है अपने कदमों की, आज तक कभी किसी को नहीं सताया। और सब कुछ किया, पतंग उड़ाये, चंडू पिया, अफीम खायी, चरस के दम लगाये, मदक के छींटे उड़ाये, मगर किस मरदूद ने किसी गरीब को सताया हो।

यह सोच कर खोजी की आंखों से आंसू निकल आये।

एक सिपाही ने कहा—बस, अब उसको दिक न करो। पहले पूछ लो कि यह है कौन आदमी। एक बोला—यह तुर्की है, कपड़े कुछ बदल डाले हैं। दूसरे ने कहा—यह गोइंदा है, हमारी टोह में आया है।

औरों को भी यही शुबहा हुआ। कई आदमियों ने खोजी की तलाशी ली। अब खोजी और सब असबाब तो दिखाते हैं, मगर अफीम की डिबिया नहीं खोलते।

एक रूसी—इसमें कौन चीज है? क्यों तुम इसको खोलने नहीं देते? हम जरूर देखेंगे।

खोजी—ओ गीदी, मारूंगा बंदूक, धुआं उस पार हो जायगा। खबरदार जो डिबिया हाथ से छुई! अगर तुम्हारा दुश्मन हूं तो मैं हूं। मुझे चाहे मारो, चाहे कैद करो, पर मेरी डिबिया में हाथ न लगाना।

रूसियों को यकीन हो गया कि डिबिया में जरूर कोई कीमती चीज है। खोजी से डिबिया छीन ली। मगरं अब उनमें आपस में लड़ाई होने लगी। एक कहता था, डिबिया हमारी है, दूसरा कहता था, हमारी है। आखिर यह सलाह हुई कि डिबिया में जो कुछ निकले वह सब आदमियों में बराबर-बराबर बांट दी जाय। गरज डिबिया खोली गयी तो अफीम निकली। सब के सब शर्मिंदा हुए। एक सिपाही ने कहा—इस डिबिया को दरिया में फेंक दो। इसी के लिए हममें तलवार चलते-चलते बची।

दूसरा बोला—इसे आग में जला दो।

खोजी—हम कहे देते हैं, डिबिया हमें वापस कर दो, नहीं हम बिगड़ जायंगे तो कयामत आ जायगी। अभी तुम हमें नहीं जानते।

सिपाहियों ने समझ लिया कि यह कोई दीवाना है, पागलखाने से भाग आया है। उन्होंने खोजी को एक बड़े पिंजरे में बंद कर दिया। अब मियां खोजी की सिट्टी-पिट्टी भूल गयी। चिल्ला कर बोले—हाय आज़ाद! अब तुम्हारी सूरत न देखेंगे। खैर, खोजी ने नमक का हक अदा कर दिया। अब वह भी कैद की मुसीबतें झेल रहा है और सिर्फ तुम्हारे लिए। एक बार जालिमों के पंजे से किसी तरह मार-कूट कर निकल भागे थे, मगर तकदीर ने फिर कैद में ला फंसाया। जवांमरदों पर हमेशा मुसीबत आती है, इसका तो गम नहीं, गम इसी का है कि शायद अब तुमसे मुलाकात न होगी। खुदा तुम्हें खुश रखे, मेरी याद करते रहना—

शायद वह आयें मेरे जनाजे पर दोस्तो,
आंखें खुली रहें मेरी दीदार के लिए।

पचहत्तर

मियां आज़ाद कासकों के साथ साइबेरिया चले जा रहे थे। कई दिन के बाद वह डैन्यूब नदी के किनारे जा पहुंचे। वहां उनकी तबियत इतनी खुश हुई कि हरी-हरी दूब पर लेट गये और बड़ी हसरत से यह गजल पढ़ने लगे—

रख दिया सिर को तेगे कातिल पर,
हम गिरे भी तो जाके मंजिल पर।
आंख जब बिसमिलों में ऊंची हो,
सिर गिरे कटके पाय कातिल पर।
एक दम भी तड़प से चैन नहीं,
देख लो हाथ रखके तुम दिल पर।

यह गजल पढ़ते-पढ़ते उन्हें हुस्नआरा की याद आ गयी और आंखों से आंसू गिरने लगे। कासक लोगों ने समझाया कि भई, अब वे बातें भूल जाओ, अब यह समझो कि तुम वह आज़ाद ही नहीं हो। आज़ाद खिल-खिलाकर हंसे और ऐसा मालूम हुआ कि वह आपे में नहीं हैं। कासकों ने घबरा कर उनको संभाला और समझाने लगे कि यह वक्त सब्र से काम लेने का है। अगर होश-हवाश ठीक रहे तो शायद किसी तदबीर से वापस जा सको वरना खुदा ही हाफिज है। साइबेरिया से कितने ही कैदी भाग आते हैं, मगर तुम तो अभी से हिम्मत हारे देते हो।

इतने में वह जहाज जिस पर सवार हो कर आज़ाद को डैन्यूब के पार जाना था, तैयार हो गया। तब तो आज़ाद की आंखों से आंसुओं का ऐसा तार बंधा कि कासकों के भी रुमाल तर हो गये। जिस वक्त जहाज पर सवार हुए दिल काबू में न रहा। रो-रो कर कहने लगे—हुस्नआरा, अब आज़ाद का पता न मिलेगा। आज़ाद अब दूसरी दुनिया में हैं, अब ख्वाब में इस आज़ाद की सूरत न देखोगी जिसे तुमने रूम भेजा।

यह कहते-कहते आज़ाद बेहोश हो गये। कासकों ने उनको इत्र सुंघाया और खूब पानी के छींटे दिये तब जा कर कहीं उनकी आंखें खुलीं। इतने में जहाज उस पार पहुंच गया तो आज़ाद ने रूम की तरफ मुंह करके कहा—आज सब झगड़ा खत्म हो गया। अब आज़ाद की कब्र साइबेरिया में बनेगी और कोई उस पर रोनेवाला न होगा।

कासकों ने शाम को एक बाग में पड़ाव डाला और रात भर वहीं आराम किया। लेकिन जब सुबह को कूच की तैयारियां होने लगीं तो आज़ाद का पता न था। चारों तरफ हुल्लड़ मच गया, इधर-उधर सवार छूटे, पर आज़ाद का पता न पाया। वह बेचारे एक नयी मुसीबत में फंस गये थे।

सबेरे मियां आज़ाद की आंख जो खुली तो अपने को अजब हालत में पाया। जोर की प्यास लगी हुई थी, तालू सूखा जाता था, आंखें भारी, तबीयत सुस्त, जिस चीज पर नजर डालते थे, धुंधली दिखायी देती थी। हां, इतना अलबत्ता मालूम हो रहा था कि उनका सिर किसी के जानू पर है। मारे प्यास के ओठ सूख गये थे,

गो आंखें खोलते थे, मगर बात करने की ताकत न थी। इशारे से पानी मांगा और जब पेट भर पानी पी चुके तो होश आया। क्या देखते हैं कि एक हसीन औरत सामने बैठी हुई है। औरत क्या, हूर थी। आज़ाद ने कहा, खुदा के वास्ते बताओ कि तुम कौन हो? हमें कैसे यहां फांस लायीं, मेरी तो कुछ समझ ही में नहीं आता, कासक कहां हैं? डैन्यूब कहां है? मैं यहां क्यों छोड़ दिया गया? क्या साइबेरिया इसी मुकाम का नाम है? हसीना ने आंखों के इशारे से कहा–सब्र करो, सब कुछ मालूम हो जायगा। आप तुर्की हैं या फ्रांसीसी?

आज़ाद–मैं हिन्दी हूं। क्या यह आप ही का मकान है?

हसीना–नहीं, मेरा मकान पोलेंड में है, मगर मुझे यह जगह बहुत पसंद है। आइए, आपको मकान की सैर कराऊं।

आज़ाद ने देखा कि पहाड़ की एक ऊंची चोटी पर कीमती पत्थरों की एक कोठी बनी है। पहाड़ ढालू था और उस पर हरी-हरी घास लहरा रही थी। एक मील के फासिले पर एक पुराना गिरजाघर का सुनहला मीनार चमक रहा था। उत्तर की तरफ डैन्यूब नदी अजब शान से लहरें मारती थीं ! किश्तियां दरिया में आती हैं। रूस की फौजें दरिया के पार जाती हैं। मेढा हवा में उछल रहा है। कोठी के अंदर गये तो देखा कि पहाड़ को काट कर दीवारें बनी हैं। उसकी सजावट देख कर उनकी आंखें खुल गयीं। छत पर गये तो ऐसा मालूम हुआ कि आसमान पर जा पहुंचे। चारों तरफ पहाड़ों की ऊंची-ऊंची चोटियां हरी-हरी दूब से लहरा रही थीं। कुदरत का यह तमाशा देख कर आज़ाद मस्त हो गये और यह शेर उनकी जबान से निकला–

लगी है मेंह की झड़ी, बाग में चलो झूलें,
कि झूलने का मजा भी इसी बहार में है।
यह कौन फूटके रोया कि दर्द की आवाज,
रची हुई जो पहाड़ों के आबशार में है।

हसीना–मुझे यह जगह बहुत पसंद है। मैंने जिंदगी भर यहीं रहने का इरादा किया है, अगर आप भी यहीं रहते तो बड़े मजे से जिंदगी कटती !

आज़ाद–यह आपकी मिहरबानी है। मैं तो लड़ाई खत्म हो जाने के बाद अगर छूट सका तो वतन चला जाऊंगा।

हसीना–इस खयाल में न रहिएगा, अब इसी को अपना वतन समझिए।

आज़ाद–मेरा यहां रहना कई जानों का गाहक हो जायगा। जिस खातून ने मुझे लड़ाई में शरीक होने के लिए यहां भेजा है, वह मेरे इंतजार में रो-रो कर जान दे देगी।

हसीना–आपकी रिहाई अब किसी तरह मुमकिन नहीं। अगर आपको अपनी जान की मुहब्बत है तो वतन का खयाल छोड़ दीजिए, वरना सारी जिंदगी साइबेरिया में काटनी पड़ेगी।

आज़ाद–इसका कोई गम नहीं, मगर कौल जान के साथ है।

हसीना–मैं फिर समझाये देती हूं। आप पछतायेंगे।

आज़ाद–आपको अख्तियार है।

यह सुनते ही उस औरत ने आज़ाद को फिर कैदखाने में भेजवा दिया।

अब मियां खोजी का हाल सुनिए। रूसियों ने उन्हें दीवाना समझ कर जब छोड़ दिया तो आप तुर्कों की फौज में पहुंच कर दून की लेने लग। हमने यों रूसियों से मुकाबिला किया और यों नीचा दिखाया। एक रूसी पहलवान से मेरी कुश्ती भो हो गयी, बहुत बफर रहा था। मुझसे न रहा गया। लंगोट कसा और खुदा का नाम ले कर ताल ठोंक के अखाड़े में उतर पड़ा, वह भी दांव-पेंच में बर्क़ था और हाथ-पांव ऐसे कि क्या कहूं। मेरे हाथ-पांव से भी बड़े।

एक सिपाही–ऐं, अजी हम न मानेंगे। आपके हाथ-पांव से ही हाथ-पांव तो देव के भी न होंगे !

खोजी–बस, ज्यों ही उसने हाथ बढ़ाया, मैंने हाथ बांध लिया। फिर जो जोर करता हूं तो हाथ खट से अलग।

सिपाही–अरे, हाथ ही तोड़ डाले। बेचारे को कहीं का न रखा !

खोजी–बस, फिर दूसरा आया, मैंने गरदन पकड़ी और अंटी दी, धम से गिरा। तीसरा आया, चपत जमायी और धर दबाया। चौथा अया, अडंगा मारा और धम से गिरा दिया। पांचवां आया और मैंने मारे करौलियों के कचूमर निकाल लिया।

सिपाही–आपने बुरा किया। ताकतवर लोग कमजोरों पर रहम किया करते हैं।

खोजी–तब कई सवार तोपें लिये हुए आये, मगर मैंने सबको पटका। आखिर कोई सत्तर आदमी मिल कर मुझ पर टूट पड़े तब जाके कहीं मैं गिरफ्तार हुआ।

सिपाही–बस, सत्तर ही। सत्तर आदमियों को तो आप पीसकर धर देते। कम से कम कोई दो सौ तो जरूर होंगे।

खोजी–झूठ न बोलूंगा, मुझे सबों ने रखा बड़ी इज्ज़त के साथ। रात भर तो मैं वहीं रहा, सबेरा होते ही करौली ले कर ललकारा कि आ जाओ जिसको आना हो, बंदा चलता है। बस कोई दो करोड़ रूसी निकल पड़े–लेना-लेना। अरे मैंने कहा कि किसका लेना और किसका देना, आ जा जिसे आना हो। खुदा की कसम जो किसी ने चूं भी की हो। सब के सब डर गये।

तुर्क समझ गये कि निरा जांगलू है। खोजी ने यही समझा कि मैंने इस सबों को उल्लू बनाया। दिन भर तो पीनक लेते रहे, शाम के वक्त हवा खाने निकले। इत्तिफाक से राह में एक गधा मिल गया। आप फौरन गधे पर सवार हुए और टिक-टिक करते चले। थोड़ी ही दूर गये थे कि एक आदमी ने ललकारा–रोक ले गधा, कहां लिये जाता है?

खोजी–हट जा सामने से।

जवान–उतर गधे से। उतरता है या मैं दूं खाने भर को?

खोजी–तू नहीं छोड़ेगा, निकालूं करौली फिर?

आखिर, उस जवान ने खोजी को गधे से ढकेल दिया, तब आप चोर-चोर का गुल मचाने लगे। यह गुल सुन कर दो-चार आदमी आ गये और खोजी को चपतें जमाने लगे।

खोजी–तुम लोगों की कजा आयी है, मैं धुनके रख दूंगा।

जवान—चुपके से घर की राह लो, ऐसा न हो, मुझे तुम्हारी खोपड़ी सुहलानी पड़े।

इत्तिफाक से एक तुर्की सवार का उस तरफ से गुजर हुआ। खोजी ने चिल्ला कर कहा—दोहाई है सरकार की ! यह डाकू मारे डालते हैं।

सवार ने खोजी को देख कर पूछा—तुम यहां कहां?

खोजी—ये लोग मुझे तुर्की का दोस्त समझ कर मारे डालते हैं।

सवार ने उन आदमियों को डांटा और अपने साथ चलने का हुक्म दिया। खोजी शेर हो गये। एक के कान पकड़े और कहा, आगे चल। दूसरे पर चपत जमायी और कहा, पीछे चल।

इस तरह खोजी ने इन बेचारों की बुरी गत बनायी, मगर पड़ाव पर पहुंच कर उन्हें छोड़वा दिया।

जब सब लोग खा कर लेटे तो खोजी ने फिर डींग मारनी शुरू की। एक बार मैं दरिया नहाने गया तो बीचोंबीच में जा कर ऐसा गोता लगाया कि तीन दिन पानी से बाहर न हुआ।

एक सिपाही—तब तो आप यों कहिए कि आप गोताखोरों के उस्ताद हैं। कल जरा हमें भी गोता ले कर दिखाइए।

खोजी—हां, हां, जब कहो।

सिपाही—अच्छा तो कल की रही।

खोजी ने समझा, यह सब रोब में आ जायेंगे। मगर वे एक छटे गुर्गे। दूसरे दिन उस सबों ने खोजी को साथ लिया और दरिया नहाने को चले। पड़ाव से दरिया साफ़ नज़र आता था। खोजी के बदन के रोंगटे खड़े हो गये। भागने ही को थे कि एक आदमी ने रोक लिया और दो तुर्कों ने उनके कपड़े उतार लिये। खोजी की यह कैफियत थी कि कलेजा थरथर कांप रहा था, मगर जबान से बात न निकलती थी। जब उन्होंने देखा कि अब गला न छूटेगा तो मिन्नतें करने लगे--भाइयो, मेरी जान के क्यों दुश्मन हुए हो? अरे यारो, मैं तुम्हारा दोस्त हूं, तुम्हारे सबब से इतनी जहमत उठायी, कैद हुआ और अब तुम लोग हंसी-हंसी में मुझे डुबा देना चाहते हो।

गरज खोजी बहुत गिड़गिड़ाये, मगर तुर्कों ने एक न मानी। खोजी मिन्नतें करते-करते थक गये तो कोसने लगे—खुदा तुमसे समझे ! यहां कोई अफसर भी नहीं है। न हुई करौली, नहीं इस वक्त जीता चुनवा देता। खुदा करे, तुम्हारे ऊपर बिजली गिरे। सब के सब कपड़े उतार लिये, गोया उनके बाप का माल था। अच्छा गीदी, अगर जीता बचा तो समझ लूंगा। मगर दिल्लगीबाजों ने इतने गोते दिये कि वे बेदम हो गये और एक गोता खाकर डूब गये।

छियहत्तर

आज़ाद को साइबेरिया भेज कर मिस क्लारिसा अपने वतन को रवाना हुई और रास्ते में एक नदी के किनारे पड़ाव किया। वहां का आब-हवा उसको ऐसी पसंद आयी कि कई दिन तक उसी पड़ाव पर शिकार खेलती रही। एक दिन मिस क्लारिसा ने सुबह को देखा कि उसके खेमे के सामने एक दूसरा बहुत बड़ा खेमा खड़ा हुआ है। हैरत हुई कि या खुदा, यह किसका सामान है। आधी रात तक सन्नाटा था, एकाएक खेमा कहां से आ गये ! एक औरत को भेजा कि जा कर पता लगाये कि ये लोग कौन है। वह औरत जो खेमे में गयी तो क्या देखती है कि एक जवाहिरनिगार तख्त पर एक हूरों को शरमानेवाली शाहजादी बैठी हुई है। देखते ही दंग हो गयी। जा कर मिस क्लारिसा से बोली—हुजूर, कुछ न पूछिए, जो कुछ देखा, अगर ख्वाब नहीं तो जादू जरूर है। ऐसी औरत देखी कि परी भी उसकी बलायें ले।

क्लारिसा—तुमने कुछ पूछा भी कि हैं कौन?

लौंडी—हुजूर, मुझ पर तो ऐसा रोब छाया कि मुंह से बात ही न निकली। हां, इतना मालूम हुआ कि एक रईसजादी हैं और सैर करने के लिए आयी हैं।

इतने में वह औरत खेमे से बाहर निकल आयी। क्लारिसा ने झुक कर उसको सलाम किया और चाहा कि बढ़ कर हाथ मिलाये, मगर उसने क्लारिसा की तरफ तेज निगाहों से देख कर मुंह फेर लिया। वह कोहकाफ की परी मीडा थी। जब से उसे मालूम हुआ था कि क्लारिसा ने आज़ाद को साइबेरिया भेजवा दिया है, वह उसके खून की प्यासी हो रही थी। इस वक्त क्लारिसा को देख कर उसके दिल ने कहा कि ऐसा मौका फिर हाथ न आयेगा, मगर फिर सोचा कि पहले नरमी से पेश आऊं। बातों-बातों में सारा माजरा कह सुनाऊं, शायद कुछ पसीजे।

क्लारिसा—तुम यहां क्या करने आयी हो?

मीडा—मुसीबत खींच लायी है, और क्या कहूं। लेकिन आप यहां कैसे आयीं?

क्लारिसा—मेरा भी वही हाल है। वह देखिए, सामने जो कब्र है उसी में वह दफन है जिसकी मौत ने मेरी जिंदगी को मौत से बदतर बना दिया है। हाय ! उसकी प्यारी सूरत मेरी निगाह के सामने है, मगर मेरे सिवा किसी को नजर नहीं आती।

मीडा—मैं भी उसी मुसीबत में गिरफ्तार हूं। जिस जवान को दिल दिया, जान दी, ईमान दिया, वह अब नजर नहीं आता, उसको एक जालिम बागवान ने बाग से जुदा कर दिया। खुदा जाने, वह गरीब किन जंगलों में ठोकरें खाता होगा।

क्लारिसा—मगर तुम्हें यह तसकीन तो है कि तुम्हारा यार जिंदा है और कभी न कभी उससे मुलाकात होगी। मैं तो उसके नाम को रो चुकी। मेरे और उसके मां-बाप शादी करने पर राजी थे, हम खुश थे कि दिल की मुरादें पूरी होंगी, मगर शादी के एक ही दिन पहले आसमान टूट पड़ा, मेरे प्यारे को फौज में शरीक होने का हुक्म मिला। मैंने सुना तो जान सी निकल गयी। लाख समझाया, मगर उसने एक न सुनी। जिस रोज यहां से रवाना हुआ, मैंने खूब मातम किया और रुखसत हुई। यहां रात-दिन उसकी जुदाई में तड़पा करती थी, मगर अखबारों में लड़ाई के हाल

पढ़ कर दिल को तसल्ली देती थी। एकाएक अखबार में पढ़ा कि उसकी एक तुर्की पाशा से तलवार चली, दोनों जख्मी हुए, पाशा तो बच गया, मगर वह बेचारा जान से मारा गया। उस पाशा का नाम आज़ाद है। यह खबर सुनते ही मेरी आंखों में खून उतर आया, दिल में ठान लिया कि अपने प्यारे के खून का बदला आज़ाद से लूंगी। यह तय करके यहां से चली और जब आज़ाद मेरे हाथों से बच गया तो मैंने उसे साइबेरिया भेजवा दिया।

मीडा यह सुन कर बेहोश हो गयी।

सतहत्तर

जिस वक्त खोजी ने पहला गोता खाया तो ऐसे उलझे कि उभरना मुश्किल हो गया। मगर थोड़ी ही देर में तुर्कों ने गोते लगाकर इन्हें ढूंढ निकाला। आप किसी कदर पानी पी गये थे। बहुत देर तक तो होश ही ठिकाने न थे। जब जरा होश आया तो सबको एक सिरे से गालियां देना शुरू कीं। सोचे कि दो-एक रोज में जरा टांठा हो लूं तो इनसे खूब समझूं। डेरे पर आकर आज़ाद के नाम खत लिखने लगे। उनसे एक आदमी ने कह दिया था कि अगर किसी आदमी के नाम खत भेजना हो और पता न मिलता हो तो खत को पत्तों में लपेट दरिया के किनारे खड़ा हो और तीन बार 'भेजो-भेजो' कह कर खत को दरिया में डाल दे, खत आप ही आप पहुंच जाएगा। खोजी के दिल में यह बात बैठ गयी। आज़ाद के नाम एक खत लिख कर दरिया में डाल आये। उस खत में आपने बहादुरी के कामों की खूब डींगें मारी थीं।

रात का वक्त था। ऐसा अंधेरा छाया हुआ था, गोया तारीकी का दिल सोया हो। ठंडी हवा के झोंके इतने जोर से चलते थे कि रूह तक कांप जाती थी। एकाएक रूस की फौज से नक्कारे की आवाज आयी। मालूम हुआ कि दोनों तरफ के लोग लड़ने को तैयार हैं। खोजी घबराकर उठ बैठे और सोचने लगे कि यह आवाजें कहां से आ रही हैं? इतने में तुर्की फौज भी तैयार हो गयी और दोनों फौजे दरिया के किनारे जमा हो गयीं। खोजी ने दरिया की सूरत देखी तो कांप उठे। कहा-अगर खुश्की की लड़ाई होती तो हम भी आज जौहर दिखाते। यों तो सब अफसर और सिपाही ललकार रहे थे, मगर खोजी की उमंगें सबसे बढ़ी हुई थीं। चिल्ला-चिल्ला कर दरिया से कह रहे थे कि अगर तू खुश्क हो जाय तो मैं फिर मजा दिखलाऊं। एक हाथ में परे के परे काट कर रख दूं।

गोला चलने लगा। तुर्कों की तरफ से एक इंजीनियर ने कहा कि यहां से आध मील के फासिले पर किश्तियों का पुल बांधना चाहिए। कई आदमी दौड़ाये गये कि जा कर देखें, रूसियों की फौजें किस-किस मुकाम पर हैं। उन्होंने आकर बयान किया कि एक कोस तक रूसियों का नाम-निशान नहीं है। फौरन पुल बनाने का इंतजाम होने लगा। यहां से डेढ़ कोस पर पैंतीस किश्तियां मौजूद थीं। अफसर ने हुक्म दिया

कि उन किश्तियों को यहां लाया जाय। उसी दम दो सवार घोड़े कड़कड़ाते हुए आये। उनमें से एक खोजी थे।

खोजी–पैंतीस किश्तियां यहां से आधा कोस पर मुस्तैद हैं। मैंने सोचा, जब तक सवार तुम्हारे पास पहुंचेंगे और तुम हुक्म दोगे कि किश्तियां आयें तब तक यहां खुदा जाने क्या हो जाय, इसलिए एक सवार को लेकर फौरन किश्तियों को इधर ले आया।

फौज के अफसर ने यह सुना तो खोजी की पीठ ठोंक दी और कहा-शाबाश इस वक्त तो तुमने हमारी जान बचा दी।

खोजी अकड़ गये। बोले–जनाब, हम कुछ ऐसे-वैसे नहीं हैं ! आज हम दिखा देंगे कि हम कौन हैं। एक-एक को चुन-चुन कर मारूं !

इतने में इंजीनियरों ने फुर्ती के साथ किश्ती का पुल बांधने का इंतजाम किया। जब पुल तैयार हो गया तो अफसर ने कुछ सवारों को उस पार भेजा। खोजी भी उनके साथ हो लिये। जब पुल के बीच में पहुंचे तो एक दफा गुल मचाया-ओ गीदी, हम आ पहुंचे।

तुर्कों ने उनका मुंह दबाया और कहा–चुप !

इतने में तुर्कों का दस्ता उस पार पहुंच गया। रूसियों को क्या खबर थी कि तुर्क लोग क्या कर रहे हैं। इधर खोजी जोश में आ कर तीन-चार तुर्कों को साथ ले दरिया के किनारे-किनारे घुटनों के बल चले। जब उनको मालूम हो गया कि रूसी घबरा उठे। आपस में सलाह की कि अब भाग चलें। खोजी भी घोड़े पर सवार थे, रूसियों को भागते देखा तो घोड़े को एक एड़ दी और भागते सिपाहियों में से सात आदमियों के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। तुर्की फौज में वाह-वाह का शोर मच गया। ख्वाजा साहब अपनी तारीफ सुन कर ऐसे खुश हुए कि परे में घुस गये और घोड़े को बढ़ा-बढ़ा कर तलवार फेंकने लगे। दम के दम में रूसी सवारों से मैदान खाली कर दिया। तुर्की फौज में खुशी के शादियाने बजने लगे। ख्वाजा साहब के नाम फतह लिखी गयी। इस वक्त उनके दिमाग सातवें आसमान पर थे। अकड़े खड़े थे। बात-बात पर बिगड़ते । हुक्म दिया–फौज के जनरल से कहो, आज हम उनके साथ खाना खायेंगे। खाना खाने बैठे तो मुंह बनाया, वाह ! इतने बड़े अफसर और यह खाना। न मीठे चावल, न फिरनी, न पोलाव। खाना खाते वक्त अपनी बहादुरी की कथा कहने लगे-वल्लाह, सबों के हौसले पस्त कर दिये। ख्वाजा साहब हैं कि बातें ! मेरा नाम सुनते ही दुश्मनों के कलेजे कांप गये। हमारा वार कोई रोक ले तो जानें। बरसों मुसीबतें झेली हैं तब जाके इस काबिल हुए कि रूसियों के लश्कर में अकेले घुस पड़े ! और हमें डर किसका है? बहिश्त के दरवाजे खुले हुए हैं।

अफसर–हमने वजीरे-जंग से दरख्वास्त की है कि तुमको इस बहादुरी का इनाम मिले।

खोजी–इतना जरूर लिखना कि यह आदमी दगलेवाली पलटन का रिसालदार था।

अफसर–दगलेवाली पलटन कैसी? मैं नहीं समझा।

खोजी–तुम्हारे मारे नाक में दम है और तुम हिन्दी की चिन्दी निकालते हो। अवध का हाल मालूम है या नहीं? अवध से बढ़ कर दुनिया में और कौन बादशाहत होगी?

अफसर–हमने अवध का नाम नहीं सुना। आपको कोई खिताब मिले तो आप पसंद करेंगे?

खोजी–वाह, नेकी और पूछ-पूछ !

उस दिन से सारी फौज में खोजी की धूम मच गयी। एक दिन रूसियों ने एक पहाड़ी पर से तुर्कों पर गोले उतारने शुरू किये। तुर्क लोग आराम से लेटे हुए थे। एकाएक तोप की आवाज सुनी तो घबरा गये। जब तक मुकाबला करने के लिए तैयार हों तब तक उनके कई आदमी काम आये। उस वक्त खोजी ने अपने सिपाहियों को ललकारा, तलवार खींच पहाड़ी पर चढ़ गये और कई आदमियों को जख्मी किया, इससे उनकी और भी धाक बैठ गयी। जिसे देखो, उन्हीं की तारीफ कर रहा था।

एक सिपाही–आपने आज वह काम किया है कि रुस्तम से भी न होता। अब आपके वास्ते कोई खिताब तजबीजा जायेगा।

खोजी मेरा आज़ाद आ जाय तो मेरी मिहनत ठिकाने लगे, वरना सब हेच है।

अफसर–जिस वक्त तुम घोड़े से गिरे, मेरे होश उड़ गये।

खोजी–गिरते ही संभल भी गये थे।

अफसर–चित गिरे थे?

खोजी–जी नहीं। पहलवान जब गिरेगा, पट गिरेगा

अफसर–जरा सा तो आपका कद है और इतनी हिम्मत !

खोजी–क्या कहा, जरा सा कद, किसी पहलवान से पूछिए। कितनी ही कुश्तियां जीत चुका हूं।

अफसर–हमसे लड़िएगा?

खोजी–आप जैसे दस हों तो क्या परवा?

फौज के अफसर ने उसी दिन वजीरे-जंग के पास खोजी की सिफारिश लिख भेजी।

अठहत्तर

खोजी थे तो मसखरे, मगर वफादार थे। उन्हें हमेशा आज़ाद की धुन सवार रहती थी। बराबर याद किया करते थे। जब उन्हें मालूम हुआ कि आज़ाद को पोलैंड की शहजादी ने कैद कर दिया है तो वह आज़ाद को खोजने निकले। पूछते-पूछते किसी तरह आज़ाद के कैदखाने तक पहुंच ही तो गये। आज़ाद ने उन्हें देखते ही गोद में उठा लिया।

खोजी–आज़ाद, आज़ाद, अरे मियां, तुम कौन हो?

आज़ाद–ओ-हो-हो!

खोजी–भाईजान, तुम भूत हो या प्रेत, हमें छोड़ दो। मैं अपने आज़ाद को ढूंढ़ने जाता हूं।

आज़ाद–पहले यह बताओ कि यहां कैसे पहुंचे?

खोजी–सब बतलायें मगर पहले यह तो बताओ कि तुम्हारी यह गति कैसे हो गयी?

आज़ाद ने सारी बातें खोजी को समझायीं, तो आपने कहा–वल्लाह, निरे गाउदी हो। अरे भाईजान, तुम्हारी जान के लाले पड़े हैं, तुमको चाहिए कि जिस तरह मुमकिन हो, शाहजादी को खुश करो, तुमको तो यह दिखाना चाहिए कि शहजादी को छोड़ कर कहीं जाओगे ही नहीं। खूब इश्क जताओ, तब कहीं तुम्हारा ऐतबार होगा।

आज़ाद–हो सिड़ी तो क्या हुआ, मगर बात ठिकाने की करते हो, मगर यह तकरीर कौन करे?

खोजी–और हम आये क्या करने हैं?

यह कहकर आप शाहजादी के सामने आ कर खड़े हो गये। उसने इनकी सूरत देखी तो हंस पड़ी। मियां खोजी समझे कि हम पर रीझ गयी। बोले–क्या लड़वाओगी क्या? आज़ाद सुनेगा तो बिगड़ उठेगा। मगर वाह रे मैं ! जिसने देखा, वही रीझा और यहां यह हाल है कि किसी से बोलते तक नहीं। एक हो तो बोलूं, दो हो तो बोलूं, चार निकाह तक तो जायज हैं, मगर जब इंद्र का अखाड़ा पीछे पड़ जाय तो क्या करूं?

शाहजादी–जरा बैठ तो जाइए। यह तो अच्छा नहीं मालूम होता कि मैं बैठी रहूं और आप खड़े रहें।

खोजी–पहले यह बताओ कि दहेज क्या दोगी?

अरबिन–और अंकड़ते किस बिरते पर हो। सूखी हड्डियों पर यह गरूर?

खोजी–तुम पहलवानों की बातें क्या जानो। यह चोर-बदन कहलाता है; अखाड़े में उतर पड़ूं तो फिर कैफियत देखो।

अरबिन–टेनी गुर्ग के बराबर तो आपका कद है और दावा इतना लम्बा-चौड़ा !

खोजी–तुम गंवारिन हो, ये बातें क्या जानो। तुम कद को देखा चाहो और यहां लम्बे आदमी को लोग बेवकूफ कहते हैं। शेर को देखो और ऊंट को देखो। मिस्र में एक बड़े ग्रांडील जवान को पटकनी बतायी। मारा, चारों खाने चित। उठ कर पानी भी न मांगा।

खैर; बहुत कहने-सुनने से आप कुरसी पर बैठे तो दोनों टांगें कुरसी पर रख लीं और बोले–अब दहेज का हाल बताओ। लेकिन मैं एक शर्त से शादी करूंगा, इन सब लौंडियों को महल बनाऊंगा और इनके अच्छे-अच्छे नाम रखूंगा। ताऊस-महल, गुलाम-महल....।

शाहजादी–तो आप अपनी शादी के फेर में हैं, यह कहिए।

खोजी–हंसती आप क्या हैं, अगर हमारा करतब देखना हो, किसी पहलवान को बुलाओ। अगर हम कुश्ती निकालें तो शादी मंजूर?

शाहजादी ने एक मोटी-ताजी हबशिन को बुलाया। खोजी ने आंख ऊपर उठायी तो देखते हैं कि एक काली-कलूटी देवनी हाथ में एक मोटा सोटा लिये चली आती है। देखते ही उनके होश उड़ गये। हबशिन ने आते ही इनके कधे पर हाथ रखा तो इनकी जान निकल गयी। बोले-हाथ हटाओ।

हबशिन-दम हो तो हाथ हटा दो।

खोजी-मेरे मुंह न लगना, खबरदार !

हबशिन ने उनका हाथ पकड़ लिया और मरोड़ने लगी। खोजी झल्ला-झल्ला कर कहते थे-हाथ छोड़ दे। हाथ टूटा तो बुरी तरह पेश आऊंगा, मुझसे बुरा कोई नहीं।

हबशिन ने हाथ छोड़ कर उनके दोनों कान पकड़े और उठाया तो जमीन से छः आगुंल ऊंचे !

हबशिन-कहो, शादी पर राजी हो या नहीं?

खोजी-औरत समझ कर छोड़ दिया। इसके मुंह कौन लगे !

इस पर हबशिन ने ख्वाजा साहब को गोद में उठाया और ले चली। उन्होंने सैकड़ों गालियां दी-खुदा तेरा घर खराब करे, तुम पर आसमान टूट पड़े, देखो, मैं कहे देता हूं कि पीस डालूंगा। मैं सिर्फ इस सबब से नहीं बोलता कि मर्द हो कर औरत जात से क्या बोलूं। कोई पहलवान होता तो मैं अभी समझ लेता, और समझाता क्या? मारता चारों खाने चित।

अरबिन-खैर, दिल्लगी तो हो चुकी, अब यह बताओ कि आज़ाद से तुमने क्या कहा? वह तो आपका दोस्त हैं।

खोजी-ऊंह, तुमको किसी ने बहका दिया, वह दोस्त नहीं, लड़के हैं। मैंने उसके नाम एक खत लिखा है ले जाओ और उसका जवाब लाओ।

अरबिन आपका खत ले कर आज़ाद के पास पहुंची और बोली-हुजूर, आप के वालिद ने इस खत का जवाब मांगा है।

आज़ाद-किसने मांगा है? तुमने यह कौन लफ्ज कहा?

अरबिन-हुजूर के वालिद ने....। वह जो ठेंगने से आदमी हैं।

आज़ाद-वह सुअर मेरे घर का गुलाम है। वह मसखरा है। हम उसके खत का जवाब नहीं देते।

अरबिन ने आ कर खोजी से कहा-आपका खत पढ़ कर आपके लड़के बहुत ही खफा हुए।

खोजी-नालायक है कपूत, जी चाहता है, अपना सिर पीट लूं।

शाहजादी ने कहा-जाकर आज़ाद पाशा को बुला लाओ, इस झगड़े का फैसला हो जाय।

जरा देर में आज़ाद आ पहुंचे। खोजी उन्हें देखकर सिटपिटा गये।

इधर तो शाहजादी खोज़ी के साथ यों मजाक कर रही थी। उधर एक लौंडी ने आ कर कहा-हुजूर, दो सवार आये हैं और कहते हैं कि शाहजादी को बुलाओ। हमने बहुत कहा कि शाहजादी साहब को आज फुरसत नहीं है, मगर वह नहीं सुनते।

शाहजादी ने खोजी से कहा कि बाहर जाकर इन सवारों से पूछो कि वह क्या चाहते हैं? खोजी ने जाकर उन दोनों को खूब गौर से देखा और आ कर बोले—हुजूर, मुझे तो रईसजादे मालूम होते हैं। शाहजादी ने जाकर शाहजादों को देखा तो आज़ाद भूल गये। उन्हें एक दूसरे महल में ठहराया और नौकरों को ताकीद कर दी कि इन मेहमानों को कोई तकलीफ न होने पाये। आज़ाद तो इस ख्याल में बैठे थे कि शाहजादी आती होगी और शाहजादी नये मेहमानों की खातिरदारी का इंतजाम कर रही थी। लौंडियां भी चल दीं, खोजी और आज़ाद अकेले रह गये।

आज़ाद—मालूम होता है, उन दोनों लौंडों को देखकर लट्टू हो गयी।

खोजी—तुमसे तो पहले ही कहते थे, मगर तुमने न माना। अगर शादी हो गई होती तो मजाल थी कि गैरों को अपने घर में ठहराती।

आज़ाद—जी चाहता है, इसी वक्त चलकर दोनों के सिर उड़ा दूं।

खोजी—यही तो तुममें बुरी आदत है। जरा सब्र से काम लो, देखो क्या होता है।

उन्नासी

इन दोनों शाहजादों में एक का नाम मिस्टर क्लार्क था और दूसरे का हेनरी ! दोनों की उठती जवानी थी। निहायत खूबसूरत। शाहजादी दिन के दिन उन्हीं के पास बैठी रहती, उनकी बातें सुनने से उसका जी न भरता था। मियां आज़ाद तो मारे जलन के अपने महल से निकलते ही न थे। मगर खोजी टोह लेने के लिए दिन में कई बार यहां आ बैठते थे। उन दोनों को भी खोजी की बातों में बड़ा मजा आता।

एक दिन खोजी दोनों शाहजादों के पास गये, तो इत्तिफाक से शाहजादी वहां न थीं। दोनों शाहजादों ने खोजी की बड़ी खातिर की। हेनरी ने कहा—ख्वाजा साहब, हमको पहचाना?

यह कह कर उसने टोप उतार दिया ! खोजी चौंक पड़े यह मीडा थी। बोले—मिस मीड़ा, खुब मिलीं।

मीडा—चुप-चुप ! शाहजादी न जानने पाये। हम दोनों इसी लिए आये हैं कि आज़ाद को छुड़ा ले जायं।

खोजी—अच्छा, क्या यह भी औरत हैं?

मीडा—यह वही औरत हैं जो आज़ाद को पकड़ ले गयी थीं।

खोजी—अक्खाह, मिस क्लारिसा ! आप तो इस काबिल हैं कि आपका बांया कदम ले।

मीडा—अब यह बताओ कि यहां से छुटकारा पाने की भी कोई तदबीर है।?

खोजी—हां, वह तदबीर बताऊं कि कभी पट हीं न पड़े ! यह शाहजादी बड़ी पीनेवाली है, इसे खूब पिलाओ और जब बेहोश हो जाय तो ले उड़ो ।

खोजी ने जाकर आज़ाद से यह किस्सा कहा। आज़ाद बहुत खुश हुए ! बोले—मैं

दोनों की सूरत देखते ही ताड़ गया था।

खोजी–मिस क्लारिसा कहीं तुम्हें दगा न दे।

आज़ाद–अजी नहीं, यह मुहब्बत की घातें हैं।

खोजी–अभी जरा देर में महफिल जमेगी। न कहोगे, कैसी तदबीर बतायी !

खोजी ने ठीक कहा था। थोड़ी ही देर में शाहजादी ने इन दोनों आदमियों को बुला भेजा। ये लोग वहां पहुंचे तो शराब के दौर चल रहे थे।

शाहजादी–आज हम शर्त लगाकर पियेंगे।

हेनरी–मंजूर। जब तक हमारे हाथ से जाम न छूटे तब तक तुम भी न छोड़ो। जो पहले छोड़ दे वह हारा।

क्लार्क–(आज़ाद से) तुम कौन हो मियां, साफ बोलो ।

आज़ाद–मैं आदमी नहीं हूं, देवजाद हूं। परियां मुझे खूब जानती हैं।

क्लारिसा–

उड़ता है मुझसे ओ सितमईजाद किस लिए,
बनता है आदमी से परीजाद किस लिए?

क्लारिसा ने शाहजादी को इतनी शराब पिलायी कि वह मस्त हो कर झूमने लगी। तब आज़ाद ने कहा–ख्वाजा साहब, आप सच कहना, हमारा इश्क सच्चा है या नहीं। मीडा, खुदा जानता है, आज का दिन मेरी जिंदगी का सबसे मुबारक दिन है। किसे उम्मेद थी कि इस कैद में तुम्हारा दीदार होगा?

खोजी–बहुत बहको न भाई, कहीं शाहजादी सुन रही हो तो आफत आ जाए।

आज़ाद–वह इस वक्त दूसरी दुनिया में है।

खोजी–शाहजादी साहब, यह सब भागे जा रहे हैं, जरा होश में तो आइए।

आज़ाद–अबे चुप रह नालायक। मीडा, बताओ, किस तदबीर से भागोगी? मगर तुमने तो यह रूप बदला कि खुदा की पनाह ! मैं यही दिल में सोचता था कि ऐसे हसीन शाहजादे कहां से आ गए, जिन्होंने हमारा रंग फीका कर दिया। वल्लाह, जो जरा भी पहचाना हो। मिस क्लारिसा, तुमने तो गजब ही कर दिया। कौन जानता था कि साइबेरिया भेजकर तुम मुझे छुड़ाने आओगी ।

मीडा–अब तो मौका अच्छा है, रात ज़्यादा आ गयी है। पहरेवाले भी सोते होंगे, देर क्यों करें।

आज़ाद अस्तबल में गए और चार तेज घोड़े छांट कर बाहर लाए। दोनों औरतें तो घोड़ों पर सवार हो गयीं, मगर खोजी की हिम्मत छूट गयी, डरे कि कहीं गिर पड़ें तो हड्डी-पसली चूर हो जाय। बोले–भई, तुम लोग जाओ, मुझे यहीं रहने दो। शाहजादी को तसल्ली देनेवाला भी तो कोई चाहिए। मैं उसे बातों में लगाये रखूंगा जिसमें उसे कोई शक न हो। खुदा ने चाहा तो एक हफ्ते के अंदर कुस्तुनतुनिया में तुमसे मिलेंगे।

यह कह कर खोजी तो इधर चले और वे तीनों आदमी आगे बढ़े। कदम-कदम पर पीछे फिर-फिर कर देखते थे कि कोई पकड़ने आ न रहा हो। सुबह होते-होते ये लोग डैन्यूब के किनारे आ पहुंचे और घोड़ों से उतर हरी-हरी घास पर टहलने

लगे। एकाएक पीछे से कई सवार घोड़े दौड़ाते आते दिखायी पड़े। इन लोगों ने अपने घोड़े चरने को छोड़ दिये थे। अब भागें कैसे? दम के दम में सब के सब सवार सिर पर आ पहुंचे और इन तीनों आदमियों को गिरफ्तार कर लिया। अकेले आज़ाद भला तीस आदमियों का क्या मुकाबला करते।

दोपहर होते-होते ये लोग शाहजादी के यहां जा पहुंचे। शाहजादी तो गुस्से से भरी बैठी थी। अंदर ही से कहला भेजा कि आज़ाद को कैद कर दो। यह हुक्म दे कर शाहजादों को देखने के लिए बाहर निकली तो शाहजादों की जगह दो शाहजादियां खड़ी नजर आयीं। धक से रह गयी। या खुदा, यह मैं क्या देख रही हूं !

क्लारिसा–बहन, मर्द के भेस में तो तुम्हें प्यार कर चुके। अब आओ, बहनें-बहनें मिल कर प्यार करें। हम वही हैं जिनके साथ तुम शादी करनेवाली हो।

शाहजादी–अरे क्लारिसा, तुम यहां कहां?

क्लारिसा–आओ गले मिलें। मुझे खौफ है कि कहीं तुम्हारे ऊपर कोई आफत न आ जाए। ऐसे नामी सरकारी कैदी को उड़ा लाना तुम्हें मुनासिब न था। वजीरजंग को यह खबर मिल गयी है। अब तुम्हारी खैरियत इसी में है कि उस तुर्की जवान को हमारे हवाले कर दो।

शाहजादी समझ गयी कि अब आज़ाद को रुखसत करना पड़ेगा। आज़ाद से जा कर बोली–प्यारे आज़ाद, मैंने तुम्हारे साथ जो बुराइयां की हैं, उन्हें माफ करना। मैंने जो कुछ किया, दिल की जलन से मजबूर हो कर किया। तुम्हारी जुदाई मुझसे बरदाश्त न होगी। जाओ, रुखसत।

यह कह कर उसने क्लारिसा से कहा–शाहजादी, खुदा के लिए तुम्हें साइबेरिया न भेजना। वजीरजंग से तुम्हारी जान-पहचान है ! वह तुम्हारी बात मानते हैं, अगर तुम माफ कर दोगी, तो वह जरूर माफ कर देंगे।

अस्सी

उधर आज़ाद जब फौज से गायब हुए तो चारों तरफ उनकी तलाश होने लगी। दो सिपाही घूमते-घामते शाहजादी के महल की तरफ आ निकले। इत्तिफाक से खोजी भी अफीम की तलाश में घूम रहे थे। उन दोनों सिपाहियों ने खोजी को आज़ाद के साथ पहले देखा था। खोजी को देखते ही पकड़ लिया और आज़ाद का पता पूछने लगे।

खोजी–मैं क्या जानूं कि आज़ाद पाशा कौन है। हां, नाम अलबत्ता सुना है।

एक सिपाही–तुम आज़ाद के साथ हिन्दुस्तान से आये हो और तुमको खूब मालूम है कि आज़ाद पाशा कहां हैं।

खोजी–कौन आज़ाद के साथ आया है? मैं पठान हूं, पेशावर से आया हूं, मुझसे आज़ाद से वास्ता?

मगर वह दोनों सिपाही भी छंटे हुए थे, खोजी के झांसे में न आए। खोजी ने जब देखा कि इन जालिमों से बचना मुश्किल है तो सोचे कि सिड़ी बन जाओ। कुछ का कुछ जवाब दो। मरना है तो दूसरे को ले कर मरो। मरना न होता तो अपना वतन छोड़ कर इतनी दूर आते ही क्यों। खास मजे में नवाब के यहां दनदनाते थे। उल्लू बना-बना कर मजे उड़ाते थे। चीनी की प्यालियों में मालवे की अफीम घुलती थी, चंडू के छींटे उड़ते थे, चरस के दम लगते थे। वह सब मजे छोड़-छाड़ कर उल्लू बने, मगर फंसे सो फंसे।

सिपाही–तुम्हारा नाम क्या है? सच-सच बता दो।

खोजी–कल तक दरिया चढ़ा था, आज चिड़िया दाना चुगेगी।

सिपाही–तुम्हारे बाप का क्या नाम था?

खोजी–हमको अपना नाम तो याद नहीं। बाप के नाम को कौन कहे?

सिपाही–तुम यहां किसके साथ आये?

खोजी–शैतान के साथ?

सिपाहियों ने जब देखा कि यह ऊल-जलूल बक रहा है तो उन्हें एक मोटे से दरख्त में बांधा और बोले–ठीक-ठीक बतलाते हो तो बतला दो वरना हम तुम्हें फांसी दे देंगे।

खोजी की आंखों से आंसू निकल पड़े। खुदा से दुआ मांगने लगे कि ऐ खुदा, मैं तो अब दुनिया से जा रहा हूं, मगर मरते वक्त दुआ मांगता हूं कि आज़ाद का बाल भी बांका न हो।

आखिर सिपाहियों को खोजी के सिड़ी होने का यकीन आ ही गया। छोड़ दिया। खोजी के सिर से यह बला टली तो चहकने लगे–तुम लोग जिंदगी के मजे क्या जानो, हमने वह-वह मजे उठाये हैं कि सुनो तो फड़क जाओ। नवाब साहब की बदौलत बादशाह बने फिरते थे, सुबह से दस बजे तक चंडू के छींटे उड़े फिर खाना खाया, सोये तो चार बजे की खबर लाये, चार बजे से अफीम घूमने लगी, पौंडे छोले और गंडेरियां चूसीं, इतने में नवाब साहब निकल आये। वैसे रईस यहां कहां? वहां के एक अदना कहार ने बीस लाख की शराब अपनी बिरादरीवालों को एक रात में पिला दी। एक कहार ने सोने-चांदी की कुज्जियों में शराब पिलायी। इस पर एक बूढ़े खुर्राट ने कहा–न भाई पंचों, आपन मरजाद न छोड़ब। हमरे बाप यही कुज्जी मां पिहिन। हमरे दादा पिहिन, अब हम कहां के बड़े रईस होइ गयन ! महरा ने सोने-चांदी की प्यालियां मंगवायीं और फकीरों को बांट दीं। दस हजार प्यालियां चांदी की थीं और दस हजार सोने की। जब बादशाह को यह खबर मिली तो हुक्म दिया कि जितने कहार आये हों, सबको एक-एक लहंगा दिलवा दिया जाय। अब इस गयी-गुजरी हालत पर भी जो बात वहां है वह कहीं नहीं है।

सिपाही–आपके मुल्क में सिपाही तो अच्छे-अच्छे होंगे?

खोजी–हमारे मुल्क में एक से एक सिपाही मौजूद हैं। जो हैं अपने वक्त का रुस्तम।

सिपाही–आप भी तो वहां के पहलवान ही मालूम होते हैं।

खोजी–इस वक्त तो सर्दी ने मार डाला है, अब बुढ़ापा आया। जवानी में अलबत्ता मैं भी हाथी की दुम पकड़ लेता था तो हुमस नहीं सकता था। अब न वह शौक, न वह दिल, अब तो फकीरी अख्तियार की।

सिपाही–आपकी शादी भी हुई है?

खोजी–आपने भी वही बात पूछी। फकीर आदमी, शादी हुई न हुई, बराबर के लड़के हैं।

सिपाही–आप कुछ पढ़े-लिखे भी हैं?

खोजी–ऊह, पूछते हैं, पढ़े-लिखे हैं। यहां बिना पढ़े ही आलिम-फाजिल हैं, पढ़ने का मरज नहीं पालते, यह आरजा तो यहीं देखा, अपने यहां तो चंडू चरस, मदक के चरचे रहते हैं। हां, अगले जमाने में पढ़ने-लिखने का भी रिवाज था।

सिपाही–तो आपका मुल्क जाहिलों ही से भरा हुआ है?

खोजी–तुम खुद गंवार हो। हमारे यहां एक-एक पहलवान ऐसे पड़े हैं जो तीन-तीन हजार हाथ जोड़ी के हिलाते हैं। दंडों पर झुक गये तो चार-पांच हजार दंड पेल डाले। गुलचले ऐसे कि अंधेरी रात में सिर्फ आवाज पर तीर लगाया और निशान खाली न गया।

ये बातें करके, खोजी ने अफीम घोली और रूसियों से पीने के लिए कहा। और सबों ने तो इनकार किया, मगर एक मुसाफिर की शामत जो आयी तो उसने एक चुस्की लगायी। जरा देर में नशे ने रंग जमाया तो झूमने लगा। साथियों ने कहकहा लगाया।

खोजी–एक दिन का जिक्र है कि नवाब साहब के यहां हम बैठे गप्पें उड़ा रहे थे। एक मौलवी साहब आए। यहां उस वक्त सरूर डटा हुआ था, हमने अर्ज की, मौलवी साहब, अगर हुक्म हो तो एक प्याली हाजिर करूं। मौलवी ने आंखें नीली-पीली कीं और कहा–कोई मसखरा है बे तू ! मैंने कहा–यार, ईमान से कह दो कि तुमने कभी अफीम पी है या नहीं? मौलवी साहब इतने जामे से बाहर हुए कि मुझे हजारों गालियां सुनाईं। आज बड़ी सर्दी है, हम ठिठुरे जाते हैं।

सिपाही–यह वक्त हवा खाने का है।

खोजी–खुदा की मार इस अक्ल पर। यह वक्त हवा खाने का है? यह वक्त आग तापने का है। हमारे मुल्क के रईस इस वक्त खिड़कियां बंद करके बैठे होंगे ! हवा खाने की अच्छी कही, यहां तो रूह तक कांप रही है और आपको हवा खाने की सूझती है।

सिपाही–एक मुसाफिर ने हमसे कहा था कि हिन्दोस्तान में लोग पुरानी रस्मों के बहुत पाबंद हैं। अब तक पुरानी लकीरें पीटते जाते हैं।

खोजी–तो क्या हमारे बाप-दादे बेवकूफ थे? उनकी रस्मों को जो न माने वह कपूत, जो रस्म जिस तरह पर चली आती है उसी तरह रहेगी।

सिपाही–अगर कोई रस्म खराब हो तो क्या उसमें तरमीम की जरूरत नहीं?

खोजी–लाख जरूरत हो तो क्या, पुरानी रस्मों में कभी तरमीम न करनी चाहिए। क्या वे लोग अहमक थे? एक आप ही बड़े अक्लमंद पैदा हुए !

रूसियों को खोजी की बातों पर बड़ा मजा आया। उन्हें यकीन हो गया कि यह कोई दूसरा आदमी है। आज़ाद का दोस्त नहीं? खोजी को छोड़ दिया और कई दिन के बाद यह कुस्तुनतुनिया पहुंच गए।

इक्यासी

एक दिन दो घड़ी दिन रहे चारों परियां बनाव-चुनाव करके हंस-खेल रही थीं। सिपहआरा का दुपट्टा हवा के झोकों से उड़ा जाता था। जहानारा मोतिए के इत्र में बसी थीं। गेतीआरा का स्याह रेशमी दुपट्टा खूब खिल रहा था।

हुस्नआरा—बहन, यह गरमी के दिन और काला रेशमी दुपट्टा। अब कहने से तो बुरा मानिएगा, जहानारा बहन निखरें तो आज दूल्हा भाई आनेवाले हैं, यह आपने रेशमी दुपट्टा क्या समझ के फड़काया।

अब्बासी—आज चबूतरे पर अच्छी तरह छिड़काव नहीं हुआ।

हीरा—ज़रा बैठकर देखिए, तो कोई दस मशकें तो चबूतरे ही पर डाली होंगी।

एकाएक महरी की छोकरी प्यारी दौड़ती हुई आई और बोली—हुजूर, हमने यह आज बिल्ली पाली है। बड़ी सरकार ने खरीद दी और दो आने महीना बांध दिया। सुबह को हम हलुवा खिलाएंगे। शाम को पेड़ा। उधर सिपहआरा और गेतीआरा गेंद खेलने लगीं तो हुस्नआरा ने कहा, अब रोज गेंद ही खेला करोगी? ऐसा न हो, आज भी अम्मांजान आ जायं।

अब्बासी—हुजूर, गेंद खेलने में कौन-सा ऐब है? दो घड़ी दिल बहलता है। बड़ी सरकार की न कहिए; वह बूढ़ी हुईं, बिगड़ी ही चाहें।

यही बातें हो रही थीं कि शाहजादा हुमायूं फर हाथी पर सवार बगीचे की दीवार से झांकते हुए निकले। सिपहआरा बेगम को गेंद खेलते देखा तो मुस्करा दिये। हाथी तो आगे बढ़ गया, मगर हुस्नआरा को शाहजादे का यों झांकना बुरा लगा। दारोगा को बुलाकर कहा, कल इस दीवार पर दो रद्दे और चढ़ा दो, कोई हाथी पर इधर से निकल जाता है तो बेपरदगी होती है। सौ काम छोड़कर यह काम करो।

जब दारोगा चले गए तो जहानारा ने कहा—सिपहआरा बहन ने इनको इतना ढीठ कर दिया, नहीं शाहजादे हों चाहे खुद बादशाह हों, ऐसी अंधेर-नगरी नहीं है कि जिसका जी चाहे, चला आए।

फिर वही चहल-पहल होने लगी। सिपहआरा और अब्बासी पचीसी खेलने लगीं।

अब्बासी—हुजूर, अबकी हाथ में यह गोट न पीटूं तो अब्बासी नाम न रखूं।

सिपहआरा—वाह। कहीं पीटी न हो।

अब्बासी—या अल्लाह, पचीस पड़ें। अरे! दिए भी तो तीन काने? बाजी खाक में मिल गई।

हुस्नआरा—लेके हरवा न दी हमारी बाजी। बस अब दूर हो।

अब्बासी–ऐ बीवी, मैं क्या करूं ले भला। पांसा वही है लेकिन वक्त ही तो है।

हुस्नआरा–अच्छा बाजी हो ले, तो हम फिर आएं।

सिपहआरा–अब मैं दांव बोलती हूं।

हुस्नआरा–हमसे क्या मतलब, वह जानें, तुम जानो। बोलो अब्बासी !

अब्बासी–हुजूर, जब बाजी सत्यानाश हो गई तब तो हमको मिली और अब हुजूर निकली जाती हैं।

हुस्नआरा–हम नहीं जानते। फिर खेलने क्यों बैठी थीं?

अब्बासी–अच्छा मंजूर है, फेंकिए पांसा।

सिपहआरा–दो महीने की तनख्वाह है, इतना सोच लो।

अब्बासी–ऐ हुजूर, आपकी जूतियों का सदका, कौन बड़ी बात है। फेंकिए तीन काने।

सिपहआरा ने जो पांसा फेंका तो पचीस। दूसरा पचीस, तीस, फिर पचीस, गरज सात पेचें हुईं। बोलीं–ले अब रुपये बाएं हाथ से ढीले कीजिए। महरी, बाजी की संदूकची तो ले आओ, आलमारी के पास रखी है।

हुस्नआरा ने महरी को आंख के इशारे से मना किया। महरी कमरे से बाहर आकर बोली–ऐ हुजूर, कहां है? वहां तो नहीं मिलती।

सिपहआरा–बस जाओ भी, हाथ झुलाती आईं, चलो हम बतावें कहां हैं।

महरी–जो हुजूर बता दें तो और तो लौंडी की हैसियत नहीं है, मगर सेर भर मिठाई हुजूर की नजर करूं।

सिपहआरा महरी को साथ लेकर कमरे की तरफ चली–देखा तो संदूकची नदारद। हैं, यह संदूकची कौन ले गया? महरी ने लाख हंसी जब्त की, मगर जब्त न हो सकी। तब तो सिपहआरा झल्लाईं, यह बात है ! मैं भी कहूं, संदूकची कहां गायब हो गई। तुम्हें कसम है, दे दो।

सिपहआरा फिर नाक सिकोड़ती हुई बाहर आई तो सबने मिलकर कहकहा लगाया। एक ने पूछा–क्यों, संदूकची मिली? दूसरी बोली–हमारा हिस्सा न भूल जाना। हुस्नआरा ने कहा–बहन, दस ही रुपया निकालना। अब्बासी ने कहा–हुजूर, देखिए, हमीं ने जितवा दिया, अब कुछ रिश्वत दीजिए।

महरी–और बीबी, मैं भला काहे को छिपा देती, कुछ मेरी निगाह से जाता था।

सिपहआरा–बस-बस बैठो, चलीं वहां से बड़ी वह बनके।

महरी–अपनी हंसी को क्या करूं, मुझी पर धोखा होता है।

इतने में दरबान ने आवाज दी, सवारियां आई हैं, और ज़रा देर में दो औरतें डोलियों से उतरकर अंदर आईं। एक का नाम था नजीर बेगम, दूसरी का जानी बेगम।

हुस्नआरा–बहुत दिन बाद देखा। मिजाज अच्छा रहा बहन? दुबली क्यों हो इतनी?

नजीर–मांदी थी, बारे खुदा-खुदा करके, अब संभली हूं।

हुस्नआरा–हमने तो सुना भी नहीं। जानी बेगम हमसे कुछ खफा-सी मालूम

होती हैं, खुदा खैर करे !

जानी–बस, बस, जरी मेरी जबान न खुलवाना, उलटे चोर कोतवाल को डांटे। यहां तक आते मेंहदी घिस जाती।

जानी बेगम की बोटी-बोटी फड़कती थी। नजर बेगम भोली-भाली थीं। जानी बेगम ने आते ही कहा, हुस्नआरा आओ, आंख-मूंदी धप खेलें।

जहांनारा–क्या यह कोई खेल है?

जानी–ऐ है, क्या नन्हीं बनी जाती हैं !

नजरी–बस हम तुम्हारी इन्हीं बातों से घबराते हैं। अच्छी बातें न करोगी।

जानी–ऐ, वह निगोड़ी अच्छी बातें कौन-सी होती हैं, सुनें तो सही।

जानी बेगम सिपहआरा के गले में हाथ डालकर बगीचे की तरफ ले गईं तो हुस्नआरा ने कहा–इनके तो मिजाज ही नहीं मिलते।

बड़ी बेगम–बड़ी कल्ला दराज छोकरी है। इसके मियां की जान अजाब में है, हम तो ऐसे को अपने पास भी न आने दें।

हुस्नआरा–नहीं अम्मांजान, यह न फरमाइए, ऐसी नहीं है, मगर हां, जबान नहीं रुकती।

एकाएक जानी बेगम ने आकर कहा–अच्छा बहन, अब रुखसत करो। घर से निकले बड़ी देर हुई।

हुस्नआरा–आज तुम दोनों न जाने पाओगी। अभी आए कितनी देर हुई?

जानी–नजीर बेगम को चाहे न जाने दो, मैं तो जाऊंगी ही। मियां के आने का यही वक्त है। मुझे मियां का जितना डर है, उतना और किसी का नहीं। नजीर की आंखों का तो पानी मर गया है।

नजरी–इसमें क्या शक, तुम बेचारी बड़ी गरीब हो।

इसी तरह आपस में बहुत देर तक हंसी-दिल्लगी होती रही। मगर जानी बेगम ने किसी का कहना ना माना। थोड़ी ही देर में वह उठकर चली गईं।

बयासी

सुरैया बेगम चोरी के बाद बहुत गमगीन रहने लगीं। एक दिन अब्बासी से बोलीं–अब्बासी, दिल को जरा तकसीन नहीं होती। अब हम समझ गए कि जो बात हमारे दिल में है वह हासिल न होगी।

शीशा हाथ आया न हमने कोई सागर पाया,
साकिया ले तेरी महफिल से चले भर पाया।

सारी खुदाई में हमारा कोई नहीं।

अब्बासी ने कहा–बीबी, आज तक मेरी समझ में न आया कि वह, जिसके लिए आप रोया करती हैं, कौन हैं? और यह जो आज़ाद आए थे, यह कौन हैं। एक

दिन बांकी औरत के भेष में आए, एक दिन गोसाईं बनके आए।

सुरैया बेगम ने कुछ जवाब न दिया। दिल ही दिल में सोची कि जैसा किया वैसा पाया। आखिर हुस्नआरा में कौन-सी बात है जो हममें नहीं। फर्क यही है कि वह नेकचलन हैं और मैं बदनाम।

यह सोचकर उनकी आंखें भर आईं, जी भारी हो गया। गाड़ी तैयार कराई और हवा खाने चलीं। रास्ते में सलारू और उसके वकील साहब नजर पड़े। सलारू कह रहा था—जनाब, हम वह नौकर हैं जो बाप बनके मालिक के यहां रहते हैं। आपको हमारी इज्जत करनी चाहिए। इत्तिफाक से वकील साहब की नजर इस गाड़ी पर पड़ी। बोले—खैर, बाप पीछे बन लेना, जरी जाकर देखो तो, इस गाड़ी में कौन सवार है? सलारू ने कहा—हुजूर, मैं फटेहालों हूं, क्या जाऊं ! आप भारी-भरकम आदमी हैं, कपड़े भी अच्छे-अच्छे पहने हैं। आप ही जायं। वकील साहब ने नजदीक आकर कोचवान से पूछा—किसकी गाड़ी है? कोचवान पंजाब का रहनेवाला पठान था। झल्लाकर बोला—तुमसे क्या वास्ता, किसी की गाड़ी है !

सलारू बोले—हां जी, तुमको इससे क्या वास्ता कि किसकी गाड़ी है? हट जाओ रास्ते से। देखते हैं कि सवारियां हैं मगर डटे खड़े हैं। अभी जो कोई उनका अजीज साथ होता तो उतर के इतना ठोकता कि सिट्टी-पिट्टी भूल जाता। तुम वहां खड़े होने वाले कौन हो?

वकील साहब को एक तो यही गुस्सा था कि कोचवान ने डपटा, उस पर सलारू ने पाजी बनाया। लाल-लाल आंखों से घूरकर रह गए, पाते तो खा ही जाते।

सलारू—यह तो न हुआ कि कोचवान को एक डंडा रसीद करते। उलटे मुझ पर बिगड़ रहे हो।

कोचवान चाहता था कि उतरकर वकील साहब की गर्दन नापे, मगर सुरैया बेगम ने कोचवान को रोक लिया और कहा—घर लौट चलो।

बेगम साहब जब घर पहुंचीं तो दारोगा जी ने आकर कहा कि हुजूर, घर से आदमी आया है। मेरा पोता बहुत बीमार है। मुझे हुजूर रुखसत दें। यह लाला खुशवक्तराय मेरे पुराने दोस्त हैं, मेरी एवज काम करेंगे।

सुरैया बेगम ने कहा—जाइए, मगर जल्द आइएगा।

दूसरे दिन सुरैया बेग ने लाला खुशवक्तराय से हिसाब मांगा। लाला साहब पुराने फैशन की दस्तार बांधे, चपकन पहने, हाथ में कलमदान लिए आ पहुंचे।

लाला साहब—हुजूर, बारहों महीने इसी पोशाक में रहता हूं। नवाब साहब के वक्त में उनके दरबारियों की यही पोशाक थी। अब वह जमाना कहां, वह बात कहां, वह लोग कहां। मेरे वालिद 6 रुपया माहवारी तलब पाते थे। मगर बरकत ऐसी थी कि उनके घर के सब लोग बड़े आराम से रहते थे। दरवाजे पर दो दस्ते मुकर्रर थे। बीस जवान। अस्तबल में दो घोड़े। फीलखाने में एक मादा हाथी ! एक जमाना वह था कि दरवाजे पर हाथी झूमता था। अब वह कोने में जान बचाए बैठे हैं।

यह कहते-कहते लाला साहब नवाब साहब की याद करके रोने लगे।

एकाएक महरी ने आकर कहा—हुजूर, आज फिर लुट गए। लाला साहब भी

पगड़ी संभालते हुए चले। सुरैया बेगम झपटी कि चलकर देखें तो, मगर मारे रंज के चलना मुश्किल हो गया। जिस कोठरी में लाला साहब सोए थे। उसमें सेंध लगी है। सेंध देखते ही रोएं खड़े हो गए। रोकर बोलीं—बस अब कमर टूट गई। मुहल्ले में हलचल मच गई। फिर थानेदार साहब आ पहुंचे, तहकीकात होने लगी।

थानेदार—रात को इस कोठरी में कौन सोया था?

लाला साहब—मैं ! ग्यारह बजे से सुबह तक।

थानेदार—तुम्हें किस वक्त मालूम हुआ कि सेंध लगी?

लाला साहब—दिन चढ़े।

थानेदार—बड़े ताज्जुब की बात है कि रात को कोठरी में आदमी सोए, उसके कल्ले पर सेंध दी जाय और उसको जरा भी खबर न हो। आप कितने दिनों से यहां नौकर हैं? आपको पहले कभी न देखा।

लाला साहब—मैं अभी दो ही दिन का नौकर हूं। पहले कैसे देखते।

सुरैया बेगम की रूह कांप रही थी, खुदा ही खैर करे! माल का माल गया और यह कम्बख्त इज्जत का अलग गाहक है। खैर, थानेदार साहब तो तहकीकात करके लंबे हुए। इधर सुरैया बेगम मारे गम के बीमार पड़ गईं। कई दिन तक इलाज होता रहा, मगर कुछ फायदा न हुआ। आखिर एक दिन घबराकर हुस्नआरा को एक खत लिखवाया जिसमें अपनी बेकरारी का रोना रोने के बाद आज़ाद का पता पूछा था और हुस्नआरा को अपने यहां मुलाकात करने के लिए बुलाया था। हुस्नआरा बेगम के पास यह खत पहुंचा तो दंग हो गईं। बहुत सोच-समझकर खत का जवाब लिखा—

''बेगम साहब की खिदमत में आदाब।

आपका खत आया, अफसोस ! तुम भी इसी मरज में गिरफ्तार हो। आपसे मिलने का शौक तो है, मगर आ नहीं सकती, अगर तुम आ जाओ तो दो घड़ी गम-गलत हो। आज़ाद का हाल इतना मालूम है कि रूम की फौज में अफसर हैं। सुरैया बेगम, सच कहती हूं कि अगर बस चलता तो इसी दम तुम्हारे पास जा पहुंचती। मगर खौफ है कि कहीं मुझे लोग ढीठ न समझने लगें।

तुम्हारी
हुस्नआरा'

यह खत लिखकर अब्बासी को दिया। अब्बासी खत लेकर सुरैया बेगम के मकान पर पहुंची, तो देखा कि वह बैठी रो रही हैं।

अब सुनिए कि वकील साहब ने सुरैया बेगम की टोह लगा ली। दंग हो गए कि या खुदा, यह यहां कहां। घर जाकर सलारू से कहा। सलारू ने सोचा, मियां पागल तो हैं ही, किसी औरत पर नजर पड़ी होगी, कह दिया शिब्बोजान हैं। बोला—हुज़ूर, फिर कुछ फिक्र कीजिए। वकील साहब ने फौरन खत लिखा—

''शिब्बोजान, तुम्हारे चले जाने से दिल पर जो कुछ गुजरी, दिल ही जानता है। अफसोस, तुम बड़ी बेमुरव्वत निकलीं। अगर जाना ही था तो मुझसे पूछकर गई होतीं। यह क्या कि बिना कहे-सुने चल दीं, अब खैर इसी में है कि चुपके से चली आओ। जिस तरह किसी को कानों-कान खबर न हुई और तुम चल दीं, उसी तरह

अब भी किसी से कहो न सुनो, चुपचाप चली आओ। तुम खूब जानती हो कि मैं नामी-गिरामी वकील हूं।

तुम्हारा
वकील'

सलारू ने कहा—मियां, खूब गौर करके लिखना और नहीं हम एक बात बतावें। हमको भेज दीजिए, मैं कहूंगा, बीबी, वह तो मालिक हैं, पहले उनके गुलाम से तो बहस कर लो। गो पढ़ा-लिखा नहीं हूं मगर उम्र भर लखनऊ में रहा हूं !

वकील साहब ने सलारू को डांटा और खत में इतना और बढ़ा दिया, अगर चाहूं तो तुमको फंसा दूं। लेकिन मुझसे यह न होगा। हां, अगर तुमने बात न मानी तो हम भी दिक करेंगे।

यह खत लिखकर एक औरत के हाथ सुरैया बेगम के पास भेज दिया। बेगम ने लाला साहब से कहा—जरा यह खत पढ़िए तो। लाला साहब ने खत पढ़कर कहा, यह तो किसी पागल का लिखा मालूम होता है। वह तो खत पढ़कर बाहर चले गए और सुरैया बेगम सोचने लगीं कि अब क्या किया जाए? यह मूजी बेतरह पीछे पड़ा। सवेरे लाला खुशवक्त राय सुरैया बेगम की ड्योढ़ी पर आए तो देखा कि यहां कुहराम मचा हुआ है। सुरैया बेगम और अब्बासी का कहीं पता नहीं। सारा महल छान डाला गया, मगर बेगम साहब का पता न चला। लाला साहब ने घबराकर कहा—जरा अच्छी तरह देखो, शायद दिल्लगी में कहीं छिप रही हों। गरज सारे घर में तलाशी की, मगर बेफायदा।

लाला साहब—यह तो अजीब बात है, आखिर दोनों चली कहां गयीं? जरा असबाब-वसबाब तो देख लो, है या सब ले-देके चल दीं।

लोगों ने देखा कि जेवर का नाम भी न था। जवाहिरात और कीमती कपड़े सब नदारद।

तिरासी

शाहजादा हुमायूं फर भी शादी की तैयारियां करने लगे। सौदागरों की कोठियों में जा-जाकर सामान खरीदना शुरू किया। एक दिन एक नवाब साहब से मुलाकात हो गई। बोले—क्यों हजरत, यह तैयारियां !

शाहजादा—आपके मारे कोई सौदा न खरीदे?

नवाब—जनाब,

चितवनों से ताड़ जाना कोई हमसे सीख जाए।

शाहजादा—आपको यकीन ही न आए तो क्या इलाज?

नवाब—खैर, अब यह फरमाइए, हैदर को पटने से बुलवाइएगा या नहीं? भला दो हफ्ते तक धमा-चौकड़ी रहे। मगर उस्ताद, तायफे नोक के हों। रद्दी कलावंत होंगे

तो हम न आएंगे। बस यह इंतजाम किया जाय कि दो महफिलें हों। एक रईसों के लिए और एक कदरदानों के लिए।

इधर तो यह तैयारियां हो रही थीं, उधर बड़ी बेगम के यहां यह खत पहुंचा कि शाहजादा हुमायूं फर को गुर्दे के दर्द की बीमारी है और दमा भी आता है। कई बार वह जुए की इल्लत में सजा पा चुका है। उसको किसी नशे से परहेज नहीं।

बड़ी बेगम ने यह खत पढ़वा कर सुना तो बहुत घबराईं। मगर हुस्नआरा ने कहा, यह किसी दुश्मन का काम है। आज तक कभी तो सुनते कि हुमायूं फर जुए की इल्लत में पकड़े गए। बड़ी बेगम ने कहा—अच्छा अभी जल्दी न करो। आज डोमिनियां न आएं। कल-परसों देखा जायगा।

दूसरे दिन अब्बासी यह खत लेकर शाहजादा हुमायूं फर के पास गयी। शाहजादा ने खत पढ़ा तो चेहरा सुर्ख हो गया। कुछ देर तक सोचते रहे। तब अपने संदूक से एक खत निकाल कर दोनों की लिखावट मिलायी।

अब्बासी—हुजूर ने दस्तखत पहचान लिया न?

शाहजादा—हां, खूब पहचाना, पर यह बदमाश अपनी शरारत से बाज नहीं आता। अगर हाथ लगा तो ठीक बनाऊंगा कि उम्र भर याद करेगा। लो तुम यह खत भी बेगम साहबा को दिखा देना और दोनों खत वापस ले आना।

यह वही खत था जो शाहजादे की कोठी में आग लगने के बाद आया था।

रात भर शाहजादा को नींद नहीं आई, तरह-तरह के खयाल दिल में आते थे। अभी चारपाई से उठने भी न पाए थे कि भांड़ों का गोल आ पहुंचा। लाला कालीचरन ने जो डयोढ़ी का हिसाब लिखते थे, खिड़की से गर्दन निकालकर कहा—अरे भाई, आज क्या....

इतना कहना था कि भांड़ों ने उन्हें आड़े हाथों लिया। एक बोला—हमें तो सूम मालूम होता है। दूसरे ने कहा—लखनऊ के कुम्हारों के हाथ चूम लेने के काबिल हैं। सचमुच का बनमानुस बनाकर खड़ा कर दिया। तीसरे ने कहा—उस्ताद, दुम की कसर रह गई। चौथा बोला—फिर खुदा और इंसान के काम में इतना फर्क भी न रहे ! लाला साहब झल्लाए तो इन लोगों ने और भी बनाना शुरू किया। चोट करता है, जरा संभले हुए। अब उठा ही चाहता है। तो बोला—भला बताओ तो, यह बनमानुस यहां क्योंकर आया? किसी ने कहा—चिड़ीमार लाया है। किसी ने कहा—रास्ता भूलकर बस्ती की तरफ निकल आया है। आखिर एक अशर्फी देकर भांड़ों से नजात मिली।

दूसरे दिन शाहजादा सुबह के वक्त उठे तो देखा कि एक खत सिरहाने रखा है। खत पढ़ा तो दंग रह गए।

"सुनो जी, तुम बादशाह के लड़के हो और हम भी रईस के बेटे हैं। हमारे रास्ते में न पड़ो, नहीं तो बुरा होगा ! एक दिन आग लगा चुका हूं, अगर सिपहआरा के साथ तुम्हारी शादी हुई तो जान ले लूंगा। जिस रोज से मैंने यह खबर सुनी है, यही जी चाह रहा है कि छुरी लेकर पहुंचूं और दम के दम में काम तमाम कर दूं। याद रखो कि मैं बेचोट किए न रहूंगा।"

शाहजादा हुमायूं फर उसी वक्त साहब-जिला की कोठी पर गए और सारा किस्सा

कहा। साहब ने खुफिया पुलिस के एक अफसर को इस मामले की तहकीकात करने का हुक्म दिया।

साहब से रुखसत होकर वह घर आए तो देखा कि उनके पुराने दोस्त हाजी साहब बैठे हुए हैं। यह हजरत एक ही घाघ थे, आलिमों से भी मुलाकात थीं, बांकों से भी मिलते-जुलते रहते थे। शाहजादा ने उनसे भी इस खत का जिक्र किया। हाजी साहब ने वादा किया कि हम इस बदमाश का जरूर पता लगाएंगे।

शहसवार ने इधर तो हुमायूं फर को कत्ल करने की धमकी दी, उधर एक तहसीलदार साहब के नाम सरकारी परवाना भेजा। आदमी ने जाकर दस बजे रात को तहसीलदार को जगाया और यह परवाना दिया—

"आपको कलमी होता है कि मुबलिग पांच हजार रुपया अपनी तहसील के खजाने से लेकर, आज रात को कालीडीह के मुकाम पर हाजिर हों। अगर आपको फुरसत न हो तो पेशकार को भेजिए, ताकीद जानिए।"

तहसीलदार ने खजांची को बुलाया, रुपया लिया, गाड़ी पर रुपया लदवाया और चार चपरासियों को साथ लेकर कालीडीह चले। वह गांव यहां से दो कोस पर था। रास्ते में एक घना जंगल पड़ता था। बस्ती का कहीं नाम नहीं। जब उस मुकाम पर पहुंचे तो एक छोलदारी मिली। वहां जाकर पूछा—क्या साहब सोते हैं?

सिपाही—साहब ने अभी चाय पी है। आज रात भर लिखेंगे। किसी से मिल नहीं सकते।

तहसीलदार—तुम इतना कह दो कि तहसीलदार रुपया लेकर हाजिर है।

चपरासी ने छोलदारी में जाकर इत्तला की। साहब ने कहा, बुलाओ। तहसीलदार साहब अंदर गए तो एक आदमी ने उनका मुंह जोर से दबा दिया और कई आदमी उन पर टूट पड़े। सामने एक आदमी अंगरेजी कपड़े पहने बैठा है। तहसीलदार खूब जकड़ दिए गए तो वह मुस्किराकर बोला—वेल तहसीलदार ! तुम रुपया लाया, अब मत बोलना। तुम बोला और मैंने गोली मारी। तुम हमको अपना साहब समझो।

तहसीलदार—हुजूर को अपने साहब से बढ़कर समझता हूं, वह अगर नाराज होंगे तो दरजा घटा देंगे। आप तो छुरी से बात करेंगे।

शहसवार ने तहसीलदार को चकमा देकर रुखसत किया और अपने साथियों में डींग मारने लगा—देखा, इस तरह यार लोग चकमा देते हैं। साथी लोग हां में हां मिला रहे थे कि इतने में एक गंधी तेल की कुप्पियां और बोतलें लटकाए छोलदारी के पास आया और बोला—हुजूर, सलाम करता हूं। आज सौदा बेचने जरा दूर निकल गया था, लौटने में देर हो गई। आगे घना जंगल है, अगर हुक्म हो तो यहीं रह जाऊं?

शहसवार—किस-किस चीज का इत्र है? जरा मोतिए का तो दिखाओ।

गंधी—हुजूर, अव्वल नंबर का मोतिया है, ऐसा शहर में मिलेगा नहीं।

शहसवार ने ज्यों ही इत्र लेने के लिए हाथ बढ़ाया, गंधी ने सीटी बजाई और सीटी का आवाज सुनते ही पचास-साठ कांस्टेबिल इधर-उधर से निकल पड़े और शहसवार को गिरफ्तार कर लिया। यह गंधी न था, इंस्पेक्टर था, जिसे हाकिम-जिला

ने शहसवार का पता लगाने के लिए तैनात किया था।

मियां शहसवार जब इंस्पेक्टर के साथ चले तो रास्ते में उन्हें ललकारने लगे। अच्छा बचा, देखो तो सही, जाते कहां हो।

इंस्पेक्टर–हिस्स ! चोर के पांव कितने, चौदह बरस को जाओगे।

शहसवार–सुनो मियां, हमारे काटे का मंत्र नहीं, जरा जबान को लगाम दो, वर्ना आज के दसवें दिन तुम्हारा पता न होगा।

इंस्पेक्टर–पहले अपनी फिक्र तो करो।

शहसवार–हम कह देंगे कि इस इंस्पेक्टर की हमसे अदावत है।

इंस्पेक्टर–अजी, कुढ़-कुढ़ कर जेलखाने में मरोगे।

चौरासी

इधर बड़ी बेगम के यहां शादी की तैयारियां हो रही थीं। डोमिनियों का गाना हो रहा था। उधर शाहजादा हुमायूं फर एक दिन दरिया की सैर करने गए। घटा छाई हुई थी। हवा जोरों के साथ चल रही थी। शाम होते-होते आंधी आ गई और किश्ती दरिया में चक्कर खाकर डूब गई। मल्लाह ने किश्ती के बचाने की बहुत कोशिश की, मगर मौत से किसी का क्या बस चलता है। घर पर यह खबर आई तो कुहराम मच गया। अभी कल की बात है कि दरवाजे पर भांड मुबारकबाद गा रहे थे, आज बैन हो रहा है, कल हुमायूं फर जामे में फूले नहीं समाते थे कि दूल्हा बनेंगे, आज दरिया में गोते खाते हैं। किसी तरफ से आवाज आती है–हाय मेरे बच्चे ! कोई कहता है–हैं, मेरे लाल को क्या हुआ। रोने वाला घर भर और समझाने वाला कोई नहीं। हुमायूं फर की मां रो-रोकर कहती थीं, हाय ! मैं दुखिया इसी दिन के लिए अब तक जीती रही कि अपने बच्चे की मय्यत देखूं। अभी तो मसें भी नहीं भीगने पाई थीं कि तमाम बदन दरिया में भीग गया। बहन रोती थी, मेरे भैया, जरी आंख तो खोलो। हाय, जिन हाथों से मैंने मेंहदी रची थी उनसे अब सिर और छाती पीटती हूं। कल समझते थे कि परसों बरात सजेगी, खुशियां मनाएंगे और आज मातम कर रहे हैं। उठो, अम्मांजान तुम्हारे सिरहाने खड़ी रो रही हैं।

यहां तो रोना-पीटना मचा हुआ था, वहां बड़ी बेगम ने ज्योंही खबर पाई, आंखों से आंसू जारी हो गए। अब्बासी ने कहा–जाकर लड़कियों से कह दे कि नीचे बाग में टहलें। कोठे पर न जायं। अब्बासी ने जाकर यह बात कुछ इस तरह कही की चारों बहनों में कोई न समझ सकीं। मगर जहानारा ताड़ गई। उठ कर अंदर गई तो बड़ी बेगम को रोते देखा। बोली–अम्मांजान, साफ-साफ बताओ।

बड़ी बेगम–क्या बताऊं बेटी, हुमायूं फर चल बसे।

जहानारा–अरे !

बड़ी बेगम–चुप-चुप, सिपहआरा न सुनने पाए। मैंने गाड़ी तैयार होने का हुक्म

दिया है, चलो बाग को चलें, तुम जरा भी जिक्र न करना।

जहानारा–हाय अम्मीजान, यह क्या हुआ?

बड़ी बेगम–खुदा के वास्ते बेटी, चुप रहो, बड़ा बुरा वक्त जाता है।

जहानारा–उफ, जी घबराता है, हमको न ले चलिए, नहीं सिपहआरा समझ जायंगी। हमसे रोना जब्त न हो सकेगा, कहा मानिए, हमको न ले चलिए।

बड़ी बेगम–यहां इतने बड़े मकान में अकेली कैसे रहोगी?

जहानारा–यह मंजूर है, मगर जब्त मुमकिन नहीं।

सबकी सब दिल में खुश थीं कि बाग की सैर करेंगे; मगर यह खबर ही न थी कि बड़ी बेगम किस सबब से बाग लिए जाती हैं। चारों बहनें पालकी गाड़ी पर सवार हुईं और आपस में मजे-मजे की बातें करती हुई चलीं। मगर अब्बासी और जहानारा के दिल पर बिजलियां गिरती थीं। बाग में पहुंचकर जहानारा ने सिर-दर्द का बहाना किया और लेट रहीं, चारों बहनें चमन की सैर करने लगीं। सिपहआरा ने मौका पाकर कहा–अब्बासी, एक दिन हम और शाहजादे इस बाग में टहल रहे होंगे। निकाह हुआ और हम उनको बाग में ले आए। हम पांच रोज यहां ही रहेंगे। अब्बासी की आंखों से बेअख्तियार आंसू निकल पड़े। दिल में कहने लगी, किधर खयाल है, कैसा निकाह और कैसी शादी? वहां जनाजे और कफन की तैयारियां हो रही होंगी।

एकाएक सिपहआरा ने कहा–बहन, हिचकियां आने लगीं।

हुस्नआरा–कोई याद कर रहा होगा।

अब सुनिए कि उसी बाग के पास एक शाह साहब का तकिया था जिसमें कई शाहजादों और रईसों की कब्रें थीं। हुमायूं फर का जनाजा भी उसी तकिये में गया, हजारों आदमी साथ थे। बाग के एक बुर्ज से बहनों ने इस जनाजे को देखा तो सिपहआरा बोली–बाजीजान, किससे पूछें कि यह किस बेचारे का जनाजा है। खुदा उसको बख्शे।

हुस्नआरा–ओफ ओह ! सारा शहर साथ है। अल्लाह, यह कौन मर गया, किससे पूछें?

अब्बासी–हुजूर, जाने भी दें, रात के वक्त लाश न देखें।

हुस्नआरा–नहीं, गुलाब माली से कहो, अभी-अभी पूछे।

अब्बासी थरथर कांपने लगी। गुलाब माली के कान में कुछ कहा। वह बाग का फाटक खोलकर बाहर गया, लोगों से पूछा। फिर दोनों में कानाफूसी हुई। इसके बाद अब्बासी ने ऊपर जाकर कहा। हुजूर, कोई रईस थे। बहुत दिनों से बीमार थे। यहां कजा आ पहुंची।

गेतीआरा–कुछ ठिकाना है ! आदमियों का कहां से कहां तक तांता लगा हुआ है।

सिपहआरा–खुदा जाने, जवान था या बूढ़ा?

अब्बासी ने बड़ी बेगम से जाकर जनाजे का हाल कहा तो उन्होंने सिर पीट कर कहा–तुम्हें हमारी कसम है जो उलटे पांव न चली जाओ।

हुस्नआरा–अम्मांजान, आप नाहक घबराती हैं, आखिर यहां खड़े रहने में क्या डर है?

बड़ी बेगम–अच्छा, तुमको इससे क्या मतलब?

सिपहआरा–किसी का जनाजा जाता है। लाखों आदमी साथ हैं।

हुस्नआरा–खुदा जाने, कौन था बेचारा?

बड़ी बेगम–अल्लाह के वास्ते चली जाओ !

जहानारा–इतनी कसमें देती जाती हैं और कोई सुनता ही नहीं।

सिपहआरा–बाजी, सुनिए, कैसी दर्दनाक गजल है ! खुदा जाने कौन गा रहा है।

शबे फिराक है और आंधियां हैं आहों की;
चिराग की मेरे जुलमत कदे में बार नहीं।
ज़मीन प्यार से मुझको गले लगाती है;
अज़ाब है यह दिला गोर से फिशार नहीं।
पस अज़ फिना भी किसी तौर से करार नहीं;
मिला बहिश्त तो कहता हूं कूय यार नहीं।

अब्बासी–कोई बूढ़ा आदमी था।

सिपहआरा–तो फिर क्या गम !

बड़ी बेगम–तो फिर जितने बूढ़े मर्द और बूढ़ी औरतें हों, सबको मर जाना चाहिए?

सिपहआरा–ऐसी बातें न कहिए, अम्मांजान !

हुस्नआरा–बूढ़े और जवान सबको मरना है एक दिन।

बड़ी बेगम और सिपहआरा नीचे चली गईं। हुस्नआरा भी जा रही थीं कि कब्रिस्तान से आवाज आई–हाय हुमायूं फर, तुमसे इस दगा की उम्मेद न थी।

हुस्नआरा–ऐं अब्बासी, यह किसका नाम लिया?

अब्बासी–हुजूर, बहादुर मिरजा कहा, कोई बहादुर मिरजा होंगे।

हुस्नआरा–हां, हमीं को धोखा हुआ। पांव-तले से जमीन निकल गई।

जब तीनों बहनें नीचे पहुंच गईं, तो बड़ी बेगम ने कहा- आखिर तुम्हारे मिजाज में इतनी जिद क्यों है?

हुस्नआरा–अम्मांजान, वहां बड़ी ठंडी हवा थी।

बड़ी बेगम–मुरदा वहां आया हुआ है और इस वक्त, भला सोचो तो।

सिपहआरा–फिर इससे क्या होता है?

बड़ी बेगम–चलो बैठो, होता क्या है !

तीनों बहनें लेटीं तो सिपहआरा को नींद आ गई, मगर हुस्नआरा और गेतीआरा की आंख न लगी। बातें करने लगीं।

हुस्नआरा–क्या जाने, कौन बेचारा था?

गेतीआरा–कोई उसके घर वालों के दिल से पूछे।

हुस्नआरा–कोई बड़ा शाहजादा था !

गेतीआरा–हमें तो इस वक्त चारों तरफ मौत की शक्ल नजर आती है।

हुस्नआरा–क्या जाने, अकेले थे या लड़के वाले भी थे।

गेतीआरा–खुदा जाने, मगर था अभी जवान।

हुस्नआरा–देखो बहन, सैकड़ों आदमी जमा हैं, मगर कैसा सन्नाटा है ! जो है, ठंडी सांसें भरता है !

इतने में सिपहआरा भी जाग पड़ीं ! बोलीं–कुछ मालूम हुआ बाजीजान, इस बेचारे की शादी हुई थी कि नहीं? जो शादी हुई होगी तो सितम है।

हुस्नआरा–खुदा न करे कि किसी पर ऐसी मुसीबत आए।

सिपहआरा–बेचारी बेवा अपने दिल में न जाने क्या सोचती होगी?

हुस्नआरा–इसके सिवा और क्या सोचती होगी कि मर मिटे !

रात को सिपहआरा ने ख्वाब में देखा कि हुमायूं फर बैठे उनसे बातें कर रहे हैं।

हुमायूं–खुदा का हजार शुक्र है कि आज यह दिन दिखाया, याद है, हम तुमसे गले मिले थे?

सिपहआरा–बहुरूपिये के भी कान काटे !

हुमायूं–याद है, जब हमने महताबी पर कनकौआ ढाया था?

सिपहआरा–एक ही जात शरीफ हैं आप।

हुमायूं–अच्छा, तुम यह बताओ कि दुनिया में सबसे ज्यादा खुशनसीब कौन है?

सिपहआरा–हम !

हुमायूं–और जो मैं मर जाऊं तो तुम क्या करो?

इतना कहते-कहते हुमायूं फर के चेहरे पर जर्दी छा गई और आंखें उलट गईं। सिपहआरा एक चीख मारकर रोने लगीं। बड़ी बेगम और हुस्नआरा चीख सुनते ही घबराई हुई सिपहआरा के पास आईं। बड़ी बेगम ने पूछा–क्या है बेटी, तुम चिल्लाईं क्यों?

अब्बासी–ऐ हुजूर, जरी आंख खोलिए।

बड़ी बेगम–बेटा, आंख खोल दो।

बड़ी मुश्किल से सिपहआरा की आंखें खुलीं। मगर अभी कुछ कहने भी न पाई थीं कि किसी ने बागीचे की दीवार के पास रोकर कहा–हाय शाहजादा हुमायूं फर !

सिपहआरा ने रोकर कहा–अम्मीजान, यह क्या हो गया ! मेरा तो कलेजा उलटा जाता है।

दीवार के पास से फिर-आवाज आई–हाय हुमायूं फर ! क्या मौत को तुम पर जरा भी रहम न आया?

सिपहआरा–अरे, क्या यह मेरे हुमायूं फर हैं !! या खुदा, यह क्या हुआ अम्मीजान !

बड़ी बेगम–बेटी सब्र करो, खुदा के वास्ते सब्र करो।

सिपहआरा–हाय, कोई हमें प्यारे शाहजादे की लाश दिखा दो।

बड़ी बेगम–बेटा, मैं तुम्हें समझाऊं कि इस सिन में तुम पर यह मुसीबत पड़ी और तुम मुझे समझाओ कि इस बुढ़ापे में यह दिन देखना पड़ा।

सिपहआरा–हाय, हमें शाहजादे की लाश दिखा दो। अम्मीजान, अब सब्र की ताकत नहीं रही, मुझे जाने दो, खुदा के लिए मत रोको, अब शर्म कैसी और हिजाब किसके लिए?

बड़ी बेगम–बेटी, जरा दिल को मजबूत रखो, खुदा की मर्जी में इनसान को क्या दखल !

सिपहआरा–क्या कहती हैं आप अम्मीजान, दिल कहां है, दिल का तो कहीं पता ही नहीं। यहां तो रूह तक पिघल गई।

बड़ी बेगम–बेटी, खूब खुल कर रो लो। मैं नसीबो-जली यही दिन देखने के लिए बैठी थी !

सिपहआरा–आंसू नहीं हैं अम्मीजान, रोऊं कैसे? बदन में जान ही नहीं रही, बाजीजान को बुला दो। इस वक्त वह भी मुझे छोड़कर चल दीं?

हुस्नआरा अलग जाकर रो रही थीं। आईं, मगर खामोश। न रोईं, न सिर पीटा, आकर बहन के पलंग के पास बैठ गईं।

सिपहआरा–बाजी, चुप क्यों हो ! हमें तकसीन तक नहीं देतीं वाह !

हुस्नआरा–खामोश बैठ रहीं, हां, सिर उठाकर सिपहआरा पर नजर डाली।

इतने में रूहअफजा भी आ गईं, उन्होंने मारे गम के दीवार पर सिर पटक दिया था। सिपहआरा ने पूछा–बहन, यह पट्टी कैसी बंधी है?

रूहअफजा–कुछ नहीं, यों ही।

सिपहआरा–कहीं सिर-विर तो नहीं फोड़ा? अम्मांजान, अब दिल नहीं मानता खुदा के लिए हमें लाश दिखा दो। क्यों अम्मांजान; शाहजादे की मां की क्या हालत होगी?

बड़ी बेगम–क्या बताऊं बेटी–

औलाद किसी की न जुदा होवे किसी से–
बेटी, कोई इस दाग को पूछे मेरे जी से !

इतने में एक आदमी ने आकर कहा कि हुमायूं फर की मां रो रही हैं और कहती हैं कि दुलहिन को लाश के करीब लाओ। हुमायूं फर की रूह खुश होगी। बड़ी बेगम ने कहा–सोच लो, ऐसा कभी हुआ नहीं है; ऐसा न हो कि मेरी बेटी डर जाय, उसका तो और दिल बहलाना चाहिए, न कि लाश दिखाना। और लोगों से पूछो, उनकी क्या राय है। मेरे तो हाथ-पांव फूल गए हैं।

आखिर यह राय तय पाई कि दुलहिन लाश पर जरूर जायं।

सिपहआरा चलने का तैयार हो गईं।

बड़ी बेगम–बेटे, अब मैं क्या कहूं, तुम्हारी जो मर्जी हो वह करो।

सिपहआरा–बस, हमें लाश दिखा दो, फिर हम कोई तकलीफ न देंगे।

बड़ी बेगम–अच्छा जाओ, मगर इतना याद रखना कि जो मरा वह जिंदा नहीं हो सकता।

सिपहआरा ने अब्बासी को हुक्म दिया कि जाकर संदूक लाओ। संदूक आया तो सिपहआरा ने अपना कीमती जोड़ा निकला, सुहाग का इत्र मला, कीमती दुपट्टा

ओढ़ा जिसमें मोतियों की बेल लगी हुई थी। सिर पर जड़ाऊ छपका, जड़ाऊ टीका, चोटी में सीसफूल, नाक में नथ, जिसके मोतियों की कीमत अच्छे-अच्छे जौहरी न लगा सकें, कानों में पत्ते, बालियां, बिजलियां, करनफूल, गले में मोतियों की माला, तौक, चंदनहार, चंपाकली, हाथों में कंगन, चूड़ियां, पोर-पोर छल्ले, पांव में पायजेब, छागल। इस तरह सोलहों सिंगार करके वह बड़ी बेगम और अब्बासी के साथ पालकी गाड़ी में सवार हुईं। शहर में धूम मच गई थी कि दुलहिन दूल्हा की लाश पर जाती हैं। शाहजादे की मां को इत्तला दी गई कि दुलहिन आती हैं। जरा देर में गाड़ी पहुंच गई। हजारों आदमियों ने छाती पीटना शुरू किया। सिपहआरा ने गाड़ी से उतरते ही लाश को छाती से लगाया और उसके सिरहाने बैठकर ऊंची आवाज से कहा–प्यारे, शाहजादे, जरी आंख खोलकर मुस्करा दो। बस, दो दिन हंसाकर उम्र भर रुलाओगे? जरा अपनी दुलहिन को तो आंख भरके देख लो। क्यों जी, यही मुहब्बत थी, इसी दिन के लिए दिल मिलाया था?

शाहजादे की मां ने सिपहआरा को छाती से लगाकर कहा–बेटी, हुमायूं फर तुम्हारे बड़े दुश्मन निकले। हाय, यह अंधेर भी कहीं होता है कि दुलहिन लाश पर आए। निकाह के वक्त वकील और गवाह तो दूर रहे, दूसरा मुकदमा छिड़ गया।

सिपहआरा ने अपनी मां की तरफ देखकर कहा–अम्मांजान, आपने हमारे साथ बड़ी दुश्मनी की। पहले ही शादी कर देतीं तो यों नामूराद तो न जाती।

इधर तो यह कुहराम मचा हुआ था, उधर शहर के बेफिक्रे अपनी खिचड़ी अलग ही पकाते थे।

एक औरत–आज जब घर से निकली थी तो काने आदमी का मुंह देखा था। इधर डोली में पांव गयां और उधर पट से छींक पड़ी।

दूसरा आदमी–अजी बीबी, न कुछ छींक से होता है, न किसी से, 'करम-लेख नहिं मिटै करै कोई लाखन चतुराई।' किस्मत के लिखे को कोई भी आज तक मिटा सका है? देखिए, करोड़ों रुपये घर में भरे हैं, मगर किस काम के !

मौलवी–मियां, दुनिया के यही कारखाने हैं, इनसान को चाहिए कि किसी से न झगड़े, न किसी से फसाद करे, बस खुदा की याद करता रहे।

एक बुढ़िया–सुनते हैं कि दो-तीन दिन से रात को बुरे-बुरे ख्वाब देखते थे।

मौलवी–हम इसके कायल नहीं, ख्वाब क्या चीज है ।

सिपहआरा को इस वक्त वह दिन याद आया, जब शाहजादा हुमायूं फर अपनी बहन बनकर उनसे गले मिलने गए। एक वह दिन था और एक आज का दिन है। हमने उस हुमायूं फर को बुरा-भला क्यों कहा था?

बड़ी बेगम ने कहा–बेटी, अब जरी बैठ जाओ, दम ले लो।

अब्बासी–हुजूर, इस मर्ज का तो इलाज ही नहीं है।

सिपहआरा–दवा हर मर्ज की है ! इस मर्ज की दवा भी सब्र ही है। सब्र ही ने हमें इस काबिल किया कि हुमायूं फर की लाश अपनी आंखों देख रहे हैं !

जब लोगों ने देखा कि सिपहआरा की हालत खराब होती जाती है तो उन्हें

लाश के पास से हटा ले गए। गाड़ी पर सवार किया और घर ले गए।

गाड़ी मे बैठकर सिपहआरा रोने लगीं और बेगम से बोलीं—अम्मांजान, अब हमें कहां लिए चलती हो?

बड़ी बेगम—बेटी, मैं क्या करूं, हाय !

सिपहआरा—अम्मांजान, करोगी क्या, मैंने क्या कर लिया?

अब्बासी—हमारी किस्मत फूट गई, शादी का दिन देखना नसीब में लिखा ही न था। आज के दिन और हम मातम करें !

सिपहआरा—अम्मांजान, इस वक्त बेचारा कहां होगा?

बड़ी बेगम—बेटी, खुदा के कारखाने में किसी को दखल है?

पचासी

एक पुरानी, मगर उजाड़ बस्ती में कुछ दिनों से दो औरतों ने रहना शुरू किया है। एक का नाम फीरोजा है, दूसरी का फरखुंदा। इस गांव में कोई डेढ़ हजार घर आबाद होंगे, मगर उन सबमें दो ठाकुरों के मकान आलीशान थे। फीरोजा का मकान छोटा था, मगर बहुत खुशनुमा। वह जवान औरत थी, कपड़े-लत्ते भी साफ-सुथरे पहनती थी, लेकिन उसकी बातचीत से उदासी पायी जाती थी। फरखुंदा इतनी हसीन तो न थी, मगर खुशमिजाज थी। गांववालों को हैरत थी कि यह दोनों औरतें इस गांव में कैसे आ गयीं और कोई मर्द भी साथ नहीं ! उनके बारे में लोग तरह-तरह की बातें किया करते थे। गांव की सिर्फ दो औरतें उनके पास जाती थीं, एक तंबोलिन, दूसरी बेलदारिन। यार लोग टोह में थे कि यहां का कुछ भेद खुले, मगर कुछ पता न चलता था। तंबोलिन और बेलदारिन से पूछते थे तो वह भी आंय-बांय-सांय उड़ा देती थीं।

एक दिन उस गांव में एक कांस्टेबिल आ निकला। आते ही एक बनिए से शक्कर मांगी। उसने कहा—शक्कर नहीं, गुड़ है। कांस्टेबिल ने आव देखा न ताव, गाली दे बैठा। बनिए ने कहा—जबान पर लगाम दो। गाली जबान से न निकालो। इतना सुनना था कि कांस्टेबिल ने बढ़कर दो घूंसे लगाए और दूकान की चीजें फेंक-फांक दी। सामनेवाला दूकानदार मारे डर के शक्कर ले आया, तब हजरत ने कहा—काली मिर्च लाओ। वह बेचारा काली मिर्च भी लाया। तब आपने दो लोटे शरबत के पीए और कुएं की जगत पर लेटकर एक लाला जी को पुकारा—ओ लाला, सराफी पीछे करना; पहले एक चादर तो दे जाओ। लाला बोले—हमारे पास और कोई बिछौना नहीं है, बस एक बिस्तरा है। कांस्टेबिल उठकर दूकान पर गया। चादर उठा ली और कुएं की जगत पर बिछाकर लेटा। लाला बेचारे मुंह ताकने लगे। अभी हजरत सो रहे थे कि एक औरत पानी भरने आई। आपने पांव की आहट जो पाई तो चौंक उठे और गुल मचा कर बोले—अलग हट, चली वहां से घड़ा सिर पर लिए पानी भरने ! सूझता

नहीं, कौन लेटा है, कौन बैठा है? इस पर एक आदमी ने कहा, वाह ! तुम तो कुएं के मालिक बन बैठे ! अब तुम्हारे मारे कोई पानी न भरे? दूसरा बोला–सराफ की दूकान से चादर लाए, मुफ्त में शक्कर ली और डपट रहे हैं।

एक ठाकुर साहब टट्टू पर सवार चले जाते थे। इन लोगों की बातें सुनकर बोले–साहब को एक अर्जी दे दो, बस सारी शेखी किरकिरी हो जाय।

कांस्टेबिल ने ललकारा–रोक ले टट्टू। हम चालान करेंगे।

ठाकुर–क्यों रोक लें, हम अपनी राह जा रहे हैं, तुमसे मतलब?

ठाकुर–तो जुल्मी कहां है? हम ऐसे-वैसे ठाकुर नहीं हैं, हमसे बहुत रोब न जमाना।

इतने में दो-एक आदमियों ने आकर दोनों को समझाया–भाई, जवान, छोड़ दो, इज्जतदार आदमी हैं। इस गांव के ठाकुर हैं, उनको बेइज्जत न करो।

इधर ठाकुर को समझाया कि रुपया-अधेली ले-देकर अलग करो, कहां की झंझट लगाई है। मुफ्त में चालान कर देगा तो गांव भर में हंसी होगी। कुछ यह समझे कुछ वह समझे। अठन्नी निकालकर कांस्टेबिल की नजर की, तब जाकर पीछा छूटा।

अब तो गांव में और भी धाक बंध गई। पनभरनियां मारे डर के पानी भरने न आईं, यह इधर-उधर ललकारने लगे। गल्ले की चंद गाड़ियां सामने से गुजरीं। आपने ललकारा, रोक ले गाड़ी। क्यों बे पटरी से नहीं जाता, सड़क तो साहब लोगों के लिए है। एक गाड़ीवान ने कहा–अच्छा साहब, पटरी पर किए देते हैं। आपने उठकर एक तमाचा लगा दिया और बोले, और सुनो, एक तो जुर्म करें, दूसरे टर्रायें। सब के सब दंग हो गए कि टर्राया कौन, उस बेचारे ने तो इनके हुक्म की तामील की थी। हलवाई से कहा–हमको सेर भर पूरी तौल दो। वह भी कांप रहा था कि देखें, कब शामत आती है, कहा, अभी लाया। तब आप बोले कि आलू की तरकारी है? वह बोला, आलू तो हमारे पास नहीं है, मगर उस खेत से खुदवा लाओ तो सब मामला ठीक हो जाए। कहने भर की देर थी। आप जाकर किसान से बोले–अरे, एक आध सेर आलू खोद दे। उसकी शामत जो आई तो बोला–साहब, चार आने सेर होई, चाहे लेव चाहे न लेव। समझ लो। आपने कहा, अच्छा भाई लाओ, मगर बड़े-बड़े हों।

किसान आलू लाया। तरकारी बनी, जब आप चलने लगे तो किसान ने पैसे मांगे। इसके जवाब में आपने उसे गरीब को पीटना शुरू किया।

किसान–सेर भर आलू लिहिस पैसान दिहिस, और ऊपर से मारत है।

मुराइन–और अलई कै पलवा बकत है, राम करै, देवी-भवानी खा जाएं।

लोगों ने किसान को समझाया कि सरकारी आदमी के मुंह क्यों लगते हो। जो कुछ हुआ सो हुआ, अब इन्हें दो सेर आलू ला दो। किसान आलू खोद लाया। आपने उसे रूमाल में बांधा और आठ पैसे निकालकर हलवाई को देने लगे।

हलवाई–यह भी रहने दो, पान खा लेना।

कांस्टेबिल–खुशी तुम्हारी। आलू तो हमारे ही थे।

हलवाई–बस, अब सब आप ही का है।

कांस्टेबिल ने खा-पीकर लंबी तानी तो दो घंटे तक सोया किए। जब उठे तो पसीने में तर थे। एक गंवार को बुलाकर कहा–पंखा झल ! वह बेचारा पंखा झलने लगा। जब आप गफिल हुए तो उसने उनकी लुटिया और लकड़ी उठाई और चलता धंधा किया। यह उनके भी उस्ताद निकले।

जमादार की आंख खुली तो पंखा झलनेवाले का कहीं पता नहीं। इधर-उधर देखा तो लुटिया गायब। लाठी नदारद। लोगों से पूछा, धमकाया, डराया, मगर किसी ने न सुना। और बताए कौन? सबके सब तो जले बैठे थे। तब आपने चौकीदारों को बुलाया और धमकाने लगे। फिर सबों को लेकर गांव के ठाकुर के पास गए और कहा–इसी दम दौड़ आएगी। गांव भर को फूंक दिया जायगा, नहीं तो अपने आदमियों से पता लगवाओ।

ठाकुर–ले अब हम कस-कस उपाव करी। चोर का कहां ढूंढी?

जमादार–हम नहीं जानता। ठाकुर होकर के एक चोर का पता नहीं लगा सकता।

ठाकुर–तुमहू तो पुलीस के नौकर हो। ढूंढ निकालो।

ठाकुर साहब से लोगों ने कहा–यह सिपाही बड़ा शैतान है। आप साहब को लिख भेजिए कि हमारी रिआया को सताता है। बस, यह मौकूफ हो जाय। ठाकुर बोले–हम सरकारी आदमियों से बतबढ़ाव नहीं करते। कांस्टेबिल को तीन रुपये देकर दरवाजे से टाला।

जमादार साहब यहां से खुश-खुश चले तो एक घोसी की लड़की से छेड़छाड़ करने लगे। उसने जाकर अपने बाप से कह दिया। वह पहलवान था, लंगोट बांध कर आया और जमादार साहब को पटक कर खूब पीटा

बहुत से आदमी खड़े तमाशा देख रहे थे। जमादार ने चूं तक न की, चुपके से झाड़-पोंछ उठकर खड़े हुए और गांव की दूसरी तरफ चले। इत्तिफाक से फीरोजा अपनी छत पर खड़ी बाल सुलझा रही थी। जमादार की नजर पड़ी तो हैरत हुई। बोले–अरे, यह किसका मकान है? कोई है इसमें?

पड़ोसी–इस मकान में एक बेगम रहती हैं। इस वक्त कोई मर्द नहीं है।

जमादार–तू कौन है? बता इसमें कौन रहता है? और मकान किसका है?

पड़ोसी–मकान तो एक अहीर का है, मुल इसमें एक बेगम टिकी हैं।

जमादार–कहो, दरवाजे पर आवें। बुला लाओ।

पड़ोसी–वाह, वह परदेवाली हैं। दरवाजे पर न आएंगी।

जमादार–क्या ! परदा कैसा? बुलाता है कि घुस जाऊं घर में? परदा लिए फिरता है !

फीरोजा के होश उड़ गए। फरखुंदा से बोली–अब गजब हो गया। भाग के यहां आई थी, मगर यहां भी वही बला सिर पर आई।

फरखुंदा–इसको कहां से खबर हुई?

फीरोजा–क्या बताऊं? इस वक्त कौन इससे सवाल-जवाब करेगा?

फरखुंदा–देखिए, पड़ोसिन को बुलाती हूं। शायद वह काम आएं।

दरवाजा खुलने में देर हुई तो कांस्टेबिल ने दरवाजे पर लात मारी और कहा–खोल दो दरवाजा, हम दौड़ लाए हैं। मुहल्लेवाले ने कहा–भई, तुम्हारे पास न सम्मन, न सफीना। फिर किसके हुक्म से दरवाजा खुलवाते हो? ऐसा भी कहीं हुआ है। इन बेचारियों का जुर्म तो बताओ !

जमादार–जुर्म चलके साहब से पूछो जिनके भेजे हम आए हैं। सम्मन-सफीना दीवानी के मजकूरी लाते हैं। हम पुलिस के आदमी हैं।

दूसरे आदमी ने आगे बढ़कर कहा–सुनो भई जवान, तुम इस वक्त बड़ा भारी जुल्म कर रहे हो। भला इस तरह कोई काहे को रहने पाएगा।

जमादार ने अकड़कर कहा–तुम कौन हो? अपना नाम बताओ। तुम सरकारी आदमी को अपना काम करने से रोकते हो ! हम रपट बालेंगे।

यह सुनकर वे हजरत चकराए और चुपके लंबे हुए। तब जमादार ने गुल मचा का कहा–मुखबिरों ने हमें खबर दी है कि तुम्हारे लड़का होनेवाला है। हमको हुक्म है कि दरवाजे पर पहरा दें।

पड़ोसिन ने जो यह बात सुनी तो दांतो-तले उंगुली दबाई–ऐ है, यह गजब खुदा का, हमें आज तक मालूम ही न हुआ, हम भी सोचते थे कि यह जवान-जहान औरत शहर से भाग कर गांव में क्यों आई ! यह मालूम ही न था कि यहां कुछ और गुल खिलनेवाला है।

इतने में फरखुंदा ने कोठे पर जाकर पड़ोसिन से कहा–जरी अपने मियां से कहो कि इस सिपाही से कुछ हाल पूछें–माजरा क्या है?

पड़ोसिन कुछ सोचकर बोली–भई, हम इस मामले में दखल न देंगे। ओह, तुम्हारी बेगम ने तो अच्छा जाल फैलाया था, हमारे मियां को मालूम हो जाय कि यह ऐसी हैं तो मुहल्ले से खड़े-खड़े निकलवा दें।

इतने में पड़ोसिन के मियां भी आये। फरखुंदा उनसे बोली, खां साहब, जरी इस सिपाही को समझाइए, यह हमारे बड़ी मुसीबत का वक्त है।

खां साहब–कुछ-न-कुछ तो उसे देना ही पड़ेगा।

फरखुंदा–अच्छा, आप फैसला करा दें। जो मांगे वह हमसे इसी दम ले।

खां साहब–इन पाजियों ने नाक में दम कर दिया है और इस तरफ की रिआया ऐसी बोदी है कि कुछ न पूछो। सरकार ने इन पियादों को इंतजाम के लिए रखा है और यह लोग जमीन पर पांव नहीं रखते। सरकार को मालूम हो जाय तो खड़े-खड़े निकाल दिए जायं।

पड़ोसिन–पहले बेगम से यह तो पूछो कि शहर से यहां आकर क्यों रही हैं? कोई-न-कोई वजह तो होगी।

फरखुंदा ने दो रुपये दिए और कहा–जाकर यह दे दीजिए। शायद मान जाए। खां साहब ने रुपये दिए तो सिपाही बिगड़कर बोला–यह रुपया कैसा? हम रिश्वत नहीं लेते।

खां साहब–सुनो मियां, जो हमसे टर्राओगे, तो हम ठीक कर देंगे। टके का पियादा, मिजाज ही नहीं मिलता।

सिपाही–मियां क्यों शामतें आई हैं, हम पुलिस के लोग हैं, जिस वक्त चाहें, तुम जैसों को जलील कर दें। बतलाओ तुम्हारी गुजर-बसर कैसे होती है? बचा, किसी भले घर की औरत भगा लाए हो और ऊपर से टर्राते हो !

खां साहब–यह धमकियां दूसरों को देना। यहां तुम जैसे को अंगुलियों पर नचाते हैं।

सिपाही ने देखा कि यह आदमी कड़ा है तो आगे बढ़ा। एक नानबाई की दूकान पर बैठकर मजे से पुलाव उड़ाया और सड़क पर जाकर एक गाड़ी पकड़ी। गाड़ीवान की लड़की बीमार थी। बेचारा गिड़गिड़ाने लगा, मगर सिपाही ने एक न मानी। इस पर एक बाबू जी बोल उठे–बड़े बेरहम आदमी हो जी ! छोड़ क्यों नहीं देते?

सिपाही–कप्तान साहब ने मंगवाया है, छोड़ कैसे दूं? यह इसी तरह के बहाने किया करते हैं, जमाने भर के झूठे !

आखिर गाड़ीवान ने सात पैसे और एक कद्दू देकर गला छुड़ाया। तब आपने एक चबूतरे पर बिस्तर जमाया और चौकीदार से हुक्का भरवाकर पीने लगे। जब जरा अंधेरा हुआ, तो चौकीदार ने आकर कहा–हवलदार साहब, बड़ा अच्छा शिकार चला जात है। एक महाजन की मेहरिया बैलगाड़ी पर बैठी चली जात है। गहनन से लदी है।

सिपाही–यहां से कितनी दूर है?

चौकीदार–कुछ दूर नाहिन, घड़ी भर में पहुंच जैहों। बस एक गाड़ीवान है। और एक छोकरा। तीसर कोऊ नहीं।

सिपाही–तब तो मार लिया है। आज किसी भले आदमी का मुंह देखा है। हमारे साथ कौन-कौन चलेगा?

चौकीदार–आदमी सब ठीक हैं, कहै भर की देर है। हुक्म होय तो हम जाके सब ठीक करी।

सिपाही–हां-हां और क्या?

अब सुनिए कि महाजन की गाड़ी बारह बजे रात को एक बाग की तरफ से गुजरी जा रही थी कि एकाएक छः-सात आदमी उस पर टूट पड़े। गाड़ीवान को एक डंडा मारा। कहार को भी मार के गिरा दिया। औरत के जेवर उतार लिए और चोर-चोर का शोर मचाने लगे। गांव में शोर मच गया कि डाका पड़ गया। कांस्टेबिल ने जाकर थाने में इत्तिला की। थानेदार ने चौकीदार से पूछा, तुम्हारा किस पर शक है ! चौकीदार ने कई आदमियों के नाम लिखाया और फिरोजा के पड़ोसी खां साहब भी उन्हीं में थे। दूसरे दिन उसी सिपाही ने खां साहब के दरवाजे पर पहुंचकर पुकारा। खां साहब ने बाहर आकर सिपाही को देखा तो मूंछों पर ताव देकर बोले–क्या है साहब, क्या हुक्म है?

सिपाही–चलिए, वहां बरगद के तले तहकीकात हो रही है ! दारोगा जी बुलाते हैं।

खां–कैसी तहकीकात? कुछ सुनें तो !

सिपाही–मालूम हो जायगी ! चलिए तो सही।

खां–सुनो जी, हम पठान हैं। जब तक चुप हैं तब तक चुप हैं। जिस दम गुस्सा आया, फिर या तुम न होंगे या हम न होंगे। कहां चलें, कहां?

सिपाही–मुझे आपसे कोई दुश्मनी तो है नहीं, मगर दारोगा जी के हुक्म से मजबूर हूं।

चौकीदार–लोधे को बुलाया है, घोसी को और तुमको।

खां–ऐं, वह तो सब डाकू हैं।

सिपाही–और आप बड़े साहु हैं ! बड़ी शेखी।

खां–क्यों अपनी जान के दुश्मन हुए हो?

सिपाही–अब चलिएगा या वारंट आए।

खां साहब घर में कपड़े पहनने लगे तो बीबी ने कहा–कैसे पठान हो? मुए प्यादे की क्या हकीकत है कि दरवाजे पर खोटी-खरी कहे। भला देखूं तो निगोड़ा तुम्हें वह क्योंकर ले जाता है। यह कहकर वह दरवाजे पर आकर बोली–क्यों रे, तू इन्हें कहां लिए जाता है? बता, किसी बात की तहकीकात होगी? क्या मेरा बाप कतल किया है?

सिपाही–आप खां साहब को भेज दें। अजी खां साहब, आइएगा या वारंट आए?

बीबी–वारंट ले जा अपने होतों-सोतों के यहां।

सिपाही–यह औरत तो बड़ी कल्ला-दराज है।

बीबी–मेरे मुंह लगेगा तो मुंह पकड़ के झुलस दूंगी। वारंट अपने बाप-दादा के नाम ले जा !

इतने में खां साहब ढाटा बांधकर बाहर निकले और बोले–ले तुझे दाएं हाथ खाना हराम है जो न ले चले।

सिपाही–बस, बहुत बढ़-बढ़ कर बातें न कीजिए, चुपके से मेरे साथ चलिए।

खां साहब अकड़ते हुए चले तो सिपाही ने फीरोजा के दरवाजे पर खड़े होकर कहा–इन्हें तो लिए जाते हैं, अब तुम्हारी बारी भी आएगी।

खां साहब बरगद के नीचे पहुंचे तो देखा, गांव भर के बदमाश जमा हैं और दारोगा जी चारपाई पर बैठे हुक्का पी रहे हैं। बोले, क्यों जनाब, हमें क्यों बुलाया?

दारोगा–आज गांव भर के बदमाशों की दावत है।

खां साहब ने डंडे को तौलकर कहा–तो फिर दो-एक बदमाशों की हम भी खबर लेंगे।

दारोगा–बहुत गरमाइए नहीं, चौकीदारों ने हमसे जो कहा वह हमने किया।

खां–और जो चौकीदार आपको कुएं में कूद पड़ने की सलाह दे?

दारोगा–तो हम कूद पड़ें !

खां–तो हमारी निस्बत आखिर क्या जुर्म लगाया गया है?

दारोगा–कल रात को तुम कहां थे?

खां–अपने घर पर, और कहां।

चौकीदार–हुजूर, बखरी में नाहीं रहे और एक मनई इनका वहीं बाग के भीतर देखिस रहा।

खां साहब ने चौकीदार को एक चांटा दिया–सुअर, अबे हम चोर हैं? रात को हम घर पर न थे?

दारोगा ने कहा–क्यों जी, हमारे सामने यह मार-पीट ! तुम भी पठान हो और हम भी पठान हैं। अगर अबकी हाथ उठाया तो तुम्हारी खैरियत नहीं।

इतने में एक अंग्रेज घोड़े पर सवार उधर से आ निकला। यह जमघट देखकर दारोगा

से बोला–क्या बात है? दारोगा ने कहा, गरीबपरवर, एक मुकदमे की तहकीकात करने आए हैं। इस पठान की निस्बत एक चोरी का शक है, मगर यह तहकीकात नहीं करने देता। चौकीदार को कई मरतबा पीट चुका है। चौकीदार ने कहा, दोहाई है साहब की ! दोहाई है, मारे डारत हैं।

साहब ने कहा–वेल, चालान करो। हमारी गवाही लिखवा दो, हमारा नाम मेजर क्रास है।

–लीजिए, चोरी और डाका तो दूर रहा, एक नया जुर्म साबित हो गया।

अब दारोगा जी ने गवाहों के बयान लिखने शुरू किए। पहले एक तंबोलिन आई। भड़कीला लहंगा पहने हुए, मांग-चोटी से लैस, मुंह से गिलौरी दबी हुई, हाथ में पान के बीड़े, आकर दारोगा जी को बीड़े देकर खड़ी हो गई।

दारोगा–तुमने खां साहब को रात के वक्त कहां देखा था?

तंबोलिन–उस पूरे के पास। इनके साथ तीन-चार आदमी और थे। सब लट्ठ-बंद। एक आदमी ने कहा, छीन लो सास से, मैं बोली कि बोटियां-नोंच लूंगी, मैं कोई गंवारिन नहीं हूं। खां साहब ने मुझसे कहा, तंबोलिन, कहो फतह है।

खां–अरी तंबोलिन।

तंबोलिन–जरी अरी तरी न करना मुझसे, मैं कोई चमारिन नहीं हूं।

खां–तुमने हमको चोरों के साथ देखा था?

तंबोलिन–देखा ही था। क्या कुछ अंधे हैं, चोर तो तुम हो ही।

खां–खुदा इस झूठ की सजा देगा।

तंबोलिन–इसका हाल तो जब मालूम होगा, जब बड़े घर में चक्की पीसोगे।

खां–और वहां गीत गाने के लिए तुमको बुला लेंगे।

दूसरे गवाह ने बयान किया–मैं रात को ग्यारह बजे इस पूरे की तरफ जाता था तो खां साहब मुझे मिले थे।

खां–कसम खुदा की, कोई आदमी मेरी ही शक्ल का रहा होगा।

दारोगा–आपने ठीक कहा।

काले खां–जब पठान होके ऐसी हरकतें करने लगे तो इस गांव का खुदा ही मालिक है। कौन कह सकता है कि यह सफेद-पोश आदमी डाका डालेगा।

खां–खुदा की कसम, जी चाहता है कि सिर पीट लूं, मगर खैर, हम भी इसका मजा चखा देंगे।

दारोगा–पहले अपने घर की तलाशी तो करवाइए, मजा पीछे चखवाइएगा।

यह कहकर दारोगा जी खां साहब के घर पहुंचे और कहा, जल्द परदा करो, हम तलाशी लेंगे। खां साहब ने की बीबी ने सैकड़ों गालियां दीं, मगर मजबूर होकर परदा किया। तलाशी होने लगी। दो बालियां निकलीं, एक जुगनू और एक छपका साहब। खां की बीबी हक्का-बक्का होकर रह गई, यह जेवर यहां कहां से आए? या खुदा, अब हमारी आबरू तेरे ही हाथ है।

छियासी

फीरोजा बेगम और फरखुंदा रात के वक्त सो रही थीं कि धमाके की आवाज हुई। फरखुंदा की आंख खुल गई। यह धमाका कैसा? मुंहपर से चादर उठाई, मगर अंधेरा देखकर उठने की हिम्मत न पड़ी। इतने में पांव की आहट मिली, रोयें खड़े हो गए। सोची, अगर बोली तो यह सब हलाल कर डालेंगे। दबकी पड़ी रही। चोर ने उसे गोद में उठाया और बाहर ले जाकर बोला–सुनो अब्बासी, हमको तुम खूब पहचानती हो? अगर यह पहचान सकी हो, तो अब पहचान लो।

अब्बासी–पहचानती क्यों नहीं, मगर यह बताओ कि यहां किस गरज से आए हो? अगर हमारी आबरू लेना चाहते हो तो कसम खाकर कहती हूं, जहर खा लूंगी।

चोर–हम तुम्हारी आबरू नहीं चाहते, सिर्फ तुम्हारा जेवर चाहते हैं। तुम अपनी बेगम को जगाओ, जरा उनसे मिलूंगा। नाहक इधर-उधर मारी-मारी फिरती हैं, हमारे साथ निकाह क्यों नहीं कर लेतीं?

एकाएक फीरोजा की आंख भी खुल गई। देखा तो मिर्जा आज़ाद खड़े हैं। बोली–आज़ाद मिर्जा, अगर हमें दिक करने से तुम्हें कुछ मिलता हो तो तुमको अख्तियार है। नाहक क्यों हमारी जान के दुश्मन हुए हो? इस मुसीबत के वक्त तुमसे मदद की उम्मीद थी और तुम उल्टे गला काटने रेतने को मौजूद

अब्बासी–बेगम आपको हमेशा याद किया करती हैं।

आज़ाद–मेरे लायक जो काम हो, उसके लिए हाजिर हूं, तुम्हारे लिए जान तक हाजिर है।

सुरैया–आपकी जान आपको मुबारक रहे, हम सिर्फ एक काम को कहते हैं। यहां एक कानिस्टेबिल ने हमें बहुत दिक किया है, तुम किसी तदबीर से हमें उसके पंजे से छुड़ाओ, (आज़ाद के कान में कुछ कहकर) मुझे इस बात का बड़ा रंज है। मेरी आंखों से आंसू निकल पड़े।

आज़ाद–वही कानिस्टिबिल तो नहीं है जो खां साहब को पकड़ ले गया है?

फीरोजा–हां-हां, वही।

आज़ाद–अच्छा, समझा जाएगा। खड़े-खड़े उससे समझ लूं तो सही। उसने अच्छे घर बयाना दिया।

सुरैया–कमबंख्त ने मेरी आबरू ले ली, कहीं मुंह दिखाने लायक न रखा। यहां भी बला की तरह सिर पर सवार हो गया। तुमने भी इतने दिनों के बाद आज खबर ली। दूसरों का दर्द तुम क्या समझोगे? जो बेइज्जती कभी न हुई थी वह आज हो गई। एक दिन वह था कि अच्छे-अच्छे आदमी सलाम करने आते थे और आज कानिस्टिबिल मेरी आबरू मिटाने पर तुला हुआ है और तुम्हारे होते।

आज़ाद–सुरैया बेगम, खुदा की कसम, मुझे बिल्कुल खबर न थी, मैं इसी वक्त जाकर दारोगा और कानिस्टिबिल दोनों को देखता हूं। देख लेना, सुबह तक उनकी लाश फड़कती होगी, ऐसे-ऐसे कितनों को जहन्नुम के घाट उतार चुका हूं। इस वक्त रुखसत करो, कल फिर मिलूंगा।

यह कहकर आज़ाद मिर्ज़ा बाहर निकले। यहां उनके कई साथी खड़े थे, उनसे बोले–भाई जवानो ! आज कोतवाल के घर हमारी दावत है, समझ गए, तैयार हो जाओ। उसी वक्त आज़ाद मिर्ज़ा और लक्ष्मी डाकू, गुलबाज, रामू यह सब के सब दारोगा के मकान पर जा पहुंचे। रामू को तो बैठक में रखा और महल्ले भर के मकानों की कुंडियां बंद करके दारोगा जी के घर में सेंध लगाने की फिक्र करने लगे।

दरबान–कौन ! तुम लोग कौन हो, बोलते क्यों नहीं?

आज़ाद–क्या बताएं, मुसीबत के मारे हैं, इधर से कोई लाश तो नहीं निकली?

दरबान–हां, निकली तो है, बहुत से आदमी साथ थे।

आज़ाद–हमारे बड़े दोस्त थे, अफसोस !

लक्ष्मी–हुजूर, सब्र कीजिए, अब क्या हो सकता है।

दरबान–हां भाई, परमेश्वर की माया कौन जानता है, आप कौन ठाकुर हैं?

लक्ष्मी–कनवजिया ब्राह्मण हैं। बेचारे के दो छोटे-छोटे बच्चे हैं, कौन उनकी परवरिश करेगा !

दरबान को बातों में लगाकर इन लोगों ने उसकी मुश्कें कस लीं और कहा, बोले और हमने क़त्ल किया। बस, मुंह बंद किए पड़े रहो।

दीवार में सेंध पड़ने लगी। रामू कहीं से सिरका लाया। सिरका छिड़क-छिड़ककर दीवार में सेंध दी। इतने में एक कानिस्टिबिल ने हांक लगाई–जागते रहियो, अंधेरी रात है।

आज़ाद–हमारे लिए अंधेरी रात नहीं, तुम्हारे लिए होगी।

चौकीदार–तुम लोग कौन हो?

आज़ाद–तेरा बा !। पहचानता है या नहीं?

यह कहकर आज़ाद ने करौली से चौकीदार का काम तमाम कर दिया।

लक्ष्मी–भाई, यह तुमने बुरा किया। कितनी बेरहमी से इस बेचारे की जान ली।

आज़ाद–बस, मालूम हो गया कि तुम नाम के चोर हो, बिल्कुल कच्चे !

अब यह तजवीज पाई कि मिर्ज़ा आज़ाद सेंध के अंदर जाय। आज़ाद ने पहले सेंध में पांव डाले. डालते ही किसी आदमी अंदर से तलवार जमाई दोनों पांव खट से अलग।

आज़ाद–हाय मरा ! अरे दौड़ो !

लक्ष्मी–बड़ा धोखा हुआ, कहीं के न रहे !

चारों ने मिलकर आज़ाद मिर्ज़ा का धड़ उठाया और रोते-पीटते ले चले, मगर रास्ते ही में पकड़ लिए गए।

मुहल्ले भर में जाग हो गई। अब जो दरवाजा खोलता है, बंद पाता है। यह कौन बंद कर गया? दरवाजा खोलो ! कोई सुनता ही नहीं। चारों तरफ यही आवाजें आ रही थीं। सिर्फ एक दरवाजे में बाहर से कुंडी न थी। एक बूढ़ा सिपाही एक हाथ में मशाल दूसरे में सिरोही लिए बाहर निकला। देखा तो दारोगा जी के घर में सेंध पड़ी हुई है ! चोर-चोर !

एक कानि०–खून भी हुआ है। जल्द आओ।

सिपाही—मार लिया है, जाने न पावे।

यह कहकर उसने दरवाजे खोलने शुरू किए। लोग फौरन लट्ठ ले-लेकर बाहर निकले। देखा तो चोरों और कानिस्टिबिलों में लड़ाई हो रही है। इन आदमियों को देखते ही चोर तो भाग निकले। आज़ाद मिर्जा और लक्ष्मी रह गए। आज़ाद की टांगें कटी हुईं। लक्ष्मी जख्मी। थाने पर खबर हुई। दारोगा जी भागे हुए अपने घर आए। मालूम हुआ कि उनके घर की बारिन ने चोरों को सेंध देते देख लिया था। फौरन जाकर कोठरी में बैठ रही। ज्योंही आज़ाद मिर्जा ने सेंध में पांव डाला, तलवार से उनके दो टुकड़े कर दिए।

आज़ाद पर मुकदमा चलाया गया। जुर्म साबित हो गया। कालेपानी भेज दिए गए।

जब जहाज पर सवार हुए तो एक आदमी से मुलाकात हुई। आज़ाद ने पूछा, कहो भाई, क्या किया था? उसने आंखों में आंसू भरके कहा, भाई, क्या बताऊं? बेकसूर हूं। फौज में नौकर था, इश्क के फेर में नौकरी छोड़ी, मगर माशूक तो न मिला, हम खराब हो गए।

यह शहसवार था।

सत्तासी

खां साहब पर मुकदमा तो दायर हो ही गया था; उस पर दारोगा जी दुश्मन थे। दो साल की सजा हो गई। तब दारोगा जी ने एक औरत को सुरैया बेगम ने मकान पर भेजा। औरत ने आकर सलाम किया और बैठ गई।

सुरैया—कौन हो? कुछ काम है यहां?

औरत—ऐ हुजूर, भला बगैर काम के कोई भी किसी के यहां जाता है? हुजूर से कुछ कहना है, आपके हुस्न का दूर-दूर तक शोहर है। इसका क्या सबब है कि हुजूर इस उम्र में, इस हालत में जिंदगी बसर करती हैं?

सुरैया—बहन, मैं एक मुसीबत की मारी औरत हूं।

औरत—ऐ हुजूर, मुझे बहन न कहें, मैं लौंडी, हुजूर शाहजादी हैं। हुजूर पर ऐसी क्या मुसीबत है? हुजूर तो इस काबिल हैं कि बादशाहों के महल में हों।

सुरैया—खुदा दुश्मन पर भी ऐसी मुसीबत न डाले। मैं तो जिंदगी से तंग आ गई।

औरत—अल्लाह मालिक है। कोशिश यह करनी चाहिए कि दुनिया में इज्जत के साथ रहे और किसी का होके रहे।

सुरैया—मगर जब खुदा को भी मंजूर हो। हमने तो बहुत चाहा कि शादी कर लें, मगर खुदा हो मंजूर ही न था। किस्मत का लिखा कौन मिटा सकता है?

औरत—हुजूर का हुक्म हो तो कहीं फिक्र करूं?

सुरैया—हमको माफ कीजिए। हम अब शादी न करेंगे।

औरत—हुजूर से मैं अभी जवाब नहीं चाहती। खूब सोच लीजिए। दो-तीन दिन में जवाब दीजिएगा। यहां एक रईसजादे रहते हैं, बहुत ही खूबसूरत, खुशमिजाज और शौकीन।

दिल बहलाने के लिए नौकरी कर ली है। हुकूमत की नौकरी है।

सुरैया–हुकूमत की नौकरी कैसी होती है?

औरत–ऐसी नौकरी, जिसमें सब पर हुकूमत करें। कोतवाल हैं।

अब्बासी–अच्छा, उन्हीं थानेदार का पैगाम लाई होगी !

औरत–ऐ, थानेदार काहे को हैं, बराय नाम नौकरी कर ली, वरना उनको नौकरी की क्या जरूरत है, वह ऐसे-ऐसे दस थानेदारों को नौकर रख सकते हैं।

अब्बासी–हुजूर को तो शादी करना मंजूर ही नहीं है।

औरत–वाह ! कैसी बातें करती हो।

सुरैया–तुम उनकी सिखाई-पढ़ाई आई हो, हम समझ गए। उनसे कह देना कि हम बेकस औरत हैं, हम पर रहम करो, क्यों हमारी जान के दुश्मन हुए हो, हमने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो पंजे झाड़ के हमारे पीछे पड़े हो?

औरत–हुजूर ने कदमों की कसम, उन्होंने नहीं भेजा है।

सुरैया–अच्छा तो इसमें जबरदस्ती काहे की है।

औरत–आपके और उनके दोनों के हक में यही अच्छा है कि हुजूर इनकार न करें। वह अफसर पुलिस हैं, जरा सी देर में बे-आबरू कर सकते हैं?

सुरैया–हमारा भी खुदा है।

औरत–खैर न मानो।

औरत दो-चार बातें सुनकर चली गई तो अब्बासी और सुरैया बेगम सलाह करने लगीं–

सुरैया–अब यहां से भी भागना पड़ा, और आज ही कल में।

अब्बासी–इस मुए को ऐसी जिद पड़ गई कि क्या कहें ! मगर अब भाग के जाएंगे कहां?

सुरैया–जिधर खुदा ले जाय। कहीं से लाला खुशवक्तराय को लाओ, बड़ा नमकहलाल बुड्ढा है। कोई ऐसी तदबीर करो कि वह कल सुबह तक यहां आ जाय।

अब्बासी–कहिए तो कल्लू को भेजूं, बुला लाए।

कल्लू कौम का लोहार था। ऊपर से तो मिला हुआ था, मगर दिल में इनका दुश्मन था। अब्बासी ने उसको बुला के कहा, तुम जाके लाला खुशवक्तराय को लिवा लाओ। कल्लू ने कहा, तुम साथ चलो तो मुजायका है, मगर अकेला तो मैं न जाऊंगा। आखिर यही तै हुआ कि अब्बासी भी साथ जाए। शाम के वक्त दोनों यहां से चले। अब्बासी मर्दाना भेष में थी। कुछ दूर चलकर कल्लू बोला, अब्बासी बुरा न मानो तो एक बात कहूं ! तुम इस बेगम के साथ क्यों अपनी जिंदगी खराब करती हो? उनकी जमा-जथा लेकर चली आओ और मेरे घर पड़ रहो।

अब्बासी–तुम मर्दों का ऐतबार क्या?

कल्लू–हम उन लोगों में नहीं हैं।

अब्बासी–भला अब लाला साहब का मकान कितनी दूर होगा?

कल्लू–यही कोई दो कोस, कहो तो सवारी केराया कर लूं या गोद में चलूं !

अब्बासी–ऐं, या तो घर बिठाते थे, या गोद बिठाने लगे।

कल्लू–भई, बहुत कही, ऐसी कहीं कि हमारी जबान बंद हो गई।

अब्बासी–ऐ, तुम ऐसे गवारों को बंद करना कौन बात है।

थोड़ी देर में दोनों एक मकान में पहुंचे। यह कल्लू के दोस्त शिवदीन का मकान था। शिवदीन ने कहा–आओ यार, मिजाज अच्छे?

कल्लू–सब चैन ही चैन है। इनको ले आया हूं, जो कुछ सलाह करनी हो, कर लो। सुनो अब्बासी, शिवदीन की और हमारी यह राय है कि तुमको अब यहां से न जाने दें। बस हमें अपनी बेगम के माल-टाल का पता बतला दो।

अब्बासी–बड़ी दगा दी कल्लू, बड़ी दगा दी तुमने।

कल्लू–अब तुम रात भर यहीं रहो, हम लोग जरा सुरैया बेगम से मुलाकात करने जायंगे।

अब्बासी–बड़ा धोखा दिया, कहीं के न रहे।

अब्बासी तो यहां रोती रही, उधर वह दोनों चोर कई आदमियों के साथ सुरैया बेगम के मकान पर जा पहुंचे और दरवाजा तोड़कर अंदर दाखिल हुए। सुरैया बेगम की आंख खुल गई, बिचारी अकेली मकान में मारे डर के दबकी पड़ी थी। बोली–कौन है? अब्बासी?

कल्लू–अब्बासी नहीं है, हम हैं, अब्बासी के मियां।

सुरैया–हाय मेरे अल्लाह, गजब हो गया?

शिव॰–चुप्पे-चुप्पे बोल, बताओ, रुपया कहां है? सच बता दो, नहीं मारी जाओगी।

कल्लू–बताएं तो अच्छा, न बताएं तो अच्छा, हम घर भर ढूंढ़ ही मरेंगे। सुना है कि तुम्हारे पास जवाहिर के ढेर हैं।

सुरैया–अमीर जब थी तब थी, अब तो मुसीबत की मारी हूं।

कल्लू–तुम यों म बताओगी, हम कुछ और ही उपाय करेंगे, अब भी बताती है कि नहीं।

सुरैया बेगम ने मारे खौफ के एक-एक चीज का पता बतला दिया। जब सारी जमा-जथा लेकर वे सब चलने लगे, तो कल्लू सुरैया बेगम से बोला–चल हमारे साथ, उठ।

सुरैया–खुदा के लिए मुझे छोड़ दो ! रहम करो।

शिव॰–चल, चल उठ, रात जाती है।

सुरैया बेगम ने हाथ जोड़े, पांव पड़ी, रो-रोकर कहा, खुदा के वास्ते मेरी इज्जत न लो। मगर कल्लू ने एक न सुनी। कहने लगा, तुझे किसी रईस अमीर के हाथ बेचेंगे, तुम भी चैन करोगी, हम भी चैन करेंगे।

सुरैया–मेरा माल लिया, अब तो छोड़ो।

कल्लू–चलो, सीधे से चलो, नहीं तो धकियायी जाओगी। देखो मुंह से आवाज न निकले वरना हम छुरी भोंक देंगे।

सुरैया–(रोकर) या खुदा, मैंने कौन सा गुनाह किया था, जिसके एवज यह मुसीबत !

कल्लू–चलती है कि बैठी रोती है?

आखिर सुरैया बेगम को अंधेरी रात में घर छोड़कर उनके साथ जाना पड़ा।

अट्ठासी

आध कोस चलने के बाद इन चारों ने सुरैया बेगम को दो और चोरों के हवाले किया। इनमें एक का नाम बुद्धसिंह था, दूसरे का हुलास। यह दोनों डाकू दूर-दूर तक मशहूर थे, अच्छे-अच्छे डकैत उनके नाम सुनकर अपने कान पकड़ते थे। किसी आदमी की जान लेना उनके लिए दिल्लगी थी। सुरैया बेगम कांप रही थी कि देखें आबरू बचती है या नहीं। हुलास बोला, कहो बुद्धसिंह, अब क्या करना चाहिए?

बुद्धसिंह–अपनी तो यह मरजी है कि कोई मनचला मिल जाए तो उसी दम पटील डालो।

हुलास–मैं तो समझता हूं, यह हमारे साथ रहे तो अच्छे-अच्छे शिकार फंसें। सुनो बेगम, हम डकैत हैं, बदमाश नहीं। हम तुम्हें किसी ऐसे जवान के हाथ बेचेंगे, जो तुम्हें अमीरजादी बनाकर रखे। चुपचाप हमारे साथ चली आओ।

चलते-चलते तीनों आमों के लिए एक बाग में पहुंचे। दोनों डाकू तो चरस पीने लगे, सुरैया बेगम सोचने लगी–खुदा जाने, किसके हाथ बेचें, इससे तो यही अच्छा है कि कत्ल कर दें। इतने ही में दो आदमी बातें करते हुए निकले–

एक–मिर्जा जी, दो बदमाशों से यह शहर पाक हो गया। आज़ाद और शहसवार। दोनों ही कालेपानी गए। अब दो मुझा और बाकी हैं।

मिर्जा–वह दो कौन हैं?

पहला–वही हुलास और बुद्धसिंह। अरे, वह दोनों तो यहीं बैठे हुए हैं ! क्यों यारो, चरस के दम उड़ रहे हैं? तुम लोगों के नाम वारंट जारी है।

हुलास–मीर साहब, आप भी बस वही रहे। पड़ोस में रहते हो फिर भी वारंट से डराते हो? ऐसे-ऐसे कितने वारंट रोज ही जारी हुआ करते हैं। हमसे और पुलिस से तो जानी दुश्मनी है, मगर कसम खाके कहता हूं कि अगर पचास आदमी भी गिरफ्तार करने आएं तो हमारी गर्द तक न पाएं। हम दोनों एक पलटन के लिए काफी हैं। कहिए, आप लोग कहां जा रहे हैं।

मिर्जा–अजी, हम भी किसी शिकार ही की तलाश में निकले हैं।

जब मीर और मिर्जा चले गए तो दोनों चोर भी सुरैया बेगम को लेकर चले। इत्तिफाक से उसी वक्त एक सवार आ निकला। बुद्धसिंह ने साईस को तो मार गिराया और मुसाफिर से कहा, अगर आबरू के साथ घोड़ा नजर करो तो बेहतर है, नहीं तो तुम भी जमीन पर लोट रहे होगे। सवार बेचारा उतर पड़ा। हुलास ने तब सुरैया बेगम को घोड़े पर सवार किया और लगाम लेकर चलने लगा।

सुरैया बेगम दिल में सोचती थीं कि इतनी ही उम्र में हमने क्या-क्या देखा। यह नौबत पहुंची है कि जान भी बचती दिखाई नहीं देती।

हुलास–बीबी, क्या सोचती जाती हो? कुछ गाना जानती हो तो गाओ। इस जंगल में मंगल हो।

बुद्धसिंह–इससे कहो कि कोई भजन गाए।

हुलास–इनका गजलें याद होंगी या ठुमरी-टप्पा। यह भजन क्या जानें !

सुरैया—नहीं मियां, हमें कुछ नहीं आता, हम बहू-बेटियां गाना क्या जानें।

इतने में किसी की आवाज आई। हुलास ने बुद्धसिंह से पूछा—यह किसकी आवाज आई?

बुद्धसिंह—अरे, कौन-सा आदमी बोला था?

आवाज—जरा इधर तक आ जाओ। मैं मिर्जा हूं, जरा सुन लो।

हुलास और बुद्धसिंह दोनों आवाज की तरफ चले, इधर-उधर देखा, कोई न मिला। सुरैया बेगम का कलेजा धड़कने लगा। मारे डर के आंखें बंद कर लीं और आहिस्ता-आहिस्ता दोनों को पुकारने लगीं। हाय ! खुदा किसी को मुसीबत में न डाले। यह दोनों डाकू उसको बेचने की फिक्र में थे, और इसने मुसीबत के वक्त उन्हीं दोनों को पुकारा। वह आवाज की तरफ कान लगाए हुए चले तो देखा कि एक बूढ़ा आदमी घास पर पड़ा सिसक रहा है, इनको देखकर बोला—बाबा, मुझ फकीर को जरा-सा पानी पिलाओ। बस, मैं पानी पीकर इस दुनिया से कूच कर जाऊंगा। फिर किसी को अपना मुंह न दिखाऊंगा।

हुलास ने उसे पानी पिलाया, पानी पीकर वह बोला, बाबा, खुदा तुम्हें इसका बदला दे। इसके एवज तुम्हें क्या दूं। खैर, अगर दो घंटे भी जिंदा रहा तो अपना कुछ हाल तुमसे बयान करूंगा और तुम्हें कुछ दूंगा भी।

हुलास—आपके पास जो कुछ जमा-जथा हो वह हमको बता दीजिए।

बूढ़ा—कहा न कि दो घंटे भी जिंदा रहा तो सब बातें बता दूंगा। मैं सिपाही हूं, लड़कपन से यही मेरा पेशा है।

हुलास—आपने तो एक किस्सा छेड़ दिया, मुझे खौफ है कि ऐसा न हो कि आपकी जान निकल जाय तो वह रुपया वहीं का वहीं पड़ा रहे।

बूढ़ा (गाकर)—पहुंची न राहत हमसे किसी को....

हुलास—जनाब, आपको गाने की सूझती है और यह डर रहे हैं कि कहीं आपका दम न निकल जाए। रुपये बता दें, हम बड़ी धूमधाम से तुम्हारा तीजा करेंगे।

बुद्धसिंह—पानी और पिलवा दो तो फिर खूब ठंडा होकर बताएगा।

बूढ़ा—मेरा एक लड़का है, दुनिया में और कोई नहीं। बस यही एक लड़का, जवान, खूबसूरत, घोड़े पर खूब सवार होता था।

सुरैया—फिर अब कहां है वह?

बूढ़ा—फौज में नौकर था। किसी बेगम पर आशिक हुआ, तब से पता नहीं। अगर इतना मालूम हो जाय कि उसकी जान निकल गई तो कब्र बनवा दूं।

सुरैया—लंबे हैं या ठिंगने?

बूढ़ा—लंबा है। चौड़ा सीना, ऊंची पेशानी, गोरा रंग।

सुरैया—हाय-हाय? क्या बताऊं बड़े मियां, मेरा उनका बरसों साथ रहा है। मेरे साथ निकाह होने को था।

बूढ़ा—बेटा, जरी हमारे पास आ जाओ। कुछ उसका हाल बताओ। जिंदा तो है?

सुरैया—हां, इतना तो मैं कह सकती हूं कि जिंदा हैं।

बूढ़ा—अब वह है कहां? जरा देख लेता तो आरजू पूरी हो जाती।

हुलास—आपका सर दबा दूं, तलुवे मलूं, जो खिदमत कहिए करूं।

बूढ़ा—नहीं, मौत का इलाज नहीं है। मैने अपने लड़के को लड़ाई के फन खूब सिखाए थे। हर एक के साथ मुरौवत से पेश आता था। बस, इतना बता दो कि जिंदा है या मर गया?

सुरैया—जिंदा हैं और खुश हैं।

बूढ़ा—अब मैं अपनी सारी तकलीफें भूल गया। ख्याल भी नहीं कि अभी तकलीफ हुई थी।

ये बातें हो रही थीं कि पचास आदमियों ने आकर इन लोगों को चारों तरफ से घेर लिया। दोनों डाकुओं की मुश्कें कस ली गईं। बुद्धसिंह मजबूत आदमी था। रस्सी तोड़कर, तीन सिपाहियों को जख्मी किया और भागकर झील में कूद पड़ा, किसी की हिम्मत न पड़ी कि झील में कूदकर उसे पकड़े। हुलास बंधा रह गया।

यह पुलिस का इंस्पेक्टर था।

सुरैया बेगम हैरान थीं कि यह क्या माजरा है। इन लोगों को डाकुओं की खबर कैसी मिल गई। चुपचाप खड़ी थी कि सिपाहियों ने उससे हंसी-दिल्लगी करनी शुरू की। एक बोला, वाह-वाह, यह तो कोई परी है भाई। दूसरा बोला, अगर ऐसी सूरत कोई दिखा दे तो महीने की तनख्वाह हार जाऊं।

हुलास—सुनते हो जी, उस औरत से न बोलो, तुमको हमसे मतलब है या उससे।

इंस्पेक्टर—इसका जवाब तो यह है कि तेरे एक बीस लगाए और भूल जाए तो फिर से गिने। आंखें नीची कर, नहीं खोद के गाड़ दूंगा।

सुबह के वक्त शहर में दाखिल हुए तो सुरैया बेगम ने चादर से मुंह छिपा लिया। इस पर एक चौकीदार बोला, सत्तर चूहे खाकर बिल्ली हज को चली ! ओढ़नी मुंह पर ढांपती है, हटाओ ओढ़नी।

सुरैया बेगम की आंखों से आंसू जारी हो गये। उसके दिल पर जो कुछ गुजरती थी, उसे कौन जान सकता है। रास्ते में तमाशाइयों में बातें होने लगीं !

रंगरेज—भई, यह दुपट्टा कितना अच्छा रंगा हुआ है !

नानबाई—कहां से आते हो जवानो? क्या कहीं डाका पड़ा था?

शेख जी—अरे यारो, यह नाजनीन कौन है? क्या मुखड़ा है? कसम खुदा की ऐसी सूरत कभी न देखी थी। बस, यही जी चाहता है कि इससे निकाह पढ़वा लें। यह तो शब्बोजान से भी बढ़कर है।

यह शेख जी वही वकील साहब थे जिसके यहां अलारक्खी शब्बोजान बनकर रही थी। सलारू भी साथ था। बोला, मियां, आंखों वाले तो बहुत देखे, मगर आपकी आंख निराली है।

वकील—क्यों बे बदमाश, फिर तूने गुस्ताखी की।

सलारू—जब कहेंगे, खरी कहेंगे। आप थाली के बैंगन हैं।

वकील साहब इस पर झल्लाकर दौड़े। सलारू भागा, आप मुंह के बल गिरे।

इस पर लोगों ने कहकहा मारा। सुरैया बेगम सोच रही थीं कि मैंने इस आदमी को कहीं देखा है, पर याद न आता था।

यह लोग और आगे चले तो तरह-तरह की अफवाहें उड़ने लगीं। एक महल्ले में

यह खबर उड़ी कि दरिया से एक घोड़ामुंहा आदमी निकाला गया है। उसी के साथ एक परी भी निकली है। दो-तीन महल्लों में यह अफवाह उड़ी कि एक औरत अपने घर से जेवर लेकर भाग गयी थी, अब पकड़ी गयी है। नौ बजते-बजते यह लोग थाने में जा पहुंचे। हुलास और सुरैया बेगम हवालात में बंद कर दिए गये। रात को तरह-तरह के ख्वाब दिखायी दिये। पहले देखा कि उसका बूढ़ा शौहर कब्र से गर्दन निकालकर कहता है, सुरैया, वह कैसी बुरी घड़ी थी, जब तेरे साथ निकाह किया और अपने खानदान की इज्जत खाक में मिलायी। फिर दूसरा ख्वाब देखा कि आज़ाद एक दरख्त के साये में लेटे और सो गये। एक सांप उनके सिरहाने आ बैठा और काटना ही चाहता था कि सुरैया की आंख खुल गयी।

सवेरे उठकर बैठी कि एक सिपाही ने आकर कहा—तुम्हारे भाई तुमसे मिलने आये हैं। सुरैया बेगम ने सोचा, मेरा भाई तो कोई पैदा ही नहीं हुआ था, यह कौन भाई बन बैठा? सोची; शायद कोई दूर के रिश्तेदार होंगे, बुला लिया। जब वह आया तो उसे देखकर सुरैया बेगम के होश उड़ गये। यह वही वकील साहब थे। आपने आते-ही-आते कहा, बहन, खैर तो है, यह क्या, हुआ क्या? हमसे बयान तो करो ! कुछ दौड़-धूप करें? हुक्काम से मिलकर कोई सबील निकालें।

सुरैया—मियां, मेरी तकदीर में यही लिखा था, तो तुम क्या करोगे और कोई क्या करेगा?

वकील—खैर, अब उन बातों का जिक्र ही क्या। सच कहता हूं शब्बोजान, तुम्हारी याद दिल से कभी नहीं उतरी, मगर अफसोस कि तुमने मेरी मुहब्बत की कदर न की। जिस दिन तुम मेरे घर से निकल भागीं, मुझे ऐसा मालूम हुआ कि बदन से जान निकल गयी। अब तुम घबराओ नहीं। हम तुम्हारी तरफ से पैरवी करेंगे। तुम जानती ही हो कि हम कैसे मशहूर वकील हैं और कैसे-कैसे मुकदमे बात की बात में जीत लेते हैं।

सुरैया—इस वक्त आप आ गये, इससे दिल को बड़ी तसकीन हुई। तुम्हारे घर से निकली तो पहले एक मुसीबत में फंस गयी, बारे खुदा-खुदा करके उससे नजात पायी और कुछ दौलत भी हाथ आयी तो तुम्हारे ही महल्ले में मकान लिया और बेगमों की तरह रहने लगी।

वकील—अरे, वह सुरैया बेगम आप ही थीं?

सुरैया—हां, मैं ही थी।

वकील—अफसोस, इतने करीब रहकर भी कभी मुझे न बुलाया ! मगर वह आपकी दौलत क्या हुई और यहां हवालात में क्योंकर आयीं?

सुरैया—हुआ क्या, दो बार चोरी हो गयी, ऊपर से थानेदार भी दुश्मन हो गया। आखिर हम अपनी महरी को लेकर चल दिये। एक गांव में रहने लगी, मगर वहां भी चोरी हुई और डाकुओं के फंदे में फंसी।

इतने ही में एक थानेदार ने आकर वकील साहब से कहा—अब आप तशरीफ ले जाइए। वक्त खत्म हो गया। सुरैया बेगम ने इस थानेदार को देखा, तो पहचान गयी। यह वहOी आदमी था, जिसके पास एक बार वह आज़ाद की रपट करने गयी थी। बोली—क्यों साहब, पहचाना? अब क्यों पहचानिएगा?

थानेदार—अलारक्खी, खुदा को गवाह रखकर कहता हूं कि इस वक्त मारे खुशी के रोना आता है। मैं तो बिल्कुल मायूस हो गया था। मुझे अब भी तुम्हारी वैसी ही मुहब्बत है जो पहिले थी।

रात के वक्त थानेदार ने हवालात में आकर उसे जगाया और आहिस्ता से कान में कहा, बहुत अच्छा मौका है, चलो, भाग चलें। मैंने चौकीदारों को मिला लिया है।

सुरैया बेगम ने थानेदार को समझाया कि कहीं पकड़ न लिये जायं। मगर जब वह न माना, तो वह उसके साथ चलने पर तैयार हो गयी। बाहर आकर थानेदार ने सुरैया बेगम को मर्दाना कपड़े पहनाये और गाड़ी पर सवार कराके चला। जब दो कोस निकल गये तो सवेरा हुआ। थानेदार ने गाड़ी से दरी निकाली और आराम से लेटकर हुक्का पीने लगे कि एक मुसाफिर सवार ने आकर पूछा—क्यों भाई मुसाफिर, हिन्दू हो या मुसलमान? मुसलमान हो तो हुक्का पिलाओ।

थानेदार ने खातिर से बैठाया। लेकिन जब मुसाफिर के चेहरे पर गौर से नजर डाली तो कुछ शक हुआ। कहा—जनाब, मेरे दिल में आपकी तरफ से एक शक पैदा हुआ है। कहिए अर्ज करूं, कहिए खामोश रहूं? आप ही तो जबलपुर में एक सौदागर के यहां मुंशी थे। वहां आपने दो हजार रुपये का गबन किया और साल भर की सजा पायी। कहिए, गलत कहता हूं?

मुसाफिर—जनाब, आपको धोखा हुआ है, यहां खानदानी रईस हैं। गबन पर लानत भेजते हैं।

थानेदार—यह चकमे किसी और को दीजिएगा। दाई से पेट नहीं छिपता।

मुसाफिर—अच्छा मान लीजिए, आप ही का कहना दुरुस्त है। भला हम फंस जायं तो आपको क्या मिले?

थानेदार—पांच सौ नकद, तरक्की और नेकनामी अलग !

मुसाफिर—बस ! हमसे एक हजार ले लीजिए। अभी-अभी गिना लीजिए। लेकिन गिरफ्तार करने का इरादा हो तो मेरे हाथ में भी तलवार है।

थानेदार—हजरत, यह रकम बहुत थोड़ी है, हमें जंचती नहीं।

मुसाफिर—आखिर दो ही हजार तो मेरे हाथ लगे थे। उसका आधा आपको नजर करता हूं ! मगर गुस्ताखी माफ हो, तो मैं भी कुछ कहूं ! मुझे आपके इन दोस्त पर कुछ शक होता है। कहिए, कैसा भांपा?

थानेदार ने देखा कि पर्दा खुल गया, तो झगड़ा बढ़ाना मुनासिब न समझा। डरे कहीं जाकर अफसरों से जड़ दे, तो रास्ते ही में धर लिये जायं। बोले, हजरत, अब आपको अख्तियार है, हमारी लाज अब आपके हाथ है।

मुसाफिर—मेरी तरफ से आप इतमीनान रखिए।

दोनों आदमियों में दोस्ती हो गयी। थोड़ी देर के बाद तीनों यहां से रवाना हुए, शाम होते-होते एक नदी के किनारे एक गांव में पहुंचे। वहां एक साफ-सुथरा मकान अपने लिए ठीक किया और जमींदार से कहा कि अगर कोई आदमी हमें पूछें तो कहना, हमें नहीं मालूम। तीनों दिन-भर के थके थे, खाने-पीने की भी सुध न रही। सोये तो सबेरा हो गया। सुबह के वक्त थानेदार साहब बाहर आये तो देखा कि जमींदार उनके इंतजार

में खड़ा है। इनको देखते ही बोला, जनाब आपने तो उठते-उठते नौ बजा दिये। एक अजनबी आदमी यहां आपकी तलाश में आया है। वर्दी तो नहीं पहिने है, हां सिर पर पगड़ी बांधे है। पंजाबी मालूम होता है। मुझे तो डर लग रहा है कि न जाने क्या आफत आये।

थानेदार–किसी बहाने से हमको अपने मकान पर ले चलो और ऐसी जगह बैठाओ, जहां से हम सुन सकें कि क्या बातें करता है।

जमींदार–चलिए, मगर आपका चलना अच्छा नहीं। अंदर ही बैठिए, अगर कोई खटके की बात होगी तो आपको इत्तला दूंगा।

थानेदार–जनाब, मैंने पुलिस में नौकरी की है ! चलने का डर आपको होगा। मैं दाढ़ी हजाम की नजर करता हूं और मूंछें कतरवा डालता हूं। चलिए, छुट्टी हुई।

सुरैया बेगम ने थानेदार को समझाया कि कहीं फंस गये तो कहीं के न रहोगे। आप भी जाओगे और मुझे भी ले डूबोगे। मगर थानेदार साहब ने एक न सुनी। फौरन नाई को बुलाया, दाढ़ी मुड़वाई, स्याह किनारे की धोती पहनी, अंगरखा डाटा, काली मंदील सर पर रखी और आधे हिन्दू और आधे मुसलमान बने हुए जमींदार के पास जा पहुंचे। सलाम-बंदगी के बाद बातें होने लगीं। थानेदार ने अपना नाम शेख बुद्धू बतलाया और घर बंगाल में ! जमींदार के पास एक पंजाबी भी बैठा हुआ था। समझ गये कि यही हजरत हमें गिरफ्तार करने आये हैं ! नाम पूछा तो उसने बतलाया शेरसिंह।

थानेदार–आप तो पंजाब के रहने वाले होंगे?

शेरसिंह–जी हां, हम खास अम्बरसर में रहते हैं।

थानेदार–आप कहां नौकर हैं?

शेरसिंह–हम जमींदार हैं। अम्बरसर के पास हमारा इलाका है, उसको हमारा भाई देखता है, हम घूमते रहते हैं। आप यहां किस गरज से आये हैं? और टिके आप कहां हैं?

थानेदार–इसी गांव में मैं भी ठहरा हूं। अगर तकलीफ न हो तो हमारे साथ घर तक चलिए।

थानेदार उनको लेकर डेरे पर आये। सुरैया बेगम दौड़कर छिपने को थीं, मगर थानेदार ने मना किया और कहा कि यह मेरे भाई हैं। इनसे पर्दा करना फुजूल है !

शेरसिंह- यह आपकी कौन हैं?

थानेदार–जी, मेरे घर पड़ गयी हैं?

सुरैया बेगम–ऐ हटो भी, क्या वाहियात बातें करते हो। हजरत, यह मेरे भाई हैं। इस पर शेरसिंह ने कहकहा लगाया और थानेदार झेंपे।

शेरसिंह–आपने सुना नहीं, एक मुसलमान थानेदार किसी बेगिन को हवालात से लेकर भागे। बड़ी तहकीकात हो रही है, मगर पता नहीं चलता।

थानेदार–कह तो नहीं सकता कि वह थानेदार ही था या कोई और, मगर परसों रात को जब हम और यह आ रहे थे तो देखा कि एक गाड़ी पर कोई फौजी आदमी सवार है और किसी औरत से बातें करता जाता है। औरत का नाम सुरैया बेगम था। जो मुझे मालूम हो कि वही हजरत हैं तो कुछ ले मरूं।

शेरसिंह–जरूर वही था, उस औरत का नाम सुरैया बेगम ही था। क्या कहूं, मैं

उस वक्त न हुआ।

तीनों में बड़ी देर तक हंसी-दिल्लगी होती रही। शेरसिंह जब चलने लगे तो कहा, कल से हम भी यहीं ठहरेंगे। दूसरे दिन तड़के शेरसिंह अपना बोरिया-बंधना लेकर आ पहुंचे। थानेदार ने कहा, आप हिन्दू और हम मुसलमान। आपकी गंगा और हमारा कुरान। आप गंगा की कसम और हम कुरान की कसम खायं कि मरते दम तक कभी साथ न छोड़ेंगे, हमेशा दोस्ती का दम भरते रहेंगे। ऐसा न हो कि पीछे से निकल जाओ।

शेरसिंह–हम अपने ईमान की कसम खाते हैं कि मरते दम तक तुम्हारी दोस्ती का दम भरेंगे।

थानेदार–मेरी कुछ शर्तें हैं, उनको कबूल कीजिए–

(1) एक-दूसरे की बात किसी से न कहें। अगर हम किसी को मार भी डालें तो आप न कहिए। चाहे नौकरी जाय, चाहे आबरू जाय।

(2) हमारे आपस में कोई पर्दा न रहे।

(3) हम अपना हाल आपसे कहें और आप अपना हाल हमसे बयान करें।

शेरसिंह–आपकी सब बातें मंजूर हैं। हाथ पर हाथ मारिए और टोपी बदलिए। बस, हम और आप भाई-भाई हुए। भाभी साहब, हम गरीबों पर भी मिहरबानी की नजर रहे।

सुरैया बेगम–ऐ, थोड़ी देर में हम आपको झुक के सलाम करेंगे।

शेरसिंह–क्यों, थोड़ी देर में क्या होगा साहब, बताइए !

सुरैया बेगम–(हंसकर) घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

थानेदार–अच्छा तो अब सुनिए भाई साहब, हम खूनी हैं। अब आप चाहे इंस्पेक्टर की हैसियत में कैद कीजिए चाहे दोस्त की हैसियत में माफ कीजिए।

शेरसिंह–(दंग होकर) क्या खूनी?

थानेदार–जी हां, मैं बंगाली नहीं हूं। लखनवी हूं। चंद ही रोज हुए, शाहजादा-हुमायूं फर को कत्ल किया और भाग आया। अब फर्माइए?

शेरसिंह–खुदा तुझे गारद करे, कमबख्त? तू तो इस काबिल है कि तुझको खोद के दफन कर दे।

थानेदार–अच्छा, अब हमारी क्या सजा तजवीज हुई? साफ बता दो।

शेरसिंह–मुए पर सौ दुर्रे और गधे की सवारी। बस, अब मैं यहां से भाग जाऊंगा और उम्र भर तुम्हारी सूरत न देखूंगा। खुदा तुझसे समझे।

थानेदार–सुनो भाईजान, यह फकत चकमा था। हम आजमाते थे कि देखें, तुम कौल के कहां तक सच्चे हो। अब हम साफ कहते हैं कि हम कातिल नहीं हैं, लेकिन मुजरिम हैं। अब कहिए।

शेरसिंह–अजी, जब इतने बड़े जुर्म की सजा न दी तो अब क्या खौफ है ! क्या कहीं से माल मार लाये हो?

थानेदार–भाई, माफ करो तो बता दें। सुनिए, हम वही थानेदार हैं जिसकी तलाश में तुम निकले हो। और यह वही बेड़िन हैं। अब चाहे बांध ले चलो, चाहे दोस्ती का हक अदा करो।

शेरसिंह–ओफ ! बड़ा झांसा दिया। मुझे तो हैरत है कि तुमसे मेरे पास आया क्योंकर

गया। मैं पंजाब से खास इसी काम के लिए बुलवाया गया था। यहां दो दिन से तुम्हें भी देख रहा हूं और बेड़िन से नोंक-झोंक भी हो रही है। मगर टांय-टांय-फिस।

सुरैया–हुजूर, ले जरा मुंह सम्हालकर बात कीजिए। बेड़िन कोई और होगी। बेड़िन की सूरत नहीं देखी !

थानेदार–यह बेगम हैं। खुदा की कसम। सुरैया बेगम नाम है।

शेरसिंह–वह तो बातचीत से जाहिर है। अच्छा बेगम साहबा बुरा न मानो तो एक बात कहूं। अगर अपनी और इनकी रिहाई चाहती हो, तो इनको इस्तीफा दो और हमसे वादा करो।

थानेदार–इनको राजी कीजिए। हमसे क्या वास्ता। हमको तो अपनी जान प्यारी है।

सुरैया–ऐ वाह ! अच्छे मिले। तुम थानेदारी क्या करते थे ! अच्छा, दिल्लगी तो हो चुकी। अब मतलब की बात कहो। हम दोनों भागें, तो भाग के जायं कहां? और भागें तो रहें कहां?

शेरसिंह–एक काम करो। हमको वापस जाने दो। हम वहां जाकर आयं-बायं-सायं उड़ा देंगे। इसके बाद आकर तुमको पंजाब ले जाएंगे।

थानेदार–अच्छा तो है। हम सब मिलकर पंजाब चलेंगे।

सुरैया–तुम जाओ, हम तो न जायंगे। और सुनिए, वाह !

थानेदार–हमारी बात मानिए। आप घर-घर तहकीकात कीजिए और दो दिन तक यहां टिके रहिए और वहां जाकर कहिए कि मुलजिम तराई की तरफ निकल गया।

शेरसिंह–हां, सलाह तो अच्छी है। तो आप यहां रहें, मैं जाता हूं।

शेरसिंह ने दिन भर सारे कस्बे में तहकीकात की। जमींदारों को बुलाकर खूब डांट-फटकार सुनायी। शाम को आकर थानेदार के साथ खाना खाया और सदर को रवाना हुए। जब शेरसिंह चले गये तो थानेदार साहब बोले–दुनिया में रहकर अगर चालाकी न करें तो दम भर गुजारा न हो। दुनिया में आठों गांठ कुम्मैत हो तो तब काम चले।

सुरैया–वाह ! आदमी को नेक होना चाहिए, न कि चालाक।

थानेदार–नेकी से कुछ नहीं होता, चालाकी बड़ी चीज है। अगर हम शेरसिंह से चालाकी न करते तो उनसे गला कैसे छूटता।

दूसरे दिन थानेदार साहब भी रवाना हुए। दिन भर चलने के बाद गाड़ीवान से कहा–भाई, यहां से मीरडीह कितनी दूर है?

गाड़ीवान ने कहा–हुजूर, यही मीरडीह है।

थानेदार–यहां हम किसके मकान में टिकेंगे?

गाड़ीवान–हुजूर, आदमी भेज दिया गया है।

यह कहकर उसने नंदा-नंदा पुकारा। बड़ी देर के बाद नंदा आया और गाड़ी को एक टीले की तरफ ले चला। वहीं एक मकान में उसने दोनों आदमियों को उतारा और तहखाने में ले गया।

थानेदार–क्या कुछ नीयत खोटी है भई?

सुरैया–हम तो इसमें न जाने के। अल्लाह रे अंधेरा !

नंदा–आप चलें तो सही।

थानेदार ने तलवार म्यान से खींच ली और सुरैया बेगम के साथ चले।

थानेदार—अरे नंदा, रोशनदान तो जरा खोल दे जाके।

नंदा—अजी, क्या जाने, किस वक्त के बंद पड़े हैं।

सुरैया—है-है ! खुदा जाने, कितने बरसों से यहां चिराग नहीं जला। यह जीने तो खत्म ही होने नहीं आते।

नंदा—कोई एक सौ दस जीने हैं।

सुरैया—उफ् ! बस अब मैं मर गयी।

नंदा—अब नगिचाय आये। कोई पचीस ठो और हैं।

बड़ी मुश्किलों से जीने तय हुए। मगर तहखाने में पहुंचे तो ऐसी ठंडक मिली कि गुलाबी जाड़े का मजा आया। दो पलंग बिछे हुए थे। दोनों आराम से बैठे। खाना भी पहले से एक बावर्ची ने पका रखा था। दोनों ने खाना खाया और आराम करने लगे। यह मकान चारों तरफ पहाड़ों से ढका था। बाहर निकलने पर पहाड़ों की काली-काली चोटियां नजर आती थीं। उन पर हिरन कुलेलें भरते थे। थानेदार ने कहा—बहुत मुकामों की सैर की है, मगर ऐसी जगह कभी देखने में नहीं आयी थी। बस, इसी जगह हमारा और तुम्हारा निकाह होना चाहिए।

सुरैया—भई, सुनो, बुरा मानने की बात नहीं। मैंने दिल में ठान ली है कि किसी से निकाह न करूंगी। दिल का सौदा सिर्फ एक बार होता है। अब तो उसी के नाम पर बैठी हूं। किसी और के साथ निकाह करने की तरफ तबियत मायल नहीं होती।

थानेदार—आखिर वह कौन साहब हैं जिन पर आपका दिल आया है? मैं भी तो सुनूं।

सुरैया—तुम नाहक बिगड़ते हो। तुमने मेरे साथ जो सलूक किये हैं, उनका एहसान मेरे सिर पर है; लेकिन यह दिल दूसरे का हो चुका।

थानेदार—अगर यह बात थी तो मेरी नौकरी क्यों ली? मुझे क्यों मुसीबत में गिरफ्तार किया? पहले ही सोची होती। अब से बेहतर है, तुम अपनी राह लो, मैं अपनी राह लूं।

सुरैया—यह तुमने लाख रुपये की बात कही। चलिए, सस्ते छूटे।

थानेदार—तुम न होगी तो क्या जिंदगी न होगी?

सुरैया—और तुम न होगे तो क्या सबेरा न होगा?

थानेदार—नौकरी की नौकरी गयी और मतलब का मतलब न निकला—

गैर आंखें सेंके उस बुत से दिले मुज़तर जले,
बाये बेदर्दी कोई तापे किसी का घर जले।

सुरैया—आंखें सेंकवानेवालियां और होती हैं।

थानेदार—इतने दिनों से दुनिया में आवारा फिरती हो और कहती हो, हम नेक। वाह री नेकी !

सुरैया—तुमसे नेकी की सनद तो नहीं मांगती।

थानेदार—अब इस वक्त तुम्हारी सूरत देखने को जी नहीं चाहता।

सुरैया—अच्छा, आप अलग रहें। हमारी सूरत न देखिए, बस छुट्टी हुई।

थानेदार—हमको मलाल यह है कि नौकरी मुफ्त गयी।

सुरैया—मजबूरी !!

नवासी

सुरैया बेगम ने अब थानेदार के साथ रहना मुनासिब न समझा। रात को जब थानेदार खा-पीकर लेटा तो सुरैया बेगम वहां से भागी। अभी सोच ही रही थी कि एक चौकीदार मिला। सुरैया बेगम को देखकर बोला-आप कहां? मैंने आपको पहचान लिया है। आप ही तो थानेदार साहब के साथ उस मकान में ठहरी थीं। मालूम होता है, रूठकर चली आयी हो। मैं खूब जानता हूं।

सुरैया-हां, है तो यही बात, मगर किसी से जिक्र न करना।

चौकीदार-क्या मजाल, मैं नवाबों और रईसों की सरकार में रहा हूं।

बेगम-अच्छा, मैं इस वक्त कहां जाऊं?

चौकीदार-मेरे घर।

बेगम-मगर किसी पर जाहिर न होने पाये, वरना हमारी इज्जत जायगी।

बेगम साहब चौकीदार के साथ चलीं और थोड़ी देर में उसके घर जा पहुंचीं। चौकीदार की बीबी ने बेगम की बड़ी खातिर की और कहा-कल यहां मेला है, आज टिक जाओ। दो-एक दिन में चली जाना।

सुरैया बेगम ने रात वहीं काटी। दूसरे दिन पहर दिन चढ़े मेला जमा हुआ। चौकीदार के मकान के पास एक पादरी साहब खड़े वाज कर रहे थे। सैकड़ों आदमी जमा थे। सुरैया बेगम भी खड़ी होकर वाज सुनने लगीं। पादरी साहब उसको देखकर भांप गये कि यह कोई परदेशी औरत है। कहीं से भूल-भटककर यहां आ गयी है। जब वाज खत्म करके चलने लगे तो सुरैया बेगम से बोले-बेटी, तुम्हारा घर यहां तो नहीं है?

सुरैया-जी नहीं, बदनसीब औरत हूं। आपका वाज सुनकर खड़ी हो गयी।

पादरी-तुम यहां कहां ठहरी हो?

सुरैया-सोच रही हूं कि कहां ठहरूं।

पादरी-मेरा मकान हाजिर है, उसे अपना घर समझो। मेरी उम्र अस्सी वर्ष से ज्यादा है। अकेले पड़ा रहता हूं। तुम मेरी लड़की बनकर रहना।

दूसरे दिन जब पादरी साहब गिरजाघर में आये, तो उनके साथ एक नाजुक बदन मिस कीमती अंगरेजी कपड़े पहने आयी और शान से बैठ गयी। लोगों को हैरत थी कि या खुदा, इस बुड्ढे के साथ यह परी कौन है ! पादरी साहब ने उसे भी पास की कुर्सी पर बैठाया। इस औरत की चाल-ढाल से पाया जाता था कि कभी सोहबत में नहीं बैठी है। हर चीज को अजनबियों की तरह देखती थी।

रंगीले जवानों में चुपके-चुपके बातें होने लगीं-

टाम-कपड़े अंगरेजी हैं, रंग गोरा, मगर जुल्फ सियाह है और आंखें भी काली। मालूम होता है, किसी हिन्दोस्तानी औरत को अंगरेजी कपड़े पहना दिये हैं।

डेविस-इस काबिल है कि जोरू बनायें।

टाम-फिर आओ, हम-तुम डोरे डालें, देखें, कौन खुशनसीब है।

डेविस-न भई, हम यों डोरे डालने वाले आदमी नहीं। पहले मालूम तो हो कि है कौन? चाल-चलन का भी तो कुछ हाल मालूम हो। पादरी साहब की लड़की तो नहीं

है। शायद किसी औरत को बपतिस्मा दिया है।

तीन हिन्दोस्तानी आदमी भी गिरजा गये थे। उनमें यों बातें होने लगीं–

मिरजा–उस्ताद, क्या माल है, सच कहना?

लाला–इस पादरी के तो कोई लड़का-बाला नहीं था।

मुंशी–वह था या नहीं था, मगर सच कहना, कैसी खूबसूरत है !

नमाज के बाद जब पादरी साहब घर पहुंचे तो सुरैया से बोले–बेटी, हमने तुम्हारा नाम मिस पालेन रखा है। अब तुम अंगरेजी पढ़ना शुरू करो।

सुरैया–हमें किसी चीज के सीखने की आरजू नहीं है। बस, यही जी चाहता है कि जान निकल जाय। किसका पढ़ना और कैसा लिखना। आज से हम गिरजाघर न जायंगे।

पादरी–यह न कहो बेटी ! खुदा के घर जाना अपनी आकबत बनाना है। यह खुदा का हुक्म है।

सुरैया–अगर आप मुझे बेटी समझते हैं तो मैं भी आपको अपना बाप समझती हूं, मगर मैं साफ-साफ कहे देती हूं कि मैं ईसाई मजहब न कबूल करूंगी।

रात को जब सुरैया बेगम सोयी, तो आज़ाद की याद आयी और यहां तक रोयीं कि हिचकियां बंध गयीं।

पादरी साहब चाहते थे कि यह लड़की किसी तरह ईसाई मजहब अख्तियार कर ले, मगर सुरैया बेगम ने एक न सुनी। एक दिन वह बैठी हुई कोई किताब पढ़ रही थी कि जानसन नाम का एक अंगरेज आया और पूछने लगा–पादरी साहब कहां हैं?

सुरैया–मैं अंगरेजी नहीं समझती।

जानसन–(उर्दू में) पादरी साहब कहां हैं?

सुरैया–कहीं गये हैं।

जानसन–मैंने कभी तुमको यहां नहीं देखा था।

सुरैया–जी हां, मैं यहां नहीं थी।

जानसन–यह कौन-सी किताब है?

सुरैया–सेनेका की नसीहतें हैं। पादरी साहब मुझे यह किताब पढ़ाते हैं।

जानसन–मालूम होता है, पादरी साहब तुम्हें भी 'नन' बनाना चाहते हैं।

सुरैया–नन किसे कहते हैं?

जानसन–नन उन औरतों को कहते हैं जो जिंदगी भर क्वांरी रहकर मसीह की खिदमत करती हैं। उनका सिर मुंडा दिया जाता है और आदमियों से अलग एक मकान में रख दी जाती हैं।

सुरैया–यह तो बड़ी अच्छी बात है। मैं भी चाहती हूं कि उन्हीं में शामिल हो जाऊं और तमाम उम्र शादी न करूं।

जानसन ने यह बातें सुनीं तो और ज्यादा बैठना फुजूल समझा। हाथ मिलाकर चला गया।

सुरैया बेगम यहां आ तो फंसी थीं, मगर भाग निकलने का मौका ढूंढ़ती थीं। इस तरह तीन महीने गुजर गये !

नब्बे

नेपाल की तराई में रियासत खैरीगढ़ के पास एक लक व दक जंगल है। वहां कई शिकारी शेर का शिकार करने के लिए आये हुए हैं। एक हाथी पर दो नौजवान बैठे हुए हैं। एक का सिन बीस-बाईस बरस का है, दूसरे का मुश्किल से अट्ठारह का। एक का नाम है वजाहत अली, दूसरे का माशूक हुसैन। वजाहत अली दोहरे बदन का मजबूत आदमी है। माशूक हुसैन दुबला-पतला छरहरा आदमी है। उसकी शक्ल-सूरत और चाल-ढाल से ऐसा मालूम होता है कि अगर इसे जनाने कपड़े पहना दिये जायं, तो बिल्कुल औरत मालूम हो। पीछे-पीछे छह हाथी और आते थे। जंगल में पहुंचकर लोगों ने हाथी रोक लिये ताकि शेर का हाल दरियाफ्त कर लिया जाय कि कहां है। माशूक हुसैन ने कांपकर कहा—क्या शेर का शिकार होगा? हमारे तो होश उड़ गये। अल्लाह के लिए हमें बचाओ। मेरी तो शेर के नाम ही से जान निकल जाती है। तुमने तो कहा था हिरनी और पाढे का शिकार खेलने चलते हैं।

वजाहत अली—वाह इसी पर कहती थीं कि हम बन-बन फिरे हैं। भूत-प्रेत से नहीं डरते। अब क्या हो गया कि जरा-सा शेर का नाम सुना और कांप उठीं !

माशूक हुसैन—शेर जरा-सा होता है ! ऐ, वह इस हाथी का कान पकड़ ले तो चिंघाड़कर बैठ जाय। निगोड़ा हाथी बस देखने ही भर को होता है। इसके बदन में खून कहां। बस, पानी ही पानी है।

वजाहत अली—अव्वल तो शेर का शिकार नहीं है, और अगर शेर आया भी तो हम उसका मुकाबिला कर सकेंगे। अट्ठारह-अट्ठारह निशानेबाज़ साथ हैं। इनमें दो-तीन आदमी तो ऐसे बढ़े हुए हैं कि रात के वक्त आवाज पर तीर लगाते हैं। क्या मजाल कि निशाना खाली जाय। तुम घबराओ नहीं, ऐसा लुत्फ आयेगा कि सारी उम्र याद करोगी।

माशूक हुसैन—तुम्हें कसम है, हमें यहां से कहीं भेज दो। अल्लाह ! कब यहां से छुटकारा होगा। ऐसी बुरी फंसी कि कुछ कहा नहीं जाता।

नवाब साहब ने मुस्किरा कर पूछा—किससे?

माशूक हुसैन—ऐ, हटो भी ! तुम्हें दिल्लगी सूझी है और हम क्या सोच रहे हैं। शेर ऐसा जानवर, एक थप्पड़ में देव को सुला दे। आदमी जरी सा भुनगा, चले हैं शेर के शिकार को ! हाथी रोक लो, नहीं अल्लाह जानता है, हम हाथी पर से कूद पड़ेंगे। बला से जान जाय या रहे।

नवाब—हैं-हैं। जान तुम्हारे दुश्मनों की जाय। आखिर इतने आदमियों को अपनी जान प्यारी है या नहीं? कोई और भी चूं करता है?

माशूक—इतने आदमी जायं चूल्हे में। इन मुओं को जान भारी हुई है। यह घर से लड़कर आये हैं। जोरू ने जूतियां मार-मारकर निकाल दिया है। इनकी और मेरी कौन-सी बराबरी। हमें उतार दो, हम अब जायंगे।

नवाब—जरा ठहरो तो, मैं बंदोबस्त किये देता हूं। किसी बड़े दरख्त पर एक मचान बांध देंगे। बस, वहीं से बैठके देखना?

माशूक—वाह, जरी सा मचान और जंगल का वास्ता ! अकेली डर न जाऊंगी?

हां, तुम भी बैठो तो अलबत्ता !

नवाब–यह तो बड़े शर्म की बात है कि हम मर्द होकर मचान पर बैठें और लोग शिकार खेलें।

माशूक–इन लोगों से कह दो कि हमारे दोस्त की यही राय है। डर किस बात का है? साफ-साफ कह दो कि यह औरत हैं और हमारा इनके साथ निकाह होनेवाला है।

नवाब–यह नहीं हो सकता। यह मशहूर करना कि एक कमसिन औरत को मर्दाना कपड़े पहनाकर यहां लाये हैं, मुनासिब नहीं।

इतने में आदमियों ने आकर कहा–हुजूर, सामने एक कछार है। उसमें एक शेरनी बच्चों के पास बैठी है। इसी दम हाथी को पेल दीजिए।

इतना सुनना था कि नवाब साहब ने खिदमतगार को हुक्म दिया–इनको एक शाली रूमाल और पचास अशर्फियां आज ही देना। हाथी के लिए पेल का लफ्ज खूब लाये! सुभान-अल्लाह !

इस पर मुसाहबों ने नवाब साहब की तारीफों के पुल बांध दिये।

एक–सुभान-अल्लाह, वाह मेरे शाहजादे। क्यों न हो।

दूसरा–खुदा आपको एक हजार बरस की उम्र दे। हातिम का नाम मिटा दिया। रियासत इसे कहते हैं।

नवाब–अच्छा, अब सब तैयार हो और कछार की तरफ हाथी ले चलें।

माशूक–अरे लोगो, यह क्या अंधेर है। आखिर इतनों में किसी के जोरू-जांता भी है या सब निहंग-लाडले, बेफिकरे, उठाऊ-चूल्हे ही जमा हैं। खुदा के लिए इनको समझाओ। इतनी-सी जान, गोली लगी और आदमी टें से रह गया। आदमी में है क्या ! अल्लाह करे, शेर न मिले। मुई बिल्ली से तो डर लगता है। शेर की सूरत क्योंकर देखूंगी। भला इतना बताओ कि बंधा होगा या खुला? तमाशे में हमने शेर देखे थे, मगर सब कठघरों में बंद थे।

एकाएक दो पासियों ने आकर कहा कि शेरनी कछार से चली गयी ! नवाब साहब ने वहीं डेरा डाल दिया और माशूक हुसैन के साथ अंदर आ बैठे।

नवाब–यह बात भी याद रहेगी कि एक बेगम साहब बहादुरी के साथ शेर का शिकार खेलने को गयीं?

माशूक–ऐ वाह ! जो शरीफजादी सुनेगी, अपने दिल में यही कहेगी कि शरीफ की लड़की और इतनी ढीठ। भलेमानस की बहू-बेटी वह है कि जंगल के कुत्ते का नाम सुनते ही बदन के रोयें खड़े हो जायं। अकेले कमरे में बिल्ली आये तो थरथर कांपने लगे। ख्वाब में भी रस्सी देखे तो चौंक पड़े। अच्छी पट्टी पढ़ाते हो !

दूसरे दिन नवाब साहब ने शिकारी लिबास पहना। खेमे से निकले। माशूक हुसैन भी पीछे से निकले, मगर इस वक्त बेगमों की पोशाक में थे और बेगम भी कौन? वही सुरैया, जो मिस पालेन बनी हुई पादरी साहब के साथ रही थी। ऐसा मालूम हुआ, कोई परी पर खोले चली आती है। नवाब साहब ने कहा–

आगाजे इश्क ही में हमें मौत आ गयी,
आगाह भी न हाल से बेखबर हुआ।

सुरैया बेगम ने तिनक के कहा—बस, यह मनहूस बातें हमें एक आंख नहीं भातीं, मरने-जीने का कौन जिक्र है?

नवाब—सुनिए हुजूर ! जो आप आंखें दिखलायेंगी तो हम भी बिगड़ जायेंगे। इतना याद रखिए।

सुरैया—खुदा के लिए जरा हया से काम लो। इन सबके सामने हमें रुसवा न करो। वह शरीफजादी क्या, जो शर्म से मुंह मोड़े। इतने आदमी खड़े हैं और तुमको कुछ ख्याल ही नहीं।

खुदा का कह्र, बुतों का एताब रहता है,
इस एक जान प' क्या-क्या अजाब रहता है।

सुरैया—बस, हम न जायंगे। चाहे इधर की दुनिया उधर हो जाय।

नवाब साहब ने कदमों पर टोपी रख दी, और कहा—मार डालो, मगर साथ चलो; वरना घुट-घुट के जान जायगी।

बारे खुदा-खुदा करके बेगम साहब उठीं। इतने में चौकीदार ने आकर कहा—खुदावंद, दो शेर जंगल में दिखाई दिये हैं। अब भी मौका है, वरना शेरनी की तरह वह भी भाग जायेंगे और फिर शिकार न मिलेगा।

बेगम—आदमी कैसे मुए जान के दुश्मन हैं !

नवाब साहब ने हुक्म दिया कि हाथी को बैठाओ। पीलवान ने 'बरी-बरी' कह कर हाथी को बैठाया। तब जीना लगाया गया। बेगम साहब ने जीने पर कदम रखा, मगर झिझककर उतर गयीं।

नवाब—पहली बार तो बेझिझक बैठ गयी थीं, अबकी डरती हो।

बेगम—ऐ लो, उस बार कहा था कि मुर्गाबी का शिकार होगा।

नवाब—शेर का शिकार आसान है, मुर्गाबी का शिकार मुश्किल है।

बेगम—चलिए, रहने दीजिए। हमने कच्ची गोलियां नहीं खेली हैं। यहां रूह कांप रही है कि या खुदा, क्या होगा?

नवाब—होगा क्या? कुछ भी नहीं।

आखिर बेगम साहब भी बैठीं। नवाब साहब भी बैठे। हवाली-मवाली भी दूसरे हाथियों पर बैठे और हाथी झूमते हुए चले। थोड़ी देर के बाद लोग एक झील के पास पहुंचे। शिकारी ने कहा—झील में पानी कम है, हाथी निकल जायेंगे।

बेगम—क्या कहा ! क्या इस समुंदर में से जाना होगा?

नवाब—अभी दम के दम में निकले जाते हैं।

बेगम—कहीं निकले न? हमें यहां डुबोने लाये हो? जरी हाथी का पांव फिसला और चलिए, पानी के अंदर गोते खाने लगे।

नवाब साहब ने बहुत समझाया, तब बेगम साहब अपने हाथी को झील के अंदर डालने पर राजी हुईं, मगर आंखें बंद कर लीं और गुल मचाया कि जल्दी निकल चलो। पांच हाथी तो साथ-साथ चले, दो पीछे थे। नवाब साहब ने कहा—अब आंखें खोल दो, आधी दूर चले आये हैं, आधी दूर और बाकी है। बेगम ने आंखें खोलीं तो झील की कैफियत देखकर खिल उठीं। किनारों पर ऊंचे-ऊंचे दरख्त झूम रहे थे। कोई झील के

पानी को चूमता था, किसी की शाखें झील की तरफ झुकी थीं। बेगम ने कहा–अब हमें डर नहीं मालूम होता। मगर अल्लाह करे, कोई शेर आज न मिले।

नवाब–खुदा न करे।

बेगम–वाह ! आ जाय क्या मजाल है। हम मंतर पढ़ देंगे।

नवाब–भला आप इतनी हुईं तो !

बेगम–अजी, मैं तुम सबको बनाती हूं, डर कैसा ! मगर कहीं शेर सचमुच निकल आये, तो गजब ही हो जाय। सुनते ही रोयें खड़े होते हैं।

इस झील के उस पार कछार था और कछार में एक शेरनी अपने बच्चों को लिये बैठी थी। खेदे के आदमियों ने कहा–हुजूर, अब हाथी रोक लिये जायं। सुरैया बेगम कांप उठीं। हाय ! क्या हुआ। यह शेरनी कहां से निकल आयी। या तो उसको कजा लायी है या हमको।

नवाब साहब ने हुक्म दिया, खेदा किया जाय। तीस आदमी बड़े-बड़े कुत्ते लेकर कछार की तरफ दौड़े। सुरैया बेगम बहुत सहमी हुई थीं। फिर भी शिकार में एक किस्म का लुत्फ भी आता था। एकाएक दूर से रोशनी दिखाई दी। बेगम ने पूछा–वह रोशनी कैसी है? नवाब बोले–शेरनी निकली होगी और शायद हमला किया हो। इसीलिए रोशनी की गयी कि डर से भाग जाय।

शेरनी ने जब आदमियों की,आवाज सुनी, तो घबरायी। बच्चों को एक ऐसी जगह ले गयी जहां आदमी का गुजर मुहाल था। खेदे के लोग समझे कि शेरनी भाग गयी। सुरैया बेगम यह खबर सुनकर खिलखिलाकर हंस पड़ीं। लो, अब खेलो शिकार, बड़े वह बनकर चले थे ! हमारी दुआ और कबूल न हो?

नवाब–आज बे-शिकार किये न जायेंगे। लो, कसम खायी।

नवाब साहब रईस तो थे ही, कसम खा बैठे। एक मुसाहब ने कहा–हुजूर, मुमकिन है कि शेर आज न मिले। कसम खाना ठीक नहीं।

नवाब–हम हरगिज खाना न खायेंगे जब तक शेर का शिकर न करेंगे। इसमें चाहे रात हो जाय, शेर का जंगल में न मिलना कैसा !

बेगम–खुदा तुम्हारी बात रख ले।

मुसाहब–जैसी हुजूर की मर्जी।

बेगम–खुदा के लिए अब भी चले चलो। क्या तुम पर कोई जिन सवार है या किसी ने जादू कर दिया है। अब दिन कितना बाकी है?

नवाब–दिन कितना ही हो, हम शिकार जरूर करेंगे।

बेगम–तुम्हें बायें हाथ का खाना हराम है जो शेर का शिकार खेले बगैर जाओ।

नवाब–मंजूर ! जब तक शेर का शिकार न करेंगे, खाना न खायेंगे।

बेगम–बात तो यही है, खुदा तुम्हारी बात रख ले। ओ लोगो, कोई इनको समझाओ, यह किसी का कहना नहीं मानते, कोई सलाह देने वाला भी है या नहीं?

एक मुसाहब–हुजूर ने तो कसम खा ली, लेकिन साथ के सब आदमी भूखे-प्यासे हैं, उनके हाल पर रहम कीजिए, वरना सब हलकान हो जायंगे।

नवाब–हमको किसी का गम नहीं है, कुछ परवा नहीं है। अगर आप लोग हमारे

साथी हैं तो हमारा हुक्म मानिए।

बेगम—शाम होने को आयी, और शिकार का पता नहीं, फिर अब यहां ठहरना बेवकूफी है या और कुछ?

बरकत—हुजूर ही के सब कांटे बोये हैं।

इतने में खेदे वालों ने कहा—खुदावंद, अब होशियार रहिए। शेरनी आती है। अब देर नहीं है। कछार छोड़कर पूरब की तरफ भागी थी। हम लोगों को देखकर इस जोर से गरजी कि होश उड़ गये, अट्ठाईस आदमी साथ थे, अट्ठाईसों भाग गये। उस वक्त कदम जमाना मुहाल था। शेर का कायदा है कि जब गोली लगती है तो आग हो जाता है। फिर गोली के बाप की नहीं मानता। अगर बम का गोला भी हो तो वह इस तरह आयेगा जैसे तोप का गोला आता है। और शेरनी का कायदा है कि अगर अपने बच्चों के पास हो और सारी दुनिया के गोले कोई लेकर आये तो भी मुमकिन नहीं कि उसके बच्चों पर आंच आ सके।

बेगम—बंधी है या खुली हुई है? तमाशे वाले शेरों की तरह कठघरे में बंद है न?

मुसाहब—हां-हां साहब, बंधी हुई है।

बेगम—भला उसको बांधा किसने होगा?

अब एक दिल्लगी सुनिए। एक हाथी पर दो बंगाली थे। उन्होंने इतना ही सुना था कि नवाब साहब शिकार के लिए जाते हैं। अगर यह मालूम होता कि शेर के शिकार को जाते हैं तो करोड़ बरस न आते। समझे थे कि झीलों में चिड़ियों का शिकार होगा। जब यहां आये और सुना कि शेर का शिकार है तो जान निकल गयी। एक का नाम कालीचरण घोष, दूसरे का शिवदेव बोस था। इन दोनों में यों बातें होने लगीं।

बोस—नवाब हमको बड़ा धोखा दिया, हम नहीं जानता था कि यह लोग हमारा दुश्मन है।

घोष—हम इनसे समझेगा। ओ शाला फील का बान, हमारे को कीधर ले जायगा?

फीलबान ने हाथी को और भी तेज किया तो यह दोनों साहब चिल्लाये।

बोस—ओ शाला !

घोष—ओ शाला फील का बान, आच्छा हम शाहब के यहां तुम्हारा नालिश करेगा। अरे बाबा, हम लोग जाने नहीं मांगता। शेर शाला का मुकाबिला कौन करने सकता?

फीलबान—बाबू जी, डरो नहीं। अभी तो शेर दूर है। जब हौदा पकड़ लेगा तब दिल्लगी होगी, अभी शाला-शाला कहते जाओ।

बोस—अरे भाई, तुम हमारे का बाप, हमारे का बाप का बाप, हम हाथी को फेरने मांगता। ओ शाला, तुम आरामजादा।

फीलबान—अच्छा बाबू, देते जाओ गालियां। खुदा की कसम, शेर के मुंह में हाथी न ले जाऊं तो पाजी।

बोस—बाप रे बाप, हमारे को बचाओ, हम रिशवत देगा। हमारा बाप है, मां है, सब तुम है।

जितने आदमी साथ थे, सब हंस रहे थे। इन दोनों की घबराहट देखने काबिल थी। कभी फीलबान के हाथ जोड़ते, कभी टोपी उतारकर खुदा से दुआ मांगते थे, कभी जंगल

की तरफ देखकर कहते थे—बाबा, हमारा जान लेने को हम यहां आया। हमारा मौत हमको यहां लाया। अरे बाबा, हम लोग लिखने-पढ़ने में अच्छा होता है। हम लोग बिलायत जाकर अंगरेजी सीखता है। हम कभी शेर का शिकार नहीं करता, हमारा अपना जान से बैर नहीं है। ओ फील का बान, हम खबर के कागज में तुम्हारा तारिप छापेगा।

फीलबान—आप अपनी तारीफ रहने दें।

बोस—नहीं, तुम्हारा नाम हो जायेगा। बड़ा-बड़ा लोग तुम्हारा नाम पढ़ेगा तो बोलेगा, यह फील का बान बड़ा होशियार है, तुम पचास-साठ का नौकर हो जायेगा। हम तुमको नौकर रखा देगा।

फीलबान—पचास-साठ ! इतने रुपये मैं रखूंगा कहां? अच्छा दूसरी शादी कर लूंगा, मगर तारीफ किस बात की लिखिएगा। जरा हाथी दौड़ाऊं?

बोस—तुम बड़ा नटखट है। ओ शाला, तुम फिर दौड़ाया?

जब झील के करीब पहुंचे, तो दोनों बंगाली और भी डरे। घोष ने पूछा—ओ फील का बान, इस झील में कित्ता गहरा?

फीलबान ने कहा—हाथी-डुबाव है।

घोष—और इस झील के अंदर से हम लोग को जाने होगा भी।

फीलबान—जी हां, इसी में से जाने होगा भी।

घोष—और जो हाथी का पांव फिसल गयी तो हम लोग का क्या....।

फीलबान—अगर हाथी का पांव फिसल गयी तो तुम लोग का टांग और नाक टूट जायगा, बस और कुछ न होगा, और मुंह बिगड़ जायगी तुम लोग की।

घोष—और तुम शाला कहां से बचने सकेगा?

फीलबान—हम उम्र भर हाथी पर चढ़ा किए हैं। हाथी फिसले तो डर नहीं और बह जाये तो खौफ नहीं।

घोष—बाबा, तुम्हारी हाथी पानी से डरती है या नहीं? हमसे शाच-शाच कह दो।

फीलबान—तुम इतना डरता था तो आया क्यों !

घोष—अरे बाबा, गोली लगने से तो सब कोई डरता है? जान फेर के आने सकेगा नहीं।

फीलबान ने हाथी को झील में डाला, तो इन दोनों ने वह चिल्ल-पों मचायी कि कुछ न पूछो। एक बोला—हम डूब गया। तो हमारा जागीर किसके पास जायेगा !

फीलबान मुसकिराकर बोला—वहीं से सब लिख के भेज दीजिएगा।

घोष—ओ शाला, तू हमारा जान लेगा ! तुम जान लेगा शाला !

फीलबान—बाबू, गोल-माल न करो, खुदा को याद करो।

घोष—गोल-माल तुम करता है कि हम करता है?

बोस—हाथी हिलेगी तो हम तुमको ढकेल देगा, तुम मर जायेगा !

घोष—अरे बाबा, घूस ले-ले, हम बहुत से रूपये देने सकता।

फीलबान—अच्छा, एक हजार रुपया दीजिए तो हम हाथी को फेर दें। भले आदमी, इतना नहीं सोचते कि पांच हाथी तो उस पार निकल गये और एक हाथी पीछे आ रहा है। किसी का बाल बांका नहीं हुआ तो क्या आप ही डूब जायेंगे ! क्या जान आप ही

को प्यारी है?

घोष–अरे बाबा, तुम बात न करे। तुम हाथी का ध्यान करे, जो पांव फिसलेगी तो बड़ी गजब हो जायेगा।

फीलबान–अजी, न पांव फिसलेगी, न बड़ी गजब होगा। बस चुपचाप बैठे रहिए। बोलिए-चालिए नहीं।

घोष–किस माफिक नहीं बोलेगा, जरूर करके बोलेगा, ओ शाला ! तुम्हारा बाप आज ही मर जाय।

फिलबान–हमारा बाप तो कब का मर चुका, अब तुम्हारी नानी मरने की बारी है।

फीलबान ने मारे शरारत के हाथी को दो-तीन बार अंकुश लगाया, तो दोनों आदमी समझे कि बस, अब जान गयी। आपस में बातें करने लगे–

घोष–आमी दुई जानी डूबी जाबो।

बोस–ई, हाथीबाला बड़ो बोरू।

घोष–जोनी आये बची आज, तेखे दली कोरा आम आर शिकार खेलने जावेना।

बोस–तुमी अमाए जाबरदस्ती नीए एछो।

घोष–आमारा प्रान भवाए आचे।

बोस–हाथी रोक ले ओ शाला !

फीलबान–बाबू जी, अब हाथी हमारे मान का नहीं। अब इसका पांव फिसला चाहता है, जरा संभले रहिएगा।

नवाब साहब ने दोनों आदमियों का रोना-चीखना सुना तो महावत से बोले–खबरदार जो इनको डरायेगा तो तू जानेगा।

घोष–नवाब शाब, हमारा मदद करो, अब हम जाता है बैकुंठ।

महावत ने आहिस्ता से कहा–बैकुंठ जा चुके, नरक में जाओगे।

इस पर घोष बाबू बहुत बिगड़े और गालियां देने लगे। तुम शाला को पानी के बाहर जाके हम मार डालेगा।

महावत ने कहा–जब पानी के बाहर जा सको न।

घोष–नवाब शाब, यह शाला हमारे को गाली देता।

नवाब–गाली कैसी बाबू, आप इतना घबराते क्यों हैं?

घोष–हमारे को यह शाला गाली देते हैं।

नवाब–क्यों बे, खबरदार जो गाली-गलौज की।

फीलबान–हुजूर, मैं ऐसी सवारी से दरगुजरा, इनको चारों तरफ मौत ही मौत नजर आती है। इन्हें आप शिकार में क्यों लाये?

बोस–अरे शाले का शाला, तुम बात करेगा, या हाथी को देखेगा? अरे बाबा, अब हम ऐसी सवारी पर न आयेगा।

बारे हाथी उस पार पहुंचा, तो इन दोनों की जान में जान आयी। बोस बाबू बोले– नवाब शाब, हम इसी का साथ बड़ा तकलीफ पाया। यह महाब्रत हमारा उस जन्म का बैरी है बाबा, हम ऐसा शिकार नहीं खेलना चाहता, अब हम हाथी पर से उतर जायगा।

नवाब साहब ने फीलबान को हुक्म दिया कि हाथी को बैठाओ और बाबू लोगों से कहा—अगर आप लोगों को तकलीफ होती है तो उतर जाइए। इस पर घोष और बोस दोनों सिर पीटने लगे—अरे बाबा, इस जंगल के बीच में तुम हमको छोड़ के भागना मांगता। हम जायेगा कहां? इधर जंगल, उधर जंगल। हमारे को घर पहुंचा दो।

नवाब साहब ने कहा—अगर एक हाथी को अकेला भेज दूं तो शायद शेर या सुअर या कोई अन्य जानवर हमला कर बैठे, हाथी जख्मी हो जाय और महावत की जान पर आ बने। आप लोग गोली चलाने से रहे, फिर क्या हो?

घोष—आपको अपना हाथी प्यारा, फील का बान प्यारा, हमारा जान प्यारा नहीं। फील का बान सात-आठ रुपये का नौकर, हम लोग हेडक्लर्की करता और क्या बात करेगा। हम जान नहीं रखता, वह जान रखता है?

नवाब—अच्छा, फिर बैठे रहो, मगर डरो नहीं।

घोष—अच्छा अब हम न बोलेगा।

बोस—कैसे न बोलेगा, तुम न बोलेगा? तुम न बोलेगा तो हम बोलेगा।

घोष—तुम शाला सुअर है। तुम क्या बोलेगा? बोलेगा तो हम तुमको कतल कर डालेगा। शाला हमारे को फांस के लाया और अब जान लेना मांगता है।

बोस (धोती संभालकर) तुम दूष्ट चुप रहे। तुम नीच कोम है।

घोष—बोलेगा तो हम हलाल करेगा।

बोस—(दांत दिखाकर) हम तुमको दांत काट लेगा।

घोष—अरे तुम बोके जाय शाला, खोदजात, दूष्ट !

बोस—तुम नीच कोम, छोटा कोम, भीख मांगने वाला सुअर।

दोनों में खूब तकरार हुई। कभी घोष ने घूंसा ताना, कभी बोस ने पैंतरा बदला; मगर दोनों में कोई वार न करता था। दोनों कुंदे तोल-तोल कर रह जाते थे। नवाब साहब ने यह हाल देखा तो चाहा कि दोनों को अलग-अलग हाथियों पर बिठायें, मगर घोष ने मंजूर न किया, बोले—यह हमारा देश का, हम इसका देश का, और कोई हमारा देश का नहीं।

इतने में आदमियों ने ललकारकर कहा—खबरदार, शेरनी निकली जाती है। हुक्म हुआ है कि हाथी इस तरफ बढ़ाओ। सब हाथी बढ़ाये गये। एक दरख्त की आड़ में शेरनी दो बच्चे लिये हुए दबकी खड़ी थी। नवाब साहब ने फौरन गोली सर की, वह खाली गयी। नवाब साहब ने फिर बंदूक सर की, अब की गोली शेरनी के कल्ले पर जा पड़ी। गोली खाना था कि वह झल्ला कर पलट पड़ी और तोप के गोले की तरह झपटी। आते ही उसने एक हाथी को थप्पड़ लगाया तो वह चिंघाड़कर भागा। नवाब साहब ने फिर बंदूक चलायी, मगर निशाना खाली गया। शेरनी ने उसी हाथी को जिसे थप्पड़ मारा था, कान पकड़कर बैठा दिया। बारे चौथा निशाना ऐसा पड़ा कि शेरनी तड़पकर गिर पड़ी।

इधर तो यह कैफियत हो रही थी, उधर बंगाली बाबू दोनों हौदे के अंदर औंधे पड़े थे। आंखें दोनों हाथों से बंद कर ली थीं। बेगम साहब ने उन्हें हौदे में बैठे न देखा तो पूछा—क्या वह दोनों बाबू भाग गये?

फीलबान—नहीं खुदावंद, मैं हाथी बढ़ाये लाता हूं।

हाथी करीब आया तो नवाब साहब दोनों बंगालियों को देखकर इतना हंसे कि पेट में बल पड़-पड़ गये।

नवाब—अब उठोगे भी या सोते ही रहोगे? बाबू जी तो बोलते ही नहीं।

बेगम—क्या अच्छे आदमी थे बेचारे !

नवाब—मगर चल बसे। अभी बातें कर रहे थे।

बेगम—अब कुछ कफन-दफन की फिक्र करोगे या नहीं।

फीलबान ने कंधा पकड़कर हिलाया तो बोस बाबू उठे। उठते ही शेरनी की लाश देखी, तो कांपकर बोले—नवाब शाब, शाच-शाच बोलो कि यह मिट्टी का शेर है या ठीक-ठीक शेर है? हम समझ गया कि मिट्टी का है।

नवाब—आप तो हैं पागल।

घोष—आप लोग जान को कुछ नहीं समझता?

बोस—ये लोग गंवार हैं। हम लोग एम॰ ए॰, बी॰ ए॰ पास करता है। हम लोग बहुत-सा बात ऐसा करता है कि आप लोग नहीं करने सकता।

नवाब—अच्छा, अब हाथी से तो उतरो।

फीलबान—बाबू साहब, शेरनी तो मर गयी; अब क्या डर है।

दोनों बाबुओं ने हाथी से उतरकर शेरनी की तरफ देखना शुरू किया, मगर आगे कोई नहीं बढ़ता।

बोस—आगे बढ़ो महाशाई।

घोष—तुम्हीं बढ़ो, तुम बड़ा मर्द है तो तुम बढ़े।

नवाब—बढ़ना नहीं। खबरदार, बढ़े और शेर खा गया।

घोष—बाबा, अब चाहे जान जाता रहे, पर हम उसके पास जरूर करके जायेगा।

यह कहकर आप आगे बढ़े, मगर फिर उलटे पांव भागे और पीछे फिर कर भी न देखा।

इक्यानवे

जब रात का सब लोग खा-पीकर लेटे, तो नवाब साहब ने दोनों बंगालियों को बुलाया और बोले—खुदा ने आप दोनों साहबों को बहुत बचाया, वरना शेरनी खा जाती।

बोस—हम डरता नहीं था, हम शाला ईश फील का बान को मारना चाहता था कि हम ईश देश का आदमी नहीं है। इस माफिक हमारे को डराने सकता और हाथी को बोदजाती से हिलाने मांगे। जब तो हम लोग बड़ा गुस्सा हुआ कि अरे सब लोग का हाथी हिलने नहीं मांगता, तुम क्यों हिलने मांगता है और हमसे बोला कि बाबू शाब, अब तो मरेगा। हाथी का पांव फिसलेगी और तुम मर जायंगे। हम बोला—अरे, जो हाथी की पांव फिसल जाएगी तो तुम शाले का शाला कहां बच जाएगा? तुम भी तो हमारा एक साथ मरेगा।

नवाब–अच्छा, जो कुछ हुआ सो हुआ। अब यह बतलाइए कि कल शिकार खेलने जाइएगा या नहीं?

बोस–जाएगा जो जरूर करके, मगर फील का बान बोदजाती करेगा, तो हम आपका बुराई छपवा देगा। हमारे हाथी पर बेगम शाब बैठे तो हम चला जाएगा।

सुरैया–बेगम साहब तो तुझ ऐसों को अपना साया तक न छूने दें। पहले मुंह तो बनवा !

बोस–अब हमारे को डर पास नहीं आते, हम खूब समझ गया कि जान जाने वाला नहीं है।

नवाब–अच्छा जाइए, कल आइएगा।

जब नवाब और सुरैया बेगम अकेले रह गए तो नवाब ने कहा–देखो सुरैया बेगम, इस जिंदगी का कोई भरोसा नहीं। अभी कल की बात है कि शाहजादा हुमायूं फर के निकाह की तैयारियां हो रही थीं और आज उनकी कब्र बन रही है। इसलिए इनसान को चाहिए की जिंदगी के दिन हंसी-खुशी से काट दे। यहां तो सिर्फ यही ख्वाहिश है कि हम हों और तुम हो। मुझे किसी से मतलब न सरोकार। अगर तुम साथ रहो तो खुदा गवाह है, बादशाही की हकीकत न समझूं। अगर यकीन न आए तो आजमा लो।

बेगम–आप साफ-साफ अपनी मंशा बतलाइए। मैं आपकी बात कुछ नहीं समझी।

नवाब–साफ-साफ कहते हुए डर मालूम होता है।

बेगम–नहीं, यह क्या बात है, आप कहें तो।

नवाब–(दबी जबान से) निकाह !

बेगम–सुनिए, मुझे निकाह में कोई उज्र नहीं। आप अव्वल तो कमसिन, दूसरे रईसजादे, तीसरे खूबसूरत, फिर मुझे निकाह में क्या उज्र हो सकता है। लेकिन रफ्ता-रफ्ता अर्ज करूंगी कि किस सबब से मुझे मंजूर नहीं।

नवाब–हाय-हाय ! तुमने यह क्या सितम ढाया?

बेगम–मैं मजबूर हूं, इसकी वजह फिर बयान करूंगी।

नवाब–अगर मंजूर नहीं तो हमें कत्ल कर डालो। अब छुट्टी हुई। अब जिंदगी और मौत तुम्हारे हाथ है।

दूसरे दिन नवाब साहब सो ही रहे थे कि खिदमतगार ने आकर कहा–हुजूर, और सब लोग बड़ी देर से तैयार हैं, देर हो रही है।

नवाब साहब ने शिकारी लिबास पहना और सुरैया बेगम के साथ हाथी पर सवार होकर चले।

बेगम–वह बाबू आज कहां हैं? मारे डर के न आते होंगे। !

बोस–हम तो आज शुबू से ही साथ-साथ हैगा। अब हमारे को कुछ खोफ लगती नहीं।

बेगम–बाबू, तुम्हारे को हाथी तो नहीं हिलती?

घोष–ना, आज हाथी नहीं हिलती। कल की बात कल के साथ गया।

हाथी चले। थोड़ी दूर जाने पर लोगो ने इत्तला दी कि शेर यहां से आध मील पर है और बहुत बड़ा शेर है। नवाब साहब ने खुश होकर कहा–हाथियों को दौड़ा दो। बाबुओं

के फीलबान ने जो हाथी तेज किया, तो बोस बाबू मुंह के बल जमीन पर आ रहे।

घोष–अरे, शाला, जमीन पर गिरा दिया !

फीलबान–चुप-चुप, गुल न मचाइए मैं हाथी रोके लेता हूं।

घोष–गुल न मचाएं तो फिर क्या मचाएं?

फीलबान–वह देखिए, बाबू साहब उठ बैठे, चोट नहीं आई।

घोष–महाशाई, लागे ने तो?

बोस–बड़ी बोद लोग।

घोष–अपना समाचार बोलो।

बोस–अपना समाचार की बोलबो बाबा !

मिस्टर बोस झाड़-पोंछ कर उठे और बाबा महावत को हजारों गालियां दीं।

बोस–महाशाई, तुम ईश को मारो, मारो ईश दुष्ट को।

घोष–ओ शाला, तुम्हारा शिर पर बाल नहीं, हम पट्टे पकड़कर तुमको मार डालने मांगता।

फीलबान हंस दिया। इस पर बोस आग हो गए, और कई ढेले चलाए, मगर कोई ढेला फीलबान तक न पहुंच सका। फीलबान ने कहा–हुजूर, अब हाथी पर बैठ लें तो हम नवाब साहब के हाथियों से मिला दें। बोस बोले–हम डरपोक आदमी नहीं हैं। हम महाराज बड़ौदा के यहां किसिम-किसिम का जानवर देख चुका है।

घोष–अब बातें कब तक करेगा ! आके बैठ जा।

फीलबान–हुजूर, कुरान की कसम खाकर कहता हूं, मेरा कुसूर नहीं। आप कभी हाथी पर सवार तो हुए नहीं। हौदे पर लटककर बैठे हुए थे। हाथी जो हिला तो आप भद से गिर पड़े।

बोस–हमारा दिल में आई कि तुम्हारा कान नोच डाले। हम कभी हाथी पर नहीं चढ़ा? तुम बोलता है। तुम्हारा बाप के सामने हम हाथी पर चढ़ा था। तुम क्या जानेगा।

जब शेर थोड़ी दूर पर रह गया और नवाब साहब ने देखा कि बाबूवाला हाथी नहीं है तो डरे कि न जाने उन बेचारों की क्या हालत होगी। हुक्म दिया कि सब हाथी रोक लिए जायं और धरतीधमक को दौड़ा कर ले जाओ। देखो, उन बेचारों पर क्या तबाही आई !

धरतीधमक रवाना हुआ और कोई दस-बारह मिनट में बाबू साहबों का हाथी दूर से नजर आया। जब हाथी करीब आया तो नवाब ने पूछा–बाबू साहब, खैरियत तो है? हाथी कहां रह गया था? बाबू साहबों ने कुछ जवाब न दिया; मगर फीलबान बोला–हुजूर, यह दोनों बाबू लोग आपस में लड़ते थे, इसी से देर हो गई।

अब बोस बाबू से न रहा गया। बिगड़कर बोले–ओ शाला, तुम हमारे मुंह पर झूठ बोलता है। तुम शाला बिना कहे हाथी का दौड़ा दिए. हम तो गाफिल पड़ा था।

इतने में आदमियों ने इत्तला दी कि शेर सामने की झील के किनारे लेटा हुआ है। लोग बंदूकें संभाल-संभाल कर आगे बढ़े तो देखा, एक बनैला सुअर ऊंची-ऊंची घास में छिपा बैठा है। सबकी सलाह हुई कि चारों तरफ से खाली निशाने लगाए जायं ताकि घबरा कर निकले, मगर नवाब साहब के दिल में ठन गई कि हम इस पतावर में हाथी

जरूर ले जाएंगे। सुरैया बेगम अब तक तो सैर देखती थीं मगर पतावर में जाना बहुत अखरा। बोलीं–नवाब, तुम्हारे सिर की कसम, अब हम न जाएंगे। पतावर तलवार की धार से भी ज्यादा तेज होती है। हमें किसी और हाथी पर बिठा दो।

नवाब ने दो शिकारियों को अपने हाथी पर बिठा लिया और सुरैया बेगम को दूसरे हाथी पर बिठा दिया। एक और हाथी उनके साथ-साथ उनकी हिफाजत के लिए छोड़ दिया गया। तब नवाब साहब पतावर में पहुंचे। जब सुअर ने देखा कि दुश्मन चला आ रहा है तो उठा और भाग खड़ा हुआ। नवाब साहब ने गोली चलाई। फिर और शिकारियों ने भी बंदूकें सर कीं ! सुअर तड़पकर झील की तरफ झपटा। इतने में तीसरी गोली आई। लोगों ने समझा कि अब काम तमाम हो गया। नवाब साहब को शौक चर्राया कि उसे अपने हाथ से कत्ल करें। हाथी से उतर कर तलवार म्यान ने निकाली और साथियों को झील के किनारे इधर-उधर हटा दिया कि सुअर समझे, सब चल दिए हैं। जब सुअर ने देखा कि मैदान खाली है तो आहिस्ता-आहिस्ता झील से निकला। नवाब साहब घात में थे ही, ताक कर ऐसा हाथ दिया कि बनैला बोल गया। लोगों ने चारों तरफ से वाह-वाह का शोर मचाना शुरू किया।

एक–हुजूर, यह करामात है।

दूसरा–सुभान अल्लाह, क्या तुला हुआ हाथ लगाया कि बोला तक नहीं।

तीसरा–तलवार के धनी ऐसे ही होते हैं। एक ही हाथ में चौरंग कर दिया। क्या हाथ पड़ा है, वाह !

चौथा–धूम पड़ गई, धूम पड़ गई। क्या कमाल है, एक ही वार में ठंडा हो गया!

नवाब–अरे भाई देखते हो ! बरसों शिकार की नौबत नहीं आती, मगर लड़कपन से शिकार खेला है। वह कहां जा सकती है। जरा किसी सूरत से बेगम साहब को यहां लाते और उनको दिखाते कि हमने कैसा शिकार किया है !

बेगम साहब का हाथी आया तो बनैले को देखकर डर गईं। अल्लाह जानता है, तुम लोगों को जान की जरा भी परवाह नहीं। और जो फिर पड़ता तो कैसी ठहरती !

नवाब–तारीफ न की, कितनी जवांमर्दी से अकेले आदमी ने शिकार किया। लाश तो देखो, कहां से कहां तक है !

एक मुसाहब–हुजूर ने वह काम किया जो सारी दुनिया में किसी से नहीं तो सकता। दस-पांच आदमी मिलकर तो जिसे चाहें मार लें; मगर एक आदमी का तलवार लेकर बनैले से भिड़ना जरा मुश्किल है।

बेगम–ऐ है, तुम अकेले शिकार करने गए थे ! कसम खुदा की, बड़े ढीठ हो। मेरे तो रोएं खड़े हुए जाते हैं।

नवाब–अब तो हमारी बहादुरी का यकीन आया कि अब भी नहीं !

यहां से फिर शिकार के लिए रवाना हुए। बनैले का शिकार तो घाते में था। झील के करीब पहुंचे, तो हाथी जोर-जोर से जमीन पर पांव पटकने लगा।

फीलबान–शेर यहां से बीस कदम पर है। बस यही समझिए कि अब निकला, अब निकला। काशीसिंह, हाथी पर आ जाओ। दिलाराम से भी कहो, बहुत आगे न बढ़े।

काशीसिंह–हुंह, सहर के मनई, नेवता देखे डर जायं, हमका राह दिखावत हैं। वह

सेर तो हम सवा सेर !

नवाब—यह उजड्डपन अच्छा नहीं। काशीसिंह, आ जाओ। दिलाराम, तुम भी किसी और हाथी पर चले जाओ। मानो कहना।

दिलाराम—हुजूर, चार बरस की उमिर से बाघ मारत चला आवत हौं, खा जाई, ससुर खा जाय।

बेगम—ऐ है, बड़े ढीठ हैं। नवाब, तुम अपना हाथी सब हाथियों के बीच में रखो। हमारे कलेजे की धड़कन को तो देखो।

अब सुनिए कि इत्तफाक से एक शिकारी ने शेर देख लिया। एक दरख्त के नीचे चित सो रहा था? उन्होंने किसी से न कुछ कहा, न सुना, बंदूक दाग ही तो दी। गोली पीठ पर पड़ी। शेर आग हो गया और गरजता हुआ लपका, तो खलबली मच गई। आते ही काशीसिंह को एक थप्पड़ दिया, दूसरा थप्पड़ देने ही को था कि काशीसिंह संभला और तलवार लगाई। तलवार हाथ पर पड़ी। तलवार खाते ही हाथी की तरफ झपटा, और नवाब साहब के हाथी के दोनों कान पकड़ लिए। हाथी ने ठोकर दी तो शेर 5-6 कदम पर गिरा। इधर हाथी, उधर शेर, दोनों गरजे। बाबू साहबों ने दोहाई देनी शुरू की।

बोस—अरे, हमारी नानी मर गया। अरे, बाबा, हम तो काल ही से रोता था कि हम नहीं जाएगा।

घोष—ओ भाई, तुम शेर को रोक लेना जल्दी से।

बोस—हम नीचे होता तो जरूर करके रोक लेता।

दो हाथी तो शेर की गरज सुनकर भागे; मगर बाबू का हाथी डटा खड़ा था। इस पर बोस ने रोकर कहा—ओ शाला हमारा हाथी, अरे तुम किस माफिक भागता नहीं ! तुम्हारा भाई भागे जाता है, तुम क्यों खड़ा है?

शेर ने झपटकर नवाब से हाथी के मस्तक पर एक हाथ दिया तो गोश्त खिंच आया। नवाब साहब के हाथ-पांव फूल गए। एक शिकारी जो उनके पीछे बैठा था, नीचे गिर पड़ा। शेर ने फिर थप्पड़ दिया। इतने में एक चौकीदार ने गोली चलाई। गोली सिर तोड़कर बाहर निकल गई और शेर गिर पड़ा, मगर नवाब सहब ऐसे बदहवास थे कि अब तक गोली न चलाई। लोग समझे, शेर मर गया। दो आदमी नजदीक गए और देख कर बोले, हुजूर, अब इसमें जान नहीं है, मर गया। नवाब साहब हाथी से उतरने ही को थे कि शेर गरज कर उठा और एक चौकीदार को छाप बैठा। चारों तरफ से हुल्लड़ मच गया। कोई बंदूक छतियाता है, कोई ललकारता है। कोई कहता है—तलवार लेकर दस-बारह आदमी पहुंच जाओ अब शेर नहीं उठ सकता।

नवाब—क्या कोई गोली नहीं लगा सकता?

एक—हुजूर, शेर के साथ आदमी की भी जान जाएगी !

नवाब—तुम तो अपनी बड़ी तारीफ करते थे। अब वह निशानेबाली कहां गई? लगाओ गोली।

गोली पीठ को छूती हुई निकल गई। शिकरी ने एक और गोली लगाई तो शेर का काम-तमाम हो गया। मगर ये गोली इस उस्तादी से चलाई थी कि चौकीदार पर आंच न आने पाई। सब लोगों ने तारीफ की। शेर ऊपर था और चौकीदार नीचे। सात आदमी

तलवार लेकर झपटे और शेर पर वार करने लगे। जब खूब यकीन हो गया कि शेर मर गया तो लाश को हटाया। देखा की चौकीदार मर रहा है।

नवाब–गजब हो गया यारो, हा ! अफसोस।

बेगम–हाथी यहां से हटा ले चलो। कहते थे कि शिकार को न चलो। तुमने मेरा कहा न माना।

नवाब–फीलबान, हाथी बिठा दे, हम उतरेंगे।

बेगम–उतरने का नाम भी न लेना। हम न जाने देंगे।

नवाब–बेगम, तुम तो हमको बिलकुल डरपोक ही बनाया चाहती हो। हमारा आदमी मर रहा है, मुझे दूर से तमाशा देखना मुनासिब नहीं।

बेगम ने नवाब के गले में हाथ डालकर कहा–अच्छी बात है, जाइए, अब या तो हम-तुम दोनों गिरेंगे या यहीं रहेंगे।

नवाब दिल में बहुत खुश हुए कि बेगम को मुझसे इतनी मुहब्बत है। आदमियों से कहा–जरा देखो उसमें कुछ जान बाकी है? आदमियों ने कहा -हुजूर, इतना बड़ा शेर, इतनी देर तक छापे बैठा रहा। बेचारा घुट-घुट के कभी का मर गया होगा !

बेगम–अब फिर तो कभी शिकार को न आओगे? एक आदमी की जान मुफ्त में ली?

नवाब–हमने क्यों जान ली, जो हमीं को शेर मार डालता !

बेगम–क्या मनहूस बातें जबान से निकालते हो, जब देखो, अपने को कोसा करते हो !

खेमे पहुंचकर नवाब साहब ने वापसी की तैयारियां कीं और रातों-रात घर पहुंच गए।

बानवे

आज तो कलम की बाछें खिली जाती हैं। नौजवानों के मिजाज की तरह अठखेलियों पर है। सुरैया बेगम खूब निखर के बैठी हैं। लौंड़ियां-महरियां बनाव-चुनाव किए घेरे खड़ी हैं। घर में जश्न हो रहा है। न जाने सुरैया बेगम इतनी दौलत कहां से लाईं। यह ठाट तो पहले भी नहीं था।

महरी–ऐ बी सैदानी, आज तक मिजाज ही नहीं मिलते। इस गुलाबी जोड़े पर इतना इतरा गईं?

सैदानी–हां, कभी बाबाराज काहे को पहना था? आज पहले-पहल मिला है। तुम अपने जोड़े का हाल तो कहो।

महरी–तुम तो बिगड़ने लगीं। चलो, तुम्हें सरकार याद करती हैं।

सैदानी–जाओ, कह दो, हम नहीं आते, आई वहां से चौधराइन बनके। अब घूरती क्या हो, जाओ, कह दो न !

महरी ने आकर सुरैया बेगम से कहा–हुजूर, वह तो नाक पर मक्खी नहीं बैठने

देतीं। मैंने इतना कहा कि सरकार ने याद किया है तो मुझे सैंकड़ों बातें सुनाईं।

सुरैया बेगम ने आंख उठाकर देखा तो महरी के पीछे सैदानी खड़ी मुसकिरा रही थी। महरी पर घड़ों पानी पड़ गया।

सैदानी—हां, हां, कहो, और क्या कहती हो? मैंने तुम्हें गालियां दीं, कोसा और भी कुछ?

सुरैया बेगम की मां बैठी शादी का इंतजाम कर रही थीं। उनके सामने सुरैया बेगम की बहन जाफरी बेगम भी बैठी थीं। मगर यह मां और बहन आईं कहां से? इन दोनों का तो कहीं पता ही न था। मां तो कब की मर चुकी। बहनों का जिक्र ही न सुना। मजा यह कि सुरैया बेगम के अब्बाजान भी बाहर बैठे शादी का इंतजाम कर रहे हैं। समझ में नहीं आता, यह मां-बहन कहां से निकल पड़े। इसका किस्सा यों है कि नवाब वजाहत अली ने सुरैया बेगम से कहा—अगर यों ही निकाह पढ़वा लिया गया तो हमारे रिश्तेदार लोग तुमको हकीर समझेंगे कि किसी बेसवा को घर डाल लिया होगा। बेहतर है कि किसी भले आदमी को तुम्हें अपनी लड़की बनाने पर राजी कर लिया जाय।

सुरैया बेगम का यह बात पसंद आई। दूसरे दिन सुरैया बेगम एक सैयद के मकान पर गईं। सैयद साहब को मुफ्त के रुपये मिले, उन्हें नवाब साहब के ससुर बनने में क्या इनकार होता। किस्मत खुल गई। पड़ोसी हैरत में थे कि यह सैयद साहब अभी कल तक तो जूतियां चटकाते फिरते थे। आज इतना रुपया कहां से आया कि डोमिनियां भी हैं, नाच-रंग भी, नौकर-चाकर भी और सबके सब नये जोड़े पहने हुए। एक पड़ोसी ने सैयद साहब से यों बात-चीत की—

पड़ोसी—आज तो आपके मिजाज ही नहीं मिलते। मगर आप चाहे आधी बात न करें, मैं तो छेड़के बोलूंगा।

गो नहीं पूछते हरगिज वह मिजाज,
हम तो कहते हैं दुआ करते हैं।

सैयद—हजरत, बड़े फिक्र में हूं। आप जानते हैं, लड़की की शादी के झंझट से खाली नहीं। खुदा करे, खैरियत से काम पूरा हो जाय।

पड़ोसी—जनाब, खुदा बड़ा कारसाज है। शादी कहां हो रही है?

सैयद—नवाब वजाहत अली के यहीं, यही सामने महल है, बड़ी कोशिश की, जब मैंने मंजूर किया। मेरा तो मंशा यही था कि किसी शरीफ और गरीब के यहां ब्याहूं।

पड़ोसी—क्यों? गरीब के यहां क्यों ब्याहते? आपका खानदान मशहूर है। बाकी रहा रुपया। यह हाथ का मैल है। मगर अब यह फर्माइए कि सब बंदोबस्त कर लिया है न, मैं आपका पड़ोसी हूं, मेरे लायक जो खिदमत हो उसके लिए हाजिर हूं।

सैयद—ऐ हजरत, आपकी मेहरबानी काफी है। आपकी दुआ और खुदा की इनायत से मैंने हैसियत के मुआफिक बंदोबस्त कर लिया है।

इधर तो ये बातें होती थीं, उधर नवाब के दोस्त बैठे आपस में चुहल कर रहे थे।

एक दोस्त—हजरत, इस बारे में तो आप किस्मत के धनी हैं।

नवाब—भई, खुदा की कसम, आपने बहुत ठीक कहा, और सैयद साहब को तो बिलकुल फकीर ही समझिए। उनकी दुआ में तो ऐसा असर है कि जिसके वास्ते जो

दुआ मांगी, फौरन कबूल हो गई।

दोस्त–जभी तो आप जैसे आली खानदान शरीफजादे के साथ लड़की का निकाह हो रहा है। इस वक्त शहर में आपका-सा रईस और कौन है !

मीर साहब–अजी, शाहजादों के यहां से जो न निकले वह आपके यहां है।

लाला–इसमें क्या शक, लेकिन यहां एक-एक शाहजादा ऐसा पड़ा है कि जिसके घर में दौलत लौंडी बनी फिरती है।

मीर साहब–कुछ बेधा होके तो नहीं आया है ! बढ़कर दूसरा कौन रईस है शहर में, जिसके यहां है यह साज-सामान?

लाला–तुम खुशामद करते हो और बंदा साफ-साफ कहता है।

मीर साहब–जा पहले मुंह बनवा, चला वहां से बड़ा साफगो बनके !

दोस्त–ऐसे आदमी को तो खड़े-खड़े निकलवा दे, तमीज तो छू ही नहीं गई। गौखेपन के सिवा और कोई बात नहीं।

नवाब–बदतमीज आदमी है, शरीफों की सोहबत में नहीं बैठा।

मीर साहब–बड़ा खरा बना है, खरा का बच्चा !

नवाब–अजी, सख्त बदतमीज है।

घर में सुरैया बेगम की हमजोलियां छेड़-छाड़ कर रही थीं। फीरोजा बेगम ने छेड़ना शुरू किया–आज तो हुजूर का दिल उमंगों पर है।

सुरैया बेगम–बहन, चुप भी रहो, कोई बड़ी-बूढ़ी आ जाएं तो अपने दिल में क्या कहें, आज के दिन माफ करो, फिर दिल खोल के हंस लेना । मगर तुम मानोगी काहे को !

फीरोजा–अल्लाह जानता है, ऐसा दूल्हा पाया है कि जिसे देखकर भूख-प्यास बंद हो जाय।

इतने में डोमिनियों ने यह गजल गानी शुरू की–

दिल किसी तरह चैन पा जाये, गैर की आई हमको आ जाये,
दीदा वह दिल हैं काम के दोनों,
वक्त पर जो मजा दिखा जाये
शेख साहब बुराइयां मय की;
और जो कोई चपत जमा जाये;
जान तो कुछ गुजर गयी उस पर;
मुंह छिपाके जो कोसता जाये।
लाश उठेगी जभी कि नाज के साथ;
फेर कर मुंह वह मुस्किरा जाये;
फिर निशाने लेहद रहे न रहे
आके दुश्मन भी खाक उड़ा जाये।
वह मिलेंगे गले से खिलवत में;
मुझको डर है हया न आ जाये।

फीरोजा बेगम ने यह गजल सुनकर कहा–कितना प्यारा गला है; लेकिन लै अच्छा नहीं।

सुरैया बेगम ने डोमिनियों को इशारा कर दिया कि यह बहुत बढ़-बढ़ कर बातें कर रही हैं, जरा इनकी खबर लेना। इस पर एक डोमिनी बोली—अब हुजूर हम लोगों को लै सिखा दें।

दूसरी—यह तो मुजरे को जाया करें तो कुछ पैदा कर लाएं।

तीसरी—बहन, ऐसी कड़ी न कहो।

इतने में एक औरत ने आकर कहा—हुजूर, कल बारात न आएगी। कल का दिन अच्छा नहीं। अब परसों बारात निकलेगी।

तिरानवे

सुरैया बेगम के यहां वही धमाचौकड़ी मची थी। परियों का झुरमुट, हसीनों का जमघट, आपस की चुहल और हंसी से मकान गुलजार बना हुआ था। मजे-मजे की बातें हो रही थीं कि महरी ने आकर कहा—हुजूर, रामनगर से असगर मियां की बीबी आई हैं। अभी-अभी बहली ने उतरी हैं। जानी बेगम ने पूछा—असगर मियां कौन हैं? कोई देहाती भाई हैं? इस पर हशमत बहू ने कहा, बहन वह कोई हों। अब तो हमारे मेहमान हैं। फीरोजा बेगम बोली—हां,-हां तमीज से बात करो, मगर वह जो आई हैं, उनका नाम क्या है? महरी ने आहिस्ता से कहा—फैजन। इस पर दो-तीन बेगमों ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

हशमत बहू—वाह, क्या प्यारा नाम है। फैजन, कोई मीरासिनी हैं क्या?

सुरैया बेगम—तुम आज लड़वाओगी। जानी बेगम कौन-सा अच्छा नाम है।

फीरोजा—देहात के तो यही नाम हैं, कोई जैनब है, कोई जीनत, कोई फैजन।

सुरैया बेगम—फैजन बड़ी अच्छी औरत है। न किसी के लेने में, न देने में।

इतने में बी फैजन तशरीफ लायी और मुसकिरा कर बोलीं—मुबारक हो !

यहां जितनी बेगमें बैठी थीं सब मुंह फेर-फेर कर मुसकिराईं। बी फैजन के पहनावे से ही देहातीपन बरसता था।

फैजन—बहन, आज ही बारात आएगी, न कौन-कौन रस्म हुई? हम तो पहले ही आते, मगर हमारे देवर की तबियत अच्छी न थी।

फीरोजा—बहन, तुम्हारा नाम क्या है?

फैजन—फैजन।

फीरोजा—और तुम्हारे मियां का नाम?

फैजन—हमारे यहां मियां का नाम नहीं लेते। तुम अपने मियां का नाम बताओ।

फीरोजा बेगम ने तड़ से कहा—असगर मियां। इस पर वह फर्मायशी कहकहा पड़ा कि दूर तक आवाज गई। फैजन दंग हो गईं और दिल ही दिल में सोचने लगीं कि इस शहर की औरतें बड़ी ढीठ हैं। मैं इनसे पेश न पाऊंगी।

हशमत बहू—तो असगर मियां बी फैजन के मियां हैं। या तुम्हारे मियां, पहले इसका फैसला हो जाए।

फीरोजा—ऐ है, इतना भी न समझीं, पहले इनसे निकाह हुआ था, फिर हमसे हुआ और अब असगर मियां के दो महल हैं, एक तो ये बेगम, दूसरे हम।

इस पर फिर कहकहा पड़ा, फैजन के रहे-सहे हवास भी गायब हो गए। अब इतनी हिम्मत भी न थी कि जबान खोल सकें। जानी बेगम ने कहा—क्यों फैजन बहन, तुम्हारे यहां कौन-कौन रस्में होती हैं? हमारे यहां तो दूल्हा लड़की के घर जाकर देख आता है, बस फिर बात तय हो जाती है।

फैजन—क्या यहां मियां पहले ही देख लेते हैं? हमारे यहां तो नव बरस भी ऐसा न हो।

फीरोजा—यह नव बरस क्या, क्या यह भी कोई टोटका है? नव बरस की कैद मुई कैसी !

फैजन—बहन, हम मुई-टुई क्या जानें।

यह सुनकर हमजोलियां और भी हंसीं।

फिरोजा—यह महरी मुई-टुई कहां चली गई? एक भी मुई टुई दिखाई नहीं देती।

हशमत बहू—हमका मालूम है, मगर हम न बताउब।

फीरोजा—अरे मुई-टुई पंखिया कहां गायब हो गईं?

हशमत बहू—जिस मुई-टुई को गर्मी मालूम हो वह ढूंढ ले।

इतने में जुलूस सजा और दुलहिन के हाथ दूल्हा के लिए सेहरा गया। चांदी की खुशनुमा किश्तियों में फूलों के हार, बद्धियां और जड़ाऊ सेहरा। इसके बाद डोमिनियों का गाना होने लगा। फैजन ने कहा—हमने तो यहां की बड़ी तारीफ सुनी है। इस पर एक बूढ़ी औरत ने पोपले मुंह से कहा—ऐ हुजूर, अब तो नाम ही नाम है, नहीं तो हमारे लड़कपन में डोमिनियों का मुहल्ला बड़ी रौनक पर था। यह महबूबन जो सामने बैठी हैं, इनकी दादी का वह दौर दौरा था कि अच्छे-अच्छे शाहजादे सिर टेक कर आते थे। एक बार बादशाह तक उनके यहां आए थे। हाथी वहां तक नहीं जा सकता था। हुक्म दिया कि मकान गिरा दिए जायं और चौगुना रुपया मालिकों को दिया जाए। एक बूढ़ी औरत जिसकी भवें तक सफेद थीं, हाथी की सूंड पकड़कर खड़ी हो गई और कहा—मैं हाथी को आगे न बढ़ने दूंगी। मेरे बुजुर्गों की हड्डियां खोदके फेंक दी गईं। यह मकान मेरे बुजुर्गों की हड्डी है। बादशाह ने उसके बुजुर्गों के नाम से खैरातखाना जारी कर दिया। जब बादशाह का घोड़ा महबूबन की दादी के मकान पर पहुंचा, तो दस-बारह हजार आदमी गली में खड़े थे। मगर वाह री जहूरन ! इतना सब कुछ होते भी गरूर छू गया था। बरसात के दिन थे मगर बादशाह ने कहा—जहूरन, जब जानें कि मेंह बरसा दो। मुस्किरा कर कहा—हुजूर, लौंड़ी एक अदना-सी डोमिनी हैं, मगर खुदा के नजदीक कुछ मुश्किल नहीं है। यह कह कर तान ली—

'आयो बदरा कारे-कारे रही बिजली चमक मोरे आंगन में'

बस, पच्छिम तरफ के झूमती हुई घटा उठी। स्याही छलकने लगी। जहूरन को खुदा बख्शे, फिर तान लगाई और मूसलाधार मेंह बरसने लगा, ऐसा बरसा कि दरिया बढ़ गया और तालाब से दरिया तक पानी ही पानी नजर आता था? जब तो यहां की डोमिनियां मशहूर हैं। और अब तो खुदा का नाम है। इतनी डोमिनियां बैठी हैं कोई गाए तो?

खुदारा जल्द ले आ कर खबर तू ऐ मेरे ईसा;
तेरे बीमार का अब कोई दम में दम निकलता है।
नसीहत दोस्तो करते हो पर इतना तो बतलाओ,
कहीं आया हुआ दिल भी संभाले से संभलता है।

महबूबन–बड़ी गलेबाज हैं आप, और क्यों न हो, किनकी-किनकी आंखें देखी हैं। हम क्या जानें।

हैदरी–हम लोगों के गले इसी सिन में काम नहीं करते, जब इनकी उम्र को पहुंचेंगे तो खुदा जाने क्या हाल होगा।

बुढ़िया कब्र में एक पांव लटकाए बैठी थी। सिर हिलता था, लठिया टेक के चलती थी, मगर तबीयत ऐसी रंगीन कि जवानों को मात करती थी। सबेरे उबटना न मले तो चैन न आए। पट्टियां जरूर जमाती थी, यों तो बहुत ही खुशमिजाज और हंसमुख थी, मगर जहां किसी ने इसको बूढ़ी कहा, बस, फिर अपने आपे में नहीं रहती थी, फीरोजा ने छेड़ने के लिए कहा–तुमने जो जमाना देखा है वह हम लोगों को कहां नसीब होगा। कोई सौ बरस का सिन होगा, क्यों?

बुढ़िया ने पोपले मुंह से कहा–अब इसका मैं क्या जवाब दूं, बूढ़ी मैं काहे से हो गई, बालों पर नजला गिरा, सफेद हो गए, इससे कोई बूढ़ा हो जाता है।

शाम से आधी तक यही कैफियत, यही मजाक, यही चहल-पहल रही। नयी दुलहिन गोरी-गोरी गर्दन झुकाये, प्यारा-प्यारा मुखड़ा छिपाए, अदब और हया के साथ चुप-चाप बैठी थी, हमजोलियां चुपके-चुपके छेड़ती जाती थीं। आधी रात के वक्त दुलहिन को बेसन मल-मल कर नहलाया गया। हिना का इत्र, सुहाग, केवड़ा और गुलाब बदन में मला गया। इसके बाद जोड़ा पहनाया गया। हरे वाफ्ते का पैजामा, सूहे की कुरती, सूहे, की ओढ़नी, बसंती रंग का कशमीरी दुशाला ओढ़ाया गया। भावजों ने मेढ़ियां गूंथी थीं, अब जेवर पहनाने बैठीं। सोने के पाजेब, छागल और कड़े दसों पोरों में छल्ले, हाथों में चूहेदंतियां, जड़ाऊ कंगन, सोने के कड़े, गले में मोतियों का हार, कानों में करनफूल और बाले, सिर पर छपका और सीसफूल, मांग में मोतियों की लड़ी देखकर नजर का पांव फिसला जाता था। जवाहिरात की चमक-दमक से गुमान होता था कि जमीन पर चांद निकल आया।

जानी बेगम–चौथी के दिन और ठाट होंगे, आज क्या है।

फैजन–आज कुछ हई नहीं। ऐसा महकौवा इत्र कभी नहीं सूंघा।

इस पर सब खिलखिलाकर हंस पड़ीं।

हशमत बहू–बी फैजन की बातों से दिल की कली खिल जाती है।

फीरोजा–कैसी कुछ, और चंचल कैसी हैं, रग-रग में शोखी है।

जानी बेगम–बहन फैजन, हम तुम्हारे मियां के साथ निकाह पढ़वा लें, बुरा तो न मानोगी?

फीरोजा–दो दिल राजी तो क्या करेगा काजी !

हशमत बहू–बहन, तुम्हारी आंखों का पानी बिलकुल ढल गया। हया भून खाई।

महरी–हुजूर, यही तो दिन हंसी-मजाक के हैं। जब हम इन सिनों थे तो हमारी

भी यही कैफियत थी।

इतने में एक हमजोली ने आकर कहा–फीरोजा बेगम, वह आई हैं मुबारक महल। उनके सामने जरी ऐसी बातें न करना, वह बड़ी नाजुकमिजाज हैं। इतनी बेलिहाजी अच्छी नहीं होती।

फीरोजा–तो तुम जाके अदब से बैठो। तुम्हारा वजीफा आज से बंध जाएगा।

मुबारक महल आईं और सबसे गले मिलकर सुरैया बेगम के पास जा बैठीं।

मुबारक महल–हमने सुरैया बेगम को आज ही देखा, खुदा मुबारक करे।

फीरोजा–ऐ सुरैया बेगम, जरी गर्दन ऊंची करो, वाह यह तो और झुकी जाती हैं। हम तो सीना तानके बैठे थे, क्या किसी का डर पड़ा है।,

हशमत–तुम तो अंधेर करती हो नई दुलहिन कहीं अकड़कर बैठती है?

महरी–ऐ हां, हुजूर, दुलहिन कहीं तन कर बैठती है ! क्या कुछ नयी रीति है।

फीरोजा–अच्छा साहब, यों ही सही, जरी और झुक जाओ।

एकाएक बाजे की आवाज आई। दूल्हा के यहां से दुलहिन का सेहरा बड़े ठाट से आ रहा था। जब सेहरा अंदर आया तो सुरैया बेगम की मां ने कहा, अब इस वक्त कोई छीकें-मींके नहीं। सेहरा अंदर आता है।

सेहरा अंदर आया। दूल्हा के बहनोई ने साले के सिर पर सेहरा बांधा और सास से नेग मांगा।

सास–हां, हां, बांध लो, इस वक्त तुम्हारा हक है।

बहनोई–इन चकमों में न आऊंगा। लाइए, नेग लाइए।

हशमत–हां, बेझगड़े न मानना दूल्हा भाई।

बहनोई–मान चुका, तोड़ों के मुंह खोलिए। अब देर न कीजिए।

सुरैया बेगम की मां ने पांच अशर्फियां दीं। वह तो लेकर बाहर गए। इधर दूल्हा के यहां की ओढ़नी दुलहिन को ओढ़ाई गई। पायजामे में नाड़े की इक्कीस गिरहें दी गईं। परदा डाला गया। दुलहिन एक पलंग पर बैठी। फूलों के तौक और बद्धियां पहनाई गईं। फूलों का तुर्रा बांधा गया। अब बरात के आने का इंतजार था।

फीरोजा–क्यों बहन, फैजन, सच कहना, इस वक्त दुलहिन पर कैसा जोबन है?

फैजन–वह तो यों ही खूबसूरत हैं !

फीरोजा–बारात बड़े धूम से आयगी, हमने चाहा था कि मुन्ने मियां के यहां से बारात का ठाट देखें।

हशमत बहू–ऐ तो बारात यहीं से क्यों न देखो। महरी, जाके देखो, चिकें सब दुरुस्त हैं ना।

महरी–हुजूर, सब सामान लैस है।

फीरोजा बेगम उस कमरे की तरफ चलीं जहां से बारात देखने का बंदोबस्त था। लेकिन जब कमरे में गईं और नीचे झांक के देखा तो सहमकर बोलीं, ओफ्फोह, इतना ऊंचा कमरा, मैं तो मारे डर के गिर पड़ी होती। जानी बेगम ने जब सुना कि वह डर गईं तो आड़े हाथों लिया–हमने सुना, आप इस वक्त सहम गईं, वाह !

फीरोजा–खुदा गवाह है दिल्लगी न करो, मेरे होश ठिकाने नहीं।

जानी बेगम-चलो, बस ज्यादा मुंह न खुलवाओ।

फीरोजा-अच्छा, जाके झांको तो मालूम हो।

हशमत बहू-हम भी चलते हैं। हम भी झांकेंगे।

महरी-न बीबी, मैं झांकने को न कहूंगी। एक बार का जिक्र सुनो कि मैं ताजबीबी का रोजा देखने गई। अल्लाह री तैयारी, रोजा क्या सचमुच बहिशत है। फिरंगी तक जब आते हैं तो मारे रोब के टोपी उतार लेते हैं। मेरे साथ एक बेगम भी थीं, जब रोजे के फाटक पर पहुंचे तो मुजाविर बाहर चले गए। मालियों को हुक्म हुआ कि पीठ फेरकर काम करें, गंवारों से परदा क्या।

फीरोजा-उहं, परदा दिल का।

हशमत-फिर मुजाविरों को क्यों हटाया?

महरी-वह आदमी हैं और माली जानवर, भला इन मजदूरों से कौन परदा करता है। अच्छा, यह तो बताओ कि दुलहिन को कहां से बारात दिखाओगी?

हशमत-हमारे यहां की दुलहिनें बारात नहीं देखा करतीं।

फीरोजा-वाह, क्या अनोखी दुलहिन हैं !

जानी बेगम-जिस दिन तुम दुलहिन बनी थीं, उस दिन बारात देखी होगी।

फीरोजा-हां-हां, न देखना क्या माने। हमने अम्मांजान से कहा कि हमको दूल्हा दिखा दो, नहीं हम शादी न करेंगे। उन्होंने कहा, अच्छा झरोखे से बारात देखो, हमने देखी। हमारे मियां घोड़े पर अकड़े बैठे थे। एक फूल उनके सिर पर मारा।

हशमत-क्यों नहीं, शाबाश, क्या कहना !

जानी बेगम-फूल नाहक मारा, एक जूता खींच मारा होता।

फीरोजा-खूब याद दिलाया, अब सही।

जानी बेगम-अच्छा महरी, तुमने उन बेगम साहबा का जिक्र छेड़ा था जिनके साथ ताज़बीबी का रोजा देखने गई थी। फिर क्या हुआ।

महरी-हां, खूब याद आया। हम लोग एक बुर्ज पर चढ़ गए, मैं क्या कहूं हुजूर कम-से-कम होंगे तो सात-आठ सौ जीने होंगे।

फीरोजा-ओफ्फोह, इतना झूठ, अच्छा फिर क्या हुआ, कहती जाओ।

महरी-खैर दम ले-ले के फिर चढ़े, जब धुर पर पहुंचे तो दम नहीं बाकी रहा कि जरा हिल भी सकें। बेगम साहबा ने ऊपर से नीचे को झांका तो गश आ गया, धम से गिरीं।

हशमत बहू-हाय-हाय ! मरीं कि बचीं?

महरी-बच जाने की एक ही कही। हड्डी-पसली चूर हो गई।

फीरोजा-मैंने कहा तो किसी को यकीन नहीं आया। अल्लाह जानता है, इतने ऊंचे पर से जो सड़क देखी होश उड़ गए।

जानी बेगम-जाने दो भई, अब उसका जिक्र न करो। चलो दुलहिन के पास बैठो।

खबरें आने लगीं कि आज तक इस शहर में ऐसी बारात किसी ने नहीं देखी थी। एक नयी बात यह है कि गोरों का बाजा है। हजारों आदमी गोरों का बाजा सुनने आए हैं। छतें फटी पड़ती हैं, एक-एक कमरा चौक में आज दो-दो अशर्फियां किराए पर नहीं

मिलता। सुना कि बारात के साथ नयी रोशनी है जिसकी गैस लाइट बालते हैं।

फीरोजा–उस रोशनी और इस रोशनी में क्या फर्क है?

महरी–ऐ हुज़ूर, जमीन और आसमान का फर्क है। यह मालूम होता है कि दिन है।

चौरानवे

आज़ाद पोलैंड की शाहजादी से रुखसत होकर रातोंरात भागे। रास्ते में रूसियों की कई फौजें मिलीं। आज़ाद को गिरफ्तार करने की जोरों से कोशिश हो रही थी, मगर आज़ाद के साथ शाहजादी का जो आदमी था वह उन्हें सिपाहियों की नजरें बचाकर ऐसे अनजान रास्तों से ले गया कि किसी को खबर तक न हुई। दोनों आदमी रात को चलते थे और दिन को कहीं छिपकर पड़े रहते थे। एक हफ्ते तक भागा-भाग चलने के बाद आज़ाद पिलौना पहुंच गए। इस मुकाम को रूसी फौजों ने चारों तरफ से घेर लिया था। आज़ाद के आने की खबर सुनते ही पिलौने वालों ने कई हजार सवार रवाना किए कि आज़ाद को रूसी फौजों से बचाकर निकाल लाएं। शाम होते-होते आज़ाद पिलौना वालों से जा मिले।

पिलौना की हालत यह थी कि किले के चारों तरफ रूस की फौज थी और इस फौज के पीछे तुर्कों की फौज थी। रात को किले से तोपें चलने लगीं। इधर रूसियों की फौज भी दोनों बरफ गोले उतार रही थी। किले वाले चाहते थे कि रूसी फौज दो तरफ से घिर जाय, मगर यह कोशिश कारगर न हुई। रूसियों की फौज बहुत ज्यादा थी। गोलों से काम न चलते देखकर आज़ाद ने तुर्की जनरल से कहा–अब तो तलवार से लड़ने का वक्त आ पहुंचा, अगर आप इजाजत दें तो मैं रूसियों पर हमला करूं।

अफसर–जरा देर ठहरिए, अब मार लिया है। दुश्मन के छक्के छूट गए हैं।

आज़ाद–मुझे खौफ है कि रूसी तोपों से किले की दीवारें न टूट जायं।

अफसर–हां, यह खौफ तो है। बेहतर है, अब हम लोग तलवार लेकर बढ़ें।

हुक्म की देर थी। आज़ाद ने फौरन तलवार निकाल ली। उनकी तलवार की चमक देखते ही हजारों तलवारें म्यान से निकल पड़ीं। तुर्की जवानों ने दाढ़ियां मुंह में दबाईं और अल्लाह-अकबर कह के रूसी फौज पर टूट पड़े। रूसी भी नंगी तलवारें लेकर मुकाबले के लिए निकल आए। पहले दो तुर्की कंपनियां बढ़ीं, फिर कुछ फासले पर छह कंपनियां और थीं। सबसे पीछे खास फौज की चौदह कंपनियां थीं। तुर्कों ने यह चालाकी की थी कि सिर्फ फौज के एक हिस्से को आगे बढ़ाया था, बाकी कालमों को इस तरह आड़ में रखा कि रूसियों को खबर न हुई। करीब था कि रूसी भाग जायं, मगर उनके तोपखाने ने उनकी आबरू रख ली। इसके सिवा तुर्की फौज मंजिलें मारे चली जाती थीं और रूसी फौज ताजा थी। इत्तिफाफ से रूसी फौज का सरदार एक गोली खाकर गिरा, उनके गिरते ही रूसी फौज में खलबली मच गई, आखिर रूसियों को भागने के लिए सिवा कुछ न

बन पड़ी। तुर्कों ने छह हजार रूसी गिरफ्तार कर लिए।

जिस वक्त तुर्की फौज पिलौना में दाखिल हुई, उस वक्त की खुशी बयान नहीं की जा सकती। बूढ़े और जवान सभी फूले न समाते थे। लेकिन यह खुशी देर तक कायम न रही। तुर्की के पास न रसद का सामान काफी था, न गोला-बारूद। रूसी फौज ने फिर किले को घेर लिया। तुर्क हमलों का जवाब देते थे, मगर भूखे सिपाही कहां तक लड़ते। रूसी गालिब आते-जाते थे और ऐसा मालूम होता था कि तुर्की को पिलौना छोड़ना पड़ेगा। पचीस हजार रूसी तीन घंटे किले की दीवारों पर गोले बरसाते रहे। आखिर दीवार फट गई और तुर्कों के हाथ-पांव फूल गए। आपस में सलाह होने लगी।

फौज का अफसर-अब हमारा कदम नहीं ठहर सकता, अब भाग चलना ही मुनासिब है।

आज़ाद-अभी नहीं, जरा और सब्र कीजिए, जल्दी क्या है।

अफसर-कोई नतीजा नहीं।

किले की दीवार फटते ही रूसियों ने तुर्की फौज के पास पैगाम भेजा, अब हथियार रख दो, वर्ना मुफ्त में मारे जाओगे।

लेकिन अब भी तुर्कों ने हथियार रखना मंजूर न किया। सारी फौज किले से निकलकर रूसी फौज पर टूट पड़ी। रूसियों के दिल बढ़े हुए थे कि अब मैदान हमारे हाथ रहेगा, और तुर्क तो जान पर खेल गए थे। मगर मजबूर होकर तुर्कों को पीछे हटना पड़ा। इसी तरह तुर्कों ने तीन धावे किए और तीनों मरतबा पीछे हटने पर मजबूर हुए। तुर्की जनरल फिर धावा करने की तैयारियां कर रहा था कि बादशाही हुक्म मिला-फौजें हटा लो, सुलह की बातचीत हो रही है। दूसरे दिन तुर्की फौजें हट गईं और लड़ाई खतम हो गई।

पचानवे

जिस दिन आज़ाद कुस्तुनतुनिया पहुंचे, उनकी बड़ी इज्जत हुई। बादशाह ने उनकी दावत की और उन्हें पाशा का खिताब दिया। शाम को आज़ाद होटल में पहुंचे और घोड़े से उतरे ही थे कि यह आवाज कान में आई, भला गीदी, जाता कहां है। आज़ाद ने कहा-अरे भई, जाने दो। आज़ाद की आवाज सुनकर खोजी बेकरार हो गए। कमरे से बाहर आए और उनके कदमों पर टोपी रखकर कहा-आज़ाद, खुदा गवाह है, इस वक्त तुम्हें देखकर कलेजा ठंडा हो गया, मुंह-मांगी मुराद पाई।

आज़ाद-खैर, यह तो बताओ, मिस मीडा कहां हैं?

खोजी-आ गईं, अपने घर पर हैं।

आज़ाद-और भी कोई उनके साथ है?

खोजी-हां, मगर उस पर नजर न डालिएगा।

आज़ाद-अच्छा, यह कहिए।

खोजी-हम तो पहले ही समझ गए थे कि आज़ाद भावज भी ठीक कर लाए,

मगर अब यहां से चलना चाहिए।

आज़ाद—उस परी के साथ शादी तो कर लो।

खोजी—अजी, शादी जहाज पर होगी।

मिस मीडा और क्लारिसा को आज़ाद के आने की ज्यों ही खबर मिली, दोनों उनके पास आ पहुंचीं।

मीडा—खुदा का हजार शुक्र है ! यह किसको उम्मीद थी कि तुम जीते-जागते लौटोगे। अब इस खुशी में हम तुम्हारे साथ नाचेंगे।

आज़ाद—मैं नाचना क्या जानूं।

क्लारिसा—हम तुमको सिखा देंगे।

खोजी—तुम एक ही उस्ताद हो।

आज़ाद—मुझे भी वह गुर याद हैं कि चाहूं तो परी को उतार लूं।

खोजी—भई, कहीं शरमिंदा न करना।

तीन दिन तक आज़ाद कुस्तुनतुनिया में रहे। चौथे दिन दोनों लेडियों के साथ जहाज पर सवार होकर हिन्दोस्तान चले।

छियानवे

आज़ाद, मीडा, क्लारिसा और खोजी जहाज पर सवार हैं। आज़ाद लेडियों का दिल बहलाने के लिए लतीफे और चुटकुले कह रहे हैं। खोजी भी बीच-बीच में अपना जिक्र छेड़ देते हैं।

खोजी—एक दिन का जिक्र है, मैं होली के दिन बाजार निकला। लोगों ने मना किया कि आज बाहर न निकलिए, वर्ना रंग पड़ जाएगा। मैं उन दिनों बिलकुल गैंडा बना हुआ था। हाथी की दुम पकड़ ली तो हुमस न सका। चें से बोलकर चाहा कि भागे, मगर क्या मजाल ! जिसने देखा, दांतों उंगली दबाई कि वाह पट्ठे !

आज़ाद—ऐं, तब तक आप पट्ठे ही थे?

खोजी—मैं आपसे नहीं बोलता। सुनो मिस मीडा, हम बाजार में आए तो देखा, हरबोंग मचा हुआ है। कोई सौ आदमी के करीब जमा थे और रंग उछल रहा था। मेरे पास पेशकब्ज और तमंचा, बस क्या कहूं।

आज़ाद—मगर करौली न थी?

खोजी—भई, मैंने कह दिया, मेरी बात न काटो। ललकार कर बोला, यारो, देखभाल के, मरदों पर रंग डालना दिल्लगी नहीं है। एक पठान ने आगे बढ़ के कहा—खां साहब, आप सिपाही आदमी है, इतना गुस्सा न कीजिए, होली के दिन रंग खेलना माफ है। मैंने कहा, सुनो भाई, तुम मुसलमान होके ऐसी बात कहते हो? पठान बोला, हजरत, हमारा इन लोगों से चोली-दामन का साथ है।

इतने में दो लौंडों ने पिचकारी तानी और रंग डाल दिया, ऊपर से उसी पठान ने

पीछे से तान के एक जूता दिया तो खोपड़ी पिलपिली हो गई। फिरके जो देखता हूं, तो डबल जूता, समझावन-बुझावन। मुसकिराकर आगे बढ़ा।

आज़ाद-ऐं, जूता खाके आगे बढ़े।

मीडा-और उस जमाने में सिपाही भी थे, तिस पर जूता खाके चुप रहे?

आज़ाद-चुप रहते तो खैरियत थी, मुसकिराए भी। और बात भी दिल्लगी की थी, मुसकिराते न तो क्या रोते?

खोजी-मैं तो सिपाही हूं, तलवार से बात करता हूं, जूते से काम नहीं लेता। कहां तलवार, कहां जूता-पैजार !

क्लारिसा-एक हाकिम ने गवाह से पूछा कि मुद्दई की मां तुम्हारे सामने रोती थी या नहीं? गवाह ने कहा, जी हां, बाईं आंख से रोती थी।

खोजी-यह तो कोई लतीफा नहीं, मुझे रह-रहकके खयाल आता है कि जिस आदमी ने होली में बेअदबी की थी, उसे पा जाऊं तो खूब मरम्मत करूं।

आज़ाद-अच्छा, अब पहुंचकर सबसे पहले उसकी मरम्मत कीजिएगा। यह लीजिए, स्वेज की नहर !

मिस मीडा ने कहा-हम जरा यहां की सैर करेंगे। आज़ाद को भी यह बात पसंद आई। इस्कंदरिया के उसी होटल में ठहरे जहां पहले टिके थे। खोजी अकड़ते हुए उनके पास आए और कहा, अब यहां जरा हमारे ठाट देखिएगा। पहले तो लोगों से दरियाफ्त कर लो कि हमने कुश्ती निकाली थी या नहीं? मारा चारों खाने चित, और किसको? उस पहलवान को जो सारे मिस्र में एक था। जिसका नाम लेकर मिस्र के पहलवानों के उस्ताद कान पकड़ते थे। उसको देखो तो आंखें खुल जायं। किसी का बदन चोर होता है। उसका कद चोर है। पहले तो मुझे रेलता हुआ अखाड़े के बाहर ले गया और मैं भी चुपचाप चला गया, बस भाई, फिर तो मैंने कदम जमाके जो रेला दिया तो बोल गया। अब पेंचें होने लगीं, मगर वह उस्ताद, तो मैं जगत-उस्ताद ! उसने पेंच किया, मैंने तोड़ किया। उसने दस्ती खींची, मैं बगली हुआ। उसने डंडा लगाया, मैंने उचक के काट खाया।

आज़ाद-सुभान-अल्लाह, यह पेंच सबसे बढ़कर है। आपने इतनी तकलीफ क्यों की, बैठके कोसना क्यों न शुरू कर दिया?

दोनों लेडियां हंसने लगीं तो खोजी भी मुसकिराये, समझे कि मेरी बहादुरी पर दोनों खुश हो रही हैं। बोले-बस जनाब, दो घंटे तक बराबर की लड़ाई रही, वह कड़ियल जवान, मोटा-ताजा, पंचहत्था। उसका कद क्या बताऊं, बस जैसे हुसैनाबाद का सतखंडा। उसमें कूबत और यहां उस्तादी करतब, मैंने उसे हंफा-हंफाके मारा, जब उसका दम टूट गया तो चुर्र-मुर्र कर डाला। बस, जनाब, किला जंग के पेंच पर मारा तो चारों खाने चित। कोई पचास हजार आदमी देख रहे थे। तमाम शहर में मशहूर था कि हिन्द का पहलवान आया।

आज़ाद-भाई जान, सुनो, अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने की सनद नहीं। जब जानें कि हमारे सामने पटकनी दो और पहले उस पहलवान को भी देख लें कि कैसा है, तुम्हारी-उसकी जोड़ है या नहीं।

खोजी-कुछ अजीब आदमी हैं आप, कहता जाता हूं कि ग्रांडील पंचहत्था जवान

है, आपको यकीन नहीं आता, हम इसको क्या करें?

इतने में होटल के दो-एक आदमी खोजी को देखकर जमा हो गये, खोजी ने पूछा–क्यों भाई, हमने यहां एक कुश्ती निकाली थी या नहीं?

एक आदमी–वाह, हमारे होटल के बौने ने तो उठा के दे पटका था, चले वहां से कुश्ती निकालने?

खोजी–ओ गोदी, झूठ बोलना और सुअर खाना बराबर है।

दूसरा आदमी–हाथ-पांव तोड़ के धर देगा। आप और कुश्ती !

खोजी–जी, हां, हम और कुश्ती ! कोई आए तब न ! (ताल ठोककर) बुलवाओ उस पहलवान को।

इतने में बौना सामने आ खड़ा हुआ और आते ही खोजी को चिढ़ाने लगा। ख्वाजा साहब ने कहा–यही पहलवान है जिसको हमने पटका था। आज़ाद बहुत हंसे, बस। टांय-टांय फिस। बौने से कुश्ती निकाली तो क्या। किसी बराबर वाले से कुश्ती निकालते तो जानते। इसी पर घमंड था।

खोजी–साहब, कहने और करने में बड़ा फर्क है, अगर उससे हाथ मिलायं तो जाहिर हो जाय!

बौना ताल ठोंक के सामने आ खड़ा हुआ और खोजी भी पैंतरे बदलकर पहुंचे।

आज़ाद, मीडा और होटल के बहुत से आदमी उन दोनों के गिर्द टट लगा के खड़े हो गए।

खोजी–आओ, आओ बच्चा। आज भी गुद्दा दूंगा।

बौना–आज तुम्हारी खोपड़ी है और मेरा जूता।

खोजी–ऐसा गुद्दा दूं कि उम्र भर याद रहे।

बौना–इनाम तो मिलेगा ही, फिर हमारा क्या हर्ज है?

अब सुनिए कि दोनों पहलवान गुथ गए। खोली ने घूंसा ताना, बौने ने मुंह चिढ़ाया। खोजी ने चपत जमाई, बौने ने धौल लगाई। दोनों की चांद घुटी-घुटाई, चिकनी थी। इस जोर की आवाज आती थी कि सुनने वालों और देखने वालों का जी खुश हो जाता था।

मीडा–खूब आवाज आई, तड़ाक ! एक और।

क्लारिसा–ओफ, मारे हंसी के पेट में बल पड़ गए।

खोजी–हंसी क्यों न आएगी ! जिसकी खोपड़ी पर पड़ती है उसी का दिल जानता है।

आज़ाद–अरे यार, जरा जोर से चपतबाजी हो।

खोजी–देखिए तो, दम के दम में बेदम किए देता हूं कि नहीं।

आज़ाद–मगर यार, यह तो बिलकुल बौना है।

खोजी–हाय अफसोस, तुम अभी बिलकुल लौंडे हो। अरे कमबख्त, इसका कद चोर है यों देखने में कुछ नहीं मालूम होता, मगर अखाड़े में चिट और लंगोट बांध कर खड़ा हुआ, बस फिर देखिए, बदन की क्या कैफियत होती है। बिलकुल गैंडा मालूम होता है। कोई कहता है, दुम-काट भैंसा है, कोई कहता है, हाथी का पाठा है, कोई नागौरी बैल बताता है, कोई कहता है, जमुनापारी बकरा है, मगर मुझे इसका गम नहीं। जानता

हूं कि कोई बोला और मैंने उठा के दे मारा।

खोजी ने कई बार झल्ला-झल्लाकर चपतें लगाईं। एक बार इत्तिफाक से उसके हाथ में इनकी गर्दन आ गई, ख्वाजा साहब ने बहुत हाथ-पैर मारे, बहुत कुछ जोर लगाए, मगर उसने दोनों हाथों से गर्दन पकड़ ली और लटक गया। खोजी कुछ झुके, उनका झुकना था कि उसने जोर से मुक्का दिया और दो-तीन लप्पड़ लगा के भागा। खोजी उसके पीछे दौड़े, उसने कमरे में जाकर अंदर से दरवाजा बंद कर लिया। खोजी ने चपतें खाईं तो लोग हंसे और मिस क्लारिसा ने तालियां बजाईं। तब तो आप बहुत ही झल्लाए, आसमान सिर पर उठा लिया, ओ गीदी, अगर शरीफ का बच्चा है तो बाहर आ जा। गिरा तो भाग खड़ा हुआ?

आज़ाद-अरे, मियां, यह हुआ क्या? कौन गिरा, कौन जीता? हम तो उस तरफ देख रहे थे। मालूम नहीं हुआ, किसने दे मारा।

खोजी-ऐसी बात काहे को देखने लगे थे? अंजर-पंजर ढीले कर दिए गीदी के। वल्लाह, कुश्ती देखने के काबिल थी। मैंने एक नया पेंच किया था। उसके गिरने के वक्त ऐसी आवाज आई कि यह मालूम होता था जैसे पहाड़ फट पड़ा, आपने सुना ही होगा !

आज़ाद-वह है कहां? क्या खोद के जमीन में गाड़ दिया आपने?

खोजी-नहीं भाई, हारे हुए पर हाथ नहीं उठाता, और कसम है, पूरा जोर नहीं किया, वरना मेरे मुकाबले में क्या ठहरता। हाथ-पांव तोड़ के चुर्र-मुर्र कर डालता। नानी ही तो मर गई कमबख्त की, बस रोता हुआ भागा।

आज़ाद-मगर ख्वाजा साहब, गिरा तो वह और यह आपकी पीठ पर इतनी गर्द क्यों लगी है?

खोजी-भई, यहां पर हम भी कायल हो गए।

क्लारिसा-इसी तरह उस दफा भी तुमने कुश्ती निकाली थी?

मीडा-बड़े शरम की बात है कि जरा-सा बौना तुमसे न गिराया गया।

खोजी-जी चाहता है, दोनों हाथों से अपना सिर पीटूं। कहता जाता हूं कि उस गीदी का कद चोर है। आखिर मेरा बदन चोर है या नहीं, इस वक्त मेरे बदन पर अंगरखा नहीं है। खासा देव बना हुआ हूं, अभी कपड़े पहन लूं तो पिद्दी मालूम होने लगूं। बस यही फर्क समझो। अव्वल तो मैं गिरा नहीं, अपनी ही जोर में आप आ गया। दूसरे उसका कद चोर है, फिर आप कैसे कहते हैं कि जरा-सा बौना था?

दूसरे दिन आज़ाद दोनों लेडियों को लेकर बाजार की एक कोठी से बाहर आते थे, तो क्या देखते हैं कि खोजी अफीम की पीनक में ऊंघते हुए चले आ रहे हैं। सामने से साठ-सत्तर दुंबे जाते थे। दुंबे वाले ने पुकारा-हटो-हटो, बचो-बचो वह आपे में हों तो बचें। नतीजा यह हुआ कि एक दुंबे से धक्का लगा तो धम से सड़क पर आ रहे और गिरते ही चौंक के गुल मचाया-कोई है? लाना करौली। आज अपनी जान इसकी जान एक करूंगा। खुदा जाने, इसको मेरे साथ क्या अदावत पड़ गई। अरे वाह बे बहुरूपिये, आज हमारे मुकाबले के लिए सांड़िनियां लाया है। अबे, यहां हर वक्त चौकन्ने रहते हैं। उस दफा बजाज की दुकान पर आए तो मिठाई खाने में आई, आज यह हाथ-पांव तोड़ डालने से क्या मिला। घुटने लहू-लुहान हो गए। अच्छा बचा, अब तो मैं होशियार हो गया हूं, अबकी समझूंगा।

सत्तानवे

सुरैया बेगम का मकान परीखाना बना हुआ था। एक कमरे में वजीर डोमिनी नाच रही थी। दूसरे में शाहजादी का मुजरा होता था।

फीरोजा–क्यों फैजन बहन, तुमको इस उजड़े हुए शहर की डोमिनियों का गाना काहे को अच्छा लगता होगा?

जानी बेगम–इनके लिए देहात की मीरासिनें बुलवा दो।

फैजन–हां, फिर देहाती तो हम हैं ही, इसका कहना क्या?

इस फिकरे पर वह कहकहा पड़ा कि घर भर गूंज उठा और फैजन बहुत शरमाईं। जानी बेगम ने कहा–बस यही तो बात हमें अच्छी नहीं लगती। एक तो बेचारी इतनी देर में बाद बोलीं, उस पर भी सबने मिलकर उनको बना डाला।

फमीहन डोमिनी मुजरा करने लगी। उसके साथ दो औरतें सारंगी लिये थीं, एक तबला बजा रही थी और एक मजीरे की जोड़ी। उसके गाने की शहर में धूम थी।

बंदनवार बांधो सब मिलके मालिनियां।

इसको उसने इस तरह अदा किया कि जिसने सुना, लट्टू हो गया।

जानी बेगम–चौथी के दिन तीस-चालीस तवायफों का नाच होगा।

नजीर बेगम–कश्मीरी नहीं आते, हमें उनकी बातों में बड़ा मजा आता है।

हशमत बहू–नवाब साहब को जनाने में नाच कराने की चिढ़ है।

फीरोजा–सुनो बहन ! जो और बदी पर आये तो उसकी बात ही और है, नहीं तो शरीफजादी के लिए सबसे बड़ा परदा दिल का है

फैजन–फहीमन, यह गीत गाओ–

'डाल गयो कोऊ टोना रे।'

फीरोजा–क्या गाओ गीत ! गीत कंडेवालियां गाती हैं।

जानी–और इनको ठुमरी, टप्पे, गजल से क्या मतलब। टकटा गाओ।

फीरोजा और जानी बेगम की बातें सुनकर मुबारक महल बिगड़ गईं।

फीरोजा–बहन, हमारी बातों से बुरा न मानना।

मुबारक–बुरा मानकर ही क्या लूंगी।

जानी–ऐसी बातों से आपस में फसाद हो जाता है।

फीरोजा–यह लड़वाती हैं बहन, सच कहती हूं।

मुबारक–तुम दोनों एक-सी हो, जैसे तुम वैसे वह, न तुम कम, न वह कम, शरीफों में बैठने लायक नहीं हो। पढ़-लिखकर भी यह बातें सीखीं।

जानी–देखिए, तो सही, अब दिल में कट गई होंगी।

मुबारक–मैं ऐसों से बात तक नहीं करती।

फीरोजा–(तिनककर) जितना दबो, उतना और दबाती हैं, तुम बात नहीं करतीं, यहां कौन तुमसे बात करने के लिए बेकरार है।

मुबारक–महरी हमारी पालकी मंगवाओ, हम जायंगे।

बेगम साहबा को खबर हुई तो उन्होंने दोनों को समझा-बुझाकर राजी कर दिया।

शाम हुई, रोशनी का इंतजाम होने लगा। बेगम ने कहा—फर्राशों को हुक्म दो कि बारहदरी को झाड़-कंवल से सजाएं, कमरे और दालानों में साफ चांदनियां बिछें, उन पर ऊनी और चीनी गलीचे हों। महरी ने बाहर जाकर आगा साहब से ये बातें कहीं—बोले, हां-हां साहब सुना। बेगम साहबा से कहो कि या तो हमको इंतजाम करने दें, या खुद ही बाहर चली आएं। आखिर हमको कोई गंवार समझी हैं? कल से इंतजाम करते-करते हम शल हो गए और जब बरात आने का वक्त आया तो हुक्म देने लगीं कि यह करो, वह करो। जाकर कह दो कि बाहर का इंतजाम हमारे ताल्लुक है। आप क्यों दखल देती हैं। हम अपने बंदोबस्त कर लेंगे।

महरी ने अंदर जाकर बेगम साहबा से कहा—हुजूर, बाहर का सब इंतजाम ठीक है। बारहदरी के फाटक पर नौबतखाना है, उस पर कारचोबी झूल पड़ी है, कहीं कंवल और गिलास हैं, कहीं हरी और लाल हांड़िया। रंग-बिरंगे कुमकुमे बड़ी बहार दिखाते हैं।

हशमत बहू—दरवाजे पर यह शोर कैसा हो रहा है?

महरी—हुजूर, शोर की न पूछें, आदमियों की इतनी भीड़ लगी हुई है कि कंधे से कंधा छिलता है। दूकानें भी बहुत-सी आई हैं। तंबोली लाल कपड़े पहने दूकानों पर बैठे हैं। हाथों में चांदी के कड़े, थालियों में सफेद पान, एक थाली में छोटी इलायचियां, एक में डलियां, कत्था इत्र में बसा हुआ, सफाई के साथ गिलौरियां बना रहा है। एक तरफ साकिनों की दूकानें हैं। बिगड़े-दिल दमों पर दम लगाते हैं, बे-फिकरे टूटे पड़ते हैं।

फीरोजा—सुनती हो फैजन बहन, चलो जरा बाहर देख आएं, यह नाक-भौं क्यों चढ़ाए बैठी हो। क्या घर से लड़ कर आई हो?

फैजन—हमारे पीछे क्यों पड़ी हो, हम किसी से बोलें, न चालें।

हशमत—हां, फीरोजा, यह तुममें बड़ी बुरी आदत है।

फीरोजा—लड़वाओ, वह तो सीधी-सादी हैं, शायद तुम्हारे भरों में आ जाएं।

जानी—फीरोजा बेगम जिस महफिल में न हों वह बिलकुल सूनी मालूम हो।

फीरोजा—हमें अफसोस यही है कि हमसे मुबारक महल बहन खफा हो गईं। अब कोई मेल करवा दे।

मुबारक—बहन तुम बड़ी मुंहफट हो।

फीरोजा—अब साफ-साफ कहूं तो बुरा मानो, जरी-जरी सी बात में चिटकती हो। आपस में हंसी-दिल्लगी हुआ करती है। इसमें बिगड़ना क्या? फैजन बुरा मानें तो एक बात भी है, यह बेचारी देहात में रहती हैं, यहां के राह-रस्म क्या जानें, मगर तुम शहर की होकर बात-बात में रोए देती हो। रही मैं, मैं तो हाजिर-जवाब हूं ही। हां, जानी बेगम की तरह जबांदराज नहीं !

जानी—अब मेरी तरफ झुकीं।

हशमत—चौमुखा लड़ती हैं, उफ री शोखी !

अब दूल्हा के यहां का जिक्र सुनिए। वहां इससे भी ज्यादा धूम-धाम थी। नौजवान शाहजादे और नवाबजादे जमा थे। दिल्लगी हो रही थी।

एक—यार, आज तो बेसरूर जमाए जाना मुनासिब नहीं।

दूसरा—मालूम होता है, आज पीके आए हो।

पहला–अरे मियां, खुदा से डरो, पीने वाले की ऐसी-तैसी।

दूल्हा–जरूर पीके आए हो। आप हमारी बारात के साथ न चलिए।

दीवानखाने में बुजुर्ग लोग बैठे पुराने जमाने की बातें कर रहे थे। एक मौलवी साहब बोले–न अब वह लोग हैं, न जमाना। अब किसके पास जायं, कोई मिलने के काबिल ही नहीं। इल्म की तो अब कदर ही नहीं। अब तो वह जमाना है कि गाली खाए, मगर जवाब न दे।

ख्वाजा साहब–अब आप देखें कि उस जमाने में दस, बीस, तीस की नौकरियां थीं, मगर वाह रे बरकत। एक भाई घर में नौकर है और दस भाई चैन कर रहे हैं।

रात को दस बजे नवाब साहब महल में नहाने गए। चारों तरफ बंदनवार बंधी हुई थीं। आम, अमरूद, नारंगियां लटक रही थीं। नीचे एक सौ एक कोरे घड़े थे, एक मटके पर इक्कीस टोंटी का बधना रखा था और बधने में जौ लगे हुए थे। दूल्हा की मां ने कहा–कोई छींके-वींके नहीं, खबरदार कोई छींकने न पाए। घर भर में बच्चों को मन कर दो कि जिसको छींक आए, जब्त करे। अब दिल्लगी देखिए कि इस टोकने से सबको छींक आने लगी। किसी ने नाक को उंगली से दबाया, कोई लपक के बाहर चला गया। दूल्हा ने लुंगी बांधी, बदन में उबटन मला गया। बहनें सिर पर पानी डालने लगीं।

दूल्हा–कितना सर्द पानी है। ठिठरा जाता हूं।

महरी–फिर हुजूर, शादी करना कुछ दिल्लगी है !

बहन–दिल में तो खुश होंगे। आज तुम्हें भला सर्दी लगेगी।

नहाकर दूल्हा ने खड़ाऊं पहनीं, कमरे में आए, कपड़े पहने ! महरू का पायजामा, जामदानी का अंगरखा, सिर पर पगड़ी के इर्द-गिर्द मोती टंके हुए, बीच में पुखराज का रंगीन नगीना, कमर में शाली पटका, पगड़ी पर फूलों का सेहरा, हाथ में लाल रेशनी रुमाल और कंधे पर हरा दुशाला, पैरों में फुंदनेदार बूट।

जब दूल्हा बाहर गया तो बेगम साहबा ने लड़कियों से कहा–अब चलने की तैयारी करो। हमको बारात से पहले पहुंच जाना चाहिए। दूल्हा की बहनें अपने-अपने जोड़े पहनने लगीं। महरियों-लौंड़ियों को भी हुक्म हुआ कि कपड़े बदलो। जरा देर में सुखपाल और झप्पान दरवाजे पर लाकर लगा दिए गए। दोनों बहनें चलीं। दाएं-बाएं महरियां, मशालचियों के हाथ में मशालें, सिपाही और खिदमतगर लाल फुंदनेदार पगड़ियां बांधे साथ चले। जिस तरफ से सवारी निकल गई, गलियां इत्र की महक से बस गईं। यही मालूम होता था कि परियों का उड़न-खटोला है।

जब दोनों बहनें समधियाने पहुंच गईं, तो नवाब साहब की मां भी चलीं। वहां दुलहिन की मां ने इनकी पेशवाई की। इत्र-पान से खातिर हुई और डोमिनियों का नाच होने लगा।

थोड़ी देर के बाद दूल्हा के यहां से बारात चली, सबके आगे हाथी पर निशान था। हाथी के सामने अनार और हजारे छूट रहे थे। हाथियों के पीछे अंगरेजी बाजेवालों की धूम थी। फिर सजे हुए घोड़े सिर से पांव तक जेवर से लदे चले आते थे। साईस उनकी बाग पकड़े हुए थे और दो सिपाही इधर-उधर कदम बढ़ाते चले जाते थे। दूल्हा के सामने शहनाई बज रही थीं तमाशा देखने वाले यह ठाट-बाट देखकर दंग हो रहे थे।

एक—भई, अच्छी बारात सजाई; और खूब आतशबाजी बनाई है। आतशबाजी क्या बनवाई है, यों कहिए कि चांदी गलवाई है।

दूसरा—अनार तो आसमान की खबर लाता है, मगर धुंआ आसमान के भी पार हो जाता है।

तख्त ऐसे थे कि जो देखता, दांतों अंगुली दबाता। एक हाथी ऐसा नादिर बना था कि नकल को असल कर दिखाया था। बाज-बाज तख्त आदमियों को मुगालता देते थे, खासकर चंडूबाजों का तख्त तो ऐसा बनाया था कि चंडूबाजों को शर्माया। एक चंडूबाज ने झल्लाकर कहा—इन कुम्हारों को हमसे अदावत है। खुदा इनसे समझे। एक महफिल की तसवीर बहुत ही खूबसूरत थी। फर्श पर बैठे लोग नाच देख रहे हैं, बीच में मसनद बिछी है, दूल्हा तकिया लगाए बैठा है और सामने नाच हो रहा है। सब के पीछे एक आदमी हाथी पर बैठा रुपये लुटाता आता था और शोहदे गुल मचाते थे। एक-एक रुपये पर दस-दस गिरे पड़ते थे। जान पर खेलकर पिले पड़ते थे।

यह वही सुरैया बेगम हैं जो कभी तक मारी-मारी फिरती थीं। जिनको सारी दुनिया में कहीं ठिकाना न था, वही सुरैया बेगम आज शान से दुलहिन बनी बैठी हैं और इस धूमधाम से उनकी बारात आती है। मां, बाप, भाई, बहन, सभी मुफ्त में मिल गए। इस वक्त उनके दिल में तरह-तरह के ख्याल आते थे—यहां किसी को मालूम न हो जाए कि यही सराय में रहती थी, इसी का नाम अलारक्खी भठियारी था, फिर कहीं की न रहूं। इस खयाल से उन्हें इतनी घबराहट हुई कि इधर दरवाजे पर बारात आई और उधर वह बेहोश हो गईं। सबने दुलहिन को घेर लिया। अरे, खैर तो है ! यह हुआ क्या, किसी ने मिट्टी पर पानी डाल कर सुंघाया। दुलहन की मां इधर-उधर दौड़ने लगी।

हशमत—ऐ, यह हुआ क्या अम्मांजान?

फीरोजा—अभी अच्छी-खासी बैठी हुई थीं। बैठे-बैठे गश आ गया।

बाहर दूल्हा ने यह खबर सुनी तो अपनी महरी को बुलवाया और समझाया कि जाके पूछो, अगर जरूरत हो तो डॉक्टर को बुलवा लूं। महरी ने आकर कहा—हुजूर, अब तबियत बहाल है, मगर पसीना आ रहा है और पानी-पानी करती हैं। नवाब साहब की जान में आई। बार-बार तबियत का हाल पूछते थे। जब दुलहिन की हालत दुरुस्त हो गई तो हमजोलियों ने दिक करना शुरू किया।

जानी—आखिर इस गश का सबब क्या था? हां, अब समझी। अभी सूरत देखी नहीं और गश आने लगे।

फीरोजा—ऐ नहीं, क्या जाने अगली-पिछली कौन बात याद आ गई।

जानी—सूरत से खुशी बरसती है, वह हंसी आई। ऐ, लो वह फिर गर्दन झुका ली।

हशमत—यहां तो पांव-तले से मिट्टी निकल गई।

फीरोजा—मजा तो जब आता कि निकाह के वक्त गश आता, मियां को बनाते तो, कि अच्छे सब्जकदम हो।

अब सुनिए कि महल से बराबर खबरें आ रही हैं कि तबियत अच्छी है, मगर नवाब साहब को चैन नहीं आता। आखिर डॉक्टर साहब को बुलवा ही लिया। उनका महल में दाखिल होना था कि हमजोलियों ने उन पर आवाजें कसने शुरू किए।

एक–मुआ सूंस है कि आदमी, अच्छे भदभद को बुलाया।

दूसरी–तोंद क्या, चार आनेवाला फर्रुखाबादी तरबूज है।

तीसरा–तंबाकू का पिंडा है या आदमी है?

चौथी–कह दो, कोई अच्छा हकीम बुलावें, इस जंगली हूश की समझ में क्या खाक आएगा।

पांचवीं–खुदा की मार ऐसे मुए पर !

डॉक्टर साहब कुर्सी पर बैठे, नये आदमी थे, उर्दू वाजिबी ही वाजिबी समझते थे। बोले–दारोद होते कौन जागो?

महरी–नहीं डॉक्टर साहब, दारोद तो नहीं बतातीं, मगर देखते-देखते गश आ गया।

डॉक्टर–गास कीस को बोलते?

महरी–हुजूर, मैं समझती नहीं। गास क्या।

डॉक्टर–गास किसको बोलते? तुम लोग क्या गोल-माल करने मांगता। हम जुबान देखे।

फिरोजा–नौज ऐसा हकीम हो। डॉक्टर की दुम बना है।

ज़ानी–कहो, नब्ज देखें।

डॉक्टर–नाबुज कैसा बात। हम लोग नाबुज देखना नहीं मांगता, जुबान दिखाए, जुबान, इस माफिक।

डॉक्टर साहब ने मुंह खोलकर जबान बाहर निकाली।

फीरोजा–मुंह काहे को घंटावेग की गड़हिया है।

जानी–अरे महरी, देखती क्या है, मुंह में धूल झोंक दे।

हशमत–एक दफा फिर मुंह खोले तो मैं पंखे की डंडी हलक में डाल दूं।

डॉक्टर–जिस माफिक हम जुबान दिखाया, उस माफिक हम देखना मांगता सब भाई लोग हंसी करता। जुबान दिखाने में क्या बात है।

फीरोजा–नवाब साहब से कहो, पहले इसके दिमाग का इलाज करें।

सुरैया बेगम जब किसी तरह जबान दिखाने पर राजी न हुई तो डॉक्टर साहब ने नब्ज देखकर नुस्खा लिखा और चलते हुए। सुरैया का जी कुछ हलका हुआ। मगर इसी वक्त मेहमानों के साथ उन्होंने एक ऐसी औरत को देखा जो उनसे खूब वाकिफ थी, वह मैके में इनके साथ बरसों रह चुकी थी। होश उड़ गए कि कहीं यह पूरा हाल सबसे कह दे तो कहीं की न रहूं। इस औरत का नाम ममोला था। वह एक शरीर, आवाजें कसने लगी। एक लड़के को गोद में लेकर उसके साथ खेलने लगी और बातों-बातों में सुरैया बेगम को सताने लगी। हम खूब पहचानते हैं। सराय में भी देखा था, महल में भी देखा था। अलारक्खी नाम था। इन फिकरों ने सुरैया बेगम को और भी बेचैन कर दिया, चेहरे पर जर्दी छा गई। कमरे में जाकर लेट गईं, उधर ममोला ने भी समझा कि अगर ज्यादा छेड़ती हूं तो दुलहिन दुश्मन हो जायगी। चुप हो रही।

बाहर महफिल जमी हुई थी। दूल्हा ज्यों ही मसनद पर बैठा, एक हसीना नजाकत के साथ कदम उठाती महफिल में आई। यारों ने मुंह-मांगी मुराद पाई। एक बूढ़े मियां ने पोपले मुंह से कहा–खुदा खैर करें। इस पर महफिल भर ने कहकहा लगाया और

वह परी भी मुसकिराकर बोली—बूढ़े मुंह मुंहासे, इस बुढ़ौती में भी छेड़-छाड़ की सूझी ! आपने हंसकर जवाब दिया—बीबी, हम भी कभी जवान थे, बूढ़े हुए तो क्या, दिल तो वही है।

यह परी नाचने खड़ी हुई तो ऐसा सितम ढाया कि सारी महफिल लोट-पोट हो गई। नौजवानों में आहिस्ता-आहिस्ता बातें होने लगीं।

एक—बेअख्तियार जी चाहता है कि इसके कदमों पर सिर रख दूं।

दूसरा—कल ही परसों हमारे घर न पड़ जाए तो अपना नाम बदल डालूं, देख लेना।

तीसरा—कसम खुदा की, मैं तो इसकी गुलामी करने को हाजिर हूं, पूछो तो कहां से आई है।

चौथा—शीन-काफ से दुरुस्त है।

पांचवां—हमसे पूछो, मुरादाबाद से आई है।

हसीना ने सुरीली आवाज में एक गजल गाई। इस गजल ने महफिल को मस्त कर दिया। एक साहब की आंखों से आंसू बह चले, यह वही साहब थे जिन्होंने कहा था कि हम इसे घर में डाल लेंगे। लोगों ने समझाया—भई, इस रोने-धोने से क्या मतलब निकलेगा। यह कोई शरीफ की बहू-बेटी तो है नहीं, हम कल ही शिप्पा लड़ा देंगे। मगर इस वक्त तो खुदा के वास्ते आंसू न बहाओ, वरना लोग हंसेंगे। उन्होंने कहा—भाई, दिल को क्या करूं, मैं तो खुद चाहता हूं कि दिल का हाल जाहिर न हो, मगर वह मानता ही नहीं तो मेरा क्या कुसूर है।

यह हजरत तो रो रहे थे। और लोग उसकी तारीफें कर रहे थे। एक ने कहा—यह हमारे शहर की नाक हैं। दूसरा बोला—इसमें क्या शक। आप बहुत ही मिलनसार, नेक, खुश-मिजाज हैं। तीसरे साहब बोले—ऐ हजरत, दूर-दूर तक शोहरत है इनकी? अब इस शहर में जो कुछ हैं, यही हैं।

इस जलसे में दो-चार देहाती भी बैठे थे। उनको यह बातें नागवार लगीं। मुन्ने मियां बोले—वाह, अच्छा दस्तूर है शहर का, पतुरिया को सामने बिठा लिया।

छुट्टन—हमारे देश में अगर पतुरिया को कोई बीच में बिठाए तो हुक्का-पानी बंद हो जाय।

गजराज—पतुरिया बैठे काहे को, पनही न खाय?

नवाब—जी हां, शहर वाले बड़े ही बेशरम होते हैं।

आगा—देहातियों की लियाकत हम बेचारे कहां से लाएं?

गजराज—हई है, हम लोग इज्जतदार हैं। कोई नंगे-लुच्चे नहीं हैं।

आगा—तो जनाब, आप शहर की मजलिस में क्यों आए?

गजराज—काहे को बुलाया, क्या हम लोग बिन बुलाए आए?

आगा—अच्छा, अब गुस्से को थूक दीजिए।

जब ये लोग जरा ठंडे हुए, तो उस हसीना ने एक फारसी गजल गाई, इस पर एक कमसिन नवाबजादे ने जो पंद्रह-सोलह साल से ज्यादा न था, ऊंची आवाज में कहा—वाह जानेमन, क्यों न हो ! इस लड़के के बाप भी महफिल में बैठे थे, मगर इस लड़के को जरा भी शर्म न आई।

इसके बाद तवायफ बदली गई। वह आकर महफिल में बैठ गई और इसके पीछे साजिंदे भी बैठ गए।

नवाब–ऐ, खैरियत तो है? ऐ साहब, नाचिए-गाइए।

हसीना–कल से तबियत खराब है। दो-एक चीजें आपकी खातिर से कहिए तो गा दूं।

नवाब–मजा किरकिरा कर दिया, तुम्हारे नाच की बड़ी तारीफ सुनी है।

हसीना–क्या अर्ज करूं। आज तो नाचने के काबिल नहीं हूं।

यह कहकर, उसने एक ठुमरी शुरू कर दी। इधर बड़े नवाब साहब महल में गए और जहां दुलहिन का पलंग था, वहां बैठे। खवास ने चिकनी डली, इलायची, गिलौरियां पेश कीं। इत्र की शीशियां सामने रखीं। बड़े नवाब साहब हुक्का पीने लगे।

सुरैया बेगम की मां परदे की आड़ से बोलीं–आदाब अर्ज है।

बड़े नवाब–बंदगी, खुदा करे, इसकी औलाद देखो।

बेगम–खुदा आपकी दुआ कबूल करे। शुक्र है कि इस शादी की बदौलत आपकी जियारत हुई।

बड़े नवाब–दुलहिन से पूछूं। क्यों बेटी, मेरे लड़के से तुम्हारा निकाह होगा। तुम इसे मंजूर करती हो?

सुरैया बेगम ने इसका कुछ जवाब न दिया। बड़े नवाब साहब ने कई मरतबा वही सवाल पूछा, मगर दुलहिन ने सिर ऊपर न उठाया। आखिर जब हशमत बहू ने आकर कहा–क्या सबको दिक करती हो, जी तो चाहता होगा कि बेनिकाह ही चल दो, मगर नखरों से बाज नहीं आती हो। तब सुरैया बेगम ने आहिस्ता से कहा–हूं।

बड़ी बेगम–आपने सुना?

बड़े नवाब–जी नहीं, जरा भी नहीं सुना।

बड़ी बेगम ने कहा–आप लोग जरा खामोश हो जाएं तो नवाब साहब लड़की की आवाज सुन लें। जब सब खामोश हो गईं तो दुलहिन ने फिर आहिस्ता से कहा–हूं।

उधर नौशा के दोस्त उससे मजाक कर रहे थे।

एक–आपसे जो पूछा जाय कि निकाह मंजूर है या नहीं, तो आप घंटे भर तक जवाब न दीजिएगा।

दूसरा–और नहीं तो क्या, हां कह देंगे?

तीसरा–जब लोग हाथ-पैर जोड़ने लगें, तब आहिस्ते से कहना, मंजूर है।

चौथा–ऐसा न हो, तुम फौरन मंजूर कर लो और उधर वाले हमारी हंसी उड़ाएं।

दूल्हा–दूल्हा तो नहीं बने मगर बरातें तो बहुत देखी हैं। अगर आप लोगों की यही मर्जी है तो मैं दो घंटे में मंजूर करूंगा।

अब मेहर पर तकरार होने लगी। दुलहिन के भाई ने कहा–मेहर चार लाख से कम न होगा। बड़े नवाब साहब बोले–भाई, और भी बढ़ा दो, चार लाख मेरी तरफ से, पूरे आठ लाख का मेहर बंधे।

निकाह के बाद किश्तियां आयीं, किसी में दुशाला, किसी में भारी-भारी हार, तश्तरियों में चिकनी डली, इलायची, पान, शीशियों में इत्र। किसी किश्ती में मिठाइयां और मिश्री

के कूजे। जब काजी साहब रुखसत हो गये तो दूल्हा ने पांच अशर्फियां नजर दिखाई। नवाब साहब बाहर आए। थोड़ी देर के बाद महल से शरबत आया। नवाब साहब ने इक्कीस अशर्फियां दीं। दुलहिन के खिदमतगार ने पांच अशर्फियां पायीं। पहले तो दुशाला मांगता रहा, मगर लोगों के समझाने से इनाम ले लिया। दुलहिन के लिए जूठा शरबत भेजा गया। महफिल वालों ने शरबत पिया, हार गले में डाला, इत्र लगाया और पान खाकर गाना सुनने लगे। इतने में अंदर से आदमी दूल्हा को बुलाने आया। दूल्हा यहां से खुश-खुश चला। जब ड्योढी में पहुंचा तो उसकी बहनों ने आंचल डाला और ले जाकर दुलहिन के मसनद पर बिठा दिया। डोमिनियों ने रीत-रस्म शुरू की ! पहले आरसी की रस्म अदा की।

फीरोजा-कहिए, 'बीबी, मुंह खोलो' मैं तुम्हारा गुलाम हूं।'

नवाब-बीबी मुंह खोलो, मैं तुम्हारे गुलाम का गुलाम हूं।

हशमत-जब तक हाथ न जोड़ोगे, मुंह न खोलेंगी।

मुबारक महल-ऊपर के दिल से गुलाम बनते हो, दिल से कहो तो आंखें खोल दें।

नवाब-या खुदा, अब क्योंकर कहूं, बीबी तुम्हारा गुलाम हूं। खुदा के लिए जरा सूरत दिखा दो।

दूल्हा ने एक दफा झूठ-मूठ गुल मचा दिया, वह आंखें खोलीं, सखियों ने कहा-झूठ कहते हो, कौन कहता है, आंख खोली।

डोमिनी-बेगम साहब, अब आंखें खोलिए, बेचारे गुलाम बनते-बनते थक गये। आप फकत आंख खोल दें। वह आपको देखें, आप चाहे उन्हें न देखें।

फीरोजा-वाह, दूल्हा तो चाहे पीछे देखे, यह पहले हीं घूर लेंगी।

आखिर सुरैया बेगम ने जरा सिर उठाया और नवाब साहब से चार आंखें होते ही शरमाकर गर्दन नीचे कर ली।

नवाब-कहिए, अब आंखें खोलीं या अब भी नहीं खोलीं?

फीरोजा-अभी नाहक आंखें खोलीं, जब कदमों पर टोपी रखते तब आंखें खोलतीं।

दूल्हा ने इक्कीस पान का बीड़ा खाया, पायजामे में एक हाथ से इजारबंद डाला और तब सास को सलाम किया। सास ने दुआ दी और गले में मोतियों का हार डाल दिया। अब मिश्री चुनवाने की रस्म अदा हुई। दुलहिन के कंधे, घुटने, हाथ वगैरह पर मिश्री के छोटे-छोटे टुकड़े रखे गए और दूल्हा ने झुक-झुक के खाये। सुरैया बेगम को गुदगुदी मालूम हो रही थी। सालियां दूल्हा को छेड़ रही थीं। किसी ने चुटकी ली, किसी ने गुद्दी पर हाथ फेरा, यह बेचारे इधर-उधर देखकर रह जाते थे।

जानी-फीरोजा बेगम जैसी चरबांक साली भी न देखी होगी।

नवाब-एक चरबांक हो तो कहूं, यहां तो जो है, आफत का परकाला है और फीरोजा बेगम का तो कहना ही क्या, सवार को घोड़े पर से उतार लें।

फीरोजा-क्या तारीफ की है, वाह-वाह !

जानी-क्या कुछ झूठ है? तुम्हारी जबान क्या, कतरनी है !

फीरोजा-और तुम अपनी कहो, दूल्हा को उसी वक्त से घूर रही हो। उनकी नजर

भी पड़ती है तुम्हीं पर।

जानी–फिर पड़ा ही चाहे, पहले अपनी सूरत तो देखो।

फीरोजा–सुरैया बेगम गाती खूब हैं और बताने में तो उस्ताद हैं, कोई कथक इनके सामने क्या नाचेगा, कहो एक घुंघरू बोले, कहो दोनों बोलें और तलवार पर तो ऐसा नाचती हैं कि बस, कुछ न पूछो।

जानी–सुना, किसी कथक ने दिल लगाके नाचना सिखाया है। नवाब साहब की चांदी है, रोज मुफ्त का नाच देखेंगे।

हशमत–भई, इतनी बेहयाई अच्छी नहीं, हंसी-दिल्लगी का भी एक मौका होता है।

फीरोजा–हमारी समझ ही में नहीं आता कि वह कौन-सा मौका होता है, बारात के दिन न हंसे-बोलें तो फिर किस दिन हंसे-बोलें?

इस तरह हंसी-दिल्लगी में रात कट गई। सवेरे चलने की तैयारियां होने लगीं। दुलहिन की मां-बहनें सब-की-सब रोने लगीं। मां ने समधिन से कहा–बहन, लौंडी देती हूं, इस पर मिहरबानी की निगाह रहे। वह बोलीं–क्या कहती हो? औलाद से ज्यादा है। जिस तरह अपने लड़कों को समझती हूं उसी तरह इसको भी समझूंगी। इसके बाद दूल्हा ने दुलहिन को गोद में उठाकर सुखपाल पर सवार किया। समधिनें गले मिलकर रुखसत हुईं।

जब बारात दूल्हा के घर पर आई तो एक बकरा चढ़ाया गया, इसके बाद कहारियां पालकी को उठाकर जनानी ड्योढ़ी पर ले गईं। तब दूल्हा की बहन ने आकर दुलहिन के पांव दूध से धोये और तलवे में चांदी के वरक लगाये। इसके बाद दूल्हा ने दुलहिन के दामन पर नमाज पढ़ी। फिर खीर आई, पहले दुलहिन के हाथ पर रखकर दूल्हा को खिलायी गयी, फिर दूल्हा के हाथ पर खीर रखी गयी और दुलहिन से कहा गया कि खाओ, तो वह शरमाने लगी। आखिर दूल्हा की बहनों ने दूल्हा का हाथ दुलहिन के मुंह की तरफ बढ़ा दिया। इस तरह यह रस्म अदा हुई, फिर मुंह दिखावे की रस्म पूरी हुई और दूल्हा बाहर आया।

अट्ठानवे

शाहजादा हुमायूं फर की मौत जिसने सुनी, कलेजा हाथों से थाम लिया। लोगों का खयाल था कि सिपहआरा यह सदमा बरदाश्त न कर सकेगी और सिसक-सिसक कर शाहजादे की याद में जान दे देगी। घर में किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि सिपहआरा को समझाये या तसकीन दे, अगर किसी ने डरते-डरते समझाया भी तो वह और रोने लगती और कहती–क्या अब तुम्हारी यह मर्जी है कि मैं रोऊं भी न, दिल ही में घुट-घुट कर मरूं। दो-तीन दिन तक वह कब्र पर जाकर फूल चुनती रही, कभी कब्र को चूमती, कभी खुदा से दुआ मांगती कि ऐ खुदा, शाहजादे बहादुर की सूरत दिखा दे, कभी आप ही आप मुसकिराती, कभी कब्र की चट-चट बलाएं लेतीं। एक आंख से हंसती, एक आंख

से रोती। चौथे दिन वह अपनी बहनों के साथ वहां गयी। चमन में टहलते-टहलते उसे आज़ाद की याद आ गयी। हुस्नआरा से बोली–बहन, अगर दूल्हा भाई आ जायं तो हमारे दिल को तसकीन हो। खुदा ने चाहा तो दो-चार दिन में आया ही चाहते हैं।

हुस्नआरा–अखबारों से तो मालूम होता है कि लड़ाई खतम हो गयी।

सिपहआरा–मैं कल अम्मांजान को भी लाऊंगी।

एक उस्तानी जी भी उनके साथ थीं। उस्तानी जी से किसी फकीर ने कहा था कि जुमेरात के दिन शाहजादा जी उठेगा। और किसी को तो इस बात का यकीन न आता था, मगर उस्तानी जी को इसका पूरा यकीन था। बोलीं–कल नहीं, परसों बेगम साहब को लाना।

सिपहआरा–उस्तानी जी, अगर मैं यहीं दस-पांच दिन रहूं तो कैसा हो?

उस्तानी–बेटा, तुम हो किस फिक्र में ! जुमेरात के दिन देखो तो, अल्लाह क्या करता है, परसों ही तो जुमेरात है, दो दिन तो बात करते कटते हैं।

सिपहआरा–खुशी का तो एक महीना भी कुछ नहीं मालूम होता, मगर रंज की एक रात पहाड़ हो जाती है। खैर, दो दिन और सही, शायद आप ही का कहना सच निकले।

हुस्नआरा–उस्तानी जी जो कहेंगी, समझ-बूझ कर कहेंगी। शायद अल्लाह को इस गम के बाद खुशी दिखानी मंजूर हो।

सिपहआरा ने कब्र पर चढ़ाने के लिए फूल तोड़ते हुए कहा–फूल तो दो-एक दिन हंस भी लेते हैं, मगर कलियां बिन खिले मुरझा जाती हैं, उन पर हमें बड़ा तरस आता है।

उस्तानी–जो खिले वे भी मुरझा गये, जो नहीं खिले वे भी मुरझा गये। इनसान का भी यही हाल है, आदमी समझता है कि मौत कभी आयेगी ही नहीं। मकान बनवाएगा तो सोचेगा कि हजार बरस तक इसकी बुनियाद ऐसी ही रहे; लेकिन यह खबर ही नहीं कि 'सब ठाट पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा।' सबसे अच्छे वे लोग हैं जिनको न खुशी से खुशी होती है, न गम से गम।

हुस्नआरा–क्यों उस्तानी जी, आपको इस फकीर की बात का यकीन है?

उस्तानी–अब साफ-साफ कह दूं, आज के दूसरे दिन हुमायूं फर यहां न बैठे हों तो सही।

हुस्नआरा–तुम्हारे मुंह में घी-शक्कर, कल भी कुछ दूर नहीं है, कल के बाद ही तो परसों आयेगा।

सिपहआरा–बाजीजान, मुझे तो जरा भी यकीन नहीं आता। भला आज तक किसी ने यह भी सुना है कि मुर्दा कब्र से निकल आया?

यह बात होती ही थी कि कब्र के पास से हंसी की आवाज़ आयी, सबको हैरत थी कि यह कहकहा किसने लगाया। किसी की समझ में यह बात न आयी।

दस बजते-बजते सबकी सब घर लौट आयीं। यहां पहले ही से एक शाह साहब बैठे हुए थे। चारों बहनों को देखते ही महरी ने आकर कहा–हुजूर, यह बड़े पहुंचे हुए फ़कीर हैं, यह ऐसी बातें कहते हैं, जिनसे मालूम होता है कि शाहजादा साहब के बारे में लोगों को धोखा हुआ था। वह मरे नहीं हैं, बल्कि जिंदा हैं। उस्तानी जी ने शाह साहब

को अंदर बुलाया और बोलीं–आपको इस वक्त बड़ी तकलीफ हुई, मगर हम ऐसी मुसीबत में गिरफ्तार हैं कि खुदा सातवें दुश्मन को भी न दिखाये।

शाह साहब–खुदा की कारसाजी में दखल देना छोटा मुंह बड़ी बात है। मगर मेरा दिल गवाही देता है कि शाहजादा हुमायूं फर जिंदा हैं। यों तो यह बात मुहाल मालूम होती है; लेकिन इंसान क्या, और उसकी समझ क्या, इतना तो किसी को मालूम ही नहीं कि हम कौन हैं, फिर कोई खुदा की बातों को क्या समझेगा?

उस्तानी–आप अभी तो यहीं रहेंगे?

शाह साहब–मैं उस वक्त यहां से जाऊंगा, जब दूल्हा के हाथ में दुलहिन का हाथ होगा।

उस्तानी–मगर दुलहिन को तो इस बात का यकीन ही नहीं आता। आप कुछ कमाल दिखायें तो यकीन आये।

शाह साहब–अच्छा तो देखिए.....

शाह साहब ने थोड़ी-सी उरद मंगवायी और उस पर कुछ पढ़कर जमीन पर फेंक दी। आध घंटा भी न गुजरा था कि वहां की जमीन फट गयी।

बड़ी बेगम–अब इससे बढ़कर क्या कमाल हो सकता है।

सिपहआरा–अम्मांजान, अब मेरा दिल गवाही देता है कि शायद शाह साहब ठीक कहते हों। (हुस्नआरा से) बाजी, अब तो आप फकीरों के कमाल की कायल हुई ।

उस्तानी–हां बेटा, इसमें शक क्या है। फकीरों का कोई आज तक मुकाबिला कर सका है? वह लोग बादशाही की क्या हकीकत समझते हैं।

शाह साहब–फकीरों पर शक उन्हीं लोगों को होता है जो कामिल फकीरों की हालत से वाकिफ नहीं, वरना फकीरों ने मुर्दो को जिंदा कर दिया है, मंजिलों से आपस में बातें की हैं और आगे का हाल बता दिया है।

बेगम साहबा ने अपने रिश्तेदारों को बुलाया और यह खबर सुनायी। इस पर लोग तरह-तरह के शुबहे करने लगे। उन्हें यकीन ही न था कि मुर्दा कभी जिंदा हो सकता है।

दूसरे दिन बेगम साहबा ने खूब तैयारियां कीं। घर भर पें सिर्फ हुस्नआरा के चेहरे से रंज जाहिर होता था, बाकी सब खुश थे कि मुंह-मांगी मुराद पायी। हुस्नआरा को खौफ था, कहीं सिपहआरा की जान के लाले न पड़ जायं।

तमाम शहर में यह खबर मशहूर हो गयी और जुमेरात को चार घड़ी दिन रहे से मेला जमा होने लगा। वह भीड़ हो गयी कि कंधे से कंधा छिलता था। लोगों में ये बातें हो रही थीं–

एक–मुझे तो यकीन है कि शाहजादे आज ज़िंदा हो जायेंगे।

दूसरा–भला फकीरों की बात कहीं गलत होती है?

तीसरा–और ऐसे कामिल फकीर की !

चौथा–विंध्याचल पहाड़ की चोटी पर बरसों नीम की पत्तियां उबालकर नमक के साथ खायी हैं। कसम खुदा की, इसमें जरा झूठ नहीं।

पांचवां–सुलतान अली की बहू तीन दिन तक खून थूका कीं, वैद्य भी आये, हकीम

भी आये, पर किसी से कुछ न हुआ, तब मैं जाके इन्हीं शाह साहब को बुला लाया। जाकर एक नजर उसको देखा और बोले, क्या ऐसा हो सकता है कि सब लोग वहां से हट जायं, सिर्फ मैं और यह लड़की रहे। लड़की के बाप को शाह साहब पर पूरा भरोसा था। सब आदमियों को हटाने लगा। यह देखकर शाह साहब हंसे और कहा, इस लड़की को खून नहीं आता ! यह तो बिलकुल अच्छी है। यह कहकर शाह साहब ने लड़की के सिर पर हाथ रखा, तब से आज तक उसे खून नहीं आया। फकीरों ही से दुनिया कायम है।

इतने में खबर हुई कि दुलहिन घर से रवाना हो गयी हैं। तमाशा देखने वालों की भीड़ और भी ज्यादा हो गयी, उधर सिपहआरा बेगम ने घर से बाहर पांव निकाला तो बड़ी बेगम ने कहा–खुदा ने चाहा तो आज फतह है, अब हमें जरा भी शक नहीं रहा।

सिपहआरा–अम्मांजान, बस अब इधर या उधर, या तो शाहजादे को लेके आऊंगी, या वहीं मेरी भी कब्र बनेगी।

बेगम–बेटी, इस वक्त बदसगुनी की बातें न करो।

सिपहआरा–अम्मांजान, दूध तो बख्श दो; यह आखिरी दीदार है। बहन, कहा-सुना माफ करना, खुदा के लिए मेरा मातम न करना। मेरी तसवीर आबनूस के संदूक में है, जब तुम हंसो-बोलो तो मेरी तसवीर भी सामने रख लिया करना। ऐ अम्मांजान, तुम रोती क्यों हो?

बहार बेगम–कैसी बातें करती हो सिपहआरा, वाह !

रूहअफजा–बहन, जो ऐसा ही है तो न जाओ।

बड़ी बेगम–हुस्नआरा, बहन को समझाओ।

हुस्नआरा की रोते-रोते हिचकी बंध गयी। मुश्किल से बोलीं–क्या समझाऊं।

सिपहआरा–अम्मांजान, आपसे एक अर्ज है, मेरी कब्र भी शाहजादे की कब्र के पास ही बनवाना। जब तक तुम अपने मुंह से न कहोगी, मैं कदम बाहर न रखूंगी।

बड़ी बेगम–भला बेटी, मेरे मुंह से यह बात निकलेगी ! लोगो, इसको समझाओ, इसे क्या हो गया है।

उस्तानी–आप अच्छा कह दें, बस।

सिपहआरा–मैं अच्छा-उच्छा नहीं जानती, जो मैं कहूं वह कहिए।

उस्तानी–फिर दिल को मजबूत करके कह दो साहब।

बड़ी बेगम–ना, हमसे न कहा जायगा।

हुस्नआरा–बहन, जो तुम कहती हो वही होगा। अल्लाह वह घड़ी न दिखाये, बस अब हठ न करो।

सिपहआरा–मेरी कब्र पर कभी-कभी आंसू बहा लिया करना बाजीजान। मैं सोचती हूं कि तुम्हारा दिल कैसे बहलेगा !

यह कहकर सिपहआरा बहनों से गले मिली और सब की सब रवाना हुईं। जब सवारियां किले के फाटक पर पहुंचीं तो शाह साहब ने हुक्म दिया कि दुलहिन घोड़े पर सवार होकर अंदर दाखिल हो। बेगम साहबा ने हुक्म दिया, घोड़ा लाया जाये। सिपहआरा घोड़े पर सवार हुई और घोड़े को उड़ाती हुई कब्र के पास पहुंच कर बोली–अब क्या

हुक्म होता है? खुद आओगे या हमको भी यहीं सुलाओगे। हम हर तरह राजी हैं।

सिपहआरा का इतना कहना था कि सामने रोशनी नजर आयी। ऐसी तेज रोशनी थी कि सबकी नजर झपक गयी और एक लम्हे में शाहजादा हुमायूं फर घोड़े पर सवार आते हुए दिखायी दिये। उन्हें देखते ही लोगों ने इतना गुल मचाया कि सारा किला गूंज उठा। सबको हैरत थी कि यह क्या माजरा है। वह मुर्दा जिसकी कब्र बन गयी हो और जिसको मरे हुए हफ्तों गुजर गये हों। वह क्यों कर जी उठा !

हुस्नआरा और शाहजादे की बहन खुरशेद में बातें होने लगीं–

हुस्नआरा–क्या कहूं, कुछ समझ में नहीं आता !

खुरशेद–हमारी अक्ल भी कुछ काम नहीं करती।

हुस्नआरा–तुम अच्छी तरह कह सकती हो कि हुमायूं फर यही हैं?

खुरशेद–हां साहब, यही हैं। यही मेरा भाई है।

और लोगों को भी यही हैरत हो रही थी। अकसर आदमियों को यकीन ही नहीं आता था कि यह शाहजादा हैं।

एक आदमी–भाई, खुदा की जात से कोई बात बईद नहीं। मगर यह सारी करामात शाह साहब की है।

तीसरा–तभी तो दुआ में इतनी ताकत है।

निन्यानव

नवाब वजाहत हुसैन सुबह को जब दरबार में आये तो नींद से आंखें झुकी पड़ती थीं। दोस्तों में जो आता था, नवाब साहब को देखकर पहले मुसकिराता था। नवाब साहब भी मुसकिरा देते थे। इन दोस्तों में रौनकदौला और मुबारक हुसैन बहुत बेतकल्लुफ थे। उन्होंने नवाब साहब से कहा–भाई, आज चौथी के दिन नाच न दिखाओगे? कुछ जरूरी है कि जब कोई तायफा बुलवाया जाये तो बदी ही दिल में हो? अरे साहब, गाना सुनिए, नाच देखिए, हंसिए, बोलिए, शादी को दो दिन भी नहीं हुए और हुजूर मुल्ला बन बैठे। मगर यह मौलवीपन हमारे सामने न चलने पायेगा। और दोस्तों ने भी उनकी हां में हां मिलायी। यहां तक कि मुबारक हुसैन जाकर कई तायफें बुला लाये, गाना होने लगा। रौनकदौला ने कहा–कोई फारसी गजल कहिए तो खूब रंग जमे।

हसीना–रंग जमाने की जिसको जरूरत हो वह यह फिक्र करे, यहां तो आके महफिल में बैठने भर की देर है। रंग आप ही आप जम जायेगा। गाकर रंग जमाया तो क्या जमाया?

रौनक–हुस्न का भी बड़ा गरूर होता है, क्या कहना !

हसीना–होता ही है। और क्यों न हो, हुस्न से बढ़कर कौन दौलत है?

बिगड़ेदिल–अब आपस ही में दाना बदलौबल होगा या किसी की सुनोगी भी, अब कुछ गाओ।

रौनक–यह गजल शुरू करो–

बहार आयी है भर दे बादये गुलगूं से पैमाना,
रहे साकी तेरा लाखों बरस आबाद मैखाना।

इतने में महलसरा से दूल्हा की तलबी हुई। नवाब साहब महल में गये तो दुलहिन और दूल्हा को आमने-सामने बैठाया गया। दस्तरख्वान बिछा, चांदी की लगन रखी गयी, डोमनियां आयीं और उन्होंने दुलहिन के दोनों हाथों में दूल्हा के हाथ से तरकारी दी, फिर दुलहिन के हाथों से दूल्हा को तरकारी दी, तब गाना शुरू किया।

अब तरकारियां उछलने लगीं। दूल्हा को साली ने नारंगी खींच मारी, हशमत बहू और जानी बेगम ने दूल्हा को बहुत दिक किया। आखिर दूल्हा ने भी झल्लाकर एक छोटी-सी नारंगी फीरोजा बेगम को ताक कर लगायी।

जानी बेगम–तो झेंप काहे की है। शरमाती क्या हो?

मुबारक महल–हां, शरमाने की क्या बात है, और है भी तो तुमको शर्म काहे की। शरमाए तो वह जिसको कुछ हया हो।

हशमत बहू–तुम भी फेंको फीरोजा बहन ! तुम तो ऐसी शरमाईं कि अब हाथ ही नहीं उठता।

फीरोजा–शरमाता कौन है, क्यों जी फिर मैं भी हाथ चलाऊं?

दूल्हा–शौक से हुजूर हाथ चलाएं, अभी तक तो जबान ही चलती थी।

फीरोजा–अब क्या जवाब दूं, जाओ छोड़ दिया तुमको।

अब चारों तरफ से मेवे उछलने लगे। सब की सब दूल्हे पर ताक-ताक कर निशान मारती थीं। मगर दूल्हा ने बस एक फीरोजा को ताक लिया था, जो मेवा उठाया, उन्हीं पर फेंका। नारंगी पर नारंगी पड़ने लगी।

थोड़ी देर तक चहल-पहल रही।

फीरोजा–ऐसे ढीठ दूल्हा भी नहीं देखे।

दूल्हा–और ऐसी चंचल बेगम भी नहीं देखी। अच्छा यहां इतनी हैं, कोई कह दे कि तुम जैसी शोख और चंचल औरत किसी ने आज तक देखी है?

फीरोजा–अरे, यह तुम हमारा नाम कहां से जान गए साहब?

दूल्हा–आप मशहूर औरत हैं या ऐसी-वैसी। कोई ऐसा भी है जो आपको न जानता हो?

फीरोजा–तुम्हें कसम है, बताओ, हमारा नाम कहां से जान गए?

मुबारक महल–बड़ी ढीठ हैं। इस तरह बातें करती हैं, जैसे बरसों की बेतकल्लुफी हो।

फीरोजा–ऐ तो तुमको इससे क्या, इसकी फिक्र होगी तो हमारे मियां को होगी, तुम काहे को कांपती जाती हो।

दूल्हा–आपके मियां से और हमसे बड़ा याराना है।

फीरोजा–याराना नहीं वह है। वह बेचारे किसी से याराना नहीं रखते, अपने काम से काम है।

दूल्हा–भला बताओ तो, उसका नाम क्या है। नाम लो तो जानें कि बड़ी बेतकल्लुफ हो।

फीरोजा–उनका नाम, उसका नाम है नवाब वजाहत हुसैन।

दूल्हा–बस, अब हम हार गये, खुदा की कसम, हार गये।

मुबारक महल–इनसे कोई जीत ही नहीं सकता। जब मर्दों से ऐसी बेतकल्लुफ हैं तो हम लोगों की बात ही क्या है, मगर इतनी शोखी नहीं चाहिए।

फीरोजा–अपनी-अपनी तबीयत, इसमें भी किसी का इजारा है।

दूल्हा–हम तो आपसे बहुत खुश हुए, बड़ी हंस-मुख हो। खुदा करे, रोज दो-दो बातें हो जाया करें।

जब सब रस्में हो चुकीं तो और औरतें रुखसत हुईं। सिर्फ दूल्हा और दुलहिन रह गये।

नवाब–फीरोजा बेगम तो बड़ी शोख मालूम होती हैं। बाज-बाज मौके पर मैं शरमा जाता था, पर वह न शरमाती थीं। जो मेरी बीबी ऐसी होती तो मुझसे दम भर न बनती। गजब खुदा का ! गैर-मर्द से इस बेतकल्लुफी से बातें करना बुरा है। तुमने तो पहले इन्हें काहे को देखा होगा।

सुरैया–जैसे मुफ्त की मां मिल गई और मुफ्त की बहनें बन बैठीं, वैसे ही यह भी मुफ्त मिल गईं।

नवाब–मुझे तो तुम्हारी मां पर हंसी आती थी कि बिलकुल इस तरह पेश आती थीं कि जैसे कोई खास अपने दामाद के साथ पेश आता है।

सुरैया–आप भी तो फीरोजा बेगम को खूब घूर रहे थे।

नवाब–क्यों मुफ्त में इलजाम लगाती हो, भला तुमने कैसे देख लिया?

सुरैया–क्यों? क्या मुझे कम सूझता है?

नवाब–गर्दन झुकाए दुलहिन बनी तो बैठी थीं, कैसे देख लिया कि मैं घूर रहा था ! और ऐसी खूबसूरत भी तो नहीं हैं।

सुरैया–मुझसे खुद उसने कसमें खाकर यह बात कही। अब सुनिए, अगर मैंने सुन पाया कि आपने किसी से दिल मिलाया, या इधर-उधर सैर-सपाटे करने लगे तो मुझसे दम भी न बनेगी।

नवाब–क्या मजाल, ऐसी बात है भला !

सुरैया–हां, खूब याद आया, भूल ही गई थी। क्यों साहब, यह नारंगियां खींच मारना क्या हरकत थी? उनकी शोखी का जिक्र करते हो और अपनी शरारत का हाल नहीं कहते।

नवाब–जब उसने दिक किया तो मैं भी मजबूर हो गया।

सुरैया–किसने दिक किया? वह भला बेचारी क्या दिक करती तुमको। तुम मर्द और वह औरतजात।

नवाब–अजी, वह सवा मर्द है। मर्द उसके सामने पानी भरे।

सुरैया–तुम भी छंटे हुए हो !

उसी कमरे में कुछ अखबार पड़े थे, सुरैया बेगम की निगाह उन पर पड़ी तो बोलीं–इन अखबारों को पढ़ते-पढ़ाते भी हो या यों ही रख छोड़े हैं।

नवाब–कभी-कभी देख लेता हूं, यह देखो, ताजा अखबार है। इसमें आज़ाद नाम के एक आदमी की खूब तारीफ छपी है।

सुरैया–जरा मुझे तो देना, अभी दे दूंगी।

नवाब–पढ़ रहा हूं, जरा ठहर जाओ।

सुरैया–और हम छीन लें तो ! अच्छा जोर-जोर से पढ़ो, हम भी सुनें।

नवाब–उन्होंने तो लड़ाई में एक बड़ी फतह पाई है।

सुरैया–सुनाओ-सुनाओ। खुदा करे, वह सुर्खरू होकर आयं।

नवाब–तुम इनको कहां से जानती हो, क्या कभी देखा है?

सुरैया–वाह देखने की अच्छी कही। हां, इतना सुना है कि तुर्कों की मदद करने के लिए रूम गए थे।

सौ

शाहजादा हुमायूं फर के जी उठने की खबर घर-घर मशहूर हो गई। अखबारों में इनका जिक्र होने लगा। एक अखबार ने लिखा, जो लोग इस मामले में कुछ शक करते हैं उन्हें सोचना चाहिए कि खुदा के लिए किसी मुर्दे को जिला देना कोई मुश्किल बात नहीं। जब उनकी मां और बहनों को पूरा यकीन है तो फिर शक की गुंजाइश नहीं रहती।

दूसरे अखबार ने लिखा....हम देखते हैं कि सारा जमाना दीवाना हो गया है। अगर सरकार हमारा कहना माने तो हम उसको सलाह देंगे कि सबको एक सिरे से पागल-खाने भेज दे। गजब खुदा का, अच्छे-अच्छे पढ़े आदमियों को पूरा यकीन है कि हुमायूं फर जिंदा हो गए। हम इनसे पूछते हैं, यारो कुछ अक्ल भी रखते हो। कहीं मुर्दे भी जिंदा होते हैं? भला कोई अक्ल रखने वाला आदमी यह बात मानेगा कि फकीर की दुआ से मुर्दा जी उठा। कब्र बनी की बनी ही रही और हुमायूं फर बाहर मौजूद हो गए। जो लोग इस पर यकीन करते हैं उनसे ज्यादा अहमक कोई नहीं। हम चाहते हैं कि सरकार इस मामले में पूरी तहकीकात करे। बहुत मुमकिन है कि कोई आदमी शाहजादी बेगम को बहकाकर हुमायूं फर बन बैठा हो। जिसके मानी यह हैं कि वह शाहजादी बेगम की जायदाद का मालिक हो गया।

जिले के हुक्काम को भी इस मामले में शक पैदा हुआ। कलक्टर ने पुलिस के कप्तान को बुलाकर सलाह की कि हुमायूं फर से मुलाकात की जाए। यह फैसला करके दोनों घोड़े पर सवार हुए और दन से शाहजादी बेगम के मकान पर जा पहुंचे। हुमायूं फर के भाई ने सबसे हाथ मिलाया और इज्जत के साथ बैठाया। जनाने में खबर हुई तो शाहजादी बेगम ने कहा–हम शाह साहब के हुक्म के बगैर हुमायूं फर को बाहर न जाने देंगे।

लेकिन जब शाह साहब से पूछा गया तो उन्होंने साफ कह दिया कि हुमायूं फर महलसरा से बाहर नहीं निकल सकते। वह बाहर आए और मैंने अपना रास्ता लिया। हां, साहब को जो कुछ पूछना हो, लिखकर पूछ सकते हैं। आखिर हुमायूं फर ने साहब के नाम पर एक रुक्का लिखकर भेजा। साहब ने अपनी जेब से हुमायूं फर का एक पुराना खत निकाला और दोनों खतों को एक-सा पाकर बोले–अब तो मुझे भी यकीन आ गया की यह शाहजादा हुमायूं फर ही हैं, मगर समझ में नहीं आता, वह फकीर क्यों उन्हें

हमसे मिलने नहीं देता। आखिर उन्होंने हुमायूं फर के भाई से पूछा, आपको खूब मालूम है कि हुमायूं यही हैं? लड़का हंसकर बोला--आपको यकीन ही नहीं आता तो क्या किया जाए, आप खुद चलकर देख लीजिए।

शाहजादी बेगम ने जब देखा कि हुक्काम टाले न टलेंगे तो उन्होंने शाहजादा को एक कमरे में बैठा दिया। हुक्काम बरामदे में बैठाए गए। साहब ने पूछा--वेल शाहजादा हुमायूं फर, यह सब क्या बात है?

शाहजादा--खुदा के कारखाने में किसी को दखल नहीं।

साहब--आप शाहजादा हुमायूं फर ही हैं या कोई और?

शाहजादा--क्या खूब, अब तक शक है?

साहब--हमने आपको कुछ दिया था, आपने पाया या नहीं?

शाहजादा--मुझे याद नहीं। आखिर वह कौन चीज थी?

साहब--याद कीजिए।

साहब ने हुमायूं फर से और कई बातें पूछीं, मगर वह एक का भी जवाब न दे सके। तब तो साहब को यकीन हो गया कि यह हुमायूं फर नहीं है।

एक सौ एक

आज़ाद पाशा को इस्कंदरिया में कई दिन रहना पड़ा। हैजे की वजह से जहाजों का आना-जाना बंद था। एक दिन उन्होंने खोजी से कहा--भाई, अब तो यहां से रिहाई पाना मुश्किल है।

खोजी--खुदा का शुक्र करो कि बचके चले आए, इतनी जल्दी क्या है?

आज़ाद--मगर यार, तुमने वहां नाम न किया, अफसोस की बात है।

खोजी--क्या खूब, हमने नाम नहीं किया तो क्या तुमने नाम किया? आखिर आपने क्या किया, कुछ मालूम तो हो, कौन गढ़ फतह किया, कौन लड़ाई लड़े ! यहां तो दुश्मनों को खदेड़-खदेड़ के मारा। आप बस मिसों पर आशिक हुए, और तो कुछ नहीं किया।

आज़ाद--आप भी तो बुआ जाफरान पर आशिक हुए थे !

मीडा--अजी, इन बातों को जाने दो, कुछ अपने मुल्क के रईसों का हाल बयान करो, वहां कैसे रईस हैं?

खोजी--बिल्कुल तबाह, फटे हाल, अनपढ़, उनके शौक दुनिया से निराले हैं। पतंगबाजी पर मिटे हुए, तरह-तरह के पतंग बनते हैं, गोल, महीजाल, मांगदार, भेड़िया, तौकिया, खरबूजिया, लंगोटिया, तुक्कल, ललपत्ता। दस-दस अशर्फियों के पेंच होते हैं। तमाशाइयों की वह भीड़ होती है कि खुदा की पनाह ! पतंगबाज अपने फन के उस्ताद। कोई ढीले लड़ाने का उस्ताद है, कोई घसीट लड़ाने का यकता। इधर पहुंच पड़ा, उधर गोता देते ही कहा, वह काटा ! लूटने वालों की चांदी है। एक-एक दिन में दस-दस सेर डोर लुटते हैं।

आज़ाद--क्यों साहब, यह कोई अच्छी आदत है?

खोजी—तुम क्या जानो, तुम तो किताब के कीड़े हो। सच कहना, पतंग लड़ाया है कभी?

आज़ाद—हमने पतंग की इतनी किस्में भी नहीं सुनी थीं।

खोजी—इसी से तो कहता हूं, जांगलू हो। भला पेटा जानते हो, किसे कहते हैं?

आज़ाद—हां हां, जानता क्यों नहीं, पेटा इसी को कहते हैं न कि किसी की डोर तोड़ ली जाय।

खोजी—भई, निरे गाउदी हो।

मीडा—अच्छा बोलो, करते क्या हैं, क्या सारा दिन पतंग ही उड़ाया करते हैं?

खोजी—नहीं साहब, अफीम और चंडू कसरत से पीते हैं।

आज़ाद—और कबूतरबाजी का तो हाल बयान करो।

क्लारिसा—हमने सुना है कि हिन्दोस्तान की औरतें बिलकुल जाहिल होती हैं।

आज़ाद—मगर हुस्नआरा को देखो तो खुश हो जाओ।

क्लारिसा—हम तो बेशक खुश होंगे, मगर खुदा जाने, वह हमको देखकर खुश होती हैं या नहीं।

मीडा—नहीं, उम्मेद नहीं कि हम दोनों को देखकर खुश हों। जब हमको और तुमको देखेंगी तो उनको बड़ा रंज होगा।

क्लारिसा—मुझे क्यों नाहक बदनाम करती हो, मुझे आज़ाद से मतलब? मैं तुम्हारी तरह किसी पर फिसल पड़ने वाली नहीं।

मीडा—जरा होश की बातें करो। जब उन्होंने करोड़ों बार नाक रगड़ी तब मैंने मंजूर किया। वर्ना इनमें है क्या? न हसीन, न जवान, न रंगीले।

खोजी—और हम? हमको क्या समझती हो आखिर?

मीडा—तुम बड़े तरहदार जवान हो। और तो और, डील-डौल में तो कोई तुम्हारा सानी नहीं।

आज़ाद—हम भी किसी जमाने में ख्वाजा साहब की तरह शहजोर थे, मगर अब वह बात कहां, अब तो मरे-बूढ़े आदमी हैं।

खोजी—अजी अभी क्या है, जवानी में हमको देखिएगा।

आज़ाद—आपकी जवानी शायद कब्र में आएगी।

खोजी—अजी, क्या बकते हो, अभी हमें शादी करनी है भाई।

मीडा—तुम मिस क्लारिसा के साथ शादी कर लो।

क्लारिसा—आप ही को मुबारक रहें।

आज़ाद—भई, यहां तुम्हारी शादी हो जाय तो अच्छी बात है, नहीं तो लोगों को शक होगा कि इन्हें किसी ने नहीं पूछा।

खोजी—वल्लाह, यह तो तुमने एक ही सुनाई। अब हमें शादी की जरूरत आ पड़ी।

आज़ाद—मगर तुम्हारे लिए तो कोई खूबसूरत चाहिए जिस पर सबकी निगाह पड़े।

खोजी—जी हां, जिसमें आपको भी घूरा-घारी करने का मौका मिले। यहां ऐसे अहमक नहीं हैं। जोरू के मामले में बंदा किसी से याराना नहीं रखता।

आज़ाद तो सैर करने चले गए। खोजी ने मिस क्लारिसा से कहा—हमारे लिए कोई

ऐसी बीबी ढूढ़ो जिस पर सारी दुनिया के शाहजादे जान देते हों। आज़ाद का ...। जरूर है, यह आदमी भांजी मारने से बाज न आयगा। यह तो इसकी आदत में दाखिल है कि जो औरत हमारे ऊपर रीझेगी उसको बहकायेगा। लेकिन यह भी जानता हूं कि जो औरत एक बार हमें देख लेगी, उसे आज़ाद क्या, आज़ाद के बाप भी न बहका सकेंगे। मुझे देख-देखकर यह हजरत जला करते हैं।

क्लारिसा—आज़ाद, तुम्हारी-सी जवानी कहां से लाएं।

खोजी—बस-बस, खुदा तुमको सलामत रखें। खुदा करे, तुमको मेरा-सा शौहर मिले। इससे ज्यादा और क्या दुआ दूं।

क्लारिसा—कहीं तुम्हारी शामत तो नहीं आई है?

खोजी—क्यों, क्या हुआ? आखिर हममें कौन सी बात नहीं है, कुछ मालूम हो, अंधा हूं, काना हूं, लूला हूं, लंगड़ा हूं। आखिर मुझमें कौन-सी बात नहीं है?

क्लारिसा—पहले जाकर मुंह बनवाओ। चले हैं हमारे साथ शादी करने, कुछ पागल तो नहीं हो गए हो?

खोजी—पागल ! ठीक, मेरे पागलपने का हाल मिस्र, अदन, रूम, हिन्दोस्तान की औरतों से जाकर पूछ लो, आखिर कुछ देखकर ही तो वह मुझ पर आशिक हुई थीं।

इतने में मियां आज़ाद ने आकर पूछा—क्या बातें हो रही हैं? क्लारिसा, तुम इनके फेरे में न आना। यह बड़े चालाक आदमी हैं। यह बातों ही बातों में अपना रंग जमा लेते हैं।

खोजी—खैर, अब तो तुमने इनसे कह ही दिया, वरना आज ही शादी होती। खैर, आज नहीं, कल सही। बिना शादी किए तो अब मानता नहीं।

क्लारिसा—तो आप अपने को इस काबिल समझने लगे?

खोजी—काबिल के भरोसे न रहिएगा। मेरी जबान में जादू है।

आज़ाद—तुम्हारे लिए तो बुआ जाफरान की-सी औरत चाहिए।

खोजी—अगर मिस क्लारिसा ने मंजूर न किया तो और कहीं ...पा लगायंगे। मगर मुझे तो उम्मेद है कि मिस क्लारिसा आजकल में जरूर मंजूर कर लेंगी।

आज़ाद—अजी, मैंने तुम्हारे लिए वह औरत तलाश कर रखी है कि देखकर फड़क उठो, वह तुम पर जान देती है। बस, कल शादी हो जाएगी।

खोजी बहुत खुश हुए। दूसरे दिन आज़ाद ने एक गाड़ी मंगवाई। आप दोनों मिसों के साथ गाड़ी में बैठे, खोजी को कोच-बक्स पर बैठाया और शादी करने चले। खोजी ऊपर से हटो-बचो की हांक लगाते जाते थे। एक जगह एक बहरा गाड़ी के सामने आ गया। यह गुल मचाते ही रहे और गाड़ी उनके कल्ले पर पहुंच गई। आप बहुत ही बिगड़े, भला बे गीदी, अब और कुछ बस न चला तो आज जान देने आ गया।

आज़ाद—क्या है भाई, खैरियत तो है?

खोजी—अजी, आज वह बहुरूपिया नया भेष बदलकर आया, हम गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहे हैं और वह सुनता ही नहीं। तब मैं समझा कि हो न हो बहुरूपिया है। गाड़ी के सामने अड़ जाने से उसका मतलब था कि हमें पकड़ा दे। वह तो दो-चार दिन में लोट-पोट के चंगा हो जाता, मगर हमारी गाड़ी पकड़ जाती। अब पूछो कि तुमको क्या

फिक्र है, हम लोग भी तो सवार हैं। इसका जवाब हमसे सुनिए। मिसें तो औरत बनकर छूट जातीं, रहे हम और तुम। तो जिसकी नजर पड़ती, हमीं पर पड़ती। तुमको लोग खिदमतगार समझते, हम रईस के धोखे में धर लिए जाते। बस, हमारे माथे जाती।

इतने में दस-ग्यारह दुंबे सामने से आए। खोजी ने चरवाहे को उस तीखी चितवन से देखा कि खा ही जाएंगे। उसे इनका कैंड़ा देखकर हंसी आ गई। बस आप आग ही तो हो गए। कोचवान को डांट बताई-रोक ले, रोक ले।

आज़ाद-अब क्या मुसीबत पड़ी !

खोजी-इस बदमाश से कहो बाग रोक ले, मैं उस चरवाहे को सजा दे जाऊं तो बात करूं। बदमाश मुझे देखकर हंस दिया, कोई मसखरा समझा है।

आज़ाद-कौन था, कौन, जरा नाम तो सुनूं।

खोजी-अब राह चलते का नाम मैं क्या जानूं। कहिए, उटक्करलैस कोई नाम बता दूं। मुझे देखा तो हंसे आप, मेरी आंखों में खून उतर आया।

आज़ाद-अरे यार, तुम्हें देखकर, मारे खुशी के हंस पड़ा होगा।

खोजी-भई, तुमने सच कहा, यही बात है।

आज़ाद-अब बताओ, हो गधे कि नहीं, जो मैं न समझता तो फिर?

खोजी-फिर क्या, एक बेगुनाह का खून मेरी गर्दन पर होता।

एकाएक ही कोचवान ने गाड़ी रोक ली। खोजी घबराकर कोच-बक्स से उतरे तो पायदान से दामन अटका और मुंह के बल गिरे, मगर जल्दी से झाड़-पोंछकर उठ खड़े हुए। आज़ाद और दोनों औरतें हंसने लगीं।

आज़ाद-अजी, गर्द-वर्द पोंछो, जरा आदमी बनो। जो दुलहिन वाले देख लें तो कैसी हो?

खोजी-अरे यार, गर्द-वर्द तो झाड़ चुका, मगर यह तो बताओ कि यह किसकी शरारत है, मैं तो समझता हूं, वही बहुरूपिया मेरी आंखों में धूल झोंककर मुझे घसीट ले गया। खैर, शादी हो ले। फिर बीबी की सलाह से बदमाश को नीचा दिखाऊंगा।

आज़ाद तो दोनों मिसों के साथ गाड़ी से उतरे और खोजी की ससुराल के दरवाजे पर आए। खोजी गाड़ी के अंदर बैठे रहे। जब अंदर से आदमी उन्हें बुलाने आया तो उन्होंने कहा-उनसे कह दो, मेरी अगवानी करने के लिए किसी को भेज दें।

आज़ाद ने अंदर जाकर एक पंचहत्थी मोटी-ताजी औरत भेज दी। उसने आव देखा न ताव, खोजी को गाड़ी से उतारा और गोद में उठाकर अंदर ले चली। खोजी अभी संभलने न पाए थे कि उसने उन्हें ले जाकर आंगन में दे मारा और ऊपर से दबाने लगी। खोजी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे-अम्मांजान, माफ करो, ऐसी शादी पर खुदा की मार, मैं क्वांरा ही रहूंगा।

आज़ाद-क्या है भई, यह रो क्यों रहे हो?

खोजी-कुछ नहीं भाईजान, जरा दिल्लगी हो रही थी।

आज़ाद-अम्मांजान का लफ्ज किसी ने कहा था?

खोजी-तो यहां तुम्हारे सिवा हिन्दोस्तानी और कौन है?

आज़ाद-और आप कहां के रहने वाले हैं?

खोजी—मैं तुर्क हूं।

आज़ाद—अच्छा, जाकर दुलहिन के पास बैठो। वह कब से गर्दन झुकाए बैठी है बेचारी, और आप सुनते ही नहीं।

खोजी ऊपर गए तो देखा, एक कोने में दुशाला ओढ़े दुलहिन बैठी है। आप उसके करीब जाकर बैठ गए। क्लारिसा और मीडा भी जरा फासले पर बैठी थीं। ख्वाजा साहब दून की लेने लगे। हमारे अब्बाजान सैयाद थे और अम्मांजान काबुल के एक अमीर की लड़की थीं। उनके हाथ-पांव अगर आप देखतीं तो डर जातीं। अच्छे-अच्छे पहलवान उनका नाम सुनकर कान पकड़ते थे। सीना शेर का सा था, कमर चीते की सी, रंग बिलकुल जैसे सलजम, आंखों में खून बरसता थ। एक फफे रात को घर में चोर आया, मैं तो मारे डर के सन्नाटा खींचे पड़ रहा, मगर वाह री, अम्मांजान, चोर की आहट पाते ही उस बदमाश को जा पकड़ा। मैंने पुकार कर कहा, अम्मांजान, जाने न पाए, मैं भी वहां आ पहुंचा। इतने में अब्बाजान की आंख खुल गई। पूछा—क्या है? मैंने कहा—अम्मांजान से और एक चोर से पकड़ हो रही है। अब्बाजान बोले—तो फ़िर दबके पड़े रहो, उसने चोर का कत्ल कर डाला होगा। मैं तो जाके देखता हूं तो लाश फड़क रही है। जनाब, हम ऐसों के लड़के हैं।

आज़ाद—तभी तो ऐसे दिलेर हो, सुअरों के सुअर ही होते हैं।

खोजी—(हंसकर) मिस क्लारिसा हमारी बातों पर हंस रही हैं। अभी हम इनकी नजरों में नहीं जंचते।

आज़ाद—दुलहिन आज बहुत हंसती हैं। बड़ी हंसमुख बीबी पाई।

खोजी—उर्दू तो यह क्या समझती होंगी।

आज़ाद—आप भी बस चोंगा ही रहे। अरे, बेवकूफ, इन्हें हिंदी-उर्दू से क्या ताल्लुक।

खोजी—बड़ी खराबी यह है कि यहां जिस गली-कूचे में निकल जायं, सबकी नजर पड़ा चाहे और लोग मुझसे जला ही चाहें, इसका मैं क्या करूं। अगर इनको सैर कराने साथ न ले चलूं तो नहीं बनती, ले चलूं तो नहीं बनती। कहीं मुझ पर किसी परीछम की निगाह पड़े और वह घूर-घूरकर देखे, तो यह समझें कि कोई खास वजह है। अब कहिए, क्या किया जाए।

आज़ाद—दुलहिन मुंह बंद किए क्यों बैठी हैं, नाक की तो खैर है?

खोजी—क्या बकते हो मियां, मगर अब मुझे भी शक हो गया, तुम लोग जरा समझा दो भाई कि नाक दिखा दें।

मिस क्लारिसा ने दुलहिन को समझाया, तो उसने चेहरे को छिपाकर जरा-सी नाक दिखा दी। खोजी ने आकर नाक को छूना चाहा उसने इसे जोर से चपत दी कि खोजी बिलबिला उठे।

आज़ाद—खुदा की कसम, बड़े बेअदब हो।

खोजी—अरे मियां, जाओ भी। यहां होश बिगड़ गए, तुमको अदब की पड़ी है, मगर यार, यह बुरा सगुन हुआ।

आज़ाद—अरे, गाउदी, यह नखरे हैं, समझा !

खोजी—(हंसकर) वाह रे नखरे !

आज़ाद–अच्छा भाई, तुम कभी लड़ाई पर भी गए हो?

खोजी–उंह, कभी की एक ही कही, क्या नन्हें बने जाते हैं? अरे मियां, शाही में गुलचले मशहूर थे, अब भी तो जो चांदमारी हुई, उसमें हमीं बीस रहे।

आज़ाद–मिस मीडा हंस रही हैं, गोया तुम झूठे हो।

खोजी–यह अभी छोकरी हैं, यह बातें क्या जानें। अब्बाजान को खुदा बख्शे। दो ऐसे गुर बता गए हैं जो हर जगह काम आते हैं, एक तो यह है कि जब किसी से लड़ाई हो तो पहला वार खुद करना, बात करते ही चांटा देना।

आज़ाद–आप तो कई जगह इस नसीहत को काम में ला चुके हैं। एक तो बुआ जाफरान पर हाथ उठाया था। दूसरे जैनब की नाक में दम कर दिया था।

खोजी–अब मैं अपना सिर पीट लूं, क्या करूं। जिस-जिस जगह अपनी भलमनसी से शरमिंदा हुआ था, उन्हीं का जिक्र करते हो। वह तो कहिए, खैरियत है कि दुलहिन उर्दू नहीं समझतीं, वरना नजरों से गिर जाता।

यह फिकरा सुनकर दुलहिन मुसकिराईं तो ख्वाजा नवाब अकड़कर बोले–वल्लाह, वह हंसमुख बीबी पाई है कि जी खुश हो गया। बात नहीं समझती, मगर हंसने लगती है। भई, जरा आंखें भी देख लेना।

आज़ाद–जनाब, दोनों आंखें हैं और बिलकुल हाथी की-सी।

खोजी–बस, यही मैं चाहता हूं, वह क्या जिसकी बड़ी-बड़ी आंखें हों। तारीफ यह है कि जरा-जरा सी आंखें हों और हंसने के वक्त बिलकुल बंद हो जायं, मगर यार गला कैसा है?

आज़ाद–ऐं, क्या हिन्दोस्तान में गाने की तालीम दोगे?

खोजी–ऐ है, समझते तो हो नहीं, मतलब यह कि गर्दन लंबी है या छोटी? पहले समझ लो, फिर एतराज़ जड़ो।

आज़ाद–गर्दन, सिर और धड़ सब सपाट है।

खोजी–यह क्या, तो क्या, छोटी गर्दन की तारीफ है?

आज़ाद–और क्या, सुना नहीं, 'छोटी गर्दन, तंग पेशानी, हसीन औरत की यह निशानी।' क्या मुहावरे भी भूल गए?

खोजी–मुहावरे कोई हमसे सीखे, आप क्या जानें, मगर खुदा के लिए जरा मुझसे अदब से बातें कीजिए, वर्ना यहां मेरी किरकिरी होगी। और यह आप उनके करीब बैठे हैं, हटके बैठिए जरा।

आज़ाद–क्यों साहब, आप अपनी ससुराल में हमारी बेइज्जती करते हैं? अच्छा खैर, देखा जाएगा।

खोजी–आप तो दिल्लगी में बुरा मान जाते हैं और मेरी आदत क़मबख्त ऐसी खराब है कि बेचुहल किए रहा नहीं जाता।

आज़ाद–खैर, चलो, होगा कुछ। मगर यार, यहां एक़ अजीब रस्म है, दुलहिन अपने दूल्हा के दोस्तों से हंस-हंसकर बात करती है।

खोजी–यह तो बुरी बात है, कसम खुदा की, अगर तुमने इनसे एक बात भी की

होगी तो करौली लेकर अभी-अभी काम तमाम कर दूंगा।

आज़ाद–सुन तो लो, जरा सुनो तो सही।

खोजी–अजी बस, सुन चुके। इस वक्त आंखों में खून उतर आया, ऐसी दुलहिन की ऐसी-तैसी, और कैसी दबकी-दबकी बैठी हैं, गोया कुछ जानती ही नहीं।

आज़ाद–हर मुल्क की रस्म अलग-अलग है। इसमें आप ख्वामख्वाह बिगड़ रहे हैं।

खोजी–तो आप आंखें क्या दिखाते हैं? कुछ आपका मुहताज या गुलाम हूं? लूट का रुपया मेरे पास भी है, यहां से हिंदोस्तान तक अपनी बीबी के साथ जा सकता हूं। अब आप तो जाएं, मैं जरा इनसे दो-दो बातें कर लूं, फिर शादी की राय पीछे दी जायगी।

आज़ाद उठने ही को थे कि दुलहिन ने पांव से दामन दबा दिया।

आज़ाद–अब बताओ, उठने नहीं देतीं, मैं क्या करूं।

खोजी–(डपटकर) छोड़ दो !

आज़ाद–छोड़ दो साहब, देखो तुम्हारे मियां खफा होते हैं।

खोजी–अभी मुझे मियां न कहिए, शादी-ब्याह नाजुक मामला है।

आज़ाद–पहले आपकी इनसे शादी हो जाए, फिर अगर बंदा आंख उठाके देखे तो गुनहगार।

खोजी–अच्छा मंजूर, मगर इतना समझा देना कि यह बड़े कड़े खां हैं, नाक पर मक्खी भी नहीं बैठने देते। मगर आप क्यों समझाएंगे। मैं खुद ही क्यों न कह दूं। सुनो बी साहब, हमारे साथ चलती हो तो दो शर्तें माननी होंगी। एक यह कि किसी गैर आदमी को सूरत न दिखाओ। दूसरी यह कि मुझे जो कोई औरत देखती है, पहरों घूरा करती है, टकटकी बंध जाती है। ऐसा न हो कि तुम्हें सौतिया डाह होने लगे। भई आज़ाद, जरा इनको इनकी जबान में समझा दो।

आज़ाद–आप जरा एक मिनट के लिए बाहर चले जाइए, तो मैं सब बातें समझा दूं।

खोजी–जी, दुरुस्त, यह भर्रे लौंडों को दीजिएगा, आप जैसे छोकड़े मेरी जेब में पड़े हैं। और सुनिए, क्या उल्लू समझा है ! अब तुम जाओ, हम इनसे दो-दो बात कर लें।

आज़ाद बाहर चले गए तो खोजी पलंग पर दुलहिन के पास बैठे और बोले–भई, अब तो घूंघट उठा लो, जब हम तुम्हारे हो चुके तो हमसे क्या शर्म, क्यों तरसाती हो?

जब दुलहिन ने अब भी घूंघट न खोला तो जरा और आगे खिसक गए–जानेमन, इस वक्त शर्म को भून खाओ, क्यों तरसाती हो, अरे अब कब लग तरसाए रखियो जी। कब लग तरसाए रखियो जी।

दो-तीन मिनट तक खोजी ने गा-गाकर रिझाया मगर जब यों भी दुलहिन ने न माना तो आपने उसके घूंघट की तरफ हाथ बढ़ाया। एकाएक दुलहिन ने उनका हाथ पकड़ लिया। अब आप लाख जोर मारते हैं, मगर हाथ नहीं छूटता। तब आप खुशामद की बातें करने लगे। छोड़ दो भाई, भला किसी गरीब का हाथ तोड़ने से तुम्हें क्या मिलेगा। और यह तो तुम जानती हो कि मैं तुमसे जोर न करूंगा। फिर क्यों दिक करती हो, मेरा तो कुछ न बिगड़ेगा, मगर तुम्हारे मुलायम हाथ दुखने लगेंगे।

यह कह कर खोजी दुलहिन के पैरों पर गिर पड़े और टोपी उतारकर उसके कदमों

पर रख दी। उनकी हरकत पर दुलहिन को हंसी आ गई।

खोजी-वह हंसी आई, नाक पर आई, बस अब मार लिया है, अब इसी बात पर गले लग जाओ।

दुलहिन ने हाथ फैला दिए। खोजी गले मिले तो दुलहिन ने इतने जोर से दबाया कि आप चीख पड़े। छोड़ दो, छोड़ दो, चोट आ जायगी। मगर अब की दुलहिन ने उन्हें उठाकर दे मारा और छाती पर सवार हो गई। मियां खोजी अपनी बदनसीबी पर रोने लगे। इनको रोते देखकर उसने छोड़ दिया, तब आप सोचे कि बिला अपनी जवांमर्दी दिखाए, इस पर रोब न जमेगा। बहुत होगा, मार डालेगी, और क्या। आपने कपड़े उतारे और पैंतरा बदलकर बोले-सुनो जी, हम शाहजादे हैं। तलवार के धनी, बात के शूर, नाक पर मक्खी बैठ जाए तो तलवार से नाक उड़ा दें, समझीं? अब तक मैं दिल्लगी करता था। तुम औरत, मैं मर्द, अगर अबकी तुमने जरा भी गुस्ताखी की तो आग हो जाऊंगा। ले अब, घूंघट उठा दो, वरना खैरियत नहीं है। यह कहीं ऊंचा तो नहीं सुनती? (तालियां बजाकर) अजी सुनती हो, बुर्का उठाओ।

ख्वाजा साहब बका किए, मगर वहां कुछ असर न हुआ। तब आप बिगड़ गए और फिर पैंतरे बदलने लगे। अब की दुलहिन ने उन्हें बगल में दबा लिया; अब आप तड़प रहे हैं; दांत पीसते हैं, मगर गरदन नहीं छूटती। तब आपने झल्लाकर दांत काट खाया। काटना था कि उसने जोर से एक थप्पड़ दिया। ख्वाजा साहब का मुंह फिर गया। तब आप कोसने लगे-खुदा करे तेरे हाथ टूटें। हाय, अगर इस वक्त खुदा एक मिनट के लिए जोर दे-दे तो सुर्मा बना डालूं।

मिस क्लारिसा और मीडा एक झरोखे से यह कैफियत देख रही थीं, जब खोजी पिट-पिटाकर बाहर निकले तो क्लारिसा ने कहा-मुबारक हो।

आज़ाद-कहिए, दुलहिन कैसी है? यार, हो खुशनसीब !

खोजी-खुदा करे, आप भी ऐसे खुशनसीब हों।

आज़ाद-हमने तो बड़ी तारीफ सुनी थी, मगर तुम कुछ रंजीदा मालूम होते हो, इसका क्या सबब?

खोजी-भाईजान, वहां तो फौजदारी हो गई। औरत क्या देवनी है, वल्लाह कचूमर निकल गया।

आज़ाद-आप तो हैं पागल, यह इस मुल्क का रिवाज है कि पहले दिन दो घंटे तक दुलहिन मियां को मारती है, काट खाती है, फिर मियां बाहर आता है, फिर जाता है।

खोजी-अजी, वहां तो मार-पीट तक हो गई, जी में तो आया था कि उठाकर दे मारूं; मगर औरत के मुंह कौन लगे।, देखें, अब की कैसी गुजरती है, या तो वही नहीं या हमीं नहीं।

आज़ाद-क्या सचमुच फौजदारी ही पर आमादा हो? भाई, करौली अपने साथ न ले जाना, और जो हो सो हो।

खोजी-अजी, यहां हाथ क्या कम हैं ! करौली मर्द के लिए है, औरत के लिए करौली की क्या जरूरत?

आज़ाद–बस अब की जाके मीठी-मीठी बातें करो। हाथ जोड़ो, पैर दबाओ, फिर देखिए, कैसी खुश होती है। अब देर होती है, जाइए।

ख्वाजा साहब कमरे में गए और दुलहिन के पांव दबाने लगे।

दुलहिन–हमको छोड़कर चले तो न जाओगे।

खोजी–अरे, यह तो उर्दू बोल लेती हैं, यह क्या माजरा है !

दुलहिन–मियां, कुछ न पूछो। हमको एक हब्शी बहकाकर बेचने के लिए लिये जाता था। बारे खुदा-खुदा करके यह दिन नसीब हुआ।

खोजी–अब तक तुम हमसे साफ-साफ न बोलीं ! ख्वाहमख्वाह किसी भले आदमी को दिक करने से फायदा?

दुलहिन–तुम्हारे साथी आज़ाद ने हमें जैसा सिखाया वैसा हमने किया।

खोजी–अच्छा आज़ाद। ठहर जाओ बचा, जाते कहां हो। देखो तो कैसा बदला लेता हूं।

यह कहकर खोजी ने अपनी टोपी दुलहिन के कदमों पर रख दी और बोले–बीबी, बस यह समझो कि मियां नहीं, खिदमतगार है। मगर कब तक? जब तक हमारी होकर रहो। उधर आपने तेवर बदले, इधर हम बिगड़ खड़े हुए। मुझसे बढ़कर मुरव्वतदार कोई नहीं, मगर मुझसे बढ़कर शरीर भी कोई नहीं; अगर किसी ने मुझसे दोस्ती की तो उसका गुलाम हो गया, और अगर किसी ने हेकड़ी जताई तो मुझसे ज्यादा पाजी कोई नहीं। डंडे से बात करता हूं। देखने में दुबला हूं, मगर आज किसी ने मुझे बारे नहीं किया। सैकड़ों पहलवानों से लड़ा, और हमेशा कुश्तियां निकालीं।

दुलहिन–तुम्हारे पहलवान होने में शक नहीं, वह तो डील-डौल ही से जाहिर है।

खोजी–इसी बात पर अब घूंघट हटा दो।

दुलहिन–यह घूंघट नहीं है जी, कल से हमारी मूंछ में दर्द है।

खोजी–काहे में दर्द है, क्या कहा?

दुलहिन–ऐ, मूंछ तो कहा, कानों की ठेठियां निकाल।

खोजी–मूंछ क्या ! बकती क्या हो? औरत हो या मर्द? खुदा जाने, तुम मूंछ किसको कहती हो।

दुलहिन–(खोजी की मूंछ पकड़कर) इसे कहते हैं, यह मूंछ नहीं है?

खोजी–अल्लाह जानता है, बड़ी दिल्लगीबाज हो, मैं भी सोचता था कि क्या कहती हैं।

दुलहिन–अल्लाह जानता है, मेरी मूंछों में दर्द है।

ख्वाजा साहब ने गौर करके देखा तो जरा-जरा सी मूंछें। पूछा–आखिर बताओ तो जानेमन, यह मूंछ क्या है?

दुलहिन–देखता नहीं, आंखें फूट गयी हैं क्या?

खोजी–ऐ तो बीबी, आखिर यह मूंछ कैसी? कहता तो कहता, सुनता सिड़ी हो जाता है। औरत हो या मर्द? खुदा जाने, तुम मूंछ किसे कहती हो?

दुलहिन–तो तुम इतना घबराते हो? मैं मरदानी औरत हूं।

खोजी–भला औरत और मूंछ से क्या वास्ता?

दुलहिन—ऐ हैं; तुम तो बिलकुल अनाड़ी हो, अभी तुमने औरतें देखी कहां?

खोजी—ऐसी औरतों से बाज आए।

एकाएक दुलहिन ने घूंघट उठा दिया तो खोजी की जान निकल गई। देखा तो वही बहुरूपिया। बोले—जी चाहता है कि करौली भोंक दूं, कसम खुदा की, इस वक्त यही जी चाहता है।

बहुरूपिया—पहले उस पारसल के रुपये लाइए जिसका लिफाफा आपने अपने नाम लिखवा लिया था। बस अब दायें हाथ से रुपये लाइए !

खोजी—ओ गीदी, बस अलग ही रहना, तुम अभी मेरे गुस्से से वाकिफ नहीं हो?

बहुरूपिया—खूब वाकिफ हूं। कमजोर, मार खाने की निशानी।

खोजी—हम कमजोर हैं? अभी चाहूं तो गर्दन तोड़ के रख दूं। जाकर होटल-वालों से तो पूछो कि जवांमर्दी के साथ मिस्र के पहलवानों को उठाके दे मारा।

बहुरूपिया—अच्छा, अब तुम्हारी कजा आई है। ख्वामख्वाह हाथ-पांव के दुश्मन हुए हो।

खोजी—सच कहता हूं, अभी तुमने मेरा गुस्सा नहीं देखा, मगर हम-तुम परदेशी हैं, हमको-तुमको मिल-जुलकर रहना चाहिए। तुम न जाने कैसे हिन्दोस्तानी हो कि हिन्दोस्तानी का साथ नहीं देते।

बहुरूपिया—पार्सल का रुपया दाहिने हाथ से दिलवाए तो खैर।

खोजी—अजी, तुम भी कैसी बातें करते हो; 'हिसाबे दोस्तां दर दिल अगर हम बेवफा समझे।' पार्सल का जिक्र कैसा, बजाज की दुकान पर हम भी तो तुम्हारी तरफ से कुछ पूछ आए थे? कुछ तुम समझे, कुछ हम समझे।

इतने में आज़ाद दोनों लेडियों के साथ अंदर आए।

आज़ाद—भाई, शादी मुबारक हो। यार, आज हमारी दावत करो।

खोजी—जहर खिलाओ और दावत मांगो। यह जो हमने आपको लाखों खतरों से बचाया उसका यह नतीजा निकला। अब हम या तो यहीं नौकरी कर लेंगे, या फिर रूम वापिस जाएंगे। वहां के लोग कद्रदां हैं, दो-चार शेर भी कह लेंगे तो खाने भर को बहुत है। खैर, आदमी कुछ खोकर सीखता है। हम भी खोकर सीखे, अब दुनिया में किसी का भरोसा नहीं रहा।

क्लारिसा—यह मिठाइयां न देने की बातें हैं, यह चकमे किसी और को देना, हम बे-दावत लिए न रहेंगे।

खोजी—हां साहब, आपको क्या। खुदा करे, जैसी बीवी हमने पाई, वैसा ही शौहर तुम पाओ, अब इसके सिवा और क्या दुआ दूं।

मीडा—हमने तो बहुत सोच-समझकर तुम्हारी शादी तजवीज की थी।

खोजी—अजी, रहने भी दो। हमें आप लोगों से कोई शिकायत नहीं, मगर आज़ाद ने बड़ी दगा दी। हिन्दोस्तान से इतनी दूर आए। जब मौका पड़ा, इनके लिए जान लड़ा दी। पोलैंड की शाहजादी के यहां हमीं काम आए, वर्ना पड़े-पड़े सड़ जाते। इन सब बातों का अंजाम यह हुआ कि हमीं पर चकमे चलने लगे। अब चाहे जो हो, हम आज़ाद की सूरत न देखेंगे।

एक सौ दो

चौथी के दिन रात को नवाब साहब ने सुरैया बेगम को छेड़ने के लिए कई बार फीरोजा बेगम की तारीफ की। सुरैया बेगम बिगड़ने लगीं और बोलीं—अजब बेहूदा बातें हैं तुम्हारी, न जाने किन लोगों में रहे हो कि ऐसी बातें जबान से निकलती हैं।

नवाब—तुम नाहक बिगड़ती हो, मैं तो सिर्फ उनके हुस्न की तारीफ करता हूं।

सुरैया—ऐ, तो कोई ढूंढ़के वैसी ही की होती।

नवाब—तुम्हारे यहां कभी-कभी आया-जाया करती हैं?

सुरैया—मुझे उस घर का हाल क्योंकर मालूम हो। मगर जो तुम्हारे यही लच्छन हैं तो खुदा ही मालिक है। आज ही ये बातें शुरू हो गईं। हां, सच है, घर की मुर्गी साग बराबर। खैर, अब तो मैं आकर फंस ही गई, मगर मुझे वही मुहब्बत है जो पहले थी। हां, अब तुम्हारी मुहब्बत अलबत्ता जाती रही।

नवाब—तुम इतनी समझदार होकर जरा-सी बात पर इतना रूठ गईं। भला अगर मेरे दिल में यही होता तो मैं तुम्हारे सामने उनकी तारीफ करता; मुझे कोई पागल समझा है? मतलब यह था कि दो घड़ी की दिल्लगी हो, मगर तुम कुछ और समझीं। खूब याद रखना कि जब तक मेरी और तुम्हारी जिंदगी है, किसी और औरत को बुरी नजर से न देखूंगा। आगे देखूं तो शरीफ नहीं।

सुरैया—वह औरत क्या जो अपने शौहर के सिवा किसी मर्द को बुरी नजरों से देखे और वह मर्द क्या जो अपनी बीवी के सिवा पराई बहू-बेटी पर नजर डाले।

नवाब—बस, यही हमारी भी राय है और जो लोग दस-दस शादियां करते हैं उनको मैं अहमक समझता हूं।

सुरैया—देखना इन बातों को भूल न जाना।

सुबह को दुलहिन के मैके से महरी आई और अर्ज की कि आज साली ने दूल्हा और दुलहिन को बुलाया है, पहला चाला है।

बेगम—(नवाब साहब की मां) तुम्हारे यहां वह लड़की तो बड़े ही गजब की है, फीरोजा, किसी से दबती ही नहीं !

महरी—हुजूर, अपना-अपना मिजाज है।

बेगम—अरे, कुछ तो शर्म-हया का ख्याल हो। बेचारी फैजन को बात-बात पर बनाती थी। वह लाख गंवारों की-सी बातें करे, फिर इससे क्या, जो अपने यहां आए उसकी खातिर करनी चाहिए, न कि ऐसा बनाए कि वह कभी फिर आने का नाम ही न ले।

खुरशेद—(नवाब की बहन) हमको तो उनकी बातों से ऐसा मालूम होता था कि (दबे दांतों) नेक नहीं, आगे खुदा जाने।

बेगम—यह न कहो बेटा, तुमने देखा क्या है।

नवाब—(इशारा करके) उनकी महरी बैठी है, उसके सामने कुछ न कहो।

बेगम साहिबा ने सुरैया बेगम को उसी वक्त रुखसत किया। शाम को दूल्हा भी चला। मुसाहबों ने उसकी रियासत और ठाट-बाट की तारीफ करनी शुरू की—

बबरअली—हुजूर, इस वक्त ईरान के शाहजादे मालूम होते हैं।

नूरखां—इसमें क्या शक है, यह मालूम होता है कि कोई शाहजादा मसनद लगाए बैठा है।

बबरअली—हुजूर, आज जरा चौक की तरफ से चलिएगा। जरा इधर-उधर क़मरों से तारीफ की आवाज तो निकले।

नवाब—क्या फायदा, जिसके बीबी हो, उसको इन बातों में न पड़ना चाहिए।

नूरखां—ऐ हुजूर, यह तो रियासत का तमगा ही है।

ईदू—ऐ हुजूर, यह तो गरीब आदमियों के लिए है कि एक से ज्यादा न हो, दूसरी बीबी को क्या खिलाएगा, खाक ! मगर अमीरों का तो यह जौहर है। बादशाहों के आठ-आठ, नौ-नौ सौ से ज्यादा महल होते थे, एक-दो की कौन कहे। जिसे खुदा देता है वही इस काबिल समझा जाता है।

इन लोगों ने नवाब साहब को ऐसा चंग पर चढ़ाया कि चौक ही से ले गए, मगर नवाब साहब ने गरदन जो नीची की तो चौक भर में किसी कमरे की तरफ देखा ही नहीं। इस पर मुसाहबों ने हाशिए चढ़ाए—ऐ हुजूर, एक नजर तो देख लीजिए, कैसा कटाव हो रहा है। सारी खुदाई का हाल तो कौन जाने, मगर इस शहर में तो कोई जवान हुजूर के चेहरे-मोहरे को नहीं पाता। बस, यही मालूम होता है कि शेर कछार से चला आता है।

नवाब साहब दिल में सोचते जाते थे कि इन खुशामदियों से बचना मुश्किल है। इनके फंदे में फंसे और दाखिल जहन्नुम हुए। हमने ठान ली है कि अब किसी औरत को बुरी निगाह से न देखेंगे। यों हंसी-दिल्लगी की और बात है।

नवाब साहब ससुराल में पहुंचे, तो बाहर दीवानखाने में बैठे। नाच शुरू हुआ और मुसाहबों ने तायफों की तारीफ के पुल बांध दिए—जनाब, ऐसी गानेवाली अब दूसरी शहर में नहीं है, अगर शाही जमाना होता तो लाखों रुपये पैदा कर लेती और अब भी हमारे हुजूर के से जौहर-शिनास बहुत हैं, मगर फिर भी कम हैं। क्यों हुजूर, होली गाने को कहूं?

नवाब—जो जी चाहे, गाएं।

मुसाहब—हुजूर फरमाते हैं, यह जो गाएगी अपना रंग जमा लेंगी, मगर होली हो तो और भी अच्छा।

नवाब—हमने यह नहीं कहा, तुम लोग हमें जलील करा दोगे।

मुसाहब—क्या मजाल हुजूर, हुजूर का नमक खाते हैं, हम गुलामों से यह उम्मीद? चाहे सिर जाता रहे, मगर नमक का पास जरूर रहेगा, और यह तो हुजूर, दो घड़ी हंसने-बोलने का वक्त ही है।

गनीमत जान इस मिल बैठने को,
जुदाई की घड़ी सिर पर पड़ी है।

इसके बाद नवाब साहब अंदर गए और खाना खाया। साली ने एक भारी खिलअत बहनोई को और एक कीमती जोड़ा बहन को दिया। दूसरे दिन दूल्हा-दुलहिन रुखसत होकर घर गए।

एक सौ तीन

कुछ दिन तक तो मियां आज़ाद मिस्र में इस तरह रहे जैसे और मुसाफिर रहते हैं, मगर जब कांसल को इनके आने का हाल मालूम हुआ तो उसने उन्हें अपने यहां बुला कर ठहराया और बातें होने लगीं।

कांसल–मुझे आपसे सख्त शिकायत है कि आप यहां आए और हमसे न मिले। ऐसा कौन है जो आपके नाम से वाकिफ न हो, जो अखबार आता है उसमें आपका जिक्र जरूर होता है। वह आपके साथ मसखरा कौन है? वह बौना खोजी?

आज़ाद ने मुसकिराकर खोजी की तरफ इशारा किया?

खोजी–जनाब, वह मसखरे कोई और होंगे और खोजी खुदा जाने, किस भकुए का नाम है। हम ख्वाजा साहब हैं और बौने की एक ही कही। हाय, मैं किससे कहूं कि मेरा बदन चोर है।

आज़ाद–क्या अखबारों में ख्वाजा साहब का जिक्र होता है?

कांसल–जी हां, इनकी बड़ी धूम है, मगर एक मुकाम पर तो सचमुच इन्होंने बड़ा काम कर दिखाया था। आपका दौलतखाना किस शहर में है जनाब? मुझे हैरत तो यह है कि इतने नन्हे-नन्हे तो आपके हाथ-पांव, लड़ाई में आप किस बिरते पर गए थे।

खोजी–(मुसकिराकर) यही तो कहता हूं हजरत कि मेरा बदन चोर है, देखिए जरा हाथ मिलाइए। हैं फौलाद की अंगुलियां या नहीं? अगर अभी जोर करूं तो आपकी एक-आध अंगुली तोड़कर रख दूं।

थोड़ी देर तक वहां बातचीत करके आज़ाद चले तो खोजी ने कहा–यह आपकी अजीब आदत है कि गैरों के सामने मुझे जलील करने लगते हैं। अगर मुझे गुस्सा आ जाता और मैं मियां कांसल के हाथ-पांव तोड़ देता तो बताओ कैसी ठहरती ! मैं मारे मुरव्वत के तरह देता जाता हूं, वर्ना मियां की सिट्टी-पिट्टी भूल जाती।

आज़ाद–अजी, ऐसी मुरव्वत भी क्या जिससे हमेशा जूतियां खानी पड़ें। कई जगह आप पिटे, मगर मुरव्वत न छोड़ी। एक दिन इस मुरव्वत की बदौलत आप कहीं कांजी-हौस न भेजे जाइए। अच्छा, अब यह पूछता हूं कि जब सारे जमाने ने मेरा हाल सुना तो क्या हुस्नआरा ने न सुना होगा?

खोजी–जरूर सुना होगा भाई, अब आज के आठवें दिन शादी लो। मगर उस्ताद, दो-एक दिन बंबई में जरूर रहना। जरा बेगम साहिबा से बातें होंगी।

आज़ाद–भाई, अब तो बीच में ठहरने का जी नहीं चाहता।

खोजी–यह नहीं हो सकता, इतनी बेवफाई करना मुनासिब नहीं, वह बेचारी हम लोगों की राह देख रही होंगी।

आज़ाद–अच्छा तो यह सोच लो कि अगर उन्होंने पूछा कि खोजी के साथ कोई औरत क्यों नहीं आई तो क्या जवाब दोगे? हमारी तो सलाह है कि किसी को यहीं से फांस ले चलो?

खोजी–नहीं जनाब, मुझे यहां की औरतें पसंद नहीं। हां, अपने वतन में हो तो मुजायका नहीं।

आज़ाद–अच्छा कैसी औरत चाहते हो?

खोजी–बस यही कि उम्र ज्यादा न हो और शक्ल-सूरत अच्छी हो।

आज़ाद–ऐसी एक औरत तो हुस्नआरा के मकान के पास है। उसी दर्जी की बीबी है जो उनके मकान के सामने रहता है। रंगत तो सांवली है, मगर ऐसी नमकीन कि आपसे क्या कहूं और अभी कमसिन। बहुत-बहुत तो कोई चालीस-बयालीस की होगी।

खोजी–भला मीडा में और उसमें क्या फर्क है?

आज़ाद–यह उससे दो-चार बरस कमसिन हैं, बस और तो कोई फर्क नहीं। हां, यह गोरी हैं और उसका रंग सांवला है।

खोजी–भला नाम क्या है?

आज़ाद–नाम है शिताबजान।

खोजी–तब तो भाई, हम हाजिर हैं। मगर पक्की-पोढ़ी बात तो हो! ले पहले।

आज़ाद–आपको इससे क्या वास्ता? कुछ तो समझ के हमने कहा है। हमारे पास उसका खत आया था कि अगर ख्वाजा साहब मंजूर करें तो मैं हाजिर हूं।

खोजी–तब तो भाई, बनी-बनायी बात है, खुदा ने चाहा तो आज के आठवें दिन शिताबजान हमारी बगल में होंगी।

आज़ाद–शाम को कांसल से मिलकर चले चलो आज ही।

खोजी–कांसल ! हमको शिताबजान की पड़ी है, हमारे सामने खत लिख के भेज दो। मजमून हम बताएंगे।

आज़ाद कलम-दावात लेकर बैठे। खोजी ने खत लिखवाया और जा कर डाकखाने में छोड़ आए। तब मिस मीडा से जाकर बोले–अब हमारी खुशामद कीजिए। आज के आठवें दिन हमारे यहां आपकी दावत होगी। अच्छे से अच्छे किस्म की ब्रांडी तय कर रखिए। शिताबजान के हाथ पिलवाऊंगा।

मीडा–शिताबजान कौन ! क्या तुम्हारी बहन का नाम है?

खोजी–अरे तोबा ! शिताबजान से मेरी शादी होने वाली है। उसने मुझे भेजा था कि रूम जाकर नाम करो तो फिर निकाह होगा। अब मैं वहां से नाम करके लौटा हूं पहुंचते-पहुंचते शादी होगी।

मीडा–क्या सिन होगा? बेवा तो नहीं है?

खोजी–खुदा न करे, दर्जी अभी जिंदा है?

मीडा–क्या मियांवाली है, और आप उसके साथ निकाह करेंगे? सिन क्या है?

खोजी–अभी क्या सिन है, कल की लड़की है, कोई पैंतालीस बरस की हो शायद।

मीडा–बस, पैंतालीस ही बरस की? तब तो उसे पालना पड़ेगा।

खोजी–हम तो किस्मत के धनी हैं?

मीडा–भला शक्ल-सूरत कैसी है?

खोजी–यह आज़ाद से पूछो। चांद में मैल है, उसमें मैल नहीं, मैं तो आज़ाद को दुआएं देता हूं जिनकी बदौलत शिताबजान मिलीं।

यहां से खोजी होटलवालों के पास पहुंचे और उनसे भी वही चर्चा की। अजी, बिलकुल सांचे की ढली है, कोई देखे तो बेहोश हो जाय। अब आज़ाद के सामने उसे

थोड़ा ही आने दूंगा, हरगिज नहीं।

खानसामा–तुमसे बातचीत भी हुई या दूर ही से देखा?

खोजी–जी हां, कई बार देख चुका हूं। बातें क्या करती है, मिश्री की डली घोलती है।

होटलवालों ने खोजी को खूब बनाया। इतनी देर में आज़ाद ने जहाज का बंदोबस्त किया और एक रोज दोनों परियों और ख्वाजा साहब के साथ जहाज पर सवार हुए। सवार होते ही खोजी ने गाना शुरू किया–

अरे मल्लाह लगा किश्ती मेरा महबूब जाता है;
शिताबो की तमन्ना में मुझे दिल लेके आता है।
मगर छोड़ा विदेशी होके ख्वाजा ने गए लड़ने;
शिताबो के लिए जी मेरा कल से तिलमिलाता है।

आज़ाद ने शह दे-दे कर और चंग पर चढ़ाया। ज्यों-ज्यों उनकी तारीफ करते थे, वह और अकड़ते थे। जहाज थोड़ी ही दूर चला था कि एक मल्लाह ने कहा–लोगो, होशियार ! तूफान आ रहा है। यह खबर सुनते ही कितनों ही के तो होश उड़ गए और मियां खोजी तो दोहाई देने लगे–जहाज की दोहाई ! बेड़े की दोहाई ! समुद्र की दोहाई ! हाय शिताबजान, अरे मेरी प्यारी शिताब, दुआ मांग।

यह कहकर आपने अकड़कर आज़ाद की तरफ देखा। आज़ाद ताड़ गए कि इस फिकरे की दाद चाहते हैं। कहा–सुभान-अल्लाह, शिताबजान के लिए शिताब, क्या खूब।

खोजी–इस फन में कोई मेरी बराबरी क्या करेगा भला। उस्ताद हूं, उस्ताद।

आज़ाद–और लुत्फ यह है कि ऐसे नाजुक वक्त में भी नहीं चूकते।

खोजी–या खुदा, मेरी सुन ले। यारो, रो-रो कर उसकी दरगाह से दुआ मांगो के ख्वाजा बच जायं और शिताबजान से ब्याह हो। खूब रोओ।

आज़ाद–जनाब, यह क्या सबब है कि आप सिर्फ अपने लिए दुआ मांगते हैं, और बेचारों का भी तो खयाल रखिए।

इतने में आंधी आ गई। आज़ाद तो जहाज के कप्तान के साथ बातें कर रहे थे। खोजी ने सोचा, अगर जहाज डूब गया तो शिताबजान क्या करेगी? फौरन अफीम की डिबिया ली और खूब कस कर कमर से बांधकर बोले–लो यारो, हम तो तैयार हैं। अब चाहे आंधी आए या बगूला। तूफान नहीं, तूफान का बाप आए तो क्या गम है !

जहाज वाले तो घबराए हुए थे कि नहीं मालूम, तूफान क्या गुल खिलाए, मगर ख्वाजा साहब तान लगा रहे थे–

शिताबो की तमन्ना में मेरा दिल तिलमिलाता है।

आज़ाद–ख्वाजा साहब, आप तो बेवक्त की शहनाई बजाते हैं। पहले तो रोए-चिल्लाए और अब तान लगाने लगे।

एक ठाकुर साहब भी जहाज पर सवार थे। खोजी को गाते देखकर समझे कि यह कोई बड़े वली हैं। कदमों पर टोपी रख दी और बोले–साईं जी, हमारे हक में दुआ कीजिए।

खोजी–खुश रहो बाबा, बेड़ा पार है।

आज़ाद ने खोजी के कान में कहा–यार, यह तो अच्छा उल्लू फंसा ! रास्ते में

खूब दिल्लगी रहेगी।

ठाकुर साहब बार-बार खोजी से सवाल करते थे और मियां खोजी अनाप-शनाप जवाब देते थे।

ठाकुर–साईं जी, जुमे के दिन सफर करना कैसा है?

खोजी–बहुत अच्छा दिन है।

ठाकुर–और जुमेरात?

आज़ाद–ठाकुर साहब, आप कब से सफर कर रहे हैं?

ठाकुर–जनाब, कोई चालीस बरस हुए।

आज़ाद–चालीस बरस सफर करते हो गए और अभी तक आप अच्छे और बुरे दिन पूछते जाते हैं?

ठाकुर–सनीचर के दिन आप सफर करके देख लें।

खोजी–हमने इस बारे में बहुत गौर किया है। बुरी साइत का सफर कभी पूरा नहीं होता।

ठाकुर–साईं जी, कुछ और नसीहत कीजिए, जिससे मेरा भला हो।

खोजी–अच्छा सुनो, पहली बात तो यह है कि जिस दिन चाहो, सफर करो, मगर पहर रात रहे से, तुम्हारी मंजिल दूनी हो जाएगी। दूसरी नसीहत यह है कि एक बीबी से ज्यादा के साथ शादी न करना, अगर वह मर जाय तो दूसरी शादी का खयाल भी दिल में न लाना। तीसरी बात यह है कि रात को दो घंटे तक ठंडे पानी में रह कर खुदा की याद करना। गरमी, जाड़ा, बरसात तीनों मौसिमों में इसका खयाल रखना। चौथी नसीहत यह है कि अच्छे खाने और अच्छे कपड़े से परहेज रखना। खाने को जौ की रोटी और पीने को औटाया हुआ पानी काफी है।

खोजी ने यह नसीहतें कुछ इस तरह कीं, गोया वह पहुंचे हुए, फकीर हैं। ठाकुर ने अपनी नोटबुक पर ये बातें लिख लीं और बोला–साईं जी, आपसे मुलाकात करना चाहूं तो कैसे करूं?

खोजी–बस, लखनऊ में शिताबजान का मकान पूछते हुए चले आना।

ठाकुर–शिताबजान कौन हैं?

खोजी–कोई हों, तुम्हें इससे मतलब?

यों ही ठाकुर साहब को बनाते हुए रास्ता कट गया और बंबई सामने से नजर आने लगा। खोजी की बांछें खिल गईं, चिल्लाकर कहा–यारो, जरा देखना शिताबजान की सवारी तो नहीं आई है। करीमबख्श नामी महरी साथ होगी। अतलस का लहंगा है, कहारों की पगड़ियां रंगी हुई हैं, मछलियां जरूर लटक रही होंगी। अरे महरी, महरी ! क्या बहरी है?

लोगों ने समझाया कि साहब, अभी बंदरगाह तो आने दो। शिताबजान यहां से क्योंकर सुन लेंगी? बोले–अजी, हटो भी, तुम क्या जानो। कभी किसी पर दिल आया हो तो समझो? अरे नादान, इश्क के कान दो कोस तक की खबर लाते हैं, क्या शिताबजान ने आवाज न सुनी होगी? वाह, भला कोई बात है। मगर जवाब क्यों न दिया? इसमें एक लिम है, वह यह कि अगर आवाज के साथ ही आवाज का जवाब दें तो हमारी नजरों से गिर

जायं। मजा जब है कि हम बौखलाए हुए इधर-उधर ढूंढ़ते और आवाज देते हों, और वह हमें पीछे से एक धौल जमाएं और तिनककर कहें—मुड़ीकाटा, आंखों का अंधा नाम नैनसुख, गुल मचाता फिरता है, और हम धौल खाकर कहें कि देखिए सरकार, अब की धौल लगाई तो खैर, जो अब लगाई तो बिगड़ जाएगी। इस पर वह झल्लाकर इस घुटी हुई खोपड़ी पर तड़ातड़ दो-चार और जमा दें, तब मैं हंस कर कहूं, तो फिर दो-एक जूते भी लगा दो, इसके बगैर तबीयत बेचैन है।

आज़ाद—बिलफेज कहिए तो मैं ही लगा दूं।

खोजी—अजी नहीं, आपको तकलीफ होगी।

आज़ाद—वल्लाह, किस भकुए को जरा भी तकलीफ हो।

खोजी—मियां, पहले मुंह धो आओ, इन खोपड़ियों के सुहलाने के लिए परियों के हाथ चाहिए, तुम जैसे देवों के नहीं।

इतने में समुद्र का किनारा नजर आया, तो खोजी ने गुल मचा कर कहा—शिताबजान साहबा, आपका यह गुलाम फर्जिदाना आदाब-अर्ज....।

इतना कह चुके थे कि लोगों ने कहकहा लगाया और खोजी की समझ में कुछ न आया कि लोग क्यों हंस रहे हैं।

आज़ाद से पूछा कि इस बेमौका हंसी का क्या सबब है? आज़ाद ने कहा—इसका सबब है आपकी हिमाकत। क्या आप शिताब के बेटे हैं जो उनको फर्जिदाना आदाब बजा लाते हैं, जोरू को कोई इस तरह सलाम करता है?

खोजी—(गालों पर थप्पड़ लगाकर) अररर, गजब हो गया, बुरा हुआ। वल्लाह, इतना जलील हुआ कि क्या कहूं। भाई, इश्क में होश-हवास कब ठीक रहते हैं, अनाप-शनाप बातें मुंह से निकल ही जाती हैं, मगर खैर ! अब तो पालकी साफ-साफ नजर आती है। वह देखिए, महरी सामने डटी खड़ी है। अख्खाह, अब तो महरी भी बाढ़ पर है !

जहाज ने लंगर डाला और उतरने लगे। ख्वाजा साहब दूर ही से शिताबजान को ढूंढ़ने लगे। आज़ाद दोनों लेडियों को लेकर खुश्की पर आए तो बंबई के मिर्जा साहब ने दौड़कर उन्हें गले लगाया। फिर दोनों परियों को देखकर ताज्जुब से बोले—इन दोनों को कहां से लाए, क्या परिस्तान की परियां हैं।

आज़ाद ने अभी कुछ जवाब न दिया था कि खोजी कफन फाड़कर बोल उठे—इधर शिताबजान, इधर, ओ करमबख्श करमफोड़ कमबख्ती के निशान, यहां क्यों नहीं आती। दूर ही से बुत्ते बताती है।

मिर्जा—किसको पुकारते हो ख्वाजा साहब, मैं बुला लूं। क्या ब्याह लाए हो कोई परी? मगर उस्ताद, नाम तो हिन्दुस्तान का है, जरा दिखा तो दो।

आज़ाद ने खैर-आफियत पूछी और दोनों आदमियों में शाहजादा हुमायूं फर की चर्चा होने लगी। फिर लड़ाई का जिक्र छिड़ गया।

उधर ख्वाजा साहब ने अफीम घोली और चुस्की लगाकर गुल मचाया—शिताबजान प्यारी, मैं तेरे वारी, जल्द से आ री, सूरत दिखा री, आंसू हैं जारी। जानेमन, जिस बिस्तर पर तुम सोई थीं उसको हर रोज सूंघ लिया करता हूं और उसी की खुशबू पर जिंदगी का दार-मदार है।

तेरी-सी न बू किसी में पायी,
सारे फूलों को सूंघता हूं।

मिर्जा साहब ने कहा-आखिर यह माजरा क्या है। जनाब ख्वाजा साहब, क्या सफर में अक्ल भी खो आए, यह आपको क्या हो गया है? अगर सच्चे आशिक हो तो फरियाद कैसी?

खोजी-जनाब, कहने और करने में जमीन-आसमान का फर्क है।

मिर्जा-

कब अपने मुंह से आशिक शिकवए बेदाद करते हैं;
दहाने गैर से वह मिस्ल नै फरियाद करते हैं।

खोजी-मुझसे कहिए तो ऐसे दो करोड़ शेर पढ़ दूं, आशिकी दूसरी चीज है, शायद दूसरी चीज।

मिर्जा-दो करोड़ शेर तो दस करोड़ बरस तक भी आपसे न पढ़े जाएंगे। आप दो ही चार शेर फरमाएं।

खोजी-अच्छा तो सुनिए और गिनते जाइए, आप भी क्या कहेंगे-

यही कह-कहके हिजरे यार में फरियाद करते हैं;
वह भूले हमको बैठे हैं जिन्हें हम याद करते हैं।
असीराने कुहन पर ताजा वह बेदाद करते हैं;
रही ताकत न जब उड़ने की तब आज़ाद करते हैं।
रकम करता हूं जिस दम काट तेरी तेब अब्रू की;
गरीबां चाक अपना जामए फौलाद करते हैं।
सिफत होती है जानां जिस गजल में तेरे अब्रू की;
तो हम हर बैत पर आंखों से अपनी साद करते हैं।

अब भी न कोई शरमाए तो अंधेर है, दो करोड़ शेर न पढ़कर सुनाऊं तो नाम बदल डालूं। हां, और सुनिए-

नहीं हम याद से गाते हैं, गाफिल एकदम हमदम;
जो बुत को भूल जाते हैं खुदा को याद करते हैं।

आज़ाद-इस वक्त तो मिर्जा साहब को आपने खूब आड़े हाथों लिया।

खोजी-अजी, यहां कोई एक शेर पढ़े तो हम दस करोड़ शेर पढ़ते हैं। जानते हो कहां के रहने वाले हैं हम। बंबई वालों को हम समझते क्या हैं।

इतने में एक औरत ने खोजी को इशारे से बुलाया तो उनकी बांछें खिल गईं। बोले-क्या हुक्म है हुजूर?

औरत-ऐ दुर हुजूर के बच्चे! कुछ लाया भी वहां से, या खाली हाथ झुलाता चला आता है?

खोजी-पहले तुम अपना नाम तो बताओ!

औरत-ऐ लो, पहरों से नाम रट रहा है और अब पूछता है, नाम बता दो। (धप जमाकर) और नाम पूछेगा?

खोजी-ऐ, तुमने तो धप लगानी शुरू की, जो कहीं अबकी हाथ उठाया तो बहुत

ही बेढ़ब होगी।

आज़ाद–अरे यार, यह क्या माजरा है? बेभाव की पड़ने लगी।

खोजी–अजी, मुहब्बत के यही मजे हैं भाईजान। तुम यह बातें क्या जानो।

मिर्जा–यह आपकी ब्याहता हैं या सिर्फ मुलाकाती हैं?

शिताब–हमारे बुजुर्गों से यह रिश्ता चल आता है।

मिर्जा–तो यह कहो कि तुम इनकी बहन हो।

खोजी–जनाब, जरा संभलकर फरमाइएगा। मैं आपका बड़ा लिहाज करता हूं।

शिताब–ऐ, तो कुछ झूठ भी है। आखिर आप मेरे हैं कौन? मुफ्त में मियां बनने का शौक चर्राया है?

खोजी–अरे तो निकाह तो हो ले। कमस खुदा की मैदान में भी दिल तुम्हारी ही तरफ रहता था।

आज़ाद–हमेशा याद करते थे बेचारे !

जब आज़ाद लेडियों के साथ गाड़ी में बैठ गए तब मिर्जा ने खोजी से कहा–चलिए, वह लोग जा रहे हैं।

खोज़ी–जा रहे हैं तो जाने दीजिए। अब मुद्दत के बाद माशूक से मुलाकात हुई है, जरा बातें कर लूं। आप चलिए, मैं अभी हाजिर होता हूं।

वे लोग इधर रवाना हुए, उधर शिताबजान ने खोजी को दूसरी गाड़ी में सवार कराया और घर चलीं। ख्वाजा साहब खुश थे कि दिल्लगी में माशूक हाथ आया। घर पहुंचकर शिताबजान ने खोजी से कहा–अब कुछ खिलवाइए, बहुत भूख लगी है।

खोजी–भई वाह, मैं सिपाही आदमी, मेरे पास सिवा ढाल-तलवार, बरछी-कटार के और क्या है? या तमगे हैं, सो वह मैं किसी को दे नहीं सकता।

शिताब–कमाई करने गये थे वहां, या रास्ता नापने? तमगे लेकर चाटूं, तलवार से अपनी गर्दन मार लूं, छुरी को भोंक के मर जाऊं? छुरी-तलवार से कहीं पेट भरता है?

खोजी–अभी कुछ खिलवाओ-पिलवाओ, जब हम रिसालदारी करेंगे तो तुमको मालोमाल कर देंगे। अब परवाना आया चाहता है। लड़ाई में मैंने जा बड़े-बड़े काम किए वह तो तुम सुन ही चुकी होगी। दस हजार सिपाहियों की नाक काट डाली। उधर दुश्मन की फौज ने शिकस्त पाई, इधर मैंने करौली उठाई और मैदान में खट से दाखिल। जिसको देखा कि बिलकुल ठंडा हो गया है, उसकी नाक उड़ा दी। जब तक लड़ाई होती रहती थी, बंदा छिपा बैठा रहता था; कभी पेड़ पर चढ़ गया, कभी किसी झोपड़े में लुक गया। मुफ्त में जान देना कौन-सी अक्लमंदी है। मगर लड़ाई खतम होते ही मैदान में जा पहुंचता था। जिस शहर में जाता था, शहर भर की औरतें मेरे पीछे पड़ जाती थीं, मगर मैं किसी की तरफ आंख उठाकर भी न देखता। गरज कि लड़ाई में मैंने बड़ा नाम किया, यह मेरी ही जूतियों का सदका है कि आज़ाद पाशा बन बैठे। वह तो जानते भी न थे कि लड़ाई किस चिड़िया का नाम है।

शिताब–मगर यह तो बताओ कि बंदूक से नाक क्योंकर काटी जाती है?

खोजी–तुम इन बातों को क्या जानो, यह सिपाहियों के समझने की बातें हैं।

इधर आज़ाद मिर्जा साहब के घर पहुंचे तो बेगम साहबा फूली न समाईं। खिदमतगार

ने आज़ाद को झुककर सलाम किया। दोनों दोस्त कमरे में जाकर बैठे। मिर्जा साहब ने घर जाकर देखा तो बेगम साहबा पलंग पर पड़ी थी। महरी से पूछा तो मालूम हुआ, आज तबियत कुछ खराब है। बाहर आकर आज़ाद से कहा—घर में सोती हैं और तबियत भी अच्छी नहीं। मैंने जगाना मुनासिब न समझा। आज़ाद समझे कि बीमारी महज बहाना है, हमसे कुछ नाराज हैं।

इतने में एक चपरासी ने आकर मिर्जा साहब को एक लिफाफा दिया। यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार ने कुछ सलाह करने के लिए उन्हें बुलाया था। मिर्जा साहब बोले—भई, इस वक्त तो जाने को जी नहीं चाहता। मुद्दत के बाद एक दोस्त आए हैं, उनकी खातिर-तवाजों में लगा हुआ हूं। मगर जब आज़ाद ने कहा कि आप जाइए, शायद कोई जरूरी काम हो, तो मिर्जा साहब ने गाड़ी तैयार कराई और रजिस्ट्रार से मिलने गए।

इधर आज़ाद के पास जैनब ने आकर सलाम किया।

आज़ाद—कहो, जैनब, अच्छी रहीं?

जैनब—हुजूर के जान-माल की दुआ देती हूं। हुजूर तो अच्छे रहे?

आज़ाद—बेगम साहबा क्या अभी आराम ही में हैं। अगर इजाजत हो तो सलाम कर आऊं।

जैनब—हुजूर के लिए पूछने की जरूरत नहीं, चलिए।

आज़ाद जैनब के साथ अंदर गए तो कमरे में कदम रखते ही महरी ने कहा—वहीं बैठिए, कुर्सी आती है।

आज़ाद—सरकार कहां हैं। बेगम साहबा की खिदमत में आदाब अर्ज है।

बेगम—बदंगी। आपको जो कुछ कहना हो कहिए, मुझे ज्यादा बातें करने की फुरसत नहीं।

आज़ाद—खुदा खैर करे आखिर किस जुर्म में यह खफगी है? कौन-सा गुनाह हुआ?

बेगम—बस जबान न खुलवाइए, गजब खुदा का, एक खत तक भेजना कसम था, कोई इस तरह अपने अजीजों को तड़पाता है?

आज़ाद—कुसूर माफ कीजिए, बेशक गुनाह तो हुआ, मगर मैंने सोचा कि खत भेजकर मुफ्त में मुहब्बत बढ़ाने से क्या फायदा, न जाने जिंदा आऊं या न आऊं, इसलिए ऐसी फिक्र करूं कि उनके दिल से भूल ही जाऊं। अगर जिंदगी बाकी है तो चुटकियों में गुनाह माफ करा लूंगा।

इस फिकरे ने बेगम साहिबा के दिल पर बड़ा असर किया। सारा गुस्सा हवा हो गया। जैनब को नीचे भेजा कि हुक्का भर लाओ, खवास को हुक्म दिया कि पान बनाओ। तब मैदान खाली पाकर चिक उठा दी और बोलीं—वह कहां गए हैं?

आज़ाद—किसी साहब ने बुलाया है, उनसे मिलने गए हैं। ख़ुदा ने मुझे यह खूब मौका दिया।

बेगम—क्या कहा, क्या कहा ! जरा फिर तो कहिएगा, जरा सुनूं तो किस चीज का मौका मिला?

आज़ाद—यही हुजूर को सलाम करने का।

बेगम—हां, यों बातें कीजिए, अदब के साथ। हुस्नआरा के नाम तुमने कोई खत

भेजा था? मुझे लिखा है कि जिस दिन आएं, फौरन तार से इत्तिला देना।

आज़ाद–अब तो यही धुन है कि किसी तरह वहां पहुंचूं और जिंदगी के अरमान पूरे करूं।

बेगम–जी नहीं, पहले आपका इम्तहान होगा। आप रंगीन आदमी ठहरे, आपका एतबार ही क्या?

आज़ाद–ओफ्फोह ! यह बदगुमानी। खैर साहब, अख्तियार है, मगर हमारे साथ चलने का इरादा है या नहीं?

बेगम–नहीं साहब, यह हमारे यहां का दस्तूर नहीं। बहनोई के साथ जवान सालियां सफर नहीं करतीं। वक्त पर उनके साथ आ जाऊंगी।

आजाजद–खैर, इतनी इनायत क्या कम है। अब आप जाकर परदे में बैठिए, मैं दीवाना हो जाऊंगा।

बेगम–क्यों साहब, यही आपका इश्क है? इसी बूते पर इम्तहान दीजिएगा?

बेगम साहिबा ने वहां ज्यादा देर तक बैठना मुनासिब न समझा। आज़ाद भी बाहर चले गए। खिदमतगार ने हुक्का भर दिया। पलंग पर लेटे-लेटे हुक्का पीने लगे तो खयाल आया कि आज मुझसे बड़ी गलती हुई, अगर मिर्जा साहब मुझे घूरते देख लेते तो अपने दिल में क्या कहते। अब यहां ज्यादा ठहरना गलती है। खुदा करे, आज के चौथे दिन वहां पहुंच जाऊं। बेगम साहिबा ने मुझे हिकारत की निगाह से देखा होगा।

वह अभी यही सोच रहे थे कि जैनब ने बेगम साहिबा का एक खत लाकर उन्हें दिया। लिखा था–अभी-अभी मैंने सुना है कि आपके साथ दो लेडियां आई हैं। दोनों कमसिन हैं और आप भी जवान। आग और फूस का साथ? अगर वाकई तुमने इन दोनों के साथ शादी कर ली है कि बड़ा गजब किया, फिर उम्मीद न रखना कि हुस्नआरा तुमको मुंह लगाएंगी। तुमने सारी की-कराई मिहनत तक खाक में मिला दी। और अगर शादी नहीं की तो यहां लाए क्यों? तुम्हें शर्म नहीं आती? हुस्नआरा गरीब तो तुम्हारी मुहब्बत की आग में जले और तुम सौतों को साथ लाओ–

क्या कहू है क्योंकर न उठे दर्द जिगर में,
मेरी तो बगल खाली है और आपके बर में।
एक आन भी मुझसे न मिलो आठ पहर में,
घर छोड़ के अपना रहो यों और के घर में।

तुम और गैरों को साथ लाओ, तुम्हारी तरह हुस्नआरा भी अब तक शादी कर लेतीं तो तुम क्या बना लेते? तुमको इतना भी खयाल न रहा कि हुस्नआरा के दिल पर क्या असर होगा। तुम्हारे चाहने वाले हैं तो उसके गाहक भी अच्छे-अच्छे शाहजादे हैं। मैंने ठान ली है कि हुस्नआरा को आपके हाल से इत्तिला दूं, और कह दूं कि अब वह आज़ाद नहीं रहे, अब दो-दो बगल में रहती हैं, उस पर बहू-बेटियों पर बुरी निगाह रखते हैं। अगर तुमने मेरा इत्मीनान न किया तो पछताओगे।

यह खत पढ़कर आज़ाद ने जैनब से कहा–क्यों, तुम इधर की उधर लगा-लगा कर आपस में लड़वाती हो? तुमने उनसे जाके क्या कह दिया, मुझसे भी पूछ लिया होता।

जैनब–ऐ हुजूर, तो मेरा इसमें क्या कसूर। मुझसे जो सरकार ने पूछा, वह मैंने बयान

कर दिया। इसमें बंदी ने क्या गुनाह किया !

आज़ाद–खैर, जो हुआ सो हुआ, लाओ कलम-दवात।

आज़ाद ने उसी वक्त इस खत का जवाब लिखा–बेगम साहबा की खिदमत मे आदाब-अर्ज करता हूं। आप मुझ पर बेवफाई का इलजाम लगाती हैं। आपको शायद यकीन न आएगा, मगर अक्सर मुकामों पर ऐसी-ऐसी परियां मुझ पर रीझी हैं कि अगर हुस्नआरा का सच्चा इश्क न होता तो मैं हिन्दोस्तान में आने का नाम न लेता, मगर अफसोस है कि मेरी कुल मिहनत बेकार गई। मेरा खुदा जानता है, जिन-जिन जंगलों, पहाड़ों पर मैं गया, कोई कम गया होगा। हफ्तों एक अंधेरी कोठरी में कैद रहा, जहां किसी जानदार की सूरत नजर न आती थी। और यह सब इसलिए कि एक परी मुझसे शादी करना चाहती थी और मैं इनकार करता था कि हुस्नआरा को क्या मुंह दिखाऊंगा। यह दोनों लेडियां जो मेरे साथ हैं, उन्होंने मुझ पर बड़े-बड़े एहसान किए हैं, गाढ़े वक्त में काम आई हैं, वर्ना आज आज़ाद यहां न होता। मगर इतने पर भी आप नाराज हो रही हैं, इसे अपनी बदनसीबी के सिवा और क्या कहूं। खुदा के लिए कहीं हुस्नआरा को न लिख भेजना। और अगर यही चाहती हो कि मैं जान दूं तो साफ-साफ कह दो। हुस्नआरा को लिखने से क्या फायदा। और क्या लिखूं। तबीयत बेचैन है।

बेगम साहबा ने यह खत पढ़ा तो गुस्सा ठंडा हो गया, छमछम करती हुई परदे के पास आकर खड़ी हुई तो देखा–आज़ाद सिर पर हाथ रख कर रो रहे हैं। आहिस्ता से पुकारा–आज़ाद !

जैनब–हुजूर देखिए कौन सामने खड़ा है? जरी उधर निगाह तो कीजिए।

बेगम–आज़ाद, जो रोए तो हमीं को है-है करे। जैनब, जरा सुराही तो उठा ला, मुंह पर छींटे दे।

जैनब–हुजूर, क्या गजब कर रहे हैं, वह सामने कौन खड़ा है?

आज़ाद–(बेगम साहबा की तरफ रुख करके) क्या हुक्म है?

बेगम–मेरा तो कलेजा धक-धक कर रहा है।

आज़ाद–कोई बात नहीं। खुदा जाने। इस वक्त क्या याद आया। आपको तकलीफ होती है, आप जाएं, मैं बिलकुल अच्छा हूं।

बेगम–अब चोंचले रहने दो, मुंह धो डालो। वाह, मर्द होकर आंसू बहाते हो? तुमसे तो छोकरियां अच्छी। यह तुम लड़ाई में क्या करते थे?

आज़ाद–जलाओ और उस पर ताने दो।

बेगम–क्या खूब जलाने की एक ही कही। जलाते तुम हो या मैं? एक छोड़ दो-दो वहां से लाए, ऊपर से बातें बनाते हो, मुंह दिखाने काबिल नही रखा अपने को। हुस्नआरा ने उड़ती खबर पाई थी कि आज़ाद ने किसी औरत को ब्याह लिया तो पछाड़ें खाने लगीं। एक तुम हो कि जोड़ी साथ लाए और ऊपर से कहते हो, जलाओ। तुम्हें शर्म भी नहीं आती?

आज़ाद–क्या टेढ़ी खीर है, न खाते बने, न छोड़ते बने।

बेगम–तो फिर साफ-साफ क्यों नहीं बता देते?

आज़ाद–ब्याहता बीबी हैं दोनों, और क्या कहें।

बेगम–अच्छा साहब, ब्याहता बीबी नहीं, दोनों आपकी बहनें सही, अब खुश हुए? बरसों बाद आए तो एक कांटा साथ ले के। भला सोचो, मैं चुपकी हो रहूं तो हुस्नआरा क्या कहेगी कि वाह बहन, तुमने हमको लिखा भी नहीं। लेकिन दो में क्या फायदा होगा तुम्हें?

आज़ाद–आप दिल्लगी करती हैं और मैं चुप हूं। फ़िर मेरी भी जबान खुलेगी।

बेगम–तुम हमको सिर्फ इतना बतला दो कि यह दोनों यहां किसलिए आई हैं, तो मैं चुप ही रहूं।

आज़ाद–तो उन दोनों को यहां बुला लाऊं?

बेगम–उनको आने दो, उनसे सलाह लेके जवाब दूंगी।

आज़ाद–तो क्या आप हममें और उनमें कोई फर्क समझती हैं। मैं तो तुमको और हुस्नआरा को एक नजर से देखता हूं।

बेगम–बस, अब मैं कह बैठूंगी। बड़े बेशर्म हो, छटे हुए बेहया।

इतने में जैनब ने आकर कहा–मिर्जा साहब आ गए। बेगम साहब झपट कर कोठे पर हो रहीं और आज़ाद बारादरी में आकर लेट रहे।

मिर्ज़ा–आपने अभी तक हम्माम किया या नहीं? बड़ी देर हो गई। जिस तरफ जाता हूं, लोग गाड़ी रोककर आपका हाल पूछने लगते हैं। कल शाम को सब लोग आपसे टाउनहाल में मिलना चाहते हैं। हां, यह तो फर्माइए, यह दोनों परियां कौन हैं? एक तो उनमें से किसी और मुल्क की मालूम होती है।

आज़ाद–एक तो रूस की हैं और दूसरी कोहकाफ की।

मिर्जा–यार, बुरा किया। हुस्नआरा सुनेंगी तो क्या कहेंगी?

इधर तो यह बात हो रही थीं, उधर शिताबजान ने खोजी से कहा–जरा अकेले में चलिए, आपसे कुछ कहना है। खोजी ने कहा–खुदा की कुदरत है कि माशूक तक हमसे अकेले में चलने को कहते हैं। जो हुक्म हो, बजा लाऊं। अगर तोप के मोहरे पर भेज दो तो अभी चला जाऊं। यह तो कहो, तुम्हारे सबब से चुप हूं, नहीं अब तक दस-पांच का कत्ल कर चुका होता।

यह कहकर ख्वाजा साहब झपटकर बाहर निकले। इत्तिफाक से एक गाड़ीवान आहिस्ता-आहिस्ता गाड़ी हांकता चला जाता था। खोजी उसे गालियां देने लगे–भला वे गीदी, भला, खबरदार जो आज से यह बेअदबी की। तू जानता नहीं, हम कौन हैं? हमारे मकान की तरफ से गाता हुआ निकलता है। हमें भी रियाआ समझ लिया है। भला बी शिताबजान गाड़ी की घड़घड़ाहट सुनेंगी तो उनके कानों को कितना नागवार लगेगा! गाड़ीवाला पहले तो घबराया कि यह माजरा क्या है। गाड़ी रोककर खोजी की तरफ घूरने लगा। मगर जब ख्वाजा साहब झपटकर गाड़ी के पास पहुंचे, और चाहा कि लकड़ी जमाएं कि इनके दोनों हाथ पकड़ लिए। अब आप सिटपिटा रहे हैं और वह छोड़ता ही नहीं।

खोजी–कह दिया, खैर इसी में है कि हमारा हाथ छोड़ दो, वर्ना बहुत पछताओगे। मैं जो बिगड़ूंगा तो एक पलटन के मनाए भी न मानूंगा।

गाड़ीवान–हाथ तो अब तुम्हारे छुड़ाए नहीं छूट सकता।

खोजी–लाना तो मेरी करौली।

गाड़ीवान–लाना तो मेरा ढाई तलेवाला चमरौधा।

खोजी–शरीफों में ऐसी बातें नहीं होतीं।

गाड़ीवान–शरीफ कभी तुम्हारे बाप भी थे कि तुम्हीं शरीफ हुए?

खोजी–अच्छा, हाथ छोड़ दो। वर्ना इतनी करौलियां भोंकूंगा कि उम्र भर याद करोगे।

गाड़ीवान ने इस पर झल्लाकर खोजी का हाथ मरोड़ना शुरू किया। खोजी की जान पर बन आई, मगर क्या करें। सबसे ज्यादा खयाल इस बात का था कि कहीं शिताबजान न देख लें, नहीं तो बिलकुल नजरों से गिर जाऊं।

खोजी–कहता हूं, हाथ छोड़ दे, मैं कोई ऐसा-वैसा आदमी नहीं हूं।

गाड़ीवान–मैं तो अपना गाता हुआ चला जाता था। आपने गालियां क्यों दीं?

खोजी–हमारे घर की तरफ से क्यों गाते जाते थे?

गाड़ीवान–आप मना करने वाले कौन? क्या किसी की जबान बंद कर दीजिएगा?

बारे कई आदमियों ने गाड़ीवान को समझाकर खोजी का हाथ छुड़ाया। खोजी झाड़-पोंछकर अंदर गए और शिताबजान से बोले–मैं बात पीछे करता हूं, करौली पहले भोंकता हूं। पाजी गाता हुआ जाता था। मैंने पकड़कर इतनी चपतें लगाईं कि भुरता ही बना दिया। मेरे मुंह से आग बरसती है। अच्छा, अब यह फर्माइए कि किस नेकबख्त बदनसीब से तुम्हारी शादी पहले हुई थी वह अब कहां है और कैसा आदमी था?

शिताबजान–यह तो मैं पीछे बलाऊंगी। पहले यह फर्माइए कि उसको नेकबख्त कहा तो बदनसीब क्यों कहा? जो नेकबख्त है वह बदनसीब कैसे हो सकता है?

खोजी–कसम खुदा की, मेरी बातें जवाहिरात में तौलने के काबिल है। नेकबख्त इसलिए कहा कि तुम जैसी बीबी पाई। बदनसीब इसलिए कहा कि या तो वह मर गया या तुमने उसे निकाल बाहर किया।

शिताबजान–अच्छा सुनिए, पहले मेरी शादी एक खूबसूरत जवान के साथ हुई थी। ज़िसकी नजर उस पर पड़ी, रीझ गया।

खोजी–यहां भी तो वही हाल है। घर से निकलना मुश्किल है।

शिताबजान–हाजिर-जवाब ऐसा था कि बात की बात में गजलें कह डालता था।

खोजी–यह बात मुझमें भी है। दस हजार शेर एक मिनट में कह दूं, एक कम न एक ज्यादा।

शिताबजान–मैं यह कब कहती हूं कि तुम उससे किसी बात में कम हो। अव्वल तो जवान गबरू, अभी मसें भींगती हैं। आदमी क्या, शेर मालूम होते हो। फिर सिपाही आदमी हो, उस पर शायर भी हो। बस जरा झल्ले हो, इतनी खराबी है।

खोजी–अगर मेरा हुक्म मानती हो तो मोम हो जाऊंगा। हां, लड़ोगी तो हमारा मिजाज बेशक झल्ला है।

शिताबजान–मियां, मैं लौंडी बनके रहूंगी। मुझसे लड़ाई-झगड़े से वास्ता? मगर यह बताओ कि रहोगे कहां? मैं बंबई में रहूंगी। तुम्हारे साथ मारी-मारी न फिरूंगी।

खोजी–तुम जहां रहोगी, वहीं मैं रहूंगा; मगर–

शिताबजान–अगर-मगर मैं कुछ नहीं जानती। एक तो तुमको अफीम न खाने दूंगी! तुमने अफीम खाई और मैंने किसी बहाने से जहर खिला दिया।

खोजी—अच्छा न खाएंगे। कुछ जरूरी है कि अफीम खाएं ही। न खाई, पी ली, चलो छुट्टी हुई।

शिताबजान—पीने भी न दूंगी। दूसरी शर्त यह है कि नौकरी जरूर करो, बगैर नौकरी के गुजारा नहीं। तीसरी शर्त यह है कि मेरे दोस्त और रिश्तेदार जो आते हैं, बदस्तूर आया करेंगे।

खोजी—वाह, कहीं आने न दूं। इन बदमाशों को फटकने न दूंगा।

शिताबजान—अच्छा तो कल मेरे घर चलो, वहीं हमारा निकाह होगा।

दूसरी दिन खोजी शिताबजान के साथ उसके घर चले। बंबई से कई स्टेशन के बाद शिताबजान गाड़ी से उतर पड़ीं और खोजी से कहा—अब आपके पास जितने रुपये-पैसे हों, चुपके से निकालकर रख दो। मेरे घर वाले बिना नजराना लिए शादी न करेंगे।

खोजी ने देखा कि यहां बुरे फंसे। अब अगर कहते हैं कि मेरे पास रुपये नहीं हैं तो हेठी होती है। उन्होंने समझा था कि शादी का दो घड़ी मजाक रहेगा, मगर अब जो देखा कि सचमुच शादी करनी पड़ेगी तो चौकन्ने हुए। बोले—मैं तो दिल्लगी करता था जी। शादी कैसी और ब्याह कैसा? कुछ ऊपर साठ बरस का तो मेरा सिन है, अब भला मैं शादी क्या करूंगा। तुम अभी जवान हो, तुमको सैकड़ों जवान मिल जाएंगे।

शिताबजान—तुमको इससे मतलब क्या। इसकी मुझे फिक्र होनी चाहिए। जब मेरा तुम पर दिल आया और तुम भी निकाह करने पर राजी हुए तो अब इनकार करना क्या माने। अच्छे हो तो मेरे, बुरे हो तो मेरे।

मियां खोजी घबराये, सिट्टी-पिट्टी भूल गयी। अपनी अक्ल पर बहुत पछताये और उसी वक्त आज़ाद के नाम यह खत लिखा—मेरे बड़े भाई साहब, सलाम। मेरी आंखों से अब गफलत का परदा उठ गया। मैं कुछ ऊपर साठ बरस का हूंगा। इस सिन में निकाह का खयाल सरासर गैरमुनासिब है। मगर शिताबजान मुझ पर बुरी तरह आशिक हो गयीं हैं। उसका सबब यह है कि जिस तरह मेरा जिस्म चोर है उसी तरह मेरी सूरत भी चोर है। मुझे कोई देखे तो समझे कि हड्डियां तक गल गयी हैं, मगर आप खूब जानते हैं कि इन्हीं हड्डियों के बल पर मैंने मिस्र के नामी पहलवान को लड़ा दिया और बुआ जाफरान जैसी देवनी की लातें सहीं। दूसरा होता, तो कचूमर निकल जाता। उसी तरह मेरी सूरत में भी यह बात है कि जो देखता है, आशिक हो जाता है। मैं खुद सोचता हूं कि यह क्या बात है, मगर कुछ समझ में नहीं आता। खैर, अब आपसे यह अर्ज है कि खत देखते ही मेरी मदद के लिए दौड़ो, वरना मौत का सामना है। सोचा था कि शादी न होगी तो लोग हंसेंगे कि आज़ाद तो दो-दो साथ लाये ख्वाजा साहब मोची के मोची रहे। लेकिन यह क्या मालूम था कि यह शादी मेरे लिए जहर होगी। जरा शर्तें तो सुनिए—अफीम छोड़ दो और नौकरी कर लो। अब बताइए कि अफीम छोड़ दूं तो जिंदा कैसे रहूं? अब रही नौकरी। यहां लड़कपन से फिकरेबाजों की सोहबत में रहे। गप्पें उड़ाना, बातें बनाना, अफीम की चुस्की लगाना हमारा काम है। भला इससे नौकरी क्या होगी, और करना भी चाहें तो किसकी नौकरी करें। सरकारी नौकरी तो मिलने से रही, वहां तो आदमी पचपन साल का हुआ और निकाला गया, और यहां पचपन और दस पैंसठ बरस के हैं। हम तो इसी काम के हैं कि किसी नवाबजादे की सोहबत में रहें और उसको ऐसा पक्का रईस बना

दें कि वह भी याद करे। चंडू का कवाम हमसे बनवा ले, अफीम ऐसी पिलायें कि उम्र भर याद करे, रहा यह कि हम जमाखर्च लिखें, यह हमसे न होगा, जिसको अपना काम गारत कराना हो वह हमें नौकर रखे। इसलिए अगर मेरा गला यहां से छुड़ा दो तो बड़ा एहसान हो। खुदा जाने, तुम लोग मुझे क्यों खाक में मिलाते हो, तुम्हारे साथ रूम गया, तुम्हारी तरफ से लड़ा-भिड़ा, वक्त-बेवक्त काम आया और अब तुम मुझे जबह किये देते हो।

यह खत लिखकर शिताबजान को दिया कि आज़ाद के पास जल्द पहुंचा दो। शादी के मामले में उनसे कुछ सलाह करनी है।

शिताबजान—सलाह की क्या जरूरत है भला?

खोजी—शादी-ब्याह कोई खाला जी का घर नहीं है, जरा आदमी को इस बारे में ऊंच-नीच सोच लेना चाहिए, मैंने सिर्फ यह पूछा है कि तुम्हारी शर्तें मंजूर करूं या नहीं।

शिताबजान—अच्छा जाओ, मैं कोई शर्त नहीं करती।

खोजी—अब मंजूर, दिल से मंजूर, मगर यह खत तो भेज दो।

अब सुनिए कि शिताबजान के साथ एक खां साहब भी थे। मालवे के रहनेवाले। उन्होंने खोजी को दो दिन में इतनी अफीम पिला दी जितनी वह चार दिन में भी न पीते। सफर में सेहत भी कुछ बिगड़ गयी थी। दो ही दिन में चुर्र-मुर्र हो गये। लेटे-लेटे खां साहब से बोले—जनाब, दूसरा इतनी अफीम पीता तो बोल जाता, क्या मजाल कि इस शहर में कोई मेरा मुकाबला कर सके, और इस शहर पर क्या मौकूफ है, जहां कहिए, मुकाबले के लिए तैयार हूं, कोई तोले भर पिये तो मैं सेर भर पी जाऊं।

खां साहब—मगर उस्ताद, आज कुछ अंजर-पंजर ढीले नजर आते हैं, शायद अफीम ज्यादा हो गयी।

खोजी—वाह, ऐसा कहीं कहिएगा भी नहीं। जब जी चाहे, साथ बैठकर पी लीजिए।

शाम तक खोजी की हालत और भी खराब हो गयी। शिताबजान ने उन्हें दिक करना शुरू किया। ऐ आग लगे तेरे सोने पर मरदुए, कब तक सोता रहेगा।

खोजी—सोने दो, सोने दो।

शिताब—भला खैर, हम तो समझे थे, खबर आ गयी।

खां—कहती किससे हो, वह पहुंचे खुदागंज।

शिताब—ऐ फिर पीनक आ गयी, अभी तो जिंदा हो गया था।

खां—(कान के पास जाकर) ख्वाजा साहब !

खोजी—जरा सोने दो भाई।

शिताब—मेरे यहां पीनकवालों का काम नहीं है।

खां—ख्वाजा साहब, अरे ख्वाजा साहब, ऐ बोलते ही नहीं ! चल बसे !

ख्वाजा साहब की हालत जब बहुत खराब हो गयी, तो एक हकीम साहब बुलाये गये। उन्होंने कहा—जहर का असर है। नुस्खा लिखा। बारे कुछ रात जाते-जाते नशा टूटा। खोजी की आंखें खुलीं।

शिताब—मैं तो समझी थी, तुम चल बसे।

खोजी—ऐसा न कहो भाई, जवानी की मौत बुरी होती है।

शिताब–मर मुड़ीकाटे, अभी जवान बना है !

खोजी–बस जबान संभालो, हम समझ गये कि तुम कोई भठियारी हो। मैं अगर अपने हालात बयान करूं तो आंखें खुल जायें। हम अमीर कबीर के लड़के हैं। लड़कपन में हमारे दरवाजे पर हाथी बंधता था, तुम जैसी भठियारियों को मैं क्या समझता हूं।

यह कहकर आप मारे गुस्से से घर के निकल खड़े हुए, समझते थे कि शिताबजान मुझ पर आशिक है ही, उससे भला कैसे रहा जायगा, जरूर मुझे तलाश करने आयेगी, लेकिन जब बहुत देर गुजर गयी और शिताबजान ने खबर न ली तो आप लौटे । देखा तो शिताबजान का कहीं पता नहीं, घर का कोना-कोना टटोला, मगर शिताबजान वहां कहां? उसी मुहल्ले में एक हबशिन रहती थी। खोजी ने जाकर उससे अपना सारा किस्सा कहा, तो वह हंसकर बोली–तुम भी कितने अहमक हो। शिताबजान भला कौन हैं? तुमको मिर्जा साहब और आज़ाद ने चकमा दिया है।

खोजी को आज़ाद की बेवफाई का बहुत मलाल हुआ। जिसके साथ इतने दिनों तक जान-जोखिम करके रहे, उसने हिन्दुस्तान में लाके उन्हें छोड़ दिया। खूब रोये, तब हबशिन से बातें करने लगे–

खोजी–किस्मत कहां से हमें कहां लायी?

हबशिन–आपका घोंसला किस झाड़ी में है?

खोजी–हम खोजिस्तान के रहने वाले हैं।

हबशिन–यह किस जगह का नाम लिया? खोजिस्तान तो किसी जगह का नाम नहीं मालूम होता।

खोजी–तो क्या सारी दुनिया तुम्हारी देखी हुई हैं? खोजिस्तान एक सूबा है, शाकरकंद और जिलेबिस्तान के करीब। बताशा नदी उसे सैराब करता है।

हबशिन–भला शकरकंद भी कोई देस है?

खोजी–है क्यों नहीं, समरकंद का छोटा भाई है।

हबशिन–वहां आप किस मुहल्ले में रहते थे?

खोजी–हलुवापुर में।

हबशिन–तब तो आप बड़े मीटे आदमी हैं।

खोजी–मीठे तो नहीं, हैं तो तीखे, नाक पर मक्खी नहीं बैठने देते, मगर मीठी नजर के आशिक हैं–

ख्वाहिश न कंद की है, न तालिब शकर के हैं;
चस्के पड़े हुए तेरी मीठी नजर के हैं।

हबशिन–तो आप भी मेरे आशिकों में हैं?

खोजी–आशिक कोई और होंगे, हम माशूकों के माशूक हैं। सारी दुनिया छान डाली, पर जहां गया, माशूकों के मारे नाक में दम हो गया। बुआ जाफरान नामी एक औरत हम पर इतनी रीझी कि पट्टे पकड़ के दे जूता दे जूता मारके उड़ा दिया। मगर हमारी बहादुरी देखो कि उफ तक न की।

हबशिन–हमको यकीन क्योंकर आये? हम तो जब जानें कि सिर झुकाओ और हम दो-चार लगायें, फिर देखें, कैसे नहीं उफ करते।

खोजी-हां, हम हाजिर हैं मगर आज अभी अफीम यों ही सी पी है। जब नशा जमे तब अलबत्ता आजमा लो।

हबशिन-ऐ है, फिर निगोड़ी अफीम का नाम लिया, मरते-मरते बचे और अब तक अफीम ही अफीम कहते जाते हो?

खोजी-तुम इसके मजे क्या जानो। अफीम खाना फकीरी है। गरूर को तो यह खाक में मिला देती है। मैं कितनी ही जगह पिटा, कभी जूतियां खायीं, कभी कोई कांजीहाउस ले गया, मगर हमने कभी जवाब न दिया।

हबशिन चली गयी तो खोजी साहब ने एक डोली मंगवायी और उसमें बैठकर चंडूखाने पहुंचे। लोगों ने इन्हें देखा तो चकराये कि यह नया पंछी कौन फंसा।

खोजी-सलाम आलेकुम भाइयो !

इमामी-आलेकुम भाई, आलेकुम। कहां से आना हुआ?

खोजी-जरा टिकने दो, फिर कहूं, दो बरस लड़ाई पर रहा, जब देखो मोरचाबंदी, मर मिटा, मगर नाम भी वह किया कि सारी दुनिया में मशहूर हो गया।

इमामी-लड़ाई कैसी? आजकल तो कहीं लड़ाई नहीं है।

खोजी-तुम घर में बैठे-बैठे दुनिया का क्या हाल जानो।

कादिर-क्या रूम-रूस की लड़ाई से आते हो क्या?

खोजी-खैर, इतना तो सुना।

इमामी-अजी, यह न कहिए, इनको सारी दुनिया का हाल मालूम रहता है। कोई बात इनसे छिपी थोड़ी है।

कादिर-रूम वाले ने रूस के बादशाह से कहा कि जिस तरह तुम्हारा चचा हकीमी कौड़ी देता था उसी तरह तुम भी दिया करो, मगर उसने न माना। इसी बात पर तकरार हुई, तो रूम वाले ने कहा, अच्छा, अपने चचा की कब्र में चलो और पूछ देखो, क्या आवाज आती है। बस जनाब, सुनने की बात है कि रूम वाले ने न माना। रूम के बादशाह के पास हजरत सुलेमान की अंगूठी थी। उन्होंने जो उसे हवा में उछाला, तो सैकड़ों जिन्न हाजिर हो गये। बादशाह ने कहा कि रूस में चारों तरफ आग लगा दो। चारों तरफ आग लग गयी। तब रूस के बादशाह ने वजीरों को जमा करके कहा, आग बुझाओ, बस सवा करोड़ भिश्ती मशकें भर-भरके दौड़े। एक-एक मशक में दो-दो लाख मन पानी आता था।

खोजी-क्यों साहब, यह आपसे किसने कहा है?

इमामी-अजी, यह न पूछो, इनसे फरिश्ते सब कह जाते हैं।

कादिर-बस साहब, सुनने की बातें हैं कि सवा दो करोड़ मशकें मुल्क के चारों कोनों पर पड़ती थीं, मगर आग बढ़ती ही जाती थी। तब बादशाह ने हुक्म दिया कि दो करोड़ लाख भिश्ती काम करें और मशकों में छब्बीस-छब्बीस करोड मन पानी हो।

खोजी-ओ गीदी, क्यों इतना झूठ बोलता है?

शुबराती-मियां, सुनने दो भाई, अजब आदमी हो।

खोजी-अजी, मैं तो सुनते-सुनते पागल हो गया।

कादिर-आप लखनऊ के महीन आदमी; उन मुल्कों का हाल क्या जानें। रूम,

रूस, तूरान, अनूपशहर का हाल हमसे सुनिए।

इमामी–वहां के लोग भी देव होते हैं देव।

कादिर–रूस के बादशाह की खुराक का हाल सुनो तो चकरा जाओ। सबेरे मुंह अंधेरे 6 बकरों की यखनी, चार बकरों के कवाब, दस मुर्ग का पोलाव और दस मुरैले तरकीब से खाते हैं, और 9 बजे के वक्त सौ मुर्गों का शोरबा और दस सेर ठंडा पानी, 12 बजे जवाहिरात का शरबत, कभी पचास मन, कभी साठ मन, 4 बजे दो कच्चे बकरे, दो कच्चे हिरन, शाम को शराब का एक पीपा और पहर रात गये गोश्त का एक छकड़ा।

इमामी–जभी तो ताकतें होती हैं कि सौ-सौ आदमियों को एक आदमी मार डालता है। हिन्दोस्तान का आदमी क्या खाकर लड़ेगा।

शुबराती–हिन्दोस्तान में अगर हाजमे की ताकत कुछ है तो चंडू के सबब से, नहीं तो सबके सब मर जाते।

इमामी–सुना, रूसवाले हाथी से अकेले लड़ जाते हैं।

कादिर–हमसे सुनो, दस हाथी हों और एक रूसी तो वह दसों को मार डालेगा।

खोजी–आप रूस कभी गए भी हैं?

क़ादिर–अजी हम घर बैठे सारी दुनिया की सैर कर रहे हैं।

खोजी–हम तो अभी लड़ाई के मैदान से आते हैं, वहां एक हाथी भी न देखा।

कादिर–रूमवालों ने जब आग लगा दी, तो वह ग्यारह बरस, ग्यारह महीने, ग्यारह दिन, ग्यारह घंटे जला की। अब जाके जरी-जरी आग बुझी है, नहीं तो अजब नक्शा था कि सारा मुल्क जल रहा है और पानी का छिड़काव हो रहा है। रूमवाले जब रात को सोते हैं तो हर मकान में दो देवों का पहरा रहता है।

खोजी–अरे यारो, इस झूठ पर खुदा की मार, हम बरसों रहे, एक देव भी न देखा।

कादिर–आपकी तो सूरत ही कहे देती है कि आप रूम जरूर गए होंगे। खुदा झूठ न बुलवाये तो घर के बाहर कदम नहीं रखा।

खोजी समझे थे कि चंडूखाने में चलकर अपने सफर का हाल बयान करेंगे और सबको बंद कर देंगे, चंडूखाने में इनकी तूती बोलने लगेगी, मगर यहां जो आये तो देखा कि उनके भी चचा मौजूद हैं। झल्लाकर पूछा...बतलाओ तो रूम के पायतख्त का क्या नाम है?

कादिर–वाह, इसमें क्या रखा है, भला-सा नाम तो है, हां मर्जबान।

खोजी–इस नाम का तो वहां कोई शहर ही नहीं।

कादिर–अजी तुम क्या जानो। मर्जवान वह शहर है जहा पहाड़ों पर परियां रहती हैं। वहां पहाड़ों पर बादल पानी पी-पीकर जाते हैं और सबको पानी पिलाते हैं।

खोजी–तो वह कोई दूसरा रूम होगा। जिस रूम से मैं आता हूं वह और है।

कादिर–अच्छा बताओ, रूम के बादशाह का क्या नाम है?

खोजी–सुलतान अब्दुलहमीद खां।

कादिर–बस बस, रहने दीजिए आप नहीं जानते, उस पर दावा यह है कि हम रूम से आते हैं। भला लड़ाई का क्या नतीजा हुआ, यही बताइए?

खोजी–पिलौना की लड़ाई में तुर्क हार गए और रूसियों ने फतह पाई।

कादिर–क्या बकता है बेहूदा। खबरदार जो ऐसा कहा होगा तो इतने जूते लगाऊंगा कि भुरकस ही निकल जाएगा।

इमामी–हमारे बादशाह के हक में बुरी बात निकालता है, बेअदब कहीं का। बच्चा, वहां ऐसी बातें करोगे तो पिट जाओगे।

खोजी–सुनो जी, हम फौजी आदमी हैं।

कादिर–अब ज्यादा बोलोगे तो उठकर कचूमर ही निकाल दूंगा।

शुबराती–यह हैं कहां के, जरा सूरत तो देखो, मालूम होता है, कब्र से निकल भागा है।

खोजी को सबने मिलकर ऐसा डपटा कि बेचारे करौली और तमंचा भूल गए। गये तो बड़े जोम में थे कि चंडूखाने में खूब डींग हांकेंगे, मगर वहां लेने के देने पड़ गए। चुपके से चंडू के छीटे उड़ाये । और लंबे हुए। रास्ते में क्या देखते हैं कि बहुत से आदमी एक जगह खड़े हैं; आपने घुसकर देखा तो एक पहलवान बीच में बैठा है और लोग खड़े उसकी तारीफों के पुल बांध रहे हैं। खोजी ने समझा कि हमने भी तो मिस्र के पहलवान को पटका था, हम क्या किसी से कम हैं? इस जोम में आपने पहलवान को ललकारा–भाई पहलवान, हम इस वक्त इतने खुश हैं कि फूले नहीं समाते। मुद्दत के बाद आज जोड़ीदार पाया।

पहलवान–तुम कहां के पहलवान हो भाई साहब?

खोजी–यार, क्या बताएं। अपने साथियों में कोई रहा ही नहीं। अब तो कोई पहलवान जंचता ही नहीं।

पहलवान–उस्ताद, कुछ हमको भी बताओ।

खोजी–अजी, तुम खुद उस्ताद हो।

पहलवान–आप किसके शागिर्द हैं?

खोजी–शागिर्द तो भाई, किसी के नहीं हुए। मगर हां, अच्छे-अच्छे उस्तादों ने लोहा मान लिया। हिन्दुस्तान से रूम तक और रूम से रूस तक सर कर आया। तुम आजकल कहां रहते हो?

पहलवान–आजकल एक नवाब साहब के यहां हैं। तीन रुपया रोज देते हैं। एक बकरा, आठ सेर दूध और दो सेर घी बंधा है। नवाब अमजदअली नाम है।

खोजी–भला वहां चंडू की भी चर्चा रहती है?

पहलवान–कुछ मत पूछिए भाई साहब, दिन-रात।

खोजी–भला वहां मस्तियाबेग भी हैं?

पहलवान–जी हां, हैं, आप कैसे जान गए?

खोजी–अजी, वह कौन-सा नवाब है जिसकी हमने मुसाहबी न की हो। नवाब अमजदअली के यहां बरसों रहा हूं। बटेरों का अब भी शौक़ है या नहीं?

पहलवान–अजी, अभी तक सफशिकन का मातम होता है।

खोजी–तुम्हारा कब तक जाने का इरादा है?

पहलवान–मैं तो आज ही जा रहा हूं।

खोजी–तो भाई, हमको भी जरूर लेते चलो। हम अपना किराया दे देंगे।

पहलवान–तो चलिए, मेरा इसमें हरज ही क्या है। हमको नवाब साहब ने सिर्फ दो दिन की छुट्टी दी थी। कल यहां दाखिल हुए, आज दंगल में कुश्ती निकाली और शाम को रेल पर चल देंगे। हमारे साथ मस्तियाबेग भी हैं।

शाम को पहलवान के साथ खोजी स्टेशन पर आए। पहलवान ने कहा–वह देखिए मिर्जा साहब खड़े हैं, जाकर मिल लीजिए। ख्वाजा आहिस्ता-आहिस्ता गए और पीछे से मिर्जा साहब की आंखें बंद कर लीं।

मिर्जा–कौन है भाई, कोई मुसम्मात हैं क्या? हाथ तो ऐसे ही मालूम होते हैं।

पहलवान–भला बूझ जाइए तो जानें।

मिर्जा–कुछ समझ में नहीं आता, मगर हैं कोई मुसम्मात।

खोजी–भला गीदी, भला, अभी से भूल गया, क्यों?

मिर्जा–अख्खाह, ख्वाजा साहब हैं। कहां भाई खोजी, अच्छे तो रहे?

खोजी–खोजी कहीं और रहते होंगे। अब हमें ख्वाजा साहब कहा करो।

मिर्जा–अरे कमबख्त, गले तो मिल ले।

खोजी–सरकार कैसे हैं, घर पर तो खैर-आफियत है?

मिर्जा–हां, सब खुदा का फजल है, बेगम साहब पर कुछ आसेब था मगर अब अच्छी हैं। कहो, तुमने तो खूब नाम पैदा किया।

खोजी–नाम, अरे हम मेजर थे।

मिर्जा–सरकार को इस लड़ाई के जमाने में अखबार से बड़ा शौक था। आज़ाद को तो सब जानते हैं, मगर तुम्हारा हाल जब से पढ़ा तब से सरकार को अखबारों का एतबार जाता रहा। कहते थे कि समुद्र की सूरत देखकर इसका जिगर क्यों न फट गया। भला इसे लड़ाई से क्या वास्ता।

खोजी–अब इसका हाल तो उन लोगों से पूछो जो मोरचों पर हमारे शरीक थे। तुम मजे से बैठे-बैठे मीठे टुकड़े उड़ाया किए, तुमको इन बातों से क्या सरोकार, मगर भाई, नशों में नशा शराब का। इधर डंके पर चोट पड़ी, उधर सिपाही कमर कसकर तैयार हो गए।

मिर्जा–अब सरकार के सामने न कहना, नहीं खड़े-खड़े निकाल दिए जाओगे।

खोजी–अजी, अब तो सरकार के बाप के निकाले भी नहीं निकल सकते।

मिर्जा–एक बार तो अखबार में लिखा था कि खोजी ने शादी कर ली है।

खोजी–अरे, यार, इसका हाल न पूछो, अपनी शक्ल-सूरत का हाल तो हमको बाहर जाकर मालूम हुआ। जिस शहर में निकल गए करोड़ों औरतें हम पर आशिक हो गईं। खासकर एक कमसिन नाजनीन ने तो मुझे कहीं का न रखा।

मिर्जा–तो आपकी सूरत पर सब औरतें जान देती थीं? क्या कहना है, तुमने बहादुरी के काम भी तो खूब किए।

खोजी–भाईजान, मोरचे पर मेरी बहादुरी देखते तो दंग हो जाते। खैर, उस परी पर मेरे सिवा पचास तुर्की अफसर भी आशिक थे। यह राय तय पाई कि जिससे वह परी राजी हो उससे निकाह करे। एक रोज सब बन-ठन कर आए, मगर उस शोख की नजर आपके खादिम ही पर पड़ती थी।

मिर्जा–ऐ क्यों नहीं, हजार जान से आशिक हो गई होगी।

खोजी–आव देखा न ताव, अठलाती हुई आई और मेरा हाथ अपने सीने पर रख लिया। अब सुनिए, उन सबों के दिल में हसद की आग भड़की, कहने लगे, यों हम न मानेंगे, जो उससे निकाह करे वह पहले पचासों आदमियों से लड़े। हमने कहा, खैर ! तलवार खींचकर जो चला, तो वह-वह चोटें लगाईं कि सबके सब बिलबिलाने लगे। बस परी हमको मिल गई। अब दरबार के रंग-ढंग बयान करो।

मिर्जा–सब तुम्हारी याद किया करते हैं। झम्मन ने वह चुगलखोरी पर कमर बांधी है कि सैकड़ों खिदमतगार और कितने ही मुसाहबों को मौकूफ करा दिया।

खोजी–एक ही पाजी आदमी है। हम रूम गए, फ्रांस गए, दुनिया के रईस देख डाले, मगर नवाब-सा भोला-भाला रईस न देखा। गजब खुदा का कि एक बदमाश ने जो कह दिया, उसका यकीन हो गया, अब कोई लाख समझाए, वह किसी की सुनते ही नहीं।

मिर्जा–मेरा तो अब वहां रहने को जी नहीं चाहता।

खोजी–अजी, इस झगड़े को चूल्हे में डालो। अब हम-तुम चल कर रंग जमाएंगे। तुम मेरी हवा बांधना और हम दोनों एक जान दो काबिल होकर रहेंगे।

मिर्जा–मैं कहूंगा, खुदावंद, अब यह सब मुसाहबों के सिरताज हुए, सारी दुनिया में हुजूर का नाम किया। मगर तुम जरा अपने को लिए रहना।

खोजी–अजी, मैं तो ऐसा बनूं कि लोग दंग हो जायं।

जब घंटी बजी और मुसाफिर चले तो खोजी भी पहलवान की तरह अकड़कर चलने लगे। रेल के दो-चार मुलाज़िमों ने उन पर आवाजें कसना शुरू किया।

एक–आदमी क्या गैंडा है, माशा-अल्लाह, क्या हाथ-पांव हैं।

दूसरा–क्यों साहब, आप कितने दंड पेल सकते हैं?

खोजी–अजी, बीमारी ने तोड़ दिया नहीं एक पूरी रेल पर लदके जाता था।

तीसरा–इसमें क्या शक है, एक-एक रान·दो-दो मन की हैं।

खोजी–कसम खाके अर्ज करता हूं कि अब आधा नहीं रहा ! यह पहलवान हमारे अखाड़े का खलीफा है, और बाकी सब शागिर्द हैं। सब मिलाके हमारे चालीस-बयालीस हजार शागिर्द होंगे।

एक मुसाफिर–दूर-दूर से लोग शागिर्दी करने आते होंगे?

खोजी–दूर-दूर से। अब आप मुलाहिजा फरमाएं कि हिन्दुस्तान से लेकर रूस तक मेरे लाखों शागिर्द हैं। मिस्र में ऐसा हुआ कि एक पहलवान की शामत आई, एक मेले में हमको टोक बैठा। टोकना था कि बंदा भी चट लंगोट कसके सामने आ खड़ा हुआ। लाखों ही आदमी थे। उसका सामने आना ही था कि मैं उसी दम जुट गया, दांव-पेंच होने लगे। उसके मिस्री दांव थे। हमारे हिन्दुस्तानी दांव थे। बस दम की दम में मैंने उठा के दे पटका।

इतने में दूसरी घंटी हुई। खोजी ऐसे बौखलाए कि जनाने दर्जे में धंस पड़े। वहां लेना-लेना का गुल मचा। भागे तो पहले दर्जे में घुस गए, वहां एक अंगरेज ने डांट बताई। बारे निकलकर तीसरे दर्जे में आए। थके-मांदे बहुत थे, सोए तो सारी रात कट गई। आंख

खुली तो लखनऊ आ गया। शाम के वक्त नवाब साहब के यहां दाखिल हुए।

खोजी–आदाब अर्ज है हुजूर !

नवाब–अख्खाह, खोजी हैं ! आओ भाई, आओ !

खोजी–हाजिर हूं, खुदावंद, खुदा का शुक्र है कि आपकी जियारत हुई।

गफूर–खोजी मियां, सलाम।

खोजी–सलाम भाई, सलाम, मगर हमको खोजी मियां न कहना, अब हम फौज के अफसर हैं।

झम्मन–आप बादशाह हों या वजीर, हमारे तो खोजी ही हो।

खोजी–हां, भाई, यह तो है ही। हुजूर के नमक की कसम, मुल्कों-मुल्कों इस दरबार का नाम किया।

नवाब–शाबाश ! हमने अखबारों में तुम्हारी बड़ी-बड़ी तारीफें पढ़ीं।

खोजी–हुजूर, गुलाम किस लायक है।

झम्मन–भला यार, तुम समुद्र में जहाज पर कैसे सवार हुए?

खोजी–वाह, तुम जहाज की लिए फिरते हो। यहां मोरचों पर बड़े-बड़े मेजरों और जनरलों से भिड़-भिड़ पड़े हैं। हुजूर, पिलौना की लड़ाई में कोई दस लाख आदमी एक तरफ थे और सत्तर सवारों के साथ गुलाम दूसरी तरफ था, फिर यह मुलाहिजा कीजिए कि चौदह दिन तक बराबर मुकाबिला किया और सबके छक्के छुड़ा दिए।

झम्मन–इतना झूठ, उधर दस-लाख, इधर सत्तर ! भला कोई बात है।

खोजी–तुम क्या जानो, वहां होते तो होश उड़ जाते।

नवाब–भाई, इसमें तो शक नहीं कि तुमने बड़ा नाम किया। खबरदार, आज से इनको कोई खोजी न कहे। पाशा के लकब से पुकारे जाएं।

खोजी–आदाब हुजूर ! झम्मन गीदी ने मुंह की खाई न आखिर। रईसों की सोहबत में ऐसे पाजियों का रहना मुनासिब नहीं।

नवाब–क्यों साहब, हिन्दुस्तान के बाहर भी हमको कोई जानता है? सच-सच बताना भाई !

खोजी–हुजूर, जहां-जहां गुलाम गया, हुजूर का नाम बादशाहों से ज्यादा मशहूर हो गया।

एक सौ चार

आज़ाद बंबई से चले तो सबसे पहले जीनत और अख्तर से मुलाकात करने की याद आई। उस कस्बे में पहुंचे तो एक जगह मियां खोजी की याद आ गई। आप ही आप हंसने लगे। इत्तिफाक से एक गाड़ी पर कुछ सवारियां चली जाती थीं। उनमें से एक ने हंसकर कहा–वाह रे भलेमानस, क्या दिमाग पर गरमी चढ़ गई है? आज़ाद रंगीन मिजाज आदमी तो थे ही। आहिस्ता से बोले–जब ऐसी-ऐसी प्यारी सूरतें नजर आएं तो आदमी

के होश-हवास क्योंकर ठिकाने रहें। इस पर वह नाजनीन तिनककर बोली—अरे, यह तो देखने ही को दीवाना मालूम होते थे, अपने मतलब के बड़े पक्के निकले। क्यों मियां यह क्या सूरत बनाई है, आधा तीतर है और आधा बटेर? खुदा ने तुमको वह चेहरा-मोहरा दिया है कि लाख-दो लाख में एक हो। अगर इस शक्ल-सूरत पर जो लंबे-लंबे बाल हों, बालों में सोलह रुपये वाला तेल पड़ा हो, बारीक शरबती का अंगरखा हो, जालीलोट के कुरते से गोरे-गोरे डंड नजर आएं, चुस्त घुटन्ना हो, पैरों में एक अशर्फी का टाटबाफी बूट हो, अंगरखे पर कामदनी की सदरी हो, सिर से पैर तक इत्र में बसे हो, मुसाहबों की टोली साथ हो, खिदमतगारों के हाथ में काबुकें और बटेरें हों और इस ठाट के साथ चौक में निकलो, तो अंगुलियां उठें कि वह रईस जा रहा है। तब लोग कहें कि इस सज-धज. नख-शिख, कल्ले-ठल्ले का गभरू जवान देखने में नहीं आया। यह सब छोड़ पट्टे कतरवा के लंडूरे हो गए, वाह री, आपकी अक्ल !

आज़ाद—जरा मैं तो जानूं कि किसकी जबान से यह बातें सुन रहा हूं। इंसान हम भी हैं, फिर इंसान से क्या पर्दा?

नाजनीन—अच्छा, तो आप भी इंसान होने का दम भरते हैं। मेंढकी भी चली मदारों को।

आज़ाद—खैर साहब, इंसान न सही।

नाजनीन—(पर्दा हटाकर) ऐ साहब लीजिए, बस अब तो चार आंखें हुईं, अब कलेजे में ठंडक पहुंची?

आज़ाद ने देखा तो सोचने लगे कि यह सूरत तो कहीं देखी है ! अब ख्याल आता है कि आवाज भी कहीं सुनी है। मगर इस वक्त याद नहीं आता कि कहां देखा था।

नाजनीन—पहचाना? भला आप क्यों पहचानने लगे? रुतबा पाकर कौन किसे पहचानता है?

आज़ाद—इतना तो याद आता है कि कहीं देखा है, पर यह खयाल नहीं कि कहां देखा है।

नाजनीन—अच्छा, एक पता देते हैं, अब भी न समझो तो खुदा तुमसे समझे। याद है; किसने यह गजल गाई थी?—

कोई मुझ सा दीवाना पैदा न होगा,
हुआ भी तो फिर ऐसा रुसवा न होगा।
न देखा हो जिसने कहे उसके आगे,
हमें लंतरानी सुनाना न होगा।

आज़ाद—अब समझ गया ! जहूरन, वहां की खैर-आफियत बयान करो। उन्हीं दोनों बहनों से मिलने के लिए बंबई से चला आ रहा हूं।

जहूरन—सब खुदा का फजल है। दोनों बहनें आराम से हैं, अख्तर के मियां तो उनका जेवर खा-पीकर भाग गए, अब उन्होंने दूसरी शादी कर ली है। जीनत बेगम खुश हैं।

आज़ाद—तो अब हम उनके मैके जाएं या ससुराल?

जहूरन—ससुराल न जाइए. मैके में चलिए और वहां से किसी महरी से जबानी

पैगाम भेजिए। हमने तो हुजूर को देखते ही पहचान लिया।

आज़ाद–हमको इन दोनों बहिनों का हाल बहुत दिनों से नहीं मालूम हुआ।

जहूरन–यह तो हुजूर, आप ही का कुसूर है; कभी आपने एक पुरजा तक न भेजा। जिस दिन जीनत बेगम के मियां ने उनसे कहा कि लो, आज़ाद वापस आते हैं तो मारे खुशी के खिल उठीं। तो अब आना हो तो आइए, शाम होती है।

थोड़ी देर में आज़ाद जीनत बेगम के मकान पर जा पहुंचे। जहूरन ने जाकर उनकी चाची से आज़ाद के आने की इत्तिला की। उसने आज़ाद को फौरन बुला लिया।

आज़ाद–बंदगी अर्ज करता हूं। आप तो इतने ही दिनों में बूढ़ी हो गईं।

चाची–बेटा, अब हमारे जवानी के दिन थोड़े ही हैं। तुम तो खैर-आफियत के साथ आए? आंखें तुम्हें देखने का तरस गईं।

आज़ाद–जी हा, मैं खैरियत से आ गया। दोनों साहबजादियों को बुलाइए। सुना, जीनत की भी शादी हो गई है।

चाची–हां, अब तो दोनों बहनें आराम से हैं। अख्तरी का पहला मियां तो बिलकुल नालायक निकला। जेवर, गहना-पाता, सब बेचकर खा गया और खुदा जाने, किधर निकल गया। अब दूसरी शादी हुई है। डॉक्टर हैं। साठ रुपया तनख्वाह है और ऊपर से कोई चार रुपया रोज मिलता है। जीनत के मियां स्कूल में पढ़ाते हैं। दो सौ की तलब है। तुम्हारे चाचाजान तो मुझे छोड़कर चल दिए।

इधर महरी ने जाकर दोनों बहनों को आज़ाद के आने की खबर की। जीनत ने अपनी आया को साथ लिया और मैके की तरफ चली। घर के अंदर कदम रखते ही आज़ाद से हाथ मिलाकर बोली–वाह रे बेमुरव्वतों के बादशाह ! क्यों साहब, जब से गए, एक पुरजा तक भेजने की कसम खा ली?

आज़ाद–यह तो न कहोगी कि सबसे पहले तुम्हारे दरवाजे पर आया। यह तो फर्माइए कि यह पोशाक कब से अख्तियार की?

जीनत–जब से शादी हुई। उन्हें अंग्रेजी पोशाक बहुत पसंद है।

आज़ाद–जीनत, खुदा गवाह है कि इस वक्त जामे में फूला नहीं समाता। एक तो तुमको देखा और दूसरे यह खुशखबरी सुनी कि तुम्हारे मियां पढ़े-लिखे आदमी हैं और तुम्हें प्यार करते हैं। मियां-बीबी में मुहब्बत न हो तो जिंदगी का लुत्फ ही क्या।

इतने में अख्तरी भी आ गई और आते ही कहा–मुबारक !

आज़ाद–आपको बड़ी तकलीफ हुई, मुआफ करना।

अख्तर–मैंने तो सुना था कि तुमने वहां किसी साईसिन से शादी कर ली।

आज़ाद–और तुम्हें इसका यकीन भी आ गया?

अख्तर–यकीन क्यों न आता। मर्दों के लिए यह कोई नयी बात थोड़ी ही है। जब लोग एक छोड़, चार-चार शादियां करते हैं तो यकीन क्यों न आता।

आज़ाद–वह पाजी है जो एक के सिवा दूसरी का खयाल भी दिल में लाए।

जीनत–ऐसे मियां-बीबी का क्या कहना, मगर यहां तो वही पाजी नजर आते हैं जो बीबी के होते भी उसकी परवाह नहीं करते।

आज़ाद–अगर बीबी समझदार हो तो मियां कभी उसके काबू से बाहर न हो।

अख्तर–यह तो हम मान चुके। खुदा न करे कि किसी भलेमानस का पाला शोहदे मियां से पड़े।

जीनत–जिसके मिजाज में पाजीपन हो उससे बीबी की कभी न पटेगी। मियां सुबह से जाएं तो रात के एक बजे घर में आएं और वह भी किसी रोज आएं, किसी रोज न आए। बीबी बेचारी बैठी उनकी राह देख रही है। बाज तो ऐसे बेरहम होते हैं कि बात हुई और बीबी को मार बैठे।

आज़ाद–यह तो धुनिया जुलाहों की बातें हैं।

जीनत–नहीं जनाब, जो लोग शरीफ कहलाते हैं उनमें भी ऐसे मर्दों की कमी नहीं है।

अख्तर–ऐ चूल्हे में जाएं ऐसे मर्द, जभी तो बेचारियां कुएं में कूद पड़ती हैं जहर खाके सो रहती हैं।

जीनत–मुझे खूब याद है कि एक औरत अपने मियां को जरा-सी बात पर हाथ फैला-फैला कोस रही थी कि कोई दुश्मन को भी न कोसेगा।

आज़ाद–जहां ऐसे मर्द हैं वहां ऐसी औरतें भी हैं।

अख्तर–ऐसी बीबी का मुंह लेके झुलस दे।

जीनत–मेरे तो बदन के रोएं खड़े हो गए।

आज़ाद–मेरी तो समझ ही में नहीं आता कि ऐसे मियां और बीबी में मेल-जोल कैसे हो जाता है।

इस तरह बातें करते-करते यूरोपियन लेडियों की बात चल पड़ी। जीनत और अख्तर ने हिन्दोस्तानी औरतों की तरफदारी की और आज़ाद ने यूरोपियन लेडियों की।

आज़ाद–जो आराम यूरोप की औरतों को हासिल है वह यहां की औरतों को कहां नसीब। धूप में अगर मियां-बीबी साथ चलते हों तो मियां छतरी लगाएगा।

अख्तर–यहां भी महाजनों को देखो। औरतें दस-दस हजार का जेवर पहन कर निकलती हैं और मियां लंगोटा लगाए दुकान पर मक्खियां मारा करते हैं।

आज़ाद–यहां की औरतों को तालीम से चिढ़ है।

जीनत–इसका इलजाम भी मर्दों ही की गर्दन पर है। वह खुद औरतों को पढ़ाते डरते हैं कि कहीं ये उनकी बराबरी न करने लगें।

आज़ाद–हमारे मकान के पास महाजन रहते थे। मैं लड़कपन में उनके घर खेलने जाया करता था। जैसे ही मियां बाहर से आते, बीबी चारपाई से उतरकर जमीन पर बैठ जाती। अगर तुमसे कोई कहे कि मियां के सामने घूंघट करके जाओ तो मंजूर करो या नहीं?

अख्तर–वाह, यहां तो घर में कैद न रहा जाए, घूंघट कैसा !

आज़ाद–योरोपियन लेडियों को घर के इंतजाम का जो सलीका होता है, वह हमारी औरतों को कहां !

जीनत–हिन्दोस्तानी औरतों में जितनी वफा होती है वह यूरोपियन लेडियों में तलाश करने से भी न मिलेगी। यहां एक के पीछे सती हो जाती हैं, वहां मर्द के मरते ही दूसरी शादी कर लेती हैं।

एक सौ पांच

वहां दो दिन और रहकर आज़ाद दोनों लेडियों के साथ लखनऊ पहुंचे और उन्हें होटल में छोड़कर नवाब साहब के मकान पर आए। इधर वह गाड़ी से उतरे, उधर खिदमतगारों ने गुल मचाया कि खुदावंद, मुहम्मद आज़ाद पाशा आ गए। नवाब साहब मुसाहबों के साथ उठ खड़े हुए तो देखा कि आज़ाद रप-रप करते हुए तुर्की वर्दी डाटे चले आते हैं। नवाब साहब झपटकर उनके गले लिपट गए और बोले–भाईजान, आंखें तुम्हें ढूंढ़ती थीं।

आज़ाद–शुक्र है कि आपकी जियारत नसीब हुई।

नवाब–अजी, अब यह बातें न करो, बड़े-बड़े अंग्रेज हुक्काम तुमसे मिलना चाहते हैं।

मुसाहब–बड़ा नाम किया। वल्लाह, करोड़ों आदमी एक तरफ और हुजूर एक तरफ।

खोजी–गुलाम भी आदाब अर्ज करता है।

आज़ाद–तुम यहां कब आ गए ख्वाजा साहब?

नवाब–सुना, आपने तीन-तीन करोड़ आदमियों से अकेले मुकाबिला किया !

गफूर–अल्लाह की देन है हुजूर !

नवाब–अरे भाई, गंगा-जमुनी हुक्का भर लाओ आपके वास्ते, आज़ाद पाशा को ऐसा-वैसा न समझना। इनकी तारीफ कमिश्नर तक की जबान से सुनी। सुना, आपसे रूस के बादशाह से भी मुलाकात हुई। भाई, तुमने वह दर्जा हासिल किया है कि हम अगर हुजूर कहें तो बजा है। कहां रूस के बादशाह और कहां हम।

खोजी–खुदावंद, मोरचे पर इनको देखते तो दंग रह जाते। जैसे शेर कछार में डकारता है।

नवाब–क्यों भाई आज़ाद, इन्होंने वहां कोई कुश्ती निकाली थी?

आज़ाद–मेरे सामने तो सैकड़ों ही बार चपतियाए गए और एक बौने तक ने इनको उठा के दे मारा।

मुसाहब–भाई, इस वक्त तो भंभाड़ा फूट गया।

आज़ाद–क्या यह गप उड़ाते थे कि मैंने कुश्तियां निकालीं?

मस्तियाबेग–ऐ हुजूर; जब से आए हैं, नाक में दम कर दिया। बात हुई और करौली निकाली।

गफूर–परसों तो कहते थे कि मिस्र में हमने आज़ाद के बराबर के पहलवान को दम भर में आसमान दिखा दिया।

आज़ाद–क्या खूब ! एक बौने तक ने तो उठाके दे मारा, चले वहां से दून की लेने।

इतने में नवाब साहब के यहां एक मुंशी साहब आए और आज़ाद को देखकर बोले–वल्लाह, आज़ाद पाशा साहब हैं, आपने तो बड़ा नाम पैदा किया है, सुभान-अल्लाह!

नवाब–अजी, कमिश्नर साहब इनकी तारीफ करते हैं। इससे ज्यादा इज्जत और क्या होगी।

खोजी–साहब, लड़ाई के मैदान में कोई इनके सामने ठहरता ही न था।

मुंशी–आपने भी बड़ा साथ दिया ख्वाजा साहब, मगर आपकी बहादुरी का जिक्र कहीं सुनने में नहीं आया।

खोजी–आप ऐसे गीदियों को मैं क्या समझता हूं, मैंने वह-वह काम किए हैं कि कोई क्या करेगा। करौली हाथ में ली और सफों की सफें साफ कर दीं।

मुंशी–आप तो नवाब साहब के यहां बने हैं न?

खोजी–बने होंगे आप, बनना कैसा ! क्या मैं कोई चरकटा हूं। कसम है हुजूर के कदमों की, सारी दुनिया छान डाली, मगर आज तक ऐसा बदतमीज देखने में नहीं आया।

आज़ाद–जनाब ख्वाजा साहब ने जो बातें देखी हैं वह औरों को कहां नसीब हुई। आप जिस जगह जाते थे वहां की सारी औरतें आपका दम भरने लगती थीं। सबसे पहले बुआ जाफरान आशिक हुईं।

खोजी–तो फिर आपको बुरा क्यों लगता है? आप क्यों जलते हैं?

नवाब–भई आज़ाद, यह किस्सा जरूर बयान करो। अगर आपने इसे छिपा रखा तो वल्लाह, मुझे बड़ा रंज होगा। अब फर्माइए, आपको मेरा ज्यादा खयाल है या इस गीदी का?

खोजी–हुजूर, मुझसे सुनिए। जिस रोज आज़ाद पाशा और हम पिलौना के किले में थे, उस रोज की कार्रवाई देखने के लायक थी। किला पांचों तरफ से घिरा हुआ था।

मुसाहब–यह पांचवां कौन तरफ है साहब? यह नयी तरफ कहां से लाए? जो बात कहोगे वही अनोखी।

खोजी–तुम हो गधे, किसी ने बात की और तुमने काट दी, यों नहीं वों, वों नहीं यों। एक तरफ दरिया था और खुश्की भी थी। अब हुई पांच तरफें या नहीं, मगर तुम ऐसे गौखों को हाल क्या मालूम। कभी लड़ाई पर गए हो? कभी तोप की सूरत देखी है? कभी धुआं तक तो देखा न होगा और चले हैं वहां से बड़े सिपाही बनकर ! तो बस, जनाब, अब करें तो क्या करें। हाथ-पांव फूले हुए कि अब जाएं तो किधर जाएं और भागें तो किधर भागें।

नवाब–सचमुच वक्त बड़ा नाजुक था।

खोजी–और रूसियों की यह कैफियत कि गोले बरसा रहे थे। बस आज़ाद पाशा ने मुझसे कहा कि भाईजान, अब क्या सोचते हो, मरोगे या निकल जाओगे ! मेरे बदन में आग लग गई, बोला, निकलना किसे कहते हैं जी ! इतने में किले की दीवारें चलनी हो गईं। जब मैंने देखा कि अब फौज के बचने की कोई उम्मीद नहीं रही, तो तलवार हाथ में ली और अपने अरबी घोड़े पर बैठकर निकल पड़ा और उसी वक्त दो लाख रूसियों को काट कर रख दिया।

मुसाहब–इस झूठ पर खुदा की मार।

खोजी–अच्छा, आज़ाद से पूछिए, बैठे तो हैं सामने।

नवाब–हजरत, सच-सच कहिएगा। बस फकत इतना बता दीजिए, यह बात कहां तक सच है?

आज़ाद–जनाब, पिलौना का जो कुछ हाल बयान किया वह तो सब ठीक है, मगर

दो लाख आदमियों का सिर काट लेना महज गप है। लुत्फ यह है कि पिलौना की तो इन्होंने सूरत भी न देखी। उन दिनों तो यह खास कुस्तुनतुनियां में थे।

इस पर बड़े जोर का कहकहा पड़ा। बेगम साहबा ने कहकहे की आवाज सुनी तो महरी से कहा—जा देख, यह कैसी हंसी हो रही है।

महरी—हुजूर, वह आए हैं मियां आज़ाद, वह गोरे-गोरे से आदमी, बस वही हंसी हो रही है।

बेगम—अख्खाह, आज़ाद आ गए, जाके खैर-आफियत तो पूछ ! हमारी तरफ से न पूछना ! वहां कहीं ऐसी बात न करना।

महरी—वाह हुजूर, कोई दीवानी हूं क्या? सुनती हूं उस मुल्क में बड़ा नाम किया। तुमने कभी तोप देखी है गफूरन?

गफूरन—ऐ खुदा न करे हुजूर !

महरी—हमने तो तोप देखी है, बल्कि रोज ही देखती हूं।

बेगम—तोप देखी है ! तुम्हारे मियां सवारों के साईस होंगे; तोप नहीं वह देखी है।

महरी—हुजूर, यह सामने तोप ही लगी है या कुछ और?

महल में रहीमन नाम कि एक महरी और सबों से मोटी-ताजी थी। महरी ने जो उसकी तरफ इशारा किया तो बेगम साहबा खिल-खिलाकर हंस पड़ीं।

रहीमन—क्या पड़ा पाया है बहन गफूरन?

गफूरन—आज एक नयी बात देखने में आई है बहन !

रहीमन—हमको भी दिखाओ। देखें कोई मिठाई है या खिलौना है?

गफूरन—तोप की तोप और औरत की औरत।

रहीमन—(बात समझकर) तुम्हीं लोगों ने तो मिलकर हमें नजर लगा दी।

बेगम—ऐ आग लगे, अब और क्या मोटी होती, फूलके कुप्पा तो हो गई है।

उधर खोजी ने देखा कि यार लोग रंग नहीं जमने देते तो मौका पाकर आज़ाद के कदमों पर टोपी रख दी और कहा—भाई आज़ाद, बरसों तुम्हारा साथ दिया है, तुम्हारे लिए जान तक देने को तैयार रहा हूं। मेरी दो-दो बातें सुन लो।

आज़ाद—मैं आपका मतलब समझ गया, मगर कहां तक जब्त करूं?

खोजी—इस दरबार में मेरे जलील करने से अगर आपको कुछ मिले तो आपको अख्तियार है।

आज़ाद—जनाब, आप मेरे बुजुर्ग हैं, भला मैं आपको जलील करूंगा?

खोजी—हाय, अफसोस, तुम्हारे लिए जान लड़ा दी और अब इस दरबार में, जहां रोटियों का सहारा है, आप हमको उल्लू बनाते हैं, जिसमें रोटियों से भी जाएं।

आज़ाद—भई, माफ करना, अब तुम्हारी ही सी कहेंगे।

खोजी—मुझे रंग तो बांधने दो जरा।

आज़ाद—आप रंग जमाएं, मैं आपकी ताईद करूंगा।

ख्वाजा साहब का चेहरा खिल गया कि अब गप के पुल बांध दूंगा और जब आज़ाद मेरा कलमा पढ़ने लगेंगे तो फिर क्या पूछना।

नवाब—ख्वाजा साहब, यह क्या बातें हो रही हैं, हमसे छिप-छिप कर?

खोजी–खुदावंद, एक मामले पर बहस हो रही थी।

नवाब–कैसी बहस, किस मामले पर?

खोजी–हुजूर, मेरी राय है कि इस मुल्क में भी नहरें जारी होनी चाहिए और आज़ाद पाशा की राय है कि नहरों से आबपाशी तो होगी मगर मुल्क की आबोहवा खराब हो जाएगी।

मस्तियाबेग–अख्खाह, तो यह कहिए कि आप शहर के अंदेशे में दुबले हैं !

खोजी–तुम गौखे हो, यह बातें क्या जानो। पहले यह तो बताओ कि एक बाट्री में कितनी तोपें होती हैं? चले वहां से सुकरात की दुम बनके।

नवाब–खोजी है तो सीड़ी, मगर बातें कभी-कभी ठिकाने की करता है।

आज़ाद–इन बातों का तो इन्हें अच्छा तजरबा है।

गफूर–हुजूर, इनको बड़ी-बड़ी बातें मालूम हुई हैं।

आज़ाद–साहब, सफर भी तो इतना दूर-दराज का किया था ! कहां हिन्दोस्तान, कहां रूम ! ख्याल तो कीजिए।

मीर साहब–क्यों ख्वाजा साहब, पहाड़ तो आपने बहुत देखे होंगे?

खोजी–एक-दो नहीं, करोड़ों, आसमान से बातें करने वाले।

नवाब–भला आसमान वहां से कितनी दूर रह जाता है?

खोजी–हुजूर, बस एक दिन की राह। मगर जीना कहां?

नवाब–और क्यों साहब, वहां से तो खूब मालूम होता होगा कि मेंह किस जगह से आता है?

खोजी–जनाब, पहाड़ की चोटी पर मैं था और मेंह नीचे बरस रहा था।

नवाब–क्यों साहब, यह सच है? अजीब बात है भाई !

आज़ाद–जी हां, यह तो होता ही है, पहाड़ पर से नीचे मेंह का बरसना साफ दिखाई देता है।

मस्तियाबेग–और जो यह मशहूर है कि बादल तालाबों से पानी पीते हैं?

खोजी–यह तुम जैसे गधों में मशहूर होगा।

नवाब–भई, यह तजरबेकार लोग हैं, जो बयान करें वह सही है।

खोजी–हुजूर ने दरिया डेन्यूब का नाम तो सुना ही होगा। इतना बड़ा दरिया है कि उसके आगे समुद्र भी कोई चीज नहीं। इतना बड़ा दरिया और एक रईस के दीवानखाने के हाते से निकला है।

मीर साहब–ऐं, हमें तो यकीन नहीं आता।

खोजी–आप लोग कुएं के मेंढक हैं।

नवाब–मकान के हाते से ! जैसे हमारे मकान का यह हाता?

खोजी–बल्कि इससे भी छोटा। हुजूर, खुदा की खुदाई है, इसमें बंदे की क्या दखल। और खुदावंद हमने इस्तम्बोल में एक अजायबखाना देखा।

मीर साहब–तुमको तो किसी ने धोखे में बंद नहीं कर दिया।

खोजी–बस, इन जांगलुओं को और कुछ नहीं आता !

नवाब–अजी, तुम अपना मतलब कहो, उस अजायबखाने में कोई नयी बात थी?

खोजी—हुजूर, एक तो हमने भैंसा देखा। भैंसा क्या, हाथी का पाठा था और नाक के ऊपर एक सींग। इत्तिफाक से जिस मकान में वह बंद था उसकी तीन छड़ें टूट गई थीं। उसे रास्ता मिला तो सिमट-सिमट कर निकला। जनाब, कुछ न पूछिए, दो हजार आदमी गड़-बड़ एक के ऊपर एक इस तरह गिरे के बेहोश। कोई चार-पांच सौ आदमी जख्मी हुए। मैंने यह कैफियत देखी तो सोचा, अगर तुम भी भागते हो तो हंसी होगी। लोग कहेंगे कि यह फौज में क्या करते थे। जरा से भैंसे को देखकर डर गए। बस एक बार झपट के जो जाता हूं तो गर्दन हाथ आई, बस बाएं हाथ से गरदन दबाई और दबोच के बैठ गया, फिर लाख-लाख जोर उसने मारे, मगर मैंने हुमसने न दिया। जरा गर्दन हिलाई और मैंने दबोचा। जितने आदमी खड़े थे सब दंग रह हो गए कि वाह रे पहलवान ! आखिर जब मैंने देखा कि उसका दम टूटा गया तो गर्दन छोड़ दी। फिर उसने बहुत चाहा कि उठे, मगर हुमस न सका। मुझसे लोग मिन्नतें करने लगे कि उसे कठघरे में डाल दो, ऐसा न हो कि बफरे तो सितम ही कर डाले। इस पर मैंने उसे एक थप्पड़ जो लगाया तो चौंधियाकर तड़ से गिरा।

मस्तियाबेग—इसके क्या मतलब? आपके खौफ के मारे लेटा तो था ही, फिर लेटे-लेटे क्यों गिर पड़ा?

खोजी—वाही हो। बस, हुजूर, मैंने कान पकड़ा तो इस तरह साथ हो लिया जैसे बकरी। उसी कठघरे में फिर बंद कर दिया।

नवाब—क्यों साहब, यह किस्सा सच है?

आज़ाद—मैं उस वक्त मौजूद न था, शायद सच हो।

मीर साहब—बस-बस, कलई खुल गई, गजब खुदा का, झूठ भी तो कितना ! इस वक्त जी चाहता है, उठके ऐसा गुद्दा दूं कि दस गज जमीन में धंस जाए।

खोजी—कसम है खुदा की, जो अब की कोई बात मुंह से निकली तो इतनी करौलियां भोंकूंगा कि उम्र भर याद करेगा। तू अपने दिल में समझा क्या है ! यह सूखी हड्डियां लोहे की हैं।

नवाब—इतने बड़े जानवर से इनसान क्या मुकाबला कर सकता है?

आज़ाद—हुजूर, बात यह है कि बाज आदमियों को यह कुदरत होती है कि इधर जानवर को देखा, उधर उसकी गर्दन पकड़ी। ख्वाजा साहब को भी यह तरकीब मालूम है।

नवाब—बस, हमको यकीन आ गया।

मस्तियाबेग—हां, खुदावंद, शायद ऐसा ही हो !

मुसाहब—जब हुजूर की समझ में एक बात आ गई तो आप किस खेत की मूली हैं।

मीर साहब—और जब एक बात की लिम भी दरियाफ्त हो गई तो फिर उसमें इनकार करने की क्या जरूरत?

नवाब—क्यों साहब, लड़ाई में तो आपने खूब नाम पैदा किया है, बताइए कि आपके हाथ से कितने आदमियों का खून हुआ होगा?

खोजी—गुलाम से पूछिए, इन्होंने कुल मिलाकर दो करोड़ आदमियों को मारा होगा।

नवाब—दो करोड़ !

खोजी-जभी तो रूम और शाम, तूरान और मुलतान, आस्ट्रिया और इंगलिस्तान, जर्मनी और फ्रांस में इनका नाम हुआ है।

नवाब-ओफ्फोह, खोजी को इतने मुल्कों के नाम याद हैं।

आज़ाद-हुजूर, अब इन्हें वह खोजी न समझिए।

खोजी-खुदावंद, मैंने एक दरिया पर अकेले एक हजार आदमियों का मुकाबिला किया।

नवाब-भाई, मुझे तो यकीन नहीं आता।

मस्यािबेग-हुजूर, तीन हिस्से झूठ और एक हिस्सा सच।

मीर साहब-हम तो कहते हैं, सब डींग है।

आज़ाद-नवाब साहब, इस बात की तो, हम भी गवाही देते हैं। इस लड़ाई में मैं शरीक न था, मगर मैंने कई अखबार में इनकी तारीफ देखी थी और वह अखबार मेरे पास मौजूद है।

नवाब-तो अब हमको यकीन आ गया, जनरल आज़ाद ने गवाही दी तो फिर सही है।

खोजी-वह मौका ही ऐसा था।

आज़ाद-नहीं-नहीं भाई, तुमने वह काम किया कि बड़े-बड़े जनरलों ने दांतों अंगुली दबाई। वहीं तो सफशिकन भी तुम्हें नजर आए थे?

खोजी-हुजूर, यह कहना तो मैं भूल ही गया। जिस वक्त मैं दुश्मनों का सुथराव कर रहा था, उसी वक्त सफशिकन को एक दरख्त पर बैठे देखा।

नवाब-लो साहबो, सुनो, मेरे सफशिकन रूम की फौज में भी जा पहुंचे।

मुसाहब-सुभान-अल्लाह ! वाह रे ! सफशिकन बहादुर हो तो ऐसा हो।

खोजी-खुदावंद, इस डांट-डपट का बटेर भी कम देखा होगा।

नवाब-देखा ही नहीं, कम कैसा? अरे मियां गफूर, जरा घर में इत्तिला करो कि सफशिकन खैरियत से हैं।

गफूर ड्योढ़ी पर आया। वहां खिदमतगार, दरबान, चपरासी सब नवाब की सादगी पर खिलखिलाकर हंस रहे थे।

खिदमतगार-ऐसा उल्लू का पट्ठा भी कहीं नहीं देखा होगा।

गफूर-निरा पागल है, वल्लाह निरा पागल।

चपरासी-अभी देखिए, तो क्या-क्या किस्से गढ़े जाते हैं।

महरी ने यह खबर बेगम साहबा को दी तो उन्होंने कहकहा लगाया और कहा-इन पाजियों ने नवाब को अंगुलियों पर नचाना शुरू किया। जाके कह दो कि जरी खड़े-खड़े बुलाती हैं।

नवाब साहब उठे, मगर उठते ही फिर बैठ गए और कहा-भाई, जाने को तो मैं जाता हूं, मगर कहीं उन्होंने मुफस्सल हाल पूछा तो?

आज़ाद-ख्वाजा साहब से उनका हाल पूछिए, इन्हें खूब मालूम है।

खोजी-साथ तो सच पूछिए तो मेरा ही उनका बहुत रहा। इनके अंग्रेजी लिबास से चकराते थे।

नवाब–भला किसी मोरचे पर गए थे या नहीं, या दूर ही से दुआ दिया किए?

खोजी–खुदावंद गुलाम जो अर्ज करेगा, किसी को यकीन न आएगा, इस पर मैं झल्लाऊंगा और मुफ्त ठांय-ठांय होगी।

नवाब–क्या मजाल, खुदा की कसम, अब तुम मेरे खास मुसाहब हो, तुमने जो तजर्बा हासिल किया है वह औरों को कहां नसीब। तुम्हारा कौन मुकाबिला कर सकता है।

खोजी–यह हुजूर के इकबाल का असर है, वर्ना मैं तो किसी शुमार में न था। बात यह हुई कि गुलाम एक नदी के किनारे अफीम घोल रहा था कि जिस दरख्त की तरफ नजर डालता हूं रोशनी छाई हुई है। घबराया कि या खुदा, यह क्या माजरा है, इसी फिक्र में पड़ा था कि हुजूर सफशिकन न जाने किधर से आकर मेरे हाथ पर बैठ गए।

नवाब–खुदा का शुक्र है, तुम तो बड़े खुश हुए होगे?

खोजी–हुजूर, जैसे करोड़ों रुपये मिल गए। पहले हुजूर का हाल बयान किया। फिर शहर का जिक्र करने लगे। दुनिया की सभी बातें उन पर रोशन थीं। बस, हुजूर, तो यह कैफियत हुई कि दुश्मन किसी लड़ाई में जम ही न सके। इधर रूसियों ने तोपों पर बत्ती लगाई, उधर मेरे शेर ने कील ठोंक दी।

नवाब–वाह-वाह, सुभान-अल्लाह, कुछ सुनते हो यारो?

मस्तियाबेग–खुदावंद, जानवर क्या जादू है !

खोजी–भला उनको कोई बटेर कह सकता है ! और जानवर तो आप खुद हैं। आप उनकी शान में इतना सख्त और बेहूदा लफ्ज मुंह से निकालते हैं।

नवाब–मस्तियाबेग, अगर तुमको रहना है तो अच्छी तरह रहो, वर्ना अपने घर का रास्ता लो। आज तो सफशिकन को जानवर बनाया, कल को मुझे जानवर बनाओगे।

मुसाहब–खुदावंद, यह निरे फूहड़ हैं। बात करने की तमीज नहीं।

गफूर–अच्छा तो अब खामोश ही रहिए। साहब, कुसूर हुआ।

खोजी–नहीं, सारा हाल तो सुन चुके, मगर तब भी अपनी ही सी कहे जाएंगे, दूसरा अगर इस वक्त जानवर कहता तो गलफड़े चीरकर धर देता, न हुई करौली।

नवाब–जाने भी दो, बेशऊर है।

खोजी–खुदावंद, खुश्की में तो सभी लड़ सकते हैं, मगर तरी में लड़ना मुश्किल है। सो हुजूर, तरी की लड़ाई में सफशिकन सबसे बढ़कर रहे। एक दफा का जिक्र है कि एक छोटा दरिया था। इस तरफ हम, उस तरफ दुश्मन। मोरचे-बंदी हो गई, गोलियां चलने लगीं, बस क्या देखता हूं कि सफशिकन ने एक कंकरी ली और उस पर कुछ पढ़कर इस जोर से फेंकी कि एक तोप के हजार टुकड़े हो गए।

नवाब–वाह-वाह, सुभान-अल्लाह!

मुसाहब–क्या पूछना है, एक जरा-सी कंकरी की यह करामात !

खोजी–अब सुनिए, कि दूसरी कंकरी जो पढ़कर फेंकी तो एक और तोप फटी और बहत्तर टुकड़े हो गए। कोई तीन-चार हजार आदमी काम आए।

नवाब–इस कंकरी को देखिएगा। वल्लाह-वल्लाह ! एक हजार टुकड़े तोप के और तीन हजार आदमी गायब ! वाह रे मेरे सफशिकन।

खोजी–इस तरह कोई चौदह तोपें उड़ा दीं और जितने आदमी थे सब भुन गए।

कुछ न पूछिए हुजूर, आज तक किसी की समझ में न आया कि यह क्या हुआ। अगर एक गोला भी पड़ा होता तो लोग समझते, उसमें कोई ऐसा मसाला रहा होगा, मगर कंकरी तो किसी को मालूम भी नहीं हुई।

नवाब–बला की कंकरी थी कि तोप के हजारों टुकड़े कर डाले और हजारों आदमियों की जान ली। भई, जरा कोई जाकर सफशिकन की काबुक तो लाओ।

इतने में महरी ने फिर आकर कहा–हुजूर, बड़ा जरूरी काम है, जरा चलकर सुन लें। नवाब साहब खोजी को लेकर जनानखाने में चले। खोजी की आंखों में दोहरी पट्टी बांधी गई और वह ड्योढ़ी में खड़े किए गए।

बेगम–क्या सफशिकन का कोई जिक्र था, कहां हैं आजकल?

नवाब–यह कुछ न पूछो, रूम जा पहुंचे। हां, कई लड़ाइयों में शरीक हुए और दुश्मनों का काफिया तंग कर दिया। खुदा जाने, यह सब किससे सीखा है?

बेगम–खुदा की देन है, सीखने से भी कहीं ऐसी बातें आती हैं?

नवाब–वल्लाह, सच कहती हो बेगम साहब ! इस वक्त तुमसे जी खुश हो गया। कहां तोप, कहां सफशिकन, जरा खयाल तो करो।

बेगम–अगर पहले से मालूम होता तो सफशिकन को हजार परदों में छिपा के रखती। हां, खुदा याद आया, वह तो अभी जीते-जागते हैं और तुमने उनकी कब्र बनवा दी।

नवाब–वल्लाह, खूब याद दिलाया। सुभान-अल्लाह !

बेगम–यह तो कोसना हुआ किसी बेचारे को।

नवाब–अगर कहीं यहां आ जाएं, और पढ़े-लिखे तो हैं ही, कहीं कब्र पर नजर पड़ गई, उस वक्त यही कहेंगे कि यह लोग मेरी मौत मना रहे हैं, क्या झपाके से कब्र बनवा दी। इससे बेहतर यही है कि खुदवा डालूं।

बेगम–जहन्नुम में जाए। इस अफीमची को घर के अंदर लाने की क्या जरूरत थी?

नवाब–अजी, यह वही हैं जिनको हम लोग खोजी-खोजी कहते थे। लड़ाई के मैदान में सफशिकन इन्हीं से मिले थे। अगर कहो तो यहां बुला लूं।

बेगम–ऐ जहन्नुम में जाए मुआ, और सुनो, उस अफीमची को घर के अंदर लाएंगे।

नवाब–सुन तो लो। पहले बूढ़ा, पेट में आंत न मुंह में दांत, दूसरे मातबर, तीसरे दोहरी पट्टी बंधी है।

बेगम–हां, इसका मुजायका नहीं, मगर मैं उन मुए लुंगाड़ों के नाम से जलती हूं, उन्हीं की सोहबत में तुम्हारा यह हाल हुआ।

नवाब–ऐं, क्या खूब !

खोजी–खुदावंद, गुलाम हाजिर है।

महरी–मैं तो समझी कि कुंए में से कोई बोला।

बेगम–क्या यह हरदम पीनक में रहता है?

नवाब–ख्वाजा साहब, क्या सो गए?

दरबान–ख्वाजा साहब, देखो सरकार क्या फरमाते हैं?

खोजी–क्या हुक्म है खुदावंद?

बेगम–देखो, खुदा जानता है, ऊंघ रहा था। मैं तो कहती ही थी।

नवाब–भाई, जरा सफशिकन का हाल तो कह चलो।

खोजी–खुदावंद, अब आंखें तो खुलवा दीजिए।

बेगम–क्या कुतिया के पिल्ले की आंखें हैं जो अब भी नहीं खुलतीं।

नवाब–पहले हाल तो बयान करो। जरा तोपवाला जिक्र फिर करना, यहां किसी को यकीन ही नहीं आता।

खोजी–हुजूर, क्योंकर यकीन आए, जब तक अपनी आंखों से न देखेंगे, कभी न मानेंगे।

नवाब–तो भाई, हमने क्योंकर मान लिया, इतना तो सोचो।

खोजी–खुदा ने सरकार को देखने वाली आंखें दी हैं। आप न समझें तो कौन समझे। हुजूर, यह कैफियत हुई कि दरिया के दोनों तरफ आमने-सामने तोपें चढ़ी हुई थीं। बस सफशिकन ने एक कंकरी उठाकर, खुदा जाने क्या जादू फूंक दिया कि इधर कंकरी फेंकी और उधर तोप के दो सौ टुकड़े और हर टुकड़े ने सौ-सौ रूसियों की जान ली।

बेगम–इस झूठ को आग लगे, अफीम पी-पी के निगोड़ों को क्या-क्या सूझती है। बैठे-बैठे एक कंकरी से तोप के सौ टुकड़े हो गए, खुदा का डर ही नहीं।

नवाब–तुम्हें यकीन ही न आए तो कोई क्या करे।

बेगम–चलो, बस खामोश रहो, जरा सा मुआ बटेर और कंकरी से उसने तोप के दो सौ टुकड़े कर डाले। खुदा जानता है, तुम अपनी फस्द खुलवाओ।

नवाब–अब खुदा जाने हमें जनून है या तुम्हें।

खोजी–खुदावंद, बहस से क्या फायदा : औरतों की समझ में यह बातें नहीं आ सकतीं।

बेगम–महरी, जरा दरबान से कह, इस निगोड़े अफीमची को जूते मार के निकाल दे। खबरदार जो इसको कभी ड्योढ़ी में आने दिया।

खोजी–सरकार तो नाहक खफा होती हैं।

बेगम–मालूम होता है, आज मेरे हाथों तुम पिटोगे, अरे महरी, खड़ी सुनती क्या है, जाके दरबान को बुला ला।

हुसैनी दरबान ने जाकर खोजी के कान पकड़े और चपतियाता हुआ ले चला।

खोजी–बस-बस, देखो, कान-वान की दिल्लगी अच्छी नहीं।

महबूबन–अब चलता है या मचलता है?

खोजी–(टोपी जमीन से उठाकर) अच्छा, अगर आज जीते बच जाओ तो कहना। अभी एक थप्पड़ दूं तो दम निकल जाय।

इतना कहना था कि दूसरी महरी आ पहुंची और कान पकड़कर चपतियाने लगी। खोजी बहुत बिगड़े, मगर सोचे कि अगर सब लोगों को मालूम हो जाएगा कि महरियों की जूतियां खाईं तो बेढब होगी। झाड़-पोंछकर बाहर आए और एक पलंग पर लेट रहे।

खोजी के जाने के बाद बेगम साहबा ने नवाब को खूब ही आड़े हाथों लिया। जरा सोचो तो तुम्हें हो क्या गया है। कहां बटेर और कहां तोप, खुदा झूठ न बोलाए तो बिल्ली खा गई हो, या इन्हीं मुसाहबों में से किसी ने निकाल कर बेच लिया होगा और तुम्हें

पट्टी पढ़ा दी कि वह सफशिकन थे। आखिर तुम किसी अपने दोस्त से पूछो। देखो, लोगों की क्या राय है?

नवाब—खुदा के लिए मेरे मुसाहबों को न कोसो, चाहे मुझे भला-बुरा कह लो।

बेगम—इन मुफ्तखोरों से खुदा समझे।

नवाब—जरा आहिस्ता-आहिस्ता बोलो, कहीं वह सब सुन लें, तो सब के सब चलते हों और मैं अकेला मक्खियां मारा करूं।

बेगम—ऐ हैं, ऐसे बड़े खरे हैं ! तुम जूतियां मार के निकालो तो भी ये चूं न करें। जो सब निकल जाएं तो होगा क्या? वह कल जाते हों तो आज ही जाएं।

महरी—हुजूर तो चूक गईं, जरी इस मुए खोजी की कहानी तो सुनी होती। हंसते-हंसते लोट जातीं।

बेगम—सच, अच्छा तो उसको बुलाओ जरी, मगर कह देना कि झूठ बोला और मैंने खबर ली।

नवाब—या खुदा, यह तुमसे किसने कह दिया कि वह झूठ ही बोलेगा। इतने दिनों से दरबार में रहता है, कभी झूठ नहीं बोला तो अब क्यों झूठ बोलने लगा? और आखिर इतना तो समझो कि झूठ बोलने से उसको मिल क्या जाएगा?

बेगम—अच्छा, बुलाओ। मैं भी जरा सफशिकन का हाल सुनूं।

महरी ने जाकर खोजी को बुलाया। ख्वाजा साहब झल्लाए हुए पलंग पर पड़े थे। बोले—जाकर कह दो, अब हम वे खोजी नहीं हैं जो पहले थे, आने वाले और जाने वाले, बुलाने और बुलवाने वाले, सबको कुछ कहता हूं।

आखिर लोगों ने समझाया तो ख्वाजा साहब ड्योढ़ी में आए और बोले—आदाब अर्ज करता हूं सरकार, अब क्या फिर कुछ मेहरबानी की नजर ग़रीब के हाल पर होगी? अभी कुछ इनाम बाकी हो तो अब मिल जाए।

बेगम—सफशिकन का कुछ हाल मालूम हो तो ठीक-ठीक कह दो। अगर झूठ बोले तो तुम जानोगे।

खोजी—वाह री किस्मत, हिन्दोस्तान से बंबई गए, वहां सब के सब 'हूजूर-हूजर' कहते थे। तुर्की और रूस में कोहकाफ की परियां हाथ बांधे हाजिर रहती थीं। मिस रोज एक-एक बात पर जान देती थीं, अब भी उसकी याद आ जाती है तो रात भर अच्छे-अच्छे ख्वाब देखा करता हूं—

ख्वाब में एक नूर आता है नजर,
याद में तेरी जो सो जाते हैं हम।

बेगम—अब बताओ, है पक्का अफीमची या नहीं, मतलब की बात एक न कही वाही-तबाही बकने लगा।

खोजी—एक दफे का जिक्र है कि पहाड़ के ऊपर तो रूसी और नीचे हमारी फौज। हमको मालूम नहीं कि रूसी मौजूद हैं। वहीं पड़ाव का हुक्म दे दिया। फौज तो खाने-पीने का इंतजाम करने लगी और मैं अफीम घोलने लगा कि एकाएक पहाड़ पर से तालियों की आवाज आई। मैं प्याली होंठों तक ले गया था कि एकाएक ऊपर से रूसियों ने बाढ़ मारी। हमारे सैकड़ों आदमी घायल हो गए। मगर वाह रे मैं, खुदा गवाह है, प्याली हाथ

से न छूटी। एकाएक देखता हूं कि सफशिकन उड़े चले आते हैं, आते ही मेरे हाथ पर बैठकर चोंच अफीम से तर की, और उसके दो कतरे पहाड़ पर गिरा दिए। बस धमाके की आवाज हुई और पहाड़ फट गया। रूस की सारी फौज उसमें समा गई। मगर हमारी तरफ का एक आदमी भी न मरा। मैंने सफशिकन का मुंह चूम लिया।

बेगम—भला सफशिकन बातें किस जबान से करते हैं?

खोजी—हुजूर, एक जबान हो तो कहूं। उर्दू, फारसी, अरबी, तुर्की, अंगरेजी।

बेगम—क्या और जबानों के नाम नहीं याद हैं?

खोजी—अब हुजूर से कौन कहे।

नवाब—अब यकीन आया कि अब भी नहीं? और जो कुछ पूछना हो, पूछ लो।

बेगम—चलो, बस चुपके बैठ रहो। मुझे रंज होता है कि इन हरामखोरों के पास बैठ-बैठ तुम कहीं के न रहे।

नवाब—हाय अफसोस, तुम्हें यकीन ही नहीं आता, भला सोचो, तो यह सब के सब मुझसे क्यों झूठ बोलेंगे। खोजी को मैं कुछ इनाम दे देता हूं या कोई जागीर लिख दी है इसके नाम?

खोजी—खुदावंद, अगर इसमें जरा भी शक हो तो आसमान फट पड़े। झूठ बात तो जबान से निकलेगी ही नहीं, चाहे कोई मार डाले।

बेगम—अच्छा, ईमान से कहना कि कभी मोरचे पर भी गए या झूठ-मूठ के फिकरे ही बनाया करते हो।

खोजी—हुजूर मालिक हैं, जो चाहे, कह दें, मगर गुलाम ने जो बातें अपनी आंखों देखीं, वह बयान कीं। अगर फर्क हो तो फांसी का हुक्म दे दीजिए।

एक बूढ़ी महरी ने खोजी की बातें सुनने के बाद बेगम से कहा—हुजूर, इसमें ताज्जुब की कौन सी बात है, हमारे मुहल्ले में एक बड़ा काला कुत्ता रहा करता था। मुहल्ले के लड़के उसे मारते, कान पकड़कर खींचते, मगर वह चूं भी नहीं करता था। एक दिन मोहल्ले के चौकीदार ने उस पर एक ढेला फेंका। ढेला उसके कान में लगा और कान से खून बहने लगा। चौकीदार दूसरा ढेला मारना ही चाहता था कि एक जोगी ने उसका हाथ पकड़ लिया और कहा, क्यों जान का दुश्मन हुआ है बाबा। यह कुत्ता नहीं है। उसी रात को चौकीदार ने ख्वाब देखा कि कुत्ता उसके पास आया ! और अपना घाव दिखाकर कहा—या तो हमीं नहीं, या तुम्हीं नहीं। सबेरे जो चौकीदार उठा तो उसने पास-पड़ोस वालों से ख्वाब का जिक्र किया। मगर अब देखते हैं तो कुत्ते का कहीं पता ही नहीं। दोपहर को चौकीदार कुएं पर पानी भरने गया तो पानी देखते ही भूंकने लगा।

बेगम—सच !

महरी—हुजूर, अल्लाह बचाए इस बला से, कुत्ते के भेष में क्या जाने कौन था।

नवाब—अब इसको क्या कहोगी भई, अब भी सफशिकन के कमाल को न मानोगी।

बेगम—हां, ऐसी बातें तो हमने भी सुनी हैं, मगर...

खोजी—अगर-मगर की गुंजाइश नहीं, गुलाम आंखों देखी कहता है। एक किस्सा और सुनिए, आपको शायद इसका भी यकीन न आए। सफशिकन मेरे सिर पर आकर बैठ गए और कहा, रूसियों की फौज में धंस पड़ो। मेरे होश उड़ गए। बोला, साहब आप

हैं कहां? मेरी जान जाएगी, आपके नजदीक दिल्लगी है, मगर वह सुनते किसकी हैं। कहां, चलो तो तुम ! आधी रात थी, घटा छाई हुई थी, मगर मजबूरन जाना पड़ा। बस, रूसी फौज में जा पहुंचा। देखा, कोई गाता है, कोई सोता है। हम सबको देखते हैं, मगर हमें कोई नहीं देखता। सफशिकन अस्तबल की तरफ चले और फुदक के एक घोड़े की गर्दन पर जा बैठे। घोड़ा धम से जा गिरा, अब जिस घोड़े की गर्दन पर बैठते हैं, जमीन पर लोटने लगता है। इस तरह कोई सात हजार घोड़े उसी दम धम-धम करके लोट गए। फौज से निकले तो आपने पूछा, कहो आज की दिल्लगी देखी, कितने सवार बेकार हुए।

मैं–हुजूर, पूरे सात हजार !

सफशिकन–आज इतना ही बहुत है, कल फिर देखी जाएगी, चलो, अपने पड़ाव पर चलें। चलते-चलते जब थक जाओ तो हमसे कह दो।

मैं–क्यों, आपसे क्यों कह दूं?

सफशिकन–इसलिए कि हम उतर जाएं।

मैं–वाह, मुट्ठी भर के आप, भला आपके बैठने से मैं क्या थक जाऊंगा? आप क्या और आपका बोझ क्या?

इतना सुनना था कि खुदा जाने ऐसा कौन-सा जादू कर दिया कि मेरा कदम उठाना मुहाल हो गया। मालूम होता था, सिर पर पहाड़ का बोझा लदा हुआ है। बोला, हुजूर, अब तो बहुत ही थक गया, पैर ही नहीं उठते। बस फुर्र से उड़ गए। ऐसा मालूम हुआ कि सिर से दस-बीस करोड़ मन बोझा उतर गया।

नवाब–यह तो भाई, नयी-नयी बातें मालूम होती जाती हैं। वाह रे सफशिकन !

खोजी–हुजूर, खुदा जाने, किस औलिया ने यह भेस बदला है।

बेगम साहबा ने इस वक्त तो कुछ न कहा, मगर ठान ली आज रात को नवाब साहब को खूब आड़े हाथों लूंगी। नवाब साहब ने समझा कि बेगम साहबा को सफशिकन के कमाल का यकीन आ गया। बाहर आकर बोले–वल्लाह, तुमने तो ऐसा समां बांध दिया कि अब बेगम साहबा को उम्र भर शक न होगा।

खोजी–हुजूर, सब आंखों देखी बात बयान की है।

नवाब–यही तो मुश्किल है कि वह सच्ची बातों को भी बनावट समझती हैं।

खोजी–समझ में नहीं आता, मुझसे क्यों इतनी नाराज हैं।

नवाब–नाराज नहीं हैं जी, मतलब यह कि अब इस बात को सिवा पढ़े-लिखे आदमी के और कौन समझ सकता है। और भई, मैं सोचता हूं कि आखिर कोई झूठ क्यों बोलने लगा, झूठ बोलने में किसी को फायदा की क्या है।

खोजी–ऐ, सुभान-अल्लाह, क्या बात हुजूर ने पैदा की है। सचमुच कोई झूठ क्यों बोलने लगा। एक तो झूठा कहलाए, दूसरे बेआबरू हो।

नवाब–भाई, हम इनसान को खूब पहचानते हैं। आदमी का पहचानना कोई हमसे सीखे। मगर दो को हमने भी नहीं पहचाना। एक तुमको, दूसरे सफशिकन को।

खोजी–खुदावंद, मैं यह न मानूंगा, हुजूर की नजर बड़ी बारीक है।

नवाब साहब खोजी की बातों से इतने खुश हुए कि उनके हाथ में हाथ दिए बाहर आए। मुसाहबों ने जो इतनी बेतकल्लुफी देखी तो जल मरे, आपस में इशारे होने लगे–

मस्तियाबेग–एं, मियां खोजी ने तो जादू कर दिया यारो !

गफूर–जरूर किसी मुल्क से जादू सीख आए हैं।

मस्तियाबेग–तजरबाकार हो गया न, अब इसका रंग कुछ जम गया।

गफूर–कैसा कुछ, अब तो सोलहों आने के मालिक हैं।

मिर्जा–अरे मियां, दोनों हाथ में हाथ देकर निकले, वाह री किस्मत ! मगर यह खुश किस बात पर हुए?

गफूर–इनको अभी तक यहीं नहीं मालूम, बताइए साहब !

मस्तियाबेग–मियां, अजब कूढ़मगज हो, कहने लगे, खुश किस बात पर हुए। सफशिकन की तारीफों के पुल बांध दिए। सूझ ही तो है, अब लाख चाहें कि उसका रंग फीका कर दें, मुमकिन नहीं।

मिर्जा–इस वक्त तो खोजी का दिमाग चौथे आसमान पर होगा।

मस्तियाबेग–अजी, बल्कि और उसके भी पार, सातवें आसमान पर।

गफूर–मैं बाग में गया था, देखा, नवाब साहब मोढ़े पर बैठ हैं और खोजी तिपाई पर बैठा हुआ, खास सरकार की गुड़गुड़ी पी रहा है?

मिर्जा–सच, तुम्हें खुदा की कसम !

गफूर–चलकर देख लीजिए न, बस जादू कर दिया। यह वही खोजी हैं जो चिलमें भरा करते थे, मगर जादू का जोर, अब दोस्त बने हुए है?

मिर्जा–खोजी को सब के सब मिलकर मुबारकबाद दो और उनसे बढ़िया दावत लो। अब इससे बढ़कर कौन दर्जा है।

इतने में नवाब साहब खोजी को लिए हुए दरबार में आए, मुसाहब उठ खड़े हुए। ख्वाजा साहब को सरकार ने अपने करीब बिठाया और आज़ाद से बोले–हजरत, आपकी सोहबत में ख्वाजा साहब पारस हो गए।

आज़ाद–जनाब, यह सब आपकी खिदमत का असर है। मेरी सोहबत में तो थोड़े ही दिनों से हैं, आपकी शागिर्दी करते बरसों गुजर गए।

नवाब–वाह, अब तो ख्वाजा साहब मेरे उस्ताद हैं जनाब !

मस्तियाबेग–खुदावंद, यह क्या फरमाते हैं। हुजूर के सामने खोजी की क्या हस्ती है?

नवाब–क्या बकता है? खोजी की तारीफ से तुम सब क्यों जल मरते हो?

मिर्जा–खुदावंद, यह मस्तियाबेग तो दूसरों को देखकर हमेशा जलते रहते हैं।

गफूर–यह परले सिरे के गुस्ताख हैं, बात तो समझे नहीं जो कुछ मुंह में आया, बक दिए। आखिर ख्वाजा साहब बेचारे ने उनका क्या बिगाड़ा !

नवाब–मुझसे सुनो साहब, दिल में बस पुरानी कुदूरत है।

मुसाहब–सुभान-अल्लाह ! हुजूर, बस यही बात है।

खोजी–हुजूर, इसका ख्याल न करें। यह लोग जो चाहें, कहें। भाई गफूर, जरा-सा पानी पीएंगे।

नवाब–ठंडा पानी लाओ ख्वाजा साहब के वास्ते।

खिदमतगार सुराही का झला ठंडा पानी लाया, चांदी के कटोरे में पानी दिया। जब

ख्वाजा साहब पानी पी चुके तो नवाब साहब ने पानदान से दो गिलौरियां निकाल कर खास अपने हाथ से उनको दीं।

मिर्जा–मैंने मस्तियाबेग से हजार बार कहा कि भाई, तुम किसी को देख के जले क्यों मरते हो, कोई तुम्हारा हिस्सा नहीं छीन ले जाता, फिर ख्वामख्वाह के लिए अपने को क्यों हलकान करते हो।

नवाब–मुझे इस वक्त उसकी बातें बहुत नागवार मालूम हुईं।

मुसाहब–जानते हैं कि इस दरबार में खुशामदियों की दाल नहीं गलती, फिर भी अपनी हरकत से बाज नहीं आते।

मुसाहब लोग तो बाहर बैठे सलाह कर रहे थे, इधर दरबार में नवाब साहब; आजाद और खोजी में यूरोप के रईसों का जिक्र होने लगा। आज़ाद ने यूरोप के रईसों की खूब तारीफ की।

नवाब–क्यों साहब, हम लोग भी उन रईसों की तरह रह सकते हैं?

आज़ाद–बेशक, अगर उन्हीं की राह पर चलिए। आपकी सोहबत में चंडूबाज, मदरिए, चरसिए इस कसरत से हैं कि शायद ही कोई इनसे खाली हो। यूरोप के रईसों के यहां ऐसे आदमी फटकने भी न पाएं।

नवाब–कहिए तो ख्वाजा साहब के सिवा और सबको निकाल दूं।

खोजी–निकालिए चाहे रहने दीजिए, मगर इतना हुक्म जरूर दे दीजिए कि आपके सामने दरबार में न कोई चंडू के छींटे उड़ाए, न मदक के दम लगाए और न अफीम घोले।

आज़ाद–दूसरी बात है कि खुशामदी लोग आपकी झूठी तारीफें कर-करके खुश करते हैं। इनको झिड़क दीजिए और इनकी खुशामद पर खुश न होइए।

नवाब–आप ठीक कहते हैं। वल्लाह, आपकी बात मेरे दिल में बैठ गई यह सब भर्रे दे-देकर बिलटाए देते हैं।

आज़ाद–आपको खुदा ने इतनी दौलत दी है, यह इस वास्ते नहीं कि आप खुशामदियों पर लुटाएं। इसको इस तरह काम में लाएं कि सारी दुनिया में नहीं तो हिन्दोस्तान भर में आपका नाम हो जाए। खैरातखाना कायम कीजिए, अस्पताल बनवाइए, आलिमों की कदर कीजिए। मैंने आपके दरबार में किसी आलिम-फाजिल को नहीं देखा।

नवाब–बस, आज ही से इन्हें निकाल बाहर करता हूं।

आज़ाद–अपनी आदतें भी बदल डालिए, आप दिन को ग्यारह बजे सोकर उठते और हाथ-मुंह धोकर चंडू के छींटे उड़ाते हैं। इसके बाद इन फिकरेबाजों से चुहल होती है। सुबह का खाना आपको तीन बजे नसीब होता है। आप फिर आराम करते हैं तो शाम से पहले नहीं उठते। फिर वही चंडू और मदक का बाजार गर्म होता है। कोई दो बजे रात को आप खाना खाते हैं। अब आप ही इंसाफ कीजिए कि दुनिया में आप कौन-सा काम करते हैं।

नवाब–इन बदमाशों ने मुझे तबाह कर दिया।

आज़ाद–सबेरे उठिए, हवा खाने जाइए, अखबार पढ़िए, भले आदमियों की सोहबत में बैठिए, अच्छी-अच्छी किताबें पढ़िए, जरूरी कागजों को समझिए; फिर देखिए कि

आपकी जिंदगी कितनी सुधर जाती है।

नवाब–खुदा की कसम, आज से ऐसा ही करूंगा, एक-एक हर्फ की तामील न हो तो समझ लीजिएगा, बड़ा झूठा आदमी है।

खोजी–हुजूर, मुझे तो बरसों इस दरबार में हो गए, जब सरकार ने कोई बात ठान ली तो फिर चाहे जमीन और आसमान एक तरफ हो जाए, आप उसके खिलाफ कभी न करेंगे। बरसों से यही देखता आता हूं।

आज़ाद–एक इश्तहार दे दीजिए, कि लोग अच्छी-अच्छी किताबें लिखें, उन्हें इनाम दिया जाएगा। फिर देखिए, आपका कैसा नाम होता है !

नवाब–मुझे किसी बात में उज्र नहीं है।

उधर मुसाहबों में और ही बातें हो रही थीं–

मस्तियाबेग–वल्लाह, आज तो अपना खून पीकर रह गया यारो !

मिर्जा–देखते हो, किस तरह झिड़क दिया !

मस्तियाबेग–झिड़क क्या दिया, बस कुछ न पूछो, मैं जान-बूझकर चुप हो रहा, नहीं बेढब हो जाती। किसी ने अपनी इज्जत नहीं बेची है। और अब आपस में सलाहें हो रही हैं। खोजी ने सबको बिलटाया।

मस्तियाबेग–कोई लाख कहे हम न मानेंगे, यह सब जादू का खेल है।

गफूर–मियां, इसमें कोई शक है, यह जादू नहीं तो है क्या?

मिर्जा–अजी, उल्लू का गोश्त नवाब को न खिला दिया हो तो नाक कटवा डालूं। इन लोगों ने मिलकर उल्लू का गोश्त खिलवा दिया है, जभी तो उल्लू बन गए, अब उनसे कहे कौन?

मस्तियाबेग–कहके बहुत खुश हुए कि अब किसी दूसरे को हिम्मत होगी।

गफूर–अब तो कुछ दिन खोजी की खुशामद करनी पड़ेगी।

मस्तियाबेग–हमारी जूती उस पाजी की खुशामद करती है।

मिर्जा–फिर निकाले जाओगे, यहां रहना है तो खोजी को बाप बनाओ, दरिया में रहना और मगर से बैर?

मस्तियाबेग–दो-चार दिन रहके यहां का रंग-ढंग देखते हैं। अगर यही हाल रहा तो हमारा इस्तीफा है, ऐसी नौकरी से बाज आए ! बराबर वालों की खुशामद हमसे न हो सकेगी।

मीर साहब–बराबर वाले कौन? तुम्हारे बराबर होंगे। हम तो खोजी को जलील समझते हैं।

गफूर–अरे साहब, अब तो वह सबके अफसर हैं और हम तो उन्हें गुड़गुड़ी पिला चुके। आप लोग उन्हें मानें या न मानें, हमारे तो मालिक हैं।

मिर्जा–सौ बरस बाद घूरे के भी दिन फिरते हैं। भाईजान, किसी को इसका गुमान भी था कि खोजी को सरकार इस तपाक से अपने पास बिठाएंगे, मगर अब आंखों देख रहे हैं।

नवाब साहब बाहर आए तो इस ढंग से कि उनके हाथ में एक छोटी-सी गुड़गुड़ी है और ख्वाजा साहब पी रहे हैं। मुसाहबों के रहे-सहे होश भी उड़ गए। ओफ्फोह, सरकार

के हाथ में गुड़गुड़ी और यह टूकरचा, रईस बना हुआ दम लगा रहा है। नवाब साहब मसनद पर बैठे तो खोजी को भी अपने बराबर बिठाया। मुसाहब सन्नाटे में आ गए। कोई चूं तक नहीं करता, सबकी निगाह खोजी पर है। बारे मीर साहब ने हिम्मत करके बातचीत शुरू की–

मीर साहब–खुदावंद, आज कितनी बहार का दिन है, चमन से कैसी भीनी-भीनी खुशबू आ रही है।

नवाब–हां, आज का दिन इसी लायक है कि कोई इल्मी बहस हो।

साहब–खुदावंद आज का दिन तो गाना सुनने के लिए बहुत अच्छा है।

नवाब–नहीं, कोई इल्मी बहस होनी चाहिए।

मस्तियाबेग–(दिल में) इनके बाप ने भी कभी इल्मी बहस की थी?

मिर्जा–हुजूर, ख्वाजा साहब की लियाकत में क्या शक है, मगर....।

नवाब–अगर-मगर के क्या मानी? क्या ख्वाजा साहब के आलिम होने में आप लोगों को कुछ शक है?

मिर्जा–किस इल्म की बहस कीजिएगा ख्वाजा साहब? इल्म का नाम तो मालूम हो।

खोजी–हम इल्म जालोजी में बहस करते हैं, बतलाइए, इस इल्म का क्या मतलब है?

मिर्जा–किस इल्म का नाम लिया आपने, जालोजी ! यह जालोजी क्या बला है?

नवाब–जब आपको इस इल्म का नाम तक नहीं मालूम तो बहस क्या खाक कीजिएगा। क्यों ख्वाजा साहब, सुना है कि दरिया में जहाजों के डुबो देने के औजार भी अंगरेजों ने निकाले हैं। यह तो खुदाई करने लगे !

खोजी–उस औजार का नाम तारपेडो है। दो जहाज हमारे सामने डूबो दिए गए? पानीं के अंदर ही अंदर तारपेडो छोड़ा जाता है, बस जैसे ही जहाज के नीचे पहुंचा वैसे ही फटा। फिर तो जनाब, जहाज के करोड़ों टुकड़े हो जाते हैं।

मस्तियाबेग–और क्यों साहब, यह बम का गोला कितनी दूर का तोड़ करता है?

खोजी–बम के गोले कई किस्म के होते हैं, आप किस किस्म का हाल दरियाफ्त करते हैं?

मस्तियाबेग–अजी, यही बम के गोले।

खोजी–आप तो यही-यही करते हैं, उसका नाम तो बतलाइए?

नवाब–क्यों जनाब, लड़ाई के वक्त आदमी के दिल का क्या हाल होता होगा? चारों तरफ मौत ही मौत नजर आती होगी?

मिर्जा–मैं अर्ज करूं हुजूर, लड़ाई के मैदान में आकर जरा....।

नवाब–चुप रहो साहब, तुमसे कौन पूछता है, कभी बंदूक की सूरत भी देखी है या लड़ाई का हाल ही बयान करने चले !

खोजी–जनाब, लड़ाई के मैदान में जान का जरा भी खौफ नहीं मालूम होता। आपको यकीन न आएगा, मगर मैं सही कहता हूं कि इधर फौजी बाजा बजा और उधर दिलों में जोश उमड़ने लगा। कैसा ही बुजदिल हो, मुमकिन नहीं कि तलवार खींचकर फौज

के बीच में धंस न जाए। नंगी तलवार हाथ में ली और दिल बढ़ा। फिर अगर दो करोड़ गोले भी सिर पर आवें तो क्या मजाल कि आदमी हट जाए।

खोजी यही बातें कर रहे थे कि खिदमतगार ने आकर कहा—हुजूर, बाहर एक साहब आए हैं, और कहते हैं, नवाब साहब को हमारा सलाम दो, हमें उनसे कुछ कहना है। नवाब साहब ने कहा—ख्वाजा साहब, आप जरा जाकर दरियाफ्त कीजिए कि कौन साहब हैं। खोजी बड़े गरूर के साथ उठे और बाहर जाकर साहब को सलाम किया। मालूम हुआ है कि यह पुलिस का अफसर है, जिले के हाकिम ने उसे आज़ाद का हाल दरियाफ्त करने के लिए भेजा है।

खोजी—आप साहब से जाकर कह दीजिए, आज़ाद पाशा नवाब साहब के मेहमान हैं और उनके साथ ख्वाजा साहब भी हैं।

अफसर—तो साहब उनसे मिलने वाला है। अगर आज उनको फुरसत हो तो अच्छा, नहीं तो जब उनका जी चाहे।

खोजी—मैं उनसे पूछकर आपको लिख भेजूंगा।

इंस्पेक्टर साहब चले गए तो मस्तियाबेग ने कहा—क्यों साहब, यह बात हमारी समझ में नहीं आई कि आपने आज़ाद पाशा से इसी वक्त क्यों न पूछ लिया। एक ओहदेदार को दिक करने से क्या फायदा? खोजी ने त्यौरियां बदलकर कहा—तुमसे हजार बार मना किया कि इस बारे में न बोला करो, मगर तुम सुनते ही नहीं। तुम तो हो अक्ल के दुश्मन, हम चाहते हैं कि आज़ाद पाशा जब किसी हाकिम से मिलें तो बराबर की मुलाकात हो। इस वक्त यह वर्दी नहीं पहने हैं। कल जब यह फौजी वर्दी पहनकर और तमगे लगाकर हाकिम-जिला से मिलेंगे तो वह खड़ा होकर ताजीम करेगा।

नवाब—अब समझे या अब भी गधे ही बने हो? ख्वाजा साहब को तौलने चले हैं ! वल्लाह, ख्वाजा साहब, आपने खूब सोची। अगर इस वक्त कह देते कि आज़ाद वह क्या बैठे हैं तो कितनी किरकिरी होती।

इतने में खाने का वक्त आ पहुंचा। खाना चुना गया, सब लोग खाने बैठे, उस वक्त खोजी ने एक किस्सा छेड़ दिया—हुजूर, एक बार जब अंगरेजों की उन लोगों से मुठभेड़ हुई तो अंगरेजी अफसर ने कहा, अगर कोई आदमी दूसरी तरफ के जहाजों को ले आए तो हमारी फतह हो सकती है, नहीं तो हमारा बेड़ा तबाह हो जायगा। इतना सुनते ही बारह मल्लाह पानी में कूद पड़े। उनके साथ पंद्रह साल का एक लड़का भी पानी में कूदा।

नवाब—समुद्र में, ओफ्फोह !

खोजी—खुदावंद, उनसे बढ़कर दिलेर और कौन हो सकता है? बस अफसर ने मल्लाहों से कहा, इस लड़के को रोक लो। लड़के ने कहा, वाह, मेरे मुल्क पर अगर मेरी जान कुरबान हो जाए तो क्या मुजायका? यह कहकर वह लड़का तैरता हुआ निकल गया।

नवाब—ख्वाजा साहब, कोई ऐसी फिक्र कीजिए कि हमारी-आपकी दोस्ती हमेशा इसी तरह कायम रहे।

खोजी—भाई सुनो, हमें खुशामद करनी मंजूर नहीं, अगर साहब-सलामत रखना है तो रखिए, वर्ना आप अपने घर खुश और मैं अपने घर खुश।

नवाब—यार, तुम तो बेवजह बिगड़ खड़े होते हो।

खोजी—साफ तो यह है कि तजरबा हमको हासिल हुआ है उस पर हम जितना गरूर करें, बजा है।

नवाब—इसमें क्या शक है जनाब !

खोजी—आप खूब जानते हैं कि जो आलिम लोग किसी की परवा नहीं करते। मुझे दुनिया में किसी से दबके चलना नागवार है और हम क्यों किसी से दबें? लालच हमें छू नहीं गया, हमारे नजदीक बादशाह और फकीर दोनों बराबर। जहां कहीं गया, लोगों ने सिर और आंखों पर बिठाया। रूम, मिस्र, रूस वगैरह मुल्कों में मेरी जो कदर हुई वह सारा जमाना जानता है। आपके दरबार में आलिमों की कदर नहीं। वह देखिए, नालायक मस्तियाबेग आपके सामने चंडू का दम लगा रहा है। ऐसे बदमाशों से मुझे नफरत है।

नवाब—कोई है, इस नालायक को निकाल दो यहां से।

मुसाहब—हुजूर तो आज नाहक खफा होते हैं, इस दरबार में तो रोज ही चंडू के दम लगा करते हैं। इसने किया तो क्या गुनाह किया?

नवाब—क्या बकते हो, हमारे यहां चंडू का दम कोई नहीं लगाता।

खोजी—हमें यहां आए इतने दिन हुए, हमने कभी नहीं देखा। चंडू पीना शरीफों का काम ही नहीं।

मिर्जा—तुम तो गजब करते हो खोजी, जमाने भर के चंडूबाज, अफीमची, अब आए हो वहां से बढ़-बढ़ के बातें बनाने। जरा सरकार ने मुंह लगाया तो जमीन पर पांव ही नहीं रखते।

नवाब—गफूर, इन सब बदमाशों को निकाल बाहर करो। खबरदार जो आज से कोई यहां आने पाया।

मीर साहब—खुदावंद ! बस, कुछ न कहिएगा, हम लोगों ने अपनी इज्जत नहीं बेची है।

नवाब—निकालो इन सबों को, अभी-अभी निकाल दो।

ख्वाजा साहब शह पाकर उठे और एक कतारा लेकर मस्तियाबेग पर जमाया। वह तो झल्लाया था ही, खोजी को एक चांटा दिया, तो गिर पड़े, इतने में कई सिपाही आ गए, उन्होंने मस्तियाबेग को पकड़ लिया और बाकी सब भाग खड़े हुए। खोजी झाड़-पोंछकर उठे और उठते ही हुक्म दिया कि मस्तियाबेग को एक दरख्त से बांधकर दो सौ कोड़े लगाए जाएं, नमकहराम अपने मालिक के दोस्तों से लड़ता है। बदन में कीड़े न पड़ें तो सही।

उधर मियां आज़ाद साहब से मिलकर लौटे तो देखा कि दरबार में सन्नाटा छाया हुआ है। नवाब साहब उन्हें देखते ही बोले—हजरत, आज से हमने आपकी सलाहों पर चलना शुरू कर दिया।

आज़ाद—दरबार के लोग कहां गायब हो गए?

खोजी—सबके सब निकाल दिए गए, अब कोई यहां फटकने भी न पाएगा।

नवाब—अब हम हुक्काम से मिला करेंगे और कोशिश करेंगे कि हर एक किस्म की कमेटी में शरीक हों। वाही-तबाही आदमियों की सोहबत में आप देखें तो मेरे कान पकड़िएगा।

आज़ाद–अब आप हर किस्म की किताबें पढ़ा कीजिए।

नवाब–आप जो कुछ फरमाते हैं, बजा है, मेरा पचीसवां साल है, अभी मुझे पढ़ने-लिखने का बहुत मौका है; और मुझे करना ही क्या है।

आज़ाद–खुदा आपकी नीयत में बरकत दे।

खोजी–बस, आज से आपको आलिमों की सोहबत रखनी चाहिए। ऐसा न हो इस वक्त तो सब कुछ तकरार कर लीजिए और कल से फिर वही ढाक के तीन पात।

नवाब–खुदा ने चाहा तो यह सब बातें अब नाम को भी न देखिएगा।

दूसरे दिन आज़ाद सैर करने निकले तो क्या देखते हैं कि एक जगह कई आदमी एक छत पर बैठे हुए हैं। आज़ाद को देखते ही एक आदमी ने आकर उनसे कहा–अगर आपको तकलीफ न हो, तो जरा मेरे साथ आइए। आज़ाद उसके साथ छत पर पहुंचे तो उन आदमियों में एक की सूरत अपनी सूरत से मिलती-जुलती पाई। उसने आज़ाद की ताजीम की और कहा–आइए, आपसे कुछ बातें करूं। आपने अपनी सूरत तो आईने में देखी होगी।

आज़ाद–हां, और इस वक्त बगैर आईने के देख रहा हूं। आपका नाम?

आदमी–मुझे आज़ाद मिर्जा कहते हैं।

आज़ाद–तब तो आप मेरे हमनाम भी हैं। आपने मुझे क्योंकर पहचाना?

मिर्जा–मैंने आपकी तसवीरें देखी हैं और अखबारों में आपका हाल पढ़ता रहा हूं।

आज़ाद–इस वक्त आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।

मिर्जा–और अभी और भी खुशी होगी। सुरैया बेगम को तो आप जानते हैं।

आज़ाद–हां-हां, आपको उनका कुछ हाल मालूम है?

मिर्जा–जी हां, आपके धोखे में मैं उनके यहां पहुंचा था, और अब तो वह बेगम हैं। एक नवाब साहब के साथ उनका निकाह हो गया है।

आज़ाद–क्या अब दूर से भी मुलाकात न होगी?

मिर्जा–हरगिज नहीं।

आज़ाद–बे-अख्तियार जी चाहता है कि मिलकर बातें करूं।

मिर्जा–कोशिश कीजिए, शायद मुलाकात हो जाए, मगर उम्मेद नहीं?

एक सौ छः

आज़ाद सुरैया बेगम की तलाश में निकले तो क्या देखते हैं कि बाग में कुछ लोग एक रईस की सोहबत में बैठें गपें उड़ा रहे हैं। आज़ाद ने समझा, शायद इन लोगों से सुरैया बेगम के नवाब साहब का कुछ पता चले। आहिस्ता-आहिस्ता उनके करीब गये। आज़ाद को देखते ही वह रईस चौंककर खड़ा हो गया और उनकी तरफ देखकर बोला–वल्लाह, आपसे मिलने का बहुत शौक था। शुक्र है कि घर बैठे मुराद पूरी हुई। फर्माइए आपकी क्या खिदमत करूं?

मुसाहब–हुजूर, जंडैल साहब को कोई ऐसी चीज पिलाइए कि रूह तक ताजा हो जाय।

खां साहब–मुझे पारसाल सबलवायु का मरज हो गया था। दो महीने डॉक्टर का इलाज हुआ। खाक फायदा न हुआ। बीस दिन तक हकीम साहब ने नुस्खे पिलाये, मरज और भी बढ़ गया। पड़ोस में एक वैदराज रहते हैं उन्होंने कहा मैं दो दिन में अच्छा कर दूंगा। दस दिन तक उनका इलाज रहा, मगर कुछ फायदा न हुआ। आखिर एक दोस्त ने कहा–भाई, तुम सबकी दवा छोड़ दो, जो हम कहें वह करो। बस हुजूर, दो बार बरांडी पिलायी। दो छटांक शाम को, दो छटांक सुबह को, उसका यह असर हुआ कि चौथे दिन मैं बिल्कुल चंगा हो गया।

रईस–बरांडी के बड़े-बड़े फायदे लिखे हैं।

दीवान–सरकार, पेशाब के मरज में तो बरांडी अकसीर है। जितनी देते जाइए उतना ही फायदा करती है !

खां साहब–हुजूर, आंखों देखी कहता हूं। एक सवार को मिर्गी आती थी, सैकड़ों इलाज किये, कुछ असर न हुआ, आखिर एक आदमी ने कहा, हुजूर हुक्म दें तो एक दवा बताऊं। दावा करके कहता हूं कि कल ही मिर्गी न रहे। खुदावंद, दो छटांक शराब लीजिए और उसमें उसका दूना पानी मिलाइए, अगर एक दिन में फायदा न हो तो जो चोर की सजा वह मेरी सजा।

नवाब–यह सिफत है इसमें !

मुसाहब–हुजूर, गंवारों ने इसे झूठ-मूठ बदनाम कर दिया है। क्यों जंडैल साहब, आपको कभी इत्तफाक हुआ है?

आज़ाद–वाह, क्या मैं मुसलमान नहीं हूं।

नवाब–क्या ख़ूब जवाब दिया है, सुभान-अल्लाह !

इतने में एक मुसाहब जिनको औरों ने सिखा-पढ़ाकर भेजा था, चुगा पहने और अमामा बांधे आ पहुंचे। लोगों ने बड़े तपाक से उनकी ताजीम की और बुलाकर बैठाया।

नवाब–कैसे मिजाज हैं मौलाना साहब?

मौलाना–खुदा का शुक्र है।

मुसाहब–क्यों मौलाना साहब, आपके खयाल में शराब हलाल है या हराम?

मौलाना–अगर तुम्हारा दिल साफ नहीं तो हजार बार हज करो कोई फायदा नहीं। हर एक चीज नीयत के लिहाज से हलाल या हराम होती है।

आज़ाद–जनाब, हमने हर किस्म के आदमी देखे। किसी सोहबत से परहेज नहीं किया, आप लोग शौक से पीयें, मेरा कुछ खयाल न करें।

नवाब–नीयत की सफाई इसको कहते हैं। हजरत आज़ाद, आपकी जितनी तारीफ सुनी थी, उससे कहीं बढ़कर पाया।

एक साहब नीचे से शराब, सोडा की बोतलें और बर्फ लाये और दौर चलने लगे। जब सरूर जमा तो गपें उड़ने लगीं–

खां साहब–खुदावंद, एक बार नेपाल की तराई में जाने का इत्तफाक हुआ। चौदह आदमी साथ थे, वहां जंगल में शहद कसरत से है और शहद की मक्खियों की अजब

खासियत है एक बदन पर जहां कहीं बैठती हैं, दर्द होने लगता है। मैंने वहां के बाशिंदों से पूछा, क्यों भाई, इसकी कुछ दवा है? कहा, इसकी दवा शराब है। हमारे साथियों में कई ब्राह्मण भी थे। वह शराब को छू न सकते थे। हमने दवा के तौर पर पी, हमारा दर्द तो जाता रहा और वह सब अभी झींक रहे हैं।

नवाब–वल्लाह, इसके फायदे बड़े-बड़े हैं, मगर हराम है, अगर हलाल होती तो क्या कहना था।

मुसाहब–खुदावंद, हैजे की दवा, पेचिस की दवा, बवासीर की दवा, दमे की दवा, यहां तक की मौत की भी दवा !

दीवान–ओ-हो-हो-हो, मौत की दवा !

नवाब–खबरदार, सबके सब खामोश, बस कह दिया।

दीवान–खामोश ! खामोश !

खां साहब–तप की दवा, सिर दर्द की दवा, बुढ़ापे की दवा।

नवाब–यह तुम लोग बहकते क्यों हो ? हमने भी तो पी है। हजरत, मुझे एक औरत ने नसीहत की थी। तब से क्या मजाल कि मेरी जबान से एक बेहूदा बात भी निकले। (चपरासी को बुलाकर) रमजानी, तुम खां साहब और दीवान जी को यहां से ले जाओ।

दीवान–इल्म की कसम, अगर इतनी गुस्ताखी हमारी शान में करोगे तो हमसे जूती-पैजार हो जाएगी।

नवाब–कोई है? जो लोग बहक रहे हों उन्हें दरबार से निकाल दो और फिर भूल के भी न आने देना।

लाला–अभी निकाल दो सबको !

यह कहकर लाला साहब ने रमजान खां पर टीप जमायी। वह पठान आदमी, टीप पड़ते ही आग हो गया। लाला साहब के पट्टे पकड़कर दो-चार धपे जोर-जोर से लगा बैठा। इस पर दो-चार आदमी और इधर-उधर से उठे। लप्पा-डुग्गी होने लगी। आज़ाद ने नवाब साहब से कहा–मैं तो रुखसत होता हूं। नवाब साहब ने आज़ाद का हाथ पकड़ लिया और बाग में लाकर बोले–हजरत, मैं बहुत शरमिंदा हूं कि इन पाजियों की वजह से आपको तकलीफ हुई। क्या कहें, उस औरत ने हमें वह नसीहत की थी कि अगर हम आदमी होते तो सारी उम्र आराम के साथ बसर करते। मगर इन मुसाहबों से खुदा समझे; हमें फिर घेर-घार के फंदे में फांस लिया।

आज़ाद–तो जनाब; ऐसे अदना नौकरों को इतना मुंह चढ़ाना हरगिज मुनासिब नहीं।

नवाब–भाई साहब, यही बातें उस औरत ने भी समझायी थीं।

आज़ाद–आखिर वह औरत कौन थी और आपसे उससे क्या ताल्लुक था?

नवाब–हजरत, अर्ज किया न कि एक दिन दोस्तों के साथ एक बाग में बैठा था कि एक औरत सफेद दुलाई ओढ़े निकली। दो-चार बिगड़े दिलों ने उसे चकमा देकर बुलाया। वह बेतकल्लुफी के साथ आकर बैठी तो मुझसे बातचीत होने लगी। उसका नाम अलारक्खी था।

अलारक्खी का नाम सुनते ही आज़ाद ने ऐसा मुंह बना लिया गोया कुछ जानते ही नहीं, मगर दिल में सोचे कि वाह री अलारक्खी, जहां जाओ, उसके जानने वाले निकल

ही आते हैं। कुछ देर के बाद नवाब नशे में चूर हो ही गये और आज़ाद बाहर निकले तो एक पुराने जान-पहचान के आदमी से मुलाकात हो गयी। आज़ाद ने पूछा-कहिए हजरत, आजकल आप कहां हैं?

आदमी-आजकल तो नवाब वाजिद हुसैन की खिदमत में हूं। हुजूर तो खैरियत से रहे? हुजूर का नाम तो सारी दुनिया में रोशन हो गया।

आज़ाद-भाई, जब जानें कि एक बार सुरैया बेगम से दो-दो बातें करा दो।

आदमी-कोशिश करूंगा हुजूर, किसी न किसी हीले से वहां तक आपका पैगाम पहुंचा दूंगा।

यह मामला ठीक-ठाक करके आज़ाद होटल में गये तो देखा कि खोजी बड़ी शान से बैठे गपें उड़ा रहे हैं और दोनों परियां उनकी बातें सुन-सुन कर खिलखिला रही हैं।

क्लारिसा-तुम अपनी बीवी से मिले, बड़ी खुश हुई होगी।

खोजी-जी हां, मुहल्ले में पहुंचते ही मारे खुशी के लोगों ने तालियां बजायीं। लौंडों ने ढेले मार-मार कर गुल मचाया कि आये-आये। अब कोई गले मिलता है, कोई मारे मुहब्बत के उठाके दे मारता है। सारा मुहल्ला कह रहा है कि तुमने तो रूम में वह काम किया कि झंडे गाड़ दिये। घर में जो खबर हुई तो लौंडी ने आकर सलाम किया। हुजूर आइए, बेगम साहब बड़ी देर से इंतजार कर रही हैं। मैंने कहा, क्योंकर चलूं? जब यह इतने भूत छोड़ें भी। कोई इधर घसीट रहा है, कोई उधर और यहां जान अजाब में है।

मीडा-घर का हाल बयान करो। वहां क्या बातें हुईं?

खोजी-दालान तक बीवी नंगे पांव इस तरह दौड़ी आयीं कि हांफ गयीं।

मीडा-नंगे पांव क्यों? क्या तुम लोगों में जूता नहीं पहनते?

खोजी-पहनते क्यों नहीं; मगर जूता तो हाथ में था।

मीडा-हाथ से और जूते से क्या वास्ता?

खोजी-आप इन बातों को क्या समझें।

मीडा-तो आखिर कुछ कहोगे भी?

खोजी-इसका मतलब यह है कि मियां अंदर कदम रखें और हम खोपड़ी सुहला दें।

मीडा-क्या यह भी कोई रस्म है?

खोजी-यह सब अदाएं हमने सिखायी हैं। इधर हम घर में घुसे, उधर बेगम साहबा ने जूतियां लगायीं। अब हम छिपें तो कहां छिपें, कोई छोटा-मोटा आदमी हो तो इधर-उधर छिप रहे, हम यह डील-डौल लेके कहां जायें?

क्लारिसा-सच तो है; कद क्या है, ताड़ है !

मीडा-क्या तुम्हारी बीवी भी तुम्हारी ही तरह ऊंचे कद की हैं?

खोजी-जनाब, मुझसे पूरे दो हाथ ऊंची हैं। आकर बोलीं, इतने दिनों के बाद आये तो क्या लाये हो? मैंने तमगा दिखा दिया तो खिल गयीं। कहां, हमारे पास आजकल बाट न थे अब इससे तरकारी तौला करूंगी।

मीडा-क्या पत्थर का तमगा है? क्या खूब कदर की है।

क्लारिसा-और तुम्हें तमगा कब मिला?

खोजी-कहीं ऐसा कहना भी नहीं।

इतने में आज़ाद पाशा चुपके से आगे बढ़े और कहा–आदाब अर्ज है। आज तो आप खासे रईस बने हुए हैं?

खोजी–भाईजान, वह रंग जमाया कि अब खोजी ही खोजी हैं।

आज़ाद–भई, इस वक्त एक बड़ी फिक्र में हूं। अलारक्खी का हाल तो जानते ही हो। आजकल यह नवाब वाजिद हुसैन के महल में है। उससे एक बार मिलने की धुन सवार है। बतलाओ, क्या तदबीर करूं?

खोजी–अजी, यह लटके हमसे पूछो। यहां सारी जिंदगी यही किया किये हैं। किसी चूड़ी वाली को कुछ दे-दिला कर राजी कर लो।

आज़ाद के दिल में भी यह बात जम गयी। जाकर एक चूड़ी वाली को बुला लाये।

आज़ाद–क्यों भलेमानस, तुम्हारी पैठ तो बड़े-बड़े घरों में होगी। अब यह बताओ कि हमारे भी काम आओगी? अगर कोई काम निकले तो कहें, वरना बेकार है।

चूड़ी वाली–अरे, तो कुछ मुंह से कहिएगा भी? आदमी का काम आदमी ही से तो निकलता है।

आज़ाद–नवाब वाजिद हुसैन को जानती हो?

चूड़ी वाली–अपना मतलब कहिए।

आज़ाद–बस उन्हीं के महल में एक पैगाम भेजना है।

चूड़ी वाली–आपका तो वहां गुजर नहीं हो सकता। हां, आपका पैगाम वहां तक पहुंचा दूंगी। मामला जोखिम का है, मगर आपके खातिर कर दूंगी।

आज़ाद–तुम सुरैया बेगम से इतना कह दो कि आज़ाद ने आपको सलाम कहा है।

चूड़ी वाली–आज़ाद आपका नाम है या किसी और का?

आज़ाद–किसी और के नाम या पैगाम से हमें क्या वास्ता। मेरी यह तसवीर ले लो, मौका मिले तो दिखा देना।

चूड़ी वाली ने तसवीर टोकरे में रखी और नवाब वाजिद हुसैन के घर चली। सुरैया बेगम कोठे पर बैठी दरिया की सैर कर रहीं थीं। चूड़ी वाली ने जाकर सलाम किया।

सुरैया–कोई अच्छी चीज लायी हो या खाली-खाली आयी हो?

चूड़ी वाली–हुजूर, वह चीज लायी हूं कि देखकर खुश हो जाइएगा; मगर इनाम भरपूर लूंगी।

सुरैया–क्या है, जरा देखूं तो?

चूड़ी वाली ने बेगम साहबा के हाथों में तसवीर रख दी। देखते ही चौंक के बोलीं, सच बताना कहां पायी?

चूड़ी वाली–पहले यह बतलाइए कि यह कौन साहब हैं और आपसे कभी की जान-पहचान है कि नहीं?

सुरैया–बस यह न पूछो, यह बतलाओ कि तसवीर कहां पायी?

चूड़ी वाली–जिनकी यह तसवीर है, उनको आपके सामने लाऊं तो क्या इनाम पाऊं?

सुरैया–इस बारे में मैं कोई बातचीत करना नहीं चाहती। अगर वह खैरियत से लौट आये हैं तो खुश रहें और उनके दिल की मुरादें पूरी हों।

चूड़ी वाली-हुजूर, यह तसवीर उन्होंने मुझको दी। कहा, अगर मौका हो तो हम भी एक नजर देख लें।

सुरैया-कह देना कि आज़ाद, तुम्हारे लिए दिल से दुआ निकलती हैं, मगर पिछली बातों को जाने दो, हम पराये बस में हैं और मिलने में बदनामी है। हमारा दिल कितना ही साफ हो, मगर दुनिया को तो नहीं मालूम है, नवाब साहब को मालूम हो गया, तो उनका दिल कितना दुखेगा।

चूड़ी वाली-हुजूर, एक दफा मुखड़ा तो दिखा दीजिए; इन आंखों की कसम, बहुत तरस रहे हैं।

सुरैया-चाहे जो हो, जो बात खुदा को मंजूर थी, वह हुई और उसी में अब हमारी बेहतरी है। यह तसवीर यहीं छोड़ जाओ, मैं इसे छिपाकर रखूंगी।

चूड़ी वाली-तो हुजूर, क्या कह दूं। साफ टका-सा जवाब !

सुरैया-नहीं, तुम समझा कर कह देना कि तुम्हारे आने से जितनी खुशी हुई, उसका हाल खुदा ही जानता है। मगर अब तुम यहां नहीं आ सकते और न मैं ही कहीं जा सकती हूं; और फिर अगर चोरी-छिपे एक-दूसरे को देख भी लिया तो क्या फायदा। पिछली बातों को अब भूल जाना ही मुनासिब है। मेरे दिल में तुम्हारी बड़ी इज्जत है। पहले मैं तुमसे गरज की मुहब्बत करती थी, अब तुम्हारी पाक मुहब्बत करती हूं। खुदा ने चाहा तो शादी के दिन हुस्नआरा बेगम के यहां मुलाकात होगी।

यह वही अलारक्खी हैं जो सराय में चमकती हुई निकलती थीं। आज उन्हें परदे और हया का इतना खयाल है। चूड़ी वाली ने जाकर यहां की सारी दास्तान आज़ाद को सुनायी। आज़ाद बेगम की पाकादामनी की घंटों तारीफ करते रहे। यह सुनकर उन्हें बड़ी तस्कीन हुई कि शादी के दिन वह हुस्नआरा बेगम के यहां जरूर आयेंगी।

एक सौ सात

मियां आज़ाद सैलानी तो थे ही, हुस्नआरा से मुलाकात करने के बदले कई दिन तक शहर में मटरगश्ती करते रहे, गोया हुस्नआरा की याद ही नहीं रही। एक दिन सैर करते-करते वह एक बाग में पहुंचे और एक कुर्सी पर जा बैठे। एकाएक उनके कान में आवाज आई-

चले हम ऐ जुनूं जब फस्ले गुल में सैर गुलशन को;
एवज फूलों के पत्थर से भरा गुलची ने दामन को।
समझ कर चांद हमने यार तेरे रूए रौशन को;
कहा बाले को हाला और महे नौ ताके गरदन को।
जो वह तलवार खींचे तो मुकाबिल कर दूं मैं दिल को;
लड़ाऊं दोस्त से अपने मैं उस पहलू के दुश्मन को।
करूं आहें तो मुंह को ढांपकर वह शोख कहता है-
हवा से कुछ नहीं है डर चिरागे जेर दामन को।

तवाजा चाहते हो जाहिदो क्या बाद:ख्वारों से;
कहीं झुकते भी देखा है भला शीशे की गर्दन को।

आज़ाद के कान खड़े हुए कि यह कौन गा रहा है। इतने में एक खिड़की खुली और एक चांद-सी सूरत उनके सामने खड़ी नजर आयी। मगर इत्तिफाक से उसकी नजर इन पर नहीं पड़ी। उसने अपना रंगीन हाथ माथे पर रखकर किसी हमजोली को पुकारा, तो आज़ाद ने यह शेर पढ़ा–

हाथ रखता है वह बुत अपनी भौंहों पर इस तरह,
जैसे मेहराब पर अल्लाह लिखा होता है।

उस नाजनीन ने आवाज सुनते ही उन पर नजर डाली और दरीचा बंद कर लिया। दुपट्टे को जो हवा ने उड़ा दिया तो आधा खिड़की के इधर और आधा उधर। इस पर उस शोख ने झुंझलाकर कहा–यह निगोड़ा दुपट्टा भी मेरा दुश्मन हुआ है।

आज़ाद–अल्लाह रे गजब, दुपट्टे पर भी गुस्सा आता है !

सनम–ऐ यह कौन बोला? लोगो, देखो तो, इस बाग में मरघट का मुर्दा कहां से आ गया?

सहेली–ऐ कहां, बहन, हां-हां, वह बैठा है, मैं तो डर गई।

सनम अख्खाह, यह तो कोई सिड़ी-सा मालूम होता है।

आज़ाद–या खुदा, यह आदमजाद हैं या कोहकाफ की परियां?

सनम–तुम यहां कहां से भटकते आ गये?

आज़ाद–भटकते कोई और होंगे हम तो अपनी मंजिल पर पहुंच गये।

सनम–मंजिल पर पहुंचना दिल्लगी नहीं है, अभी दिल्ली दूर है।

आज़ाद–यह कहां का दस्तूर है कि कोई जमीन पर हो, कोई आसमान पर? आप सवार, मैं पैदल, भला क्योंकर बने !

सनम–और सुनो, आप तो पेट से पांव निकालने लगे, अब यहां से बोरिया-बंधना उठाओ और चलता धंधा करो।

आज़ाद–इताना हुक्म दो कि करीब से दो-दो बातें कर लें।

सनम–वह काम क्यों करें जिसमें फसाद का डर है।

सहेली–ऐ बुला लो, भले आदमी मालूम होते हैं। (आज़ाद से) चले आइए साहब, चले आइए।

आज़ाद खुश-खुश उठे और कोठे पर जा पहुंचे।

सनम–वाह बहन, वाह, एक अजनबी को बुला लिया ! तुम्हारी भी क्या बातें हैं।

आज़ाद–भई, हम भी आदमी हैं। आदमी को आदमी से इतना भागना न चाहिए।

सनम–हजरत, आपके भले ही के लिए कहती हूं, यह बड़े जोखिम की जगह है। हां, अगर सिपाही आदमी हो तो तुम खुद ताड़ लोगे।

आज़ाद ने जो यह बातें सुनीं तो चक्कर में आये कि हिन्दोस्तान से रूस तक हो आये और किसी ने चूं तक न की, और यहां इस तरह की धमकी दी जाती है। सोचे कि अगर यह सुनकर यहां से भाग जाते हैं तो यह दोनों दिल में हंसेंगी और अगर ठहर जायें तो आसार बुरे नजर आते हैं। बातों-बातों में उस नाजनीन से पूछा–यह क्या भेद है?

सनम—यह न पूछो भई, हमारा हाल बयान करने के काबिल नहीं।

आज़ाद—आखिर कुछ मालूम तो हो, तुम्हें यहां क्या तकलीफ है? मुझे तो कुछ दाल में काला जरूर मालूम होता है।

सनम—जनाब, यह जहन्नुम है और हमारी जैसी कितनी ही औरतें इस जहन्नुम में रहती हैं। यों कहिए कि हमीं से यह जहन्नुम आबाद है। एक कुन्दन नामी बुढ़िया बरसों से यही पेशा करती है। खुदा जाने, इसने कितने घर तबाह किये। अगर मुझसे पूछो कि तेरे मां-बाप कहां हैं, तो मैं क्या जवाब दूं, मुझे इतना ही मालूम है कि यह बुढ़िया मुझे किसी गांव से पकड़ लायी थी। मेरे मां-बाप ने बहुत तलाश की, मगर इसने मुझे घर से निकलने न दिया। उस वक्त मेरा सिन चार-पांच साल से ज़्यादा न था।

आज़ाद—तो क्या यहां सब ऐसी ही जमा हैं।

सनम—यह जो मेरी सहेली हैं, किसी बड़े आदमी की बेटी हैं। कुन्दन उनके यहां आने-जाने लगी और उन सबों से इस तरह की सांठ-गांठ की कि औरतें इसे बुलाने लगीं। उनको क्या मालूम था कि कुन्दन के यह हथकंडे हैं।

आज़ाद—भला कुन्दन से मेरी मुलाकात हो तो उससे कैसी बातें करूं !

सनम—वह इसका मौका ही न देगी कि तुम कुछ कहो। जो कुछ कहना होगा, वह खुद कह चलेगी। लेकिन जो तुमसे पूछे कि तुम यहां क्योंकर आये?

आज़ाद—मैं कह दूंगा कि तुम्हारा नाम सुनकर आया।

सनम—हां, इस तरकीब से बच जाओगे। जो हमें देखता है, समझता है कि यह बड़ी खुशनसीब हैं। पहनने के लिए अच्छे से अच्छे कपड़े, खाने के लिए अच्छे से अच्छे खाने, रहने के लिए बड़ी से बड़ी हवेलियां, दिल बहलाव के लिए हमजोलियां सब कुछ हैं; मगर दिल को खुशी और चैन नहीं। बड़ी खुशनसीब वे औरतें हैं जो एक मियां के साथ तमाम उम्र काट देती हैं। मगर हम बदनसीब औरतों के ऐसे नसीब कहां? उस बुढ़िया को खुदा गारत करे जिसने हमें कहीं का न रखा।

आज़ाद—मुझे यह सुनकर बहुत अफसोस हुआ। मैंने तो यह समझा था कि यहां सब चैन ही चैन है, मगर अब मालूम हुआ कि मामला इसका उलटा है।

सनम—हजारों आदमियों से बातचीत होती है, मगर हमारे साथ शादी करने को कोई पतियाता ही नहीं। कुन्दन से सब डरते हैं। शोहदे-लुच्चों की बात का एतबार क्या, दो-एक ने निकाह का वादा किया भी तो पूरा न किया।

यह कहकर वह नाजनीन रोने लगी।

आज़ाद ने समझाया कि दिल को ढाढ़स दो और यहां से निकलने की हिकमत सोचो।

सनम—खुदा बड़ा कारसाज है, उसको काम करते देर नहीं लगती, मगर अपने गुनाहों को जब देखते हैं तो दिल गवाही नहीं देता कि हमें यहां से छुटकारा मिलेगा।

आज़ाद—मैं तो अपनी तरफ से जरूर कोशिश करूंगा।

सनम—तुम मर्दों की बात का एतबार करना फजूल है।

आज़ाद—वाह ! क्या पांचों उंगलियां बराबर होती हैं?

इतने में एक और हसीना आकर खड़ी हो गयी। इसका नाम नूरजान था। आज़ाद

ने उससे कहा–तुम भी अपना कुछ हाल कहो। यहां कैसे आ फंसी?

नूर–मियां, हमारा क्या हाल पूछते हो, हमें आपन हाल खुद ही नहीं मालूम। खुदा जाने, हिन्दू के घर जन्म लिया या मुसलमान के घर पैदा हुई। इस मकान की मालिक एक बुढ़िया है, उसके काटे का मंत्र नहीं, उसका यही पेशा है कि जिस तरह हो कमसिन और खूबसूरत लड़कियों को फुसलाकर ले आये। सारा जमाना उसके हथकंडों को जानता है, मगर किसी से आज तक बंदोबस्त नहीं हो सका। अच्छे-अच्छे महाजन और व्यापारी उसके मकान पर माथा रगड़ते हैं, बड़े-बड़े शरीफजादे उसका दम भरते हैं। शाहजादों तक के पास इसकी पहुंच है, सुनते थे कि बुरे काम का नतीजा बुरा होता है, मगर खुदा जाने, बुढ़िया को इन बुरे कामों की सजा क्यों नहीं मिलती? इस चुड़ैल ने खूब रुपये जमा किये हैं और इतना नाम कमाया है कि दूर-दूर तक मशहूर हो गयी है।

आज़ाद–तुम सब की सब मिलकर भाग क्यों नहीं जातीं?

सनम–भाग जायें तो फिर खायें क्या, यह तो सोचो।

आज़ाद–इसने अपनी मक्कारी से इस कदर तुम सबको बेवकूफ बना रखा है।

सनम–बेवकूफ नहीं। बनाया है, यह बात सही है, खाने भर का सहारा तो हो जाय।

आज़ाद–तुम्हारी आंख पर गफलत की पट्टी बांध दी है। तुम इतना नहीं सोचतीं कि तुम्हारी बदौलत तो इसने इतना रुपया पैदा किया और तुम खाने को मुंहताज रहोगी? जो पसंद हो उसके साथ शादी कर लो और आराम से जिंदगी बसर करो।

सनम–यह सच है, मगर उसका रोब मारे डालता है।

आज़ाद–उफ रे रोब, यह बुढ़िया भी देखने के काबिल है।

सनम–इस तरह की माठी-मीठी बातें करेगी कि तुम भी उसका कलमा पढ़ने लगोगे।

आज़ाद–अगर मुझे हुक्म दीजिए तो मैं कोशिश करूं।

सनम–वाह, नेकी और पूछ-पूछ? आपका हमारे ऊपर बड़ा एहसान होगा। हमारी जिंदगी बरबाद हो रही है। हमें हर रोज गालियां देती है और हमारे मां-बाप को कोसा करती है। गो उन्हें आंखों से नहीं देखा, मगर खून का जोश कहां जाय?

इस फिकरे से आजाद की आंखें भी डबडबा आयीं, उन्होंने ठान ली कि इस बुढ़िया को जरूर सजा करायेंगे।

इतने में सहेली ने आकर कहा–बुढ़िया आ गयी है, धीरे-धीरे बातें करो।

आज़ाद ने सनम के कान में कुछ कह दिया और दोनों की दोनों चली गयीं।

कुंदन–बेटा, आज एक और शिकार किया, मगर अभी बतायेंगे नहीं। यह दरवाजे पर कौन खड़ा था?

सनम–कोई बहुत बड़े रईस हैं, आपसे मिलना चाहते हैं।

कुन्दन ने फौरन आज़ाद को बुला भेजा और पूछा, किसके पास आये हो बेटा ! क्या काम है?

आज़ाद–मैं खास आपके पास आया हूं।

कुन्दन–अच्छा बैठो। आजकल बे-फसल की बारिश से बड़ी तकलीफ होती है, अच्छी वह फसल कि हर चीज वक्त पर हो, बरसात हो तो मेंह बरसे, सर्दी के मौसम में सर्दी खूब हो और गर्मी में लू चलें, मगर जहां कोई बात बे-मौसम की हुई और बीमारी

पैदा हो गयी।

आज़ाद-जी हां, कायदे की बात है !

कुन्दन-और बेटा, हजार बात की एक बात है कि आदमी बुराई से बचे। आदमी को याद रखना चाहिए कि एक दिन उसको मुंह दिखाना है, जिसने उसे पैदा किया। बुरा आदमी किस मुंह से मुंह दिखायेगा?

आज़ाद-क्या अच्छी बात आपने कही है, है तो यही बात। !

कुन्दन-मैंने तमाम उम्र इसी में गुजारी कि लावारिस बच्चों की परवरिश करूं, उनको खिलाऊं-पिलाऊं और अच्छी-अच्छी बातें सिखाऊं। खुदा मुझे इसका बदला दे तो वाह-वाह, वरना और कुछ फायदा न सही, तो इतना फायदा तो है कि इन बेकसों की मेरी जात से परवरिश हुई।

आज़ाद-खुदा जरूर इसका सवाब देगा।

कुन्दन-तुमने मेरा नाम किससे सुना?

आज़ाद-आपके नाम की खुशबू दूर-दूर तक फैली हुई है।

कुन्दन-वाह, मैं तो कभी किसी से अपनी तारीफ ही नहीं करती। जो लड़कियां मैं पालती हूं उनको बिलकुल अपने खास बेटों की तरह समझती हूं। क्या मजाल कि जरा भी फर्क हो। जब देखा कि वह सयानी हुई तो उनको किसी अच्छे घर ब्याह दिया, मगर खूब देखभाल के। शादी मर्द और औरत की रजामंदी से होनी चाहिए।

आज़ाद-यही शादी के माने हैं।

कुन्दन-तुम्हारी उम्र दराज हो बेटा, आदमी जो काम करे, अक्ल से, हर पहलू को देखभाल के।

आज़ाद-बगैर इसके मियां-बीबी में मुहब्बत नहीं हो सकती-और यों जबरदस्ती की तो बात ही और है।

कुन्दन-मेरा कायदा है कि जिस आदमी को पढ़ा-लिखा देखती हूं उसके सिवा और किसी से नहीं ब्याहती और लड़की से पूछ लेती हूं कि बेटा, अगर तुमको पसंद हो तो अच्छा, नहीं कुछ जबरदस्ती नहीं है।

यह कहकर उसने महरी को इशारा किया। आज़ाद ने इशारा करते तो देखा, मगर उनकी समझ में न आया कि इसके क्या माने हैं। महरी फौरन कोठे पर गयी और थोड़ी ही देर में कोठे से गाने की आवाजें आने लगीं।

कुन्दन-मैंने इन सबको गाना भी सिखाया है, गो यहां इसका रिवाज नहीं।

आज़ाद-तमाम दुनिया में औरतों को गाना-बजाना सिखाया जाता है।

कुन्दन-हां, बस एक इस मुल्क में नहीं।

आज़ाद-यह तो तीन की आवाजें मालूम होती हैं, मगर इनमें से एक का गला बहुत साफ है।

कुन्दन-एक तो उनका दिल बहलता है, दूसरे जो सुनता है उसका भी दिल बहलता है।

आज़ाद-मगर आपने कुछ पढ़ाया भी है या नहीं?

कुन्दन-देखो बुलवाती हूं, मगर बेटा, नीयत साफ रखनी चाहिए।

उस ठगों की बुढ़िया ने सबसे पहले नूर को बुलाया। वह लजाती हुई आई और बुढ़िया के पास इस तरह गर्दन झुका के बैठी जैसे कोई शरमीली दुलहन।

आज़ाद–ऐ साहब, सिर ऊंचा करके बैठो, यह क्या बात है?

कुन्दन–बेटा, अच्छी तरह से बैठो सिर उठाकर। (आज़ाद से) हमारी सब लड़कियां शरमीली और हयादार हैं।

आज़ाद–यह आप ऊपर क्या गा रही थीं? हम भी कुछ सुनें।

कुन्दन–बेटी नूर, वही गजल गाओ।

नूर–अम्मांजान, हमें शर्म आती है।

कुन्दन–कहती है, हमें शर्म आती है, शर्म की क्या बात है, हमारी खातिर से गाओ।

नूर–(कुन्दन के कान में) अम्मांजान, हमसे न गाया जाएगा।

आज़ाद–यह नयी बात है–

अकड़ता है क्या देख-देख आईना,
हसीं गरचे है तू पर इतना घमंड।

कुन्दन–लो, इन्होंने गा के सुना दिया।

महरी–कहिए, हुजूर, दिल का पर्दा क्या कम है जो आप मारे शर्म के मुंह छिपाए लेती हैं। ऐ बीबी, गर्दन ऊंची करो, जिस दिन दुलहन बनोगी, उस दिन इस तरह बैठना तो कुछ मुजायका नहीं है।

कुन्दन–हां, बात तो यही है, और क्या?

आज़ाद–शुक्र है, आपने जरा गर्दन तो उठाई–

बात सब ठीक-ठाक है, पर अभी
कुछ सवालो-जवाब बाकी है।

कुन्दन–(हंसकर) अब तुम जानो और यह जाने।

आज़ाद–ऐ साहब, इधर देखिए।

नूर–अम्मांजान, अब हम यहां से आते हैं।

कुन्दन ने चुटकी लेकर कहा–कुछ बोलो जिसमें इनका भी दिल खुश हो, कुछ जवाब दो, यह क्या बात है।

नूर–अम्मांजान, किसको जवाब दूं? न जान, न पहचान।

कुन्दन इन कामों में आठों गांठ कुम्मैत, किसी बहाने से हट गई। नूर ने भी बनावट के साथ चाहा कि चली जाए, इस पर कुंदन ने डांट बताई–हैं-हैं, यह क्या, भलेमानस हैं या कोई नीच कौम? शरीफों से इतना डर !

आखिर नूर शरमाकर बैठ गई। उधर कुन्दन नजर से गायब हुई, इधर महरी भी चंपत।

आज़ाद–यह बुढ़िया तो एक ही झांइयां है।

नूर–अभी देखते जाओ, यह अपने नजदीक तुमको उम्र भर के लिए गुलाम बनाए लेती है, जो हमने पहले से इसका हाल न बयान कर दिया होता तो तुम भी चंग पर चढ़ जाते।

आज़ाद–भला यह क्या बात है कि तुम उसके सामने इतना शरमाती रहीं?

नूर—हमको जो सिखाया है वह करते हैं, क्या करें?

आज़ाद—अच्छा, उन दोनों को क्यों न बुलाया?

नूर—देखते जाओ, सबको बुलायगी।

इतने में महरी पान, इलायची और इत्र लेकर आई।

आज़ाद—महरी साहब, यह क्या अंधेर है? आदमी आदमी से बोलता है या नहीं?

महरी—ऐ बीबी, तुमने क्या बोलने की कसम खा ली है? ले अब हमसे तो बहुत न उड़ो। खुदा झूठ न बुलाए तो बातचीत तक नौबत आ चुकी होगी और हमारे सामने घूंघट किए लेती हैं।

आज़ाद—गरदन तक तो ऊंची नहीं करतीं, बोलना-चालना कैसा, या तो बनती हैं या अम्मांजान से डरती हैं।

महरी—वाह-वाह, हुजूर, वाह भला यह काहे से जान पड़ा कि बनती हैं? क्या यह नहीं हो सकता कि आंखों की हया के सबब से लजाती हों?

आज़ाद—वाह, आंखें कहे देती हैं कि नीयत कुछ और है।

नूर—खुदा की संवार झूठे पर।

महरी—शाबाश, बस यह इसी बात की मुंतजिर थीं। मैं तो समझे ही बैठी थी कि जब यह जबान खोलेंगी, फिर बंद ही कर छोड़ेंगी।

नूर—हमें भी कोई गंवार समझा है क्या?

आज़ाद—वल्लाह, इस वक्त इनका त्योरी चढ़ाना अजब लुत्फ देता है। इनके जौहर तो अब खुले। इनकी अम्मांजान कहां चली गईं? जरा उनको बुलवाइए तो।

महरी—हुजूर, उनका कायदा है कि अगर दो दिल मिल जाते हैं तो फिर निकाह पढ़वा देती हैं, मगर मर्द भलामानस हो, चार पैसे पैदा करता हो। आप पर तो कुछ बहुत ही मिहरबान नजर आती हैं कि दो बातें होते ही उठ गईं, वरना महीनों जांच हुआ करती है, आपकी शक्ल-सूरत से रियासत बरसती है !

नूर—वाह, अच्छी फबती कही, बेशक रियासत बरसती है।

यह कह नूर ने आहिस्ता-आहिस्ता गाना शुरू किया।

आज़ाद—मैं तो इनकी आवाज पर आशिक हूं।

नूर—खुदा की शान, आप क्या और आपकी कदरदानी क्या !

आज़ाद—दिल में तो खुश हुई होंगी, क्यों महरी?

महरी—अब यह आप जानें और वह जानें, हमसे क्या?

एकाएक नूर उठकर चली गई। आज़ाद और महरी के सिवा वहां कोई न रहा, तब महरी ने आज़ाद से कहा—हुजूर ने मुझे पहचाना नहीं, और मैं हुजूर को देखते ही पहचान गई, आप सुरैया बेगम के यहां आया-जाया करते थे।

आज़ाद—हां, अब याद आया, बेशक मैंने तुमको उनके यहां देखा था; कहो, मालूम है कि अब वह कहां हैं?

महरी—हुजूर, अब वह वहां हैं जहां चिड़िया भी नहीं जा सकती; मगर कुछ इनाम दीजिए, तो दिखा दूं। दूर ही से बात-चीत होगी। एक रईस आज़ाद नाम के थे, उन्हीं के इश्क में जोगिन हो गईं। जब मालूम हुआ कि आज़ाद ने हुस्नआरा से शादी कर ली

तो मजबूर होकर एक नवाब से निकाह पढ़वा लिया। आज़ाद ने यह बहुत बुरा किया। जो अपने ऊपर जान दे, उसके साथ ऐसी बेवफाई न करनी चाहिए।

आज़ाद–हमने सुना है कि आज़ाद उन्हें भठियारी समझकर निकल भागे।

महरी–अगर आप कुछ दिलवाएं तो मैं बीड़ा उठाती हूं कि एक नजर अच्छी तरह दिखा दूंगी।

आज़ाद–मंजूर, मगर बेईमानी की सनद नहीं।

महरी–क्या मजाल, इनाम पीछे दीजिएगा, पहले एक कौड़ी भी न लूंगी।

महरी ने आज़ाद से यहां का सारा कच्चा चिट्ठा कह सुनाया–मियां, यह बुढ़िया जितनी ऊपर है, उतनी ही नीचे है, इसके काटे का मंत्र नहीं। पर आज़ाद को सुरैया बेगम की धुन थी। पूछा–भला उनका मकान हम देख सकते हैं?

महरी–जी हां, यह क्या सामने है।

आज़ाद–और यह जितनी यहां है, सब इसी फैशन की होंगी?

महरी–किसी को चुरा लाई है, किसी को मोल लिया है, बस कुछ पूछिए न?

इतने में किसी ने सीटी बजाई और महरी फौरन उधर चली गई। थोड़ी ही देर में कुन्दन आई और कहा–ऐं, यहां तुम बैठे हो, तोबा-तोबा मगर लड़कियों को (महरी को पुकारकर) क्या करूं, इतनी शरमीली हैं कि जिसकी कोई हद ही नहीं। ऐ, उनको बुलाओ, कहो, यहां आकर बैठें। यह क्या बात है? जैसे कोई काटे खाता है।

यह सुनते ही सनम छम-छम करती हुई आई। आज़ाद ने देखा तो होश उड़ गए, इस मतरबा गजब का निखार था। आजाद अपने दिल में सोचे कि यह सूरत और यह पेशा। ठान ली कि किसी मौके पर जिले के हाकिम को जरूर लाएंगे और उनसे कहेंगे कि खुदा के लिए इन परियों को इस मक्कार औरत से बचाओ।

कुन्दन ने सनम के हाथ में एक पंखा दे दिया और झलने को कहा। फिर आज़ाद से बोली–अगर किसी चीज की जरूरत हो तो बयान कर दो।

आज़ाद–इस वक्त दिल वह मजे लूट रहा है कि जो बयान से बाहर है।

कुन्दन–मेरे यहां सफाई का बहुत इंतजाम है।

आज़ाद–आपके कहने की जरूरत नहीं।

कुन्दन–यह जितनी हैं सब एक से एक बढ़ी हुई हैं।

आज़ाद–इनके शौहर भी इन्हीं के से हों तो बात है।

कुन्दन–इसमें किसी के सिखाने की जरूरत नहीं। मैं इनके लिए ऐसे लोगों को चुनूंगी जिनका कहीं सानी न हो। इनको सिखाया, पिलाया, गाना सिखाया, अब इन पर जुल्म कैसे बरदाश्त करूंगी?

आज़ाद–और तो और, मगर इनको तो आपने खूब ही सिखाया।

कुन्दन–अपना-अपना दिल है, मेरी निगाह में तो सब बराबर, आप दो-चार दिन यहां रहें, अगर इनकी तबीयत ने मंजूर किया तो इनके साथ आपका निकाह कर दूंगी, बस अब तो खुश हुए।

महरी–वह शर्तें तो बता दीजिए!

कुन्दन–खबरदार, बीच में न बोल उठा करो, समझी?

महरी–हां, हुजूर, खता हुई।

आज़ाद–फिर अब तो शर्तें बयान ही कर दीजिए न।

कुन्दन–इत्मीनान के साथ बयान करूंगी।

आज़ाद–(सनम से) तुमने तो हमें अपना गुलाम ही बना लिया।

सनम ने कोई जवाब न दिया।

आज़ाद–अब इनसे क्या कोई बात करे–

गवारा नहीं है जिन्हें बात करना,
सुनेंगे वह काहे को किस्सा हमारा।

कुन्दन–ऐ हां, यह तुममें क्या ऐब है? बातें करो बेटा।

सनम–अम्मांजान, कोई बात नहीं हो तो क्या मुजायका और यों ख्वामख्वाह एक अजनबी से बातें करना कौन-सी दानाई है।

कुन्दन–खुदा को गवाह करके कहती हूं कि यह सबकी सब बड़ी शरमीली हैं।

आज़ाद को इस वक्त याद आया कि एक दोस्त से मिलने जाना है, इसलिए कुन्दन से रुखसत मांगी और कहा कि आज माफ कीजिए, कल हाजिर होऊंगा, मगर अकेले आऊं, या दोस्तों को भी साथ लेता आऊं? कुन्दन ने खाना खाने के लिए बहुत जिद की मगर आज़ाद ने न माना।

आज़ाद ने अभी बाग के बाहर भी कदम नहीं रखा था कि महरी दौड़ी आई और कहा–हुजूर को बीबी बुलाती हैं। आज़ाद अंदर गए तो क्या देखते हैं कि कुन्दन के पास सनम और उसकी सहेली के सिवा एक और कामिनी बैठी हुई है जो आन-बान में उन दोनों से बढ़कर है।

कुन्दन–यह एक जगह गई हुई थीं, अभी डोली से उतरी हैं। मैंने कहा, तुमको जरा दिखा दूं कि मेरा घर सचमुच परिस्तान है, मगर बदी करीब नहीं आने पाती।

आज़ाद–बेशक, बदी का यहां जिक्र ही क्या है?

कुन्दन–सबसे मिलजुल के चलना और किसी का दिल न दुखाना मेरा उसूल है, मुझे आज तक किसी से लड़ते न देखा होगा।

आज़ाद–यह तो सबों से बढ़-चढ़कर हैं।

कुन्दन–बेटा, सभी घर-गृहस्थ की बहू-बेटियां हैं, कहीं आएं न जाएं, न किसी से हंसी, न दिल्लगी।

आज़ाद–बेशक, हमें आपके यहां का करीना बहुत पसंद आया।

कुन्दन–बोलो बेटा, मुंह से कुछ बोलो, देखो, एक शरीफ आदमी बैठे हैं और तुम न बोलती हो न चालती हो।

परी–क्या करूं, आप ही आप बकूं?

कुन्दन–हां, यह भी ठीक है, वह तुम्हारी तरफ मुंह करके बात-चीत करें तब बोलो। लीजिए साहब, अब तो आप ही का कुसूर ठहरा।

आज़ाद–भला सुनिए तो मेहमानों की खातिरदारी भी कोई चीज है या नहीं?

कुन्दन–हां, यह भी ठीक है, अब बताओ बेटा?

परी–अम्मांजान, हम तो सबके मेहमान हैं, हमारी जगह सब के दिल में है, हम

भला किसी की खातिरदारी क्यों करें?

कुन्दन–अब फर्माइए हजरत, जवाब पाया?

आज़ाद–वह जवाब पाया कि लाजवाब हो गया। खैर साहब, खातिरदारी न सही, कुछ गुस्सा ही कीजिए

परी–उसके लिए भी किस्मत चाहिए।

मियां आज़ाद बड़े बोलक्कड़ थे, मगर इस वक्त सिट्टी-पिट्टी भूल गए।

कुन्दन–अब कुछ कहिए, चुप क्यों बैठे हैं?

परी–अम्मांजान, आपकी तालीम ऐसी-वैसी नहीं है कि हम बंद रहें।

कुन्दन–मगर मियां साहब की कलई खुल गई। अरे कुछ तो फर्माइए हजरत–

कुछ तो कहिए कि लोग कहते हैं–
आजा 'गालिब' गजलसरा न हुआ।

आज़ाद–आप शेर भी कहती हैं?

नूर–ऐ वाह, ऐसे घबड़ाए कि 'गालिब' का तखल्लुस मौजूद है और आप पूछते हैं कि आप शेर भी कहती हैं?

परी–आदमी में हवास ही हवास तो है, और है क्या?

सनम–हम जो गरदन झुकाए बैठे थे तो आप बहुत शेर थे, मगर अब होश उड़े हुए हैं।

सहेली–तुम पर रीझे हुए हैं बहन, देखती हो, किन आंखों से घूर रहे हैं।

परी–ऐ हटो भी, एड़ी-चोटी पर कुरबान कर दूं।

आज़ाद–या खुदा, अब हम ऐसे गए-गुजरे हो गए?

परी–और आप अपने को समझे क्या हैं !

कुन्दन–यह हम न मानेंगे, हंसी-दिल्लगी और बात है, मगर यह भी लाख-दो लाख में एक हैं।

परी–अब अम्मांजान कब तक तारीफ किया करेंगी।

आज़ाद–फिर जो तारीफ के काबिल होता है उसकी तारीफ होती ही है।

नूर–उंह-उंह, घर की पुटकी बासी साग।

आज़ाद–जलन होगी कि इनकी तारीफ क्यों की।

नूर–यहां तारीफ की परवा नहीं।

कुन्दन–यह तो खूब कही, अब इसका जवाब दीजिए।

आज़ाद–हसीनों को किसी की तारीफ कब पसंद आती है।

नूर–भला खैर, आप इस काबिल तो हुए कि आपके हुस्न से लोगों के दिल में जलन होने लगी।

कुन्दन–(सनम से) तुमने कुछ सुनाया नहीं बेटा !

सनम–हम क्या कुछ इनके नौकर हैं?

आज़ाद–खुदा के लिए कोई फड़कती हुई गजल गाओ; बल्कि अगर कुन्दन साहब का हुक्म हो तो सब मिलकर गाएं।

सनम–हुक्म, हुक्म तो हम बादशाह-वजीर का मानेंगे।

परी—अब इसी बात पर जो कोई गाए।

कुन्दन—अच्छा, हुक्म कहा तो क्या गुनाह किया, कितनी ढीठ लड़कियां हैं कि नाक पर मक्खी नहीं बैठने देतीं।

सनम—अच्छा, बहन, आओ, मिल-मिलकर गाएं—

ऐ इश्के कमर दिल का जलाना नहीं अच्छा।

परी—यह कहां से बूढ़ी गजल निकाली? यह गजल गाओ—

गया यार अफत पड़ी इस शहर पर;
उदासी बरसने लगी बाम वदर पर।
सबा ने भरी दिन को एक आह ठंडी;
कयामत हुई या दिले नौहागर पर।
मेरे भावे गुलशन को आतश लगी है;
नजर क्या पड़े खाक गुलहाय तर पर।
कोई देव था या कि जिन था वह काफिर;
मुझे गुस्सा आता है पिछले पहर पर।

एकाएक किसी ने बाहर से आवाज दी। कुन्दन ने दरवाजे पर जाकर कहा—कौन साहब हैं?

सिपाही—दारोगा जी आए हैं, दरवाजा खोल दो।

कुन्दन—ऐ तो यहां किसके पास तशरीफ लाए हैं?

सिपाही—कुन्दन कुटनी के यहां आए हैं। यही मकान है या और?

दूसरा सिपाही—हां-हां जी, यही है; हमसे पूछो।

इधर कुन्दन पुलिस वालों से बातें करती थी, इधर आज़ाद तीनों औरतों के साथ बाग में चले गए और दरवाजा बंद कर दिया।

आज़ाद—यह माजरा क्या है भई?

सनम—दौड़ आई है मियां, दरवाजा बंद करे से क्या होगा, कोई तदबीर ऐसी बताओ कि इस घर से निकल भागें।

परी—हमें यहां एक दम का रहना पसंद नहीं।

आज़ाद—किसी के साथ शादी क्यों नहीं कर लेतीं?

नूर—ऐ है ! यह क्या गजब करते हो, आहिस्ता से बोलो।

आज़ाद—आखिर यह दौड़ क्यों आई है, हम भी तो सुनें।

सनम—कल एक भलेमानस आए थे। उनके पास एक सोने की घड़ी, सोने की जंज़ीर, एक बैग, पांच अशर्फियां और कुछ रुपये थे। यह भांप गई। उसको शराब पिलाकर सारी चीजें उड़ा दीं। सुबह को जब उसने अपनी चीजों की तलाश की तो धमकाया कि टर्राओगे तो पुलिस को इत्तला कर दूंगी। वह बेचारा सीधा-सादा आदमी, चुपचाप चला गया और दारोगा से शिकायत की, अब वही दौड़ आई है।

आज़ाद—अच्छा ! यह हथकंडे हैं।

सनम—कुछ पूछो न, जान अजाब में है।

नूर—अब खुदा ही जाने, किस-किसका नाश वह करेगी, क्या आग लगाएगी।

सनम–अजी, वह किसी से दबने वाली नहीं है।

परी–वह न दबेंगी साहब तक से, यह दारोगा लिए फिरती हैं !

सनम–जरी सुनो तो क्या हो रहा है।

आज़ाद ने दरवाजे के पास से कान लगाकर सुना तो मालूम हुआ कि बीबी कुन्दन पुलिस वालों से बहस कर रही हैं कि तुम मेरे घर भर की तालाशी लो। मगर याद रखना, कल ही नालिश करूंगी। मुझे अकेली औरत समझ के धमका लिया है। मैं अदालत चढूंगी। लेना एक न देना दो, उस पर यह अंधेर। मैं साहब से कहूंगी कि इसकी नीयत खराब है, यह रिआया को दिक करता है और पराई बहू-बेटी को ताकता है।

सनम–सुनती हो, कैसा डांट रही है पुलिस वालों को।

परी–चुपचाप, ऐसा न हो, सब इधर आ जाएं।

उधर कुन्दन ने मुसाफिर को कोसना शुरू किया–अल्लाह करे, इस अठवारे में इसका जनाजा निकले। मुए ने आके मेरी जान अजाब में कर दी। मैंने तो गरीब मुसाफिर समझकर टिका लिया था। मुआ उलटा लिए पड़ता है।

मुसाफिर–दारोगा जी, इस औरत ने सैकड़ों का माल मारा है।

सिपाही–हुजूर, यह पहले गुलाम हुसैन के पुल पर रहती थी। वहां एक अहीरिन की लड़की को फुसलाकर घर लाई और उसी दिन मकान बदल दिया। अहीर ने थाने में रपट लिखवाई। हम जो जाते हैं, तो मकान में ताला पड़ा हुआ, बहुत तलाश की, पता न मिला। खुदा जाने, लड़की किसी के हाथ बेच डाली या मर गई।

कुन्दन–हां-हां, बेच डाली, यही तो हमारा पेशा है।

दारोगा–(मुसाफिर से) क्यों हजरत, जब आपको मालूम था कि यह कुटनी है तो आप इसके यहां टिके क्यों?

मुसाफिर–बेधा था, और क्या, दो-ढ़ाई सौ पर पानी फिर गया, मगर शुक्र है कि मार नहीं डाला।

कुन्दन–जी हां, साफ बच गए।

दारोगा–(कुन्दन से) तू जरा भी नहीं शरमाती?

कुन्दन–शरमाऊं क्यों? क्या चोरी की है?

दारोगा–बस खैरियत इसी में है कि इनका माल इनके हवाले कर दो।

कुन्दन–देखिए, अब किसी दूसरे घर डाका डालूं तो इनके रुपये मिलें।

सिपाही–हुजूर, इसे पकड़ के थाने ले चलिए, इस तरह यह न मानेगी?

कुन्दन–थाने में क्यों जाऊं? क्या इज्जत बेचनी है। यह न समझना कि अकेली है। अभी अपने दामाद को बुला दूं तो आंखें खुल जाएं।

यह सुनते ही आज़ाद के होश उड़ गए। बोले–इस मुरदार को सूझी क्या !

महरी–जरा दरवाजा खोलिए।

आज़ाद–खुदा की मार तुझ पर।

कुन्दन–ऐ बेटा, जरी इधर आओ। मर्द की सूरत देखकर शायद यह लोग इतना जुल्म न करें।

दारोगा–अख्खाह, क्या तोप साथ है? हम सरकारी आदमी और तुम्हारे दामाद से

दब जाएं ! अब तो बताओ, इनके रुपये मिलेंगे या नहीं?

कुन्दन एक सिपाही को अलग ले गई और कहा–मैं इसी वक्त दारोगा जी को इस शर्त पर सत्तर रुपये देती हूं कि वह इस मामले को दबा दें। अगर तुम यह काम पूरा कर दो तो दस रुपया तुम्हें भी दूंगी।

दारोगा ने देखा कि यह मक्कार औरत झांसा देना चाहती है तो उसे साथ लेकर थाने चले गए।

आज़ाद–बड़ी बला इस वक्त टली। औरत क्या, सचमुच बला है।

सनम–आपको अभी इससे कहां साबिका पड़ा है।

आज़ाद–मैं तो इतने ही में ऊब उठा।

सनम–अभी यह न समझना कि बला टल गई, हम सब बांधे जाएंगे।

आज़ाद–जरा इसकी शरारत को तो देखो कि मुझे थानेदार से लड़वाए देती थी।

सनम–खुश तो न होंगे कि दामाद बना दिया।

आज़ाद–हम ऐसी सास से बाज आए।

सनम–इस गली से कोई आदमी बिना लुटे नहीं जा सकता। एक औरत को तो इसने जहर दिलवा दिया था।

नूर–पड़ोसिन से कोई जाकर कह दे कि तुम अपनी लड़की का क्यों सत्यानाश करती हो। जो कुछ रूखा-सूखा अल्लाह दे वह खाओ और पड़ी रहो।

महरी–हां और क्या, ऐसे पोलाव से दाल-दलिया ही अच्छी।

सनम–तुम जाके बुला लाओ तो यह समझा दें हीले से।

महरी जाकर पड़ोसिन को बुला लाई। आज़ाद ने कहा–तुम्हारी पड़ोसिन को तो सिपाही ले गए। अब यह मकान हमें सौंप गई हैं। पड़ोसिन ने हंसकर कहा–मियां उनको सिपाही ले ज़ाकर क्या करेंगे? आज गई हैं, कल छूट आएंगी?

इतने में एक आदमी ने दरवाजे पर हाथ मारा। महरी ने दरवाजा खोला तो एक बूढ़े मियां दिखाई दिए। पूछा–बी कुन्दन कहां हैं।

महरी ने कहा–उनको थाने के लोग ले गए।

सनम–एक सिरे से इतने मुकदमे, एक, दो, तीन।

नूर–हर रोज एक नया पंछी फांसती है।

बूढ़े मियां–बस, अब प्याला भर गया।

सनम–रोज तो यही सुनती हूं कि प्याला भर गया।

बूढ़े मियां–अब मौका पाके तुम सब कहीं चल क्यों नहीं देती हो? अब इस वक्त तो वह नहीं है।

सनम–जाएं तो बे-सोचे-समझे कहां जाएं।

आज़ाद–बस इसी इत्तिफाक को हम लोग किस्मत कहते हैं और इसी का नाम अकबाल है।

बूढ़े मियां–जी हां, आप तो नये आए हैं, यह औरत खुदा जाने, कितने घर तबाह कर चुकी है। पुलिस में भी गिरफ्तार हुई। मजिस्ट्रेटी भी गई। सब कुछ हुआ, सजा पाई, मगर कोई नहीं पूछता। मैं तो यहां तक कहता हूं कि इनमें से जिसका जी चाहे, मेरे साथ

चली चले। किसी शरीफ के साथ निकाह पढ़वा दूंगा, मगर कोई राजी नहीं होती।

एकाएक किसी ने फिर दरवाजे पर आवाज दी, महरी ने दरवाजा खोला तो मम्मन और गुलबाज अंदर दाखिल हुए। दोनों ढाटे बांध हुए थे। महरी उन्हें इशारे से बुलाकर बाग में ले गई।

मम्मन–कुन्दन कहां है?

महरी–वह तो आज बड़ी मुसीबत में फंस गई। पुलिस वाले पकड़ ले गए।

मम्मन–हम तो आज और ही मनसूबे बांधकर आए थे। वह महाजन जो गली में रहते हैं, उनकी बहू अजमेर से आई है।

महरी–हां, मेरा जाना हुआ है। बहुत से रुपये लाई है।

गुलबाज–महाजन गंगा नहाने गया है। परसों तक आ जाएगा। हमने कई आदमियों से कह दिया था; सबके सब आते होंगे।

मम्मन–कुन्दन नहीं है, न सही ! हम अपने काम से क्यों गाफिल रहें। आओ एक-आध चक्कर लगाएं।

इतने में बाग में दरवाजे की तरफ सीटी की आवाज आई। गुलबाज ने दरवाजा खोल दिया और बोला–कौन है, दिलवर?

दिलवर–बस अब देर न करो। वक्त जाता है भाई।

गुलबाज–अरे, यार, आज तो मामला हुच गया।

दिलवर–ऐं ! ऐसा न कहो। दो लाख नकद रख हुआ है। इसमें एक भी कम हो, तो जो जुर्माना कहो दूं।

मम्मन–अच्छा, तो कहीं भागा जाता है?

दिलवर–यह क्या जरूरी है कि कुन्दन ही हो।

मम्मन–भाईजान, एक कुन्दन के न होने से कहीं यार लोग चूकते हैं? और भी कई सबब हैं।

दिलवर–ऐसे मामले में इतनी सुस्ती !

मम्मन–यह सारा कुसूर गुलबाज का है। चंडूबाजी में पड़े छींटे उड़ाया किए, और सारा खेल बिगाड़ दिया।

दिलवर–आज तक इस मामले में ऐसे लौंडे नहीं बने थे। वह दिन याद है कि जब जहूरन की गली में छुरी चली थी?

गुलबाज–मैं उस दिन कहां था?

दिलवर–हां, तुम तो मुर्शिदाबाद चले गए थे। और यहां जहूरन ने हमें इत्तला दी कि सुल्तान मिर्जा चल बसे। सुल्तान मिर्जा के महल्ले में सब मोटे रुपये वाले, मगर उनके मारे किसी की हिम्मत न पड़ती थी कि उनके महल्ले में जायं।

मम्मन–वह तो इस फन का उस्ताद था।

दिलवर–बस जनाब, इधर सुल्तान मिर्जा मरे, उधर जहूरन ने हमें बुलवाया। हम लोग जा पहुंचे। अब सुनिए कि जिस तरफ जाते हैं, कोई गा रहा है, कोई ऐसा नहीं, जहां रोशनी और जाग न हो।

मम्मन–किसी ने पहले से महल्ले वालों को होशियार कर दिया होगा।

दिलवर-जी हां, सुनते तो जाइए। पीछे खुला न। हुआ यह कि जिस वक्त हम लोगों ने जहूरन के दरवाजे पर आवाज दी, तो उनकी मामा ने पड़ोस के मकान में कंकरी फेंकी। उस पड़ोसी ने दूसरे मकान में। इस तरह महल्ले भर में खबर हो गई।

यहां तो ये बातें हो रही थीं, उधर बूढ़े मियां और आज़ाद में कुन्दन को सजा दिलाने के लिए सलाहें होती थीं-

आज़ाद-जिन-जिन लड़कियों को इसने चोरी से बेच लिया है, उन सबों का पता लगाइए।

बूढ़े मियां-अजी, एक-दो हों, तो पता लगाऊं। यहां तो शुमार ही नहीं।

आज़ाद-मैं आज ही हाकिम जिला से इसका जिक्र करूंगा।

इन लोगों से रुखसत होकर आज़ाद मजिस्ट्रेट के बंगले पर आए। पहले अपने कमरे में जाकर मुंह-हाथ धोया, और कपड़े बदलकर उस कमरे में गए, जहां साहब मेहमानों के साथ डिनर खाने बेठे थे। अभी खाना चुना ही जा रहा था कि आज़ाद कमरे में दाखिल हुए। आप शाम का आने का वादा करके गए थे। नौ बजे पहुंचे तो सबने मिलकर कहकहा लगाया।

मेम-क्यों साहब, आपके यहां अब शाम हुई?

साहब-बड़ी देर से आपका इंतजार था।

मीडा-कहीं शादी तो नहीं तय कर आए?

साहब-हां, देर होने से तो हम सबको यही शक हुआ था।

मेम-जब तक आप देर की वजह न बताएंगे, यह शक न दूर होगा। आप लोगों में तो चार शादियां हो सकती हैं।

क्लारिसा-आप चुप क्यों हैं, कोई बहाना सोच रहे हैं?

आज़ाद-अब मैं क्या करूं। यहां तो सब लाल-बुझक्कड़ ही बैठे हैं। कोई चेहरे से ताड़ जाता है, कोई आंखों से पहचान लेता है, मगर इस वक्त मैं जहां था, वहां खुदा किसी को न ले जाए।

साहब-जुवारियों का अड्डा तो नहीं था?

आज़ाद-नहीं वह और ही मामला था। इत्मीनान से कहूंगा।

लोग खाना खाने लगे। साहब के बहुत जोर देने पर भी आज़ाद ने शराब न पी। खाना हो जाने पर लेडियों ने गाना शुरू किया और साहब भी शरीक हुए। उसके बाद उन्होंने आज़ाद से कुछ गाने को कहा।

आज़ाद-आपको इसमें क्या लुत्फ आएगा?

मेम-नहीं, हम हिन्दुस्तानी गाना पसंद करते हैं, मगर जो समझ में आए।

आज़ाद ने बहुत हीला किया, मगर साहब ने एक न माना। आखिर मजबूर होकर यह गजल गाई-

जान से जाती हैं क्या-क्या हसरतें;
काश वह भी दिल में आना छोड़ दे।
'दाग' से मेरे जहन्नुम को मिसाल;
तू भी वायज दिल जलाना छोड़ दे।

परदे की कुछ हद भी है परदानशीं;
खुलके मिल बस मुंह छिपाना छोड़ दे।

मेम–हम कुछ-कुछ समझे। वह जहन्नुम का शेर अच्छा है।

साहब–हम तो कुछ नहीं समझे। मगर कानों को अच्छा मालूम हुआ।

दूसरे दिन आज़ाद तड़के कुंदन के मकान पर पहुंचे और महरी से बोले–क्यों भाई, तुम सुरैया बेगम को किसी तरह दिखा सकती हो?

महरी–भला मैं कैसे दिखा दूं? अब तो मेरी वहां पहुंच ही नहीं।

आज़ाद–खुदा गवाह है, फकत एक नजर भर देखना चाहता हूं।

महरी–खैर, अब आप कहते ही हैं तो कोशिश करूंगी। और आज ही शाम को यहीं चले आइएगा।

आज़ाद–खुदा तुमको सलामत रखे, बड़ा काम निकलेगा।

महरी–ऐ मियां, मैं लौंडी हूं। तब भी तुम्हारा ही नमक खाती थी, और अब भी....।

आज़ाद–अच्छा, इतना बता दो कि किस तरकीब से मिलूंगा?

महरी–यहां एक शाह साहब रहते हैं। सुरैया बेगम उनकी मुरीद हैं। उनके मियां ने भी हुक्म दे दिया कि जब उनका जी चाहे, शाह साहब के यहां जायं। शाह जी का सिन कोई दो सौ बरस का होगा। और हुजूर, जो वह कह देते हैं, वही होता है क्या मजाल जो फरक पड़े।

आज़ाद–हां साहब, फकीर हैं, नहीं तो दुनिया कायम कैसे है !

महरी–मैं शाह जी को एक और जगह भेज दूंगी। आप उनकी जगह जाके बैठ जाइएगा। शाह साहब की तरफ कोई आंख उठाकर नहीं देख सकता। इसलिए आपको यह खौफ भी नहीं है कि सुरैया बेगम पहचान जाएंगी।

आज़ाद–बड़ा एहसान होगा। उम्र भर न भूलूंगा। अच्छा, तो शाम को आऊंगा।

शाम को आज़ाद कुन्दन के घर पहुंच गए। महरी ने कहा–लीजिए, मुबारक हो। सब मामला चौकस है।

आज़ाद–जहां तुम हो, वहां किस बात की कमी। तुमसे आज मुलाकात हुई थी? हमारा जिक्र तो नहीं आया? हमसे नाराज तो नहीं हैं?

महरी–ऐ हुजूर, अब तक रोती हैं। अक्सर फरमाती हैं कि जब आज़ाद सुनेंगे कि उसने एक अमीर के साथ निकाह कर लिया, तो अपने दिल में क्या कहेंगे।

शाह साहब शहर के बाहर एक इमली के पेड़ के नीचे रहते थे। महरी आज़ाद को वहां ले गई और दरख्त के नीचे वाली कोठरी में बैठाकर बोली–आप यहीं बैठिए, बेगम साहब अब आती ही होंगी। जब वह आंख बंद करके नजर दिखाएं तो ले लीजिएगा। फिर आप में और उनमें खुद ही बातें होंगी।

आज़ाद–ऐसा न हो कि मुझे देखकर डर जाएं।

महरी–जी नहीं, दिल की मजबूत हैं। वनों-जंगलों में फिर आई हैं।

इतने में किसी आदमी के गाने में की आवाज आई।

बुते-जालिम नहीं सुनता किसी की;
गरीबों का खुदा फरियाद-रस है।

आज़ाद–यह इस वक्त वीराने में कौन गा रहा है?

महरी–सिड़ी है। खबर पाई होगी कि आज यहां आने वाली हैं।

आज़ाद–बाबा साहब को इसका हाल मालूम है या नहीं?

महरी–सभी जानते हैं। दिन-रात यों ही बका करता है; और कोई काम ही नहीं।

आज़ाद–भला यह तो बताओ कि सुरैया बेगम के साथ कौन-कौन होगा?

महरीं–दो-एक महरियां होंगी, मौलाई बेगम होंगी और दस-बारह सिपाही।

आज़ाद–महरियां अंदर साथ आएंगी या बाहर ही रहेंगी?

महरी–इस कमरे में कोई नहीं आ सकता।

इतने में सुरैया बेगम की सवारी दरवाजे पर आ पहुंची। आज़ाद का दिल धक-धक करता था। कुछ तो इस बात की खुशी थी कि मुद्दत के बाद अलारक्खी को देखेंगे और कुछ इस बात का खयाल कि कहीं परदा न खुल जाय।

आज़ाद–जरा देखो, पालकी से उतरीं या नहीं।

महरी–बाग में टहल रही हैं। मौलाई बेगम भी हैं। चलके दीवार के पास खड़े होकर आड़ से देखिए।

आज़ाद–डर मालूम होता है कि कहीं देख न लें।

आखिर आज़ाद से न रहा गया। महरी के साथ आड़ में खड़े हुए तो देखा कि बाग में कई औरतें चमन की सैर कर रही हैं।

महरी–जो जरा भी इनको मालूम हो जाय कि आज़ाद खड़े देख रहे हैं तो दिल का क्या हाल हो।

आज़ाद–पुकारूं? बेअख्तियार जी चाहता है कि पुकारूं।

इतने में बेगम दीवार के पास आईं और बैठ कर बातें करने लगीं।

सुरैया–इस वक्त तो गाना सुनने को जी चाहता है।

मौलाई–देखिए, यह सौदाई क्या गा रहा है।

सुरैया–अरे ! इस मुए को अब तक मौत न आई? इसे कौन मेरे आने की खबर दे दिया करता है। शाह जी से कहूंगी कि इसको मौत आए।

मौलाई–ऐ नहीं, काहे को मौत आए बेचारे को। मगर आवाज अच्छी है।

सुरैया–आग लगे इसकी आवाज को।

इतने में जोर से पानी बरसने लगा। सब-की-सब इधर-उधर दौड़ने लगीं।

आखिर एक माली ने कहा कि हुजूर, सामने का बंगला खाली कर दिया है, उसमें बैठिए। सब-की-सब उस बंगले में गईं। जब कुछ देर तक बादल न खुला तो सुरैया बेगम ने कहा–भई, अब तो कुछ खाने को जी चाहता है।

ममोला नाम की एक महरी उनके साथ थी। बोली–शाह जी के यहां से कुछ लाऊं? मगर फकीरों के पास दाल-रोटी के सिवा और क्या होगा।

सुरैया–जाओ, जो कुछ मिले, ले आओ। ऐसा न हो कि वहां कोई बेतुकी बात कहने लगे।

महरी ने दुपट्टे को लपेट कर ऊपर से डोली का परदा ओढ़ा। दूसरी महरी ने मशालची को हुक्म दिया कि मशाल जला। आगे-आगे मशालची, पीछे-पीछे दोनों महरियां दरवाजे

पर आईं और आवाज दी। आज़ाद और महरी ने समझा कि बेगम साहब आ गईं, मगर दरवाजा खोला तो देखा कि महरियां हैं।

महरी–आओ, आओ। क्या बेगम साहब बाग ही में हैं?

ममोला–जी हां, मगर एक काम कीजिए। शाह साहब के पास भेजा है। यह बताओ कि इस वक्त कुछ खाने को है?

महरी ने शाह जी के बावचीखाने से चार मोटी-मोटी रोटियां और एक प्याला मसूर की दाल लाकर दिया। दोनों महरियां खाना लेकर बंगले में पहुंचीं। सुरैया बेगम ने पूछा–कहो, बेटा कि बेटी?

ममोला–हुजूर, फकीरों के दरबार से भला कोई खाली हाथ आता है? लीजिए वह मोटे-मोटे टिक्कड़ हैं।

मौलाई–इस वक्त यही गनीमत है।

ममोला–बेगम साहब, आपसे एक अरज है।

सुरैया–क्या है, कहो तुम्हारी बातों से हमें उलझन होती है।

ममोला–हुजूर, जब हम खाना लेके आते थे तो देखा कि बाग में दरवाजे पर एक बेकस, बेगुनाह, बेचारा दबका-दबकाया खड़ा भींग रहा है।

सुरैया–फिर तुमने वही पाजीपने की ली न ! चलो हटो सामने से।

मौलाई–बहन, खुदा के लिए इतना कह दो कि जहां सिपाही बैठे हैं, वहीं उसे भी बुला लें।

सुरैया–फिर मुझसे क्या कहती हो?

सिपाहियों ने दीवाने को बुला कर बैठा लिया। उसने यहां आते ही ताल लगाई–

पसे फिना हमें गरदूं सतायेगा फिर क्या,
मिटे हुए को यह जालिम मिटायेगा फिर क्या?
जईफ नालादिल उसका हिला नहीं सकता,
यह जाके अर्श का पाया हिलायेगा फिर क्या?
शरीक जो न हुआ एक दम को फूलों में,
वह फूल आके लेहद के उठायेगा फिर क्या?
खुदा को मानो न बिस्मिल को अपने जबह करो,
तड़पके सैर वह तुमको दिखायेगा फिर क्या?

सुरैया–देखा न। यह कम्बख्त बे गुल मचाए कभी न रहेगा।

मौलाई–बस यही तो इसमें ऐब है। मगर गजल भी ढूंढ़ के अपने ही मतलब की कही है।

सुरैया–कम्बख्त बदनाम करता फिरता है।

दोनों बेगमों ने हाथ धोया। उस वक्त वहां मसूर की दाल और रोटी पोलाव और कोरमे को मात करती थी। उस पर माली ने कैथे की चटनी तैयार कराके महरी के हाथ भेजवा दी। इस वक्त इस चटनी ने वह मजा दिया कि कोई सुरैया बेगम की जबान से सुने।

मौलाई–माली ने इनाम का काम किया है इस वक्त।

सुरैया–इसमें क्या शक। पांच रुपये इनाम दे दो।

जब खुदा खुदा करके मेंह थमा और चांदनी निखरी तो सुरैया बेगम ने महरी भेजी कि शाह जी का हुक्म हो तो हम हाजिर हों। वहां महरी ने कहा–हां, शौक से आएं, पूछने की क्या जरूरत है।

सुरैया बेगम ने आंखें बंद कीं और शाह जी के पास गईं। आज़ाद ने उन्हें देखा तो दिल का अजब हाल हुआ। एक ठंडी सांस निकल आई। सुरैया बेगम घबराईं कि आज शाह साहब ठंडी सासें क्यों ले रहे हैं? आंखें खोल दीं तो सामने आज़ाद को बैठे देखा। पहले तो समझीं कि आंखों ने धोखा दिया, मगर करीब से गौर करके देखा तो शक दूर हो गया।

उधर आज़ाद की जबान भी बंद हो गई। लाख चाहा कि दिल का हाल कह सुनाएं, मगर जबान खोलना मुहाल हो गया। दोनों ने थोड़ी देर तक एक-दूसरे को प्यार और हसरत की नजर से देखा, मगर बातें करने की हिम्मत न पड़ी। हां, आंखों पर दोनों में से किसी को अख्तियार न था। दोनों की आंखों से टप-टप आंसू गिर रहे थे। एकाएक सुरैया बेगम वहां से उठ कर बाहर चली आईं।

मौलाई ने पूछा–बेगम साहब, आज इतनी जल्दी क्यों की?

सुरैया–यों ही।

मौलाई–आंखों में आंसू क्यों हैं? शाह साहब से क्या बातें हुईं?

सुरैया–कुछ नहीं बहन, शाह साहब क्या कहते, जी ही तो है।

मौलाई–हां, मगर खुशी और रंज के लिए कोई सबब भी तो होता है।

सुरैया–बहन, हमसे इस वक्त सबब न पूछो। बड़ी लंबी कहानी है।

मौलाई–अच्छा, कुछ कतर-ब्योंत करके कह दो।

सुरैया–बहन, बात सारी यह है कि इस वक्त शाह जी तक ने हमसे चाल की। जो कुछ हमने इस वक्त देखा; उसके देखने की तमन्ना बरसों से थी, मगर अब आंखें फेर-फेरके देखने के सिवा और क्या है?

मौलाई–(सुरैया के गले में हाथ डाल कर) क्या, आज़ाद मिल गए क्या?

सुरैया–चुप-चुप ! कोई सुन न ले।

मौलाई–आज़ाद इस वक्त कहां से आ गए ! हमें भी दिखला दो।

सुरैया–रोकता कौन है। जाके देख लो।

मौलाई बेगम चलीं तो सुरैया बेगम ने इनका हाथ पकड़ लिया और कहा–खबरदार, मेरी तरफ से कोई पैगाम न कहना।

मौलाई बेगम कुछ हिचकती, कुछ झिझकती आकर आज़ाद से बोलीं–शाह जी कभी और भी इस तरफ आए थे?

आज़ाद–हम फकीरों को कहीं आने-आने से क्या सरोकार। जिधर मौज हुई, चल दिए। दिन को सफर, रात को खुदा की याद। हां, गम है तो यह कि खुदा को पाएं।

मौलाई–सुनो शाह जी, आपकी फकीरी को हम खूब जानते हैं। यह सब कांटे आप ही के बोए हुए हैं। और अब आप फकीर बन कर यहां आए हैं। यह बतलाइए कि आपने इन्हें जो इतना परेशान किया तो किसलिए? इससे आपका क्या मतलब था?

आज़ाद–साफ-साफ तो यह है कि हम उनसे फकत दो-दो बातें करना चाहते हैं।

मौलाई–वाह, जब आंखें चार हुईं तब तो कुछ बोले नहीं; और वह बातें हुईं भी तो नतीजा क्या? उसके मिजाज को तो आप जानते हैं। एक बार जिसकी हो गईं, उसकी हो गईं।

आज़ाद–अच्छा, एक नजर तो दिखा दो।

मौलाई–अब यह मुमकिन नहीं। क्यों मुफ्त में अपनी जान हलकान करोगे।

आज़ाद–तो बिलकुल हाथ धो डालें? अच्छा चलिए, बाग में जरा दूर ही से दिल के फफोले फोड़ें।

मौलाई–वाह-वाह ! जब बाग में हों भी।

आज़ाद–अच्छा साहब, लीजिए सब्र करके बैठे जाते हैं।

मौलाई–मैं जाकर कहती हूं, मगर उम्मेद नहीं कि मानें।

यह कह कर मौलाई बेगम उठीं और सुरैया बेगम के पास आकर बोलीं–बहन, अल्लाह जानता है, कितना खूबसरत जवान है।

सुरैया–हमारा जिक्र भी आया था? कुछ कहते थे?

मौलाई–तुम्हारे सिवा और जिक्र ही किसका था? बेचारे बहुत रोते थे। हमारी एक बात इस वक्त मानोगी? कहूं?

सुरैया–कुछ मालूम तो हो, क्या कहोगी?

मौलाई–पहले कौल दो, फिर कहेंगे, यों नहीं।

सुरैया–वाह ! बे-समझे-बूझे कौल कैसे दे दूं?

मौलाई–हमारी इतनी खातिर भी न करोगी बहन !

सुरैया–अब क्या जानें, तुम क्या ऊल-जलूल बात कहो।

मौलाई–हम कोई ऐसी बात न कहेंगे जिससे नुकसान हो।

सुरैया–जो बात तुम्हारे दिल में है वह मेरे नाखून में है।

मौलाई–क्या कहना है। आप ऐसी ही हैं।

सुरैया–अच्छा, और सब बातें मानेंगे सिवा एक बात के।

मौलाई–वह एक बात कौन सी है हम सुन तो लें।

सुरैया–जिस तरह तुम छिपाती हो उसी तरह हम भी छिपाते हैं।

मौलाई–अल्लाह को गवाह करके कहती हूं, रो रहा है। मुझसे हाथ जोड़कर कहा है कि जिस तरह मुमकिन हो, मुझसे मिला दो। मैं इतना ही चाहता हूं कि नजर भर कर देख लूं।

सुरैया–क्या मजाल, ख्वाब तक में सूरत न दिखाऊं।

मौलाई–मुझे बड़ा तरस आता है।

सुरैया–दुनिया का भी तो ख्याल है।

मौलाई–दुनिया से हमें क्या काम? यहां ऐसा कौन आता-जाता है। डर काहे का है, चलके जरा देख लो, उसका अरमान तो निकल जाए।

सुरैया–ना, मुमकिन नहीं ! अब यहां से चलोगी भी या नहीं?

मौलाई–हम तो तब तक न चलेंगे, जब तक हमारा कहना न मानोगी।

सुरैया—सुनो मौलाई बेगम, हर काम का कोई न कोई नतीजा होता है। इसका नतीजा तुम क्या सोची हो?

मौलाई—उनका दिल खुश होगा। इस वक्त वह आपे में नहीं हैं; मगर जब इस मामले पर गौर करेंगे तो उन्हें जरूर रंज होगा।

दोनों बेगम पालकियों पर बैठकर रवाना हुईं। आज़ाद ने मकान की दीवार से सुरैया बेगम को देखा और ठंडी सांस ली।

एक सौ आठ

दूसरे दिन आज़ाद यहां से रुखसत होकर हुस्नआरा से मिलने चले। बात-बात पर बांछें खिल जाती थीं। दिमाग सातवें आसमान पर था। आज खुदा ने वह दिन दिखाया कि रूस और रूम की मंजिल पूरी करके यार के कूचे में पहुंचे। कहां रूस, कहां हिन्दोस्तान ! कहां लड़ाई का मैदान, कहां हुस्नआरा का मकान ! दोनों लेडियों ने उन्हें छेड़ना शुरू किया—

क्लारिसा—आज भला आज़ाद के दिमाग काहे को मिलेंगे।

मीडा—इस वक्त मारे खुशी के इन्हें बात करना भी मुश्किल है।

आज़ाद—बड़ी मुश्किल है। बोलूं तो हंसवाऊं, न बोलूं तो आवाजें कसे जायं।

क्लारिसा—क्या इसमें कुछ झूठ भी है। जिसके लिए दुनिया भर की खाक छानी, उससे मिलने का नशा हुआ ही चाहे।

एकाएक कमरे के बाहर से आवाज आई—भला रे गीदी, भला, और जरा देर में मियां खोजी कमरे में दाखिल हुए।

क्लारिसा—आप इतने दिन तक कहां थे ख्वाजा साहब?

खोजी—था कहां, जहां जाता हूं वहां लोग पीछे पड़ जाते हैं। इतनी दावतें खाईं कि क्या किसी ने खाई होंगी। एक-एक दिन में दो-दो सौ बुलावे आ जाते हैं। अगर न जाऊं तो लोग कहें, गुरूर करता है। जाऊं तो इतना वक्त कहां ! इसी उधेड़-बुन में पड़ा रहा।

आज़ाद—अब कुछ हमारे भी काम आओ।

खोजी—और दौड़ा आया किसलिए हूं? कहो, हुस्नआरा को खबर हुई या नहीं? न हुई हो तो पहुंचूं। मुझसे ज्यादा इस काम के लायक और किसी को न पाओगे। मैं बड़े काम का आदमी हूं।

आज़ाद—इसमें क्या शक है भाईजान ! बेशक हो।

खोजी—तो फिर मैं चलूं?

आज़ाद—नेकी और पूछ-पूछ?

खोजी जानेवाले ही थे कि एक आदमी होटल की तरफ आता दिखाई दिया। उसकी शक्ल-सूरत बिलकुल खोजी से मिलती थी। वही नाटा कद, वही काला रंग, वही नन्हे-नन्हे हाथ-पांव। खोजी का बड़ा भाई मालूम होता था।

आज़ाद—वल्लाह बिलकुल खोजी ही हैं।

मीडा–बस, इनको छिपाओ, उनको दिखाओ। उनको छिपाओ, इनको दिखाओ। जरा फर्क नहीं।

खोजी–तू कौन है बे? कहां चला आता है? कुछ बेघा तो नहीं है? तुझ जैसे मसखरों का यहां क्या काम?

मसखरा–कोई हमसे बदके देख ले। बड़ा मर्द हो तो आ जाय।

खोजी–क्या कहता है? बरस पड़ूं?

मसखरा–जा, अपना काम कर। जो गरजता है, वह बरसता नहीं।

खोजी–बच्चा, तुम्हारी कजा मेरे ही हाथ से है।

मसखरा–माशे-भर का आदमी, बौनों के बराबर कद और चला है मुझे ललकारने !

खोजी–कोई है? लाना तो चंडू की निगाली।

मसखरा–ले आइए ! हम तो जहां खड़े थे, वहीं खड़े हैं, शेर कहीं हटा करते हैं। जमे, सो जमे।

खोजी–कजा खेल रही है तेरी। मैं इसको क्या करूं। अब तो कुछ कहना-सुनना हो, कह-सुन लो; थोड़ी देर में लाश फड़कती होगी।

मसखरा–जरी जबान संभाले हुए हजरत ! ऐसा न हो, मैं गरदन पर सवार हो जाऊं।

होटल में जितने आदमी थे, उनको शिगुफा हाथ आया। सभी इन बौनों की कुश्ती देखने के लिए बेकरार थे। दोनों को चढ़ाने लगे।

एक–भई, हम सब तो ख्वाजा साहब की तरफ हैं।

दूसरा–हम भी। यह उससे कहीं तगड़े हैं।

तीसरा–कौन? कहीं हों न। इनमें और उनमें बीस और सोहल का फर्क है। बोलो, क्या-क्या बदते हो !

खोजी–जिसका रुपया फालतू हो, वह इसके हाथ पर बदे। जो कुछ बनाकर घर ले जाना चाहे, वह हमारे हाथ पर बदे।

मसखरा–एक लपोटे में बोल जाइए तो सही। बात करते-करते पकड़ लाऊं और चुटकी बजाते चित करूं, (चुटकी बजाकर) यों-यों !

खोजी–मैं इतनी देर नहीं लगाने का।

मसखरा–अरे चुप भी। यह मुंह खाए चौलाई। एक उंगली से वह पेंच बांधू कि तड़पने लगे–

लिया जिसने हमारा नाम, मारा बेगुनाह उसको,
निशां जिसने बनाया, बस वह तीरों का निशाना था।

आज़ाद–बढ़ गए ख्वाजा साहब, यह आपसे बढ़ गए। अब कोई फड़कता हुआ शेर कहिए तो इज्जत रहे।

खोजी–अजी, इससे अच्छा शेर लीजिए–

तड़पा न जरा खंजर के तले
सिर अपना दिया शिकवा न किया,
था पासे अदब जो कातिल का
यह भी न हुआ वह भी न हुआ।

मसखरा–ले, अब आ।

खोजी–देख, तेरी कजा आ गई है।

मसखरा–जरा सामने आ। जमीन में सिर खोंस दूंगा।

खोजी–(ताल ठोककर) अब भी कहा मान, न लड़।

मसखरा–या अली, मदद कर–

कब्र में जिनको न सोना था, सुलाया उनको,
पर मुझे चर्ख सितमगर ने सोने न दिया।

आज़ाद–भई खोजी, शायरी में तुम बिलकुल दब गए।

खोजी जवाब देने ही वाले थे कि इतने में मसखरे ने उनकी गरदन में हाथ डाल दिया। करीब था कि जमीन पर दे पटके कि मियां खोजी संभले और झल्ला के मसखरे की गरदन में दोनों हाथ डाल कर बोले–बस, अब तुम मरे !

मसखरा–आज तुझे जीता न छोडूंगा।

ख़ोजी–देखो, हाथ टूटा तो नालिश कर दूंगा। कुश्ती में हाथा-पाई कैसी?

मसखरा–अपनी बुढ़िया को बुला लाओ। कोई लाश को रोने वाली तो हो तुम्हारी।

खोजी–या तो कत्ल ही करेंगे या तो कत्ल होंगे।

मसखरा–और हम कत्ल ही करके छोड़ेंगे।

ख्वाजा साहब ने एक अंटी बताई तो मसखरा गिरा। साथ ही खोजी भी मुंह के बल जमीन पर आ रहे। अब न यह उठते हैं न वह। न वह इनकी गरदन छोड़ता है, न यह उसको छोड़ते हैं।

मसखरा–मार डाल, गरदन न छोडूंगा।

खोजी–तू गरदन मरोड़ डाल, मगर मैं अधमरा करके छोडूगा। हाय-हाय ! गरदन गई ! पसलियां चर-चर बोल रही हैं।

मसखरा–जो कुछ हो, सो हो कुछ परवाह नहीं है।

खोजी–यहां किसको परवाह है, कोई रोनेवाला भी नहीं है।

अबकी खोजी ने गरदन छुड़ा ली; उधर मसखरा भी निकल भागा। दोनों अपनी-अपनी गरदन सहलाने लगे। यार लोगों ने फिर फिकरे चुस्त किए। भई, हम तो खोजी के दम के कायल हैं।

दूसरा बोला–वाह ! अगर कच्ची आध घड़ी और कुश्ती रहती तो वह मार लेता।

तीसरे ने कहा–अच्छा, फिर अब की सही। किसी का दम थोड़े टूटा है।

यार लोग तो उनको तैयार करते थे, मगर उनमें दम न था। आधा घंटे तक दोनों हांफा किए, मगर जबान चली जाती थी।

खोजी–जरा और देर होती तो फिर दिल्लगी देखते।

मसखरा–हां बेशक।

खोजी–तकदीर थी, बच गए, वरना मुंह बिगाड़ देता।

मसखरा–अब तुम इस फिक्र में हो कि मैं फिर उठूं।

आज़ाद–भई, अब ज्यादा बखेड़ा मत बढ़ाओ। बहुत हो चुकी।

मसखरा–हुजूर, मैं बे-नीचा दिखाए न मानूंगा।

खोजी–(मसखरे की गरदन पकड़कर) आओ, दिखाओ नीचा।

मसखरा–अबे, तू गरदन तो छोड़। गरदन छोड़ दे हमारी।

खोजी–अब की हमारा दांव है।

मसखरा–(थप्पड़ लगाकर) एक-दो।

खोजी–(चपत देकर) तीन।

फिकरेबाज–सौ तक गिन जाओ यों ही। हां, पांच हुईं।

दूसरा–ऐसे-ऐसे जवान और पांच ही तक गिनके रह गए?

खोजी–(चपत देकर) छह-छह और नहीं तो। लोग बड़ी देर से छह का इंतजार कर रहे थे।

अब की वह घमासान लड़ाई हुई कि दोनों बेदम होकर गिर पड़े और रोने लगे।

खोजी–अब मौत करीब है। भई, आज़ाद हमारी कब्र किसी पोस्ते के खेत के करीब बनवाना।

मसखरा–और हमारी कब्र शाहफसीह के तकिए में बनवाई जाय जहां हमारे वालिद ख्वाजा वलीग दफन हैं।

खोजी–कौन-कौन? इनके वालिद का नाम क्या था?

आज़ाद–ख्वाजा वलीग कहते हैं।

खोजी–(रोकर) अरे भाई, हमें पहचाना? मगर हमारी-तुम्हारी यों ही बदी थी।

मसखरे ने जो इनका नाम सुना तो सिर पीट लिया–भई क्या गजब हुआ ! सगा भाई सगे भाई को मारे?

दोनों भाई गले मिलकर रोए। बड़े भाई ने अपना नाम मियां रईस बतलाया। बोले–बेटा, तुम मुझसे कोई बीस बरस छोटे हो। तुमने वालिद को अच्छी तरह से नहीं देखा था। बड़ी खूबियों के आदमी थे। हमको रोज दुकान पर ले जाया करते थे?

आज़ाद–काहे की दुकान थी हजरत?

रईस–जी, टाल थी। लकड़ियां बेचते थे।

खोजी ने भाई की तरफ घूर कर देखा।

रईस–कुछ दिन कंपू में साहब लोगों के यहां खानसामा रहे थे।

खोजी ने भाई की तरफ देखकर दांत पीसा।

आज़ाद–बस हजरत, कलई खुल गई। अब्बाजान खानसामा थे। और आप रईस बनते हैं।

आज़ाद चले गए तो दोनों भाइयों में खूब तरकार हुई। मगर थोड़ी ही देर में मेल हो गया। और दोनों भाई साथ-साथ शहर की सैर को गए। इधर-उधर मटरगश्त करके मियां रईस तो अपने अड्डे पर गए और खोजी हुस्नआरा बेगम के मकान पर जा पहुंचे। बूढ़े मियां बैठे हुक्का पी रहे थे।

खोजी–आदाब अर्ज है। पहचाना या भूल गए?

बूढ़े मियां–बंदगी अर्ज। मैंने आपको नहीं पहचाना।

खोजी–तुम भला हमें क्यों पहचानोगे। तुम्हारी आंख में तो चर्बी छाई हुई है।

बूढ़े मियां–आप तो कुछ अजीब पागल मालूम होते हैं। जान न पहचान, त्योरियां

बदलने लगे।

खोजी—अजी, हम तो सुनाएं बादशाह को, तुम क्या माल हो।

बूढ़े मियां—अपने होश में हो या नहीं?

खोजी—कोई महलसरा में हुस्नआरा बेगम को इत्तला दो कि मुसाफिर आए हैं।

बूढ़े मियां—(खड़े होकर) अख्खाह ! ख्वाजा साहब तो नहीं हैं आप ! माफ कीजिएगा ! आइए गले मिल लें।

बूढ़े मियां ने आदमी को हुक्म दिया कि हुक्का भर दो, और अंदर जाकर बोले—लो साहब, खोजी दाखिल हो गए।

चारों बहनें बाग में गईं और चिक की आड़ से खोजी को देखने लगीं।

नाजुक अदा—ओ-हो-हो ! कैसा ग्रांडील जवान है !

जानी—अल्लाह जानता है, ऐसा जवान नहीं देखने में आया था। ऊंट की तो कोई कल शायद दुरुस्त भी हो, इसकी कल दुरुस्त नहीं। हंसी आती है।

खोजी इधर-उधर देखने लगे कि यह आवाज कहां से आती है। इतने में बूढ़े मियां आ गए।

खोजी—हजरत, इस मकान की अजब खासियत है।

बूढ़े मियां—क्या-क्या? इस मकान में कोई नयी बात आपने देखी है?

खोजी—आवाजें आती हैं। मैं बैठा हुआ था, एक आवाज आई, फिर दूसरी आवाज आई।

बढ़े मियां—आप क्या फरमाते हैं, हमने तो कोई बात ऐसी नहीं देखी।

जानी बेगम की रग-रग में शोखी भरी हुई थी। खोजी को बनाने की एक तरकीब सूझी। बोली—एक बात हमें सूझी है। अभी हम किसी से कहेंगे नहीं।

बहार बेगम—हमसे तो कह दो।

जानी ने बहारबेगम के कान में आहिस्ता से कुछ कहा।

बहार—क्या हरज है, बूढ़ा ही तो है।

सिपहआरा—आखिर कुछ कहो तो बाजीजान ! हमसे कहने में कुछ हरज है?

बहार—जानी बेगम कह दें तो बता दूं।

जानी—नहीं, किसी से न कहो।

जानी बेगम और बहार बेगम दोनों उठकर दूसरे कमरे में चली गईं। यहां इन सबको हैरत हो रही थी कि या खुदा ! इन सबों को कौन तरकीब सूझी है, जो इतना छिपा रही हैं। अपनी-अपनी अक्ल दौड़ाने लगीं।

नाजुक—हम समझ गए। अफीमी आदमी है। उसकी डिबिया चुराने की फिक्र होगी।

हुस्नआरा—यह बात नहीं, इसमें चोरी क्या थी?

इतने में बहार बेगम ने आकर कहा—चलो, बाग में चलकर बैठें। ख्वाजा साहब पहले ही से बाग में बैठे हुए थे। एकाएक क्या देखते हैं कि एक गभरू जवान सामने से ऐंठता-अकड़ता चला आता है। अभी मसें भी नहीं भीगीं। जालीलोट का कुरता, उस पर शरबती कटावदार अंगरखा है, सिर पर बांकी पगिया और हाथ में कटार।

हुस्नआरा—यह कौन है अल्लाह? जरा पूछना तो।

सिपहआरा–ओफ्फोह? बाजीजान, पहचानो तो भला।

नाज़ुक–अरे ! बड़ा धोखा दिया।

सिपहआरा–मैं तो पहले समझी ही न थी कुछ !

इतने में वह जवान खोजी के करीब आया तो यह चकराए कि इस बाग में इसका गुजर कैसे हुआ। उसकी तरफ ताक ही रहे थे कि बहार बेगम ने गुल मचाकर कहा–ऐ ! यह कौन मरदुआ बाग में आ गया। ख्वाजा साहब, तुम बैठे देख रहे हो और यह लौंडा भीतर चला आता है ! इसे निकाल क्यों नहीं देते?

खोजी–अजी हजरत, आखिर आप कौन साहब हैं? पराए जनाने में घुसे जाते हो, यह माजरा क्या है?

जवान–कुछ तुम्हारी शामत तो नहीं आई है? चुपचाप बैठे रहो।

खोजी–सुनिए साहब, हम और आप दोनों एक ही पेशे के आदमी हैं।

जवान–(बात काटकर) हमने कह दिया, चुप रहो, वरना अभी सिर उड़ा दूंगा। हम हुस्नआरा बेगम के आशिक हैं। सुना है कि आज़ाद यहां आए हैं और हुस्नआरा के पास निकाह का पैगाम भेजने वाले हैं। बस, अब यही धुन है कि उनसे दो-दो हाथ चल जाय।

खोजी–आज़ाद का मुकाबिला तुम क्या खाकर करोगे। उसने लड़ाइयां सर की हैं। तुम अभी लौंड़े हो।

जवान–तू भी तो उन्हीं का साथी है। क्यों न पहले तेरा ही काम तमाम कर दूं।

खोजी–(पैंतरे बदलकर) हम किसी से दबनेवाले नहीं हैं।

जवान–आज ही का दिन तेरी मौत का था।

खोजी–(पीछे हटकर) अभी किसी मर्द से पाला नहीं पड़ा है।

जवान–क्यों नाहक गुस्सा दिलाता है। अच्छा, ले संभल।

जवान ने तलवार घुमाई तो खोजी घबराकर पीछे हटे और गिर पड़े। बस करौली की याद करने लगे। औरतें तालियां बजा-बजा कर हंसने लगीं।

जवान–बस, इसी बिरते पर फूला था?

खोजी–अजी, मैं अपने जोम में आप आ रहा। अभी उठूं तो कयामत बरपा कर दूं।

जवान–जाकर आज़ाद से कहना कि होशियार रहें।

खोजी–बहुतों का अरमान निकल गया। उनकी सूरत देख लो; तो बुखार आ जाय।

जवान–अच्छा, कल देखूंगा।

यह कहकर उसने बहार बेगम का हाथ पकड़ा और बेधड़क कोठे पर चढ़ गया। चारों बहनें भी उसके पीछे-पीछे ऊपर चली गईं।

खोजी यहां से चले तो दिल में सोचते जाते थे कि आज़ाद से चलकर कहता दूं, हुस्नआरा के एक और चाहने वाले पैदा हुए हैं। कदम-कदम पर हांक लगाते थे, घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी। इत्तफाक से रास्ते में उसी होटल का खानसामा मिल गया, जहां आज़ाद ठहरे थे। बोला–अरे भाई ! इस वक्त लपके हुए जाते हो? खैर तो है? आज तो आप गरीबों से बात ही नहीं करते।

खोजी-घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

खानसामा-भई वाह ! सारी दुनिया घूम आए, मगर कैंडा वही है। हम समझे थे कि आदमी बन कर आए होंगे।

खोजी-तुम जैसों से बातें करना हमारी शान के खिलाफ है।

खानसामा-हम देखते हैं, वहां से तुम और भी गाउदी हो कर आए हो।

थोड़ी देर में आप गिरते-पड़ते होटल में दाखिल हुए और आज़ाद को देखते ही मुंह बना कर सामने खड़े हो गए।

आज़ाद-क्या खबरें लाए?

खोजी-(करौली को दाएं हाथ से बाएं हाथ में लेकर) हूं !!!

आज़ाद-अरे भाई, गए थे वहां?

खोजी-(करौली को बाएं हाथ से दाएं हाथ में लेकर) हूं !!

आज़ाद-अरे, कुछ मुंह से बोलो भी तो मियां !

खोजी-घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

खोजी-क्या? कुछ सनक तो नहीं गए ! मैं पूछता हूं, हुस्नआरा बेगम के यहां गए थे ! किसी से मुलाकात हुई ! क्या रंग-ढंग है।

खोजी-वहां नहीं गए थे तो क्या जहन्नुम में गए थे? मगर कुछ दाल में काला है।

आज़ाद-भाई साहब, हम नहीं समझे। साफ-साफ कहो, क्या बात हुई? क्यों उलझन में डालते हो।

खोजी-अब वहां आपकी दाल नहीं गलने की।

आज़ाद-क्या? कैसी दाल? यह बकते क्या हो?

खोजी-बकता नहीं, सच कहता हूं।

आज़ाद-खोजी, अगर साफ-साफ न बयान करोगे तो इस वक्त बुरी ठहरेगी।

खोजी-उलटे मुझी को डांटते हो। मैंने क्या बिगाड़ा?

आज़ाद-वहां का मुफस्सल का हाल क्यों नहीं बयान करते?

खोजी-तो जनाब, साफ-साफ यह है कि हुस्नआरा बेगम के एक और चाहने वाले पैदा हुए हैं। हुस्नआरा बेगम और उनकी बहनें बगले में बैठी थीं कि एक जवान अंदर पहुंचा और मुझे देखते ही गुस्से से लाल हो गया।

आज़ाद-कोई खूबसूरत आदमी है?

खोजी-निहायत हसीन और कमसिन ।

आज़ाद-इसमें कुछ भेद है जरूर। तुम्हें उल्लू बनाने के लिए शायद दिल्लगी की हो। मगर हमें इसका यकीन नहीं आता।

खोजी-यकीन तो हमें भी मरते दम तक नहीं आता, मगर वहां तो उसे देखते ही कहकहे पड़ने लगे।

अब उधर का हाल सुनिए। सिपहआरा ने कहा-अब दिल्लगी हो कि वह जा कर आज़ाद से सारा किस्सा कहे।

हुस्नआरा-आज़ाद ऐसे कच्चे नहीं हैं।

सिपहआरा–खुदा जाने, वह सिड़ी वहां जाकर क्या बके। आज़ाद को चाहे पहले यकीन न आए, लेकिन जब वह कसमें खा कर कहने लगेगा तो उनको जरूर शक हो जाएगा।

हुस्नआरा–हां, शक हो सकता है, मगर किया क्या जाय। क्यों न किसी को भेज कर खोजी को होटल से बुलवाओ। जो आदमी बुलाने जाए वह हंसी-हंसी में आज़ाद से यह बात कह दे।

हुस्नआरा की सलाह से बूढ़े मियां आज़ाद के पास पहुंचे, और बड़े तपाक से मिलने के बाद बोले–वह आपके मियां खोजी कहां हैं? जरा उनको बुलवाइए।

आज़ाद–आपके यहां से जो आए तो गुस्से में भरे हुए। अब मुझसे बात ही नहीं करते।

बूढ़े मियां–वह तो आज खूब ही बनाए गए।

बूढ़े मियां ने सारा किस्सा बयान कर दिया। आज़ाद सुनकर खूब हंसे और खोजी को बुला कर उनके सामने ही बूढ़े मिया से बोले–क्यों साहब, आपके यहां क्या दस्तूर है कि कटारबाजों को बुला-बुला कर शरीफों से भिड़वाते हैं।

बूढ़े मियां–ख्वाजा साहब को आज खुदा ही ने बचाया।

आज़ाद–मगर यह तो हमसे कहते थे कि वह जवान बहुत दुबला-पतला आदमी है। इससे-उनसे अगर चलती तो यह उसको जरूर नीचा दिखाते।

खोजी–अजी, कैसा नीचा दिखाना? वह तलवार चलाना क्या जाने !

आज़ाद–आज उसको बुलाइए, तो इनसे मुकाबिला हो जाए।

खोजी–हमारे नजदीक उसको बुलवाना फजूल है। मुफ्त की ठांय-ठांय से क्या फायदा। हां, अगर आप लोग उस बेचारे की जान के दुश्मन हुए हैं तो बुलवा लीजिए।

यह बातें हो ही रही थीं कि बैरा ने आकर कहा–हुजूर, एक गाड़ी पर औरतें आई हैं। एक खिदमतगार ने, जो गाड़ी के साथ है, हूजूर का नाम लिया और कहा कि जरा यहां तक चल आएं।

आज़ाद को हैरत हुई कि औरतें कहां से आ गईं। खोजी को भेजा कि जाकर देखो। खोजी अकड़ते हुए सामने पहुंचे, मगर गाड़ी से दस कदम अलग।

खिदमतगार–हजरत, जरी सामने यहां तक आइए।

खोजी–ओ गीदी, खबरदार जो बोला !

खिदमतगार–ऐं ! कुछ सनक गए हो क्या?

बैरा–गाड़ी के पास क्यों नहीं जाते भई ! दूर क्यों खड़े हो?

खोजी–(करौली तौल कर) बस खबरदार !

बैरा–ऐं ! तुमको हुआ क्या है? जाते क्यों नहीं सामने?

खोजी–चुप रहो जी। जाना न बूझो, आए वहां से। क्या मेरी जान फालतू है, जो गाड़ी के सामने जाऊं?

इत्तफाक से आज़ाद ने उनकी बेतुकी हांक सुन ली। फौरन बाहर आए कि कहीं से लड़ न पड़ें। खोजी से पूछा–क्यों साहब, यह आप किस पर बिगड़ रहे हैं? जवान नदारद। वहां से झपटकर आज़ाद के पास आए और करौली घुमाते हुए पैतरे बदलने लगे।

आज़ाद–कुछ मुंह से तो कहो ! खुद भी जलील होते हो और मुझे भी जलील करते हो।

खोजी–(गाड़ी की तरफ इशारा करके) अब क्या होगा?

खिदमतगार–हुजूर, इन्होंने आते ही पैंतरा बदला, और यह काठ का खिलौना नचाना शुरू किया। न मेरी सुनते हैं, न अपनी कहते हैं।

खोजी–(आज़ाद के कान में) मियां, इस गाड़ी में औरतें नहीं हैं। वहीं लौंडा तुमसे लड़ने आया होगा।

आज़ाद–यह कहिए, आपके दिल में यह बात जमी हुई थी। आप मेरे साथ बहुत हमदर्दी न कीजिए, अलग जाके बैठिए।

मगर खोजी के दिल में खुप गई थी कि इस गाड़ी में वही जवान छिपके आया है। उन्होंने रोना शुरू किया। अब आज़ाद लाख-लाख समझाते हैं कि देखो, होटल के मुसाफिरों को बुरा मालूम होगा, मगर खोजी चुप नहीं होते। आखिर आपने कहा–जो जो लोग इस पर सवार हों; वह उतर आएं। पहले मैं देख लूं, फिर आप जाएं। आज़ाद ने खिदमतगार से कहा–भाई, अगर वह लोग मंजूर करें तो यह बूढ़ा आदमी झांक कर देख ले। इस सीड़ी को शक हुआ है, कि इसमें कोई और बैठा है। खिदमतगार ने जाकर पूछा, और बोला–सरकार कहती हैं, हां, मंजूर है। चलिए, मगर दूर ही से झांकिएगा।

खोजी–(सबसे रुखसत होकर) लो यारो, अब आखिरी सलाम है। आज़ाद खुदा तुमको दोनों जहान में सुर्खरू रखे।

छुटता है मुकाम, कूच करता हूं मैं,
रुखसत ऐ जिंदगी कि मरता हूं मैं।
अल्लाह से लौ लगी हुई है मेरी;
ऊपर' से दम इस वास्ते भरता हूं।

खिदमतगार–अब आखिर मरने तो जाते ही हो, जरा कदम बढ़ाते न चलो। जैसे अब मरे, वैसे आध घड़ी के बाद।

आज़ाद–क्यों मुर्दे को छेड़ते हो जी।

बग्घी से हंसी की आवाजें आ रही थीं। खोजी आंखों में आंसू भरे चले आ रहे थे कि उनके भाई नजर पड़े। उनको देखते ही खोजी ने हांक लगाई–आइए भाई साहब। आखिरी वक्त आपसे खूब मुलाकात हुई।

रईस–खैर तो है भाई ! क्या अकेले ही चले जाओगे? मुझे किसके भरोसे छोड़े जाते हो?

खोजी भाई के गले मिलकर रोने लगे। जब दोनों गले मिलकर खूब रो चुके तो खोजी ने गाड़ी के पास जाकर खिदमतगार से कहा–खोल दे ! ज्यों ही गरदन अंदर डाली तो देखा, दो औरतें बैठी हैं। इनका सिर ज्यों ही अंदर पहुंचा, उन्होंने इनकी पगड़ी उतार कर दो चपतें लगा दीं। खोजी की जान में जान आई। हंस दिए। आकर आज़ाद से बोले–अब आप जायं, कुछ मुजायका नहीं है। आज़ाद ने होटल के आदमियों को वहां से हटा दिया और उन औरतों से बातें करने लगे।

आज़ाद–आप कौन साहब हैं?

बग्घी में से आवाज आई—आदमी हैं साहब ! सुना कि आप आए हैं, तो देखने चले आए। इस तरह मिलना बुरा तो जरूर है; मगर दिल ने न माना।

आज़ाद—जब इतनी इनायत की है तो अब नकाब दूर कीजिए और मेरे कमरे तक आइए।

आवाज—अच्छा पेट से पांव निकले ! हाथ देते ही पहुंचा पकड़ लिया।

आज़ाद—अगर आप न आएंगी तो मेरी दिलशिकनी होगी। इतना समझ लीजिए।

आवाज—ऐ, हां, खूब याद आया। वह जो दो लेडियां आपके साथ आई हैं, वह कहां हैं? परदा करा दो तो हम उनसे मिल लें।

आज़ाद—बहुत अच्छा, लेकिन मैं रहूं या न रहूं?

आवाज—आपसे क्या परदा है।

आज़ाद ने परदा करा दिया। दोनों औरतें गाड़ी से उतर पड़ीं और कमरे में आईं। मिसों ने उनसे हाथ मिलाया, मगर बातें क्या होतीं। मिसें उर्दू क्या जानें और बेगमों को फ्रांसीसी जबान से क्या मतलब। कुछ देर तक वहां बैठे रहने के बाद, उनमें से एक ने, जो बहुत ही हसीन और शोख थी, आज़ाद से कहा—भई, यहां बैठे-बैठे तो दम घुटता है। अगर परदा हो सके तो चलिए, बाग की सैर करें।

आज़ाद—यहां तो ऐसा कोई बाग नहीं। मुझे याद नहीं आता कि आपसे पहले कब मुलाकात हुई।

हसीना ने आंखों में आंसू भरकर कहा—हां साहब, आपको क्यों याद आएगा। आप हम गरीबों को क्यों याद करने लगे। क्या यहां कोई ऐसी जगह भी नहीं, जहां कोई गैर न हो। यहां तो कुछ कहते-सुनते नहीं बनता। चलिए, किसी दूसरे कमरे में चलें।

आज़ाद को एक अजनबी औरत के साथ दूसरे कमरे में जाते शर्म आती थी, मगर यह समझकर कि इसे शायद कोई परदे की बात कहनी होगी, उसे दूसरे कमरे में ले गए और पूछा—मुझे आपका हाल सुनने की बड़ी तमन्ना है। जहां तक मुझे याद आता है, मैंने आपको कभी नहीं देखा है। आपने मुझे कहां देखा था?

औरत—खुदा की कसम, बड़े बेवफा हो। (आज़ाद के गले में हाथ डालकर) अब भी याद नहीं आता ! वाह रे हम !

आज़ाद—तुम मुझे बेवफा चाहे कह लो; पर मेरी याद इस वक्त धोखा दे रही है।

औरत—हाय अफसोस ! ऐसा जालिम नहीं देखा—

न क्योंकर दम निकल जाये कि याद आता है रह-रहकर;
वह तेरा मुसकिराना कुछ मुझे होंठों में कह-कहकर।

आज़ाद—मेरी समझ में नहीं आता कि यह क्या माजरा है।

औरत—दिल छीन के बातें बनाते हो? इतना भी नहीं होता कि एक बोसा तो ले लो।

आज़ाद—यह मेरी आदत नहीं।

औरत—हाय ! दिल-सा घर तूने गारत कर दिया, और अब कहता है, यह मेरी आदत नहीं।

आज़ाद—अब मुझे फुरसत नहीं है, फिर किसी रोज आइएगा।

औरत–अच्छा, अब कब मिलोगे?

आज़ाद–अब आप तकलीफ न कीजिएगा।

यह कहते हुए आज़ाद उस कमरे में निकल आए। उनके पीछे-पीछे वह औरत भी बाहर निकली। दोनों लेडियों ने उसे देखा तो कट गईं। उसके बाल बिखरे हुए थे, चोली मसकी हुई। उस औरत ने आते ही आज़ाद को कोसना शुरू किया–तुम लोग गवाह रहना। यह मुझे अलग कमरे में ले गए और एक घंटे के बाद मुझे छोड़ा। मेरी जो हालत है, आप लोग देख रही हैं।

आज़ाद–खैरियत इसी में है कि अब आप जाइए।

औरत–अब मैं जाऊं ! अब किसकी होके रहूं?

क्लारिसा–(फ्रांसीसी में) यह क्या माजरा है आज़ाद?

आज़ाद–कोई छटी हुई औरत है।

आज़ाद के तो होश उड़े हुए थे कि अच्छे घर बयाना दिया और वह चमक कर यही कहती थी–अच्छा, तुम्हीं कसम खाओ कि तुम मेरे साथ अकेले कमरे में थे या नहीं।

आज़ाद–अब जलील होकर यहां से जाओगी तुम। अजब मुसीबत में जान पड़ी है।

औरत–ऐ है, अब मुसीबत याद आई ! पहले क्या समझे थे?

आज़ाद–बस, अब ज्यादा न बढ़ना।

औरत–गाड़ीवान से कहो, गाड़ी बरामदे में लाए।

आज़ाद–हां, खुदा के लिए तुम यहां से जाओ।

औरत–जाती तो हूं, मगर देखो तो क्या होता !

जब गाड़ी रवाना हुई तो खोजी ने अंदर आकर पूछा–इनसे तुम्हारी कब की जान-पहचान थी?

आज़ाद–अरे भाई, आज तो गजब हो गया।

खोजी–मना तो करता था कि इनसे दूर रहो, मगर आप सुनते किसकी हैं।

आज़ाद–झूठ बकते हो। तुमने तो कहा था कि आप जायं, कुछ मुजायका नहीं है। और अब निकले जाते हो।

खोजी–अच्छा साहब, मुझी से गलती हुई। मैंने गाड़ीवान को चकमा देकर सारा हाल मालूम कर लिया। यह दोनों कुन्दन की छोकरियां हैं। अब यह सारे शहर में मशहूर करेंगी कि आज़ाद का हमसे निकाह होनेवाला है।

आज़ाद–इस वक्त हमें बड़ी उलझन है भाई ! कोई तदबीर सोचो।

खोजी–तदबीर तो यही है कि मैं कुन्दन के पास जाऊं और उसे समझा-बुझाकर ढर्रे पर ले आऊं।

आज़ाद–तो फिर देर न कीजिए। उम्र भर आपका एहसान मानूंगा।

खोजी तो इधर रवाना हुए, अब आज़ाद ने दोनों लेडियों की तरफ देखा तो दोनों के चेहरे गुस्से से तमतमाए हुए थे। क्लारिसा एक नॉवल पढ़ रही थी और मीडा सिर झुकाए हुए थी। उन दोनों को यकीन हो गया था कि औरत या तो आज़ाद की ब्याहता

बीबी है या आशना। अगर जान-पहचान न होती तो उस कमरे में जाकर बैठने की दोनों में से एक की भी हिम्मत न होती। थोड़ी देर तक बिलकुल सन्नाटा रहा, आखिर आज़ाद ने खुद ही अपनी सफाई देनी शुरू की। बोले–किसी ने सच ही कहा है, 'कर तो डर, न कर तो डर'; मैंने इस औरत की आज तक सूरत भी न देखी थी। समझा कि कोई शरीफजादी मुझसे मिलने आई होगी। मगर ऐसी मक्कार और बेशर्म औरत मेरी नजर से नहीं गुजरी।

दोनों लेडियों ने इसका कुछ जवाब न दिया। उन्होंने समझा कि आज़ाद हमें चकमा दे रहे हैं। अब तो आज़ाद के रहे-सहे हवास भी गायब हो गए। कुछ देर तक तो जब्त किया मगर न रहा गया। बोले–मिस मीडा, तुमने इस मुल्क की मक्कार औरतें अभी नहीं देखीं।

मीडा–मुझे इन बातों से क्या सरोकार है।

आज़ाद–उसकी शरारत देखी?

मीडा–मेरा ध्यान उस वक्त उधर न था।

आज़ाद–मिस क्लारिसा, तुम कुछ समझीं या नहीं।

क्लारिसा–मैंने कुछ खयाल नहीं किया।

आज़ाद–मुझ-सा अहमक भी कम होगा। सारी दुनिया से आकर यहां चरका खा गया।

मीडा–अपने किए का क्या इलाज, जैसा किया, वैसा भुगतो।

आज़ाद–हां, यही तो मैं चाहता था कि कुछ कहो तो सही। मीडा, सच कहता हूं, जो कभी पहले इसकी सूरत भी देखी हो। मगर इसने वह दांव-पेंच किया कि बिलकुल अहमक बन गए।

मीडा–अगर ऐसा था तो उसे अलग कमरे में क्यों ले गए?

आज़ाद–इसी गलती का तो रोना है। मैं क्या जानता था कि वह यह रंग लाएगी।

मीडा–यह तो जो कुछ हुआ सो हुआ। अब आगे के लिए क्या फिक्र है? उसकी बातचीत से मालूम होता था कि वह जरूर नालिश करेगी।

आज़ाद–इसी का तो मुझे भी खौफ है। खोजी को भेजा है कि जाकर उसे धमकाए। देखो, क्या करके आते हैं।

उधर खोजी गिरते-पड़ते कुन्दन के घर पहुंचे, दो-तीन औरतों को कुछ बातें करते सुना। कान लगाकर सुनने लगे।

"बेटा, तुम तो समझती ही नहीं हो; बदनामी कितनी बड़ी है।"

"तो अम्मां जान, बदनामी का ऐसा ही डर तो सभी न दब जाया करें?"

"दबते ही हैं। उस फौजी अफसर से नहीं खड़े-खड़े गिनवा लिए !"

"अच्छा अम्मांजान, तुम्हें अख्तियार है; मगर नतीजा अच्छा न होगा।"

खोजी से अब न रहा गया। झल्लाकर बोले–ओ गीदी, निकल तो आ। देख तो कितनी करौलियां भोंकता हूं ! बढ़-बढ़के बातें बनाती है? नालिश करेगी, और बदनाम करेगी।

कुन्दन ने यह आवाज सुनी तो खिड़की से झांका। देखा, तो एक ठिगना-सा आदमी

पैंतरे बदल रहा है। महरी से कहा कि दरवाजा खोलकर बुला लो। महरी ने आकर कहा—कौन साहब हैं? आइए।

खोजी अकड़ते हुए अंदर गए और एक मोढ़े पर बैठे। बैठना ही था कि सिर नीचे और टांगें ऊपर। औरतें हंसने लगीं। खैर, आप संभलकर दूसरे मोढ़े पर बैठे और कुछ बोलना ही चाहते थे कि कुन्दन सामने आई और आते ही खोजी को एक धक्का देकर बोली—चूल्हे में जाय ऐसा मियां। बरसों के बाद आज सूरत दिखाई तो भेस बदलकर आया। निगोड़े, तेरा जनाजा निकले। तू अब तक था कहां?

खोजी—यह दिल्लगी हमको पसंद नहीं।

कुन्दन—(धप लगाकर) तो शादी क्या समझकर की थी?

शादी का नाम सुनकर खोजी की बांछें खिल गईं। समझे कि मुफ्त में औरत हाथ आई। बोले—तो शादी इसलिए की थी कि जूतियां खाएं?

कुन्दन—आखिर तू इतने दिन था कहां? ला, क्या कमाकर लाया है।

यह कहकर कुन्दन ने उनकी जेब टटोली तो तीन रुपये और कुछ पैसे निकले। वह निकाल लिए। वह बेचारे हां-हां करते ही रहे कि सबों ने उन्हें घर से निकालकर दरवाजा बंद कर दिया। खोजी वहां से भागे और रोनी सूरत बनाए हुए होटल में दाखिल हुए।

आज़ाद ने कहा—कहो भाई, क्या कर आए? ऐं ! तुम तो पिटे हुए से जान पड़ते हो।

खोजी—जरा दम लेने दो। मामला बहुत नाजुक है। तुम तो फंसे ही थे, मै भी फंस गया। इस सूरत का बुरा हो, जहां आता हूं वहीं चाहने वाले निकल आते हैं। एक पंडित ने कहा था कि तुम्हारे पास मोहिनी है। उस वक्त तो उसकी बात मुझे कुछ न जंची, मगर अब देखता हूं तो उसने बिलकुल सच कहा था।

आज़ाद—तुम तो हो सिड़ी। ऐसे ही तो बड़े हसीन हो। मेरी बाबत भी कुन्दन से कुछ बातचीत हुई या आंखें ही सेंकते रहे?

खोजी—बड़े घर की तैयारी कर रखो। बंदा वहां भी तुम्हारे साथ होगा।

आज़ाद—बाज आया आपके साथ से। तुम्हें खिलाना-पिलाना सब अकारथ गया। बेहतर है, तुम कहीं और चले जाओ।

इस पर खोजी बहुत बिगड़े। बोले—हां, साहब, काम निकल गया न? अब तो मुझसे बुरा कोई न होगा।

खानसामा—क्या है ख्वाजा जी, क्यों बिगड़ गए?

खोजी—तू चुप रह कुली, ख्वाजा जी ! और सुनिएगा?

खानसामा—मैंने तो आपकी इज्जत की थी।

खोजी—नहीं, आप माफ कीजिए। क्या खूब। टके का आदमी और हमसे इस तरह पेश आए। मगर तुम क्या करोगे भाई, हमारा नसीबा ही फिरा हुआ है। खैर जो चाहो, सुनाओ। अब हम यहां से कूच करते हैं। जहां हमारे कद्रदां हैं, वहां जाएंगे।

खानसामा—यहां से बढ़के आपका कौन कद्रदां होगा? खाना आपको दें, कपड़ा आपको दें, उस पर दोस्त बनाकर रखें, फिर अब और क्या चाहिए?

खोजी–सच है भाई, सच है। हम आज़ाद के गुलाम तो हैं ही। उन्हीं से कसम लो कि उनके बाप-दादा हमारे बुजुर्गों के टुकड़े खाकर पले थे या नहीं

आज़ाद–आपकी बातें सुन रहा हूं। जरा इधर देखिएगा।

खोजी–सौ सोनार की, तो एक लोहार की।

आज़ाद–हमारे बाप-दादा आपके टुकड़खोरे थे?

खोजी–जी हां, क्या इसमें कुछ शक भी है?

इतने में खानसामा ने दूर से कहा–ख्वाजा साहब, हमने तो सुना है कि आपके वालिद अंडे बेचा करते थे।

इतना सुनना था कि खोजी आग हो गए और एक तवा उठाकर खानसामा की तरफ दौड़े। तवा बहुत गर्म था। अच्छी तरह उठा भी नहीं पाए थे कि हाथ जल गया। झिझक कर तवे को जो फेंका तो खुद भी मुंह के बल गिर पड़े।

खानसामा–या अली, बचाइयो !

बैरा–तवा तो जल रहा था, हाथ जल गया होगा।

मीडा–डॉक्टर को फौरन बुलाओ।

खानसामा–उठ बैठो भाई, कैसे पहलवान हो !

आज़ाद–खुदा ने बचा लिया, वरना जान ही गई थी।

ख्वाजा साहब चुपचाप पड़े हुए थे। खानसामा ने बरामदे में एक पलंग बिछाया और दो आदमियों ने मिलकर खोजी को उठाया कि बरामदे में ले जाएं। उसी वक्त एक आदमी ने कहा–अब बचना मुश्किल है। खोजी अक्ल के दुश्मन तो थे ही। उनको यकीन हो गया कि अब आखिरी वक्त है। रहे-सहे हवास भी गायब हो गए। खानसामा और होटल के और नौकर-चाकर उनको बनाने लगे।

खानसामा–भाई दुनिया, इसी का नाम है। जिंदगी का एतबार क्या।

बैरा–इसी बहाने मौत लिखी थी।

मुहर्रिर–और अभी नौजवान आदमी हैं। इनकी उम्र ही क्या है।

आज़ाद–क्या हाल है? नब्ज का कुछ पता है?

खानसामा–हुजूर, अब आखिरी वक्त है। अब कफन-दफन की फिक्र कीजिए। यह सुनकर खोजी जल-भुन गए। मगर आखिरी वक्त था, कुछ बोल न सके।

आज़ाद–किसी मौलवी को बुलाओ।

मुहर्रिर–हुजूर, यह न होगा। हमने कभी इनको नमाज पढ़ते नहीं देखा।

आज़ाद–भई, इस वक्त यह जिक्र न करो।

मुहर्रिर–हुजूर मालिक हैं, मगर यह मुसलमान नहीं हैं।

खोजी का बस चलता तो मुहर्रिर की बोटियां नोच लेते; मगर इस वक्त वह मर रहे थे।

खानसामा–कब्र खुदवाइए, अब इनमें क्या है?

बैरा–इसी सामनेवाले मैदान में इनको तोप दो।

खोजी का चेहरा सुर्ख हो गया। कम्बख्त कहता है, तोप दो ! यह नहीं कहता कि आपको दफन कर दो।

आज़ाद–बड़ा अच्छा आदमी था बेचारा।

खानासामा–लाख सिड़ी थे, मगर थे नेक।

बैरा–नेक क्या थे। हां, यह कहो कि किसी तरह निभ गई।

खोजी अपना खून पीके रह गया, मगर मजबूर थे।

मुहर्रिर–अब इनको मिलके तोप ही दीजिए।

आज़ाद–घड़ी दो में मुरलिया बाजेगी।

बैरा–ख्वाजा साहब कहिए, अब कितनी देर में मुरलिया बाजेगी?

आज़ाद–अब इस वक्त क्या बताएं बेचारे, अफसोस है !

खानसामा–अफसोस क्यों हुजूर, अब मरने के तो दिन ही थे। जवान-जवान मरने जाते हैं। यह तो अपनी उम्र तमाम कर चुके। अब क्या आकबत के बोरिए बटोरेंगे?

आज़ाद–हां, है तो ऐसा ही, मगर जान बड़ी प्यारी होती है। आदमी चाहे दो सौ बरस का होके मेर, मगर मरते वक्त यही जी चाहता है कि दस बरस और जिंदा रहता।

खानसामा–तो हुजूर, यह तमन्ना तो उसको हो, जिसका कोई रोनेवाला हो। इनके कौन बैठा है।

इतने में होटल का एक आदमी एक चपरासी को हकीम बनाकर लाया।

आज़ाद–कुर्सी पर बैठिए हकीम साहब।

हकीम–यह गुस्ताखी मुझसे न होगी। हुजूर बैठें।

आज़ाद–इस वक्त सब माफ है।

हकीम–यह बेअदबी मुझसे न होगी।

आज़ाद–हकीम साहब, मरीज की जान जाती है और आप तकल्लुफ करते हैं।

हकीम–चाहे मरीज मर जाए; मगर मैं अदब को हाथ से न जाने दूंगा।

खोजी को हकीम की सूरत से नफरत हो गई।

आज़ाद–आप तकल्लुफ में मरीज की जान ले लेंगे।

हकीम–अगर मौत है तो मरेगा ही, मैं अपनी आदत क्यों छोड़ूं?

आज़ाद ने खोजी के कान में जोर से कहा–हकीम साहब आए हैं।

खोजी ने हकीम साहब को सलाम किया और हाथ बढ़ाया।

हकीम–(नब्ज पर हाथ रखकर) अब क्या बाकी है। मगर अभी तीन-चार दिन की नब्ज है, इस वक्त इनको ठंडे पानी से नहलाया जाए तो बेहतर है, बल्कि अगर पानी में बर्फ डाल दीजिए तो और भी बेहतर है।

आज़ाद–बहुत अच्छा। अभी लीजिए।

हकीम–बस, एक-दो मन बर्फ काफी होगी।

इतने में मिस मीडा ने आज़ाद से कहा–तुम भी अजीब आदमी हो। दो-चार होटल वालों को लेकर एक गरीब का खून अपनी गरदन पर लेते हो। खोजी की चारपाई हमारे कमरे में सामने बिछवा दो और इन आदमियों से कह दो कि कोई खोजी के करीब न आए।

इस तरह खोजी की जान बची। आराम से सोए। दूसरे दिन घूमते-घामते एक चंडूखाने

में आ पहुंचे और छींटे उड़ाने लगे। एकाएक हुस्नआरा का जिक्र सुनकर उनके कान खड़े हो हुए। कोई कह रहा था कि हुस्नआरा पर एक शाहजादे आशिक हुए हैं, जिनका नाम कमरुद्दौला है। खोजी बिगड़कर बोले—खबरदार, जो अब किसी ने हुस्नआरा का नाम फिर लिया। शरीफजादियों का नाम बद करता है बे।

एक चंडूबाज—हम तो सुनी-सुनाई कहते हैं साहब ! शहर भर में यह खबर मशहूर है, आप किस-किसकी जबान रोकिएगा।

खोजी—झूठ है, बिल्कुल झूठ।

चंडूबाज—अच्छा, हम झूठ कहते हैं तो ईदू से पूछ लीजिए।

ईदू—हमने तो यह सुना था कि बेगम साहबा ने अखबार में कुछ लिखा था तो वह शाहजादे ने पढ़ा और आशिक हो गए, फौरन बेगम साहब के नाम से खत लिखा और शायद किसी बांके को मुकर्रर किया है कि आज़ाद को मार डाले। खुदा जाने, सच है या झूठ।

खोजी—तुमने किससे सुनी है यह नात? इस धोखे में न रहना। थाने पर चल कर गवाही देनी होगी।

ईदू—हुजूर क्या आज़ाद के दोस्त हैं।

खोजी—दोस्त नहीं हू, उस्ताद हूं। मेरा शगिर्द है।

ईदू—आपके कितने शागिर्द होंगे?

खोजी—यहां से लेकर रूम और शाम तक।

खोजी शाहजादे का पता पूछते हुए लाल कुएं पर पहुंचे। देखा तो सैकड़ों आदमी पानी भर रहे हैं।

खोजी—क्यों भाई, यह कुआं तो आज तक देखने में नहीं आया था।

भिश्ती—क्या कहीं बाहर गए थे आप?

खोजी—हां भई, बड़ा लंबा सफर करके लौटा हूं।

भिश्ती—इसे बने तो चार महीने हो गए।

खोजी—अहा-हा ! यह कहो, भला किसने बनवाया है?

भिश्ती—शाहजादा कमरुद्दौला ने।

खोजी—शाहजादा साहब रहते कहां हैं?

भिश्ती—तुम तो मालूम होता है, इस शहर में आज ही आए हो। सामने उन्हीं की बारादरी तो है।

खोजी यहां से महल के चोबदार के पास पहुंचे और अलेक-सलेक करके बोले—भाई, कोई नौकरी दिलवाते हो।

दरबान—दारोगा साहब से कहिए, शायद मतलब निकले।

खोजी—उनसे कब मुलाकात होगी?

दरबान—उनके मकान पर जाइए, और कुछ चटाइए।

खोजी—भला शाहजादे तक रसाई हो सकती है या नहीं?

दरबान—अगर कोई अच्छी सूरत दिखाओ तो पौ बारह है।

इतने में अंदर से एक आदमी निकला। दरबान ने पूछा—किधर चले शेखजी?

शेख—हुक्म हुआ है कि किसी रम्माल को बहुत जल्द हाजिर करो।

खोजी–तो हमको ले चलिए। इस फन में हम अपना सानी नहीं रखते।

शेख–ऐसा न हो, आप वहां चलकर बेवकूफ बनें।

खोजी–अजी, ले तो चलिए। इस फन में हम अपना सानी रखते।

शेख साहब उनको लेकर बारादरी में पहुंचे। शाहजादा साहब मसनद लगाए पेचवान पी रहे थे और मुसाहब लोग उन्हें घेरे बैठे हुए थे। खोजी ने अदब से सलाम किया और फर्श पर जा बैठे।

आगा–हजूर, अगर हुक्म हो तो तारे आसमान से उतार लूं।

मुन्ने–हक है। ऐसा ही रोब है हमारे सरकार का।

मिर्जा–खुदावंद, अब हुजूर की तबीयत का क्या हाल है?

आगा–खुदा का फजल है। खुदा ने चाहा तो सुबह-शाम शिप्पा लड़ा ही चाहता है। हुजूर का नाम सुनकर कोई निकाह से इनकार करेगा भला !

मुन्ने–अजी, परिस्तान की हूर हो तो लौंडी बन जाय।

खोजी–खुदा गवाह है कि शहर में दूसरा रईस टक्कर का नहीं है। यह मालूम होता है कि खुदा ने अपने हाथ से बनाया है।

मिर्जा–सुभान-अल्लाह ! वाह ! खां साहब, वाह ! सच है !

शेख–खां साहब नहीं, ख्वाजा साहब कहिए।

मिर्जा–अजी, वह कोई हों, हम तो इंसाफ के लोग हैं। खुदा को मुंह दिखाना है। क्या बात कही है। ख्वाजा साहब, आप तो पहली मरतबा इस सोहबत में शरीक हुए हैं। रफ्ता-रफ्ता देखिएगा कि हुजूर ने कैसा मिजाज पाया है।

शेख–बूढ़ों में बूढ़े, जवानों में जवान।

खोजी–मुझसे कहते हो। शहर में कौन रईस है, जिससे मैं वाकिफ नहीं?

आगा–भई मिर्जा, अब फतह है। उधर का रंग फीका हो रहा है। अब तो इधर ही झुकी हुई हैं।

मिर्ज़ा–वल्लाह ! हाथ लाइएगा। मरदों का वार खाली जाय?

आगा–यह सब हुजूर का इकबाल है।

कमरुद्दौला–मैं तो तड़प रहा था, जिंदगी से बेजार था ! आप लोगों की बदौलत इतना तो हो गया।

खोजी हैरान थे कि यह क्या माजरा है। हुस्नआरा को यह क्या हो गया कि कमरुद्दौला पर रीझीं ! कभी यकीन आता था, कभी शक होता था।

आगा–हुजूर का दूर-दूर तक नाम है।

मिर्जा–क्यों नहीं, लन्दन तक।

खोजी–कह दिया न भाईजान, कि दूसरा नजर नहीं आता।

शाहजादा–(आगा से) यह कहां रहते हैं और कौन हैं?

खोजी–जी, गरीब का मकान मुर्गी-बाजार में है।

आगा–जभी आप कुड़क रहे थे।

मिर्जा–हां, अंडे बेचते तो हमने भी देखा था।

खोजी–जभी आप सदर-बाजार में टापा करते हैं?

शाहजादा–ख्वाजा साहब जिले में ताक हैं।

खोजी–आपकी कद्रदानी है।

बातों-बातों में यहां की टोह लेकर खोजी घर चले। होटल में पहुंचे तो आज़ाद को बूढ़े मियां से बातें करते देखा। ललकार कर बोले–लो, मैं भी आ पहुंचा।

आज़ाद–गुल न मचाओ, हम लोग न जाने कैसी सलाह कर रहे हैं; तुमको क्या ! बेफिक्रे हो। कुछ बसंत की भी खबर है? यहां एक नया गुल खिला है।

खोजी–अजी, हमें सब मालूम है। हमें क्या सिखाते हो।

आज़ाद–तुमसे किसने कहा?

खोजी–अजी, हमसे बढ़कर टोहिया कोई हो तो ले। अभी उन्हीं कमरुद्दौला के यहां जा पहुंचा। पूरे एक घंटे तक हमसे-उनसे बातचीत रही। आदमी तो खब्ती-सा है और बिल्कुल जाहिल। मगर उसने हुस्नआरा को कहां से देख लिया? छोकरी है चुलबुली। कोठे पर गयी होगी, बस उसकी नजर पड़ गयी होगी।

बूढ़े मियां–जरा जबान संभाल कर !

खोजी–आप जब देखो, तिरछे ही होकर बातें करते हैं? क्या कोई आपका दिया खाता है या आपका दबैल है? बड़े अक्लमंद आप ही तो एक हैं !

इतने में फिटन पर एक अंगरेज आज़ाद को पूछता हुआ पहुंचा। आज़ाद ने बढ़ कर उससे हाथ मिलाया और पूछा तो मालूम हुआ कि वह फौजी अफसर है; आज़ाद को एक जलसे का चेयरमैन बनने के लिए कहने आया है।

आज़ाद–इसके लिए आपने क्यों इतनी तकलीफ की? एक खत काफी था।

साहब–मैं चाहता हूं कि आप इसी वक्त मेरे साथ चलें। लेक्चर का वक्त बहुत करीब है।

आज़ाद साहब के साथ चल दिये। टाउन-हॉल में बहुत से आदमी जमा था। आज़ाद के पहुंचते ही लोग उन्हें देखने के लिए टूट पड़े। और जब वह बोलने के लिए मेज के सामने खड़े हुए तो चारों तरफ समां बंध गया। जब वह बैठना चाहते तो लोग गुल मचाते थे, अभी कुछ देर और फरमाइए। यहां तक कि आज़ाद ही के बोलते-बोलते वक्त पूरा हो गया और साहब बहादुर के बोलने की नौबत न आयी। शाहजादा कमरुद्दौला भी मुसाहबों के साथ जलसे में मौजूद थे। ज्योंही आज़ाद बैठे, उन्होंने आगा से कहा–सच कहना, ऐसा खूबसूरत आदमी देखा है?

आगा–बिल्कुल शेर मालूम होता है।

शाहजादा–ऐसा जवान दुनिया में न होगा।

आगा–और तकरीर कितनी प्यारी है?

शाहजादा–क्यों साहब, जब हम मरदों का यह हाल है, तो औरतों का क्या हाल होता होगा?

आगा–औरत क्या, परी आशिक हो जाय।

शाहजादा साहब जब यहां से चले तो दिल में सोचा–भला आज़ाद के सामने मेरी दाल क्या गलेगी? मेरा और आज़ाद का मुकाबला क्या? अपनी हिमाकत पर बहुत शर्मिंदा हुए। ज्योंही मकान पर पहुंचे, मुसाहबों ने बेपर की उड़ानी शुरू की।

मिर्जा—खुदावंद, आज तो मुंह मीठा कराइए। वह खुशखबरी सुनाऊं कि फड़क जाइए। हुजूर उनके यहां एक महरी नौकर है। वह मुझसे कहती थी कि आज आपके सरकार की तसवीर का आज़ाद की तसवीर से मुकाबिला किया और बोलीं—मेरी शाहजादे पर जान जाती है।

और मुसाहबों ने भी खुशामद करनी शुरू की; मगर नवाब साहब ने किसी से कुछ न कहा। थोड़ी देर तक बैठे रहे। फिर अंदर चले गये। उनके जाने के बाद मुसाहबों ने आगा से पूछा—अरे मियां ! बताओ तो, क्या माजरा है? क्या सबब है कि सरकार आज इतने उदास हैं?

आगा—भई, कुछ न पूछिए। बस, यही समझ लो कि सरकार की आंखें खुल गयीं।

एक सौ नौ

आज़ाद के आने के बाद ही बड़ी बेगम ने शादी की तैयारियां शुरू कर दी थीं। बड़ी बेगम चाहती थीं कि बारात खूब धूम-धाम से आये। आज़ाद धूम-धाम के खिलाफ थे! इस पर हुस्नआरा की बहनों में बातें होने लगीं—

बहार बेगम—यह सब दिखाने की बातें है। किसी से दो हाथी मांगे, किसी से दो-चार घोड़े; कहीं से सिपाही आये, कहीं से बरछी-बरदार ! लो साहब, बारात आयी है। मांगे-तांगे की बारात से फायदा?

बड़ी बेगम—हमको तो यह तमन्ना नहीं है कि बारात धूम ही से दरवाजे पर आये। मगर कम से कम इतना तो ज़रूर होना चाहिए कि जग-हंसाई न हो।

जानी बेगम—एक काम कीजिए, एक खत लिख भेजिए।

गेती—हमारे खानदान में कभी ऐसा हुआ ही नहीं। हमने तो आज तक नहीं सुना। शुनिये जुलाहों के यहां तक तो अंगरेजी बाजा बारात के साथ होता है।

बहार—हां साहब, बारात तो वही है, ज़िसमें पचास हाथी, बल्कि फीलखाने का फीलखाना हो, सांड़िनियों की कतार दो महल्ले तक जाय। शहर भर के घोड़े और हवादार और तामदान हों और कई रिसाले, बल्कि तोपखाना भी जरूर हो। कदम-कदम पर आतशबाजी छूटती हो और गोले दगते हों। मालूम हो कि बारात क्या, किला फतह किया जाता है।

नाजुक—यह सब बुरी बातें हैं, क्यों?

बहार—जी नहीं, इन्हें बुरी कौन कहेगा भला।

नाजुक—अच्छा, वह जानें, उनका काम जाने।

हुस्नआरा ने जब देखा कि आज़ाद की जिद से बड़ी बेगम नाराज हुई जाती हैं तो आज़ाद के नाम खत लिखा—

प्यारे आज़ाद;

माना कि तुम्हारे खयालात बहुत ऊंचे हैं, मगर राह-रस्म में दखल देने से क्या

नतीजा निकलेगा। अम्माजान जिद करती हैं, और तुम इनकार, खुदा ही खैर करे। हमारी खातिर से मान लो, और जो वह कहें सो करो।

आज़ाद ने इसका जवाब लिखा–जैसी तुम्हारी मर्जी। मुझे कोई उज्र नहीं है।

हुस्नआरा ने यह खत पढ़ा तो तस्कीन हुई। नाजुकअदा से बोलीं–लो बहन, जवाब आ गया।

नाजुक–मान गये या नहीं?

हुस्नआरा–न कैसे मानते।

नाजुक–चलो, अब अम्माजान को भी तस्कीन हो गयी।

बहार–मिठाइयां बांटो। अब इससे बढ़कर खुशी की और क्या बात होगी?

नाजुक–आखिर फिर रुपया अल्लाह ने किस काम के लिए दिया है?

बहार–वाह री अक्ल ! बस रुपया इसीलिए है कि आतशबाजी में फूंके या सजावट में लुटाये। और कोई काम ही नहीं?

नाजुक–और आखिर क्या काम है? क्या परचून की दुकान करे? चने बेचे? कुछ मालूम तो हो कि रुपया किस काम में खर्च किया जाय? दिल का हौसला और कैसे निकाले !

बहार–अपनी-अपनी समझ है।

नाजुक–खुदा न करे कि किसी की ऐसी उलटी समझ हो। लो साहब, अब बरात भी गुनाह है हाथी, घोड़े, बाजा सब ऐब में दाखिल। जो बारात निकालते हैं, सब गधे हैं। एक तुम और दूसरे मियां आज़ाद दो आदमियों पर अक्ल खतम हो गयी। जरा आने तो दो मियां को, सारी शेखी निकल जायेगी।

दूसरे दिन बड़ी धूम-धाम से मांझे की तैयारी हुई। आज़ाद की तरफ खोजी मुहतमिम थे। आपने पुराने ढंग की जामदानी की अचकन पहनी जिसमें कीमती बेल टंकी हुई थी। सिर पर बहुत बड़ा शमला। कंधे पर कश्मीर का हरा दुशाला। इस ठाट से आप बाहर आये तो लोगों ने तालियां बजायीं। इस पर आप बहुत ही खफा होकर बोले–यह तालियां हम पर नहीं बजाते हो। यह अपने बाप-दादों पर तालियां बजाते हो। यह खास उनका लिबास है। कई लौंडों ने उनके मुंह पर हंसना शुरू किया, मगर इंतजाम के धुन में खोजी को और कुछ न सूझता था। कड़क कर बोले–हाथियों को उसी तरफ रहने दो। बस, उसी लाइन में ला-लाकर हाथी लगाओ।

एक फीलवान–यहां कहीं जगह भी है? सबका भुरता बनायेंगे आप?

खोजी–चुप रह, बदमाश !

मिर्जा साहब भी खड़े तमाशा देख रहे थे। बोले–भई, इस फन में तो तुम उस्ताद हो।

खोजी–(मुस्करा कर)आपकी कद्रदानी है।

मिर्जा–आपका रोब सब मानते हैं।

खोजी–हम किस लायक हैं भाईजान ! दोस्तों का इकबाल है।

गरज इस धूम-धाम से मांझा दुलहिन के मकान पर पहुंचा कि सारे शहर में शोर मच गया। सवारियां उतरीं। मीरासिनों ने समधिनों को गालियां दीं। मियां आज़ाद बाहर से बुलवाये गये और उनसे कहा गया कि मढे के नीचे बैठिए। आज़ाद बहुत इनकार करते

रहे; मगर औरतों ने एक न सुनी। नाजुक बेगम ने कहा—आप तो अभी से बिचकने लगे। अभी तो मांझे का जोड़ा पहनना पड़ेगा।

आज़ाद—यह मुझसे नहीं होने का।

जानी बेगम—अब चुपचाप पहन लो, बस !

आज़ाद—क्या फजूल रस्म है। !

जानी—ले, अब पहनते हो कि तकरार करते हो? हमसे जनरैली न चलेगी।

बेगम—भला, यह भी कोई बात है कि मांझे का जोड़ा न पहनेंगे?

आज़ाद—अगर आपकी खातिर इसी में है तो लाइए, टोपी दे लूं।

नाजुक बेगम—जब तक मांझे का पूरा जोड़ा न पहनोगे, यहां से उठने न पाओगे।

आज़ाद ने बहुत हाथ जोड़े, गिड़गिड़ा कर कहा कि खुदा के लिए मुझे इस पीले जोड़े से बचाओ। मगर कुछ बस न चला। सालियों ने अंगरखा पहनाया, कंगन बांधा। सारी बातें रस्म के मुताबिक पूरी हुईं।

जब आज़ाद बाहर गये तो सब बेगमें मिलकर बाग की सैर करने चलीं। गेतीआरा ने एक फूल तोड़कर जानी बेगम की तरफ फेंका। उसने वह फूल रोक कर उन पर ताक के मारा तो आंचल से लगता हुआ चमन में गिरा। फिर क्या था, बाग में चारों तरफ फूलों की मार होने लगी। इसके बाद नाजुकअदा ने यह गजल गायी।

वाकिफ नहीं है कासिद मेरे गमे-निहां से,
वह काश हाल मेरा सुनते मेरी जबां से।
क्यों त्योरियों पर बल है, माथे पर क्यों शिकन है?
क्यों इस कदर हो बरहम, कुछ तो कहो जबां से।
कोई तो आशियाना सैयाद ने जलाया,
काली घटाएं रोकर पलटी हैं बोस्तां से।
जाने को जाओ लेकिन, यह तो बताते जाओ,
किस तरह बारे फुरकत उठेगा नातवां से।

बहार—जी चाहता है, तुम्हारी आवाज को चूम लूं।

नाजुक—और मेरा जी चाहता है कि तुम्हारी तारीफ चूम लूं।

बहार—हम तुम्हारी आवाज के आशिक हैं।

नाजुक—आपकी मेहरबानी। मगर कोई खूबसूरत मर्द आशिक हो तो बात है। तुम हम पर रीझीं तो क्या? कुछ बात नहीं।

बहार—बस, इन्हीं बातों से लोग उंगलियां उठाते हैं। और तुम नहीं छोड़तीं।

जानी—सच्ची आवाज भी कितनी प्यारी होती है।

नाजुक—क्या कहना है ! अब दो ही चीजों में तो असर है, एक गाना, दूसरे हुस्न। अगर हमको अल्लाह ने ऐसा हुस्न न दिया होता, तो हमारे मियां हम पर क्यों रीझते?

बहार—तुम्हारा हुस्न तुम्हारे मियां को मुबारक हो ! हम तो तुम्हारी आवाज पर मिटे हुए हैं।

नाजुक—और मैं तुम्हारे हुस्न पर जान देती हूं। अब मैं भी बनाव-चुनाव करना तुमसे सीखूंगी।

नाजुक—बहन, अब तुम झेंपती हो। जब कभी तुम मिलीं, तुम्हें बनते-ठनते देखा। मुझसे दो-तीन साल बड़ी हो, मगर बारह बरस की बनी रहती हो। हैं तुम्हारे मियां किस्मत के धनी।

बहार—सुनो बहन, हमारी राय यह है कि अगर औरत समझदार हो, तो मर्द की ताकत नहीं कि उसे बाहर का चस्का पड़े।

साचिक के दिन जब चांदी का पिटारा बाहर आया, तो खोजी बार-बार पिटारे का ढकना उठाकर देखने लगे कि कहीं शीशियां न गिरने लगें। मोतिये का इत्र खुदा जाने, किन दिक्कतों से लाया हूं। यह वह इत्र है, जो आसफुद्दौला के यहां से बादशाह की बेगम के लिए गया था।

एक आदमी ने हंसकर कहा—इतना पुराना इत्र हुजूर को कहां से मिल गया?

खोजी—हूं: ! कहां से मिल गया ! मिल कहां से जाता? महीनों दौड़ा हूं, तब जाके यह चीज हाथ लगी है।

आदमी—क्यों साहब, यह बरसों का इत्र चिटक न गया होगा?

खोजी—वाह ! अक्ल बड़ी कि भैंस? बादशाही कोठों के इत्र कहीं चिटका करते हैं? यह भी उन गंधियों का तेल हुआ, जो फेरी लगाते फिरते हैं !

आदमी—और क्यों साहब, केवड़ा कहां का है !

खोजी—केवड़िस्तान एक मुकाम है, कजलीवन के पास। वहां के केवड़ों से खींचा गया है।

आदमी—केवड़िस्तान ! यह नाम तो आज ही सुना।

खोजी—अभी तुमने सुना ही क्या है? केवड़िस्तान का नाम ही सुनकर घबड़ा गये?

आदमी—क्यों हुजूर, यह कजलीवन कौन-सा है? वही न, जहां घोड़े बहुत होते हैं?

खोजी—(हंसकर)अब बनाते हैं आप ! कजलीवन में घोड़े नहीं, खास हाथियों का जंगल है।

आदमी—क्यों जनाब, केवड़िस्तान से तो केवड़ा आया, और गुलाब कहां का है? शायद गुलाबिस्तान का होगा?

खोजी—शाबाश ! यह हमारी सोहबत का असर है कि अपने पैरों आप उड़ने लगे। गुलाबिस्तान कामरू-कमच्छा के पास है, जहां का जादू मशहूर है।

रात को जब साचिक का जुलूस निकला तो खोजी ने एक पनशाखेवाली का हाथ पकड़ा और कहा—जल्दी-जल्दी कदम बढ़ा।

वह बिगड़ कर बोली—दूर मुए ! दाढ़ी झुलस दूंगी, हां। आया वहां से बारात का दारोगा बनके, सिवा मुरहेपन के दूसरी बात नहीं।

खोजी—निकाल दो इस हरामजादी को यहां से।

औरत—निकाल दो इस मूड़ीकाटे को।

खोजी—अब मैं छूरी भोंक दूंगा, बस !

औरत—अपने पनशाखे से मुंह झुलस दूंगी। मुआ दीवाना, औरतों को रास्ते में छेड़ता चलता है।

खोजी—अरे मियां कांस्टेबिल, निकाल दो इस औरत को।

औरत-तू खुद निकाल दे, पहले।

जुलूस के साथ कई बिगड़े दिल भी थे। उन्होंने खोजी को चकमा दिया-जनाब, अगर इसने सजा न पाई तो आपकी बड़ी किरकिरी होगी। बदरोबी हो जाएगी। आखिर, यह फैसला हुआ, आप कमर कसकर बड़े जोश के साथ पनशाखेवाली की तरफ झपटे। झपटते ही उसने पनशाखा सीधा किया और कहा-अल्लाह की कसम ! न झुलस दूं तो अपने बाप क़ी नहीं।

लोगों ने खोजी पर फबतियां कसनी शुरू कीं।

एक-क्यों मेजर साहब, अब तो हार मानी?

दूसरा-ऐं ! करौली और छूरी क्या हुई !

तीसरा-एक पनशाखेवाली से नहीं जीत पाते, बड़े सिपाही की दुम बने हैं !

औरत-क्या दिल्लगी है जरा जगह से बढ़ा, और मैंने दाढ़ी और मूंछ दोनों झुलस दिये।

खोजी-देखो, सब-के-सब देख रहे हैं कि औरत समझकर इसको छोड़ दिया। वरना कोई देव भी होता तो हम बेकत्ल किये न छोड़ते इस वक्त।

जब साचिक दुलहिन के घर पहुंचा, तो दुलहिन की बहनों ने चंदन से समधिन की मांग भरी। हुस्नआरा का निखार आज देखने के काबिल था। जिसने देखा, फड़क गई। दुलहिन को फूलों का गहना पहनाया गया। इसके बाद छड़ियों की मार होने लगी। नाजुकअदा और जानी बेगम के हाथ में फूलों की छड़ियां थीं। समधिनों पर इतनी छड़ियां पड़ीं की बेचारी घबड़ा गईं।

जब मांझे और साचिक की रस्म अदा हो चुकी तो मेंहदी को जुलूस निकला। दुलहिन के यहां महफिल सजी हुई थी। डोमिनियां गा रही थीं। कमरे की दीवारें इस तरह रंगी हुई थीं कि नजर नहीं ठहरती थी। छतगीर की जगह सुर्ख जरबफ्त लगाया गया था। उस पर सुनहरी कलाबत्तू की झालर थी। फर्श भी सुर्ख मखमल का था। झाड़ और कंबल, मृदंग और हांड़ियां सब सुर्ख। कमरा शीशमहल हो गया था। बेगमें भारी-भारी जोड़े पहने चहकती फिरती थीं। इतने में एक सुखपाल लेकर महरियां सहन में आईं। उस पर से एक बेगम साहबा उतरीं, जिनका नाम परीबानू था।

सिपहआरा बोलीं-हां, अब नाजुकअदा बहन को जवाब देने वाली आ गईं। बराबर की जोड़ है। न यह कम न वह कम।

रूहअफजा-नाम बड़ा प्यारा है।

नाजुक-प्यारा क्यों न हो। इनके मियां ने यह नाम रखा है।

परीबानू-और तुम्हारे मियां ने तुम्हारा नाम क्या रखा है। चरबांक महल?

इस पर बड़ी हंसी उड़ी। बारह बजे रात को मेंहदी रवाना हुई। जब जुलूस सज गया तो ख्वाजा साहब आ पहुंचे और आते ही गुल मचाना शुरू किया-सब चीजें करीने के साथ लगाओ और मेरे हुक्म के बगैर कोई कदम भी आगे न रखे। वरना बुरा होगा।

सजावट के तख्त बड़े-बड़े कारीगरों से बनवाये गए थे। जिसने देखा, दंग हो गया।

एक-यों तो सभी चीजें अच्छी हैं, मगर तख्त सबसे बढ़-चढ़कर हैं।

दूसरा-बड़ा रुपया इन्होंने सर्फ किया है साहब।

तीसरा-ऐसा मालूम होता है कि सचमुच के फूल खिले हैं।

चौथा–जरा चंडूबाजों के तख्त को देखिए। ओहो-हो ! सब-के-सब औंधे पड़े हुए हैं ! आंखों से नशा टपका पड़ता है। कमाल इसे कहते हैं। मालूम होता है, सचमुच चंडूखाना ही है। वह देखिए, एक बैठा हुआ किस मजे से पौंडा छील रहा है।

इसके बाद तुर्क सवारों का तख्त आया। जवान लाल बनात की कुर्तियां पहने, सिर पर बांकी टोपियां दिये, बूट चढ़ाये, हाथ में नंगी तलवारें लिये, बस यही मालूम होता था कि रिसाले ने अब धावा किया।

जब जुलूस दूल्हा के यहां पहुंचा तो बेगमें पालकियों से उतरीं। दूल्हा की बहनें और भावजें दरवाजे तक उन्हें लाने आईं। सब समधिनें बैठीं तो डोमिनयों ने मुबारकबाद गाई। फिर गालियों की बौछार होने लगी। आज़ाद को जब यह खबर हुई तो बहुत ही बिगड़े; मगर किसी ने एक न सुनी। अब आज़ाद के हाथों में मेहंदी लगाने की बारी आई। उनका इरादा था कि एक ही उंगली में मेंहदी लगाएं, मगर जब एक तरफ सिपहआरा और दूसरी तरफ रूहअफजा बेगम ने दोनों हाथ मेहंदी लगानी शुरू की तो उनकी हिम्मत न पड़ी कि हाथ खींच लें।

हंसी-हंसी में उन्होंने कहा–हिन्दुओं के देखा-देखी हम लोगों ने यह रस्म सीखी है। नहीं तो अरब में कौन मेहंदी लगाता है।

सिपहआरा–जिन हाथों से तलवार चलाई, उन हाथों को कोई हंस नहीं सकता। सिपाही को कौन हंसेगा भला?

रूहअफजा–क्या बात कही है ! जवाब दो तो जानें।

दो बजे रात को रूहअफजा बेगम को शरारत जो सूझी तो गेरू घोलकर सोते में महरियों को रंग दिया और लगे हाथ कई बेगमों के मुंह भी रंग दिए। सुबह को जानी बेगम उठी तो उनको देखकर सब-की-सब हंसने लगीं। चकराईं कि आज माजरा क्या है। पूछा–हमें देखकर हंस रही हो क्या !

रूहअफजा–घबराओ नहीं, अभी मालूम हो जाएगा।

नाजुक–कुछ अपने चेहरे की भी खबर है?

जानी–तुम अपने चेहरे की तो खबर लो।

दोनों आईनों के पास जाके देखती हैं, तो मुंह रंगा हुआ। बहुत शर्मिंदा हुईं।

रूहअफजा–क्यों बहन, क्या यह भी कोई सिंगार है?

जानी–अच्छा, क्या मुजायका है; मगर अच्छे घर बयाना दिया। आज रात होने दो। ऐसा बदला लूं कि याद ही करो।

रूहअफजा–हम दरवाजे बंद करके सो रहेंगे। फिर कोई क्या करेगा !

जानी–चाहे दरवाजा बंद कर लो, चाहे दस मन मन का ताला डाल दो, हम उस स्याही से मुंह रंगेगी, जिससे जूते साफ किए जाते हैं।

रूहअफजा–बहन, अब तो माफ करो। और यों हम हाजिर हैं। जूतों का हार गले में डाल दो।

इस तरह चहल-पहल के साथ मेहंदी की रस्म अदा हुई।

एक सौ दस

खोजी ने जब देखा कि आज़ाद की चारों तरफ तारीफ हो रही है, और हमें कोई नहीं पूछता, तो बहुत झल्लाए और कुल शहर के अफीमचियों को जमा करके उन्होंने भी जलसा किया और यों स्पीच दी—भाइयो ! लोगों का खयाल है कि अफीम खाकर आदमी किसी काम का नहीं रहता। मैं कहता हूं, बिलकुल गलत। मैंने रूम की लड़ाई में जैसे-जैसे काम किए, उन पर बड़े-से-बड़ा सिपाही भी नाज कर सकता है। मैंने अकेले दो-दो लाख आदमियों का मुकाबिला किया है। तोपों के सामने बेधड़क चला गया हूं। बड़े-बड़े पहलवानों को नीचा दिखा दिया है। और मैं वह आदमी हूं, जिसके यहां सत्तर पुश्तों से लोग अफीम खाते आए हैं।

लोग—सुभान अल्लाह ! सुभान अल्लाह !

खोजी—रही अक्ल की बात, तो मैं दुनिया के बड़े-से-बड़े शायर, बड़े-से-बड़े फिलॉसफर को चुनौती देता हूं कि वह आकर मेरे सामने खड़ा हो जाए। अगर एक डपट में भगा न दूं तो अपना नाम बदल डालूं।

लोग—क्यों न हो।

खोजी—मगर आप लोग कहेंगे कि तुम अफीम की तारीफ करके इसे और गिरां कर दोगे, क्योंकि जिस चीज की मांग ज्यादा होती है, वह महंगी बिकती है। मैं कहता हूं कि इस शक को दिल में न आने दीजिए; क्योंकि सबसे ज्यादा जरूरत दुनिया में गल्ले की है। अगर मांग के ज्यादा होने से चीजें महंगी हो जातीं तो गल्ला अब तक देखने को भी न मिलता। मगर इतना सस्ता है कि कोरी, चमार, धुनिए, जुलाहे सब खरीदते और खाते हैं। वजह यह कि जब लोगों ने देखा कि गल्ले की जरूरत ज्यादा है, तो गल्ला ज्यादा बोने लगे। इसी तरह जब अफीम की मांग होगी, तो गल्ले की तरह बोई जाएगी और सस्ती बिकेगी। इसलिए हर एक सच्चे अफीमची का फर्ज है कि वह इसके फायदों को दुनिया पर रोशन कर दे।

एक—क्या कहना है ! क्या बात पैदा की।

दूसरा—कमाल है, कमाल !

तीसरा—आप इस फन के खुदा हैं।

चौथा—मेरी तसल्ली नहीं हुई। आखिर, अफीम दिन-दिन क्यों महंगी होती जाती है?

पांचवां—चुप रह ! नामाकूल ! ख्वाजा साहब की बात पर एतराज करता है ! जाकर ख्वाजा साहब के पैरों पर गिरो और कहो कि कुसूर माफ कीजिए।

खोजी—भाइयो ! किसी भाई को जलील करना मेरी आदत नहीं। गोकि खुदा ने मुझे बड़ा रुतबा दिया है और मेरा नाम सारी दुनिया में रोशन है ! मगर आदमी नहीं, आदमी का जौहर है। मैं अपनी जबान से किसी को कुछ न कहूंगा। मुझे यही कहना चाहिए कि मैं दुनिया में सबसे ज्यादा नालायक, सबसे ज्यादा बदनसीब और सबसे ज्यादा जलील हूं। मैंने मिस्र के पहलवान को पटकनी नहीं दी थी, उसी ने उठाके मुझे दे मारा था। जहां गया, पिटके आया। गो दुनिया जानती है कि ख्वाजा साहब का जोड़ नहीं, मगर

अपनी जबान से मैं क्यों कहूं। मैं तो यही कहूंगा कि बुआ जाफरान ने मुझे पीट लिया और मैंने उफ् तक न की।

एक–खुदा बख्शे आपको। क्या कहना है उस्ताद।

दूसरा–पिट गए और उफ् तक न की?

खोजी–भाइयो ! गोकि मैं आपनी शान में इज्जत के बड़े-बड़े खिताब पेश कर सकता हूं; मगर अब मुझे कुछ कहना होगा तो यही कहूंगा कि मैं झक मारता हूं। अगर अपना जिक्र करूंगा तो यही कहूंगा कि मैं पाजी हूं। मैं चाहता हूं कि लोग मुझे जलील समझें ताकि मुझे गुरूर न हो।

लोग–वाह-वाह ! कितनी आजिजी है ! जभी तो खुदा ने आपको यह रुतबा दिया।

खोजी–आजकल जमाना नाजुक है। किसी ने जरा टेढ़ी बात की और धर लिए गए। किसी को एक धौल लगाई और चालान हो गया। हाकिम ने दस रुपया जुर्माना कर दिया या दो महीने की कैद। अब बैठे हुए चक्की पीस रहे हैं। इस जमाने में अगर निबाह है, तो आजिजी में। और अफीम से बढ़कर आजिजी का सबक देने वाली दूसरी चीज नहीं।

लोग–क्या दलीलें हैं ! सुभान-अल्लाह !

खोजी–भाइयो, मेरी इतनी तारीफ न कीजिए, वरना मुझे गुरूर हो जाएगा। मैं वह शेर हूं, जिसने जंग के मैदान में करोड़ों को नीचा दिखाया। मगर अब तो आपका गुलाम हूं।

एक–आप इस काबिल हैं कि डिबिया में बंद कर दें।

दूसरा–आपके कदमों की खाक लेकर ताबीज बनानी चाहिए।

तीसरा–इस आदमी की जबान चूमने के काबिल है।

चौथा–भाई, यह सब अफीम के दम का जहूरा है।

खोजी–बहुत ठीक। जिसने यह बात कही, हम उसे अपना उस्ताद मानते हैं, यह मेरी खानदानी सिफत है। एक नकल सुनिए–एक दिन बाजार में किसी ने चिड़ीमार से एक उल्लू के दाम पूछे। उसने कहा, आठ आने। उसी के बगल में एक छोटा उल्लू भी था। पूछा, इसकी क्या कीमत है? कहा, एक रुपया। तब तो गाहक ने कान खड़े किए और कहा–इतने बड़े उल्लू के दाम आठ आने और जरा से जानवर का मोल एक रुपया? चिड़ीमार ने कहा–आप तो है उल्लू। इतना नहीं समझते कि इस बड़ें उल्लू में सिर्फ यह सिफत है कि यह उल्लू है और इस छोटे में दो सिफतें हैं, एक यह कि खुद उल्लू है, दूसरे उल्लू का पट्ठा है। तो भाइयो ! आपका यहां गुलाम सिर्फ उल्लू नहीं, बल्कि उल्लू का पट्ठा है

एक–हम आज से अपने को उल्लू की दुम फाख्ता लिखा करेंगे।

दूसरा–हम तो जाहिल आदमी हैं, मगर अब अपना नाम लिखेंगे तो गधे का नाम बढ़ा देंगे। आज से हम आज़िजी सीख गए।

खोजी–सुनिए, इस उल्लू के पट्ठे ने जो-जो काम किया, कोई करे तो जानें; उसकी टांग की राह निकल जाएं। पहाड़ों को हमने काटा और बड़े-बड़े पत्थर उठाकर दुश्मन पर फेकें। एक दिन 44 मन का एक पत्थर एक हाथ से उठाकर रूसियों पर मारा तो दो लाख पच्चीस हजार सात सौ उनसठ आदमी कुचल के मर गए।

एक–ओफ्फोह ! इन दुबले-पतले हाथ-पांवों पर यह ताकत।

खोजी—क्या कहा? दुबले-पतले हाथ-पांव। यह हाथ-पांव दुबले-पतले नहीं। मगर बदन-चोर है। देखने में तो मालूम होता है कि मरा हुआ आदमी है, मगर कपड़े उतारे और देव मालूम होने लगा। इसी तरह मेरे कद का भी हाल है। गंवार आदमी देखे तो कहे कि बौना है। मगर जाननेवाले जानते हैं कि मेरा कद कितना ऊंचा है। रूम में जब दो-एक गंवारों ने मुझे बौना कहा, तो बेअख्तियार हंसी आ गई। यह खुदा की देन है कि हूं तो मैं इतना ऊंचा, मगर कोई कलियुग की खूंटी कहता है, कोई बौना बनाता है। हूं तो शरीफजादा; मगर देखनेवाले कहते हैं कि यह कोई पाजी है। अक्ल इस कदर कूट-कूटकर भरी है कि अगर अफलातून जिंदा होता, तो शगिर्दी करता। मगर जो देखता है, कहता है कि यह गधा है। यह दरजा अफीम की बदौलत ही हासिल हुआ है। अब तो यह हाल है कि अगर कोई आदमी मेरे सिर पर जूतों से पीटे, तो उफ् न करूं। अगर किसी ने कहा कि ख्वाज गधा है, तो हंसकर जवाब दिया कि मैं ही नहीं, मेरे बाप और दादा भी ऐसे ही थे।

एक—दुनिया में ऐसे-ऐसे औलिया पड़े हुए हैं !

खोजी—मगर इस आजिजी के साथ दिलेर भी ऐसा हूं कि किसी ने बात कही और मैंने चांटा जड़ा। मिस्र के नामी पहलवान को मारा। यह बात किसी अफीमची में नहीं देखी। मेरे वालिद भी तोलों अफीम पीते थे और दिन भर दुकानों पर चिलमें भरा करते थे। मगर यह बात उनमें भी न थी।

लोग—आपने अपने बाप का नाम रोशन कर दिया।

खोजी—अब मैं आप लोगों से चंडू की सिफत बयान करता हूं। बगैर चंडू पिए आदमी में इनसानियत आ नहीं सकती। आप लोग शायद इसकी दलील चाहते होंगे। सुनिए—बगैर लेटे हुए कोई चंडू पी नहीं सकता और लेटना अपने को खाक में मिलाना है। बाबा सादी ने कहा है—

खाक शो पेश अजां की खाक शवीं
(मरने से पहले खाक हो जा।)

चंडू की दूसरी सिफत यह है कि हरदम लौ लगी रहती है। इससे अदमी का दिल रोशन हो जाता है। तीसरी सिफत यह है कि इसकी पीनक में फिक्र करीब नहीं आने पाती। चुस्की लगाई और गोते में आए। चौथी सिफत यह है कि अफीमची को रात भर नींद नहीं आती। और यह बात पहुंचे हुए फकीर ही को हासिल होती है। पांचवीं सिफत यह है कि अफीमची तड़के ही उठ बैठता है। सबेरा हुआ और आग लेने दौड़े। और जमाना जानता है कि सबेरे उठने से बीमारी नहीं आती।

इस पर एक पुराने खुर्राट अफीमची ने कहा—हजरत, यहां मुझे एक शक है। जो लोग चीन गए हैं। वह कहते हैं कि वहां तीस बरस से ज्यादा उम्र का आदमी ही नहीं। इससे तो यही साबित होता है कि अफीमियों की उम्र कम होती है।

खोजी—यह आपसे किसने कहा? चीन वाले किसी को अपने मुल्क में नहीं जाने देते। असल बात यह है कि चीन में तीस बरस के बाद लड़का पैदा होता है।

लोग—क्या, तीस बरस के बाद लड़का पैदा होता है ! इसका तो यकीन नहीं आता।

एक—हां-हां होगा। इसमें यकीन न आने की कौन बात है। मतलब यह कि जब

औरत तीस बरस की हो जाती है, तब कहीं लड़का पैदा होता है।

खोजी–नहीं-नहीं; यह मतलब नहीं। मतलब यह है कि लड़का तीस बरस तक हमल में रहता है।

लोग–बिलकुल झूठ ! खुदा की मार इस झूठ पर।

खोजी–क्या कहा? यह आवाज किधर से आई? अरे यह कौन बोला था? यह किसने कहा कि झूठ है?

एक–हुजूर, उस कोने से आवाज आई थी।

दूसरा–हुजूर, यह गलत कहते हैं। इन्हीं की तरफ से आवाज आई थी।

खोजी–उन बदमाशों को कत्ल कर डालो। आग लगा दो। हम और झूठ ! मगर नहीं, हमीं चुके। मुझे इतना गुस्सा न करना चाहिए। अच्छा साहब, हम झूठे, हम गप्पी, बल्कि हमारे बाप बेईमान, जालसाज और जमाने भर के दगाबाज। आप लोग बतलाएं, मेरी क्या उम्र होगी?

एक–आप कोई पचास के पेटे में होंगे।

दूसरा–नहीं-नहीं, आप कोई सत्तर के होंगे।

खोजी–एक हुई, यार रखिएगा हजरत हमारा सिन न पचास का, न साठ का। हम दो ऊपर सौ बरस के हैं। जिसको यकीन न आए वह काफिर।

लोग–उफ्फोह, दो ऊपर सौ बरस का सिन है।

खोजी–जी हां, दो ऊपर सौ बरस का सिन है।

एक–अगर यही सही है तो यह एतराज उठ गया कि अफीमियों की उम्र कम होती है। अब भी अगर कोई अफीम न पिए, तो बदनसीब है।

खोजी–दो ऊपर सौ बरस का सिन हुआ और अब तक वही खमदम है कहो, हजार से लड़ें, कहो लाख से। अच्छा अब आप लोग भी अपने-अपने तजरबें बयान करें। मेरी तो बहुत सुन चुके; अब कुछ अपनी भी कहिए।

इस पर गुद्दू नाम का एक अफीमची उठकर बोला–भाई पंचों, मैं कलवार हूं। मुल शराब हमारे यहां नहीं बिकती। हम जब लड़के से थे, तब से हम अफीम पीते हैं। एक बार होली के दिन हम घर से निकले। ऐ बस, एक जगह कोई पचास हों, पैंतालिस हों, इतने आदमी खड़े थे। किसी के हाथ में लोटा, किसी के हाथ में पिचकारी है। हम उधर से जो चले, तो एक आदमी ने पीछे से दो जूता दिया, तो खोपड़ी भन्ना गई। अगर चाहता हो उन सबको डपट लेता, मगर चुप हो रहा।

खोजी–शाबाश ! हम तुमसे बहुत खुश हुए गुद्दू !

गुद्दू–हुजूर की दुआ से यह सब है।

इसके बाद नूर खां नाम का एक अफीमची उठा। कहा–पंचो ! हम हाथ जोड़ कर कहते हैं कि हमने कई साल से अफीम, चंडू पीना शुरू किया है। एक दिन हम एक चने के खेत में बैठे बूट खा रहे थे। किसान था दिल्लगीबाज। आया और मेरा हाथ पकड़कर कानीहौज ले चला। मैं कान दबाए हुए उसके साथ चला आया।

इसके बाद कई अफीमचियों ने अपने-अपने हाल बयान किए। आखिर में एक बुड्ढे जोगादारी अफीमी ने खड़े होकर कहा–भाइयो ! आज तक अफीमचियों में किसी

ने ऐसा काम नहीं किया था। इसलिए हमारा फर्ज है कि हम अपने सरदार को कोई खिताब दें। इस पर सब लोगों ने मिलकर खुशी से तालियां बजाईं और खोजी को गीदी का खिताब दिया। खोजी ने उन सबका शुक्रिया अदा किया और मजलिस बरखास्त हुई।

एक सौ ग्यारह

आज बड़ी बेगम का मकान परिस्तान बना हुआ है। जिधर देखिए, सजावट की बाहर है। बेगमें धमा-चौकड़ी मचा रही हैं।

जानी–दूल्हा के यहां तो आज मीरासिनों की धूम है। कहां तो मियां आज़ाद को नाच-गाने से इतनी चिढ़ थी कि मजाल क्या, कोई डोमिनी घर के अंदर कदम रखने पाए। और आज सुनती हूं कि तबले पर थाप पड़ रही है और गजलें, ठुमरियां, टप्पे गाए जाते हैं।

नाजुक–सुना है, आज सुरैया बेगम भी आनेवाली हैं।

बहार–उस मालजादी का हमारे सामने जिक्र न किया करो।

नाजुक–(दांतों तले उंगली दबाकर) ऐसा न कहो, बहन !

जानी–ऐसी पाक-दामन औरत है कि उसका-सा होना मुश्किल है।

नाजुक–यह लोग खुदा जाने, क्या समझती हैं, सुरैया बेगम को।

बहार–ऐ है ! सच कहना, सत्तर चूहे खाके बिल्ली हज को चली।

इतने में एक पालकी से एक बेगम साहबा उतरीं। जानी बेगम और नाजुकअदा में इशारे होने लगे। यह सुरैया बेगम थीं।

सुरैया–हमने कहा, चलके जरी दुलहिन को देख आएं।

रूहअफजा–अच्छी तरह आराम से बैठिए।

सुरैया–मैं बहुत अच्छी बैठी हूं। तकल्लुफ क्या है।

नाजुक–यहां तो आपको हमारे और जानी बेगम के सिवा किसी ने न देखा होगा।

सुरैया–मैं तो एक बार हुस्नआरा से मिल चुकी हूं।

सिपहआरा–और हमसे भी?

सुरैया–हां, तुमसे भी मिल थे, मगर बताएंगे नहीं।

सिपहआरा–कब मिले थे अल्लाह ! किस मकान में थे?

सुरैया–अजी, मैं मजाक करती थी। हुस्नआरा बेगम को देखकर दिल शाद हो गया।

नाजुक–क्या हमसे ज्यादा खूबसूरत हैं?

सुरैया–तुम्हारा तो दुनिया के परदे पर जवाब नहीं है।

नाजुक–भला दूल्हा से आपसे बातचीत हुई थी?

सुरैया–बातचीत आपसे हुई होगी। मैंने तो एक दफा राह में देखा था।

नाजुक–भला दूसरा निकाह भी मंजूर करते हैं वह।

सुरैया–यह तो उनसे कोई जाके पूछे।

नाजुक–तुम्हीं पूछ लो बहन, ख़ुदा के वास्ते।

सुरैया–अगर मंजूर हो दूसरा निकाह, तो फिर क्या?

नाजुक–फिर क्या, तुमको इससे क्या मतलब?

रूहअफजा–आखिर दूसरे निकाह के लिए किसे तजवीजा है।

नाजुक–हम ख़ुद अपना पैगाम करेंगे।

रूहअफजा–बस, हद हो गई नाजुक अदा बहन ! ओफ्फोह !

नाजुक–(आहिस्ता से) सुरैया बेगम, तुमने गलती की। धीरज न रख सकीं।

सुरैया–हम जान फिदा करते, गर वादा वफा होता,

मरना ही मुकद्दर था, वह आते तो क्या होता !

नाजुक–हां, है तो यही बात। खैर, जो हुआ, अच्छा ही हुआ, मसलहत भी यही थी।

हुस्नआरा बेगम ने यह शेर सुना और नाजुक बेगम की बातों को तौला, तो समझ गईं कि हो न हो, सुरैया बेगम यही हैं। कनखियों से देखा और गरदन फेर के इशारे से सिपहआरा को बुलाकर कहा–इनको पहचाना? सोचो तो, यह कौन हैं?

सिपहआरा–ऐ बाजी, तुम तो पहेलियां बुझवाती हो।

हुस्नआरा–तुम ऐसी तबियतदार, और अब तक न समझ सकीं?

सिपहआरा–तो कोई उड़ती चिड़िया तो नहीं पकड़ सकता।

हुस्नआरा–उस शेर पर गौर करो।

सिपहआरा–अख्खाह, (सुरैया बेगम की तरफ देखकर) अब समझ गई।

हुस्नआरा–है औरत हसीन।

सिपहआरा–हां है; मगर तुमसे क्या मुकाबिला।

हुस्नआरा–सच कहना कितनी जल्द समझ गई हूं।

सिपहआरा–इसमें क्या शक है, मगर यह तुमसे कब मिली थीं? मुझे तो याद नहीं आता।

हुस्नआरा–खुदा जाने। अलारक्खी बन के आने न पाती, जोगिन के भेष में कोई फटकने न देता। शिब्बोजान का यहां क्या काम?

सिपहआरा–शायद महरी-वहरी बनके गुजर हुआ हो।

हुस्नआरा–सच तो यह है कि हमको इनका आना बहुत खटकता है। इन्हें तो यह चाहिए था कि जहां आज़ाद का नाम सुनतीं, वहां से हट जातीं, न किसी ऐसी जगह आना !

सिपहआरा–इनसे यहां तक आया क्योंकर गया?

हुस्नआरा–ऐसा न हो कि यहां कोई गुल खिले।

सिपहआरा ने जाकर बहार बेगम से कहा–जो बेगम अभी आई हैं, उनको तुमने पहचाना? सुरैया बेगम यही हैं। तब तो बहार बेगम के कान खड़े हुए। गौर से देखकर बोलीं–माशा-अल्लाह ! कितनी हसीन औरत है। ऐसी नमकीनी भी कम देखने में आई।

सिपहआरा–बाजी को खौफ है कि कोई गुल न खिलाएं।

बहार–गुल क्या खिलाएंगे। अब तो इनका निकाह हो गया।

सिपहआरा–ऐ है, बाजी ! निकाह पर न जाना। यह वह खिलाड़ है कि घूंघट के आड़ में शिकार खेलें।

बहार—ऐ नहीं, क्यों बेचारी को बदनाम करती हो।

सिपहआरा—वाह ! बदनामी की एक ही कही। कोई पेशा, कोई कर्म इनसे छूटा? लगावटबाजी में इनकी धूम है।

बहार—हम जब इस ढब पर आने भी दें।

उधर नाजुकअदा बेगम ने बातों-बातों में सुरैया बेगम से पूछा—बहन, यह बात अब तक न खुली कि तुम पादरी के यहां से क्यों निकल आईं। सुरैया बेगम ने कहा—बहन, इस जिक्र से रंज होता है। जो हुआ, वह हुआ; अब उसका घड़ी-घड़ी जिक्र करना फजूल है। लेकिन जब नाजुकअदा बेगम ने बहुत जिद की तो उन्होंने कहा—बात यह हुई कि बेचारे पादरी ने मुझ पर तरस खाकर अपने घर में रखा और जिस तरह कोई खास अपनी बेटियों से पेश आता है, उसी तरह मुझसे पेश आते। मुझे पढ़ाया-लिखाया, मुझसे रोज कहते कि तुम ईसाई हो जाओ; लेकिन मैं हंसके टाल दिया करती थी। एक दिन पादरी साहब तो चले गए थे किसी काम को, उनका भतीजा, जो फौज में नौकर है उनसे मिलने आया। पूछा—कहां गए हैं? मैंने कहा—कहीं बाहर गए हैं। इतना सुनना था कि वह गाड़ी से उतर आया और अपनी जेब से बोतल निकाल कर शराब पी। जब नशा हुआ तो मुझसे कहने लगा, तुम भी पियो। उसने समझा, मैं राजी हूं। मेरा हाथ पकड़ लिया। मैं उससे अपना हाथ छुड़ाने लगी। मगर वह मर्द, मैं औरत ! फिर फौजी जवान, कुछ करते-धरते नहीं बनती थी। आखिर बोली—साहब, तुम फौज के जवान हो। मैं भला तुमसे क्या जीत पाऊंगी? मेरा हाथ छोड़ दो। इस पर हंसकर बोला—हम बिना पिलाए न मानेंगे। मेरा तो खून सूख गया। अब करूं तो क्या करूं। अगर किसी को पुकारती हूं, तो यह इस वक्त मार ही डालेगा। और बेइज्जत करने पर तो तुला ही हुआ है। चाहा कि झपट के निकल जाऊं, पर उसने मुझे गोद में उठा लिया और बोला—हमसे शादी क्यों नहीं कर लेती? मेरा बदन थर-थर कांप रहा था कि या खुदा, आज कैसे इज्जत बचेगी, और क्या होगा? मगर आबरू का बचाने वाला अल्लाह। उसी वक्त पादरी साहब आ पहुंचे। बस, अपना-सा मुंह लेकर रह गया। चुपके से खिसक गया। पादरी साहब उसको तो क्या कहते। जब बराबर का लड़का या भतीजा कमाता-धमाता, तो बड़ा-बूढ़ा उसका लिहाज करता ही है। जब वह भाग गया, तो मेरे पास आकर बोले—मिस पालेन, अब तुम यहां नहीं रह सकतीं।

मैं—पादरी साहब, इसमें मेरा जरा कुसूर नहीं।

पादरी—मैंने खुद देखा कि तुम और वह हाथापाई करते थे।

मैं—वह मुझे जबरर्दस्ती शराब पिलाना चाहते थे।

पादरी—अजी, मैं खूब जानता हूं। मैं तुमको बहुत नेक समझता था।

मैं—पूरी बात तो सुन लीजिए।

पादरी—अब तुम मेरी आंखों से गिर गईं। बस अब तुम्हारा निबाह यहां नहीं हो सकता। कल तक तुम अपना बंदोबस्त कर लो। मैं नहीं जानता था कि तुम्हारे यह ढंग हैं।

उसी दिन रात को मैं वहां से भागी।

उधर बड़ी बेगम साहिबा इंतजाम करने में लगी हुई थीं। बात-बात पर कहती जाती थीं कि अल्लाह ! आज तो बहुत थकी। अब मेरा सिन थोड़ा है कि इतने चक्कर लगाऊं। उस्तानी जी हां-में-हां मिलाती जाती थीं।

बड़ी बेगम—उस्तानी जी, अल्लाह गवाह है, आज बहुत शल हो गई।

उस्तानी—अरे तो हुजूर दौड़ती भी कितनी हैं ! इधर से उधर, उधर से इधर।

महरी—दूसरा हो तो बैठ जाए।

उस्तानी—इस सिन में इतनी दौड़-धूप मुश्किल है।

महरी—ऐसा न हो, दुश्मनों की तबीयत खराब हो जाए। आखिर हम लोग किसलिए हैं?

बड़ी बेगम—अभी दो-तीन दिन तो न बोलो, फिर देखा जाएगा। इसके बाद करना ही क्या है।

उस्तानी—यह क्यों? खुदा सलामत रखे; पोते-पोतियां न होंगे?

बड़ी बेगम—बहन, जिंदगी का कौन ठिकाना है।

अब बारात का हाल सुनिए। कोई पहर रात गए बड़ी धूम-धाम से बारात रवाना हुई। सब के आगे निशान का हाथी झूमता हुआ जाता था। हाथी के सामने कदम-कदम पर अनार छूटते जाते थे। महताब की रोशनी से चांद का रंग फक था। चर्खी की आन-बान से आसमान का कलेजा धक था। तमाशाइयों की भीड़ से दोनों तरफ के कमरे फटे पड़ते थे। जिस वक्त गोरों का बाजा चौक में पहुंचा और उन्होंने बैंड बजाया तो लोग समझे कि आसमान के फरिश्ते बाजा बजाते-बजाते उतर आए हैं।

इतने में मियां खोजी इधर-उधर फुदकते हुए आए।

खोजी—ओ शहनाई वालो ! मुंह न फैलाओ बहुत।

लोग—आइए, आइए ! बस आप ही की कसर थी।

खोजी—अरे, हम क्या कहते हैं? मुंह न फैलाओ बहुत।

लोग—कोई आपकी सुनता ही नहीं।

खोजी—ये तो नौसिखिये हैं। मेरी बातें क्या समझेंगे।

लोग—इनसे कुछ फर्माइश कीजिए।

खोजी—अच्छा वल्लाह ! वह समां बांधू की दंग हो जाइए। यह चीज छेड़ना भाई—

करेजवा में दरद उठी;
कासे कहूं ननदी मोरे राम।
सोती थी मैं अपने मंदिल में;
अचानक चौंक पड़ी मोरे राम।
(करेजवा में दरद उठी...।)

लोग—सुभान-अल्लाह ! आप इस फन के उस्ताद हैं मगर शहनाई वाले अब तक आपका हुक्म नहीं मानते।

खोजी—नहीं भई, हुक्म तो मानें दौड़ते हुए और न मानें तो मैं निकाल दूं। मगर इसको क्या किया जाए कि अनाड़ी हैं। बस, जरा मुझे आने में देर हुई और सारा काम बिगड़ गया।

इतने में एक दूसरे आदमी ने खोजी के नजदीक जाकर जरा कंधे का इशारा किया तो खोजी लड़खड़ाए और उनके चेले अफीमी भाइयों ने बिगड़ना शुरू किया।

एक—अरे मियां ! क्या आंखों के अंधे हो?

दूसरा–ईंट की ऐनक लगाओ मियां।

तीसरा–और ख्वाजा साहब भी धक्का देते तो कैसी होती?

चौथा–मुंह के बल गिरे होते और क्या।

पांचवां–अजी, यों कहो कि नाक सिलपट हो जाती।

खोजी–अरे भाई, अब इससे क्या वास्ता है। हम किसी से लड़ते-झगड़ते थोड़े ही हैं। मगर हां, अगर कोई गीदी हमसे बोले तो इतनी करौलियां भोंकूं कि याद करे।

जब बारात दुलहिन के घर पहुंची तो दूल्हे को दरवाजे के सामने लाए और दुलहिन का नहाया हुआ पानी घोड़े के सुमों के नीचे डाला। इसके बाद घी और शक्कर मिलाकर घोड़े के पांव में लगाया। दूल्हा महल में आया। दूल्हा की बहनें उस पर दुपट्टे का आंचल डाले हुए थीं। दुलहिन की तरफ से औरतें बीड़ा हर कदम पर डालती जाती थीं। इस तरह दूल्हा मड़वे के नीचे पहुंचा। उसी वक्त एक औरत उठी और रूमाल से आंखें पोंछती हुई बाहर चली गई। यह सुरैया बेगम थीं।

आज़ाद मंड़वे के नीचे उस चौकी पर खड़े किए गए जिस पर दुलहिन नहायी थी। मीरासिनों ने दुलहिन के उबटन का, जो मांझे के दिन से रखा हुआ था, एक भेड़ और एक शेर बनाया और दूल्हा से कहा–कहिए, दूल्हा भेड़, दुलहिन शेर।

आज़ाद–अच्छा साहब, हम शेर, वह भेड़; बस?

डोमिनी–ऐ वाह ! यह तो अच्छे दूल्हा आए। आप भेड़, वह शेर।

आज़ाद–अच्छा साहब यों ही सही। आप भेड़, वह शेर।

डोमिनी–ऐ हुजूर, कहिए, यह शेर, मैं भेड़।

आज़ाद–अच्छा साहब, मैं भेड़, वह शेर।

इस पर खूब कहकहा पड़ा। इसी तरह और भी रस्में अदा हुईं, और तब दूल्हा महफिल में गया। यहां नाच-गाना हो रहा था। एक नाजनीन बीच में बैठी थी, मजाक़ हो रहा था। एक नवाब साहब ने यह फिकरा कसा–बी साहब, आपने गजब का गला पाया है। उसक़ी तारीफ ही करना फजूल है।

नाजनीन–कोई समझदार तारीफ करे तो खैर, अताई-अनाड़ी ने तारीफ की तो क्या?

नवाब–ऐ साहब, हम तो खुद तारीफ करते हैं।

नाजनीन–तो आप अपना शुमार भी समझदारों में करते हैं। बतलाइए, यह बिहाग, का वक्त है या घनाक्षरी का।

नवाब–यह किसी ढाड़ी-बचे से पूछो ज़ाके।

नाजनीन–ऐ लो ! जो इस फन के नुकते समझे वह ढाड़ी-बचा कहलाये। वाह री, अक्ल, वह अमीर नहीं गंवार है, जो दो बातें न जानता हो–गाना और पकाना। आपके से दो-एक घामड़ रईस शहंर में और हों तो सारा शहर बस जाय।

नाजनीन ने यह गजल गाई–

लगा न रहने दे झगड़े को यार तू बाकी,
रुके न हाथ अभी है रंगे-गुलू बाक़ी।
जो एक रात भी सोया वह गुलगले मिलकर;
तो भीनी-भीनी महीनों रही है बू बाकी।

हमारे फूल उठा के वह बोला गुंच-देहन;
अभी तलक है, मुहब्बत की इसमें बू बाकी।
फिना है सबके लिए मुझप' कुछ नहीं मौकूफ;
यह रंज है कि अकेला रहेगा तू बाकी।
जो इस जमाने में रह जाय आबरू बाकी।

नवाब–हां, यह सबसे ज्यादा मुकद्दम चीज है।

नाजनीन–मगर हयादारों के लिए। बगड़ेबाजों को क्या?

इस पर जोर से कहकहा पड़ा कि नवाब साहब झेंप गए।

नाजनीन–अब कुछ और फर्माइए हुजूर। चेहरे का रंग क्यों फक हो गया?

मिर्जा–आपसे नवाब साहब बहुत डरते हैं।

नवाब–जी हां, हरामजादे से सभी डरा करते हैं।

नाजनीन–ऐ है, जभी आप अपने अब्बाजान से इतना डरते हैं।

इस पर फिर कहकहा पड़ा और नवाब साहब की जबान बंद हो गई।

उधर दुलहिन को सात सुहागिनों ने मिलकर इस तरह संवारा कि हुस्न की आब भी भड़क उठी। निकाह की रस्म शुरू हुई। काजी साहब अंदर आए और दो गवाहों को साथ लाए। इसके बाद दुलहिन से पूछा गया कि आज़ाद पाशा के साथ निकाह मंजूर है? दुलहिन ने शर्म से सिर झुका लिया।

बड़ी बेगम–ऐ बेटा, कह दो।

रूहअफजा–हुस्नआरा, बोलो बहन। देर क्यों करती हो।

नाजुक–बस, तुम हां कह दो।

जानी–(आहिस्ता से) बजरे पर सैर कर चुकीं, हवा खा चुकीं और अब इस वक्त नखरे बघारती हैं।

आखिर बड़ी कोशिश के बाद हुस्नआरा ने धीरे से 'हूं' कहा।

बड़ी बेगम–लीजिए, दुलहिन ने हुंकारी भरी।

काजी–हमने तो आवाज नहीं सुनी।

बड़ी बेगम–हमने सुन लिया, बहुत से गवाह हैं।

काजी साहब ने बाहर आकर दूल्हा से भी यही सवाल किया।

आज़ाद–जी हां, कुबूल किया !

काजी साहब चले गए और महफिल में तवायफों ने मिलकर मुबारकबाद गाई। इसके बाद एक परी ने यह गजल गाई–

तड़प रहे हैं शबे-इंतजार सोने दे;
न छेड़ हमको दिले-बेकरार सोने दे।
कफस में आंख लगी है अभी असीरों की,
गरज न बाग में अबरे-बहार सोने दे।
अभी तो सोये हैं यादे-चमन में अहले-कफस;
जगा न उनको नसीमे बहार सोने दे।
तड़प रहे हैं दिले-बेकारा सोने दे।

शरबत-पिलाई के बाद दूल्हा और दुलहिन एक ही पलंग पर बिठाए गए। गेतीआरा ने कहा—बहन, जूती तो छुलाओ।

जानी—वाह ! यह तो सिमटी-सिमटाई बैठी हैं।

बहार—आखिर हया भी तो कोई चीज है !

नाजुक—अरे, जूती कंधे पर छुला दो बहन, वाह !

उस्तानी—अगले वक्तों में तो सिर पर पड़ती थीं।

नाजुक—इस जूती का मजा कोई मर्दों के दिल से पूछे।

जब दुलहिन ने जरा भी जुम्बिश न की तो बहार बेगम ने दुलहिन के दाहिने पैर की जूती दूल्हा के कंधे पर छुला दी।

नाजुक—कहिए, आपकी डोली के साथ चलूंगा।

रूहअफजा—और जूतियां झाड़के धरूंगा।

जानी—और सुराही हाथ में ले चलूंगा।

आज़ाद—ऐ ! क्यों नहीं जरूर कहूंगा।

नाजुक—ऐ वाह ! अच्छा रंग लाए।

जानी—रंडियों-से नखरे बहुत सीखे हैं।

इस फिकरे पर ऐसा कहकहा पड़ा कि मियां आज़ाद शर्मा गए। जानी बेगम इक्कीस पान का बीड़ा लाईं और उसे कई बार आज़ाद के मुंह तक ला-लाकर हटाने के बाद खिला दिया।

सिपहआरा सुहाग लाईं और दूल्हा के कान में कहा—कहो, सोने में सुहागा, मोतियों में धागा और बने का जी बनी से लागा !

इसके बाद आरसी की रस्म अदा हुई।

जानी—बन्नू, जल्दी आंख न खोलना।

नाजुक—जब तक अपने मुंह से गुलाम न बनें।

हैदरी—क़हिए, बीबी, मैं आपका गुलाम हूं।

आज़ाद—बीबी, मैं आपका बिन दामों गुलाम हूं।

बड़ी बेगम—बेटा, अब तो कहवा लिया, अब आंखें खोल दो।

जानी—एक ही बार तो कहा।

हैदरी—ऐ हुजूर, खुशामद तो कीजिए।

आज़ाद—यह खुशामद से न मानेंगी।

हैदरी—जो कहा है, उसका खयाल रहे। बीवी के गुलाम बने रहिएगा।

आखिर बड़ी मुश्किलों से दुलहिन ने आंखें खोलीं, मगर आंखों में आंसू भरे हुए थे। बे-अख्तियार रोने लगीं। लोग समझाते-समझाते आरी हो गए, मगर आंसू न थमे। तब आज़ाद ने सिर झुकाकर कान में कहा—यह क्या करती हो, दिल को मजबूत रखो।

रूहअफजा—बहन, खुदा के लिए चुप हो जाओ। इसका कौन सा मौका है?

बहार—अम्मांजान, आप ही समझाएं। नाहक अपने को हलकान करती हैं हुस्नआरा।

उस्तानी—तर कपड़े से मुंह पोंछो।

जब हुस्नआरा का जी बहाल हुआ तो आज़ाद ने सुहाग पुड़े से मसाला निकालकर

दुलहिन की मांग भरी। तब दुलहिन को गोद में उठाकर सुखपाल पर बिठा दिया। वहां जितनी औरतें थीं, सबकी आंखों से आंसू जारी हो गए और बड़ी बेगम तो पछाड़ें खाने लगीं। जब बारात रुखसत हो गई तो बातें होने लगीं—

रूहअफजा—अल्लाह करे, आज़ाद ने जितनी तकलीफें उठाई हैं, उतना ही आराम भी पाएं।

अब्बासी—अल्लाह ऐसा ही करेगा।

जानी—मगर आज़ाद का-सा दूल्हा भी किसी ने कम देखा होगा।

नाजुक—लाखों कुओं का पानी पी चुके हैं।

बहार—बड़े खुशमिजाज आदमी मालूम होते हैं।

जानी—इस वक्त हुस्नआरा के दिल का क्या हाल होगा?

नाजुक—चौथी के दिन हम ताक-ताक निशाने लगाएंगे।

रूहअफजा—आज़ाद से कोई न जीत पाएगा।

जानी—कौन ! देख लेना बहन, अगर हारी न बोलें जभी कहना। वह अगर तेज हैं, तो हम भी कम नहीं।

अंत

प्रिय पाठक, शास्त्रानुसार नायक और नायिका के संयोग के साथ ही कथा का अंत हो जाता है। इसलिए हम भी अब लेखनी को विश्राम देते हैं। पर कदाचित् कुछ पाठकों को यह जानने की इच्छा होगी कि ख्वाजा साहब का क्या हाल हुआ और मिस मीडा और क्लारिसा पर क्या बीती। इन तीन पात्रों के सिवा हमारे विचार में तो और कोई ऐसा पात्र नहीं है जिसके विषय में कुछ कहना बाकी रह गया हो। अच्छा सुनिए। मियां खोजी मरते दम तक आज़ाद के वफादार दोस्त बने रहे। अफीम की डिबिया और करौली की धुन ने कभी उनका साथ न छोड़ा। मिस मीडा और मिस क्लारिसा ने उर्दू और हिंदी पढ़ी और दोनों थियासोफिस्ट हो गईं। दोनों ही ने स्त्रियों की सेवा करना ही अपने जीवन का उद्देश्य बना लिया। क्लारिसा तो कलकत्ता की तरफ चली गईं, मीडा बंबई से लौटकर आज़ाद से मिलने आईं तो आज़ाद ने हंसकर कहा—अब तो थियासोफिस्ट हैं आप?

मीडा—जी हां, खुदा का शुक्र है कि मुझे उसने हिदायत की?

आज़ाद—तो यह कहिए कि अब आप पर खुदा का नूर नाजिल हुआ। इस मजहब में कौन-कौन आलिम शरीक हैं?

मीडा—अफसोस है आज़ाद, कि तुम थियासोफी से बिलकुल वाकिफ नहीं हो। इसमें बड़े-बड़े नामी आलिम और फिलॉसफर शरीक हैं, जिनके नाम के इस वक्त दुनिया में झंडे गड़े हुए हैं। यूरोप के अकसर आलिमों का झुकाव इसी तरफ है।

आज़ाद—हमने सुना है कि थियासोफी वाले रूह से बातें करते हैं। मुझे तो यह शोबदेबाजी मालूम होती है।

मीडा–तुम इसे शोबदेबाजी समझते हो?

आज़ाद–शोबदा नहीं तो और क्या है, मदशेरियों का खेल?

मीडा–अगर इसका नाम शोबदा है तो न्यूटन और हरशेल भी बड़े शोबदेबाज थे?

आज़ाद–वाह, कहां न्यूटन और कहां थियासोफी। हमने सुना है कि थियासोफिस्ट लोग गैब का हाल बता देते हैं। बंबई में बैठे हुए अमेरिका वालों से बिना किसी वसीले के बातें करते हैं। यहां तक सुना है कि एक साहब जो थियासोफिस्टों में बहुत ऊंचा दरजा रखते हैं। वह डाक से खत न भेजकर जादू से भेजते हैं। वह खत लिखकर मेज पर रख देते हैं और जिन लोग उठाकर वहां पहुंचा देते हैं।

मीडा–तो इसमें ताज्जुब की कौन बात है? जो लोग लिखना-पढ़ना नहीं जानते वह दो आदमियों को हरफों से बातें करते देखकर जरूर दिल में सोचेंगे कि जादूगर हैं। जिस तरह आपको ताज्जुब होता है कि मेज पर रखा हुआ खत पते पर कैसे पहुंच गया उसी तरह उन जंगली आदमियों को हैरत होती है कि दो आदमी चुपचाप खड़े हैं, न बोलते हैं, न चालते हैं, और लकीरों से बातें कर लेते हैं। अफ्रीका के हबशियों से कहा जाय कि एक मिनट में हम लाखों मील पर बैठे हुए आदमियों के पास खबरें भेज सकते हैं तो वे कभी न मानेंगे। उसकी समझ में न आएगा कि तार के खटखटाने से कैसे इतनी दूर खबरें पहुंच जाती हैं। इसी तरह तुम लोग थियासोफी की करामात को शोबदा समझते हो।

आज़ाद–तुम मेस्मेरिज्म को मानती हो?

मीडा–मैं समझती हूं, जिसे जरा भी समझ होगी वह इससे इनकार नहीं कर सकता।

आज़ाद–खुदा तुमको सीधे रास्ते पर लाए, बस और क्या कहूं।

मीडा–मुझे तो सीधे रास्ते पर लाया। अब मेरी दुआ है कि खुदा तुमको भी सीधे ढर्रे पर लगाए।

आज़ाद–आखिर इस मजहब में नयी कौन-सी बात है।

मीडा–समझाते-समझाते थक गई मगर तुमने मजहब कहना न छोड़ा।

आज़ाद–खता हुई, मुआफ करना, लेकिन मुझे तो यकीन नहीं आता कि बिला किसी वसीले के एक-दूसरे के दिल का हाल क्योंकर मालूम हो सकता है। मैंने सुना कि मैडम ब्लेवेट्स्की खतों को बगैर खोले पढ़ लेती हैं।

मीडा–हां-हां पढ़ लेती हैं, एक नहीं हजारों बार मैंने अपनी आंखों देखा है और खुदा ने चाहा तो कुछ दिनों में मैं भी वही करके दिखा दूंगी।

आज़ाद–खुदा करे वह दिन जल्द आये। मैं बराबर दुआ करूंगा।

यही बातें हो रही थीं कि बैरा ने अंदर आकर एक कार्ड दिया। आज़ाद ने कार्ड देखकर बैरा से कहा–नवाब साहब को दीवानखाने में बैठाओ, हम अभी आते हैं।

मीडा से पूछा–कौन नवाब साहब हैं?

आज़ाद–मिर्जा हुमायूं फर के छोटे भाई हैं, जिनके साथ सिपहआरा की शादी हुई है।

मीडा–तो यों कहिए कि आपके साढ़ू हैं। तो फिर जाइए। मैं भी उनसे मिलूंगी।

आज़ाद–मैं उन्हें यहीं लाऊंगा।

यह कहते हुए आज़ाद दीवानखाने की तरफ चले गए।

●●●